॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह

खण्ड - २ (द्वितीय)

वर्षोत्सव के पद

(धनतेरस से राखी पर्यन्त)

अखण्ड भूमण्डलाचार्य वर्य जगद्गुरु श्रीमन्महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी

-:: प्रकाशक :: -

वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास, इन्दौर

अनुक्रमणिका

खण्ड २ (धनतेरस से राखी पर्यंत)

हटरी में आरती के पद

पासा खेल के पद

दीवारी के पोढवे के पद

गोवर्धन लीला (सरस लीला) के पद

मंगला से शयन तक राग बदल के गाने का

अन्नकूट भोग सरायवे के पद

अन्नकूट आरती तथा इन्द्रमान भंग के पद

इन्द्रमान भंग के पद

गिरिराजजी नीचे पधरायवे के पद

शेहरा के पद

हवेली कीर्तन संग्रह

श्रीगुसांईजी की बधाई के पद

मागशर वद ९

गनगोर के दिन छाक के पद

श्रीयमुनाजी की बधाई

(चैत्र सुद ६)

श्री रामनवमी की बधाई

रामनवमी के पालना के पद

श्री राम के बाल लीला के पद

श्रीराम के ढाढी के पद

श्रीमहाप्रभुजी की बधाई (चैत्रवद ११)

घोकडा

श्री महाप्रभुजी की बधाई

❑ राग सारंग

❑ राग काफी

❑ राग नट

❑ राग सारंग

❑ राग पूर्वी

❑ राग जेजेवन्ती

❑ राग गौरी

❑ राग मारू

❑ राग हमीर

❑ राग कल्याण

❑ राग कान्हरो

❑ राग कल्याण

❑ राग कान्हरो

❑ राग नायकी

❑ राग रायसो

❑ राग केदारो

❑ राग बिहाग

❑ राग बिहागरो

श्री आचार्यजी के पलना के पद

श्रीआचार्यजी की बाल लीला के पद

श्री महाप्रभुजी के विवाह खेल के पद स्नान यात्रा के पद

श्री महाप्रभुजी की ढाढी लीला

श्री नृसिंहजी के पद

गंगा दसमी के पद

स्नान यात्रा के पद

(ज्येष्ठ सुदि १५)

खंडिता के पद (सुहा-बिलावल)

(ज्येष्ठ वदि १ से आषाढ़ सुदि १)

गौड सारंग के पद

(ज्येष्ठ वदि १ से आषाढ़ सुदि १)

❑ राग सारंग

❑ राग टोडी

❑ राग सारंग

❑ राग सोरठ

❑ राग सोरठ

रथ यात्रा के पद (अषाढ सुदि २)

❑ राग सारंग

रथ में पधारे तब मल्हार की अल्पधारी

❑ राग मल्हार

रथ के पद

❑ राग बिलावल

❑ राग मल्हार

❑ राग मल्हार

भोग आवे तब

❑ राग मल्हार

चौथे भोग में

❑ राग मल्हार

दूसरे दिन मंगला में

❑ राग मल्हार

रथ में से उतरने के पद

❑ राग मल्हार

रथ यात्रा के पद

मल्हार जगायवे के पद

(अषाढ सुद ३ से श्रावण सुद १०)

❑ राग मल्हार

मल्हार कलेऊ के पद

(अषाढ सुद ३ से श्रावण सुद १०)

मल्हार मंगला दरशन

(अषाढ सुद ३ से श्रावण सुद १०)

मल्हार के पद

मल्हार (अभ्यंग) के पद

मल्हार-शृंगार दर्शन के पद

मल्हार-कसुंबी छठ और लाल घटा के पद

मल्हार-श्याम घटा के पद

मल्हार-जांवली घटाके पद

मल्हार-गुलाबी घटा के पद

मल्हार-हरी घटा के पद

मल्हार-पीरी घटा के पद

मल्हार-मुगट के पद

मल्हार टिपारा के पद

❑ राग मल्हार

❑ राग सारंग

संध्या आरती के पद

❑ राग मल्हार

ब्यारु के पद

❑ राग मल्हार

मल्हार-दूध के पद

❑ राग मल्हार

मल्हार-शयन दर्शन के पद

❑ राग मल्हार

मल्हार-मानके पद

❑ राग मल्हार

मल्हार–पोढायवे के पद

(अषाढ सुद ३ से श्रावण सुद १०)

हिंडोरा अधिवासन के पद

(हिंडोरा रोपे तब)

गोविंद स्वामीना पहेला दिवसना हिंडोला

हिंडोरा चंदन के पद

हिंडोरा मंगला दर्शन के पद

(अषाढ वद १ से श्रावण वद १)

हिंडोरा शृंगार दर्शन के पद

(अषाढ वद १ से श्रावण वद १)

हिंडोरा मुकुट के पद

शरद के हिंडोरा

हिंडोरा के पद (टीपारो)

हिंडोरा के पद शेहरा

हिंडोरा-दुमालो के पद

फूल्हे के पद (हिंडोरा)

हिंडोरा फेंटा के पद

हिंडोरा कुसुंबी घटा के पद

श्याम घटा के पद (हिंडोरा)

गुलाबी घटा के (हिंडोरा) पद

(अषाढ वद १ से श्रावण वद १)

कांच के हिंडोरा

सोने के हिंडोरा के पद

सखी भेष के हिंडोला

घोकडा-हिंडोरे के पद

ठकुरानी तीज (श्रावण सुद ३) हिंडोरा के पद

नाग पंचमी के पद हिंडोरना

हिंडोला-बगीचा के पद (श्रावण सुद ८)

बगीचा के हिंडोरा दर्शन

धनतेरस के पद (आसोवद - १३)

□ राग देवगंधार □ **(१) यशोदा मदनगोपाले बुलावे ॥ धनतेरस आवो मेरे प्यारे ले उछंग हुलरावे ॥१ ॥ हरीजरी वागा बहु भूषण रुचिसों बहुत धरावे ॥ व्रजपतिकी मुख शोभा निरखत रोमरोम सुख पावे ॥२ ॥**

□ राग देवगंधार □ **(२) प्यारी अपनो धन जो संभारे ॥ वारंवार देख नयननसों लेजु हृदयमें धारे ॥१ ॥ रुचिसों सरस संभारत पियकों आभुषण बहु सोहे ॥ आगम निरख दिवारीको मन द्वारकेशको मोहे ॥२ ॥**

□ राग देवगंधार □ **(३) धनतेरस दिन अति सुखदाई ॥ राधा मन अतिमोद बढ्यो हे मनमोहन धनपाई ॥१ ॥ राखत प्रीति सहित हृदयमें गुरुजन लाज वहाई ॥ द्वारकेश प्रभु रसिक लाडिली निरख निरख मन भाई ॥२ ॥**

□ राग देवगंधार □ **(४) आज माई धन धोवत नंदरानी ॥ कार्तिक वदि तेरस दिन उत्तम गावत मधुरी बानी ॥१ ॥ नवसत साज सिंगार अनूपम करत आप मन मानी ॥ कुंभनदास लालगिरिधर कों देखत हियो सिरानी ॥२ ॥**

□ राग बिलावल □ **(५) दूधसो स्नान करो मन मोहन छोटी दिवारी काल मनाये ॥ करो सिंगार लाल तन वागो कुल्हे जरकसी सीस धराये ॥१ ॥ जेसो श्याम पीतरंग प्यारी मिली तेसेही दम्पति परम सुख पाये ॥ आज समागम हे प्यारीको ज्यों निरधनके धन पाये ॥२ ॥ वह छबि देखदेख व्रजजनही देत असीस अपुनी मन भाई ॥ चिरजीयो दुलहनि दूलेहदोऊ परमानंददास बल जाई ॥३ ॥**

□ राग बिलावल □ **(६) धनतेरस रानी धन धोवति। गर्ग बुलाई वेद-विधि पूजति ठौर-ठौर घृत -दीप सँजोवति ॥ धूप दीप नैवेद्य भोग धरि स्यामसुन्दर इकटक मुख जोवति। "परमानँद" त्यौहार मनावति सब ब्रज पुष्टि-मारग-धन बोवति ॥**

रूपचतुर्दशी - अभ्यंग के पद (आसोवद - १४)

□ राग देवगंधार □ (१) न्हात बलकुंवर कुंवर गिरिधारी ॥ जसुमति तिलक करत मुख चुंबत आरती नवल उतारी ॥१ ॥ आनंद राय सहित गोप सब नंदरानी व्रजनारी ॥ जलसों घोर केसर कस्तुरी सुभग सीसतें ढारी ॥२ ॥ बहोर करत श्रृंगार सबे मिल सब मिल रहत निहारी चंद्रावलि व्रजमंगल रसभर श्रीवृषभान दुलारी ॥३ ॥ मनभाये पकवान जिमावत जात सबें बलहारी ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन सकल व्रज सुख मानत छोटी दिवारी ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (२) आज न्हाओ मेरे कुँवर कन्हैया मानी काल दिवारी ॥ अति सुगंध केसर उबटनों नये वसन सुखकारी ॥१ ॥ कछु खाओ पकवान मिठाई हों तुम ऊपरवारी ॥ कर श्रृंगार चले दोउभैया तृणतोरत मेहतारी ॥२ ॥ गोधन गीत गावत व्रजपुरमें घरघर मंगलचारी ॥ कृष्णदास प्रभुकी यह लीला गिरिगोवर्द्धनधारी ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (३) न्हात बलदाऊ कुंवर कन्हाई ॥ अति सुगंध केसर कस्तूरी जलमें घोर मिलाई ॥१ ॥ रत्नजटित आभूषण वस्तर व्रजरानी पहेराये ॥ अति आनंद निहारत फिर फिर आछी भांत बनाये ॥२ ॥ यह दिन दीपमालिकाको सुख मानतहें नंदलाल ॥ फूले गोप ग्वाल सब मानत और सकल व्रजबाल ॥३ ॥ अपने संग सखा सब लीने खिरिक खिलावत गाय ॥ राजतहें गिरिधर श्रीविट्ठल सब मन हुलस बढाय ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (४) बलन्हाये तैसें लालन न्हैयें ॥ उवटे अंग कित फिरतहो धाये कमल नयन बलजैयें ॥१ ॥ न्हाओन तातोपानी सीयरो समोय कनक कुंडी भरि सिरैयें। कर श्रृंगार नवल बानिक बन जोईभावे सोई खैयें ॥२ ॥ वारने गई महतारी कुंवर पर गाय खिलावन बाबा संगजैयें ॥ मानदास कुलदेवता मनावत फूली महेरि आनंद न समैयें ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (५) न्हवावत सुतकों नंदरानी ॥ मानत पर्व

रूपचौदसको तिलक उबटनो कर हरखानी ॥१ ॥ वस्त्र लालजरी आभूषण पहरावत रुचिसों मनमानी ॥ मेवा ले चले गाय सिंगारन व्रजजन देखदेख विहंसानी ॥२ ॥

□ राग रामकली □ (६) लालतुम आछे लेहुखिलोना॥ यह मिस ठानि न्हवावन बेठी रोवो जिनमेरे छोना ॥१ ॥ अंगफुलेल उबटनो चुपर्यो तिलक दियो अक्षतधरि भाल॥ बीरा द्वे धरि वारि आरति चमकत सुंदर गाल ॥२ ॥ फिरन्हवाय कर केसर लेपत तत्क्षण उष्णोदकले ठारि ॥ रानी एक अंगोछा लाइ जलले डारि ओवारि ॥३ ॥ अंग अंगोछ ढांपि चरन करन सिंगार बेठाये लाल॥ वागो तास लाल चीरा पहरावत भूषनलाल ॥४ ॥ व्रजरानी गोपीसों बोलति कार्तिक चौदश कृष्ण अनूप ॥ द्वारकेश प्रभु नीके न्हवाये यहमिस बाढे रूप ॥५ ॥

दीवारी के पद (आसोवद अमावस)

□ राग बिलावल □ (१) आज दिवारी बडो परब घर॥ कहत जसोदा सुनहु लालतुम लेलकुटी खेलो अपने कर ॥१ ॥ प्रथम न्हाओ आछे सोधे सों गुहि बेनी अंजन देउ नटवर ॥ सूथनलाल तासकी झंगुली धरो चंद्रिका सुभग शिस पर ॥२ ॥ पाछे पहेर विविध आभूषण मुरलीले मेरे मुरलीधर। देऊँ भाल मृगमदको बिंदुका जो कोउ दृष्टी न लगे तेरे पर ॥३ ॥ खेलो तुम मेरे आंगन दोउ हों देखो अपने आनन पर ॥ पान फूल मेवा मिश्रीसों झोरी भर ग्वालन देऊँ सुन्दर ॥४ ॥ सुभगस्वरूप नंदलालको मोहित होत देखि सब सुरनर ॥ यह विध कहत नंदजुकी रानी सुन सुन वारत सर्वस्व गिरिधर ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (२) आज दिवारी मंगल चार॥ व्रजयुवति मिल मंगल गावत चोक पुरावत आंगन द्वार ॥१ ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई भरि भरिलीने कंचन थार॥ परमानंददासको ठाकुर पहेरे आभूषण सिंगार ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (३) घरी एक छांडो तात विहार ॥ रामकृष्ण तुम दोऊ भैया आवो बैठो करो शृंगार ॥१ ॥ यशोमति कहतहे आज अमावस दीपमालिका मंगलनाम ॥ घरघर बालक सबे शृंगारे सुनो श्यामघन राम ॥२ ॥ खेलेंगी गाय गुवाल नाचें सब गोपी गावें गीत ॥ परमानंद दास यह मंगल वेद पुराण पुनीत ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (४) बड़ो पर्व त्यौहार दीवारी ॥ विविध शृंगार कियो लरिकन को रोरी तिलक सोहत रनी भारी ॥१ ॥ कंचन थाल साज ब्रज बनीता नंदराय घर आयी ॥ पुलके दिप समीप सोंज भर गावत गीत सुहाई ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन लाल छबि संग-अंग अधिकाई ॥ यह शोभा कछु कहीन परत है देखत रही मुसकाई ॥

□ राग सारंग □ (५) यह दीवारी वरस दीवारी तुमकों नित्य नित्य आवो ॥ नंदराय नंदरानी यह ढोटा पूजें अति सुख पावो ॥१ ॥ पुजवो मनोरथ सब व्रजजनके देव पितर पुजावों ॥ श्री विट्ठल गिरिधरन संगले गोधन पूजन आवो ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (६) गुरके गुंजा पूआ सुहारी ॥ गोधन पूजत व्रजकी नारी ॥१ ॥ घरघर गोमय प्रतिमा धारी ॥ बाजत रुचिर पखावज थारी ॥२ ॥ गोदलियें मंगल गुण गावत ॥ कमल नयनकों पांय लगावत ॥३ ॥ हरद दही रोचनके टीके ॥ यह व्रज सुरपुर लागत फीके ॥४ ॥ राती पीरी गाय शृंगारी ॥ बोलत ग्वाल देदे करतारी ॥५ ॥ हरिदास गोवर्धनधारी ॥ ऋतु मानत सुख वरस दीवारी ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (७) मदन गोपाल गोवर्धन पूजत ॥ बाजत ताल मृदंग शंखध्वनि मधुर मधुर मुरली कल कूजत ॥१ ॥ कुंकुम तिलक लिलाट दियें नव वसन साज आईं गोपीजन ॥ आसपास सुन्दरी कनक तन मध्य गोपाल बने मरकत मन ॥२ ॥ आनंद मगन ग्वाल सब डोलत हीही धूमरि धौरी बुलावत ॥ राते पीरे वने टिपारे मोहन अपनी धेनु खिलावत ॥३ ॥

छिरकत हरद दूध दधि अक्षत देत असीस सकल लागत पग ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धन धर गोकुल करो पिय राज अखिल युग ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (८) टेरटेर बोलत नंदनंदन गांग बुलाई धूमरि धौरी ॥ वछरा छोर दिये खरिकनतें हूंकहूंक आवत सब दौरी ॥१ ॥ मारत कूंक सुबल श्रीदामा भाजत ग्वाल लालके साथ ॥ विलसत हँसत देत करतारी तुम लालन जानत सब घात ॥२ ॥ माथें मुकुट काछ पीतांबर ओर राजत उरपर वनमाल ॥ शोभित लकुट बजत पग नूपुर झलकत कपोलन नयन विशाल ॥३ ॥ खेली गाय लाल गिरिधरकी व्रजजन सब मनमांझ सिहात ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन देखिकें हुलसत नंद यशोदामात ॥४ ॥

गाय खिलायवे के पद (आसोवद १ से कारतक सुद १) (भोग आरती में)

□ राग सारंग □ (१) बड़े खिरकमें धूमरि खेलत ॥ मोहनलाल खिलावत रंगभर गगन गरज घंटा ध्वनि पेलत ॥१ ॥ उसर जात व्रजराज लाडिले धेनु डाढ़ जबमेलत ॥ नंददासप्रभु मुदित नंदरानी हीहीरस सागर में झेलत ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२) गायखिलायो चाहत गिरिवरधर बरजतहें नंदराई ॥ धेनु बहुत बाढ़ी हें मोहन देखहूंकी क्यों धाई ॥१ ॥ राखेंहे रखवारे चहुंदिश व्रजराजे न पत्याई ॥ जसुमतिरानी ओर रोहिणी यह सिख सबन सिखाई ॥२ ॥ विना लाल खेलत नहिं धूमर जब एसी सुधि पाई ॥ हूंकहूंकके ऊपर धावत ले लकुटी अहोटाई ॥३ ॥ हस मुसिकाय श्यामघन सुन्दर मुरली मधुर बजाई ॥ तबतहाँ दास चत्रभुज सब मिल इकटक भले खिलाई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३) गाय खिलावत श्याम सुजान ॥ कूकें ग्वाल टेरदे हीही बाजत बेणु विषाण ॥१ ॥ कियोहे शृंगार धेनु सगरिनको को करि सके वखान ॥ फिरफिर फिरत पूंछ उन्नत है करकर सुधे कान ॥२ ॥ पायपेंजनी मेंदी राजत पींठ पुरटके पान ॥ कुंभनदास खेली गिरिधरपैं

जिहीं विधि उठी ऊठान ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४) गाय खिलावत शोभा भारी ॥ गौरज रंजित वदन कमल पर अलक झलक घुंघरारी ॥१ ॥ नखशिख प्रति बहु मोलिक भुषण पेहेरत सदांदिवारी ॥ फैलरहीहे खिरक सभापर नगन रंग उजियारी ॥२ ॥ श्रमकण राजे भाल गंड भ्रुव यह छबिपर बलहारी ॥ श्रवतहेरि अंचल चंचल सब चढतहें अटन अटारी ॥३ ॥ भीर बहुत अति जातकी भई मडहन पर व्रजनारी ॥ सेंननमें समझावत सगरी धनधन निरखन हारी ॥४ ॥ रहे खिलाय धुमरी धोरी गुनन काजर कारी ॥ नंददास प्रभु चलेसदन जब एकबार हुंकारी ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (५) किलक हसें गिरिधर व्रजराई ॥ भाज्यो सुबल लियें गोद बछरा पाछें धोरीधाई ॥१ ॥ मधुमंगल ले मोर पखौवा दोर आय अहोटाई ॥ तोक ताक तक मोहनके ढिग भली विधि धेनु खिलाई ॥२ ॥ खोल भवन भूषण पहरें सब परवी भली मनाई । लियो लपेट लालगेहनेमें सब व्रज देखन आई ॥३ ॥ श्याम जलद गंभीर गरजसों मोहन टेर सुनाई ॥ वह वापर वह वापर गैया शोभा कही न जाई ॥४ ॥ सोनेसींग घंटा अरु कठुला पीठ पत्र समुदाई ॥ परमानंद आनंद भर खेलत मुरली तबहि बजाई ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (६) व्रजपुर बाजत सबहिनके घर ढोल दमामाभेरी ॥ श्रीगोवर्द्धनकी पूजाकों कहत सबनसों टेरी ॥१ ॥ अन्नकूट बहु भांत बनावत रच पकवानन ढेरी ॥ नंदराय पूजत परवतकों लाओ गायनघेरी ॥२ ॥ धूमर गांग बुलाई ऊपर लालन उपरेनी फेरी ॥ सुबल सुबाहु कूकदे दोरे नाहि लगाओ बेरी ॥३ ॥ डाढ़मेल धूमरकी बछीयां लावो पूंछ छंछेरी ॥ देखत परमानंद सबनकों गायनलियोहे झंझेरी ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (७) तुमारे खरिक बताईहो वृषभान हमारी गैया ॥ चक्रत नयन चहूंधां चितवत संकर्षणकों भैया ॥१ ॥ संध्या समय वागतें बिछुरी

अर्धिरात्र सुधिपैया ॥ वा विन मोपे रह्यो न परतहे यों कहे कुंवर कन्हैया ॥२ ॥ सुन प्रियबचन किशोरी अटाचढ़ जालरंध्रव्हे झांकी ॥ परमानंद प्रभु करषि लियोचित चंद्रवदन भ्रुववांकी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८) बाबाके संग गायखिलावत बलदाऊ लालन गिरिधारी ॥ हीही गोरी भोरी टोरी सुरभी सुरंग मधुर मृदुलारी ॥१ ॥ आगें आवत जात पिछोरी ठुरक ठुरक लेत हूंकारी ॥ देत अचानक कूंक निकटब्हे भाजत चोंक झुकी बछरारी ॥२ ॥ इहदिश राजाभान खिलावत उतही खिलावत गोपगुवाल ॥ बीच खिलावत कुंवरलाडिलो अतिही दुलारेहें नंदलाल ॥३ ॥ जानत गाय खिलाय लडेंते जसुमति वांटत नवल बधाई ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधर पहेलेंहीं अपनी प्यारी गाय खिलाई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (९) कूकेंदेत जात काननपर ऊँचीटेरन नाम सुनावत ॥ सुन्दर पीत पिछरी लेले मुख पर फेर सबन विझुकावत ॥१ ॥ काहूको बछरा काहूको ले लै आगें आन दिखावत ॥ पूंछ उठाय सुधी व्है भाजत आप हँसत ओर सबन हँसावत ॥२ ॥ फिर चुचुकार सूधी कर भाजत बछरन अपने हाथ मिलावत ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधर बलदाऊ इहि विधि अपनी गाय खिलावत ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१०) गाय खिलाय आये नंदनदन शोभित ताल मृदंग बजाये ॥ हँसहँस ग्वाल देत करतारी आछे आछे मंगल गाये ॥१ ॥ अति आनंद नंदजुकीरानी गजमोतिनके चोक पुराये ॥ वारवार नोंछावर वारत जबही लाल घर भीतर आये ॥२ ॥ आछे चीर बहुत भांतनके गोपी ग्वाल सब पेहेराये ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरनलाल को मुख चुंबत ओर लेत बलाये ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (११) नीकी खेली गोपालकी गैया ॥ कूंकें देत ग्वाल सब ठाडे यहजु दिवारी नीकी भैया ॥१ ॥ नंदादिक देखतहें ठाडे यहजु पाहुनीनीकी पैया ॥ वरसद्योसलों कुशलकुलाहल नाचो गावो करो

बधैया ॥२ ॥ धोरी धेनु सिंगारी मोहन बडरे वृषभ सिंगारे ॥ परमानंद प्रभु राय दामोदर गोधनके रखवारे ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१२) श्याम खिरिकके द्वार करावत गायनकों सिंगार ॥ नानाभांत सींग मंडित किये ग्रीवा मेलेहार ॥१ ॥ घंटा कंठ मोरनकी पटियाँ पीठिनकों आछे ओछार ॥ किंकिणी नूपुर चरण बिराजत बाजत चलत सुढार ॥२ ॥ यह विधि सब व्रज गाय सिंगारी शोभा बढ़ी अपार ॥ परमानंदप्रभु धेनु खिलावत पेहेरावत सब ग्वार ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१३) खिरक खिलावत गायन ठाडे ॥ इत नंदलाल ललित लरिका उत गोप महाबल गाढे ॥१ ॥ सुन निजनाम नेंचुकी निकसी बल बछरा जबकाढे ॥ अपनी जननीके जानु लाग पय पीवत नवल अखाडे ॥२ ॥ नृत्यत गावत वसन फिरावत गिरिकी शिखर पर चाढे ॥ छीतस्वामी हम जबतें वसे व्रज शैल सकल सुख बाढे ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१४) खेलनकों धौरी अकुलानी ॥ डाढमेल सन्मुख आतुर ह्वै नंदनंदनकी सुन मृदुवानी ॥१ ॥ बडरे गोप चकित भये देखत एसी कबहू सुनी न कहानी ॥ नाचत गाय भई नौतन व्रज वरसों वरस कुशल यह जानी ॥२ ॥ नंदकुमार निवेर झार मुख जय जय शब्द करत कलगानी ॥ चत्रभुज प्रभु गिरिधर अब यह व्रज राजकरो भक्तन सुखदानी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१५) गाय खिलावन खरिक चलेरी ॥ गिरिधरलाल ललित लरिकासंग बाबानंद बलदाऊ भलेरी ॥१ ॥ श्रीदामा आदि सुबल अर्जुन सब भोजविशाल बनेरी ॥ नाचत गावत करत कोलाहल करो सिंगार आज हेबेरी ॥२ ॥ सुन निजनाम नेंचुकी निकसी गांग बुलाई काजर पीरी ॥ कानलाग कहे कुरुर कुरुर डाढ मेल आतुरव्है दौरी ॥३ ॥ नंदकुमार निवेर झार मुख वछरा छोर दियेरी ॥ हँसहँस कहत सुनोरे भैया हों खेलत खेल नयेरी ॥४ ॥ गोधन पूज ग्वाल पेहेराये काहूकों पगा

काहूकों पिछोरी ॥ व्रजभामिनी मिल मंगल गावत रसिक प्रभु जुग जुग राजकरोरी ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (१६) खेली बहु खेली गांग बुलाई धूमर धौरी ॥ बछरापर उपरेना फेरत डाढ मेलकें दौरी ॥१ ॥ आप गोपाल कूंक मारतहें गो सुतकों भरकोरी ॥ धोंधों करत लकुट करलीने मुखपर फेर पिछोरी ॥२ ॥ आनंद मुदित गोपाल ग्वाल सब घेर करत इकठोरी ॥ चत्रभुज प्रभु गिरिधर व्रज यह सुख जुग जुग राजकरोरी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१७) सब गायनमें धूमरखेली ॥ श्रवण पूंछ उंचकाइ सूधीव्है ग्वाल भजावत फिरत अकेली ॥१ ॥ पकर लई गोपाल आपही कंठ बनावत सेली ॥ चुंबतमुख आकों भर भेटी टेर कहत लाओ गुरभेली ॥२ ॥ आप गोपाल खवाय खिलावत सब गायनकी हेली ॥ परमानंद देखें बनि आवे जव धौरीकी बछिया झेली ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१८) खेलनकों जब गांग बुलाई ॥ तिहि छिन श्रवण सुनत आतुरव्है निकसि खरिकतें बाहिर आई ॥१ ॥ बछरा हाथ लियें नंदनंदन देत कूंक पट पीत फिराई ॥ मेली डाढ़ भयो मन आनंद हँसत सबें करताल बजाई ॥२ ॥ बडरे गोप कौतुक देखतहें यह अबलों देखी न कन्हाई ॥ अब चल राजकरो यह गोकुल प्रभु बलराम श्याम सुखदाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१९) विफरगई धूमर और कारी ॥ कूंकत ग्वाल बछरुवालीने बदन पिछोरी डारी ॥१ ॥ तबतो हूंकहूंक सन्मुखहे भली भांत संभारी ॥ पूंछ उठाय कर दौरी दोउ कुंवर भरी अंकवारी ॥२ ॥ भीर खीरकके अटा अटारी ठाडीहें व्रजनारी ॥ परमानंद देखें बनिआवे नवललाल गिरिधारी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२०) गाय खिलावन चले गोपाल ॥ वागोश्वेत तासको पहेरें गोकर्णाकृति छोगालाल ॥१ ॥ फरहरात पीतांबर करमें दुरिमुरि

देखत सब व्रजबाल ॥ धोरी धुमरि काजर पीरी गाय बुलाई टेरत ग्वाल ॥२ ॥ जाको बछरा ताहि दिखावत अरबराय दोरी तिंही काल ॥ हँसत परस्पर द्वारकेश प्रभु अति आनंदित गोप गुवाल ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२१) पहले हेरी गाय सुनाई ॥ ता पाछें महुवर सुर मंडल मुरली मधुर बजाई ॥१ ॥ ठठक रहे सब ठाठ गायन के भीर खिरकमें नाही समाई ॥ सिखवत गीत हाथ ऊँचोकर हरखत श्रीव्रजराई ॥२ ॥ बाहरतें सब कुक सुनाई हुँक-हुँक फिर आतुर आई ॥ रहे बछरुवा धोरी विफरी ताक ताक परछाई ॥३ ॥ खेल मच्यो है बडे खिरक में शोभा कहियन जाई ॥ अटाअटारी जुंडन वारी सब व्रजजन देखन आई ॥४ ॥ पुलक रह्यो है धैन रंधन सब ऐसो बडो कन्हाई ॥ एक बार दोऊ हुंकारी जब नीज भुजा उठाई ॥५ ॥ गरज उठे घंटा कंठन में दुहुं और सो छाई ॥ नंददास प्रभु सोई सुनसुन जशुमती लेत बलाई ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (२२) गाय खिलावत मदन गोपाल ॥ कुम-कुम तिलक अलंकृत तंदुल पुलक रहो अंग-संग विशाल ॥१ ॥ नखसिख अंग भुखन कि रचना उरमन झन बन माल ॥ बसन दसन पर शुद्र पोरीया दियो दिठोना माल ॥२ ॥ भीर बहोत सखी बडे खिरक में कुक देत सब ग्वाल ॥ हिहिहिहि सुन श्रीमुखते मोह रहि सब व्रज कि बाल ॥३ ॥ दावन छोर बंधे दोउ कटी दमकत जंघा रसाल ॥ मेहा अटक सकल अंग जाई चहु दिस शोभा जाल ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (२३) गाय खिलावन चले कन्हाई । कहा कहों सब अंग जलकन की जाई अंग निकाई ॥१ ॥ नखसिख अंग अमोल बहु भुखन यह परबनी भली आई ॥ पाछे डारत झुमत छबियों या बन रूचिर बनाई ॥२ ॥ कुम कुम तिलक आडसिर शोभित तदुल दुज समुदाई ॥ ता पर विलुलित अलिकल तैर के सब जग रह्यो सुनाई ॥३ ॥ रत्न जडित की मौर चन्द्रिका दक्षिण दिश अदुकाई ॥ हिरावल मुक्तावली खेचन मचि

चोकी ढरकाई ॥४ ॥ कनक कपिश जगुबी उर पगियाँ जग मग मेरी माई ॥ काहुओ यह बात कहत है उर सुत को जश गाई ॥५ ॥ चन्द्रहार पन्ना हमे बसों मोतीन की माल रुराई । रुचि मनीमय वैजंती दुलरी लटक चरन लों आई ॥६ ॥

□ राग पूर्वी □ (२४) धोरी धूमर पीली पीहर कारी काजर कहकह टेर ॥ बामभुजा मुरलीकर लिये दक्षिण कर पीतांबर फेरत ॥१ ॥ सुंदर नागर नट कालींदी तट लकुट लीये गायन को हिरत ॥ हुंक-हुंक एक वार गज शब्द धाई चत्रभुज प्रभु गिरिधारी न वेरत ॥२ ॥

गाय को कान जगायवे के पद

□ राग कान्हरो □ (१) कान जगावन चले कन्हाई ॥ गिरिधर सिंघद्वार चढटेरत सुन सब सखा मंडली आई ॥१ ॥ विविध सिंगार पेहेरे पट भूषण प्रफुल्लित उर आनंद न समाई ॥ रुचिर गेलगिरिगोवर्द्धनकी किलकत हँसत सबे सुखदाई ॥२ ॥ टेरत गांग बुलाई धूमर श्रवण सुनत आतुर उठि धाई ॥ मेली डाढ भयो मन आनंद चत्रभुजदास चले शिरनाई ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (२) घरमेंसुं बाहिर उठि आये सब गायनके कान जगावन ॥ जेसें भोर हूंकके खेलें लागे लेले नाम बुलावन ॥१ ॥ गांग बुलाई धूंमर धोरी कारी काजर पीयरी लाल ॥ अपने संग सखासब लीनें लटकत डोलत खरिक गोपाल ॥२ ॥ अपनी जगाय दाउकी जगाई ओर जगाई सबकी जाय ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर सुखपावत व्रजनारिन त्योहार मनाय ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (३) दीपदानदे श्याम मनोहर सब गायनके कान जगावत ॥ गांग बुलाई धूमर धौरी ऊँचे लेले नाम बुलावत ॥१ ॥ होउ सचेत भोरखेलनकों दोरी आवत नेंक सुनावत ॥ सन्मुख जाय कूंकमारतहें मुख पर फेर पिछोरी धावत ॥२ ॥ मुदित गोपाल ओर ग्वाल मिल जाको बछरा ताहि मिलावत ॥ चत्रभुजप्रभु गिरिधरन डाढ सुन हँस

गावत करताल बजावत ॥३ ॥

□ राग कान्हरा □ (४) कान जगावत नंदकुमार॥ दोऊ भैया ठाडे सिंघ द्वारें गावत सगरे ग्वार ॥१ ॥ नाचत फूलत करत कौतुहल आज दिवारी बडो त्योहार॥ कानलाग कछु कहतहें मोहन सावधानव्है गाय खिलार ॥२ ॥ अपने खरिक कान जगाए भानखिरक जाय कानपुकारि ॥ धौरी धूमर टेर सुनतही दोरी अटा चढी सुकुमारि ॥३ ॥ चिते परस्पर चित चोर्यो तब निरखत छबि कछु रही न संभार॥ रसिकप्रभु पिय सब सुखसागर सहचरी वारवार बलिहार ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (५) बडो परवदिन दीपदिवारी॥ वागो श्वेत तासको सोहे सिरपें कुलही श्वेत संवारी ॥१ ॥ दीप दान दे खिरक सिधारे सबे सिंगारी गाय बुलावत॥ गांग बुलाई धूमर धोरी द्वारकेश प्रभु कान जगावत ॥२ ॥

दीपमालिका के पद

□ राग कान्हरो □ (१) आज कुहूंकी रात्र माधो दीपमालिका मंगलचार॥ खेलोजूथ सहित संकर्षण मोहन मूरति नंदकुमार ॥१ ॥ कहत यशोदा सुनों मन मोहन चंदन लेप शरीर करो॥ पानफूल चोवा अंबर मणिमाला ले कंठधरो ॥२ ॥ गोक्रीडन पुन काल्ह होयगो नंदादिक देखेंगे आय॥ परमानंददास संगलीने खिरक खिलावत धौरीगाय ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (२) आज अमावस दीपमालिका बड़ी पर्वणी हे गोपाल॥ घर-घर गोपी मंगलगावें सुरभी वृषभ सिंगारो लाल ॥१ ॥ कहत यशोदा सुनो मनमोहन अपने तातकी आज्ञालेहु॥ बारो दीपक बहुत लाडिले कर उजियारो अपने गेह ॥२ ॥ हँस व्रजनाथ कहत मातासों धौरी धेनु सिंगारों जाय॥ परमानंददासको ठाकुर जाय भावतहें निशदिन गाय ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (३) नंददेत बहु दीपदान॥ खिरक खोरि व्रज गोपुर

गृहगृह मालाकार करत निरमान ॥१ ॥ कार्तिक मास कुहूं रजनी मुखदीप्ति दिव्य रवि कोटि समान ॥अतुलित छबि लख व्रजकी वनिता उमगउमग उरकरतहें गान ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (४) जयति व्रज पुर सकल खोरि गोकुल अखिल तरणि तनया निकट दिव्य दीपावली ॥ जयति नवकुंजवर द्रुमलता पत्र प्रति मानों फूली नवल कनक चंपावली ॥१ ॥ जयति गोविंद गोवृंद चित्रित करें मुदित उमडी फिरे ग्वाल गोपावली ॥ जयति व्रज ईषके चरित्र लखि थकित शिव मोहे विधि लजित सुरलोक भूपावली ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (५) श्रीगोवर्द्धन दीपमालिका सब देखनकों आये ॥ अरसपरस व्यंजन करकें सब व्रजवासी पूजनकों धाये ॥१ ॥ तब नंद उपनंद बुलाये व्रजवासी सबही पहराये ॥ कुंभनदास लालगिरिधरनें सब व्रजजनके हिये सिराये ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (६) व्यार बडो करि डारेरी सारंग मोकों बाट सम्हारनदेरी ॥ अंचलसों कित दीप दुरावत ढांप पिछोरी तु मोय लेरी ॥१ ॥ दीपनकी द्युति फीकी लागत तन तेरो उजेरो अंग दीपेरी ॥ गोपीजनसों कृष्णदास कहे मानो पर्व दीवारी तूहेरी ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (७) परममंगल परबनी दीपमालिका घरघरन प्रति दिव्य दीपावली ॥ महामहोत्सव मान प्रीत अतिरुचि आन कुसल जीय जान ललितादि चंद्रावली ॥१ ॥ गोपीजन जूथ सुन जोरि कुंवर किशोरि साज सिंगार उरउदित प्रेमावली ॥ कर कनक थाल भर दीप संजोय सब चली ग्रह नंदके द्वार संजावली ॥२ ॥ दास कुंभन नाथको जु वैभव निरख मनहु फुली नवल युवति कुमुदावली ॥ कमलवदनी कुंवरि वृखभानकी नंदिनी श्रवत मकरंद रति ललन मधुपावली ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (८) दीपमालिका करन आई व्रजबधु मनहरनि ॥ कंचन थाल लसत कमलनकर नंदमहेर घर घरनि ॥१ ॥ गजमोतिनके चोक

पुराये गावत मंगल गीत जुवती गन ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर निरख हरख प्रफुल्लित तन मन ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (९) आजदिपत दिव्य दीपमालिका ॥ मानो कोटि रवि कोटि चंद छबि विमल भई निशि कालिका ॥१ ॥ गजमोतिनके चौक पुराये बिचबिच वज्र प्रवालिका ॥ गोकुल सकल चित्रमणि मंडित शोभित झाल झमालिका ॥२ ॥ पहर सिंगार बनी राधाजू संगलियें व्रज बालिका ॥ झलमल दीप समीप सोंजभर करलीयें कंचन थालिका ॥३ ॥ पाये निकट मदनमोहन पिय मानो कमल अलि मालिका ॥ आपुन हँसत हँसावत ग्वालन पटक पटक दे तालिका ॥४ ॥ नंदभवन आनंद बढ्यो अति देखत परम रसालिका ॥ सूरदास कुसुमन सुर बरखत कर अंजुलि पुटभालिका ॥५ ॥

□ राग कान्हरो □ (१०) देखो इन दीपनकी सुंदराई ॥ जानो घनमें विधु मंडल राजत तमनिश परम सुहाई ॥१ ॥ नंदराय अगणित पांती रचि अद्भुत युक्ति बनाई ॥ विविध सुगंध कपूर आदि दे घृत परिपूरण ताई ॥२ ॥ घर घर मंगल होत सबनके उर आनंद न समाई ॥ कुंभनदास प्रभु धेनु खिलावत गिरिधर सब सुखदाई ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (११) दीपमालीका श्रवन सुन्हाई ॥ दोहरी पाथ बनी दिपन की व्रज शोभा लागत अति अधिकाई ॥ विविध शृंगार पहर पट भुखन प्रफुलित उर आनन्द न समाई ॥ बडो पर्व त्यौहार दिवाली श्रीविट्ठल के यह जी भाई ॥

□ राग कान्हरो □ (१२) आज दिवारी को दिन नीको ॥ निस बासुर दिपक सब जोये ॥ जगमगात बिधना बिधनिको ॥१ ॥ पट भुखन पहराये कहन ले कटीतट फैटा माल हिको ॥ फुले फिरत सकल व्रजवासी उमंग बढ़ी मनहीको ॥२ ॥ विविध सुगन्ध सारी दे घ्रत परिपुरन साजनीको ॥ जगमगात मानों जल में सखी श्रीविट्ठल बड़ भाग को ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (१३) दिपदान व्रज परम सुहायो ॥ अमावस पर्व बड़ो दिन है यह बाल कहत बाबा समुझायो ॥ अगणित दिप जुराय सबे मिल ऊँची अटा चढ़ायल ॥ नंदरानी यह छैया मानो पहराई कंचन माल ॥२ ॥ हंस हंस कान कह्यो जननीसों अपनी धेन श्रृंगारे जाय ॥ श्रीविठ्ठल नंदरानी कहत है बलदाउ को लेहो बुलाय ॥

□ राग कान्हरो □ (१४) खोर गोपुर अजर बगर नव कुंजपति ललित गली गलिनमें कान्ति दीपावली ॥ साज भूषण बनी भांत सब नव अलि परम शोभित रसिक चतुर चन्द्रावली ॥१ ॥ चंद गोविंद अरविंद राधा बदन राजत सकत युवति कुमुदावली ॥ पांति दीपक बनी मानो हो मनिक फनी रचित गिरिधरन हित तरुणी रूपावली ॥२ ॥ झांझ बीना मुरज महुवरी किन्नरी बजत जलजत्र उचरत शब्दावली ॥ ततथेई थुंगनी नटत उघटत परन चलत नुपुर चरम रूरत हारावली ॥३ ॥ दीपमाला चहुं ओर अद्भुत रुचिर मध्य कनिक नगराज फूली चंपावली ॥ देख सुर सहित सुरनारी मन व्रज हरखि के करत सब मिलि वृष्टि कनक पुष्पावली ॥४ ॥ होत उद्योत दीपमाला सुभग भानु शशि कोटि मणि लज्जित तारावली ॥ निरख छबि नंद सुत रसिक 'व्रजपतिदास' शरण नंदलाल तिहुं लोक भूपावली ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (१५) दीप दान कियो सकल ब्रज आज कुहु मंगल अधिकाई ॥ जगमगात खिरकन पर दिपक लागत मनहीरा छबि पाई ॥१ ॥ बर सिंगार कहाये गायन नाना रंग के सिंग रंगाये ॥ पांय पेंजनि सीसन पटीआ लटकन सबके कंठ बंधाये ॥२ ॥ धौरी धुमर गांग बुलाई बछरा सहित आतुर वे धाये ॥ देखी ठाडे नंद लाडीले श्रीविठ्ठल गायन कान जगाये ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१६) दीपमालिका के दिन आयो ॥ नंदरायसो कहत घरनीयो यह उच्छव मन भायो ॥१ ॥ गोपी सकल साज सज चलीके

नंदराय दरबार सुहायो ॥ कंचन थार साज धरे दीपक गावत गीत मन भायो ॥२ ॥ भई भीड जशुमती के भवनमें व्रजरानी संकल्प करायो ॥ दीपदान की होत आरती सुरदास जश गायो ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१७) आई ब्रज वधु मनहरन धरन दीपमालिका ॥ लसत कनक थाल कर कमलन मध्य नंदमहर घर घरन ॥१ ॥ काज मोतिन के चौक पुराये गावत मंगल गीत जुवती जन ॥ नंददास की प्रभु छबि निरखत फूली फिरत मन ही मन ॥२ ॥

□ राग बिहाग □ (१८) मुकुर महलमें मान लिख्यो मोहनीको विनय वचन बोलि सुकुमारीके । कितेक कौतक निहार प्यारी नेन लर स्वेत जरी जोत जानो चित्र चित्रसारी के ॥१ ॥ सरस सुहागनि है सरद सोहाई रितु रसिक बिहारी संग पिय प्यारी के । मानो मदन व्योम चढ़े मान गढ़ लेन अली बान बरखत दीपत दीप यों दिवारीके ॥२ ॥

हटरी में आरती के पद

□ राग कान्हरो □ (१) ॥ हटरी में आरती के पद ॥ दीपदान दे हटरी बैठे बडो पर्वहे आज दिवारी ॥ चहुं ओर पांत बनी दीपनकी रानीजु अपने हाथ संवारी ॥१ ॥ दिव्य कपूर सुगंध आदि रचि घृतसुरभीको जोति उजारी ॥ पकवान बहुत कर थार भरे धर लडूवा गुंज फेंनी सुहारी ॥२ ॥ वनज करेंगे भान कुंवरिसों मनमें फूले कुंवर गिरिधारी ॥ घरघरतें व्रजनारी निकसी नवल किशोरी तरुणी बारी ॥३ ॥ ललिता प्रभृति मुख्य श्रीराधा गावत मंगल शब्द उच्चारी ॥ मिल- आंई व्रजराज घरनिघर एकतें एक सुभग सुकुमारी ॥४ ॥ नाचत खेलत करत कोतूहल प्रेम मगन व्है आनंद भारी ॥ कहो लाल कहा सोदादेहो चंद्रावलि मुख मुसकिनिहारी ॥५ ॥ पूरो तोलो रूटनखेहो सेंतमेंत नहीं लाल विहारी ॥ देख-देख फूलत नंदरानी अति उत्साह नोछावर वारी ॥६ ॥ मन भायो दीयो सबहिनकों परम उदार गोवर्द्धनधारी ॥ रसिकप्रभु प्रिय तुम चिरजीयो सहचरी वारवार

बलिहारी ॥७ ॥

□ राग कान्हरो □ (२) दीपदान व्रजराज देत दोऊ ढोटनकों गोद बैठारी ॥ दीपदानकी होत आरती मंगल गावत सब व्रजनारी ॥१ ॥ दीपदान शोभित भवनन पर धरत-फिरत खिरकनमें ग्वाल ॥ लाल कहत बावा तुम देखो जानो पहराई कंचन माल ॥२ ॥ यह त्योहार दिवारीको सुख मानत नंद गोपव्रज लोग ॥ नानाभांतके करत रहतहें अपअपने मन भाये भोग ॥३ ॥ हटरी भरत नंदजूकी रानी मेवा सब पकवान मिठाई ॥ हसत हसत गृहगृहकी सुंदरि सोदा करन लालसों आई ॥४ ॥ देखत फूलत माय बवादोऊ अनगिनती नोछावर वारी ॥ हटरी बैठे यों राजत हें श्रीविठ्ठलगिरिधारी ॥५ ॥

□ राग कान्हरो □ (३) दीपदानदे हटरी बैठे नवललाल गोवर्द्धनधारी ॥ दोहरी पांत बनी दीपनकी व्रजशोभा लागत अति भारी ॥१ ॥ तैसेही बने नंदके नंदन तैसी बनी राधिकारानी ॥ गृहगृहतें आईं व्रजसुंदरि मात यशोदा देख सिहानी ॥२ ॥ भांतभांत पकवान मिठाई लेले गोद सबनकी नावत ॥ आरति करत देत नोछावर फिरफिर मंगल गीत गवावत ॥३ ॥ उठ कर लाल खरिकमें आये टेरटेर सब सखा बुलाये ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरनलालनें सब गायनके कान जगाये ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (४) सुरभी कान जगाय खरिक बल मोहन बैठे राजत हटरी ॥ पिस्ता दाख बदाम छुआरे खुरमा खाजा गूंजा मटरी ॥१ ॥ घरघरतें नरनारि मुदित मन गोपी ग्वाल जुरे बहु ठटरी ॥ टेरटेर ले देत सबनकों लेले नाम बुलाय निकटरी ॥२ ॥ देत असीस सकल गोपीजन यशोमति देत हरख बहुपटरी ॥ सूर रसिक गिरिधर चिरजीवो नंदमहरको नागर नटरी ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (५) पूजा करत देव गोधनकी राजा नंद लालगिरिधारी ॥ पहेलें मानत अति आनंदसों बडो पर्व त्योहार

दिवारी ॥१ ॥ बडीबडी गोपवधू नंदरानी हटरी भरत सिहाय सिहाई ॥ तिनपर बनी पांत सोनेकी दीये धरत बनाय बनाई ॥२ ॥ हँसत हँसत दोऊ संग बावाके कुंवर लाडिले बैठे आई ॥ देखनकों व्रजराज हुलस मन अपने बंधु सब लिये बुलाई ॥३ ॥ गृहगृहतें आईं व्रजसुंदरि सोदालेन देन इन साथ ॥ हँसहँस कहत लाल हम जाने करन न पाओगे कछुघात ॥४ ॥ देहों नहीं तोलतें घटती कहत छबीलीसों मुसकात ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरनलाल तुम हम पर बहुत रूटहूं खात ॥५ ॥

□ राग कान्हरो □ (६) मानत पर्व दीवारीको सुख हटरी बैठे नंदकुमार ॥ मंगल बाजे होत चहूंदिश भीर बहुत अति आंगनद्वार ॥१ ॥ कुंवरि राधिका नवल वधू सब कर आंईहें रुचिर शृंगार ॥ सोंधे भीनी कंचुकी सारी ओर पहरें फूलनके हार ॥२ ॥ पहलें सोदालेहु हमहींपे तब लीजों दाउपें जाय ॥ नीकेदेहों रूंटनखेहों ऐसें कहत लाल मुसिकाय ॥३ ॥ हँसहँस जात राय नंदरानी हँसत भान सब गोप गुवाल ॥ चुंबत बदन अहो ये घातें कापें सीखेहो नंदलाल ॥४ ॥ झगरो करत भरत आनन्दसों चंद्रावलि व्रजमंडल नारि ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरनलालसों रंग करत सब गोपकुमारि ॥५ ॥

□ राग कान्हरो □ (७) लालमाई बैठे राजत हटरी ॥ रानीजूसाज संम्हार धर्यो बलराम कृष्णको बटरी ॥१ ॥ लडुवा गूंजा पकवान बहुत कर भरभर थार धरीहें मठरी ॥ गृहगृहतें गोपी सब आई भीरभई तहां ठटरी ॥२ ॥ तोलतोल कें देत सबनकों भाव अटलकर राख्यो अटरी ॥रसिकप्रभुके नयनन लागी श्रीवृषभान कुंवरिकी रटरी ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (८) हटरी बैठे श्रीगोपाल ॥ रत्न जटितकी हटरी बनाई हीरामोती परम रसाल ॥१ ॥ डलाडलैया और कुल्हैया भरभर धरे पकवान रसाल ॥ पान फूल सोंधे सहित सब वांटत देदे नंदके लाल ॥२ ॥ रामावलि प्रेमावलि ललिता चंद्रावलि व्रजमंगल बाल ॥ चलो सखी तहां पेंठ लगीहे बेचतहें जहां गोकुलपाल ॥३ ॥ सब सुंदरि आईं गृहगृहते

निरखत नयन विशाल गोविंद प्रभु पिय चितचोर्यो हे बंधी प्रेमकी पाल ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (९) हटरी बैठे गिरिधरलाल ॥ सुन्दर कुंज सदन अति नीको शोभित परमरसाल ॥१ ॥ चहूं ओर पांत बनी दीपनकी झलकत झाल झमाल ॥ मेवा मिश्री पान फूल सब भरभर राखे थाल ॥२ ॥ कनक लतासी संग मृगनयनी शोभित श्याम तमाल ॥ भाव परस्पर लेत देतहें राजत अंग रसाल ॥३ ॥ घरघरतें सब भेटें लेले आंई ब्रजकी बाल ॥ रसिकप्रभुके आगें राखत गावत गीत रसाल ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (१०) दीपदान दे हटरी बैठे नन्दबावाके साथ ॥ नानाविधके मेवा आने बांटत अपने हाथ ॥१ ॥ शोभित सवें शृंगार बनावत ओर चंदन दीये माथ ॥ नंददास प्रभु सगरिन आगें गिरिगोवर्द्धननाथ ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (११) श्रीगिरिवरधर हटरी बैठे शोभा वरणी न जाई ॥ चहुं ओर पकवान मिठाई दीपक जोति बनाई ॥१ ॥ आपुन बैठे सुखद पलंगपर बीरी देत मनभाई ॥ सज शृंगार गृहगृहतें निकसी व्रजभामिनी मिल मंगलगाई ॥२ ॥ भीरभई यशोमतिके आंगन मेवा वांटत कुंवर कन्हाई ॥ ललितादिक सब करत नोछावर दास निरख सचुपाई ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (१२) गिरिधर हटरी भली बनाई ॥ दीपावलि हीरा मणि राजत देखें हरख होत अतिभाई ॥१ ॥ अनेक भांत पकवान बनाये अति नौतन व्यंजन सुखदाई ॥ सुंदरभुषण पहेरे सुंदरि सोदाकरन लालसों आई ॥२ ॥ सावधानव्है सोदाकीजे जोदीजे तो तोलपुराई ॥ राखो चित चंचलनहिकीजे ग्वालिन हँसमुसकाई ॥३ ॥ कैसेंबोली बोलति ग्वालिन कहत यशोदामाई ॥ परमानंदहँसी नन्द घरनी सबे बात में पाई ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (१३) दीपदान दीपावलि देखो हीरा दीप खंभ नगराजत ॥ जगमग जोति रही चहूं दिशतें निविड तिमिर अति

भाजत ॥१ ॥ बैठेलाल हटरिया वेचत मधु मेवा पकवान मिठाई ॥ देख देख शोभा व्रजसुंदरि सोदा लेन लालसों आई ॥२ ॥ मृदु मुसकाय कहत मोहनसों घट जिन तोलो लाल ॥ परमानन्दप्रभु नंदनंदन हँसे ओर हँसी सब व्रजकी बाल ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (१४) कान जगाय गोपाल मुदित मन हटरी बैठे गोवर्द्धनधारी ॥ हलधर संग सुबल श्रीदामा गोप ग्वाल सब गाय शृंगारी ॥१ ॥ देखनकों मोहे सुरनर मुनि रावर मांझ भीर भई भारी ॥ जयजयकार होत चहूंदिशतें सुरपति करत कुसुम बरखारी ॥२ ॥ कंचन रत्न जटित हीरा नग विश्वकर्मा रचि सुविधि संवारी ॥ परम विचित्र बनी अति सुंदर जगमगात कुहुं तिमिर विदारी ॥३ ॥ नंदभवन भर धरे विविध पकवान अगणित मेवा गिरीछुहारी ॥ टेरटेर तब देत सबनकों शिवब्रह्मादिक गोद पसारी ॥४ ॥ आरती करत मात यशोदा मंगल गावत सब व्रजनारी ॥ सूर रसिक गिरिधर सुख विलसत वरषवरष प्रति परव दिवारी ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (१५) हटरी बैठे श्रीव्रजनाथ ॥ अपने अंग सखा सब लीने बाँटत मेवा हाथ ॥१ ॥ भांत भांत पकवान मिठाई विधसो धरे बनाय ॥ चलो सखी देखन को जईये सुख शोभा अधिकाई ॥२ ॥ आरती करत है देत न्यौछावर मन आनन्द बढाय ॥ नंददास कुसुमन सुर बरखत जे जे शब्द कराय ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१६) रत्न जटित बैठे नव हटरी ॥ गोरे बदन शृंगार सजत सब अधिक बिराजत नागर नटरी ॥१ ॥ झलमलात चीरा सिर ऊपर सुंदर पट पीताम्बर कटरी ॥ देख सिहात लाल गिरिधर को मात जशोदा ठाडी नीकटरी ॥२ ॥ रानीजु साज सवार धरत नहा भरे थाल जहाँ गुंजा मठरी ॥ श्रीविट्ठल मोहन अति शोभित भीर भई गोपन तहाँ ठठरी ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१७) हटरी बैठे श्रीव्रजराय ॥ नानाविध पकवान

मिठाई लेले देत सबन को चाय ॥ विविध श्रंगार बन्यो अति नीको लागत अति शोभाय ॥ दे बिरा आरती उतारत जीन गोविंद बल जाय ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (१८) दीपदान दे हटरी बैठे बलदाऊ और कन्हैया ॥ नानाविध के मेवा मंगाये नंदरानी तहाँ करत बधैया ॥१ ॥ भांत भांत पकवान मिठाई बेले चावन बल भद्र भैया ॥ यह त्यौहार नित नित भले आवो श्री विट्ठल के मन के रैया ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (१९) हटरी बैठे सोभित लाल ॥ श्रीब्रखभान नंदिनी संग ले राजत सब ठाडी ब्रजबाल ॥१ ॥ मधुमेवा पकवान मिठाई जसुमति साजि धरी तिहिं काल ॥ बाँट बाँट करि देत सबन को अंग राग फूलनकी माल ॥२ ॥ देत असीस सकल ब्रजपुर के चिरजीयो बेरिन के उरसाल ॥ द्वारकेस प्रभु और बिदाकर इत खेलत चौपर को ख्याल ॥३ ॥

पासा खेल के पद

□ राग कान्हरो □ (१) दीपदानदे कान जगाये सुंदर हटरी सुभग संवारी ॥ चित्र विचित्र बहुत रंग चीती गादी तकिया धरे सुधारी ॥१ ॥ चहुं ओर पांति बनी दीपनकी जगमग जगमग जोति उजारी ॥ बीच साज चौपर खेलनकों बैठे आय कुंवर गिरिधारी ॥२ ॥ दांही ओर चौकी गेंदुवा बीरा बांई ओर वृषभान दुलारी ॥ को जीते को हारे दुहुनमें यों बोली ललिता सुकुमारी ॥३ ॥ पेहेलो पासा डार्यो सुंदरि रूंट करी तब लाल विहारी ॥ रहो लाल रहो एसें नहीं कीजे चंद्रावली एकधात विचारी ॥४ ॥ ब्रजनारी कीरति रानी सब देखत केलि हँसत किलकारी ॥ रसिकप्रभु पिय दोऊ जीते रानीजू बहुत नोछावर वारी ॥५ ॥

□ राग कान्हरो □ (२) रूप उज्यारो दीप जगमगे खेलतहें पिय प्यारी ॥ दाव पर्यो सुंदरि राधाको रूठ्यो कुंजबिहारी ॥१ ॥ केलि करत हँसत चहुंदिशतें रंग बढ्यो अति भारी ॥ कल्यानदास बल-बल बानिकपर नाहीं को समतारी ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (३) पासा खेलतहें पिय प्यारी ॥ रतन खचित चोकीपर डारत हंसत करत किलकारी ॥१ ॥ पहेले दाव पर्यो स्यामाको पीत पिछोरी हारी ॥ अबकी बेर पिय मुरली लगावो तो रंग रहेगो भारी ॥२ ॥ छलबल करकें जीती भामिनी पीय करत मनुहारी ॥ परमानंददासको ठाकुर जीती वृषभान दुलारी ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (४) पीया पीतांबर मुरली जीती ॥ हाहाकरत न देत लडेंती पांय परत निसबीती ॥१ ॥ राखी दुराय सघन कुंजनमें ललितादिक रहत सचीती ॥ विठ्ठल विपिन विनोद बिहारीसों प्रगट करत रस रीती ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (५) मुरली जीती राधा रानी ॥ दाव पर्यो वृषभानु सुताको मोहन रूंगट ठानी ॥१ ॥ लीयो जीत पीतांबर पीयको खेलत हंसत सयानी ॥ विठ्ठल विपीन विनोद बिहारिन कोकर सके बखानी ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (६) अद्भुत एक अनूपम नार ॥ नेन बेन चोवीस चोगुने सोरह चरन वरन हें चार ॥१ ॥ चतुराननसों प्रीत तीनपति ताके इक्कीस दूने नेन ॥ श्याम सेत आरक्त हरित पद चलत तबे बोलत है बेन ॥२ ॥ सात्विक राजस तामस निर्गुण एक युग्म दरसनकों आवत ॥ मगनमये सायुज मुक्तिफल त्रिविध रूप देखत सचुपावत ॥३ ॥ यहबिध खेल रच्यो ब्रजमंडल दीप दिवारी प्रगट दिखाई ॥ तुर्य रूपके यूथ बिराजत छबिपर द्वारकेश बलिहारी ॥४ ॥

दीवारी के पोढवे के पद

□ राग कान्हरो □ (१) सखियन रचिरचि सेज बनाई ॥ मणिमय जटितपर्यंक कनकके मुक्तनकी अधिकाई ॥१ ॥ पोढे श्रीसहित सुंदरवर झलमलदीप झरोखन झांई ॥ मानदास बलजाय सहेली मिलेहैं पियाप्रीतम सुखदाई ॥२ ॥

□ राग बिहाग □ (२) वे देखो बरत झरोकन दीपक हरि पोढे ऊँची

चित्रसारी ॥ सुंदरवदन निहारन कारण राख्योहै बहुत यतन कर प्यारी ॥१ ॥ कंठलगाय भुजदे सिरहाने अधर अमृत पीवत सुकुमारी ॥ तनमन मिलिरी प्राणप्यारेसों नौतन छबि बाढी अतिभारी ॥२ ॥ कुंभनदास दंपति सौभगसीमा जोरी भली बनी एकसारी ॥ नवनागरी मनोहर राधे नवललाल श्रीगोवर्द्धनधारी ॥३ ॥

□ राग बिहाग □ (३) वे देखो केसी नीकी चित्रसारी तामें पोढे पिय प्यारी दीप मालिका रुचिर बनाई ॥ चहुं ओर झलमलत दीप मोतिन की माल मानो जाल गुहाई ॥१ ॥ पासासार चोपर खेलनहार जीत होत दोउन की रूठ रूठाई ॥ रसिक प्रीतमसों खेल राधा प्यारी ललिता न्याव चुकाई ॥२ ॥

□ राग बिहाग □ (४) झरोखन दीपक देखियत द्वेहेरी पंगत राजे ॥ घृत परिपूरण सवारी राखे प्यारी कर प्रीतम वदन अवलोकन कारण स्फटिक मणिमय छाजे ॥१ ॥ दंपति पोढे रसबतियां करन लागे अनुरागे प्रेमपागे रतिरन जीतवेको मानो मेनदल साजे । 'नंददास' प्रभु सौभाग्य सीमा रति रंभा जगदंबा ब्रह्माणी रमा सची तेहु पीवत है लाजे ॥२ ॥

गोवर्धन लीला (सरस लीला) के पद

(मंगला से शयन तक राग बदल के गाने का)

□ राग बिलावल □ (१) नंदहि कहति यशोदारानी ॥ सुरपति पूजा तुमही भुलानी ॥१ ॥ यह नही भली तुम्हारी बानी ॥ में गृह काज रहों लपटानी ॥२ ॥ लोभही लोभ रहत हो सानी ॥ देवकाजकी सुध बिसरानी ॥३ ॥ मेहेरि कहेत पुनपुन यह बानी ॥ पूजाके दिन पोंहोंचे आनी ॥४ ॥ सूरदास यशोमतिकी बानी ॥ नंदहि खीजखीज पछितानी ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (२) नंद कह्यो सुधि भली दिवाई ॥ मेंतों राजकाज मनलाई ॥१ ॥ दिनप्रति करत यहे अधमाई ॥ कुलदेवता सुरत

विसराई ॥२॥ कंस दई यह लोक बडाई॥ गामदसक सिरदार कहाई ॥३॥ जलधि बूंद ज्यों जलधि समाई॥ माया जहांकी तहां बिलाई ॥४॥ सूरदास यह कहें नंदराई॥ चरण तुम्हारे सदां सहाई ॥५॥

□ राग बिलावल □ (३) कहत महेरि तब ऐसीबानी॥ इंद्रहीकी दीनी रजधानी ॥१॥ कंस करत तुमारी अतिकानी॥ यह प्रभुकीहे आशिष बानी ॥२॥ गोपन बहुत बडाई मानी॥ जहांतहां यह चलत कहानी ॥३॥ तुम घर मथीये सहस्र मथानी॥ ग्वालिनि रहत सदा बिततानी ॥४॥ तृण उपजत उनहीके पानी॥ ऐसे प्रभुकी सुरत भुलानी ॥५॥ सूर नंद मनमें तब आनी॥ सत्य कही तुम देव कहानी ॥६॥

□ राग बिलावल □ (४) महेर दीयो एक ग्वाल चलाई॥ गोपनंद उपनंद बुलाई ॥१॥ ओर आवो वृषभान लिवाई॥ तुरत जाहु तुम करो चढाई ॥२॥ यह सुन ग्वाल गयो तहां धाई॥ नंदमेहरकी कही सुनाई ॥३॥ नेंक करहु तुम जिनविलमाई॥ मोहि कह्यो सबदेहु पठाई ॥४॥ यहसुनकें सब चले अतुराई॥ मनमन सोच करत पछिताई ॥५॥ कोनकाज जीय मांझ डराई॥ राज अंश धनदीयो चुकाई ॥६॥ सूरनंद गृह पहुंचे आई॥ आदर कर बैठे नंदराई ॥७॥

□ राग बिलावल □ (५) गोपसबें उपनंद बुलाये॥ कोन काजकों हम हंकराये ॥१॥ सुनतहि हम सब आतुर आये॥ कंस कछू कहि मांग पठाये ॥२॥ यह जानी अति आतुर धाये॥ सब मिल कह्यो बहुत डरपाये ॥३॥ काल्हई राज अंशदे आये॥ ग्वाल कहत तुरतहिं उठधाये ॥४॥ महेर कह्यो हम तुम डरपाये॥ हँसहँस कहत आनन्द बढाये ॥५॥ हम तुमकों सुखकाज मँगाये॥ वारवार यह कहि दुखपाये ॥६॥ सूर इंद्र पूजा विसराये॥ यह सुनत सिरसबन नवाये ॥७॥

□ राग बिलावल □ (६) पूजा सुनत बहुत सुखकीनों॥ भली करी हमकों सुधदीनों ॥१॥ यहबानी सब मुखतें कीनों॥ बडोदेव सबइनकों

चीन्हों ॥२॥ इनहीतें व्रजवास वसीनों॥ हमसब अहीर जाति मति हीनों ॥३॥ पूजाकी विधि करत सबे मिली॥ जैसी भांत सदां तैसी चलि ॥४॥ बिदा मांग नंदसों गृहआये ॥ घरन घरन यह बात चलाये ॥५॥ सूरदास गोपनकी बानी ॥ व्रज नरनारि सबन यह जानी ॥६॥

□ राग बिलावल □ (७) नंदघरनि व्रजवधू बुलांई॥ यह सुनकैं तुरत हि सब आंई ॥१॥ कोन काज हम महेरि हँकारी॥ तुम नहीं जानत जोबनवारी ॥२॥ विहंस कहत कहा देतहो गारी॥ सुरपति पूजा करों सँवारी ॥३॥ देखो हम सब सुरत विसारी॥ ओरों हमहि बूझिये गारी ॥४॥ यह सुन हरखत भई नंदनारी सखियन वचन कह्यो जब प्यारी ॥५॥ सूर इंद्र पूजा अनुसारी॥ तुरत करहु सब भोग सँवारी ॥६॥

□ राग बिलावल □ (८) घरन चली सब कही यशुमतिसों॥ देव मनावत वचन विनतिसों ॥१॥ तुमविन ओर नहीं हम जानें॥ मुख स्तुति करत हम कहा वखानें ॥२॥ जहांतहां व्रजमंगल गानें॥ बाजत ढोल मृदंग निसानें ॥३॥ बहुत भांत करत पकवानें॥ नेवज कर धर साज विहानें ॥४॥ छुवत नहीं देव काज संकाने॥ देव भोगकों रहत डरानें ॥५॥ सूरदास हम सुरपति जाने॥ ओर कोन एसो जिहिं माने ॥६॥

□ राग बिलावल □ (९) नंद महर घर होत बधाई॥ अति आनंद उरमें न समाई ॥१॥ नेवज करत यशोदा आतुर॥ अष्टसिद्धि घरही अति चातुर ॥२॥ मेदा उज्ज्वल करकें छान्यों॥ वेसन दार चनाकर बान्यों ॥३॥ घृत मिष्टान्न सबे परिपूरण॥ मिश्रीसहित पाकको चूरण ॥४॥ लडुवा करत मिठाई घृतपक॥ रोहिणी करत अन्नभोजन तक ॥५॥ संग ओर व्रजनारी लागी॥ भोजन कर सब धरत सभागी ॥६॥ महेरि करत रचि उपरतरारी॥ जोरत सब विध न्यारीन्यारी ॥७॥ सूरदास जो मागत तबही॥ भीतरतें ले देतहें जबही ॥८॥

□ राग बिलावल □ (१०) महेरि सबें नेवजले सेंतत ॥ श्याम छुवे नहि ताकों डरपत ॥१ ॥ कान्हहि कहत इहां जिन आवे ॥ लरिकनकों यह देव डरावे ॥२ ॥ स्यामरहे आंगनही डराई ॥ मनमन कान्ह हँसत सुखदाई ॥३ ॥ मैयारी मोहि देव दिखेहे ॥ इतनों भोजन वह सब खेहे ॥४ ॥ यहसुन खीजतहैं नंदरानी ॥ वारवार सुतकों वरजानी ॥५ ॥ एसी बात न कहे कन्हाई ॥ तू कित करत श्याम लंगराई ॥६ ॥ करजोरत अपराध क्षमावत ॥ बालक को यह दोष मिटावत ॥७ ॥ सूरदास प्रभुकों नहि जाने ॥ हँसत चले मनमें न रिस्याने ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (११) युवती कहत कान्ह रिसपायो ॥ जान देहु सुर काज बतायो ॥१ ॥ बालक आय छुवे कहुं भोजन ॥ उनकी पूजा जाने को जन ॥२ ॥ यों कहि कहि देवता मनावत ॥ भोग सामग्री धरत उठावत ॥३ ॥ उनकी कृपातें अन्नधन मेरें ॥ उनकी कृपातें गोगन गहरें ॥४ ॥ उनकी कृपा पुत्र फलपायो ॥ देखो श्यामहि खीज पठायो ॥५ ॥ सूरदास प्रभु अंतरयामी ॥ ब्रह्माकीट आदिके स्वामी ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (१२) नंद निकट तब गये कन्हाई ॥ सुनत बात जहां इंद्र पुजाई ॥१ ॥ महेर नंद उपनंद तहां सब ॥ बोल लिये वृषभान महेर तब ॥२ ॥ दीपमालिका रचरच साजत ॥ पोहोप माल मंडली विराजत ॥३ ॥ वरस सातके कुंवर कन्हाई ॥ खेलत मन आनन्द बढाई ॥४ ॥ घरघर देत युवती जन हाथ ॥ पुजा देख हँसत व्रजनाथ ॥५ ॥ मोआगें सुरपतिकी पूजा ॥ मोतें देव ओर को दूजा ॥६ ॥ शतशत इंद्र रोम प्रति लोमन ॥ शत शत लोम मेरे एक रो मन ॥७ ॥ सूरश्यामये मनसों बातें ॥ लीनो भोग बहुत दिन जातें ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (१३) सुरपति पूजा जान कन्हाई ॥ बारवार बूझत नंदराई ॥१ ॥ कोनदेवकी करत पुजाई ॥ सो मोसों तुम कहो समुझाई ॥२ ॥ महर कह्यो तब कान्ह बुलाई ॥ सुरपति सब देवनके

राई ॥३ ॥ तुमारे हितमें करत सदाई ॥ जाते तुम रहो कुशल कन्हाई ॥४ ॥ सूरनंद कहि भेद बताई ॥ भीर बहुत घर जाऊ सिखाई ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (१४) जावो घरहि बलहारीतेरी ॥ सेज जाय सोवो तुममेरी ॥१ ॥ में आवतहों तुमारे पाछें ॥ भवन जावो तुम मेरे बाछें ॥२ ॥ गोपलिये तब कान्ह बुलाई ॥ मंत्र कह्यो एकमन उपजाई ॥३ ॥ आज एकसपनें कोउ आयो ॥ शंख चक्र भुज चार बनायो ॥४ ॥ मोसों यह कहि कहि समुजायो ॥ यहपूजा तुमकिनहि सिखायो ॥५ ॥ सूरश्याम कहि प्रकट सुनायो ॥ गिरिगोवर्द्धन देव बतायो ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (१५) यह तब कहेन लगे देवराई ॥ इंद्रहि पूजें कोन बडाई ॥१ ॥ कोटि इंद्र हमछिनमें मारें ॥ छिनहीमें पुन कोटि संवारें ॥२ ॥ जाके पूजें फल तुम पावो ॥ ता देवहिं तुम भोग लगावो ॥३ ॥ तुम आगें बहु भोजन खेहें ॥ मोंहों माग्यो फल तुमकों देहें ॥४ ॥ऐसो देव प्रकट गोवर्धन ॥ जाके पूजे बाढे गोधन ॥५ ॥ समझ न परी यह कैसी बानी ॥ ग्वाल कही यह अकथ कहानी ॥६ ॥ सूरश्याम यह सपनों पायो ॥ भोजन कोन देवही खायो ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (१६) मानहु कह्यो सत्य यह वानी ॥ जो चाहो व्रजकी रजधानी ॥१ ॥ तबतुम मुहुं मागे फलपावहु ॥ जो तुम अपने करन जिमावहु ॥२ ॥ भोजन सब खेहें मुहुंमागें ॥ पूजत सुरपति तिनके आगें ॥३ ॥ मेरो कह्यो सत्य कर मानो ॥ गोवर्द्धनकी पूजाठानों ॥४ ॥ सुरश्याम कहि कहि समुझायो ॥ नंदगोप सबके मन आयो ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (१७) सुरपति पूजा भेंट कन्हाई ॥ गोवर्द्धनकी करत पूजाई ॥१ ॥ मास दिनालों करी मिठाई ॥ नंदमहर घरकी ठकुराई ॥२ ॥ जाकी घरनी महरि यशोदा ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि चहुं कोदा ॥३ ॥ तब-किये बहुत भांत पकवान ॥ व्यंजन बहु को करे वखान ॥४ ॥ भोग अन्न बहु भांत सजाये ॥ अपने कुल सब अहीर बुलाये ॥५ ॥ सहस्र शकट भर

भरत मिठाई ॥ गोवर्द्धनकी प्रथम पूजाई ॥६ ॥ सूरश्याम यह पूजाठानी ॥ गिरिगोवर्द्धनकी रजधानी ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (१८) व्रजघर घर सब भोजन साजत ॥ सबके द्वार बधाई बाजत ॥१ ॥ शकट जोर ले चले देवबलि ॥ गोकुल व्रजवासी सबहीं मिलि ॥२ ॥ दधिलोंनी मधुसाज मिठाई ॥ कहां लग कहों सबे बहुताई ॥३ ॥ घरघरतें पकवान चलाये ॥ निकस गांमके ग्वेंडे आये ॥४ ॥ व्रजवासी तहां जुरे अपार ॥ सिंधु समान पारनहिं बार ॥५ ॥ पेंडें चलन नहीं कोउ पावत ॥ शकट भरे सब भोजन आवत ॥६ ॥ सहस्र शकट चले नंदमहेरके ॥ ओर शकट कितने घर घरके ॥७ ॥ सूरदास प्रभु महिमा सागर ॥ गोकुल प्रगट भये हरि नागर ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (१९) इक आवत घरतें चलधाई ॥ एक जात फिरघरहिं समाई ॥१ ॥ एकटेरत्त एक दोरे आवत ॥ एक गिरावत एक उठावत ॥२ ॥ एक कहत आवोरे भाई ॥ बैल देतहें शकट गिराई ॥३ ॥ कोन काहूको काहि संभारें ॥ जहांतहां सब लोग पुकारें ॥४ ॥ कोऊगावत कोऊनृत्यत आवें ॥ स्याम सखन संग खेलत भावें ॥५ ॥ सूरदासप्रभु सबके नायक ॥ जो मनकरें सोकरवे लायक ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (२०) साज शृंगार चलीं व्रजनारी ॥ युवतिन भीरभई अतिभारी ॥१ ॥ जगमगात अंगनप्रति गेहेनो ॥ सबके भाव दरस हरिलेहेंनो ॥२ ॥ यह मिस देखनकों सब आंई ॥ देखत इकटक रूप कन्हाई ॥३ ॥ येनहीं जानत देव पुजाई ॥ केवल स्यामही सोंलो लाई ॥४ ॥ को मग जात कहांको बोलत ॥ नंदसुवनसों चित नहीं डोलत ॥५ ॥ सूरभजें हरिकों जिहि भावें ॥ मिलत ताहि प्रभु तिहींसुभावें ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२१) नंदगोप उपनंद गये तहां ॥ गिरिगोवर्धन बडे देव जहां ॥१ ॥ शिखर देख सब रीझे मनमन ॥ ग्वाल कहत अतिही

अचरज वन ॥२ ॥ अति ऊँचो गिरिराज विराजत ॥ कोटिमदन निरखत छबिलाजत ॥३ ॥ पोहोंचे शकटन भरि भरि भोजन ॥ को आये कोऊ कहुं नहिखोजन ॥४ ॥ तिनके काज अहीर पठाये ॥ विलंब करहु जिन तुरत बुलाये ॥५ ॥ आवत मारग पायें तिनकों ॥ आतुरव्हे बोले नंद जिनकों ॥६ ॥ तुरत लिवाय तिनहि तहां आये ॥ महर मनहि अति हरख बढाये ॥७ ॥ सूरदासप्रभु तहां अधिकारी ॥ जानतहें पूजा परकारी ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (२२) आयजु रे सब व्रजके वासी ॥ डेरा परे कोस चोरासी ॥१ ॥ एक फिरत कहुं ठोर न पावत ॥ एते पर आनद बढावत ॥२ ॥ कोऊ काहूसों वैर न ताके ॥ बैठत मन जहाँ भावत जाके ॥३ ॥ खेलत हँसत करत कौतूहल ॥ जुरे लोग जहां तहां अकूहल ॥४ ॥ नंद कह्यो सब भोग मगावो ॥ अप अपने सब लेले आवो ॥५ ॥ भोग बहुत वृषभानहि घरको ॥ कहावरनें अतिही बाहिरको ॥६ ॥ सूरश्याम जब आयुस दीनो ॥ विप्र बुलाय नन्द तब लीनो ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (२३) तुरत तहां तब विप्र बुलाये ॥ यज्ञारंभन तहां कराये ॥१ ॥ सामवेद द्विज गान करत जहां ॥ देखत सुर विथके अंबर तहां ॥२ ॥ सुरपति पुजा तबहि मिटाई ॥ गिरिगोवर्द्धन तिलक चढाई ॥३ ॥ कान्ह कह्यो गिरि दूध न्हवावो ॥ बडोदेवता इनहि मनावो ॥४ ॥ गोवर्द्धन दूधहिं न्हवाये ॥ देवराज कहि माथ नवाये ॥५ ॥ नयो देवता कान्ह पुजावत ॥ नरनारी सब देखन आवत ॥६ ॥ सूरश्याम गोवर्द्धन थाप्यो ॥ इंद्र देख रिस करि तनकांप्यो ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (२४) श्याम कह्यो तब भोजन लावो ॥ गिरिआगें सब आन धरावो ॥१ ॥ सुनत नंद तहां ग्वाल बुलाये ॥ भोग सामग्री सबे मँगाये ॥ खटरसकी बहुभांत मिठाई ॥ अन्नभोग अतिही बहुताई ॥३ ॥ व्यंजन बहुत भांत परसाये ॥ दधिलोंनी मधु माट भराये ॥४ ॥ दही वरा

बहोत परसाये ॥ चंदही सम पटतरते पाये ॥५ ॥ अन्नकूट जेसो गोवर्धन ॥ ओर पकवान धरे बहुकोदन ॥६ ॥ परसे भोजन प्रातहिं ते सब ॥ रविमाथेतें ढरक गयो अब ॥७ ॥ गोपन कह्यो श्याम इहां आवो ॥ भोग धर्यो सब गिरिहिं जिमावो ॥८ ॥ सूरस्याम आपनही भोगी ॥ आपहि माया आपही योगी ॥९ ॥

□ राग बिलावल □ (२५) कान्ह कह्यो नंदभोग लगावो ॥ गोपमहर उपनन्द बुलावो ॥१ ॥ नयन मूंद करजोर मनावो ॥ प्रेम सहित नैवेद्य चढावो ॥२ ॥ मनमें नेक खटक जिनराखो ॥ दीन वचन मुखतें तुम भाखो ॥३ ॥ ऐसेंही गिरि प्रसन्न अतिव्हैहें ॥ सहस्त्र भुजा धर भोजन खेहें ॥४ ॥ सूरदास प्रभु आप पुजावत ॥ यह महिमा केसें कोउ पावत ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (२६) स्यामकही सोई सबमानी ॥ तब मनमें नंद निश्चय आनी ॥१ ॥ नयन मूंद करजोर बुलाये ॥ भावभक्तिसों भोग लगाये ॥२ ॥ बडोदेव गिरिराज सुनीकें ॥ भोजनकरो कृपाकरहीकें ॥३ ॥ सहस्त्र भुजा धर भोजन कीनों ॥ व्रजवासिन सुख नयनन लीनों ॥४ ॥ भोजन करत सबनके आगे ॥ सुरनर मुनि सब देखन लागे ॥५ ॥ देखथकित सब व्रजकी बाला ॥ देखत नंद गोप सब ग्वाला ॥६ ॥ सूरश्याम जिनके सुखदाई ॥ सहस्त्र भुजा धर भोजन खाई ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (२७) जेंमत देख नंद सुख पाये ॥ कान्ह देवता प्रगट दिखाये ॥१ ॥ व्रजवासी गिरि जेंमत देखे ॥ जीवन जन्म सुफल कर लेखे ॥२ ॥ ललिता कहत राधिका आगें ॥ जेंमत कान्ह नंद करलागें ॥३ ॥ में जानी हरिकी चतुराई ॥ सुरपति मेट आप बलिखाई ॥४ ॥ उत जेमत इत बातन लागें ॥ कहत श्याम गिरि जेंमत आगें ॥५ ॥ में जों बात कही सोई आई ॥ सहस्त्रभुजाधर भोजन खाई ॥६ ॥ ओर देव इनकी शरनाई ॥ इत बोलत उत भोजन खाई ॥७ ॥

सूरदास प्रभुकी यह लीला नंदनंदन व्रज छेलछबीला ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (२८) यह छबि देख राधिका भूली॥ बात कहेत सखियनसों फूली ॥१ ॥ आपही देवा आप पुजेरी॥ आपही जेंमत भोजन ढेरी ॥२ ॥ अति आतुर जेमतहें भारी॥ इक वृषभान बिलोवनहारी ॥३ ॥ नाम ताहि बदरोला नारी॥ ताकी बलि दई भुजापसारी ॥४ ॥ उत गिरि संग खात बलिसारी॥ बदरोलाकी बलि रुचिकारी ॥५ ॥ सूरदास प्रभु जेंमनहार॥ गिरि बपरेको कहा अधिकार ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (२९) इतहि श्याम गोपन संग ठाडे॥ भोजन करत अधिक रुचिबाढे ॥१ ॥ गिरि तन शोभा श्याम बिराजे॥ श्यामहि छबि गिरिवरकी छाजे ॥२ ॥ गिरिवर उरहि पीतांबर धारें॥ मोतिनकी उरमाला भारें ॥३ ॥ अंग भूषण श्रवण मणि कुंडल॥ मोर मुकुट शिर अलकें कुंतल ॥४ ॥ छबि निरखत सब घोष कुमारी॥ गोवर्द्धन छबि श्याम तुमारी ॥५ ॥ सूरश्याम लीलारस नायक॥ जन्म जन्म भक्तन सुखदायक ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (३०) भोजन करत देव भये परसन॥ मांगो नंद तुमारें जो मन ॥१ ॥ भली करी तुम मेरी पूजा॥ सेवक तुमतें और न दूजा ॥२ ॥ जो मांगो सोई हमदेंहें॥ जहां भाव ताही पैं रेहें ॥३ ॥ में सेवा वश भयो तुम्हारे॥ जो फल चाहो लेहु सवारे ॥४ ॥ यहसुन चक्रत भये नरनारी॥ भोजन कियो प्रथमही भारी ॥५ ॥ अब देखो मुख बात कहत हें॥ एसो देव कहां त्रिभुवनहें ॥६ ॥ कान्ह कह्यो कछु मांगो इनसों ॥ गिरिदेवता देत परसनसों ॥७ ॥ सूर श्याम देवता आपहें॥ व्रजजनके त्रयहरत तापहें ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (३१) नंदकह्यो कहा माँगें स्वामी॥ तुमजानत सब अंतरयामी ॥१ ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि तुम दीनो॥ कृपासिंधु सब तुमरो कीनो ॥२ ॥ कुशल रहें बलराम कन्हाई॥ इनही कारण करत

पुजाई ॥३ ॥ देवनकी मणि गिरिवर तुमहो ॥ जहांतहां व्यापक पूरणहो ॥४ ॥ तुमहरतातुम करता वरके ॥ देख थकित नरनारि नगरके ॥५ ॥ बडोदेवता स्याम बतायो ॥ प्रकट भये सब भोजन खायो ॥६ ॥ सूरस्यामकेजो मन आवे ॥ सोइ सोइनाना रूप बनावे ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (३२) मांगलेहु कछु ओर पदारथ ॥ सेवा सबे भई अबसारथ ॥१ ॥ फल मांग्यो बलराम कन्हाई ॥ येद्वै रहें जु कुशल सदांई ॥२ ॥ इनहीतें हमतुमकों जान्यो ॥ तवतुम गिरिगोवर्द्धन मान्यो ॥३ ॥ इंद्र आय चढहें व्रजउपर ॥ यहकहिकें नहीं राखों भूपर ॥४ ॥ नेक कछु नहि बासों व्हेहे ॥ फिर पाछो अपने घर जैहे ॥५ ॥ सूरस्याम गिरिवरकी बानी ॥ व्रजजन सुनत सत्यकर मानी ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (३३) कौतुक देखत सुरनर भूले ॥ रोमरोम गदगद सब फूले ॥१ ॥ सुरविमान सुमनन्न बरखाये ॥ जयध्वनि शब्द देव नर गाये ॥२ ॥ देव कह्यो व्रजवासिनसों तब ॥ पूजाभली करी मेरी सब ॥३ ॥ जावो सबे मिलसदन करो सुख ॥ स्याम कहत गिरि गोवर्धन मुख ॥४ ॥ ग्वाल करत स्तुति सब ठाढे ॥ भाव भक्तिचित सबके बाढे ॥५ ॥ भवन जावो कहें श्रीमुखबानी ॥ भोजन शेष स्याम कर आनी ॥६ ॥ वांट प्रसाद सबनकों दीनों ॥ व्रजनारी नर आनन्द कीनों ॥७ ॥ सूरस्याम गोपन सुखकारी ॥ चलो कह्यो व्रजकों नरनारी ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (३४) दोउकर जोर भये सब ठाडे ॥ धन्य धन्य भक्तनके चाडे ॥१ ॥ तुमभोक्ता तुमही प्रभुदाता ॥ अखिल ब्रह्मांड लोकके ज्ञाता ॥२ ॥ तुमकों भोजन कोन करावे ॥ हितके वश तुमकों कोउपावे ॥३ ॥ तुमलायक हमारे कछुनाईं ॥ सुनत स्यामठाडे मुसिकाईं ॥४ ॥ ललिता सखी देवता चीन्हों ॥ चंद्रावलि राधे कहि दीनों ॥५ ॥ देवबडो यह कुंवर कन्हाई ॥ कृपाजान हरिताहि चिन्हाई ॥६ ॥ सूरश्याम कहि प्रगट सुनाई ॥ भये तृप्ति भोजन गिरिराई ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (३५) परसत चरण चलत सब घरकों ॥ जात चले सब घोष नगरकों ॥१ ॥ सुख समेत मग जात चलेसब ॥ दूनी भीर भई तबतें अब ॥२ ॥ को आगें को पाछें आवत ॥ मारगमें कहुं ठौर न पावत ॥३ ॥ प्रथमहि गये डगरतिन पाये ॥ पाछें लोगन जे पछिताये ॥४ ॥ घर पोहोंचे अबही नहि कोई ॥ मारगमें अटके सब लोई ॥५ ॥ डेरापरे कोस चोरासी ॥ इतने लोग जुरे व्रजवासी ॥६ ॥ पेंडे चलन नहीं कोउ पावत ॥ कितेक दूर व्रज बूझत आवत ॥७ ॥ सूरश्याम गुण नागर सागर ॥ नौतन लीला करी उजागर ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (३६) कोउ पहोंचे कोउ मारगमांहीं ॥ बहुत गये घर बहुतकजाहीं ॥१ ॥ काहूके मन कहुं दुखनाहीं ॥ अरस परस हँसहँस लपटाहीं ॥२ ॥ आनंद करत सबे व्रजआये ॥ निकट जान लोगन नियराये ॥३ ॥ भीरभइ व्रज खोरि जहांतहां ॥ जेसें नदी मिलत सागर महां ॥४ ॥ नरनारी सरिता सब आगर ॥ सिंधु मानों यह घोख उजागर ॥५ ॥ मथनहार हरि रत्नकुमारी ॥ ललितादिक चंद्रावलि प्यारी ॥६ ॥ सूरस्याम आये नंदशाला ॥ पोंहोंचे आय घरन नंदलाला ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (३७) बडोदेवता कान्ह पुजायो ॥ ग्वाल गोप हंस अंक मिलायो ॥१ ॥ कान्ह धन्य धन यशोमति जायो ॥ धन्यधन्य देव प्रकट दरसायो ॥२ ॥ पूजामेट इंद्र गिरि पूजो ॥ परसन हमहि सदां प्रभुहूजो ॥३ ॥ कहा इंद्र बपरो किहिं लायक ॥ गिरिदेवता सबनके नायक ॥४ ॥ सूरदास प्रभुके गुण ऐसे ॥ भक्तन वश दुष्टन के नेंसे ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (३८) हरि सबके मन यह उपजाई ॥ सुरपति निंदित गिरिहिं बडाई ॥१ ॥ वरस वरस प्रति इंद्रपुजाई ॥ कबहूं परसन भयो न आई ॥ पूजत रहे वृथाहीं सुरपति ॥ सब मुख यह वानी धरणीप्रति ॥३ ॥ बडोदेव ये गिरि गोवर्द्धन ॥ यहे कहत गोकुल व्रज पुरजन ॥४ ॥ तहां दूत

तब इन्द्रपठाये ॥ ब्रजको सुख देखन वह आये ॥५ ॥ घरघर कहत बात नरनारी ॥ दूत सुन्यो सो श्रवण पसारी ॥६ ॥ मानत गिरि निंदित सुरपतिकों ॥ हँसत त ब्रजलोगन मतिकों ॥७ ॥ सूर सुनत दूतन रिसपाये ॥ भाग तुरत सुरलोकहिं आये ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (३९) ब्रह्मदई जाकों ठकुराई ॥ तेतिस कोटि देवनके राई ॥१ ॥ गिरि पूज्यो तिनकों विसराई ॥ जाति मति इनके मन आई ॥२ ॥ शिव विरंचि जाकों कहें लायक ॥ जाके हें मेघनसे पायक ॥३ ॥ यहे कहत आये सुर लोकहिं ॥ पोहोंच्ये जाय इंद्रके ओकहिं ॥४ ॥ दूतन वेसी जाय सुनाई ॥ बैठे जहां सुरनके राई ॥५ ॥ करजोरें सन्मुख भये आई ॥ बूझ उठे व्रजकी कुशलाई ॥६ ॥ दूतन व्रजकी बात सुनाई ॥ तुमहि मेट पूज्यों गिरिराई ॥७ ॥ तुमहि निंदित गिरिवरहिं बडाई ॥ यह सुनत रिसदेह कंपाई ॥८ ॥ सूरस्याम यह बुद्धि उपाई ॥ नाजाने व्रजमें यदुराई ॥९ ॥

□ राग बिलावल □ (४०) ग्वालन मोसों करी ढिठाई ॥ मोकों अपनी जाति दिखाई ॥१ ॥ तेतिस कोटि सुरनको राई ॥ तीन भुवन भर चलत बडाई ॥२ ॥ साहिबसों जो करत ढिठाई ॥ ताकों नहीं कोउ पतिआई ॥३ ॥ इन अपनी परतीत घटाई ॥ मेरे वैर कित बचिहें जाई ॥४ ॥ नई रीति यह अबहि चलाई ॥ काहू इनहीं दियो बहेकाई ॥ ऐसी मति इन अबकें पाई ॥५ ॥ काकी शरण रहेंगे जाई ॥ इनदीनों मोकों विसराई ॥६ ॥ नंद आपनी प्रकृत गमाई ॥ जानी बात बुढाई आई ॥७ ॥ अहीर जाति कोई न पत्याई ॥ मातपिता नहि मानें भाई ॥८ ॥ जान बूझ इन करी ढिठाई ॥ मेरी बलि परवतहें चढाई ॥९ ॥ सूरदास सुरपति रिसपाई ॥ कीडी तन ज्यों पांखहु आई ॥१० ॥

□ राग बिलावल □ (४१) मोंकों निंदित पर्वत वंदित ॥ चारा कपट पंछीज्यों फंदत ॥१ ॥ मरनकाल एसी बुद्धि होई ॥ कछूकरत कछु होइहे

जोई ॥२ ॥ खेलत खात रहत व्रज़भीतर ॥ न्हानेलोग तनकधन ईतर ॥३ ॥ समें समें बरखों प्रतिपालों ॥ इनकी बुद्धि इनकों अबघालों ॥४ ॥ मेरे मारत कोन राखिहे ॥ अहीरनके मन यहक राखिहे ॥५ ॥ जो मन जाके सोई फल पावे ॥ नींब लगाय आम क्यों आवे ॥६ ॥ विषके वृक्ष विषही फलफलिहें ॥ तामें दाख कहो क्यों मिलिहें ॥७ ॥ अग्नि बरत देखत कर नावे ॥ कहा करे जिहिं अग्नि जरावे ॥८ ॥ सूरदास यह सबकोऊ जाने ॥ जो जाकों सो ताकों माने ॥९ ॥

□ राग बिलावल □ (४२) पर्वत पहेलें खोदि बहाऊं ॥ वज्रन मार पाताल पठाऊं ॥१ ॥ फूलफूल जिन पूजा कीनो ॥ नेंक न राखों ताकों चीन्हो ॥२ ॥ नंद गोप नयनन यह देखें ॥ बडे देवताको मुख पेखें ॥३ ॥ निंदित मोहि करी गिरिपूजा ॥ जासों कहत ओर नहि दूजा ॥४ ॥ गर्व करत गोवर्द्धन गिरिको ॥ पर्वत मांहि आहि कहा किरको ॥५ ॥ डूंगरको बल इनहि दिखाऊं ॥ ता पाछें व्रजखोद बहाऊं ॥६ ॥ राखों नहीं काहू सब मारों ॥ व्रजगोकुलको खोज निवारों ॥७ ॥ को जाने कहां गिरि कहां गोकुल ॥ भूपर नहीं राखों उनको कुल ॥८ ॥ सूरदास यह इंद्र प्रतिज्ञा ॥ व्रजवासिन सब करी अवज्ञा ॥९ ॥

□ राग बिलावल □ (४३) देख इंद्र मन गर्वबढायो ॥ व्रजलोगन मोकों विसरायो ॥१ ॥ अहीर जाति ओछी मतिकीनी ॥ मेरी पुजा गिरिकों दीनी ॥२ ॥ पुजत गिरिहि कहा मति आई ॥ गिरि समेत व्रजदेहु बहाई ॥३ ॥ देखों धों कितनों सुखपेहें ॥ मेरे मारत कोन बचेहें ॥४ ॥ परवत तब इनकों क्यों राखत ॥ वारवार यह कहिकहि भाखत ॥५ ॥ पूजत गिरि अति प्रेमबढाये ॥ सपनेको सुखलेत मनाये ॥६ ॥ सूरदास सुरपतिकी वानी ॥ व्रजबोरों प्रलयके पानी ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (४४) सुरपति क्रोध कियो अति भारी ॥ फरकत अधर नयन रतनारी ॥१ ॥ भृत्यन बुलावत देदेगारी ॥ मेघन लावो तुरत

हंकारी ॥२॥ इतनो कहत धाये सहचारी ॥ अति डरपे तनकी सुधिहारी ॥३॥ मेघवर्त जलवर्त बुलाबो ॥ सेना साज तुरत ले आवो ॥४॥ कापर क्रोध कीयो अमरापति ॥ महाप्रलय जिन जानि डरे अति ॥५॥ मेघनसों यह बात सुनाई ॥ तुरत चलो बोले सुरराई ॥६॥ सेना सहित बुलाये तुमकों ॥ रिसकर तुरत पठाये हमकों ॥७॥ वेग चलो कछु विलंब न लावो ॥ हमही कह्यो अबही ले आवो ॥८॥ मेघवर्त सब सैन्य बुलाये ॥ महाप्रलयके जे सब आये ॥९॥ कछु हरखे कछु मनहि संकाने ॥ प्रलय आहिके हमहि रिसानें ॥१०॥ चूक परी हमते कछुनाहीं ॥ यह कहि कहि सब तुरतई जाहीं ॥११॥ मेघवर्त जलवर्त वारिवर्त ॥ अनिलवर्त अनलवर्त वज्रवर्त ॥१२॥ बोलत चले आपनी बानी ॥ प्रभु सन्मुख सब पहुँचे आनी ॥१३॥ गरज गरज घहरातहि आये ॥ देव देव कहि मांथ नवाये ॥१४॥ सूरदास डरपत सब जलधर ॥ हम पर क्रोध किधों काहू पर ॥१५॥

□ राग बिलावल □ (४५) चितवतही सब गये जुराई ॥ सकुच कह्यो कापर रिस राई ॥१॥ क्षमाकरो आयुश हम पावें ॥ जापर कहोतिंहींपर धावें ॥२॥ सेन सहित प्रभु हमहिं बुलाये ॥ आज्ञा सुनत तुरत उठ धाये ॥३॥ ऐसो कोंन जाहि प्रभुकोपे ॥ जीव नाम सब तुम्हारे रोपे ॥४॥ सूर कही यह मेघन बानी ॥ यह सुनसुन रिस कछुक बुझानी ॥५॥

□ राग बिलावल □ (४६) मेघनसों बोले सुरराई ॥ अहीरन मोसों करी ढिठाई ॥१॥ मेरी दीनी करत बडाई ॥ जान बूज मोहि दियो भुलाई ॥२॥ सदां करत मेरी सेवकाई ॥ अब सेवत पर्वतकों जाई ॥३॥ यही काज तुमकों हंकराये ॥ भलीकरी सेना ले आये ॥४॥ वेगवेग सब ब्रजहीं जावो ॥ पहलें पर्वत खोदि बहावो ॥५॥ जब यह सुनी इंद्रकी बानी ॥ मेघनके मन धीरज आनी ॥६॥ सूरदास यह सुन घनतमके ॥ कापर क्रोध करत प्रभु जमके ॥७॥

□ राग बिलावल □ (४७) रिसलायक तापर रिसकीजे ॥ जिहिं रिसतें प्रभु देही न छीजे ॥१ ॥ तुम प्रभु हमसे सेवक जाके ॥ एसो कोन रहत तुमताके ॥२ ॥ छीनहीमें व्रज धोय वहावें ॥ डुंगरको नही नाम बचावे ॥३ ॥ आप क्षमा करियें देवराई ॥ हम करिहें उनकी पोहोंनाई ॥४ ॥ यह सुनकें हरषित चित कीनों ॥ आदरसहित पान कर दिनों ॥५ ॥ प्रथमही देहो पहार वहाई ॥ मेरी बलिहे उन सबखाई ॥६ ॥ सूर इंद्रमेघन समझावत ॥ हरख चले घन आदर पावत ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (४८) आयुस पाय तुरतही धाये ॥ अपनी सेना सबन बुलाये ॥१ ॥ कह्यो सबन व्रज उपर आवो ॥ घटा घोर कर गगन छिपावो ॥२ ॥ मेघवर्त जलवर्त जुआगें ॥ ओर मेघ सब पाछेंलागें ॥३ ॥ गरज उठे व्रज उपर जाई ॥ शब्द कियो यह घात सुनाई ॥४ ॥ व्रजके लोग डरे अति भारी ॥ आज घटा देखियतहें कारी ॥५ ॥ देखत देखत अति अधिकायो ॥ नेंकहीमें रवि गगन छिपायो ॥६ ॥ ऐसे मेघ कबहूं नहि देखे ॥ अतिकारे काजर अबरेखे ॥७ ॥ सुनो सूर ये मेघ डरावन ॥ व्रजवासी सब कहत भयावन ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (४९) गरज गरज व्रज घेरत आवें ॥ तरक तरक चपला चमकावें ॥१ ॥ नरनारी सब देखत ठाढे ॥ ये वादर परलेके काढे ॥२ ॥ दरदरात घहरात प्रबल अति ॥ गोपी ग्वाल भये औरे गति ॥३ ॥ कहा होंन अबही यह चाहत ॥ जिहिं तिहिं लोग यहे अवगाहत ॥४ ॥ क्षण भीतर क्षण बाहिर आवत ॥ गगनदेख धीरज विसरावत ॥५ ॥ सूरश्याम यह करी पुजाई ॥ तातें सुरपति चढ्यो रिस्याई ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (५०) फिरत लोग जहाँतहाँ विडराने ॥ कोहे अपने कोन विराने ॥१ ॥ ग्वाल गये जे धेनु चरावन ॥ तिनहिं पर्यो वनमांझ परावन ॥ गाय वच्छ कोऊ न सम्हारें ॥ प्रलय कालके जलद निहारें ॥३ ॥

भागे आवत व्रज भीतरकों ॥ विपति परी अति वन ग्वालनकों ॥४ ॥ अंध धुंध मग कहूं न सूझें ॥ व्रजभीतर व्रजहीकों बूझें ॥५ ॥ जेसें तेसें व्रज पेहेंचानत ॥ अटक रहे अटकरकर आनत ॥६ ॥ खोजत फिरत आपने घरकों ॥ कहा भयो यह घोषनगरकों ॥७ ॥ रोवत डोलत घरहि न पावें ॥ घर द्वारें घरकों विसरावें ॥८ ॥ सूरश्याम सुरपति विसरायो ॥ गिरिके पूजे यह फलपायो ॥९ ॥

□ राग बिलावल □ (५१) यमुना जलही गईं जे नारी ॥ डार चलीं गागर सिरभारी ॥१ ॥ देखो में बालक कित छांड्यो ॥ एक कहत आंगन दधि मांड्यो ॥२ ॥ एक कहत मारग नहि पावत ॥ एकश्यामहि बोल सुनावत ॥३ ॥ व्रजवासी सब अति अकुलाने ॥ काल्हही पूज्यो फल्यो बिहाने ॥४ ॥ कहां रहे अब कुंवर कन्हाई ॥ गिरि गोवर्धन लेहो बुलाई ॥५ ॥ जेंमत सहस्त्र भुजा धरि आवें ॥ अजहू भुज हमकों दिखरावें ॥६ ॥ ये देवता खातही तांके ॥ पूछे पुन तुम कोंनकहांके ॥७ ॥ सूरश्याम सपनो प्रकटायो ॥ घरको देव सबन विसरायो ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (५२) गरजत घन अतिही घहरावत ॥ कान्ह सुनत आनंद बढावत ॥१ ॥ कौतुक देखत व्रज लोगनके ॥ निकट रहत संगही संगजिनके ॥२ ॥ एकसेंतत घरके सब वासन ॥ लीने फिरत घरहीके पासन ॥३ ॥ एक कहत जीयकी नहिं आशा ॥ देखत सबे दुष्टके नाशा ॥४ ॥ सूरश्याम जानत ये गासा ॥ कहा पानी कहा करे हुतासा ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (५३) मेघवर्त मेघन समझावत ॥ वारवार गिरि तनहि बतावत ॥१ ॥ परवत पर वरसो तुम जाई ॥ येह कही हमसों सुरराई ॥२ ॥ एसें देहो पहार बहाई ॥ नाम रहे नहिं ठोर जनाई ॥३ ॥ सुरपतिकी बलि इन सब खाई ॥ ताको फल पावे गिरिराई ॥४ ॥ जेंमत काल्हि अधिक रुचिपाई ॥ सलिल देहुं जिहिं तृषा बुझाई ॥५ ॥ दिनाचार रहेते जग-

ऊपर ॥ अब न रहेन पावेंगे भूपर ॥६ ॥ सूर मेघ सुरपतिही पठाये ॥ व्रजके लोगन तुमहि वहाये ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (५४) वरखतहें घन गिरिके ऊपर ॥ देख देख व्रजलोक करत डर ॥१ ॥ व्रजवासी सब कान्ह बतावत ॥ महाप्रलय जल गिरिहिं ढहावत ॥२ ॥ झरझरात झरपत झरलावत ॥ गिरि धोई व्रज ऊपर आवत ॥३ ॥ विकल देख गोकुलके वासी ॥ दरश दीयो सबकों अविनाशी ॥४ ॥ अविनाशीको दरशन पाये ॥ तब सब मन परतीत बढाये ॥५ ॥ नंद यशोदा सुत हित जाने ॥ ओर सबे मुख स्तुतिहीं गाने ॥६ ॥ करषत गिरि वरखत ब्रज उपर ॥ सो जल जहां तहां भूवऊपर ॥७ ॥ सूरदास प्रभु राखलेहु अब ॥ जैसें राखे अघावदन तब ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (५५) राखि लेहो गोकुल ब्रजनायक ॥ तुमही पूरण ब्रह्म सब लायक ॥१ ॥ तुम बिन कोन सहाय हमारे ॥ नंदसुवन अब शरण तिहारे ॥२ ॥ शरण शरण सब ब्रजजन बोले ॥ धीरे वचन दे ले दुखमोले ॥३ ॥ यह बोले हँस कृष्णमुरारी ॥ गिरि करधर राखों नरनारी ॥४ ॥ सूरश्याम चितये गिरिवर तन ॥ विकल देख गो गोसुत व्रजजन ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (५६) गोवर्द्धन लीनो उचकाई ॥ देख विकल नरनारि कन्हाई ॥१ ॥ अपने सुख व्रज जन वितताये ॥ बूंद बहुत व्रजपर वरखाये ॥२ ॥ वे डरपत ओर हरषत मनमन ॥ राखे जहांतहां सब व्रजजन ॥३ ॥ घरके देख मनहिं सुखदीनों ॥ वामभुजा गिरिवर कर लीनों ॥४ ॥ सूरश्याम गिरि करधर राख्यो ॥ धीरज वचन सबनसों भाख्यो ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (५७) श्याम धर्यो गिरि गोवर्द्धन कर ॥ राखलिये ब्रजपुर नारीनर ॥१ ॥ गोकुल ब्रज राख्यो सब घरघर ॥ आनंद करत सबे

ताहीतर ॥२ ॥ वरखत मुशलधार मेघवर ॥ बूंद न आवत नेकहुं भूपर ॥३ ॥ धार अखंडित वरखतहैं झर ॥ कहत मेघ धोवो ब्रज गिरिवर ॥४ ॥ सलिल प्रलयको टूटत तरतर ॥ बजत शब्द बादरको घरघर ॥५ ॥ वे जानत जलजातहे दरदर ॥ वीचहि जरत जात जल अंबर ॥६ ॥ सूरदास प्रभु कान्ह गर्वहर ॥ हरषत कहत गयो गिरिको जर ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (५८) बोल लिये सब ग्वाल कन्हाई ॥ टेको गिरिगोवर्द्धन आई ॥१ ॥ आज सबे मिलहोहु सहाई ॥ हँसत देख बलराम कन्हाई ॥२ ॥ लकुट लियें कर टेकन जाई ॥ कहत परस्पर लेहु उठाई ॥३ ॥ वरखत इंद्र महा झर लाई ॥ अति जल देख सखा डरपाई ॥४ ॥ नंदनंदन विन को गिरि धारे ॥ एसे बलबिन कोन संभारे ॥५ ॥ नखतें गिरे कोन पुन राखे ॥ वारवार यह कहिकहि भाखें ॥६ ॥ सूरश्याम गिरिवर कर लीनो ॥ वरखत मेघ चक्रित मन कीनो ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (५९) बात कहत आपसमें बादर ॥ इंद्र पठाये करि हम आदर ॥१ ॥ अब देखियत कछु होत निरादर ॥ वरख वरख घन भये मनकादर ॥२ ॥ खीजत मेघ कहत सबहीसों ॥ वरखि कहा कीनों तबहीसों ॥३ ॥ महा प्रलयको जल कहां राखत ॥ डारदेहो व्रजपर कहा ताकत ॥४ ॥ क्रोध सहित वरषन फिरलागे ॥ ब्रजवासी आनंद अनुरागे ॥५ ॥ ग्वाल कहत धन्य धन्य कन्हैया ॥ वाम भुजा गिरि लियो उठैया ॥६ ॥ सूरश्याम तुम सर कोऊ नाईं ॥ वरषत घन गिरि देख खिस्याईं ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (६०) प्रलय मेघ आये ले बानें ॥ आपुसहीमें सबे रिस्यानें ॥१ ॥ सात दिवस जल वरखि सिराने चक्रित भये तन सुरत भुलाने ॥२ ॥ फिर देखत जल कहां ठहराने ॥ महाप्रलय के सबन

झराने ॥३ ॥ जोरजोर बादर बितताने ॥ बूंद नहीं घन नेंकु बचाने ॥४ ॥ जलद आपकों धिक करमाने ॥ फिर सब चले अतिही विकलाने ॥५ ॥ सूरस्याम गोवर्धन राने ॥ मूरख इंद्र अजहूं नहि जाने ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (६१) मेघ चले मुख फेर अमरपुर ॥ करी पुकार जाय आगेंसुर ॥१ ॥ श्रमतें टूट गये सबके उर ॥ जल बिन सबे भये घन धूंधर ॥२ ॥ के मारो के शरण उबारो ॥ हममें कहा रह्यों अबगारो ॥३ ॥ जहांतहां बादर रोवत डोलें ॥ श्रम अपनो प्रभु आगें खोलें ॥४ ॥ सात दिवस नहिं मिटी लगार ॥ वरख्यो सलिल अखंडित धार ॥५ ॥ महाप्रलय जलनेंक न उबर्यो ॥ व्रजवासिन नीकें अब निदर्यो ॥६ ॥ वेसोही गिरि वेसे व्रजवासी ॥ नेक बूंद नहीं धरणि प्रकासी ॥७ ॥ सूरपति सूरजिय सुनत उदासी ॥ देखो यों आये जलरासी ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (६२) चक्रित भयो व्रज वात सुनाई ॥ पुनपुन पूछत मेघ बुलाई ॥१ ॥ कहां गयो जल प्रलय कालको ॥ कहा कहें सबतन विहालको ॥२ ॥ कहा करें अपनों बलकीनो ॥ व्याकुल होय रोय तब दीनों ॥३ ॥ दंड एक वरसे मनलाई ॥ पूरण होत गगनलों आई ॥४ ॥ पर्वतमें कोउहे अवतार ॥ सुरपति मन यह करत विचार ॥५ ॥ सूर इंद्र सुरगण हंकराये ॥ आज्ञा सुनत तुरत उठधाये ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (६३) सुरपति आगें भये सब ठाढे ॥ चिंता सबहिनके मन बाढे ॥१ ॥ कोंन काज सुरराज बुलाये ॥ सकुच सहित सब पूछन आये ॥२ ॥ कहा कहों कछु कहत न आवे ॥ मेघनकी गति सुरन बतावे ॥३ ॥ व्रजवासी मोकों विसरायो ॥ भोजन ले सब गिरिहि चढायो ॥४ ॥ मोकों मेंट परवतही थाप्यो ॥ तबमें थरथराय रिस कांप्यो ॥५ ॥ सूरदास यह सुरन सुनाई ॥ ताकारन तुम लिये बुलाई ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (६४) सुरन कही सुरपतिके आगें ॥ सन्मुख होत सकुच हमें लागें ॥१ ॥ सकुचत कित सो बात सुनावो ॥ नीकें करमोकों समुजावो ॥२ ॥ नीकी भांत सुनों सुरराई ॥ व्रजमें ब्रह्म प्रकट भये आई ॥३ ॥ तुम जानत जब धरनि पुकारी ॥ पापहि पाप भई

अतिभारी ॥४ ॥ पोढे शेष संग श्रीप्यारी ॥ ते व्रज भीतर रहे वपु धारी ॥५ ॥ ब्रह्मकथा कहि आदि पसारी ॥ तिनसों तुम कीनी अधिकारी ॥६ ॥ सूरदास प्रभु गिरिवरधारी ॥ यह सुन इंद्र डर्यो मन भारी ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (६५) यह मोकों तबही न सुनाई ॥ में बहूत किनी अधमाई ॥१ ॥ पुरण ब्रह्म रहे व्रजआई ॥ सुरन कही नहि करी भलाई ॥२ ॥ आज कह्यो जब महत गमाई ॥ काहूने मोहि सुधि न दिवाई ॥३ ॥ यह सुन अमर गये शरमाई ॥ सुनो राज हम जान न पाई ॥४ ॥ अब सुनिये आपन मन लाई ॥ व्रजही चलो नहि और उपाई ॥५ ॥ वेहें कृपासिंधु करुणा कर ॥ क्षमा करेंगे श्रीसुंदरवर ॥६ ॥ और कछू मनमें जिन आनो ॥ हमजो कहें सत्य कर मानो ॥७ ॥ सूर सुरन यह बात सुनाई ॥ सुरपति शरण चल्यो अकुलाई ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (६६) जब जान्यों व्रज देवमुरारी ॥ उतर गई सब गर्व खुमारी ॥१ ॥ व्याकुल भयो डर्यो जिय भारी ॥ अनजानें कीनी अधिकारी ॥२ ॥ बैठ रहेतें नहि बनि आवे ॥ ऐसो को अब मोहि बचावे ॥३ ॥ वारवार यह कहि पछितावे ॥ जाओ शरण विलंब नहि भावे ॥४ ॥ जाय परो चरणन शिरधारो ॥ के मारो के मोहि उगारो ॥५ ॥ अमरन कह्यो करो असवारी ॥ ऐरावतकों लेहु हंकारी ॥६ ॥ सूर शरण सुरपति चल्यो धाई ॥ लिये अमरगण संग लगाई ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (६७) करत विचार चल्यो सन्मुख व्रज ॥ लटपटात पग धरत धरणिगज ॥१ ॥ कोटि इंद्र जाके रोमन रज ॥ व्रज अवतार लियो माया तज ॥२ ॥ उतर गगन पोंहोंमी पर आये ॥ मनमन सोच करत डरलाये ॥३ ॥ चक्रत भये मन श्रवण भ्रमाये ॥ येधों कोन कहांते आये ॥४ ॥ कहत सुनी लोगन मुखवात ॥ एहीहे सुरपति सुर ज्ञात ॥५ ॥ देख सेंन व्रजलोग संकात ॥ ये आयो कीने कछु घात ॥६ ॥ सूरश्यामकों जाय सुनायो ॥ सुरपति सेन साजि व्रज आयो ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (६८) निकट जान त्याग्यो वाहनकों ॥ व्रजबाहिर

राख्यो ताहिनकों ॥१॥ सकुचत चल्यो कृष्णके सन्मुख ॥ कछू आनंद कछू मनमें दुख ॥२॥ पर्यो धाय चरणन शिरनाई ॥ कृपासिंधु राखो शरणाई ॥३॥ किये अपराध बहुत बिन जाने ॥ प्रभु उठाय लिये मुसिकाने ॥४॥ श्रीमुख कह्यो उठो सुरराज ॥ वदन उठाय सकत नहि लाज ॥५॥ ये दिन वृथा गये वे काज ॥ तुमकों नहि जान्यों व्रजराज ॥६॥ सूरश्याम लीनों उर लाई ॥ अशरण शरण निगम यह गाई ॥७॥

□ राग बिलावल □ (६९) हँसहँस कहत कृष्ण मुखबानी ॥ हमनांही रिस तुमपर आनी ॥१॥ तुम कित अति शंका जियमानी ॥ भलीकर व्रज वरख्यो पानी ॥२॥ यहसुन इंद्र अतिहि सकुचान्यों ॥ व्रज अवतार नही में जान्यों ॥३॥ राखराख त्रिभुवनके नाथ ॥ नहि मोसो कोउ और अनाथ ॥४॥ फिरफिर चरण धरत ले माथ ॥ क्षमा करो मोहि राखो साथ ॥५॥ रवि आगें खद्योत प्रकाश ॥ मणि आगें ज्यों दीपकनाश ॥६॥ कोटि ब्रह्म शिव कोटि अविनास ॥ मो गरीबकी केतिक आस ॥७॥ दीन वचन सुन भवके वास ॥ क्षमाकरो जल पर्यो हुतास ॥८॥ अमरापति चरणन तर लोटत ॥ रही नहीं उरमें कछ खोटत ॥९॥ उभय भुजा कर लियो उठाय ॥ सुरपति शीश अभय कर नाय ॥१०॥ हँस दीनी प्रभु लोग बडाई ॥ श्रीमुख कह्यो करौ सुख जाई ॥११॥ जयजय ध्वनि सब देवन गाई ॥ धन्य धन्य जनके सुखदाई ॥१२॥ शिव विरंचि सनकादिक नारद ॥ गौरी सुत दोऊ संग शारद ॥१३॥ रवि शशि वरुण अनल यमराज ॥ आज भये सब पूरण काज ॥१४॥ अशरण शरण सदां तुम बानो ॥ यह लीला प्रभु तुमही जानो ॥१५॥ मातासों सुत करे ढिठाई ॥ माता फिरताकों सुखदाई ॥१६॥ ज्यों धरणी हल खोद विनाशे ॥ सन्मुख सतगुण फलहि प्रकाशे ॥१७॥ कर कुठार ले तरुहि गिरावे ॥ वह काटे वह छायापावे ॥१८॥ जैसें दशन जीभ दलि जाई ॥ तब कासों सो करे रिसाई ॥ १९ ॥ धन्य व्रज धन्य गोकुल वृंदावन ॥ धन्य यमुना धन्य लता कुंजवन ॥२०॥ धन्य नंद धन्य जननि यशोदा ॥ बाल केलि प्रभुकरे समोदा ॥२१॥ स्तुति सुन मन हरख बढायो ॥ साधुसाधु कही सुरन

सुनायो ॥२२ ॥ तुमही जाय जब मोहि जगायो ॥ तुमारेई काज देह धर आयो ॥२३ ॥ तुम राखों असुरन सिंघारों ॥ तनु धरी धरणी भार उतारों ॥२४ ॥ आवत जात बहुत श्रम पायो ॥ जावो भवन कर कृपा पठायो ॥२५ ॥ कर सिर धर धर चले देव गन ॥ पहुंचे अमर लोक आनंद मन ॥२६ ॥ यहलीला सुर घरन सुनाई ॥ गाय उठीं सुरनारि बधाई ॥२७ ॥अमरलोक आनन्द भयो सब ॥ हरख सहित सुरपति आये जब ॥२८ ॥ सूरदास सुरपति अति हरख्यो ॥ जयजय ध्वनि सुमनन व्रज वरख्यो ॥२९ ॥

□ राग बिलावल □ (७०) हरि करतें गिरिराज उतार्यो ॥ सात दिवस जल प्रलय संभार्यो ॥१ ॥ ग्वाल कहत केसें गिरिधार्यो ॥ केसें सुरपति गर्व निवार्यो ॥२ ॥ वज्रायुध जलवरष सिरानों ॥ पर्यो चरण जब प्रभु करि जान्यों ॥३ ॥ यह करतूत करत तुमकेसें ॥ हमसे सदां रहतहो तेसें ॥४ ॥ हमहि मिले तुम गाय चरावत ॥ नंद यशोदा सुवन कहावत ॥५ ॥ देख रहीं सब गोप कुमारी ॥ कोटि काम छबिपर बलहारी ॥६ ॥ करजोरत रवि गोदपसारे ॥ गिरिवरधर पति होउ हमारे ॥७ ॥ ऐसो गिरिगोवर्द्धन भारी ॥ कब लीयो कब धर्यो उतारी ॥८ ॥ तनक तनक भुज तनक कन्हाई ॥ यह कहि उठी यशोदामाई ॥९ ॥ केसें पर्वत लियो उठाई ॥ भुज चांपत चुंबत बलजाई ॥१० ॥ वारंवार निरख पछिताई ॥ हंसत देख ठाडे बलभाई ॥११ ॥ इनकी महिमा काहु न पाई ॥ गिरिवर धर्यो यहे बहुताई ॥१२ ॥ एक एक रोंम कोटि ब्रह्मांड ॥ रवि शशि गगन धरणि नव खंड ॥१३ ॥ यह व्रज जन्म लियो केवार ॥ जहांतहां जलथल अवतार ॥१४ ॥ प्रकट होत भक्तनके काज ॥ ब्रह्मा कीट सबनके राज ॥१५ ॥ जहांजहां गांठ परे तहां आवे ॥ गरुड छांड तासन्मुख धावे ॥१६ ॥ व्रजहीमें नित करत विहारन ॥ यशुमति भाव भक्तन हित कारन ॥१७ ॥ यहलीला इनकों अतिभावे ॥ देह धरें पुनपुन प्रकटावे ॥१८ ॥ नेक तजत नहीं व्रज नरनारी ॥ इनके सुख गिरि धरत मुरारी ॥१९ ॥ गर्ववंत सुरपति चढआयो ॥ वाम करज गिरि टेक

उठायो ॥२० ॥ ऐसेहें प्रभु गर्वप्रहारी ॥ भुज चुंबति यशुमति महेतारी ॥२१ ॥ यह लीला जो नितप्रति गावे ॥ आपुन सीखे और सिखावे ॥२२ ॥ सुनें सीख पढ मनमें राखे ॥ प्रेम सहित पुन मुखतें भाखे ॥२३ ॥ भक्ति मुक्तिकी केतिक आस ॥ सदांरहत हरि तिनके पास ॥२४ ॥ चतुरानन जाको यश गावत ॥ शेष सहस्त्रमुख जाहि वखानत ॥२५ ॥ आदि अन्त कोऊ नहि पावे ॥ जाकों निगम नेतिनेति गावे ॥२६ ॥ सूरदास प्रभु सबके स्वामी ॥ शरण राख मोहि अंतर्यामी ॥२७ ॥

गोवर्धन लीला अन्नकूट के पद

□ राग बिलावल □ (१) गोदबैठ गोपाल कहत व्रजराजसों ॥ अहो तात एक बात श्रवण दे सुनोजो मेरी ॥ भवनमांझहों गयो धरी जहां सोंज घनेरी ॥ में हँस माँग्यो मायपें भोजनदेरी मोहि ॥ कर लकुटी ले यों कह्यो यह क्यों देहों तोहि ॥१ ॥ क्षुधितजानकें नेह रोहिनी निकट बुलायो ॥ दुधप्याई चुचुकार शीखदे कंठ लगायो ॥ यह बलि भुक्ते देवता कह्यो हरें लगकान ॥ तातें रचि पचि करतहें शाक पाक पकवान ॥२ ॥ यह निश्चय कर कहो कोनसो देव तुम्हारो ॥ जो इतनी बलि खाय काज कहा करे हमारो ॥ कहा देवको नामहे कोन लोकको नाथ ॥ इकलोही भोजनकरेके ले अपनों गणसाथ ॥३ ॥ सुनो श्याम चित लाय देवकी कहूं कहानी ॥ आगम निगम पुराण कहें ऋषिवर मुनि ज्ञानी ॥ सब सुखनिधि सुर लोकहे कहीयत ताको ईश ॥ सेवतहें सब देवता जाहि कोटितेंतीस ॥४ ॥ जाके अनुचर मेघ वरष जल धरणी पोषें ॥ अन्नादिक फल फूल निपज परजा संतोषे ॥ बहु तृण उपजें पशुनकों भरे सरोवर तोय ॥ देव दिवारी पूजिये तो व्रज अति सुख होय ॥५ ॥ एक बात हों कहूं बावा जो सांची मानो ॥ ऐसे अनुचर कोटि कोटि कहि कहा बखानो ॥ अश्वमेध शततें लहे इंद्रासनको भोग ॥ व्रजरज कण पावे नहीं कोटि यज्ञ तप योग ॥६ ॥ सो प्रभु अबही

चलो तुम्हें हों निकटबताऊं॥ मन भावे तब बोल आपने संगखिलाऊं॥ गोवर्द्धनकी तरहटी हम वच्छ चरावन जांय॥ अखिल लोकके नाथसों छाक वांट हम खांय॥७॥ ब्रह्मा शिव मुनि रटें तनक पावे न वसेरो॥ काटे विघ्न अनेक सदां व्रज वासिन नेरो॥ वेद उपनिषदमें कह्यो सो गोवर्द्धन राय॥ बडरे बैठ विचार मतोकर गोधन पूजो आय॥८॥ भये नंद मनमुदित बडे सब गोप बुलाये॥ कान्ह कहें सो करो भये सबहिन मन भाये॥ शकट पूतना आदि दे डारे विघ्न नसाय॥ गिरि प्रताप चिरकालतें थिर व्रजवास वसाय॥९॥ हरख नंद उपनंद सकल व्रज दई दुहाई॥ सुरपति पूजा मेंट राजा गोवर्द्धनराई॥ आदिलोक वैकुंठलों व्रज परिपूरण सोय॥ व्रजवासिन हितकारने आये हरि गिरि होय॥१०॥ सुन व्रजवासी सकल हरख मन करी बधाई॥ कहाकरेगो इंद्र हमारो कृष्ण सहाई॥ गोपी गोसुत गायले ओर बालक संग लाय॥ गोप चले उत्साहसों पूजनकों गिरिराय॥११॥ अगणित शकट जुराय साज पूजाकी साजें॥ कान परी नहीं सुनत चहूंधां बाजन बाजें॥ व्रजनारिनके यूथसों चली यशोदा माय॥ गोधन गाय मल्हावहीं उर आनंद न समाय॥१२॥ चले नंद उपनंद आदि व्रजनंद अगाऊ॥ करत परस्पर ख्याल चले मोहन बलदाऊ॥ वृद्ध तरुण बारे सबे व्रज घर रह्यो न कोय॥ अपनो कुल पति पूजियें महा महोत्सव होय॥१३॥ दीनो दरशन शैल दूरतें शीश नवाये॥ निकट जाय प्रणाम करत अघ दूर नसाये॥ दीपदान दे नंदजू रजनी मुख चहूं ओर॥ गायन कान जगायकें बूझत नंदकिशोर॥१४॥ आज कूहूकी राति चलो परिक्रमा कीजे॥ गिरि सन्मुख निश जाग भोर बलि पूजा दीजे॥ चले हरख गिरिराजकों सबे दाहिनों देहि॥ गोवर्द्धन गोपालकी सब गोप बलैया लेहि॥१५॥ मध्य अधिदैविक रत्न खचित गिरिराज बिराजें॥ दीपमालिका चहूं ओर अद्भुत छबिछाजें॥ सकल निशा आनंदमें रजनी गई विहाय॥ विधिवत् पूजा कीजियें बलि उपहार मँगाय॥१६॥ गावत

गीत पुनीत सकल व्रजनारि सुहाये ॥ अगणित बाजे विविध अखिल व्रजराज बजाये ॥ गिरिवर प्रथम न्हवावही मानसी गंगा नीर ॥ अगणित कलशा हेमके लेनावत धौरी क्षीर ॥१७ ॥ पुन चंदन उबटाय स्वच्छ जल गिरिहीं न्हवाये ॥ अरगजा कुंकुम पोहोप चरच पटपीत उढाये ॥ धूप दीप बहु विधिकीये कुंडवारो धरभोग ॥ सुख समुद्र लहेरिन बढ्यो इन व्रजवासिन योग ॥१८ ॥ पूजाको प्रसाद देत ग्वालन मन भाये ॥ माथें टोरा बांध पीठ थापे सरसाये ॥ नंदराय आज्ञा दई आंन खिलाओ गाय ॥ कान्ह तोकसों यों कह्यो धौरी पेहेलें खिलाय ॥१९ ॥ कान्ह गहें पट पीत आन जब बोली धौरी ॥ हूंकत लेहेंडे पेलि वच्छके सन्मुख दोरी ॥ छुवत वच्छ अकुलायकें डाढ मेलि समुहाय ॥ भलीभली खेली कहें सब गोप श्यामकी गाय ॥२० ॥ खेली धूमरि गांग बुलाई काजर कारी ॥ औरें अगणित झुंड सकल गोपनकी न्यारी ॥ सुखपयोधि लहरिन बढ्यो रह्यो सकल व्रजछाय ॥ अन्नकूट विधिवत् रच्यो नाना पाक बनाय ॥२१ ॥ बहुविध व्यंजन मधुर चरपरे खाटे खारे ॥ वेसनके को गिने केईक सुकवनिके न्यारे ॥ तिन मध्य पूर्यो प्रेमसों नव ओदनको कोट ॥ मध्य चक्र चित्रित धर्यों गिरि ओदनकी ओट ॥२२ ॥ बहुत भांत पकवान नामले कोन वखानें ॥ गिनत न आवे पार परम रुचि धरे संधानें ॥ बासोंधी मिश्री सनी मिलि मृगमद घनसार ॥ नानाविधि मेवानके गिनत न आवे पार ॥२३ ॥ दधि सिखरन संयाव सेंमई पायस प्यारी ॥ वरा मगोरी बरी तिलवरी रोचक न्यारी ॥ पापर अति कोमलधरे घृत नवनीत मँगाय ॥ ओट्यो दुध धर्यों धोरीको मिश्री पनो छनाय ॥२४ ॥ तुलसी दल दे नंद पोहोप माला पहेरावें ॥ सौरभ चंदन पीत सजल शंखोदक नावें ॥ दुहुंकर जोरें दीन व्है ध्यान धरत व्रजराज ॥ प्रत्यक्षव्है भोजनकरें रूप धरें गिरिराज ॥२५ ॥ कहत गोप समुझाय रूप गिरिराज निहारो ॥ जाकें ऐसो पूत सुफल व्रजवास तिहारो ॥ मोर पखौवा शिर धरे उर राजत वनमाल ॥ सब देखत

भोजनकरे हो मानो श्रीगोपाल ॥२६ ॥ यथाशक्ति फल पत्र पाक व्रजवासी लाये ॥ प्रेमभक्ति प्रतिपाल परम रुचिसों वे खाये ॥ काहू अति संकोचते सजि धर राख्यो गेह ॥ मांगमांग सबपें लियो प्रकट जनायो नेह ॥२७ ॥ शीतल परम सुवास सुखद यमुनोदक लीनों ॥ रह्यो जो शेष प्रसाद बांट व्रजवासिन दीनों ॥ बीरीदेत सँम्हारकें आपुन नंद कुमार ॥ आरोगत व्रजराज सांवरो व्रजजन लेत उगार ॥२८ ॥ महा महोत्सव मान लीयो गिरिराज हमारो ॥ व्रजवासिन शिरछत्र सदां गोधन रखवारो ॥ व्रजरानी कर आरतो लागत गिरिके पाय ॥ पटभूषण न्योंच्छावर करकें ग्वालन देत बुलाय ॥२९ ॥ नंदादिक व्रज गोप सबें जुर सन्मुख आये ॥ नयन पाणि अरु ग्रीव शीश गिरि चरण छुवाये ॥ रामकृष्णाके शीशपे देव पाणि परसाय ॥ आज्ञा ले घरकों चले पदवंदन करवाय ॥३० ॥ इंद्र उठ्यो अकुलाय आज क्यों होत अवेरो ॥ ओरवेर व्रज जाय लेहुं बलि भोग सवेरो ॥ व्रजबलिकी सुध लेंनकों दीने दूत पठाय ॥ महामहोत्सव देखकें कह्यो इंद्रसों जाय ॥३१ ॥ कोप इंद्र घन जोर सबे व्रजलोक पठाये ॥ चहूं ओरतें घेरघेर व्रजबोरन आये ॥ मूशलधार वरखन लग्यो व्रज कंप्यो अकुलाय ॥ कह्यो सबन व्रजराजसों अब को होय सहाय ॥३२ ॥ व्याकुल लख व्रजवासि कान्ह गोवर्द्धन धार्यो ॥ वामपाणि अंगुरीन एक नख अग्र उछार्यो ॥ गोप लकुटिया ले रहे टेकी चहुँधां आय ॥ कोमलकर अति भारतें मति इत उत डिगि जाय ॥३३ ॥ ले कटितें कर वेणु धर्यो अधरन गिरिधारी ॥ सप्तरंध्र स्वर पूर घोर ऊंचीदे भारी ॥ पर्वत दीयो उछारकें स्वरपें रह्यो ठहेराय ॥ गोपनको बल देखकें फिरि गिरि थांभ्यो आय ॥३४ ॥ सात द्योस निश परी प्रबल अति जलकी धारें ॥ गिरिकी छांया सकल गोप गोधन तृणचारें ॥ बूंद न काहू परसहीं यह सुन अतुल प्रताप ॥ परम पुरुष यह जानकें इंद्र बढ्यो संताप ॥३५ ॥ ले सुरभी व्रज आई पांय हरिके शिरनायो ॥ तुम देवनके देव कीयो में अपनों पायो ॥

अबलोंमें जान्यों नहीं व्रज वृंदावन रूप ॥ कृपा दृष्टिसों देखियें अखिल लोकके भूप ॥३६ ॥ गिरि धरधरणि कान्ह पाणि सुरपति शिरधार्यो ॥ धेनु क्षीर अभिषेक मान अपराध निबार्यो ॥ स्वर्ग लोकको राज दे करसों थापी पीठ ॥ अबतें यह व्रतराखियो व्रजपर अमृत दीठ ॥३७ ॥ इंद्र पठायो गेह आप व्रज माया फेरी ॥ देव विमानन आय वरख कुसुमनकी ढेरी ॥ सब कोऊ गोविंदको श्रीमुख निरखत आय ॥ देत दान बहु नंदजू उर आनंद न समाय ॥३८ ॥ धाय यशोमति माय लालकों कंठ लगावे ॥ वार वार जलपीवे चूमकर नयन छुवावे ॥ सातवरसको सांवरो सात द्योस इकहाथ ॥ गिरि धार्यो बलदेवके सो प्रभु वैकुंठनाथ ॥३९ ॥ सब व्रजवासी लोग कहत व्रजराज दुहाई ॥ जयजय शब्द उच्चार हमारो देव कन्हाई ॥ दे असीस घरकों चले ग्वाल गोप व्रजनारि ॥ व्रजजन गिरिधर रूपपे डार्यो सर्वस्व वारि ॥४० ॥

□ राग बिलावल □ (२) अपने अपने टोल कहत व्रजवासियां ॥ शरद कुहू निश जान दीपमालिका जो आई ॥ गोपन मन आनंद फिरत उनमद अधिकाई ॥ ऐं पन थापे दीजीयें घरघर मंगलचार ॥ सातवरसको सांवरो खेलत नंददुवार ॥१ ॥ बैठ नंद उपनंद बोल वृषभान पठाये ॥ सुरपति पूजा जान तहां चल गोविंद आये ॥ वारवार हाहा करें कहो बावा यह बात ॥ घरघर गोरस संचियें कोंन देवकी जात ॥२ ॥ कान्ह तुमारी कुशल जान एक मंत्र उपेहें ॥ खटरस व्यंजन साज भोग सुरपतिकों देहें ॥ नंद कह्यो चुचकारकें जा दामोदर सोय ॥ वरस द्योसको द्योसहे महामहोत्सव होय ॥३ ॥तब हँस बोले लाल मंत्र बहोर्यो एक कीनों ॥ आदि पुरुष निज जान रेंन सपनों मोहि दीनों ॥ सब देवनको देवता गिरि गोवर्द्धन राज ॥ ताहि भोग किन दीजियें सुरपतिको कहा काज ॥४ ॥ बाढे गोधन वृंद दूध दधिको कहा लेखो ॥ यह परचो विद्यमान नयन अपने किन देखो ॥ तुम देखत बल खायगो मोंहों मांग्यो फल देय ॥ गोप कुशलजो चाहियें तो

गिरि गोवर्द्धन सेय ॥५ ॥ गोपन कीयो विचार सबन मिल शकट जो साजे ॥ बहु विध कर पकवान चले जहां बाजन बाजे ॥ एक वनही वनकों चले एक नंदीसुर भीर ॥ एकन पेंडो पावही फूले फिरत अहीर ॥६ ॥ एक ऊबटव्है चले एक वनही वनछाये ॥ एक गावें गुण गोविंद प्रेम उमगे न समाये ॥ गोपनको सागर भयो गिरि भयो मंदराचार ॥ रत्न भईं सब गोपिका कान्ह विलोवन हार ॥७ ॥ व्रज चोरासी कोस परे गोपनके डेरा ॥ लंबे चौवन कोस जहाँ व्रजवास वसेरा ॥ सबहिनके मन सांवरो देखियत सबन मंझार ॥ कौतुक भूले देवता आये लोक विसार ॥८ ॥ लीने विप्र बुलाय यज्ञ आरंभन कीनों ॥ सुरपति पूजा मेंट राज गोवर्द्धन दीनों ॥ देव दीवारी श्यामही सब मिल पूजन जाय ॥ नंद प्रतीत जो चाहिये तो तुम देखत बलिखाय ॥९ ॥ प्रथमही दूध न्हवाय बोहोरि गंगाजल ढार्यो ॥ बडो देवता जान कान्हको मतो बिचार्यो ॥ जेसेहें गिरिराजजू तैसो अन्नको कोट ॥ मग्नभये पूजा करें नरनारी बड छोट ॥१० ॥ सहस्र भुजाउरधरें करें भोजन अधिकाई ॥ नख शिखलों अनुहार मानों दूसरो कन्हाई ॥ ललिता राधासों कहे तेरे हृदें समाय ॥ गहे अंगुरिया नंदकी सो ढोटा पूजा खाय ॥११ ॥ पीत दुमालो बन्यो कंठ मोतिनकी माला ॥ सुंदर सुभग शरीर झलमले नयन विशाला ॥ श्यामकी शोभा गिरि भयो गिरिकी शोभा श्याम ॥ जेसो परवत भातको ढिंग भैया बलराम ॥१२ ॥ व्यंजन बहुत बनाय कहांलों नाम बखानों ॥ भयो भातको कोट ओट गिरिराज छिपानों ॥ बरा बिराजे भातपे चंदा पटतर सोय ॥ यज्ञपुरुष भोजन करे सब देवन सुख होय ॥१३ ॥ जेसी कंचनपुरी दिव्य रत्ननसों छाई ॥ बलि दीनीहे प्रात छांह चलि पूरव आई ॥ बदरोला वृषभानकी रही विलोवन हार ॥ ताकी बलि उन देवता लीनी भुजापसार ॥१४ ॥ सब सामग्री अरपि गोप गोपिन करजोरे ॥ अगणित कीने स्वाद दास बरणे कहा थोरे ॥ यह विध पूजा कीजिये कह्यो सबन समुझाय ॥ श्याम कह्यो सूरदाससों मेरी

लीला सरस बनाय ॥१५ ॥

□ राग बिलावल □ (३) छेल छबीलो लाल कहत नंदरायसों ॥ध्रु० ॥ घरघर मंगल होत कहाहै आजुतुम्हारें ॥ बहुविध करत रसोई हूं मध्य गयो सकारें ॥ मोहि देख सबकोई कह्यो यहां जिन आवो लाल ॥ देवयज्ञ हम करतहें कर पकवान रसाल ॥१ ॥ यह विस्मय चित मोहि कोनकी करत पुजाई ॥ याको फलहै कहा कहो तुम व्रजपति राई ॥ नाम कहा या देवको कोनलोकको राज ॥ इतनो बलि यह खातहै हमारो करत कहा काज ॥२ ॥ नंदहँसे मुसकाय कान्हसों कहत सुनाई ॥ इन्द्र पाक हम करत सदा तुमरी कुशलाई ॥ ताल तलैया सब भरे बहु तृण उपजे भूमि ॥ वृक्ष हरित सब होतहैं फूल लता रहें झूमि ॥३ ॥ अमरावतिको राज करत निशदिन कुशलाई ॥ उर्वसीको नृत्य होत यातें अधिकाई ॥ देवऋषी स्तुतिकरें सबकोऊ मानत आन ॥ यातें हम सब पूजहीं बरसों वरस निदान ॥४ ॥ तब हरि कीयो बिचार मतो एक नयो उपायो ॥ इनमें मायाफेर कीयो अपनो मन भायो ॥ सुनो तात एक बात हमारी मानो जोई ॥ गिरिवरपूजा कीजिये इनतें सब सुख होई ॥ ये प्रभु प्रत्यक्ष देव भूलि क्यों बुद्धि विसारो ॥ वैकुंठ इनके मांहि देव सबहिनतें न्यारो ॥ गाय गोप हमजातहें इनकों करत प्रणाम ॥ गोवर्द्धन यह नामहै प्रकटे पूरण काम ॥६ ॥ब्रह्मा रुद्र सनकादिक सबें इनको सिरनावें ॥ इनकी महिमा अखिल लोक निर्मल गुण गावें ॥ ऐसे प्रभुकों छांडकें शक्रहि देतहो भोग ॥ अनेक विघ्न इन टारिये इनकों पुजन योग ॥७ ॥ यहबात विश्वास रायजूके मन आई ॥ बडे गोप सब कहत सुनों हरि कुंवर कन्हाई ॥ गर्गयेह हमसों कह्यो वासुदेव अवतार ॥ शकट पुतना इनहीनें बक अघ किये संहार ॥८ ॥ सबहिनके मन आय कीयो इनको मन भायो ॥ सबब्रजमें बात सुनाय गोवर्द्धनपूजन आयो ॥ इनकों सब मिल पूजियें ब्रजमें होत कल्यान ॥ यह निश्चय सबहिनकीयो गिरिको कीयो सनमान ॥९ ॥ सब

सामग्री शकटमांझ सबहिनजु धराई ॥ अपने शकट जुराय चलीं रोहिणी यशोदाई ॥ रामकृष्णकों पासले प्रफुलित मन आनंद ॥ बडे गोप सब संगले वृषभान बुलाये नंद ॥१० ॥ सुंदर गावत गीत चली ब्रजनारि सुहाई ॥ बहु विध बाजे बजे दीये निसान घुराई ॥ ग्वाल गोप गौवच्छ ले चल्यो सकल ब्रजसंग ॥ ब्रजवासी दरसन भयो गिरिवर गिरिधर अंग ॥११ ॥ सबन नवायो शीश भये मन मुदितविचारे ॥ किहिं विधि पूजन करें पूछ पुरोहित उपचारे ॥ हमनहीं समझें महेरजू पूछो लाल बुलाय ॥ लाल कह्यो पूजन करो बलि उपहार मँगाय ॥१२ ॥ गोवर्द्धनपें दीपदान कियो मनभायो ॥ चहुंदिश जगमग जोति कुहुँ निशि भयो सुहायो ॥ परिक्रमा सब कोऊ चले दाहिनो दीयो गिरिराय ॥ गीत नाद उदघोषसों मगन भये ब्रजराय ॥१३ ॥ प्रातसमें सबसों मिले ले आए नंदराई ॥ उमग्यो आनन्द सिन्धु कृष्ण बलदोऊ भाई ॥ बडे गोप आएसबे वृषभान गोप संगलाय ॥ विप्र बुलाये नंदजु पुजनकों गिरिराय ॥१४ ॥ पूजनको आरंभ कीयो षोडश उपचारें ॥ धौरी दूध न्हवाय बहुर्यो गंगाजल डारें ॥ केसर चंदन चरचकें उबटनो कीयो बनाय ॥ मानसी गंगा नीरसों स्नान कराये नंदराय ॥१५ ॥ कुंकुम अक्षत तिलक दियो माला पहिराये ॥ पीतांबर उरहार गोवर्द्धन तबही उढाये ॥ कुनबारो आगें धर्यो धूपदीप तिहिंवार ॥ सुख सागर सबहिन भयो उमगे कर बलिहार ॥१६ ॥ करवाय आचमन सुगंध बीराजू धराए ॥ बार आरतो कीन गीत मंगलजू गवाये ॥ ग्वाल बुलाये नंदजू कुनवारो दीयो बांट ॥ तिलक किये थापे दिये मांथे टोरा गांट ॥१७ ॥ कान्ह कह्यो सबग्वाल बुलाये गाय खिलावो ॥ धौरी धूमर गांग सबे वछरन संग लावो ॥ हूंकहूंक गायेंसबें सन्मुख आईं धाय ॥ खेलनको उत्साह भयो धोरी आगें आय ॥१८ ॥ सेली बांधे सीस हस्तमें लकुटी लीनी ॥ गायन सन्मुख आय लालजू चक्रित कीनी ॥ गायनके अनुकरणकों गोकरण धरेंशीश ॥ गोपभेष अद्‌भुत बन्यो जयजय

गोकुलईश ॥१९॥ अपनी गाय खिलाय कह्यो तुम सबे खिलावो॥ वछरन आगें लाय तीदरों बहुत बजावो॥ धेनुखिलाई जूथकी ग्वालन कीयो जुहार॥ नये वसन भूषणदिये॥ सबन मान त्योहार॥२०॥ अन्नकूट धर्यो भोग सो कहि कोंन बखाने॥ बहुविधके पकवान विविध कर सन्मुख आने॥ पेडा बरफी आदिले महिल मिठाई जात॥ भांतभांत मेवा धरे तर मेवा सबभांत॥२१॥ चकुली पुवा महेल साठा घरघरतें आए॥ भोगधरे नंदराय सबनके मनजु बढाये॥ कांजी धरी बनायकें बराभिजोए छाछ॥ बहुत माँट आगें धरे फलजु धरे कई गाछ॥२२॥ पायस धरी अरु खीर धरी धोरी सुखदाई॥ ओदन सेव सजाय धरी मनकाजु मिलाई॥ बूरा डार्यो अति घनो तामें बहुत मुकराय॥ संयाव करी मीठी घनी घृत नवनीत सिकाय॥२३॥ फोग केरा द्राख कियेबिलसारू केरी॥ सिखरण संजोई धरी अति मीठी सेतेरी॥ बासोंधी अति सुगंधकी केसररंग मिलाय॥ दूध ओट मीठो धर्यो मिश्री पनो छनाय॥२४॥ माखनमिश्री मिलाय दही मीठोजु धरायो॥ तिन ढिंग सिखरन छान मेल बूरा मन भायो॥ साक रायता सब धरे संधानें गिने न जाय॥ कचरिया सुकवनकी करी भुँजेना बहुभाय॥२५॥ तिहिं आगें हलदीको चौक पूर्यो पद्मसवारे॥ मीठो धर्यो बनाय बहुत कीनो विस्तारे॥ ओदनतिहिंमध्य प्रेमसों गिरिके कर्यो समान॥ मध्य चक्रवापें धर्यो गूंजा शिखर प्रमान॥२६॥ चारभांतकी दार मूंग ठाडेजु बनाए॥ घृत नवनीत मगाय मूंगमिल भात सनाए॥ पापर करुवे तेलमें तरे संवार बनाय॥ उरद वडी ओर तिलवडी डबराधरेहें भुँजवाय॥२७॥ सिखरनभात दहीभात जीराजु मिलायो॥ बडीवेंगनकों पीरो भात अति सुखदसुहायो॥ मीठो खाटो भातले आगें धर्यो बनाय॥ वरा मुंगोरी टोकरा चीला चकता लाय॥२८॥ सकरकंद मीठो शाक रुचिर धर्यो बनाई॥ अरवी रतालू जिमीकंद ईमलीजु मिलाई॥ तिनकूडा औटायकें चनाबरीको कीन॥

कढी करी बहु भांतकी भोजन करत प्रवीन ॥२९ ॥ बेंगन भरता शाक केई बहु भांत बनाय ॥ और भुजेना कर धरे अगणित गिने न जाय ॥ यह विधि पूर्यो मोदसों वरणत वरण्यो न जाय ॥ यमुना जलके माटले वाम भाग पधराय ॥३० ॥ धूपदीप कर भोग धर्यो मन अधिक बढ़ाई ॥ तुलसीमाल पहिराय नंद केसर चरचाई ॥ शंखोदक कीनो तबें अति प्रसन्न व्रजराज ॥ हाथ जोर वीनतीकरी मानि लेहु गिरि राज ॥३१ ॥ गिरिवर रूप धर्योजु श्याम भक्तन मनहारी ॥ व्रजजन निरखें आय कीयो तन मन बलिहारी ॥ सबन कह्यो हरखें सबें उमगें उर न समाई ॥ धन्य धन्य सुवन नंदजूको यह सुख देख्यो जाई ॥३२ ॥ किंचित छाक बनाय ग्वार राख्यो घर मांहीं ॥ सकुच रही मनमांझ शोच अतिशय चितजाहीं ॥ आरति जानीं वाहीको लीनो भोग मँगाय ॥ सब देखत वहिलियो खायो सराह सराय ॥३३ ॥ यमुनाजलकी झारीलाय अचवनजु करायो ॥ मुखपोंछनकें काज वस्त्र सबहींजु उठायो ॥ बीरीलाये सांवरे देत बनाय बनाय ॥ आप आरोगत मुखभरे उगार भक्त लियो आय ॥३४ ॥ यह उत्सव सुख देख बीनमें नारद गायो ॥ व्रज जन मन उल्लास अंगअंग न समायो । यशुमति कीनो आरती वार वार सचुपाय ॥ चरणन मस्तक धारकें कुशल मनायो माय ॥३५ ॥ राईलोन उतार बहु नोछावर कीनी ॥ मागध सूत बुलाय सवें मुठिया भर दीनी ॥ आज्ञा माग सबे चले अपने गृहकों जात ॥ रामकृष्ण बंदन कर्यो चलेमाय संग तात ॥३६ ॥ समोगयो सब चूक इंद्रमन बहुत रिसायो ॥ दीनोदूत पठाय नंदव्रज खबर मँगायो ॥ उन सन्मुख आयुस कियो सुरपति कह्यो सुनाय ॥ पर्वतको पूजनकीयो दीने भोग लुटाय ॥३७ ॥ कोप कियो व्रजमांहि प्रलयके मेघ छुडाये ॥ वर्षो जाय निश्चित देहो व्रजलोगवहाये ॥ महाघोर वर्षाभई वहत प्रचंड समीर ॥ कह्यो गोप व्रजराजसों अबकेसें रहे धीर ॥३८ ॥ गिरिवर सन्मुख चाहि कान्हजु तबही उठायो ॥ श्रम न कछू चित मांहि छत्रवत ऊपर आयो ॥ अंदेसो सबहिन भयो टेकि लकुटिया

आय वेणुरध्रन पूरकें गिरिकों दीयो उछलाय ॥३९ ॥ मानो सप्त स्वरनसों फूंकपें थिरकर राख्यो ॥ गोपीजन गृहकाज करत आनंद सो भाख्यो ॥ सातद्योसलों वरसीयो मूशलधार प्रमान ॥ तबहिं यह निश्चय भयो परब्रह्म भगवान ॥४० ॥ अपराध पर्यो चित्त जान संग सुरभी ले आयो ॥ गंगाजल अभिषेक कर्यो आनन्द बढायो ॥ मुकुट चरणन पर धर्यो लोटत मघवा धर ध्यान ॥ पीठथाप अपनो कियो यह व्रज मेरोजान ॥४१ ॥ गिरिवर धरणी धार आप मैयापे आये ॥ माततातके पांयपरे दोउन सिरनाये ॥ ग्वाल गोप सबहिन मिले कंठ लगे अंकवार ॥ हरख हरख सब यों कह्यो चिरजीयो नंदकुमार ॥४२ ॥ रानीजू गोद बैठाय चूम मुखहीयो सिरायो ॥ प्रेमसमुद्र बढ्यो कछू उमग्यो न समायो ॥ कान्हजो मेरें एकहे बायों हाथपिराय ॥ सात द्योस पर्वत धर्यो कमलापति वैकुंठराय ॥ ४३ ॥ सखाभये मन मुदित दई व्रजराज दुहाई ॥ जयजय शब्द उचारत हमारो देव कन्हाई ॥ तिहारो एसोपूतहे विघ्न नसे बहू क्रूर ॥ गोविंद इनको नामहै सोरहकला भरपूर ॥४४ ॥ भूषण वसन मगाय वार ग्वालनकों दीने ॥ अति उदार नंदराय दान बहुतकसे कीने ॥ आशिश दई विप्रन कह्यो जीवो सुत व्रजराज मदनमोहन व्रज लाडिलो परमानंद शिरताज ॥४५ ॥

□ राग बिलावल □ (४) बोल लिये सब ग्वाल कहत गिरि पूजियें ॥ ध्रु० ॥ दीपमालिका आजु गोवर्धनलीला गायें ॥ नंद महोत्सव होय चलो सब देखन जायें ॥ कनक थार मोतिन भरे दीपक धरे मंझार ॥ सब मिल आईं गोपिका हो गावत मंगलचार ॥ कहत ॥१ ॥ आप आपुही रूप बनी सब व्रजकी नारी ॥ लेंहगा कंचुकी अंग बनी बहु झूमक सारी ॥ काजर रेख टीको बन्यो ओर मोतिनके हार ॥ सब मिल गोपी करत हें अप अपनो सिंगार ॥ कहत ॥२ ॥ गाम गाम तें अहीर बोलि लिये राय नंदजू ॥ न्योंतो दीनो आजु बोलि वृषभानचंदजू ॥ वृद्ध तरुणी बालासवे बलि बालिक संग लाईं ॥ गोद लियें सुत सांवरो हो कहत यशोदा माई ॥ कहत ॥३ ॥

सुरपति पूजा मेटि महागिरि कान्ह पुजावे ।। लाल कही यह बानी बात सबके मन भावे ।। अन्न तृण बहु निपजे बहुतजु बरखे मेह ।। गाय दूध दूनोकरे हो घरघर बढे स्नेह ।। कहत ।।४ ।। नानाविध करि पाक सबे मिल आन चढाई ।। खीर खांड अति बहुत महापकवान मिठाई ।। दार भात ओर घी घनो दधिओदन धरि माथ ।। सब मिल पूजें गोपिका सो लेले अपने हाथ ।। कहत ।।५ ।। दोनां भरे बनाय बहोत विध बरा पकोरा ।। भोजन बिंजन आनिधरे सिखरन चहुंओरा ।। नींबू सूरन रायता अदरख बहुत बनाय ।। केरी करोंदा काचरी हो लाई यशोदा माय ।। कहत ।।६ ।। खाजा गूंजा फेनी पापर अरु ईंदरसा ।। लुचई लपसी घेबर बाबर बडी खरेसा ।। दूध पेडा अरु डुबका मांट जलेबी ओट ।। पकवान पंगति अवनवी हो भलो भयो अन्नकोट ।। कहत ।।७ ।। धूप दीप बहु आनि महा गिरि पातो छायो ।। चोवा चंदन अगर अरगजा चरचि चढायो ।। होम यज्ञ सबही करें व्रजवासिन आनंद ।। धनि धनि यह दिन आजुको हो धनि धनि बाबा नंद ।। कहत ।।८ ।। गोद लियें हरि नंद ठाडी जसोदा रानी ।। चहुंदिश घुरे निशान ध्वजाबर महा फहरानी ।। सुरनर मुनि सब देवता गुनि गंधर्व करें गान ।। नारद शारद शेषजुहो ब्रह्मा विष्णु समान ।। कहत ।।९ ।। एक भुजा नंदनंदन ठाड़े करगहि हाथा ।। एक भुजा दे शीश सकल गोपिन के माथा ।। एक भुजा भोजन करें एक भुजा गहें मात ।। देखो अचरज आजको हो पर्वत पूजा खात ।। कहत ।।१० ।। व्रजवासिन सब बोलि महागिरि पूजा कीनी ।। सुरपतिको बल मेटि महागिरिकों ले दीनी ।। इंद्रकोप तबही कर्यो दीये मेघ छटकाय ।। एसो कोन पूजा लहे हो देहों गोप बहाय ।। कहत ।। ११ ।। सात दिवस ओर रात महागिरि कर हरि लीनो ।। वृथा भये सब मेघ गोपको कछुवन कीनो ।। इंद्र मान सबही मिटयो मेघ पुकारे जाय ।। व्रज राख्यो नंद लाडिले हो कीनो अपनो भाय ।। कहत ।।१२ ।। सुनि हो भैया ग्वाल आजु अचरज हे एको ।। कर कोमल गिरि धर्यो ग्वाल लकुटी ले टेको ।। सात

वरसको सांवरो राख लिये सब गोप ॥ व्रजवासिन छांया करि हो मानो सब सिर टोप ॥ कहत ॥१३ ॥ इंद्र करे स्तुति आय महाप्रभु सुनो हमारी ॥ कामधेनु उरमाल कान्ह के आगें धारी ॥ तुम करता ईश्वर हरी देहो हमारी चूक ॥ तुमारी गति जानी नहीं हों अज्ञानी मूक ॥ कहत ॥१४ ॥ तब बोले गिरिधरन इंद्र सुन बात हमारी ॥ तें कीनो अभिषेक लई में मानि तिहारी ॥ कामधेनु तोकों दई दई कनक उरमाल ॥ असुर संहारन प्रगटियो हों कीनो यह विध ख्याल ॥ कहत ॥१५ ॥ सो जनको बडभाग गोवर्धनलीला गावे ॥ सीखे सुनें विचार भक्ति जन कोटिक पावे ॥ नंदके गृहक्रीडा करी सुख दीनो व्रजपाल ॥ परब्रह्म लीला करी हो बलि बलि दास गोपाल ॥ कहत ॥१६ ॥

□ राग बिलावल □ (५) आज कहा संभ्रमहे तुमारे घर तात ॥ गोपसबें करत काज आनन्द न समात ॥१ ॥ हाथजोर ठाडे हरि पूछतहें आय ॥ मोसों यह बात कहो बावा व्रजराय ॥२ ॥ बोले नंदराय देव इंद्रहिं बलिदेंहें ॥ वरसे जल निपजे नाज वरषलों सुख पेंहें ॥३ ॥ बहुत द्योस भये करत हें हम पूजा सबकोय ॥ अबजो हम छांड देंहिं तो न भलो होय ॥॥४ ॥ बोले हरि सुनो तात बात एक मेरी ॥ कर्मके बल सबें होई मिलि सुभाय हेरी ॥५ ॥ कर्मके आधीन देव कहो कहा करिहें ॥ ताको कछु चलिहें नहिं कर्म बिन न सरिहें ॥६ ॥ जो तुम जगदीश जान पूजतहो याहीं ॥ यासों हमें काज कहा गौचारन जाहीं ॥७ ॥ गिरि कानन वसतहे हम पूजें ता ईश ॥ सो तो द्विज देव गाय ठाकुर जगदीश ॥८ ॥ गोवर्द्धन पूजो ओर देहो विप्रन गाय ॥ अर्पो बलि देहो दान धेनु तृण चराय ॥९ ॥ करवाओ पाक सकल युवती जन बुलाय ॥ खीर आदि सूप अंत सबे विधि बनाय ॥१० ॥ ओट्यो संयाव पूवा चकुलीदे आदि ॥ रखवाओ दूध सबें खरचो जिन वादि ॥११ ॥ पर्वतकों बलि देहो द्विज पूजि गाय खिलाय ॥ गिरिकी करो शकट जोर परिक्रमा जाय ॥१२ ॥ भूषण बहु

मोल सबें वसन तन बनाय॥ हसत खेलत गावत गिरि देखो फिर आय॥१३॥ मेरोतो मतो यह सुनहो व्रजराज॥ भावें तो कीजेजू मेरो यह काज॥१४॥ जैसें हरि कह्यो सबन तेसेंही कीयो॥ रूपबडो धरकें बलिखात दरशदीयो॥१५॥ सबहिन संग पांयपरे मोहन निजरूप॥ दीनी प्रतीत सबे गोकुलके भूप॥१६॥ हरिस्वरूप फलले सब अपने गृह आये॥ निज कर व्रजवासी हरि फेर व्रजवसाये॥१७॥ कोपि इंद्र पठये मेघ वरसो दिनरात॥ गिरिधर व्रजवासी सब राखलिये दुख्यात॥१८॥ देख रूप आनंदमें भूख प्यास भुलाई॥ वरखतहे कहां मेघ काहू न सुध पाई॥१९॥ सात द्योस ठाडे हरिनेकु न पग हलायो॥ ऐसो व्रजवासिन यह भाग्यनते पायो॥२०॥ सुरपति को गर्व गयो रह्यो अतिखिस्याई॥ उघर गये मेघ सबे उदयोरवि आई॥२१॥ बोले प्रभु निकसो सब बाहिर रह्यो मेह॥ निडर भये फिरो सबे करोजिन संदेह॥२२॥ राख्यो गिरि भूमि ऊपर भेटे व्रजवासी॥ पायो अति परमानंद गोकुल सुखरासी॥२३॥ प्रेमभरी व्याकुलव्है चुंबत मुखमाई॥ बारंवार बालकके करकी बलिजाई॥२४॥ हरखत व्रजवासी सब आये घर फेरी॥ निशदिन वे जीवतहें सुंदर मुख हेरी॥२५॥ पछतानो इंद्र कामधेनु संग लायो॥ अपनों अपराध पांय पर क्षमा करायो॥२६॥ कीनो अभिषेक तहां गंगाजल आनी॥ ऐरावत शूंढहुतें अपने प्रभुजानी॥२७॥ गोविंद यह नामधर्यो आप भयोदास॥ मेरो सब गर्व गयो पायो में त्रास॥२८॥ हरिकों अभिषेक होत सबनि वेर टूट्यो॥ गोविंद यह नामलेत सहजदोष छूट्यो॥२९॥ यह लीला अति अद्भूत रसिक होय गावे॥ अन्य भजन छांड चरण हरिजूके पावे॥३०॥

□ राग बिलावल □ (६) सिखवत मोहन नंदकों तुम पूजो श्री गिरिराज॥ ध्रु.॥ गोप सबे दिस दाहिने वाम दिसहि व्रजनार॥ कोन भांत ठाडे भए सो वरनत बचन उच्चार॥१॥ श्रीनंदरानी प्रथम युवतिन संग किरति

जान ॥ उपनंदादिककी घरनि यशोमति पाछे मान ॥२ ॥ बरसानेकी महेर जे कीरति पाछें मान ॥ वृद्ध तियनको यूथ जे यह विधि ठाडे जान ॥३ ॥ कीरति ढिग वृषभानजा ठाडी मन आनंद ॥ नवकिशोरी यूथ सब निरखत गोकुलचंद ॥४ ॥ ललितादिक चंद्रावली व्रजमंगलको साथ ॥ मुदित चित्त ठाडी भई निरखत गोपीनाथ ॥५ ॥ दक्षिण दिश व्रजराजजू उपनंदादिक गोप ॥ आनंदित मिल यूथ यह सबहिनके मन ओप ॥६ ॥ भूप गोप वृषभानजू ढिग ठाडे बलराम ॥ सखा यूथ सुबलादिक सब मुख्य तहां श्रीदाम ॥७ ॥ तिन ढिग ब्रज परिकरसबे तिनढिग सगरेजाय ॥ और गोप बहुरंग बने इतउत को समुदाय ॥८ ॥ मानसी गंगा जल कलश भरवाय सब ग्वाल ॥ धौरी पयकी गागर ले ठाडी व्रजबाल ॥९ ॥ केसर चंदनसों भरे राखे कनक कचोल ॥ धूप दीप लाये कितेक सगरी सोंज अतोल ॥१० ॥ हांडी कुनवारेनकी रंजित हरदी रंग ॥ लाईहें सब व्रजवधू भरभर भाव उमंग ॥११ ॥ कुनवारेनकी झाल सब लाय धरी एकंत ॥ पटवसननमें बांध के गनियन परत अनंत ॥१२ ॥ सरस मलैया सहित ले ओट्यो दूध सुवास ॥ तामें मिश्री बहु परी मेवा सहित मिठास ॥१३ ॥ भर चपटनमें हेतसों ठाडे पता पलास ॥ पीवेंगे गिरिराजजू मोहन सहित विलास ॥१४ ॥ बहुत पना गागरभरी ले आंई व्रजनारि ॥ तामें बहुत सुगंधसों राखे सरस सँवारि ॥१५ ॥ केसर रंगसों रंगके उपरेंनाजु सुवास ॥ ग्वाल गवैयन देनको धर राखे तिहि पास ॥१६ ॥ सब समाज जब हैचुक्यो तब बोले नंदलाल ॥ बावाजी गिरि पूजियें सगरे बोल गुवाल ॥१७ ॥ मानसीगंगा कलशसों गोवर्धनहि न्हवाय ॥ धौरी पयकी गागर सिरपर सब ढरकाय ॥१८ ॥ पुन जल सकल न्हवायके कीने स्वच्छपखार ॥ केसर चंदन अरगजा सब अंगनमें डार ॥१९ ॥ धूप दीप बहु विध किये कुनवारेनकी झाल ॥ धरत भोग बहु भांतसों ले आवत व्रजबाल ॥२० ॥ ओट्योचटपन दूध सरस कलशन पतापलास ॥ साज सोंज सगरीधरी गोवर्धनके पास ॥२१ ॥ सब सामग्री भोग धर तुलसीदल

अरपाय ॥ करजोरें विनतीकरें नंद यशोदा माय ॥२२ ॥ घरी एक पाछें नंदजु बीरा डला मगाय ॥ भोग अरोग चुके जब गिरिधर तब जलसों अचवाय ॥२३ ॥ तब मोतिनकी आरती आप करी नंदराय ॥ बीरा दे गरे माल धरि पीतांबरहि उढाय ॥२४ ॥ व्रजभामिन गावन लगी तबही गाय बुलाय ॥ सुबल तोक श्रीदामसों कह्यो खिलावन गाय ॥२५ ॥ सुबल तोक मधु मंगला और सकल मिल ग्वाल ॥ धौरी धेनु खिलावहीं निरखत श्रीगोपाल ॥२६ ॥ तब सब ग्वालन बोलकें हंडिया दीनी हाथ ॥ पीठ थाप पीरो बसन बांध्यो उनके माथ ॥२७ ॥ कीर्तनियन सब बोलकें मलरा तिनहि दिवाय ॥ पीठथाप उनकी दई व्रजभूपति नंदराय ॥२८ ॥ तब सबहिन आसीस दियो व्रजपति गिरिधरलाल ॥ युगयुग राजकरो व्रजमें नित्य बोलीहें व्रजबाल ॥२९ ॥ ओट्यो चपटन दूधसों ग्वाल लिये बुलवाय ॥ पता पतूखनसों पियें प्यावतहें व्रजराज ॥३० ॥ तब जल ग्वालन छिरककें पूर्यो हरदी पद्म ॥ तापर तृण बीडाधरें कर्यो भातको सद्म ॥३१ ॥ निखरो पूरे गोपिका सखरो पूरे गोप ॥ उत्सवके आनंदसों सबहिनके मन ओप ॥३२ ॥ बीरापर सेत चांदनी दीनी सरस बिछाय ॥ भरभर लावत भातको डला देत ढरकाय ॥३३ ॥ लावत डला अपार ग्वालन गोप समाज ॥ कर्यो भातको क्रोट सो ओट छिपे गिरिराज ॥३४ ॥ ठाढे मूंगनकी बड़ी झाल धरी सबकोंन ॥ दारनकी नांदेंभरीं स्वादजु अधिक सलोंन ॥३५ ॥ मूंग उरद तुवर चना धोबा कीनीदार ॥ नांदनकी गणना नहीं भांत करीये चार ॥३६ ॥ एक रतालूके तथा मूंगबरीके ठान ॥ जाहि तीनकूडा कहत मिरच अधिक तिहि जान ॥३७ ॥ हींग लोंग वघर्यो सरस तिनकी भरभर नांद ॥ भात निकटहीं राखियो जाहि लेत आल्हाद ॥३८ ॥ चनादारमें नाखके साक कचरियन आद ॥ दहीभात संग खातमें लागे अधिक सवाद ॥३९ ॥ सकरकंद कुलहा कदली कोला टूक संवार ॥ वेसनके ओर को गने दूनो मीठो डार ॥४० ॥ नींबूरस एलची मिरच किंचित लोंन निहार ॥ नांदन भर रचनारची सुंदर अति सुखकार ॥४१ ॥ बहुत भांतके कोटपें राख्यो चक्र संवार ॥ चित्रांकित

गुंजा बडे ते चहूंदिशातें चार ॥४२॥ तुलसीकी माला बडी तिन पांचन पहिराय॥ केसर बहुत घसायके दियो भात छिरकाय॥४३॥ कढी लुटपुटे रायते भुंजे छुके अनंत॥ मो मति कहा बरनन करे सामग्री सोहंत॥४४॥ भई रतालूकी कढी और कटारूजान॥ बेंगनके चकतानकी और पकोरी मान॥४५॥ दार भातके निकटहें कढी पांतिके झुंड॥ विविध कढी सबही धरे एक नांदकर कुंड॥४६॥ ता आगे रायतेनके भाजन पांत अनेक॥ भरताबैंगन बथुआ कोला घीया विसेक॥४७॥ सकरकंद सुंदर सरस पेठा और पवार॥ बूंदीखिड्डुरी रायतो भाजन पांत संवार॥४८॥ और ढेबरी तिलबडी मिरच बडोहूं जान॥ कितेक झाल पापरनकी चहुंओर को जान॥४९॥ आरिया खीरा तोरई गलिका सेंमहिं पेख॥ खरबूजा ककडी फली चौरा ग्वारहि लेख॥५०॥और करेल मुरेलहे वनकरेल सुक क्रोड॥ कदलीखंभके मध्य में ताहि संवारे जोड॥५१॥ हरे कमलगटा किये पुनि ताकी जड मूल॥ अगस्तफरीवोंडीकरी औरजु ताको फूल॥५२॥ दाखपता अरई पता पोइपत्ता अरुपान॥ इनके पत्रोडा करे अतिसुंदर सुविधान॥५३॥ रतन जोति वडहरकिये पुन कटहेर निहार॥ सेंगरफरी संवारिके स्वाद महा रुचिकार॥५४॥ बेसनके व्यंजन बहुकीये विविध संवार॥ सुकबनके को कहि सके गिनत न आवे पार॥५५॥ कितेक नाँद दधि भातकी पीत भातकी जान॥ बहुविध खाटे भातकी मिष्ट भात बहुमान॥५६॥ कितेक सिखरन भातकी थूली नांदविसेस॥ खीरनकी नांदे बहुत मेवाकिये प्रवेस॥५७॥ प्रथम खीर संजावकी पुन चांवरकी देख॥ मनिकाकी अरू सेवकी और मखाने पेख॥५८॥ विविध भातकी खीर है आँई नांद अनंत॥ मिश्रीके मीठे मिली बास कपूर वसंत॥५९॥ दही लपेटे बरनकी नाँदे बहुत विशाल॥ तथा मुंगोरीके लखे लेले आवत ग्वाल॥६०॥ और पसाई सेबकी नांदे अति सुखदाय॥ मांखन ताये घीयके नादें धरी बनाय॥६१॥ सिखरनकी नादें कितेक बंधे दहीकी देख॥ और सहजके दहीनकी अति विशाल तेहिं पेख॥६२॥ मैदाकी पूरीनकी झालें

बहुत जो साज ॥ सिखरनके ढिग ले धर्यो मुदित भये गिरिराज ॥६३ ॥ पेंठो आंबा आमरे और करोंदा डारि ॥ जिनमें मीठो चौगुनों बिलसारू रुचिकारि ॥६४ ॥ नारंगी दाखहि सरस बिलसारू बहुनांद ॥ मेदाकी पूरी निकट धर्यो जानि सुख स्वाद ॥६५ ॥ मांखनके भाजन धरे पूरन पूरी पास ॥ मिश्री सरस मिलायकें उज्ज्वल मानों हास ॥६६ ॥ इक्षुरस पोंडा कदली धरे सँवार अनार ॥ औरहूं तरमेवा बहुत स्वाद सरस रुचिकार ॥६७ ॥ नींबू और जाबूं धरे अरु सूरण अरवी देख ॥ टेंटी आदो मिरचके भाजन एक एक पेख ॥६८ ॥ पिसे लोन अरु मिरचके भाजन एक एक राख ॥ चहिये जामें नाँखिये ऐसें गिरिसों भाख ॥६९ ॥ कचरी आदा पाचरी नींबूफांक बनाय ॥ कांजीके मटुका धरें ताहीके ढिग जाय ॥७० ॥ अब निखरेंकों कहतहें जैसो यथा प्रकार ॥ श्रीवल्लभ चरण प्रतापतें मेरी मति अनुसार ॥७१ ॥ प्रथम मलैया सहितहै सद्य सरस नवनीत ॥ ले आई व्रषभानजा जहां ठाडे हरिमीत ॥७२ ॥ मांखन वरा दहीथरा कीने बाबर श्वेत ॥ पीरी फेणी बाबरनकी झालिन शोभा देत ॥७३ ॥ गुजराती खजुला सरस कोमल अधिक सकोर ॥ मांडा बहुत सखोरी सोहें लावत गोपी दोर ॥७४ ॥ चंद्रकला उपरेटा सरस शोभित अति सुकुमार ॥ दहिहोरी पुनि दहीबरा लावत व्रजकी नार ॥७५ ॥ ललिता विशाखा संग मिलि खीर वरनको लाय ॥ नांदन भर रचना रची देखत अति सुखदाय ॥७६ ॥ सीराके कूंडा बहुत मोहनथार समेत ॥ इनमें बहू मेवा सहित अरु सुगंध सुख देत ॥७७ ॥ व्रजमंगल चंद्रावली ओर स्यामला साथ ॥ ले आवत भोग धरत निरखत गोकुलनाथ ॥७८ ॥ बहु भात मठरीनकी अर्ध चंद्र आकार ॥ बूंदीनके लडुवानके बहुत करे विस्तार ॥७९ ॥ मेवाटी लडुवा सरस ताके आगेंदेख ॥ बेसनके लडुवानकी वाके आगे लेख ॥८० ॥ उरद धांसबूंदीनके लडुआ सोहे पास ॥ खोआके गूंजानकी पांत महा सुखरास ॥८१ ॥ ता आगें मनोहरके

लडुवा पंगति देख ॥ तथा सकरपारेनकी ताकें आगें लेख ॥८२ ॥ ता आगें बेसन मगद लडुवा तिनकी पांत ॥ ता आगें गूंजानकी पंगति अधिक सुहात ॥८३ ॥ ता आगें चौरीठनके लडुवा पांत रसाल ॥ भरिमा पूरी ता निकट पांत करी व्रजवाल ॥८४ ॥ ता आगें पिनीनके लडुवा पांत सुहात ॥ निज सखियनके संग ले लाई यशोमति मात ॥८५ ॥ पीत घेबरनके डला पंगति अधिक सुहाय ॥ अपनी सखियन साथ ले लाई रोहिणी माय ॥८६ ॥ श्वेत घेबरनके डला ल्यावत कर कर हेत ॥ खडमंडाके डलनकी पंगति अति सुखदेत ॥८७ ॥ उपनंदादिककी घरनी सुंदर कीनी पांत ॥ सुठ कपूर नारीनकी जिनमें लोंग सुहात ॥८८ ॥ ताढिग आगें इंद्रसानकी डला पांत छबि देत ॥ ताढिग पपची पांतकी कांति हरे मनलेत ॥८९ ॥ बीच चिरोंजीके तथा लाटा लडुवा झाल ॥ कीरतिजू ल्यावत भले अपुनी संगले आल ॥९० ॥ दूध पुवा पुनि लापसी दूध लपसी सुखकार ॥ और सोंझ लाई बहुत ता आगें सरसार ॥९१ ॥ दूधहि बेसन ओटकें मेदा कछुक मिलाय ॥ बरा तथा भूंजे घृतहि चंद्र बरा कहवाय ॥९२ ॥ मिष्ट कचौरीहूं तथा ताढिग झाल अपार ॥ ले आवत व्रजभामिनी देखतही सुखसार ॥९३ ॥ बेसनकी थपरीनकी सुंदरता सरसाय ॥ सेव सलोनी हूं तथा ताढिग पांत लखाय ॥९४ ॥ मथुराके पेंडानकी ताढिग पांत विशाल ॥ ताहीके गूंजानकी पंगति मधुर रसाल ॥९५ ॥ पाँत जलेबी डलनकी ता आगें रसऐन ॥ खोआके ढोंढानकी पाँत सरस सुख देन ॥९६ ॥ पाँत कचोरी डलनकी ता आगें सरसाय ॥ खाटी पूरण पोलिका ता आगें दरसाय ॥९७ ॥ श्वेत सुहारी डलानकी ताढिग कीनीपाँत ॥ पीत सुहारीहू यथा तिनकी अद्‌भुत कांत ॥९८ ॥ एकगुलाबी माधुरी द्वै सीरा सरसात ॥ दाख छुहारे मिरच अरु बरफी तहाँ दरसात ॥९९ ॥ पेडा पीत गुलाबी पापर चारु संधान ॥ लोंग मिरच नींबूरसहि कीने विविध विधान ॥१०० ॥ पिस्ता कोला

बीजलों लोंग मिरचको ठान॥ अधिक स्वादके जानकें धरे भोगमें आन॥१०१॥ उपनंदादिक महेर मिल यथा भूपवृषभान॥ व्यंजन भोग धरावहीं बडरे गोप सुजान॥१०२॥ चपटा बासोंधीनके दक्षिण दिशहिबिचार॥ कूंडा सिखरन बडीनके बाँएदिशकों धार॥१०३॥ अनसखडीके शाकजे भुंजे छुके अपार॥ और बहुतहें रायते देखतही सुखसार॥१०४॥ मेदाकी गुडपापडी नीकी करी बनाय॥ कलाकंद अति मधुर हे खोआके समुदाय॥१०५॥ सेवा सबविधिके सरस तथा मिठाई देख॥ पिसो लोंन अरु मिरचके एकएक भाजन पेख॥१०६॥ बहुत मठा गागरभरी सौरभ सरस धुंगार॥ पीवतमें अति रुचि बढे लाईं व्रजकी नार॥१०७॥ गागर बहुत टेंटीनकी शीतल सुखद अपार॥ तिनमें यमुनोदक भर्यो ले आयेहें ग्वाल॥१०८॥ सखरे निखरे धर चुके तब बोले गोपाल॥ बावाभोग समर्पिये जेमें गिरि तत्काल॥१०९॥ तुलसी दलके टोकरा लावो कही सुभाख॥ प्रति सामग्री के विषे एकएक दल राख॥११०॥ धूपदीप कीयो तबें घंटानाद बजाय॥ शंखोदक ले हाथमें दीयो सबे छिरकाय॥१११॥ हाथजोर बिनती करी फिर गिरिवरकों देख॥ चितवत नयन आनन्दसों धन्य जन्मकों लेख॥११२॥ श्वेत जरकसी तासके बागेकों थिरकाय॥ गोकरण तुर्रा कुलेह पीतांबर फहेराय॥११३॥ नखशिखलों शिंगार किए पांच चंद्रकामाथ॥ आरोगत गिरिराज संग ले श्रीगोवर्द्धननाथ॥११४॥ भोग अरोगत स्वादसों मांगमांगकें लेत॥ बहुत सराहत खात में सबकों आनन्ददेत॥११५॥ दूरधरीहु बस्तुकों लीनी भुजा पसार ॥ लखि न्योंछावर करतहैं बहू धन डारतवार ॥११६॥ इतने भोग अरोगिकें तब बोले गिरिराज भोग खात सबहिन लख्यो पें न घटयो सब साज॥११७॥ अचवावो व्रजराजजू यों बोले गिरिराज॥ तब जल ले अचवावहीं देखत गोप समाज॥११८॥ श्रीमुख बसनहि पोंछिकें बीरा डला मगाय॥ पान खवावत प्रेमसों मुदित भये गिरिराय॥११९॥ तब मोतिनकी आरती आप करी व्रजभूप॥

जयजय ध्वनि सब दिस भई शोभा बढी अनूप ॥१२० ॥ नोछावर बहूयों करें बहू धन डारतवार ॥ कृष्ण बतायो देवता तिन पर सब बलिहार ॥१२१ ॥ तब बोले गिरिराजजू सुनिये श्रीव्रजराज ॥ यहप्रसाद सब बाँटके लीजे सकल समाज ॥१२२ ॥ धन गोधन बढहें बहुत रामकृष्ण सुखपाय ॥ विघ्ननाश सब होयँगे में यह कह्यो सुनाय ॥१२३ ॥ गोवर्धनके चरणपर रामकृष्ण सिरनाय ॥ करे प्रणाम गोपन सहित यशोमति अरु नन्दराय ॥१२४ ॥ आज्ञा ले घरकुं चले तब व्रजजन समुदाय ॥ यह उत्सव एसो भयो तिहूं लोक यशगाय ॥१२५ ॥ यह सुन सुरपति कोपकें मेघन तुरत बुलाय ॥ व्रज बोरो छिन एकमें चले सुनतही धाय ॥१२६ ॥ मूशलधार बरषन लग्यो व्रजजन तब उठिधाय ॥ आय कृष्णके पांयनपरे लीजे हमें बचाय ॥१२७ ॥ तब हरि तुरतहि धायकें लीनो गिरिहि उठाय ॥ सप्तदिवस निशि राखकें मघवा गर्व नसाय ॥१२८ ॥ तब सुरपति ढिंग आयकें चरण पर्यो अकुलाय ॥ अभिषेक बहूयों कियो गोविंदनाम धराय ॥१२९ ॥ तब प्रसन्न हरि होयकें इंद्र पठायो गेह ॥ यशोमति धाय उछंग लिये भुज चांपत कर नेह ॥१३० ॥ गोपी यह छबिदेखकें प्रेमजु उमग्यो अंग ॥ पुलकित गदगद होयकें आलिंगत सब अंग ॥१३१ ॥ गोवर्द्धनकी लीला सरस कहां लगि कहूं बनाय ॥ श्रीवल्लभ चरण प्रतापतें मति अनुसारहि गाय ॥१३२ ॥ श्रीवल्लभ कृपाकरी श्रीविठ्ठल निजनाथ ॥ हरीदास करपरसकें राखे चरणन साथ ॥१३३ ॥

गोवर्धन पूजा के पद

□ राग ललित □ (१) आज उझकि कित जात भजे हो वारी मेहेंतारी लाल ॥ ओर दिना जगत न जगाये कहां धो भयो संभ्रम इहि काल ॥१ ॥ माय धाय उर लाय लीयो मुख चुंबन दे सुत कंठ लगाय ॥ नंद कहत गौदान करे सोवते बालक क्यों बिडिराय ॥२ ॥ कान्ह कहत संदेहन कीजे बिधना पूरत मनकी आस ॥ महा पुरुष अवतार बडो एक तिनको यापर्वतमें बास ॥३ ॥ गयो जगाय कह्यो मोसों व्रजवासिन नीकें

समझैयो ।। मोहों मांग्यो फल सबहिन देहों नंद जसोदासों यों कहीयो ।।४ ।। इंद्र भोग बल इनही ले दीजे प्रगट दरस सबहिन कों देहें ।। सूरश्याम मेरीसों पकवान्न सबनके देखते खेहें ।।५ ।।

□ राग ललित □ (२) रही उरलाय ललन कछु खेहो ।। बहु मेवा पकवान्न मिठाई जो भावे सो लेहो ।।१ ।। जेवुंगो जब कही मेरी करिहो मोहि बाबाकी आन ।। गोपीजन व्रजवासी बोले अरु बोले वृखभान ।।२ ।। इंद्रही मेटि गोवर्धन थापे कान्ह कहीसो मानी ।। ग्वाल बोल हरी संग बेठारे परोसतहे नंदरानी ।।३ ।। हरि हलधर जब कीयो कलेउ जननी तात सुख पायो ।। व्रजबासी एकंत व्हे बैठे सूरश्याम मन भायो ।।४ ।।

□ राग बिलावल □ (३) पूजाविधि गिरिराजकी नंदलाल बतावें ।। झुंडन झुंडन गोपिका मिल मंगल गावें ।।१ ।। गंगा जलसों न्हवायकें दूध धोरीको नावें ।। विविध वसन पहेरायके चंदन चरचावें ।।२ ।। धूप दीप करि आरतो बहु भोग धरावें ।। तिलक कियो बीरादियो माला पहरावें ।।३ ।। खिरक चले लोहरे बडे मिलि गाय खिलावें ।। फिर गिरिधर भोजन कियो सुख सूर दिखावें ।।४ ।।

□ राग बिलावल □ (४) गोकुलको कुलदेवता प्यारो गिरिधरलाल ।। कमल नयन घनसांवरों वपु बाहु विशाल ।।१ ।। वेग करो मेरे कहें पकवान्न रसाल ।। बल मघवाबलि लेतहें करकर घृतगाल ।।२ ।। इनके दीये बाढिहें गैया वच्छग्वाल ।। संगमिलभोजन करतहें जेसें पशुपाल ।।३ ।। गिरिगोवर्द्धन सेईयें जीवन गोपाल ।। सूर सदां डरपत रहें जातें यमकाल ।।४ ।।

□ राग बिलावल □ (५) हमारो देव गोवर्द्धन पर्वत गोधन जहां सुखारो ।। मघवाकों बलि भाग न दीजे सुनीयें मतो हमारो ।।१ ।। बडरे बैठ विचार मतो कर पर्वतकों बलिदीजे ।। नंदरायको कुंवर लाडिलो कान्ह कहे सोई कीजे ।।२ ।। पावक पवन चंद जल सूरज वर्तत आज्ञा लीने ।। या ईश्वरको

कियो होतहे कहा इंद्रके दीने ॥३ ॥ जाके आसपास सब व्रजकुल सुखी रहें पशुपारें ॥ जोरो शकट अछुते लेले भलो मतो को टारें ॥४ ॥ मांखन दूध दह्यो घृत घृतपक लेजु चले व्रजवासी ॥ अद्भुत रूप धरें बलि भुगतत पर्वत सदां निवासी ॥५ ॥ मिट्यो भाग सुरपति जब जान्यो मेघदीये मुकराई ॥ मेहा प्रभु गिरि कर धर राख्यो नंदसुवन सुखदाई ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (६) गोकुल गोधन पूजियें गिरिधर नंदराय ॥ नरनारी सब हुलसकें पूजो सुख पाय ॥१ ॥ गही दोहनी करलियें दई लाले जाय ॥ हँसहँस देव न्हवावहीं दुहिदुहि सब गाय ॥२ ॥ खीर हांडी दधि भातले पकवान बनाय ॥ कुनवारो भर ले चली शुभ मंगल गाय ॥३ ॥ गाय खिलावें आपनी कूकें किलकाय ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनकी बलबल बलजाय ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (७) वारवार हरि सिखवन लागे बोलत अमृत बानी ॥ सुनहो एक उपदेश हमारो चार पदारथ दानी ॥१ ॥ मेरो कह्यो वेग अब कीजे दूध भात घृतसानी ॥ गोवर्द्धनकी पूजाकीजे गोधनके सुखदानी ॥२ ॥ यह परतीत नंदजुकें आई कान्ह कही सोई मानी ॥ परमानंद इंद्र मान भंगकर झूंठो कीयो पानी ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (८) छांडदेहु सुरपतिकी पूजा ॥ कान्ह कहें गिरि गोवर्धनते ओर देवनहिं दूजा ॥१ ॥ गोपन सांच मान यह लीनो बडोदेव गिरिराज ॥ मोहि छांड ये पर्वत पूजत वैर कियो सुर आज ॥२ ॥ पर्वत सहित धोय व्रज डारों देहुं समुद्र बहाई ॥ मेरी बलियहऔरें अर्पत इनकी करों सजाई ॥३ ॥ राखों नहीं इने भूतलपर गोकुल देहुं वहाई ॥ सूरदास प्रभु जिनके रक्षक संगही संग रहाई ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (९) सुनोहो ग्वाल यह कहत कन्हाई ॥ सुरपतिकी पूजाकों मेटत गोवर्द्धनकी करत बडाई ॥१ ॥ फेलपरी यह बात घरही घर हरि कहा जाने देव पुजाई ॥ हलधर कहेत सुनो भैया ग्वालो यह पूजाहम

करत सदाई ॥२॥ कोउ कोउ कहत करो एसेंईं कोउ कहत काहेकों भाई ॥ सूरश्याम कोउ सुन सचुपावे कोउ बर्जत सुरपतिहिं डराई ॥३॥

□ राग बिलावल □ (१०) सात वरसको सांवरो बोलत तुतरात ॥ हँसहँस कान्ह कहें सुनो मेरी एक बात ॥१॥ इंद्र न पूजा कीजीये पूजो गिरितात ॥ तुम देखत भोजन करे पकवान अरुभात ॥२॥ यह मतो निरधारकें गोप गृहकों जात ॥ मृदुबानी गिरिधरनकी सुन सूर सिहात ॥३॥

□ राग बिलावल □ (११) नंद महरसों कहत यशोदा सुरपति पूजा क्यों विसराई ॥ जाकी कृपा वसत व्रज भीतर जाकी दई भई ठकुराई ॥१॥ जाकी कृपा अन्न धन पूरण जाकी कृपातें नव निधि आई ॥ जाकी कृपा दूध दधि पूरण सहस्त्र मथानी मथत सदाई ॥२॥ जाकी कृपा पुत्र भयो मेरें कुशल रहो बलराम कन्हाई ॥ सूर घरनी यों कहत नंदसों दिन आयो अब करो सजाई ॥३॥

□ राग बिलावल □ (१२) हमारो कान्ह कहे सो कीजे ॥ आवो सिमिट सकल व्रजवासी पर्वतकों बलि दीजे ॥१॥ मधुमेवा पकवान मिठाई षटरस व्यंजन लीजे ॥ आसकरण प्रभु मोंहन नागर पन्यो पछावरि पीजे ॥२॥

□ राग बिलावल □ (१३) यह पूजा मोहि कान्ह बताई ॥ भूल्यो फिरत द्वार देवनके त्रिभुवन पति तुमकों बिसराई ॥१॥ आपही कृपा करी स्वप्नांतर बालकको जोदई दिखाई ॥ एसे प्रभु कृपाल करुणामय बालककी अति करी बडाई ॥२॥ गिरि पांयन हरिकों ले डारत हलधरकों पांयन तरलाई ॥ सूरश्याम बलराम तिहारे इनपें कृपा करो गिरिराई ॥३॥

□ राग बिलावल □ (१४) ग्वाल कहत धन्य धन्य कन्हाई ॥ बडो देव तुम प्रकट बतायो योंकहि कहि सब लेत बलाई ॥१॥ धन्य धन्य हो गिरिराजनकी मणि तुम सम और न दूजा ॥ तुम लायक कछु नहीं हमारें कोजानें तिहारी यह पूजा ॥२॥ गोप सबें मिल कहत श्यामसों जो कछु कह्योसो कीनों ॥ सूर श्यामसों कहीये बातें देवमान सुख लीनों ॥३॥

□ राग बिलावल □ (१५) मेरो कह्यो सत्य करि जानों ॥ जो चाहो व्रजकी कुशलाई तो तुम गिरिगोवर्धन मानों ॥१ ॥ दूध दहीं जितनो तुमलेहो गोसुत बढे अनेक ॥ कहा पूज सुरपतिसों पायो छांडदेहो यहटेक ॥२ ॥ मुंह मांग्यो फल जो तुम चाहो तो तुम मानों मोहि ॥ सूरदास प्रभु कहत ग्वालनसो सत्य बचन कहो तोहि ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१६) सुनो व्रजवासी लोग हमारे ॥ प्रेम सहित पर्वतको पूजो गोकुल देव तुमारे ॥१ ॥ शीतल जाकी छाया बहु तृन जल निर्झर झरे सुरवारे ॥ चरे गाय फल फूल भरे द्रुम व्रज सब कामदुधारे ॥२ ॥ शृंग लीला गंभीर श्रवन धरी खटरस भोग सुधारे ॥ करिके समर्प्यो गोवर्धनकों जो गोकुल रखवारे ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१७) गोधन पूजन आंईहें व्रजनारी ॥ नेती रई लियें कर शोभित छबि उपजत अति भारी ॥१ ॥ गृहगृहतें निकसी बनबन कें पहरें नौतन सारी ॥ विलसत हँसत सुहाई लागत मानो सांचें ढारी ॥२ ॥ सबमिल कहत नंदरानीसों धन्य यह कूख तिहारी ॥ अति आनंद फूलत मनही मन देख देख गिरिधारी ॥३ ॥ गावत गीत सबें गोधनके बजत पखावज थारी ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधर दाऊनें अपनी गाय शृंगारी ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (१८) गामगामतें ग्वालिन आईं ॥ अति आनंद चलीं घरघरतें गोवर्धन पूजाकों धाईं ॥१ ॥ खीर हांडी दधि पूआ सुहारी पूजनकों सबलाईं ॥ गावत गीत सबे गोधनके अतिही लगत सुहाई ॥२ ॥ यशोमति सुत व्रजराज लाडिले फिरफिर निरख सिहाई ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन लालपर व्रजसुंदरि बलजाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१९) गोधन पूज सबे सुखपायो व्रजबासी गिरिधर नंदराय ॥ अबको समयो नीको लागत हँसहँस कहत यशोदा माय ॥१ ॥ बाजे संग चले गृहगृह कों कापें शोभा बरनी जाय ॥ दोऊसुत व्रजराज लाडिले देखदेख कोउ न अघाय ॥२ ॥ कुनबारो बांटत व्रजसुंदरि माँडे ऐं

पन भले बनाय ॥ गावत हँसत फिरत रस भीनी आजको दिन माई सबन सुहाय ॥३ ॥ बोले ग्वाल नंदजूकी रानी ठाडे कीने सब पहराये ॥ देत असीस लाल गिरिधरकों श्रीविठ्ठल तन देख सिहाये ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (२०) नंदमहर उपनंद बुलाये ॥ बहु आदर कर बैठक दीनी महरजु मिलके सीसनवाये ॥१ ॥ मनही मन सब सोच करतहें कंस नृपति कछु मांग पठाये ॥ राजअंश कछु जो धन उनको बिनमाँगे हम सबदे आये ॥२ ॥ कही बात ओर नंदमहरसों कोन काज हम लिये बुलाये ॥ सूर नंद यों कही गोपनसों सुरपति पूजाके दिन आये ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२१) नंद कह्यो घर जाओ कन्हाई ॥ ऐसेमें जिन जाओ कहूं तुम अहो महेरि सुत लेहो बुलाई ॥१ ॥ सोय रहो मेरे पलिका पर कहत महरसुतसों समझाई ॥ बरस द्योसको महामहोत्सव कोउ आवे कोउ केसो जाई ॥२ ॥ तबही महेर ढिंग श्याम बैठकें कियो विचार अपने मन भाई ॥ सपनो आज मिल्यो मोकों एक महापुरुष अवतार जनाई ॥३ ॥ कहन लग्यो मोसों ये बातें कोनदेवकी करत बडाई ॥ गिरिगोवर्धन देवनकी मनि सेवो ताकों भोग लगाई ॥४ ॥ भोजनकरे सबनके देखत कहत श्याम मनमें उपजाई ॥ सूरदास प्रभु गोपन आगें यह लीला कहि प्रकट जनाई ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (२२) गावो मंगल चार महर घर। जसोमति भोजन करत चढ़ाई नेवज कर कर धरत श्याम डर ॥१ ॥ देखे गो वह छुए कन्हाई। कहा जाने वह देव पुजाई। और नहीं कुल देव हमारे गोवर्धन को सुरपत राई ॥२ ॥ कर विनती कर मेहर यशोदा। कान कृपा करो करुणा वर और देव तुम अटको नाहीं सुर करी सेवा चरणन तट ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२३) चौंक परी सब गोकुल नारी। भली भई सब-हिन सो भूखी तुम ही लेहो सुधारी ॥१ ॥ कहो महर सों करो चढ़ाई। हम अपने घर जाई। तुम ही करो भोग सामग्री कुल देवता हम नाहीं ॥२ ॥

जसोमति करत अकेली हो तुम ही मोही संग लीजे। सुर हंसत वृजनारी महर सों यही सांच पती जे ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२४) अति आनंद वृजवासी लोग॥ भाँत-भाँत पकवान शंकट भरी लेले चले छहो रस भोग ॥१ ॥ तीन लोक को ठाकुर संग ही तासु कहत सखा समजोग॥ आवत-आवत जात डगर नहीं पावत गोवर्धन पूजा संजोग ॥२ ॥ कोई पहुँचे कोई रेंगत मग मे कोउ घर से निकसे नाहीं॥ कोई पहुँचाये शंकट घर आवत कोउ घर ते भोजत ले जाई ॥३ ॥ मारग में कोउ निरतत आवत कोउ अपने रस निरतत जाई॥ सूर श्याम को जसुमति हेरत बहुत भार है हरि सुं लाई ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (२५) देखौ अपने नैनन को सुख गिरिधर गोवर्द्धन पूजें हो॥ सखा संग सब जोर जोर कें मधुर मुरलि धुनि कूजै हो ॥१ ॥ आसपास सब धेनु बिराजत रूप सबै अति सोहै हो॥ रत्न जटित मकराकृत कुंडल सिर सटकारे सोहै हो ॥२ ॥ भंवरी पांति अलकावलि मानों लाल भाल बिच भ्राजै हो॥ नासा भूषण चिवुक गाढ़ मधि देखत बिंदुका राजै हो ॥३ ॥ कंज से नैनन अंजन दीयें मृगमद बिंदुका राजै हो॥ तिलक ललाट वन्यौ रोरी कौ हेम आड़ विच राजै हो ॥४ ॥ दिव्य लसै कुलही सिर ऊपर शोभा कही न जाई हो॥ सीस फूल सिर मानों सोम द्वै बैठे एक अथाई हो ॥५ ॥ कंठ बनी झगुली अति सोहै स्वेत तास की झीनी हो। सोसनी साक बीच जलद की यह उपमा यों कीनी हो ॥६ ॥ बाजूबंद पहुँचियाँ मुदरी देखत मन चुभि जाई हो॥ शेष मानों बहु कुसुमन सों पूजि रह्यो है आई हो ॥७ ॥ बेंनी राजत अद्‌भुत कटि तट बानी को नहिं साधै हो॥ कुंडलीन मानों प्यासी व्है कें देखन निकसे राधै हो ॥८ ॥ उरज लसै जराय की चौकी देख होय मनी बाल हो॥ मानों इन्दुते भई चन्द्रिका ता मधि अंबुज लाल हो ॥९ ॥ मध्य भाग बिच क्षुद्र घंटिका लसतलाल कें आछी हो॥ विपुल सुभग अली चंदन तरु यों लपट रही मानों छाती

हो ॥१० ॥ जंघा परसि रही अतलस की सूथन हरी के लाल हो ॥ कदलि खंभ के नये गोभ मानों उलहे दैन रसाल हो ॥११ ॥ हेम खचित गूजरी अरु जेहर पग नूपुर की कांति हो ॥ आल बाल बिच परे अम्बुकन भई है बिमल बहु पांति हो ॥१२ ॥ पग अनवट बीछिया पायल नील मणी मन मोहे हो ॥ भोर भयें मानों पंकज ऊपर भँवर पुंज के सोहे हो ॥१३ ॥ यह स्वरूप हृदय में धरियै तन मन दुख जो जाये हो ॥ प्रगट करी लीला मन मोहन गिरिधर के पद पाये हो ॥१४ ॥

□ राग सारंग □ (२६) गोवर्द्धन पूजाके दिन आये ॥ वच्छरा गाय देव गोवर्द्धन अबकें बहुत बढाये ॥१ ॥ कहत लाल जननी बावासों जाइन पूजा करहें ॥ सब पकवान्न भात दधि ओदन वाके आगें धरहें ॥२ ॥ तुम और मैया गोप ग्वाल हम देखेंगे वाहिखात ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरजुकी बानी दोउ हँसहँस जात ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२७) गोवर्द्धन पूजन चलेरी गोपाल ॥ मत्त गयंद देख जिय लज्जित निरख मंदगति चाल ॥१ ॥ व्रजनारिन पकवान बहुत कर भर भर लीने थाल ॥ अंग सुगंध पहर पट भूषण गावत गीत रसाल ॥२ ॥ बाजे अनेक वेणुरवसों मिल चलत विविध सुरताल ॥ ध्वजा पताका छत्र चमर धर करत कुलाहल ग्वाल ॥३ ॥ बालक वृंद चहूंदिश सोहत मानों कमल अलि माल ॥ कुंभनदास प्रभु त्रिभुवन मोहन गोवर्द्धनधर लाल ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (२८) बडडेनकों आगेंदे गिरिधर श्रीगोवर्द्धन पूजन आवत ॥ मानसीगंगा जल न्हवायकें पाछें दूध धोरीको नावत ॥१ ॥ बहोरि पखार अरगजा चरचित धूप दीप बहु भोग धरावत ॥ दे बीरा आरती करतहें व्रजभामिन मिल मंगल गावत ॥२ ॥ टेर ग्वाल भाजन भरदेकें पीठ थाप शिरपेंच बंधावत ॥ चत्रभुज प्रभु गिरिधर अब यह व्रज युगयुग राजकरोमन भावत ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२९) पूजन चले नंद गिरिवरकों बडरे गोप संग नंदलाल ।। कर शृंगार अपअपने घरतें बालक वृद्ध तरुन सब ग्वाल ।।१ ।। लेले नाम खिलावत गायन धौरी धूमर मदन गोपाल ।। व्रजबनिता झुंडन मिल निरखत मोहन मूरति श्याम तमाल ।।२ ।। अगणित अन्न शाकपाकादिक धरत विचित्र पोहोप उरमाल ।। गिरिवर रूप श्याम सुन्दर धर आरोगत वपुबाहु विशाल ।।३ ।। मघवा कोप मेघ पठवाये जाय परी व्रजपर जलजाल ।। राखे सब नग वाम हस्त धर बाजत वेणु अंगुरिनके चाल ।।४ ।। पर्यो इंद्र सुरभी ले पायन गयो गर्व पूजे तिहिंकाल ।। देत असीस वारने लेले बंदत चरन कमल रजभाल ।। आज्ञा माग चले निज घरकों सब व्रजके प्रतिपाल ।। कर नोछावर देत सबनकों व्रजभूषण अति परम रसाल ।।६ ।।

□ राग सारंग □ (३०) नंद गोवर्द्धन पूजो आज ।। जातें गाय गुवाल गोपिका सुखी सबनको राज ।।१ ।। जाकों रुचि रुचि बलिहि बनावत कहा शक्रसों काज ।। गिरिके बल बैठें अपने घर कोटि इन्द्र पर गाज ।।२ ।। मेरो कह्यो मान अब लीजे भरभर शकटन साज ।। परमानंद आनकें अर्पत वृथा करत कित नाज ।।३ ।।

□ राग सारंग □ (३१) गोधन पूजा करकें गोविन्द सब ग्वालन पहेरावत ।। आवो सुबाहु सुबल श्रीदामा ऊंचे लेले नाम बुलावत ।।१ ।। अपने हाथ तिलक दे माथें चंदन ओर बंदन लपटावत ।। बसन विचित्र सबनके माथें विधिसों बांध बंधावत ।।२ ।। भाजन भर भर ले कुनवारो ताको ताहि गहावत ।। चत्रभुज प्रभु गिरिधर ता पाछें धोरी धेनु खिलावत ।।३ ।।

□ राग सारंग □ (३२) गोवर्धन पूजो गोकुलराई ।। बल समेत सब सखा चले जुर खिरक खिलावत गाई ।।१ ।। नयेनये नाम लेत सुरभिनके नेरें लई बुलाय ।। देत कूंक वछरा गहि मोहन पीतांबरहि फिराय ।।२ ।। मेली

डाढ बुलाई काजर सन्मख आई धाय ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन खिलावत हँसकर ताल बजाय ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३३) गोवर्द्धन पूजत परम उदार ॥ गोपवृन्द गोंहन मोहनके शोभा बढी अपार ॥१ ॥ खटरस व्यंजन भोग शैलकों धरत विविध उपहार ॥ पूजाकर पांयलाग प्रदक्षिणा देत दिवावत ग्वार ॥२ ॥ चहूं औेर गोपी कंचन तन मानों गिरि पहर्यो हार ॥ परमानंद प्रभुकी छबि निरखत रह्यो विथकि सुनमार ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३४) गोवर्द्धन पूजतहें व्रजराई ॥ बल मोंहन आगें दे लीनें गोपवधू संग लाई ॥१ ॥ दूध दही भाजन भर लीनें पायस बहुत बनाई ॥ बैठेहें गोपाल शिखर पर भोजन करत दिखाई ॥२ ॥ दीपमालिका महा महोत्सव ग्वालन लेहु बुलाई ॥ विविध भांत सखन पहेराओ जो जाके मन भाई ॥३ ॥ फूले फिरत सकल व्रजवासी खिरक खिलावत गाई ॥ लालदास गिरिधर गिरि पूज्यो भई भक्तन मन भाई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३५) गोवर्द्धन पूजहें हम आई ॥ राखो न भाग नंद मघवाको करिहे कहा रिस्याई ॥१ ॥ आनंद मगन गुवाल चले रस गोरस मांट भराई ॥ सखन सहित बलराम कन्हैया फिरत शृंगारत गाई ॥२ ॥ दीपमालिका महा महोत्सव ग्वालन लेहु बुलाई ॥ परमानंद प्रभु ले दधि ओदन बैठ रहे सब खाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३६) गोवर्द्धन पूजाकों आये सकल ग्वाल ले संग ॥ बाजत ताल मृदंग शंखध्वनि वीना पटह उपंग ॥१ ॥ नवसत साज चलीं व्रज तरुणी अपने अपनेरंग ॥ गावतगीत मनोहर बानी उपजत तान तरंग ॥२ ॥ अति पवित्र गंगाजल लेकें डारत आनंद कंद ॥ ता पाछें ले दूध धोरीको ढारत गोकुलचंद ॥३ ॥ रोरी चंदन चर्चन करकें तुलसी पोहोप माल पहरावत ॥ धूप दीप विचित्र भांतिनसों पीत वसन उपर ले

उढावत ॥४ ॥ भाजन भर भरकें कुनवारो लेले गिरिकों भोग धरावत ॥ गाय खिलाय गोपाल तिलक दे पींठ थाप शिरपेंच बंधावत ॥५ ॥ यह विधि पूजा करकें मोहन सब व्रजकों आनंद बढावत ॥ जयजय शब्द होत चहुंदिशतें गोविंद विमल विमल यश गावत ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (३७) गोधन पूजें गोधन गावें ॥ गोधनके सेवक संतत हम गोधनहीकों माथो नावें ॥१ ॥ गोधन मात पिता गुरु गोधन गोधन देव जाहि नित्य ध्यावें ॥ गोधन कामधेनु कल्पतरु गोधनपें मागें सोईपावें ॥२ ॥ गोधन खिरक खोर गिरि गव्हर रखवारो घरवन जहां छावें ॥ परमानंद भांवतो गोधन गोधनकों हमहूं पुनभावें ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३८) गोधन पूजन नंद चले दोउ ढोटनले संग गोप गुवाल ॥ भांत भांतके बाजे बाजत सब थारी और पखावज ताल ॥१ ॥ आगे व्है लीनेजु महर सब पाछें यशुमति सब व्रजनारि ॥ मंगल गावत परम सुहाये ऐसे निकसे झुंड संवारि ॥२ ॥ ठाडे भये देवके आगें विधिसों पूजा करत हँसिराय ॥ लाल कहत बाबा यह देखो तुमपें माँग-माँग सबखाय ॥३ ॥ पांयन लाग देव गोधनके आये अपनी गाय खिलावन ॥ हीही हांकुल सांकुल पीरी लागे लेले नाम बुलावन ॥४ ॥ सुंदर ले अपनो उपरेना तनक-तनक बछरान उढावत ॥ घात सों बैठ जात गायन तर आपुन चोंखत उनहि चुखावत ॥५ ॥ माय सिहात बवा सबकोऊ बोलउ नेक ग्वालन पहेरावत ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर दोऊनको यह त्योहार सदा यों आवत ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (३९) गोवर्धन पूजत हें नंदराय ॥ चोवा चंदन बैठ चढावत काचे दूध न्हवाय ॥१ ॥ आभूषण वस्त्र पहेरावत द्विजपें वेद पढाय ॥ बिन मर्याद सबें सामग्री आगें पूरत लाय ॥२ ॥ राख्यो छाय अन्न सब परवत शोभा कही न जाय ॥ देखो कोन भांतसों पूजा देव हमारो खाय ॥३ ॥ सब व्रज सिमिट भयो इकठोरो नंदमहेरकें आय ॥ श्री विट्ठलगिरिधर ले पूजत बाजे बहुत बजाय ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (४०) फूले गोप ग्वाल घरघरके मानतहें त्योहार दिवारी ॥ अपनी अपनी गाय शृंगारी बलदाउ लालन गिरिधारी ॥१ ॥ हँसहँस लाल कहत सबहिनसों हमारे देवकी पूजा व्हेहे ॥ भात दही पकवान मिठाई देखेंगे केसें वहखेहे ॥२ ॥ यह सुन गामगामते ग्वालिन गोवर्धन पूजाकों आईं ॥ गुंजा पूआ पूरी दधि खोवा भली भांतसों सबमिल लांई ॥३ ॥ अंगुरी गहें नंदबाबाकी अतिराजतहें दोउ भैया ॥ मीठेमीठे बचन कहतहें देख सिहात यशोदा मैया ॥४ ॥ अति आनंद देत पहरावत पटवस्त्र बहु मोलिक नीके ॥ देत असीस श्रीविठ्ठल प्रभु कों गिरधरलाल भामते जीके ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (४१) बाजत नंद आवास बधाई ॥ बैठे खेलत द्वार आपने सातवरसके कुंवर कन्हाई ॥१ ॥ बैठे नंद सहित वृषभाने ओर गोप सब बैठे आई ॥ बारबार बूझत बाबाकों कोन देवकी करत बडाई ॥२ ॥ इंद्र बडो कुल देव हमारो जा कारन हम करत पुजाई ॥ सूरश्याम तुम्हारे हित कारन यह पूजा हम करत सदांई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४२) पूछत राय लाल अपनेकों एसो देव तुम किनहिं बतायो ॥ जबतें तुम याकों बलिदीनी तबतें हमनें बहुत सुखपायो ॥१ ॥ एक दिना बनमें यह मोपे खेलतमें मेरे ढिग आयो ॥ उन मोपें पूजा जब मागी तबमें अपनें सखन दिखायो ॥२ ॥ ओर एक बचन कह्यो उन मोसों तुमारी गायन कों सुखदेहों ॥ सब व्रजकी रक्षाहों कर हों तुमारे बाबापें पूजा लेहों ॥३ ॥ तबमें आन कह्यो यह तुमसो मेरी बात सबहिन मनभाई ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधर मुख चुंबत तुम हमरें प्रकटे सुखदाई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (४३) तात गोवर्धन पूजो आय ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन सरस बनाय ॥१ ॥ यह पर्वत तृण ललित मनोहर चरें सुखी सदांगाय ॥ कान्ह कहेसो कीजे भैया हो मघवा गयोहे खिस्याय ॥२ ॥ भरभर शकट चले गिरि सन्मुख अपने अपने चाय ॥ सूरदास प्रभु आप बलि भोगी शैलरूप हरिराय ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४४) गोपनसों यह कहत कन्हाई ॥ जोहों कहत रह्यो भयो सोई सपनांतरकी प्रकट जनाई ॥१ ॥ जोमाग्यो चाहो सो मागो पावोगे सोई मन भाई ॥ कहत नंद हम ऐसी मागें चाहतहें हरिकी कुशलाई ॥२ ॥ करजोरें व्रजपतिजू ठाडे गोवर्धनकी करत बडाई ॥ ऐसो देव हम कबहू न देख्यो सहस्त्र भुजा धर खात मिठाई ॥३ ॥ जयजय शब्दहोत चहूंदिशतें अति आनंद उरमें न समाई ॥ सूरश्यामकों नीकें राखो कहत महेर हलधर दोऊ भाई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (४५) विनती करत नंद कर जोरे पूजा कहा हम जानें नाथ ॥ हमहें जीव सदा मायाके दरसन दियो मोहे कियो सनाथ ॥१ ॥ महाराजमें पावन कीनो प्रभुकी शरणहों आयो तात ॥ तुमारी समसर और न दूजो कोटि ब्रह्मांड धरो निजगात ॥२ ॥ तुमही दाता तुमही भोक्ता कर्ता हर्ता तुमही सार ॥ सूर कहा हम भोग लगावें तुमहो भोगी सब संसार ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४६) हमारो देव गोवर्धन रानो ॥ जाकी छत्र छांह हम बैठे ताकों त्यज ओरे क्यों मानों ॥१ ॥ नीको तृण सुंदर जल नीको नीको गोधन रहेत अघानों ॥ नीको सब व्रजहोत सुखारो सुरपति कोप कहा पहेचानों ॥२ ॥ खीर खांड घृत भोजन मेवा ओदन सकल अनूपम आनों ॥ परमानंद गोवर्द्धन उत्सव अन्नकूट अलौकिक जानों ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४७) सुनिये तात हमारो मतो श्रीगोवर्धन पूजाकीजे ॥ जो तुम यज्ञ रच्यो सुरपतिको सोई याहि ले दीजे ॥१ ॥ कंदमूल फल पोहोपनकी निधि जो मागें सोपावें ॥ यह गिरि बास हमारो निशदिन निरभय गाय चरावें ॥२ ॥ बडरे बैठ विचार मतोकर परबतकों बलिदीजे ॥ विविध भांतको अन्नकूट रचि षटरस व्यंजन लीजे ॥३ ॥ यह नग नानारूप धरतहे व्रजजनको रखबारो ॥ देवनमें यह बडो देवता मोहूकों अति प्यारो ॥४ ॥ दूध दहीके माट भराये व्यंजन अमित अपार ॥ मधु मेवा

पकवान मिठाई लावो भरभर थार ॥५ ॥ नंदनंदनही और रूपधर आपुन भोजन कीनों ॥ केशव प्रभु गिरिधरन लाडिले मांगमांगकें लीनों ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (४८) गोप समाज जुरे यमुनातट सब मिल संमत कीनों ॥ सुरपति यज्ञ महोत्सवकीजे बचन परस्पर लीनों ॥१ ॥ तिहिं अबसर व्रजपति पांउधारे बूझन लागे बात ॥ कहो संमत सब मिल कहाकीनो सांची कहो मेरे तात ॥२ ॥ यहजु सोंझ सिद्धकरकें तुम कोंनदेव बलिदेत ॥ हम तुम कानन शैल निबासी नहि काहूसों हेत ॥३ ॥ हमारो देव गोवर्द्धन पर्वत सदा परम सुखदाय ॥ आनपरे संकट व्रजजनकों तब गिरि होय सहाय ॥४ ॥ बाल वृद्ध नरनारिनके मन बात करत मन भाय ॥ बहुविध पाक संवारि मुदित मन नग बलि दान दिवाय ॥५ ॥ यह सुन भयो क्रोध मघवाकों मेघन दये पठाय ॥ सात द्योस जल भयो शैल ले दारुण वष्टि कराय ॥६ ॥ गोपी गोप गाय और वच्छरा सबहिन चित हरि लीनों ॥ मानो वृष्टि गृह कर धर राख्यो निर्भय दान हरि दीनों ॥७ ॥ मेंटी बडी घात व्रजपरतें शचिपति भयो खिस्यानो ॥ कामधेनु आगेंकर आयो ऐसो बडो अयानो ॥८ ॥ हाथ जोरकें विनती कीनी में महिमा नहि जान्यों ॥ कर अभिषेक विशेष ऐरावत कर गंगा जल आन्यों ॥९ ॥

□ राग सारंग □ (४९) नंदादिक व्रजमिल बैठेहें कछु करतहें मंत्र बिचार ॥ इंद्र महोत्सवको दिन आयो मंगवाये नाना उपहार ॥१ ॥ श्याम सुन्दर हस यों जु कहतहें तुम काहि भजतहो तात ॥ कोन यज्ञ यह कोन देवता मोसों कहो किन बात ॥२ ॥ वरस वरस प्रति नेमसों हम देत शक्र बलिदान ॥ घन बरसे गौ तृण चरें उपजे अधिक धन धान ॥३ ॥ श्रीपति श्रीमुख यों जु कहेतहें व्रजवासिनकी औरे रीति ॥ मघवाको जु कहाहे तो तुमजाहि डरत भय भीति ॥४ ॥ कर्म धर्महे श्रीपुरुषोत्तम गोवर्धनगिरिराज ॥ सुरभी वत्स सब तृणचरें इन ग्वालनके हितकाज ॥५ ॥ तुमजो कछु कह्योहो हमसों सब गोकुल तुमारे संग ॥

हमपूजा विधि जानत नाहीं और सकल सुख अंग ॥६ ॥ तुम पूजो परबत प्रेमसों अरपो सब मिल ग्वाल ॥ रूपधरें बलि खायगो वपु सुंदर बाहु विशाल ॥७ ॥ खटरस भोग शाकपाकादिक पूवा पायस पकवान ॥ माँगमाँग अनुशानकियो चढ गोत्रशिखर भगवान ॥८ ॥ सुरपति भजते जन्मगयोहे हम कबहूं नहिं देख्यो रूप ॥ तातकाल फल सिद्ध भयो हम पायो इष्ट अनूप ॥९ ॥ शक्र सहस्र मुख विलख्यो बहुत कलानकरकाछ ॥ विष्णुदास प्रभुसों हट कियो अर्पि न अंजुली छाछ ॥१० ॥

□ राग सारंग □ (५०) येहीहे कुलदेव हमारो ॥ काहू नहीं ओर हम जाने गोधनहे व्रजको रखवारो ॥१ ॥ दीपमालिकाके दिन पांचक गोपन लेहु बुलाय ॥ बलि सामग्री करो अबही तुम कही सबन समुझाय ॥२ ॥ लिये बुलाय महरि महेराने सुनत सबे उठिधाई ॥ नंदघरनी यों कहत सखिनसों कित तुम रहत भुलाई ॥३ ॥ भूली कहा कहतहो हमसों कहत कहा उरपाई ॥ सूरदास सुरपतिकी सेवा तुम सबहिन विसराई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (५१) हमारी बात सुनो व्रजराज ॥ सुरपतिको बलि भाग न दीजे पूजो यह गिरिराज ॥१ ॥ बरसे मेह गौ सुख पावे व्हेहे व्रज सुख काज ॥ सूरदास प्रभु नंदकुंवर कहें बेगही कीजे साज ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (५२) विप्र बुलाय लियो नंदराय प्रथम आरंभ दक्ष से कीनो ॥ उठे वेद धून गाई ॥१ ॥ गोवर्धन सीर तिलक बज दीओ ॥ मेरी इंद्र ठुकराई अन्नकूट ऐसो रच राख्यो ॥ गिरिशोभा अति भाई ॥२ ॥ भांत भांत पकवान बनायों ॥ कापे बरनी न जाई सुर श्याम सो कहत ग्वालिनी गीर जेवे की है जु बुजाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (५३) व्रज घर घर अति होत कोलाहल ॥ ग्वाल फिरत उमगे जहाँ तहां ॥ सब अति आनंद भरे उमाहल ॥१ ॥ मिलत परस्पर अंकन देदे ॥ शक्त भोजन ले ले साजत ॥ दधि लोनो मधुमार भरत ले श्याम अंग सब राजत ॥२ ॥ मैहर ते ले धरत अजरत्रे खटरस के ज्यों न

बार ॥ डलान भरी भरी कलसन भरी भरी जोटत है परकार ॥३ ॥ सहस्त्र सकट पकवान अन्न बहु नंद महर घर ही से ॥ सुर चले सब ले घरघर ते रुप सुवन नंदही को ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (५४) देख थके मगन गंधर्व सुर मुनि ॥ धन्य नंद को शुकत पुरुतन धनिधन कह कह जेजे धुनि ॥१ ॥ धन धन गोवर्धन पर्वत करत प्रशंसा सुरमुख फनी फनी ॥ आपही खात कहत है गिर को यह मैं मा देखि न कहुं सुनि ॥२ ॥ यह कहत अपने लोकन गये धन ब्रज वासी सब कीने उनी ॥ सुरस्याम धनधन व्रज व्रज हरत धनधन सब कहत है गुन गुनी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (५५) गोप उपनंद वृखभान आये ॥ बने सब कहत गिरिराज को भेट कर गये सब पाआजतुम हरस पाये ॥१ ॥ देवता बडे तुम प्रगट दरसन दियो प्रगट भोजन कियो सबन देख्यो ॥ प्रगट बानि कहि गिरिराज तुमने सही ओरन ही तिहुं भवन कहुक पेख्यो ॥२ ॥ हसत हरि मनही मन तनक गिरिराज तन देव प्रसन्न सो करो काज सुर यह प्रगट लीला कहि सबन सो चले घर घरन तब बजत बाजा ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (५६) सकट साज सब ग्वाल चले गिरि गोवर्धन पूजा के काज ॥ घर ते झिमरान चले ले भांत बोहु बाजन बाज ॥१ ॥ अति आनंद भरे गुन गावत उमड्यो फिरत अहिर ॥ पेंडा नहिं खावत तहाँ को ॥ व्रज बासन की भीर ॥२ ॥ चले आवत व्रज बन बनको एक बनते व्रज जन सूरदास तोहा श्याम सबनके देखि यह तहे सिरताज ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (५७) सुरपत को लांग भेट गोवरधन पूजे आपनो कुलदेव छांडी पूजो किनही दूजो ॥ १ ॥ त्रणजल जहाँ बोहोत होत पावे सुख गैया ॥ हित हरिदास बरीय सीतल सही छैया ॥२ ॥ पाक साक बिजन बोहो अन्नकूट कीनो ॥ गोविंदप्रभु व्रजजन यों माँग माँग लीनो ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (५८) गोवरधन पूजत नंदनंदन व्रज सुन्दर मिल मंगल गावत ॥ इंद्र, यक्ष, मह मेट लाडिलो गोवर्धन विध यक्ष करावत ॥१ ॥ ले ले नाम बोल सब ग्वालन संग ले श्याम खिरक मे आवत ॥ गजगति चाल मराल मंद गति व्रज भामिन मन माह बठावत ॥२ ॥ ले ले सखा सुबल श्रीदामा दोरे बल बजजन पे आवत ॥ गांग बुलाई धुमर धोरि काजर पियरी तिरछी धावत ॥३ ॥ गाय खिलाय लालघर आये विप्रन दान दिये मन भाये ॥ जसुमति मन प्रफुलित आनंद अति कुण्डवारो भाजन पहराये ॥४ ॥ यक्ष रूप धर गिरि पर बैठे भोजन करि सबन सुख दिनो ॥ मघवा बिलख गयो मन हिना दास निरख तन मन बलि कीनो ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (५८) बनेरी गोपाल लाल रस आवत। माधुरी मूरति मनमोहन मन भावत ॥१ ॥ कुंचित केस सुदेस वदन पर बीच बीच जल बूंद रहे। मानो कमलपत्र पर मोती खंजन निकट सलोल गहे ॥२ ॥ गोपी-नैन भृंग रस लंपट उडि उडि परत वदन मांही। 'परमानंद दास' रस लोभी अति आतुर कहां जांही ॥३ ॥

□ राग नट □ (५९) गिरिवर श्याम की अनुहारि ॥ करत भोजन अति अधिकाई सहस्त्र भुजा पसारि ॥१ ॥ नंदको कर गहें ठाडे यहि गिरिको रूप ॥ सखी ललिता राधिकासों कहति देख स्वरूप ॥२ ॥ यह कुंडल यह माला यही पीत पिछोरी ॥ शिखर शोभा स्यामकी छबि श्याम छबि गिरिजोरी ॥३ ॥ नारि बदरोला रही वृषभान घर रखवारि ॥ तहांते वह भोग अरपत लियो भुजापसारि ॥४ ॥ राधिका छबि देख भूली स्याम निरखत ताहि ॥ सूरप्रभु वश भई प्यारी कोर लोचन चाहि ॥५ ॥

□ राग नट □ (६०) चले व्रज घरन को नर नारी। इन्द्र की पूजा मिटाई तिलक गिर को सार ॥१ ॥ पुलक अंग न समात मन में महर महर समाज। सब ही हम बड़ो देव पायो गिरगोवर्धन राज ॥२ ॥ इनही ते व्रज चैन वें हे माँग भोजन खाडी ॥ यह घेरा चलत व्रजजन सबन मुख यह बात ॥३ ॥

सबही सदन को आय पहुँचे करत केल बिलास। सुरप्रभु यह करी लीला इंद्र रिस परकास ॥४ ॥

□ राग नट □ (६१) बिनती करत सकल अहीर ॥ कलश भर-भर ग्वाल ले ले शीखर डारत छोर ॥१ ॥ चल्यो बहीं बहीं चहुँगाँ ते सुरसुरी (गंगाजी) जलधार। बसन भूखन ले चढ़ाये भरी अती व्रजनार ॥२ ॥ मुदित लोचन भोग अरप्यो प्रेमसों रुचीभार। सबन देखी प्रगट मूरत सहस्र भुजा पसार ॥३ ॥ रुची सहित गिरी सबन आगे करन लेके खाई। नंदसुत मेहिमां अगोचर सूर कहे क्यों गाई ॥४ ॥

□ राग नट □ (६२) चली घर घरन ते व्रजनार। मानों इंद्र वधुन पंगत लगत शोभा भार ॥१ ॥ पहर सारी सुरंग पंचरंग अष्ट दस शृंगार। यह इच्छा सबन के चित्त श्याम रूप निहार ॥२ ॥ ललित चंद्रावलि सहित राधा संग फिरत महतार। चले पूजा करन गिरी की सूरसंग नर-नार ॥३ ॥

□ राग गोरी □ (६३) स्याम कहत पूजा गिरिमानी ॥ जो तुम भाव-भक्तिसों अरप्यो देवराज सब जानी ॥१ ॥ तुम देखत भोजन सबकीनों अब तुम मोहि पत्याने ॥ बडो देव गिरिराज गोवर्धन इनहि रहो तुम माने ॥२ ॥ सेवा भली करी तुम मेरी देवकही यह बानी ॥ सूरनंद मुखचुंबत हरिको यह पूजा तुमठानी ॥३ ॥

□ राग गोरी □ (६४) ओर कछू मांगो नंदमोसों ॥ जो चाहो सो देऊं तुरतही कहत सबे गोपनसों ॥१ ॥ बलमोहन दोउ सुत तेरे कुशल सदां ये रहिहें ॥ इनको कह्यो करत तुम रहियो जब जब जोये कहिहें ॥२ ॥ सेवा बहुत करी तुममेरी अब सब तुम घर जावो ॥ भोग प्रसाद लेवो कछु मेरो गोप सबे मिलखावो ॥३ ॥ सपनेहीमें कह्यो श्यामसों करो हमारी पूजा ॥ सुरपति कोन बापरो मोते ओर देव नहि दूजा ॥४ ॥ इंद्र आय वरखे जो व्रजपर तुमजिन जाऊ डराय ॥ सुनो सूरसुत कान्ह तिहारो लेहे मोहि उठाय ॥५ ॥

□ राग कान्हरो □ (६५) हँसहँस बात कहत मन मोहन हमारो देव गोवर्द्धनराई ॥ जाके आसरें हम गौचारें सुरपतिको कहा आवे जाई ॥१ ॥ नित उठ खेलन हमपें आवे मांग लेत पकवान मिठाई ॥ जाके चरण प्रताप तेजतें रहत सदां सुखदाई ॥२ ॥ अखिल लोकको नाथ कहावे शिव विरंचि जाकी करत बडाई ॥ सूरश्याम यों कहत सबनसों गोवर्धनकी करो पुजाई ॥३ ॥

□ राग ईमन □ (६६) घेरो लाल आपनी गैया। नेक मुरली बजाय सुनाओ श्रवन सुनत वे जहाँ तहाँ तें आवे धाय धैया ॥१ ॥ चरत चरत दूर देखियत नहीं चरत कोमल त्रन देख रही लुभैया। गोविंदप्रभु ऊंचे चढ टेरो भई अवार बगदावो नातर खिजेगी जसोमति मैया ॥२ ॥

□ राग ईमन □ (६७) आई व्रजवधु मन हरन धरन दीपमालिका ॥ लसत कनक थाल कर कमबन मध नंद महर घर घरन ॥१ ॥ गाज मोतिन के चोक पुराये गावत मंगल गीत जुवतिजन ॥ नंददास प्रभु छबि नीरखत फूली फिरत मन ही मन ॥२ ॥

श्री गिरिराजजी के पद

□ राग नट □ (१) धन्य धन्य हरिदास राई। सानिध्य सेवा करत सकल अंग ताते मोहन जय भाई ॥१ ॥ कंद मूल फल फूल भेट धर शिला सिंघासन रुचिर बनाई ॥ कोमल त्रृण गायन चरवेको सीतल जलके झरना बहाई ॥२ ॥ विविध केलि क्रीडत सखा संग छिनु उतरत छिनु चढत है धाई ॥ रामकृष्णके चरण स्पर्श करि पुलकित रहत सदाई ॥३ ॥ इनको भाग्य कहाँ लगि बरनें कोमल कर पै लियो है उठाई। प्रेम मुदित व्है कहत गोपिका 'गोविन्द' बल बल जाई ॥४ ॥

□ राग बिहाग □ (२) मोहिं भरोसौ श्रीगिरिराज कौ। कहा जु भयौ तन, मन, धन जो रैं? भक्ति बिना कहा काज कौ? ऊंची मेंडी कौन काज की व्रज वसिबौ भलो छाज कौ ॥ 'छीत-स्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल वल्लभ-कुल-सिरताज कौ ॥१ ॥

अन्नकूट भोग आयवे के पद

□ राग सारंग □ गोवर्धन पूज सबे रंग भीने । सहस्त्रभुजा गिरिधरन दूसरो जेवत श्याम सखन संग लीने ।।१।। उमड़े सुन सुन बाल वृद्ध सब अगणित शाक पाक, घृत कीने । जो कोऊ सकुच रही गुरुजन की बाँह पसार बोल तेऊ लीने ।।२।। जय जयकार भयो चहूँ दिशते भामिनी मिल गावत स्वर झीने । चत्रभुज प्रभु गिरिधरन सदा व्रज राज करो भक्तन सुख दीने ।।३।।

□ राग सारंग □ (१) अन्नकूट कोटिक भांतनसों भोजन करत गोपाल ।। आपही कहत तात अपनेसों गिरि मूरति देखो ततकाल ।।१।। सुरपति से सेवक इनहीके शिवविरंचि गुण गावे ।। इनहीतें अष्ट महा सिद्धि नवनिधि परम पदारथ पावे ।।२।। हम गृह बसत गोधन बन चारत गोधनही कुलदेव ।। इनें छांडजो करत यज्ञ विधि मानो भींतको लेव ।।३।। यहसुन आनंदे व्रजवासी आनंद दुंदुभी बाजे ।। घरघर गोपी मंगलगावें गोकुल आन बिराजे ।।४।। एक नाचत एक करत कुलाहल एक देत करतारी।। बनिता वृंद बाँयनों वांटत गुंजा पुआ सुहारी ।।५।। तबही इंद्र आयुस दीयो मेघन जाय प्रलयके बरखो ।। यह अपमान कियो घों कोने ताहि प्रकटव्हे परखो ।।६।। सातद्योस जल शिला सहस्त्रन महा उपद्रव कीनों।। नंदादिक विस्मित चितवत सब तब गिरवर कर लीनों ।।७।। शक्र सकुच सुरभी संग लायो तजी आपनी टेक ।। गहे चरण गोविंद नाम कहि कियो आप अभिषेक ।।८।। महेरि मुदित वर वसन मगाये बोलबोल सब ग्वालिन दीने ।। प्रभु कल्याण गिरिधर युगयुग यों भक्त अभय पदकीने।।९।।

□ राग सारंग □ (२) देखोरी हरि भोजन खात ।। सहस्त्र भुजाधर उत जेंमत हैं इत गोपनसों करतहैं बात ।।१।। ललिता कहत देखहो राधा जो तेरे मन बात समात ।। धन्य सबे गोकुलके बासी संग रहत गोकुलके तात ।।२।। जेंमत देख नंद सुखदीनों अति आनंद गोकुल नरनारी ।। सूरदास स्वामी सुख सागर गुण आगर नागर देतारी ।।३।।

□ राग सारंग □ (३) यह लीला सब करत कन्हाई ।। उत जेंमत गोवर्धनके संग इत राधासों प्रीति लगाई ।।१।। इत गोपिनसों कहत

जिमावो उत आपुन जेंमत मन लाई ।। आगें धरे छहों रस व्यंजन चहूंदिशतें अति अरग बढाई ।।२।। अंबर चढे देव गन देखत जयध्वनि करत सुमनन बरखाई ।। सूरश्याम सब के सुखकारी भक्तहेत अवतार सदाई ।।३।।

□ राग सारंग □ (४) जेंमत देख नंद सुख पाये ।। कान्ह देवता प्रगट दिखाये ।।१।। व्रजवासी गिरि जेंमत देखे ।। जीवन जन्म सुफल कर लेखे ।।२।। ललिता कहत राधिका आगें ।। जेंमत कान्ह नंद कर लागें ।।३।। में जानी हरिकी चतुराई ।। सुरपति मेट आप बलिखाई।।४।। उत जेंमत इत बातन लागें ।। कहत श्याम गिरि जेंमत आगें ।।५।। में जों बात कही सोई आई ।। सहस्त्रभुजाधर भोजन खाई ।।६।। ओर देव इनकी शरनाई ।। इत बोलत उत भोजन खाई ।।७।। सूरदास प्रभुकी यहलीला नंदनंदन व्रज छेलछबीला ।।८।।

□ राग सारंग □ (५) यह छबि देख राधिका भूली ।। बात कहेत सखियनसों फूली ।।१।। आपही देवा आप पुजेरी ।। आपही जेंमत भोजन ढेरी ।।२।। अति आतुर जेंमतहें भारी ।। इक वृषभान बिलोवनहारी ।।३।। नाम ताहि बदरोला नारी ।। ताकी बलि दई भुजापसारी ।।४।। उत गिरि संग खात बलिसारी ।। बदरोलाकी बलि रुचिकारी ।।५।। सूरदास प्रभु जेंमनहार ।। गिरि बपरेको कहा अधिकार ।।६।।

□ राग सारंग □ (६) आरोगत आपुन पर्वत रूप ।। वे देखो जु मागी लेत है चौद भुवनको भूप ।।१।। बडभागी हैं नंद जसोदा जिन पायो हरि सुत ।। लाल देखि आतुर धाई ले ओदन पायस पूत ।।२।। मिट्यो भाग जान्यो जब सुरपति बाढ्यो है अति कोप ।। 'कृष्णदास' गिरिवर कर धार्यो इन्द्र महोच्छव लोप ।।३।।

अन्नकूट भोग सरायवे के पद

□ राग सारंग □ (१) भलीकरी पूजा तुम मेरी ।। बहुत भांत कर व्यंजन अरप्यो सो सब मान लई में तेरी ।।१।। सहस्त्र भुजा धर भोजन कीनों तुमदेखत विद्यमान ।। मोहि जानत यह कुंवर कन्हैया नाहिनकोऊ आन ।।२।। पूजा सबकी मानि लई में जाउ घरन व्रजलोग ।। सूरश्याम अपने कर लीने वांटत जूंठो भोग ।।३।।

□ राग सारंग □ (२) आन ओर आन आन कहत बिझक रहत व्रजके नारीनर ॥ कटुतिक्त आम्ल खार सलोने लोने प्रकार खटरससों प्रीत बाढी रससों आरोगत सुंदर वर ॥१ ॥ गिरिराज बरनबरन शिला सहस्रन मोदक ठोर ठोर घेवर गूंजाबावर ॥ राजारामके प्रभुकों जल अचवाबन कारन इंद्र झारी भर धरेरी जलधर ॥२ ॥

अन्नकूट आरती तथा इन्द्रमान भंग के पद

□ राग सारंग □ (१) अब न छांडों चरण कमल महिमा में जानी ॥ सुरपति मेरो नाम धर्यो लोक अभिमानी ॥१ ॥ अबलों में नहीं जानत ठाकुरहे कोई ॥ गोपी ग्वाल राख लिये मेरी पत खोई ॥२ ॥ ऐरावत कामधेनु गंगाजल आनी ॥ हरिको अभिषेक कियो जयजय सुरवानी ॥३ ॥ वारंवार प्रणाम करत गोवर्द्धन धारी ॥ परमानंद गोप भेख लीला अवतारी ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (२) आवोरे आवोरे भैया ग्वालो या पर्वत की छैयां ॥ नाचो गावो करो बधाई सुखें चरावो गैयां ॥१ ॥ जिन तुमारो पकवान जो खायो सोई रक्षा करिहे ॥ परमानंद दासको ठाकुर गिरि गोवर्धन धरिहे ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (३) गोपी ग्वाल पुकारन लागे शरण तिहारी राखोजू ॥ बादर जुरजुर गाजन लागे भली होय सो भाखोजू ॥१ ॥ इंद्र कोप हम उपर कीनो मेघ समूह पठायेजू ॥ मूशलधार बरखत सेनापर रिपु समान उठ धायेजू ॥२ ॥ जिनडरपो हों नाथ तिहारो हँसहँस कहत मुरारीजू ॥ अनायास छत्र ज्यों छाया पर्वत लीयो उखारीजू ॥३ ॥ सातद्योस अपनो सो कीनों मघवा रह्यो खिस्याईजू ॥ परमानंद कहें गोपीजन केसें बेनु बजाईजू ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (४) राख लेहो गोकुलके नायक ॥ भीजत गाय गोप गोसुत सब विषम बूंद लागत जानो सायक ॥१ ॥ मूशलधार बरखत

सेनापर महा मेघ मघवाके पायक ॥ एसो ओर कोनहे नंदसुत यह दुख दुसह मेटवे लायक ॥२ ॥ अघ मर्दन नख उदर विदारन बकी सिंघारन सब सुखदायक ॥ तिनकूं कहा कोन डर सूर प्रभु जिनके तुमसे सदा सहायक ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (५) राख लेहो अब नंद किशोर ॥ तुमजो इंद्रकी पूजा मेटी वरखत है अतिजोर ॥१ ॥ व्रजबासी सब यों चितवतहें ज्यों कर चंद चकोर ॥ जिन डरपो नयन सब मूंदो धरहों नखकी कोर ॥२ ॥ कर अभिमान इंद्र झर लायो करत घटा घनघोर ॥ सूरश्याम कहें सब राखों बूंद न आवे छोर ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (६) गोवर्द्धन गिरि कर धर्यो मेरे बारे कन्हैया ॥ बूझत यशुमति लालकों सुत जान नन्हैया ॥१ ॥ माखन दूध खवायकें कीनो मोटोरी मैया ॥ तेरे पुण्य प्रतापतें कीनी व्रजजन छैया ॥२ ॥ इन्द्रमान मर्दन कियो आयो पांय परैया ॥ यह लीला व्रज नित्य रहो गावे दास सदैया ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (७) बलबल चरित्र सुंदरश्याम गोवर्द्धन केसें उठायो कोमल भुजवाम ॥१ ॥ शकट भंजन पूतना हठ तोर तरु बंधे दाम ॥ फेर अंचल लाल मुखपर यशुमति व्रजवाम ॥२ ॥ ना लियो बलराम सूर प्रभु धर्यो नखके ग्राम ॥ ताहि दिनतें कह्यो ऋषिने धर्यो गिरिधर नाम ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (८) लीला लाल गोवर्धनधरकी ॥ गावत सुनत अधिक रुचि उपजत रसिक कुंवर श्रीराधावरकी ॥१ ॥ सातद्योस गिरिवर कर धार्यो मेटी तृषा पुरंदर दरकी ॥ व्रजजन मुदित प्रताप चरणतें खेलत हँसत निशंक निडरकी ॥२ ॥ गावत शुक शारद मुनि नारद रटत उमापति बलबल करकी ॥ कृष्णदास द्वारें दुलरावत मांगत जूठन नंदजूके घरकी ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (९) बलहारी गोपालकी गोवर्धन धार्यो ॥ इंद्र ढीठ

मदमत्तको जिन गर्व प्रहार्यो ॥१ ॥ बहुत यत्न मघबाकीये पाछो न संभार्यो ॥ बैर कियो व्रजनाथसों आपुनही हार्यो ॥२ ॥ ले सुरभी पांयन पर्यो अपराध निवार्यो ॥ कृष्णदासके प्राणको हस वदन निहार्यो ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (१०) याते जिय भावे सदां गोवर्धनधारी ॥ इंद्र कोपतें नंदकी आपदा निवारी ॥१ ॥ जो देवता आराधियें सो हरिको भिखारी ॥ अन्यदेव कित सेईयें बिगरे अपकारी ॥२ ॥ दुःशासन के क्रोधतें द्रौपदी उबारी ॥ परमानंद प्रभु सांवरो भक्तन हितकारी ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (११) चिरजीयो लाल गोवर्धनधारी ॥ सात द्योस जल वृष्टि निबारी या ढोटा परबारी ॥१ ॥ देवराज प्रतिज्ञा मेटी गोप भेख लीला अवतारी ॥ नलकूब्बर मणिग्रीव उबारे बालक दशा पूतना मारी ॥२ ॥ देत असीस सकल गोपीजन राजकरो व्रंदावन चारी ॥ परमानन्द दासको ठाकुर अनुदिन आरती हरत हमारी ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१२) वृजपति अपुनेंन बिसारेगो ॥ आरत कोप इन्द्र जल वरस्यो गिरिधर कान्ह उबारेगो ॥१ ॥ दावानलतें जरत उबारे जल प्रवाहतें टारेगो ॥ गोपी ग्वाल बाल मुख चाहत सुरभी गोप संभारेगो ॥२ ॥ बिख जल पीवत मरत उबारे सुरपति सोच निवारेगो ॥ मेंहा प्रभु की सरन सकल व्रज क्यों अनाथ कर डारेगो ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१३) राखहु राखहु व्रजके नायक ॥ आय जुरे घन मह्रा प्रलय के तुम बिन हम कों कोन सहायक ॥१ ॥ गरज गरज चहुंदिशते बरखत बूंद परत जानो सायक ॥ को एसो समरथ त्रिभुवन में नंदनंदन बिन लायक ॥२ ॥ सुन यह बचन निरख निज मघवा को मद ढायक ॥ गोविन्द प्रभु गिरिधर कर लिनो व्रजजन सब सुखदायक ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१४) गोविंद गोकुल की मणी मेरेरी । या लगाय रही हो तन में दुख विसरत है तेरे ॥१ ॥ जाके गर्व बढ्यो सोई सुरपति रह्यो सात दिन घेरे । लीजे हित कान गोवर्धन धार्यो सुभग भुजा कर डेरे ॥२ ॥

जाके जसुमति गर्भ बखानत निगम नित बोत टेरे। सोई हरि सुर शरत शीरशन पायो जतन घनेरे ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१५) गिरिपर कोपिकें उठ्यो इन्द्र रिस्याय ॥ध्रु० ॥ अपनेजु व्रतके काज कारन मनमें अति अकुलाय ॥ पठये जो सुरपति दूत तब तहां गये दोरे धाय ॥ देखकें व्रजराज लीला कहो हमसों आय ॥१ ॥ एक सांवरोसो नंदढोटा कछु कही न जाय ॥ उन मेटकें पूजातिहारी दई गिरिहिं लुटाय ॥ श्रवण सुन सुरराज कोप्यो भयो अपने भाय ॥२ ॥ काट बंधन देउ सबके लगो गिरिसों जाय ॥ उमडेजु मघवा चहूं दिशतें व्रजे देऊ बहाय ॥ देखकें परमाण उनको कहो हमसों आय ॥३ ॥ सप्त निशदिन मान एकों करी अति अकुलाय ॥ नीर और समीर दोनों बहे बहुत बनाय ॥ देख धीरज धरे न कोऊ कहा भई यादोंराय ॥४ ॥ बूंद पाहनके समान बरखत जानो ताहि ॥ ग्वाल गोपी गौ बछरा रहे सबन सकुचाहि ॥ तबतो न मान्यो कह्यो उनको हे कोउ अबे सहाहि ॥५ ॥ देखकें मनको अँदेसो लियो गिरि जो उठाय ॥ धर्यो नखके अग्र तब यशोमति जु मनहि सिहाय ॥ देहु लकुटी चहुं ओरन मति कहूं डिग जाय ॥६ ॥ सप्त सागर जल सुदर्शन लियो सकल समाय ॥ भीजे नहि पाषाण पोहोमी सलिल सहज सुभाय ॥ गतिमति हरी सब इंद्रकी मदजु लोचन छाय ॥७ ॥ हारमानकें चूक अपनी करों कोन उपाय ॥ जान्यो नहीं परमाण तुम्हारो रह्यो भ्रमजो भुलाय ॥ गयो मद सब उतरकें तब मिल्योहे शिरनाय ॥८ ॥ तब कियो सनमान हरिजू इन्द्र छूवे पाय ॥ पीठ थापकें कियो अपनो दियो मनजो बढाय ॥ केशव दासके प्रभुकी लीला ते सदां गुणगाय ॥९ ॥

□ राग धनाश्री □ (१६) माधोजू राखो अपनी ओट ॥ वे देखो गोवर्धन उपर उठेहें मेघके कोट ॥१ ॥ तुमजो शक्रकी पूजा मेटी वेर कियो उनमोट ॥ नाहिन नाथ महातम जान्यो भयोहे खरेतें खोट ॥२ ॥ सात द्योस जल वर्ष सिरानो अचयो एकही घोट ॥ लियो उठाय गरुवो गिरि करपर

कीनो निपट निघोट ॥३ ॥ गिरिधार्यो तृणावर्त मार्यो जीयो नंदको ढोट ॥ परमानंद प्रभु इंद्र खिस्यानो मुकुट चरणतर लोट ॥४ ॥

□ राग धनाश्री □ (१७) महाबल कीनोहो व्रजनाथ ॥ इत मुरली उत गोपिनसों रति इत गोवर्धन हाथ ॥१ ॥ उत बालक पय पान करावत इत सुरभी तृणखात ॥ उतहि चरत वछरा अपने रस ग्वाल बजावत पात ॥२ ॥ कोप्यो इंद्र महाप्रलयको झरलायो दिनसात ॥ परमानंद प्रभु राख लियो व्रज मेट इंद्रकी घात ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१८) महाकाय गोवर्धन पर्वत एकही हाथ उठाय लियो ॥ देवराजको गर्व हर्यो हरि अभय दान ग्वालनकों दियो ॥१ ॥ यह बालक लीला अवतारी कही नंदजू ग्वालन आगे ॥ सेवा करो स्नेह विचारी कबहु वियार न ताती लागे ॥२ ॥ तोर्यो शकट पूतना मारी तृणावर्त दानव संहार्यो ॥ श्रीयमुना जल निर्विष कीनो कालीनाग बाहिर निकार्यो ॥ अर्जुन वृक्ष छिनकमें तोरे आपन दाम ऊखल बंधाये ॥ परमानंददासको ठाकुर जाकों गर्ग मुनि गाये ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (१९) व्रजजन लोचनहीको तारो ॥ सुन यशोमति तेरो पूत सपूतो कुल दीपक उजियारो ॥१ ॥ धेनु चरावन जात दूर तब होत भवन अति भारो ॥ घोष सजीवन मूर हमारो छिन इत उत जिनटारो ॥२ ॥ सात द्योस गिरीराज धर्यो कर सात बरसको बारो ॥ गोविंद प्रभु चिरजीयो रानी तेरो सुत गोप वंश रखवारो ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२०) वारी मेरे कान्हर प्यारे अबही दिननवारे केसें अति भारो गिरि राख्योधर करपर ॥ कोमल भुजा तिहारी यातें भय भीति भारी देखि देखि करतहे हीयो मेरो धर धर ॥१ ॥ स्याम महा बलकीनो गिरि छिनमें उठाय लीनो आये ग्वाल गाय सब शरण मेघके डर ॥ नीको कीयो उपाय याही मिस करी सहाय बोलि लेहु ग्वाल बाल संग भैया हलधर ॥२ ॥ नेकहू न बीच पार्यो आठों जाम अंधियारो बरखत घन

सातदिन लाग्यो एकही झर ॥ चत्रभुज प्रभु गिरिधारी व्रजराखलियो भारी इंद्र खिस्याय पांय पर्यो आय चरननतर ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२१) बाल गोपाल कहो यह बात ॥ केसें कर गोवर्धन लीनो राख्यो हे दिन सात ॥१ ॥ मैया यह बल याकोहे में तातें माखन खात ॥ एसे वचन सुनत नंदरानी रबकि लगायो गात ॥२ ॥ व्रज बनिता यह बतियां सुनके आपुसमें मुसक्यात ॥ द्वारकेश प्रभु चतुर सिरोमनी प्रेम बढायो मात ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२२) हम नंदनंदन-राज सुखारे ॥ सबै टहल आगेंई भुज-बल गाँय गोप प्रतिपारे ॥१ ॥ गोधन फैलि चरत वृन्दावन राखत कान्ह पियारे ॥ सुरपति खुनस करी व्रज ऊपर आपुन सों पचिहारे ॥२ ॥ गोपी औरु ग्वाल बनि आये अब बड भाग हमारे ॥ 'परमानन्द' स्वामी सरनागत अब जंजार निवारे ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२३) गिरि कौ महातमु अब मैं जान्यो । केतीइक बात कहों हौं बा की कैसें करों बखान्यो ॥ निगम अगत्य जाकौ जसु निसिदिन चाहत दरस दिखान्यो। 'परमानन्द' प्रभु जो-जो कह्यो सो नंदराई नें मान्यो ॥

□ राग मलार □ (२४) सुन हरि मेह आयो ॥ घरकों गाय बगदाओ मोहन ग्वालन टेर सुनायो ॥१ ॥ कारी घटा सधूम देखीयत अति गति पवन चलायो ॥ चारों दिशा चितै किनदेखो दामिनी कोंध्यो लायो ॥२ ॥ अति घनश्याम सुदेश सूर प्रभु कर गहि शैल उठायो ॥ राखे सकल सुखहीमें व्रजजन इंद्रको गर्व गमायो ॥३ ॥

□ राग मलार □ (२५) आज कछु बदरन अंबर छायो ॥ नंदको लाल हठीलो मोहन तापर इंद्र चढ आयो ॥१ ॥ तब गिरिधर पीय बुद्धि उपाई नखपर शैल उठायो ॥ गोपी ग्वाल सब राख लियेहें कुंभनदास यश गायो ॥२ ॥

□ राग नट □ (२६) मेरे लाडिले गोपाल गिरिकर थर्यो सातबरसकें सात द्योस॥ बलिहारी या वाम भुजाकी या ढोटाकी सुरन सहित सुरपति डर्यो ॥१ ॥ अति भयभीत अंजुली जोर ठाडो भयो ले सुरभी पांयन पर्यो ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर सब सुख सागर देव राजको गर्व हर्यो ॥२ ॥

□ राग नट □ (२७) मेरे लाडिले गोपाल गिरि कर धार्यो ॥ इन्द्र कोप हम उपर कीनो पठये रिस्याय मेघवार्यो ॥१ ॥ सातद्योस मूशलधार वरख्यो एको पल न बीच पार्यो ॥ गोपी ग्वाल गोप गो सुत सब आप बलराख गर्व गार्यो ॥२ ॥ छांड्यो अभिमान अमरापति अपनो बिगार जियमें बिचार्यो ॥ कुंभनदास प्रभु शैल धरन के आय पर्यो पांयन हार्यो ॥३ ॥

□ राग नट □ (२८) कहिकहिरे कन्हैया वारफेर डारी मैया ऐसे कोमल पाणि गिरि क्यों धार्यो॥ सात बरसके सात द्योस निश एक हाथ ले सुरपतिको जो गर्व गार्यो ॥१ ॥ सकल घोष व्रज गिरिधर राख्यो किन न सहाय विचार्यो ॥ पांय परत सुरराज तबही व्रज राज कुंवर ऐसेको अपराध निवार्यो ॥२ ॥

□ राग नट □ (२९) सद नवनीत धौरी धेनु क्षीर तेरे स्तनपर पोख्यो मेरो पाणिवाम॥ यह बलहू में दीनो गिरि कर लीनो अरग थरग राख्यो जब गोप लकुट लेले लागे विश्राम ॥१ ॥ अति भयभीत अंजुली जोरि ठाडो भयो जान महातम प्रणत काम ॥ दीनबंधु यह बिरद जान व्रजराज तात तब अभय दानदे फेर पठायो देव धाम ॥४ ॥

□ राग नट □ (३०) कहेथों मेरे बारे हो लाल गोवर्धन केसें उठाय कर लीनों॥ एकही हाथ अकेलेही ठाडे नेंक बलदाउ न दीनों ॥१ ॥ चूंमत भुज चांपत उरलावत अचराप्रेम जलभीनों ॥ गोविंद प्रभु सपूत लरिकाई ते सब व्रजजन सुखदीनों ॥२ ॥

□ राग नट □ (३१) सबमिल पूछें गोवर्धन क्यों धर्यो ॥ कहो कृष्ण एसो डरकाको क्यों मघवा पायन पर्यो ॥१ ॥ सोई मंत्र किन हमहि सिखाओ हमकरें तुम्हारी सेवा॥ परमानंद ऐसो ठाकुर तज कित आराधत देवा ॥२ ॥

□ राग नट □ (३२) पूछत जननी लाल कहा कीनों ॥ सुंदर कर कोमल उपर गोवर्धन केसें लीनों ॥१ ॥ चुंबत भुज चांपत उर लावत सकल कला प्रवीनों ॥ गोविंदप्रभु विधु वदन बिलोकत तन मन धन सब दीनों ॥२ ॥

□ राग श्री □ (३३) जयति जयति हरिदास वर्य धरणे ॥ वारि वृष्टि निवार घोष आरति टार देवपति अभिमान भंग करणे ॥१ ॥ जयति पटपीत दामिनि रुचिर वर मृदुल अंग सामल सजल जलद वरणे ॥ कर अधर वेणुधर गान कलरव शब्द सहज व्रजयुवती जन चित्त हरणे ॥२ ॥ जयति वृंदाविपिन भूमि डोलन अखिल लोक बंदन अंबुज असित चरणे ॥ तरणि तनया तट बिहार नंद गोपकुमार कहत कुंभनदास त्वमसि शरणे ॥३ ॥

□ राग श्री □ (३४) जयति जयति श्रीगोवर्धन उद्धरण धीरे ॥ वृष्टि दुस्तर तरण व्रजकुल अभय करण देवपति दर्प हरण शामल शरीरे ॥१ ॥ जयति वारिज वदन रूप लावण्य सदन शिर श्रीखंड चंद कटि सुपट पीरे ॥ मुरली कल गान व्रजयुवती मन आकर्ष संग बिहरत सुभग यमुना तीरे ॥२ ॥ जयति रस रास सुविलास वृंदाविपिन सकल सुख पुंज मलयज समीरे ॥ चतुर्भुजदास गोपाल नट वेष सोई राधिका कंथ सब गुण गंभीरे ॥३ ॥

□ राग श्री □ (३५) नमो देवेंद्र दर्पहर श्रीमुरारी ॥ विदित अदभूत चरित्र गिरिराज उद्धरण गो गोप गोपीजन तापहारी ॥ नमो नवल बाल विनोद अखिल गोधन मोद वाम भुज बलवारि वृष्टिटारी ॥ युवती मुख पद्म मकरंद लंपट मधुप कमल लोचन कंज मालधारी ॥२ ॥ नमो सकल सौभाग्य निधि राधिका प्राणपति घोषपति मुरलिका रवविहारी ॥ कृष्णदासनि नाथ नंदनंदन कुंवर मदनमोहन दुरित नाशकारी ॥३ ॥

□ राग गोरी □ (३६) अरी माई देखनको कान्ह बारो ॥ निर्मल जल यमुनाको कीनो गहि नाथ्यो नागकारो ॥१ ॥ अति सुकुमार कमलहूतें कोमल गिरि गोवर्धन धार्यो ॥ बूडततें व्रज राखलियोहे मेट इन्द्रको गार्यो ॥२ ॥ हे कोऊ बडो देवनमें यशोमति पूत तिहारो ॥ ब्रह्मदास भक्तनकी जीवन सर्वस्व प्राण हमारो ॥३ ॥

□ राग गोरी □ (३७) गिरि तन शोभित हें गिरिधारी ॥ लोचन ललित

माधुरी मूरति सुंदर श्याम विहारी ॥१ ॥ बनमाला कर कमल विराजत इंद्र प्रतिज्ञा टारी ॥ गोप गाय अनुरागे राखे बर्षत बूंद निबारी ॥२ ॥ ले सुरभी सुरपति ठाडो भयो चंदन कमल भरथारी ॥ जाकों शिव सनकादिक ध्यावें जगन्नाथ हितकारी ॥३ ॥

□ राग मालव □ (३८) जय जय जय मोहन बलवीर ॥ जय जय इन्द्र मान मद भंजन श्रीगोवर्धन उद्धरण धीर ॥१ ॥ जय जय जय गोकुल दुख मोचन जय जय जय वर भेख आभीर ॥ मणिगण आभरण लसत पीत पट जय जय जय घनश्याम शरीर ॥२ ॥ जय जय अद्‌भुत चरित्र मनोहर श्रीराधा रसगुण गंभीर ॥ कृष्णदास प्रभु सब विध समरथ अद्‌भुत यश गावत मुनिकीर ॥३ ॥

□ राग मालव □ (३९) जय जय जय लाल गोवर्धनधारी भक्तनके सुखकारी ॥ जय जय जय शक मख भंजन जय जय जय गोकुल दुखहारी ॥१ ॥ जयजय जयति जयति जय जय जय जय भुज बल जल वृष्टि निवारी ॥ जयजयकृष्णदास प्रभु जय जय जय जय लीला ललित विहारी ॥२ ॥

□ राग मालव □ (४०) जीयो यशोदा पूत तिहारो जिन गोवर्धन धार्यो ॥ वामपाणि पर राख लियो गिरि बूडत सबन उबार्यो ॥१ ॥ सात दिवस अति वृष्टि लगाई प्रबल मेघ बहु डार्यो ॥ बुंद न परसी काहू देखत सुरपति मन लाचार्यो ॥२ ॥ ले सुरभी अभिषेक कियोहे तन मन धन सब बार्यो ॥ व्रजपतिकों अति करत बीनती पांय पर्यो बलहार्यो ॥३ ॥

□ राग मालव □ (४१) पद्मधर्यो जन ताप निवारन ॥ चार्यों भुजा चार आयुध धर नारायण भुव भार उतारन ॥१ ॥ चक्र सुदर्शन धर्यो कमल कर भक्तनकी रक्षाके कारन ॥ शंख धर्यो रिपु उदर विदारण गदा धरी दुष्टन संहारन ॥२ ॥ दीनानाथ दयाल जगत गुरु आरति हरण भक्त चिंतामनि ॥ परमानंद दासको ठाकुर यह अवसर ओसर छांडो जिनि ॥३ ॥

□ राग मालव □ (४२) जयजय लाल गोवर्धनधारी इन्द्र मानभंग कीनो ॥

वाम भुजा राख्यो गिरि नायक भक्तनको सुख दीनो ॥१ ॥ सात द्योस मघवा पचहार्यो गो सुत शृंग न भीनो ॥ कृष्णदास गिरिधर पिय आगें पांय पर्यो बलहीनो ॥२ ॥

□ राग मालव □ (४३) कान्ह कुंवर की हो बल जाऊँ ॥ क्यों गिर सुबल धर्यो नर कोमल भले बचायो गोकुल गांउ ॥१ ॥ आज हमारे मुरलीधर को सबे कहत हें गिरिधर नाऊँ ॥ सात द्योस जब बरस सिरानो इन्द्र हार छुए कर पाऊँ ॥२ ॥ अब ऐसो पुरुषारथ सुतकी अति आनंदेही उर न समाऊँ। जननी देख रही मुख मांही जन दयाल पीय नाऊँ ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (४४) हरिसों टेर कहत व्रजवासी ॥ इन्द्र रिस्याय वरख्यो हम ऊपर नेंक न लेत उसासी ॥१ ॥ तुम बिन ओर कोनहे नंदसुत मेंटनको दुखरासी ॥ तब गोविंद प्रभु गिरिवरधार्यो मघवा रह्योहे उदासी ॥२ ॥

□ राग सोरठ □ (४५) केसो माई अचरज उपजे भारो ॥ पर्वत लियो उठाय अकेले सातबरसको बारो ॥१ ॥ सात द्योस निश एकटकही यानें वाम पाणि गिरि धार्यो ॥ अति सुकुमार नंदके नंदन केसें बोझ सहार्यो ॥२ ॥ वरखे मेघ महाप्रलय के तिनतें घोष उबार्यो ॥ गोधन ग्वाल गोप सब राखे सुरपति गर्व प्रहार्यो ॥३ ॥ भक्तहेत अवतार लेत प्रभु प्रकट होत युग चार्यो ॥ परमानंदप्रभु की बलजैयें जिन गोवर्द्धन धार्यो ॥४ ॥

□ राग सोरठ □ (४६) देखो माई बदरनकी बरियाई ॥ कमल नयन गिरि भार धर्यो कर यहजु अधिक झरलाई ॥१ ॥ जाके वाम बाहु बल वसिये तासों कहा वस्याई ॥ ठाकुरसों सेवक सरबर करे इन बातन पत जाई ॥२ ॥ सूरदास प्रभुसो कोंन दूसरो जिहि वनकुंवर कन्हाई ॥ अब मघवा जो जोर करतहे फिरपाछें पछिताई ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (४७) आज व्रज महा घटन घन घेर्यो ॥ गोकुलनाथ राख यह अवसर अब चाहत मुखतेरो ॥१ ॥ छुटे मेघ महा प्रलयके व्रज ऊपर कियोडेरो ॥ बरसत मूशलधार दसों दिश व्हैगयो द्योस अंधेरो ॥२ ॥

इतनी सुनत यशोदा नंदन गोवर्धन तन हेर्यों ॥ लियो उठाय शैल भुज गहि तब भुजते पकर उछेर्यों ॥३ ॥ सात द्योस निसि घन झर लायो हार मान मुख फेर्यों ॥ भये अब सूर सहाय हमारे बूंद न आवत नेरो ॥४ ॥

□ राग सोरठ □ (४८) सांवरेहों बलबल गई भुजनकी ॥ क्यों गिरि सुबल धर्यो कर कोमल बुझतिहों गति तनकी ॥१ ॥ इंद्र रिस्याई वरख्यो व्रज ऊपर तेहूं तो हठिहारे ॥ भेटत ग्वाल कहेत हँस भैया तें हम भले उबारे ॥२ ॥ हरद दूब अक्षत दधि कुंकुम हरस यशोदा लाई ॥ कर सिरतिलक चरण रज वंदित मानो रंक निधि पाई ॥३ ॥ परसे चरण कमल व्रज सुंदरि हरख हरख मुसकाई ॥ फिरफिर दरशन करत याही मिस मनकी प्रीति दुराई ॥४ ॥ सूरदास सुरपति जिय कंपत सुरभी संगले आयो ॥ तुम दयाल अवगति अविनाशी में कछु मरम न पायो ॥५ ॥

□ राग मारू □ (४९) माधोजू कांपत डरतें अधिक हीयो ॥ तुमजो इंद्रकी पूजा मेटी तातें कोप कीयो ॥१ ॥ दामिनी खड्ग बूंद सायक जानों घन योधा लियेसंग ॥ ये वही सरस समीर दशोंदिश धनुष ध्वजा बहु रंग ॥२ ॥ शोभित सुभट प्रजार पेजकर फिरत न मोरत अंग ॥ तुमारे कहन कियो नंदनंदन सुरपतिको व्रत भंग ॥३ ॥ बरखत प्रलय मेघ घन अंबर डरपत गोकुल गाऊं ॥ समरथ नाथ शरण तुम बिन हम ओर कोनपें जाऊं ॥ जो तुम अनल व्याल मुख राखे श्रीपति सुहद सुभाय ॥ हमारे तो तुमही चिंतामणि सब विधि दाय उपाय ॥५ ॥ बल समेत गोपाल बुलाये अभय किये दे बांह ॥ सूर प्रभु गिरिवर कर लीनो करी सबनपर छांह ॥६ ॥

□ राग मारू □ (५०) इंद्रकोपतें व्रजजन छुडाई ॥ सात दिन हाथ गिरि छांह छतना कियो लोक तिहु मांझ प्रभु भई बडाई ॥१ ॥ इंद्र मद दूर कियो शरण अपनी लियो इंद्र बलमेट गिरिकों खवाई ॥ सदायह ढरन गिरिधरन गोपालकी भीरमें धीर धरहें कन्हाई ॥२ ॥ लिये शरण व्रजनाथ व्रजभवनकी वारिहों जिन यहवार कहां बिलंब लाई ॥ आइयें बोहोरि

व्रजमांह व्रज लाडिले मारियें दुष्ट करो भक्त भाई ॥३ ॥ मारियें कंस जेसें यवन संहारियो सदां यह चलन युगन चली आई ॥ कृष्णदास विनती करी सुनोहो गिरिधर हरी सदां तुम भक्तकेहो सहाई ॥४ ॥

इन्द्रमान भंग के पद

□ राग मारू □ (१) सज्यो सुरराज व्रजराजके कुंवर पर चढ गजराज दियो दूरडेरो ॥ महीपति मद भरे नहीं मोसों डरे गोप गिरिकों दियो भोग मेरो ॥१ ॥ मूछपर करधरें नाहीं काहूगिनें जायकें अहीर अभिमान टारूं ॥ आजमेनें अब नेम एसो लियो गोप गिरि सहित ले सिंधुडारूं ॥२ ॥ साज सारथी गगन गाज गोकुल गयो घटा कर गरजना धरणी धूजें ॥ बीजकी खीजमें गर्भ गिरगिर परें गोप हरि शरण गये चरण पूजें ॥३ ॥ कृष्णागिरि कर धर्यो ताप व्रजको टर्यो गोपी गोरस मथें घोषगाजें ॥ गाय वच्छ तृणचरें सबही आनंद करें शैल धर्यो सातदिन भक्तकाजें ॥४ ॥ चक्र निरभय धर्यो चारदिशमें फिर्यो देख मघवा डर्यो शरण आयो ॥ प्राणजीवन प्रभुकी कोन लीलालखे सुरनर मुनि सब सुयश गायो ॥५ ॥

□ राग मारू □ (२) चढयो सुरराज व्रजराजके कुंवर पर घेर घन कटक आगें चलायो ॥ घरहरत भूमिपर धाक त्रैलोकमें झूंम व्रजदेशपर दोर आयो ॥१ ॥ भवनतें चलत सब सुनत प्रतिज्ञा करी सुरनको नाथ तबही कहाऊं ॥ प्रलय करूं देश गजराजके पगनतें गोप नंदादि सब बांध लाऊं ॥२ ॥ भरे जल थल विपुल कारे बादर उमग मानो मद मत्त हाथी उमायो ॥ तोर चकचूर पर अंकुश लियें पवन फिरबान चंचल चलायो ॥३ ॥ दुंदुभी घोर हथनाल जंबुकसर चांप मानो वसन बाण उडायो ॥ रबकत झबकत बीज लपलप करें चपल मानो जीभ सांपिन चलायो ॥४ ॥ अतिही प्रचंड जलमंड गजसूंडसी थंभसी बूंद जब परन लागी ॥ अकुलात कंपती नव बाल बछरालियें हलमली धेनु सब फिरत भागी ॥५ ॥ होत खरभर नगर बगर घर घरन व्रज जीव जल थल सकल

कलमलाए॥ भीति भईं नारि मंदिर रही डोलत फिरें पलना तें पूत छाती लगाए॥६॥ सिमिट चहुं ओरतें गोप गोपी सबे आय गोविंदपे रोय दीनो॥ मुसक मृगराज ज्यों कुंवर व्रजराजके भूमिते उचक गिरिराज लीनो॥७॥ मार मद भुजनसों राख व्रज आपनो टोक सुरराज सुर पुर पठायो॥ सूर किशोर प्रभु सबनके देखतें साँवरों कुंवर घर जीत आयो॥८॥

□ राग कान्हरो □ (३) कान्ह कुमर के कर पल्लव पर मानों गोवर्धन नृत्यकरे॥ ज्यों ज्यों तान उठत मुरली में त्यों त्यों लालन अधर धरे॥१॥ मेघ मृदंगी मृदंग बजावत दामिनी दमक मनों दीपजरे॥ ग्वाल तालदे नीके गावें गायनके संग स्वरजु भरे॥२॥ देत असीस सकल गोपीजन बरषाको जल अमित झरे॥ यह अद्भुत अवसर गिरिधरको नंददासके दुःख हरे॥३॥

□ राग अडानो □ (४) सुरराज आज पांयन पर्यो गिरिधरन आपुनो कर्यो॥ तज गज व्रजरजलोटत आयो सुरभी उपहार लायो वदन निरख मगन भयो कनक दंडलों धरनी ढर्यो॥१॥ तब गोपाल भये कृपाल पीतांबर पहरायो कान्ह अभय कर शीश धर्यो॥ हरि नारायण श्यामदासके प्रभुके चरण शरण रहेत सदांही सब विधि अनुसर्यो॥२॥

□ राग अडानो □ (५) राजें गिरिराज आज गाय गोप जाके तर बानिक बिचित्र बनी धरें भेख नटवर॥ लियो हे उठाय व्रजराजके कुंवर वर अरग थरग राख्यो मुरलीकी फूंकपर॥१॥ बरसे प्रलयके पानी बूंद न जात बखानी वज्रहूतें अति भारी तारेटूटे तरतर॥ तापरके खग मृग चातक चकोर मोर बूंद न काहूपें परी भयोहे कौतुक भर॥२॥ प्रभुजुकी प्रभु ताई इन्द्रहुकी जडताई मुनि हसें हेर हेर हरि हसें हरहर॥ नंददास प्रभु गिरिधारीजूको हांसी खेल इन्द्र को गर्व गार्यो भयोहे दूबर धर॥३॥

□ राग अडानो □ (६) सब गोकुलको जीवन गोपाल लालप्यारो॥ सुंदर

मुख निरखतही नयन चेंन पावत अति गोपी ग्वाल आंखिनको तारो ॥१ ॥ रूपकी निधि कामकी सिद्धि जानत सब प्रेमकी विधि धेनु सेंन साजकें गृह आवत सवारो ॥ छीतस्वामी गिरिवर धर अपने कर कोमल नख राख लीयो गोवर्धन भारो ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (७) अब नेंक हमहि देहु कान्ह गिरिवर ॥ तुमे लियें बडी वार भईहे दुख उठे कोमलकर ॥१ ॥ मति डिगपरे दबें सब व्रजजन भयोहे हाथ पर अतिहीभर ॥ तब केसें यह वदन देखहें ताते जीयमें बडोही डर ॥२ ॥ जान सखन को हेत मोहनराय दीयो नवाय नेंक अपनों कर ॥ नंददास प्रभु भुजा लटकि गईं तब हसें नागर नगधर ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (८) मति गिरि गिरे गोपालके करतें ॥ अरे भैया ग्वाल लकुटीया टेको अप अपने करके बलतें ॥१ ॥ सात द्योस मूशलधार बरख्यो बूंद न परी एक जल धरतें ॥ गोपी ग्वाल नंदसुत राखे बरसबरस हार्यो अंबरतें ॥२ ॥ अंतरिक्ष जल जर्यो शिखरपर नंद नंदनको कोप अनलतें ॥ परमानंद प्रभु राखि लियो व्रज अमरापति आयो पायन परतें ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (९) इंद्र झरलायो पूजो मेंटी देखकें पठये प्रलयके मेघ कह्यो व्रजबोरो जाय ॥ अति व्याकुल गोपी ग्वाल देखकें नंदलाल तुरतही धायकें लियोहे गिरि उठाय ॥१ ॥ परत प्रलयको जल भीज्यो न कहूं थल यह लीला देखकें अति विस्मय भयो आय ॥ व्रजपति पियको अति पराक्रम देखकें सुरभी अभिषेक कर लाग्योहे हरिके पाय ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (१०) सब व्रजके आनंदकंद गोकुलपति नायक ॥ सुंदर कोमल कर गोवर्धन राख लियो ग्वाल गायन सुखदायक ॥१ ॥ शेष रटें पार न पावें मुनिजनके ध्यान न आवें ब्रह्मातो भूलि रह्यो शिव जाके पायक ॥ जो अखिललोक पाल व्रजपति पिय सोई गोपाल जाकों वेद नेति नेति नेति कहि गायक ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (११) लाल आज देख्यो गिरि कैसे धर्यो कर। एक कर कटी धरी दूजे कर पट गीर सब ए व्रज कूल राख्यो अपनी छाँहें तर ॥१ ॥ पीत पट फरत हैं घेरत हैं धेन वृंद हरखत वार वार भुज की लटक पर। कबहुं मुरली ले धरत कमल मुख बीच-बीच गावत हे लेत सप्त सुर ॥२ ॥ सुर राज हार मानी लायो है गंगा को पानी हरि को न्हवाय गाय सुरभी भेंट कर। नंददास प्रभु जूके सुंदर बदन पर वारत आरती मात तात नैनन नीर धर ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (१२) कहत भले जू भले ग्वाल बाल। निके राख लीनो लाल गिरिवर कर धरी ॥१ ॥ आयो गयंद गती चडी मतवारो इन्द्र ऐसे गोख पती जातो अवलोकत तर वरी ॥२ ॥ कहत महर सों गाधे गर्व भरी तेरो सांवरो आली सबगुन की अरी। नंददास प्रभु जो चंद औट धूर उडावे सोई दुःख पावे उलटी आथ मुख परी ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (१३) एक हाथ गोवर्धन दोउ भुज बंसीधर ॥ सिर पर चन्द्रिका चटक मानों शोभा देत जैसे इन्द्र धनक जुगल तीमीर हर ॥१ ॥ ठाडो त्रिभंगी नवलरंगीलो लाल नटवर भेख वृंद व्रजजन सुख कर ॥ हरिनारायण श्यामदास के प्रभु देखें थकित रहे सुरनारी नर ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (१४) बदरा व्रज पर आयो अरे। श्याम सुन्दर अंगुरिन पर राख्यो बहु बादर घुमरे ॥१ ॥ बरस्यो मूसलधार सात दिन सायर समुद्र भरे। नहीं परवाह नंदजूके धोटा देखत बेन परे ॥२ ॥ लियो उठाय कोप कर गिरिवर सबे सरन उबरे। सूरदास बली बली चरननकी सूरपति पाय परे ॥३ ॥

□ राग कल्याण □ (१५) नमो व्रज जुवती मन सरस राज हेसे। अस्थमें सुहठ रत हरिदास वरिय धर रतन कर कमलकर कलत वेसे ॥१ ॥ कुमद कलार सुत पत्र काके तु कीलसत गुंजा पुंज कृत वसंते। मत गजराज गति निरख बिथकीत भयो चलत सखी बाहुधर बांम हंसे ॥२ ॥ व्रज अंकुश

ध्वजा पद्म जलसी रुचिर चरन अंबुज सदा मन प्रशंसे। कृष्णदास नीनाथ नंदनंदन कुंवर मदन उडपत विरहतम प्रनंसे ॥३ ॥

□ राग केदारो □ (१६) मघवा उनयोरी गिरि गोवर्धन उपर। कोप चढ्यो है प्रलय के पानी ले गरज गरज तरक्यो-तरक्यो तर तर ॥१ ॥ अति भयभीत गोकुल गैया पशु पंछीन के हिये धर धर। लीयो उठाय गोवर्धन नख पट सब व्रजजन राखे तर हर ॥२ ॥ मानो गज मत करारे के परसत दसनन पर रही माटी की छर। सुरनर मुनि यों कहत परस्पर यों राजत गिरिधर कर ॥३ ॥ सात द्योस मेहा उरलायो बूंदन परी घेरा भर्या घर घर। कामधेन आगे देआयो इन्द्र डर्यो काप्यो थर थर ॥४ ॥ प्रिय दयाल अपनो करी थाप्यो सिर पर धर्यो अती कमल कर। ऐरावत चडी चल्यो भवन को पीतांबर राजत फर हर ॥५ ॥

□ राग केदारो □ (१७) बरखन दें री! बरखनि दै! हमारें गोकुल-नाथ सहाई ॥ एक हि हाथ नंद के नंदन परबत लियो उठाई ॥ मोहि भरोसौ कमल-नयन कौ बार न बाँको जाई ॥ महाबली घनश्याम मनोहर समरथ जादौराई ॥ सात दिवस जल बरषि सिरानौ मघवा चल्यो खिसाई ॥ 'परमानँद' स्वामी के गोपा निकसे बेनु बजाई ॥

□ राग कल्याण □ (१८) इंद्र कोप रिसानो व्रज सो कीनो व्रज सो बहानो जान्यो न असान बल आपनो प्रमानो ॥ सप्त द्योस बरखायो महाप्रलय पर पान्यो गोपाल गिरिधरा नो ताही में सबे समानो ॥१ ॥ राख्यो हे व्रजको थीन टार्यो हस बेठी धन वारत हे तन-मन-धन ग्वाल गोप रानो ॥ ऐसो हे विरध बानो रसिकराय प्रभु बखानो लौट के खिसानो मघवा चरनन लपटानो ॥२ ॥

□ राग कल्याण □ (१९) जसुमति देख रही मुख औरे जब गिरिवर कर बरस उठायो ॥ बरस प्रलय जलवे हें कहा चल व्रजपर करस तरस बहायो ॥१ ॥ घोर पीरुते सब वृन्दन ले गोपी ग्वाल सबन सुख छायो ॥

अति सुकुमार कुंवर गिरिधरन नटको उनही सुद पायो ॥२ ॥ भुर उनतन जसु भटक लाकर अंग अंग प्रकट प्रताप दिखायो ॥ नंददास प्रभु धन तन मान गति इन्द्र सरन जब आयो ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२०) बाल दिशाकर पर लियो मेरे बारे कन्हैया ॥ ऐसो कौन कान लियो जीन शीख्यो कन्हैया ॥१ ॥ देख नीरख मुख रोहनी मुस्कानी मैया ॥ एक हाथ कर पट लीयो प्यावत हे गैया ॥२ ॥ ऐरावत चडी सामने गीर्यो पाय परैया ॥ गोविंद नाम आप राख के व्रजजन रखवैया ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२१) गोवर्धन कर पर धर्यो व्रजराज कुमार। बलि देखत कर पे धर्यो शोभा भई अपार ॥१ ॥ ग्वाल गउ बछरायके इन्द्र मद सब मार। गोविन्द प्रभु के रूप पे भयो परम उदार ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (२२) हरि मेरे लाल हो तेरी लेहुं बलाय ते इततो बल कोन ते पायो ॥ पूछत कहत जनकी कर कोमल क्यों तुमने गिरिराज उठायो ॥१ ॥ गोवर्धनधारी कहत सुनी माता मैं तो उठावती कछुन श्रम पायो ॥ तेरीसों तेरेही पुन्यते नेक कछु यों आपने उठा आयो ॥२ ॥ मात जशोदा उठी उठी भेटत करत करत न्यौछावर हरख बढायो ॥ परमानंद दास को ठाकुर ता दिन ते व्रज सु व्रज सुवस बसायो ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२३) बरसन दे रे बरसन दे हमारे गोपाल सहाई ॥ एक ही हाथ नंद नंदन पर्वत लियो उठाई ॥१ ॥ मोहे भरोसो कमल नयन को वारन वांको जाई ॥ महाबलि घनश्याम मनोहर समरथ जहाँ राई ॥२ ॥ सात द्योस जब बरम सीरानो मघवा गयो खीसाईं। परमानंद स्वामी के गोप मीलही नीशान बजाई ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२४) करत है भक्तन की जो सहाय ॥ दिन दयाल देवकी नंदन समरथ जादो राई ॥१ ॥ हस्त कमल छाया निस्तारन मुदित नीसान बजाय ॥ द्रिष्ट भवन में हरख घोख गोवर्धन लायो है उठाय ॥२ ॥

कृपा पयोधर चतुर चिंतामनी ऐसो बिरद कहाय ।। परमानंद दास पशु पालक वेद विमल जश गाय ।।३ ।।

□ राग बिलावल □ (२५) घरन घरन व्रज होत बधाई ।। सात बरस को कुंवर कनैया गिरिवर धर जीत्यो सुरराई ।।१ ।। गर्व सहत आयो व्रज बोरन यो कह कह मेरी भगती धराई ।। सात द्योस भर बरस सीरानो तब आयो चरनन तर धाई ।।२ ।। कहा कहों नहीं सकट मीटत नर नारी सब करत बढ़ाई ।। सुरश्याम सबसे तुम राखो ग्वाल कहत सब नंद दुहाई ।।३ ।।

□ राग बिलावल □ (२६) जननी चांपत भुजा श्याम की ठाडे देख हसत बलराम ।। चौदह भवन उनके कहु गिरिवर धार्यो बहोत कर वाम ।।१ ।। फोरी ब्रंह्मांड रोम रोम प्रति जहाँ तहाँ नीस वारत सुर धाम ।। जोई आवत मोहि देख चकृत वे करत खरे हरि ऐसे काम ।।२ ।। नाभी कमल ते ब्रह्मा प्रकट्यो देखी कला निध व्रज विश्राम ।। आवत जात बिचही अटक्यो देखत भयो हो जीत निज धाम ।।३ ।। तिनसों कहत सकल व्रजवासी कैसे करी राख्यो गिर श्याम ।। सुरदास प्रभु जल थल व्यापक फिर फिर जनम लेत नंद धाम ।।४ ।।

□ राग बिलावल □ (२७) नंदलाल गोवर्धन कर धार्यो ।। इन्द्र कोप हम ऊपर कीनो पठ्यो रिसाय मेहा वार्यो ।।१ ।। सात द्योस मुसल धारा बरस्यो एको पलन बिच पायो ।। गोपी ग्वाल गोप गो सुतले आप बलराम गती गायो ।।२ ।। छांड सकल अभिमान ऐरावती अपनो बिगार जीय में विचार्यो ।। कृष्णदास प्रभु शैल धरन को आय पर्यो पायन हार्यो ।।३ ।।

□ राग धनाश्री □ (२८) नंद के लाल गोवर्धन धार्यो । इन्द्र कोप कियो हम ऊपर पठए सीसाई मेघ सब हंकार्यो ।।१ ।। सात द्योस मूसलधारा बरस्यो एक छिन बीच न पार्यो । गोपी गोप गाय गोसुत सब आपु राखी गर्व टार्यो ।।२ ।। छोडी सब अभिमान अमरपति अपनो बिगार जियमें बिचार्यो । 'कुंभनदास' प्रभु शैलधरनके पाइन आई निहार्यो ।।३ ।।

□ राग धनाश्री □ (२९) बडी है कमलापति की ओट ॥ शरन गये ते बहुरी न आये कियो कृपाके कोट ॥१ ॥ जाकी सभा एक रस बैठत कौन बडो कौन छोट ॥ सुमिरत नाम अघै भव भंजन कहा पंडित कहा भोट ॥२ ॥ यद्यपि काल कलि अति समरथ नाहिन ताकी चोट ॥ 'परमानंद' प्रभु पारस लोह कनक नहीं खोट ॥३ ॥

गिरिराजजी निचे पधरायवे के पद

□ राग बिलावल □ (१) गोवर्धन धरणी धर्यो मेरे बारे कन्हैया ॥ दधि अक्षत फल फूल ले भुज पूजत मैया ॥१ ॥ विप्र बोल वरणी करी दीनी बहु गैया ॥ ग्वाल बाल पांयन परे गोपी लेत बलैया ॥२ ॥ नंद मुदित मन फूलही कीरति युग मैया ॥ परमानंद व्रज राखि लियो खेलत लरकैया ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२) धन्य वह कूँखि जन्म जहां लीनो गिरिधारी ॥ लरिका कहा बहुत सुत जाये जो न होय उपकारी ॥१ ॥ एक सो लाख बराबर गिनियें करे जो कुल रखवारी ॥ अति आनंद कहत गोपीजन मन क्रम वचन विचारी ॥२ ॥ इंद्र कोप कीनो व्रज ऊपर मघवा गर्व निवारी ॥ परमानंद दासको ठाकुर गोवृन्दावन चारी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३) हाहा हो हठीले हरि जननीको कह्यो कर मेहतो बरष गयो अब गिरी धरनी धर ॥ देखोरे पिराई बांह सात द्योस कीनी छांह अतिही कठिन कूट छतनां ज्यों राख्यो धर ॥१ ॥ श्रमित यशोदामाय बईयां चूंमत धाय करोरे सहाय सबे आंकों लेत भरभर ॥ कुलके देव मनावे दानकों द्विज बुलावे जोई मागे देहि ताहि ओर रहें पांयपर ॥२ ॥ आनंदे सब ग्वाल गोप इंद्र कहा कियो कोप जियोरी कन्हैया तेरो जाके राज थिरकर ॥ मानदास सुरपति जिन कीनी एसी मति कामधेनु आगें लाय रह्यो चरणनतर ॥३ ॥

□ राग मालव □ (४) जीत्यो जीत्यो हो यशोदाको नंदन मघवा वृष्टि

निवारी ॥ वाम बाहु राख्यो गिरि नायक गोकुल आरति टारी ॥१ ॥ इन्द्र खिस्याय जोर कर विनवे में अपराध कियो भारी ॥ तुम दयाल करुणानिधि माधो हृदय भये हितकारी ॥२ ॥ बाल विनोद बाल लीलारस अद्‌भुत केलि विहारी ॥ कृष्णदास व्रजवासी बोलत लाल गोवर्धनधारी ॥३ ॥

भाई दूज के पद (कारतक सूद-२)

तिलक के और राजभोग आयवे के पद

□ राग सारंग □ (१) आज दूज भैयाकी कहीयत करलीये कंचनथालकें ॥ करो तिलक तुम बहेंन सुभद्रा बल अरु श्रीगोपालकें ॥ आरती करत देत नोंछावर वारत मुक्तामालकें ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर प्रेम पुंज व्रजबालकें ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२) द्वेज दीवारीकों बलमोहन बेहेनसुभद्राके घर आये ॥ विविध शृंगार विविध पटभूषण लटकत चलत सुहाये ॥१ ॥ अति प्रसन्न आनंदित आनन भये भोजन मनभाये ॥ कर शिर तिलक अक्षत बीरादे देखत अति सुखपाये ॥२ ॥ श्रीफल विविध मिठाई मेवा दोउ भैयनकी गोद भराई ॥ रामदास प्रभु तुम चिरजीयो दे असीस हरखाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३) यशोमति थारसाजकें बैठी मोहन तिलक करावेहो ॥ बैठ अंक भोजन करो लालन भाईदूज मनावेहो ॥१ ॥ देख नंद उपनंद गोप सब दोरदोर दुलरावे ॥ श्रीमुख चंद निरख गोपीजन नयन चकोर सिरावे ॥२ ॥ मुदित भई अति रोहिणीमाता सुख अंतर उपजावे ॥ नानाभांत सकल गोकुल त्रिय मंगलगीत जो गावे ॥३ ॥ यहलीला अवगाहन करियें जो चितवन उर जावे ॥ कहत प्रवीन यह साधन बल श्रीवल्लभ पदरज पावे ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (४) भाईदूज जानकें मोहन बहेन सुभद्राकों न्योंतावत ॥ उबट न्हवाय दोउ भैया बल वागो अतलस लाल बनावत ॥१ ॥ चीरा हर्यों

बांध शिर उपर आभुषण पहेरावत ॥ पूरी दही भात थारी भर रोहिणीपें सब साज मगावत ॥२ ॥ कीनो तिलक सुभद्रा बहेनी नीरांजन कर हर्ष बढावत ॥ जेंमत बलराम श्याम प्रीतिसों मांगलेत जोजो मनभावत ॥३ ॥ मुख प्रक्षाल बीरी हसिदेकें भगिनी पान दे पुन शिरनावत ॥ देत असीस सदा चिरजीयो द्वारकेश नित्य प्रति गुणगावत ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (५) कार्तिक सुदी द्वितीयाके दिन हरि हलधर सहित सुभद्राके घरआये ॥ तिलक कराय बैठे दोऊ जेंवन विविध भांतके भोग लगाये ॥१ ॥ बीरादे करत आरती तब युवती जन मंगल गाये ॥ व्रजपति प्रभु पर कर न्योछावर देत सबनकों अति हरखाये ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (६) द्वेज दीवारीकों हरि हलधर बहिन सुभद्राके घर आये ॥ माथें तिलक बन्यो कुमकुमको लागत परम सुहाये ॥१ ॥ मधुमेवा पकवान मिठाई व्यंजन किये बोहोत मन भाये ॥ आसकरन प्रभु मोहननागर हरिकों बोहोविधि लाड लडाये ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (७) लाडिले गोपाल आज हमारे घर चलो भोजन कीजे ॥ बहुत भाँत पकवान मिठाई खटरस व्यंजन लीजे ॥१ ॥ सद्य घृत पापर खीचरी खीर खोवा साकर लीजे ॥ आछे बरा खाटे अरु खारे एक कोरे एक भीजे ॥२ ॥ साज समाज ग्वाल ले आये बांट सबनकु दीजे ॥ आसकरन प्रभु मोहननागर पना पछावर पीजे ॥३ ॥

गोपाष्टमी के पद (कार्तिक शुक्ल ८ से १० तक)

□ राग बिभास □ (१) खेलनही चले व्रजराई ॥ करतल वेणु लकुटिया कांधे कटिमेखला बनाई ॥१ ॥ द्वार द्वार प्रति सखा बुलाये बछरा ढिलवो भाई ॥ भोर भये अब तुम कहा सोवत जागहु नंद दुहाई ॥२ ॥ अपनी अपनी छाक लेहु तुम बहुत भांत घृत सानी ॥ परमानंदस्वामीकी लीला या विध किनहुं न जानी ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२) गाय चरावन कहत गोपाल ॥ बन बन डोलत

नही डराउं संग देहु बल ग्वाल ॥१ ॥ यह सुन हरख जसोदा ततछिन सहज न्हवाये लाल ॥ मोर मुकुट पीतांबर काछनी धरे सिंगार रसाल ॥ मोतीनचोक पुरावत मंगल गावत मिल व्रज वाल ॥ आज्ञा मांगि चलत हें बनकों होत विरह तिहि काल ॥३ ॥ दरसत पुष्टि चार पुरुषारथ अनुभव करत बिसाल ॥ बनते आवत द्वारकेश प्रभु व्रजजनके प्रतिपाल ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (३) प्रथम गोचरन चले कन्हाई ॥ माथे मुकुट पीतांबरकी छबि वनमाला पहराई ॥१ ॥ कुंडल श्रवण कपोल बिराजत सुंदरता बनि आई ॥ घरघरते सब छाक लेतहें संग सखा सुखदाई ॥२ ॥ आगें धेनु हांक सब लीनी पाछें मुरली बजाई ॥ परमानंद प्रभु मनमोहन व्रजबासिन सुरत कराई ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (४) व्रजतें बनकों चलत कन्हैया ॥ ग्वाल मंडली मध्य बलमोहन पेहेलें चराई गैया ॥१ ॥ नंद सुनंद गोप गोपीजन यशुमति रोहिणी मैया ॥ बडरे ग्वालनकों सुत सोंपत पुलकित लेत बलैया ॥२ ॥ दधि ओदन भाजन भर छीके एकन कांधे चलैया ॥ मुरली मधुर बजावत गांवत हरिहलधर दोऊ भैया ॥३ ॥ बैठे जाय सघनवन अन्तर गोदुहि मथतहें घैया ॥ आपन पीवत औरन प्यावत रसिक निरख बलजैया ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (५) गोपाल माई कानन चले सवारे ॥ छीके कांध बांध दधि ओदन गोधनके रखबारे ॥१ ॥ प्रात समय गोरंभन सुनकें गोपन पूरे शृंग ॥ बजावत पत्र कमलदल लोचन जानो उड चले भृंग ॥२ ॥ करतल वेणु लकुटिया लीने मोर पंख शिरसोहे ॥ नटवर भेष बन्यो नंदनंदन देखत सुरनर मोहे ॥३ ॥ खग मृग तरु पंछी सचुपायो गोपवधु विलखानी ॥ बिछुरत कृष्ण प्रेमकी वेदन कछु परमानंद जानी ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (६) प्रथम गोचारन चले गोपाल ॥ जननी यशोदा करत आरती मोतिन पूरे थाल ॥१ ॥ मंगल शब्द होत तिहिं ओसर गावत मिलि व्रजबाल ॥ विविध भांत पट भूषन पहेरे रोरी तिलक दीयो भाल ॥२ ॥

सब समाज ले चले वृंदाबन आगें लीनी गाय ॥ राई लोंन उतारि यशोदा गोविंद बल बल जाय ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (७) गोविंद चले चरावन गैया ॥ हरखि हरखि कें आजु भलो दिन कहत यशोदा मैया ॥१ ॥ उबट न्हवाय बसन भूषण सज विप्रन देत बधैया ॥ करि शिर तिलक आरती बारत फिर फिर लेत बलैया ॥२ ॥ चत्रभुजदास छाक छींके सज सखन सहित बलभैया ॥ गिरिधर गमन देखि अंक भरि मुख चुम्यो नंदरैया ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८) प्रथम गौचारनको दिन आज ॥ प्रातकाल उठ यशोदामैया कीनोहे सबसाज ॥१ ॥ विविध भांत बाजे वाजतहें रह्यो घोष सबगाज ॥ गावत गीत मनोहरवानी तज गुरु जनकी लाज ॥२ ॥ लरिका सकल संग संकर्षण वेणुबजाय रसाल ॥ आगें धेनु चले गोविंदप्रभु नाम भयो गोपाल ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (९) नंदके लाल चले गौचारन शोभा कहत न आवे ॥ अति फूली डोलत नंदरानी मोतिनचोक पुरावे ॥१ ॥ बहु मोलिक आभूषन तन अपने सुत पहरावे ॥ आनंद भर गवावत मंगल यह सुख सबहिन भावे ॥२ ॥ फिरफिर बारबार नोछावर देत सखनके हाथ ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन बिराजत बलदाउके साथ ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१०) आज अति आनंद व्रजराय ॥ धन्य दिवस बन चलत प्रथम दिन कान्ह चरावन गाय ॥१ ॥ नव पीतांबर लकुट मुरलिका शिर सीखंड बनाय ॥ प्रीत सहित अवलोक ग्रहत हरि मातपिताके पाय ॥२ ॥ गोरोचन दूध दही रोरी माथे अच्छत लाये ॥ निरखत सुख पावत गोपीजन जननी लेत बलाये ॥३ ॥ ग्वाल विमल भये मिलत परस्पर घरघरतें सबधाये ॥ सूरदास मदन मोहन देख मुदित जसोदा माये ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (११) हेरी देत चले ब्रज बालक ॥ आनन्द हसत जात जात हरि खेलत सब मिले पशु पालक ॥१ ॥ कोऊ गावत कोऊ बेनु

बजावत कोऊ नाचत कोऊ धाय ।। किलकत कान देख यह कौतुक हरख सखन उर लावत ।।२ ।। भात कही तुम मोको बाचें भैया हरखी पठायो ।। गोधन वृन्द लिये व्रज बालक जमुना तट पहुँचायो ।।३ ।। चरत धेन अपने अपने रेवा अति ही सघन बन चारो ।। सुर संग मिल गाय चरावत जसुमती सुत बारो ।।४ ।।

□ राग सारंग □ (१२) गोधन चारत मदन गोपाल ।। धुक धुक मिल ग्वाल मंडली कमल नैन को ख्याल ।।१ ।। धोरी धूमर गोरी सांवरी नंद नंदन के गाय ।। बाजत बैन रहत सब ठारी सुनत कदम को भाय ।।२ ।। परमानंद स्वामी नट नागर लीला मान स्वरूप ।। शिव वरंची जाको जस गावत अब ये भेंख अनुप ।।३ ।।

□ राग सारंग □ (१३) आनंद चरावत गैया ।। प्रेम सुहाई बातें कही कही मेरो मन हर्यो कुंवर कनैया ।।१ ।। चटक घाट सकल ब्रज राख्यो लेहोरे शंकरषशन भैया ।। कछुन सुहायत तलाबेली लागी चित चल गयो चपलकी घैया ।।२ ।। मुरली नाद सुन्यो जब कानन बिसर गैया घर हूं को गुसंईया ।। परमानंद दास रतना यो सबतज जाय पहर पैया ।।३ ।।

□ राग सारंग □ (१४) कांधे लकुट धरी नंद चले बलदाऊ बालक लिये आगे ।। रामकृष्ण सों प्रीत निरंतर सुख पायो बिन मांगे ।।१ ।। पूरब संचीत शुक्रत रास कब अपनी आंखन देखो ।। मो समान अब कोऊ नाही जनम सुरब कर लेखो ।।२ ।। खेलत हसत पंथ मे धावत लटकाई के बानी ।। परमानंद भक्त हित माधव चार पदारथ दानी ।।३ ।।

□ राग सारंग □ (१५) गाय चरावनको दिन आयो ।। फूली फिरत यशोदा अंग अंग लालन उबट न्हवायो ।।१ ।। भूखन वसन विविध पहराये रोरी तिलक बनायो ।। विप्र बुलाय वेद ध्वनि कीनी मोतिन चोक पुरायो ।।२ ।। देत असीस सकल गोपीजन आनंद मंगल गायो ।। लटकत चलत लाडिलो वनकों कुंभनदास जस गायो ।।३ ।।

□ राग सारंग □ (१६) मैयारी में गाय चरावन जेहों ॥ तू कहि महरि नंदबाबासों बडो भयो न डरेहों ॥१ ॥ श्रीदामा दे आदि सखा सब ओर हलधर संग लेहों ॥ दह्यो भात कांवरि भरि लेहों भूख लगे तब खेहों ॥२ ॥ बंसीबटकी शीतल छैयां खेलतमें सुख पेहों ॥ परमानंददास संग खेलों जाय यमुनामें नेहों ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१७) व्रजजन फूले अंग न मात ॥ आज कान्ह चले गौचारन आज्ञा दीनी तात ॥१ ॥ मंगल कलश अलंकृत गोपी यशोमति गृह उठ आईं प्रात ॥ साज सिंगारि पहरि पट भूषण सुंदरश्यामल गात ॥२ ॥ गाय सिंगार ग्वाल ले आये भई भामती बात ॥ परमानंद कहत नंदरानी बालक दूरि न जात ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१८) गोविंद चलत देखियत नीके ॥ मध्य गोपाल मंडली मोहन कांधन धर लिये छींके ॥१ ॥ बछरावृन्द घेरि आगें दे व्रजजन शृंग बजाये ॥ मानहु कमल सरोवर तजिकें मधुप उनींदे आये ॥२ ॥ वृंदावन प्रवेश अघमर्दन बालक लीला भावे ॥ प्रेम समुद्र लोक त्रय पावन जन परमानंद गावे ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१९) चढि गोवर्धन शिखर सांवरो बोलत धोरी धेनु ॥ पीत वसन शिर मोरचंद्रिका धरि मुख मुरली बेनु ॥१ ॥ बनमाला गले धातु विचित्र ग्वाल संग एनु ॥ विष्णुदास बलि बलि लीला पर पीवत घैया मथिफेनु ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२०) टेरत ऊंची टेर गोपाल ॥ दूर जात गैया भैयाहो सब मिल घेरो ग्वाल ॥ लेले नाम धूमरी धौरी मुरली मधुर रसाल ॥ चढ कदंब चहुंदिशते हेरत अंबुज नयन विशाल ॥२ ॥ सुनत शब्दसुरभी समुहानी उलट पिछोडी चाल ॥ चत्रभुज प्रभु पीतांबर फेर्यो गोवर्धनधरलाल ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२१) चले हरि बछरा चरावन माई ॥ टेरे पहेलें तोक श्रीदामा लीने संग लगाई ॥१ ॥ कहत गोपाल सुनो गोप सब वृंदावनमें

जैये ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई भूख लगे तबखैये ॥२ ॥ खेलत हँसत करत कोलाहल आये यमुनातीर ॥ परमानंददासको ठाकुर रामकृष्ण दोउबीर ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२२) सुनियोरे सुनियोरे भैया मोहन कीसी टेर ॥ बडे ढाक चढ सुबल सखारे ले दीजो कनहेर ॥१ ॥ हम बलराम संग यमुनातट लावें गोधनघेर ॥ कहियो जो व्रजराजकुंवरहें यहे पिछोडी फेर ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२३) सोहतलाल लकुटी कर राती ॥ सूथन कटि चोलना अरुन रंग पीताम्बरकी गाती ॥१ ॥ ऐसे गोप सब बन आये जो सब श्याम संगाती ॥ प्रथम गुपाल चले जु वच्छ ले असीस पढत द्विज जाती ॥२ ॥ निकट निहारत रोहिनी जसोदा आनंद उपज्यो छाती ॥ परमानंद नंद आनंदित दान देत बहु भांती ॥

□ राग सारंग □ (२४) नंद के लाल चले गोचारन शोभा कहत न आवे ॥ अति फुली डालत नंद सखी मोतिन चोक पुरावे ॥१ ॥ बहुमोतिन आभुखन बाधो अपने सुत हे पहरावे ॥ आनन्द भर-भर गावत मंगल यह सुख सबन ही भावे ॥२ ॥ फिर-फिर वार वार न्यौछावर देत सबन के हाथ ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन बिराजत बलदाऊ के साथ ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२५) गावत चले बजावत तारी ॥ करत कोलाहल हाथ ताल फल देत दिवावत गारी ॥१ ॥ बहोत दिनन बन राख्यो रे रासब आज भले मारन पायो ॥ जे जे राम कृष्ण दोऊ भैया सब ग्वालन जश गायो ॥२ ॥ अब यह गोधन नीरभे चरहें तुव प्रसाद गोविन्द ॥ अब यह कथा चलेगी ब्रज में बलबल परमानंद ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२६) आज प्रथम गोचरण को दिन कैसो लाग माई ॥ आनन्द भरी ग्वाल सब डोलत शोभा कहीयन जाई ॥१ ॥ नवलही बसनन बल आभूखन नंदलाल पहराये ॥ देख देख हरखत नंदरानी मंगल गीत गवाये ॥२ ॥ लटकत बाल द्वार पे आये मुरली मधुर बजाई ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर मनमोहन सबहिन के सुखदाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२७) गोचारण चले मोहन बलदाऊ हरख जशोमती करत बधाई ॥ पीताम्बर निलाम्बर राजत मुकुट शिशधर संग सखा समुदाई ॥१ ॥ विप्रन को दक्षिणा बहु दिनी परम मुदित मनमंगल गीत गवाई ॥ नंददास प्रभु गवन कियो तब आरती साज वारत लेत बलाई ॥

□ राग सारंग □ (२८) पीत ऊपरणा वारे धोटा कोउक टेर ग्वालनी ॥ छाक बनाय पठाई जशोमति कालिन्द्री तीर उपकारनी ॥१ ॥ कहा लेहो ऐसी गाय चराय वे मे जाय संभारी क्योनन एसी छाक हारनी ॥ रसिक शिरोमनी रूप बिमोही कुंजन कुंज बिहारनी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२९) शीतल छैया श्याम ठाडे जन भोजन की बिरिया ॥ वामभुजा सखा अंस परदिने दक्षिणा कर द्रुम डरियाँ ॥१ ॥ चलिये जु नेक गायन टेरो बलराम सो कहत बल लेउ अपनी अरिया ॥ सूरदास प्रभु जिके कदम छैया दुध की को करि लीनी करियाँ ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३०) चले बन गोचारन सबगोप ॥ प्रात समे सर कमल खंडतें मानों मधुपनके ओप ॥१ ॥ स्याम पीतपट रामनील पट जानुकाछे सिसुपुंज ॥ महुवर बेनु बखान बांसुरी जानों साजे अलिगुंज ॥२ ॥ तिनमें नंदनंदनकी शोभा ज्यों उडुगनमें चंद ॥ परमानंद जसोदाके ग्रह प्रगटे आनंद कंद ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३१) निकेनिकेरी गोपालमाई चलत देखियत नीके ॥ मध्यगोपाल मंडली बल मोहन कांधे धर लिये छींके ॥१ ॥ बछरा हांक किये सब आगें सेली आप बनाये ॥ मानों कमल सरोवर तजकें मधुप उनींदे आये ॥२ ॥ वृंदावन प्रवेश अघ मर्दन बालक लीला भावे ॥ प्रेम समुद्र लोक त्रय पावन जन परमानंद गावे ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३२) कवन बन जैबौ भैया ! आजु कहत गोविंद सुनों रे गोपौ करहु गवन कौ साजु ॥ ऐसो कौन चतुर नँद-नंदन ! जो जाने रस-रीति ॥ तहाँ चलहु जहां हरखि खेलिये अरु उपजै मन-प्रीति ॥ पूरे बेनु

विखान महुवरि छीके कंध चढाई ॥ रोटी भात दह्यौ भरि भाजन अरु आगे दै गाँई ॥ ठौर-ठौर कूक देत हैं प्रहसित आए जमना-तीर ॥ 'परमानँद प्रभु आनँद रूपी राम-कृष्ण दोउ बीर ॥

□ राग सारंग □ (३३) गोविंद चले चरावन गैया ॥ हरखि कहे आज भलो दिन कहत जसोदा मैया ॥१ ॥ उबटि न्हवाय बसन भूखन सजि विप्रन देत बधैया ॥ करि सिर तिलक आरती वारति फिरि-फिरि लेत बलैया ॥२ ॥ 'चत्रुभुजदास' छाक छीके सजि सखन सहित बलभैया ॥ गिरिधर गमन देखि आंको भरि मुख चूम्यो नंदरैया ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३४) भयो मध्यान की छाक की बिरिया बंशीबट बैठे है नंदलाल ॥ अपनी अपनी गैया छैया ले आये ग्वाल ॥१ ॥ ग्वाल मंडली मध्य बिराजत करतब भोजन करत परस्पर नवल बने गोपाल ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर सब सुख सब साबर राजत कुंवर रसाल ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३५) छाक को भई अवेर आवी नाही छकहारी ॥ मोह लागी प्रिय प्यारी कैसे करहुंगो ॥ ऐ गैया मेरी मन के छैया होदेखे बलदाऊ भैया दुध पी रहुँगी ॥१ ॥ बाबा सो कहा कहो मैया सुध भुल गई मथत है दधि मधुर मधुर माखन होई हुं चहुंगो ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन लाल कहत है दाऊ मेरो पर्यो है तब क्योही त्योही कहुंगो ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३६) अकेली बन बन डोलत रहि ॥ गाय चरावत कर रहे हरि काहु नैन कहि ॥१ ॥ बडे सवारे नीकसे घरते दुपहरि घाम सही ॥२ ॥ इतनो वचन सुनत मनमोहन नागर बिथा लई ॥ परमानंद दास को ठाकुर गोकुल रतन बई ॥३ ॥

□ राग पूर्वी □ (३७) चेरीतें कीनी नंद दुलारे ॥ एसी सरस बजाई मुरली गायनके रखबारे ॥१ ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहे ओर बेजयंती धारे ॥ जगन्नाथ कवि रायके प्रभु प्यारे मोही कानरकारे ॥२ ॥

□ राग पूर्वी □ (३८) गोरज रंजित वदन देखीयत ॥ मोर चंद गुंजा बन

माला बनज धातु अंग चित्र लेखीयत ॥१ ॥ गज गति चलत हरत व्रजजन चित सिंघ द्वार आये प्रफुल्लित मन ॥ मात यशोदा करत आरती अंचलवार फेरि पुलकित तन ॥२ ॥ बन सिंगार बडो करि हितसों करत व्यार बेठारे गोद ॥ बिन्दु परत तब पोंछत जशोमती कर मनुहार लिवावत मोद ॥३ ॥ मुख पखार चर्वित बीराले कुसुमन सेज देख अलसाई ॥ द्वारकेश प्रभुकों नंदरानी मुग्ध भाव दृढतें पोढाई ॥४ ॥

□ राग पूर्वी □ (३९) धेनुनको ध्यान माई निसदिन मेरे लालनकों स्वप्ने कहत गोरी गायन आई ॥ आनन उजारी बनवारीजु सम्हारिलाउ वा बिन न रहुंगो बाबाकी दुहाई ॥१ ॥ कजरारी कंठवारी मखतूल फोंदावारी झांझर झनकारी प्यारी मो मनभाई ॥ जगन्नाथ कविरायके प्रभु प्यारे चिरजीवो कुंवर कन्हाई ॥२ ॥

□ राग पूर्वी □ (४०) आगें गाय पाछें गाय इत गाय उतगाय गोविंदाकों गायनमें बसवो ही भावे ॥ गायनके संग धावे गायनमें सचुपावे गायनकी खुररेन ले अंग लपटावे ॥१ ॥ गायनसों व्रजछायो बैकुंठ बिसरायो गायनके हेत गिरकर ले उठावे ॥ छीतस्वामी गिरधारी विठ्ठलेश वपुधारी ग्वारीयाको भेष कीयें गायनमें आवे ॥२ ॥

□ राग पूर्वी □ (४१) गैया दूर निकस गईं मोहन बगदावो दे हांक ॥ जो ऊंचे चढ टेर सुनावो सब बगदेंगी मेरे जान ॥१ ॥ व्रंदावन में चरत हरित तृण चोंक चमक सुन आछी नीकी तान ॥ दूधधार धरणी सींचत आई गोविंदप्रभुको करत कमल मुखपान ॥२ ॥

□ राग पूर्वी □ (४२) धौरी धूमर कारी काजर पियरी पीयर कहि कहि टेरत। वाम भुजा मुरली कर लीने दच्छिन कर पीतांबर फेरत ॥१ ॥ दुरि नागर नट कालिंदी तट लकुट लिये कर गावत फेरत। हूंक हूंक एक बार गज सप्त धाई 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधारी हँसि टेरत ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (४३) आज व्रजराज को कुंवर बनते बने देखोरि आवत

अधर मधुर रंजत बेन ॥ मधुर कलगान निजनाम सुन श्रवण पुट परम प्रमुदित बदन फेर हुंकत धैन ॥१ ॥ मुकुट की लटक उर चटक पट पीतकी कुरिब अवकावली गोपद रेन ॥ ग्वाल लालन जानकरत कोलाहल सिंघ दल ताल धुन रचित संचत चैन ॥२ ॥ मधु विधुनत नैन मंद बहसन बेन प्रगट अंकुरत गोपी निकर मन मेन ॥ कह गधादर जु ए न्याय ब्रज सुंदरी विमल बन माल के बीच चाहत एन ॥३ ॥

□ राग ईमन □ (४४) मैयारी में केसी गाय चराई ॥ बूझदेख बलभद्र ददासों केसी में टेर बुलाई ॥१ ॥ बिडर चली सघनबन महियां हेरीदे अहोटाई ॥ ग्वालनके लरिका पचिहारे जे सब मेरीदांई ॥२ ॥ भलो भलो कहि महेरि हसतहें फूली अंग न माई ॥ परमानंद प्रभुके वीर बचन सुन यशोमति देतबधाई ॥३ ॥

□ राग ईमन □ (४५) मैया हों न चरेंहों गाय ॥सबरे ग्वाल धिरावतमोपें दूखत मेरे पाय ॥१ ॥ जबहों घेरन जात नाही कितनी वेर चराय ॥ मोहि न पत्याय बूझ बलदाऊकों अपनी सोंह दिवाय ॥२ ॥ होंजानत मेरे कुंवर कन्हैया लेतहदय लगाय ॥ परमानंददास को जीवन ग्वालनपर यशुमतिजु रिस्याय ॥३ ॥

□ राग ईमन □ (४६) पोंछत लाल गायनकी पीठ ॥ कर मुख मुदित मुरि मुसक्यावन बारबार धारत तन दीठ ॥१ ॥ ले शिर मांट दुहावन आई बछरा दीये खिरक मै छोर ॥ धरहु धरहु तुमारे पाय लागहुं पीयतन चिते हंसी मुख मोर ॥२ ॥ कछुक कान बलभद्र बीरकी घरहू जान न देनकी सेन ॥ परमानंद स्वामी रतिनायक दुंहु दिस झगरो लायो मेन ॥३ ॥

□ राग ईमन □ (४७) कहां केसें खेले लालन बात कहो मोसों बनकी ॥ आओ उछंग सांवरे मोहन गोरज पोंछुं बदनकी ॥१ ॥ देखो कमलबदन कुम्हिलानो ओरई दसा भई यातनकी ॥ रसिक पीतमसों कहत नंदरानी बलबल छगन मगनकी ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (४८) धैनन को ध्यान निश दिन मेरे ही मोहन को अपने कहत गोरी गायन आईरी ॥ आनन उजारी बनवारी हो संभार लाऊं वावन रहुंगो तो लो बाबाकी दुहाईरी ॥१ ॥ कजरारी कंठीवारी मखतुब फोंदावारी झांझरी पुन कारी प्यारी मो मन भाईरी ॥ हरि नारायन श्यामदास के प्रभु देखे हो तो झुकरही चीर जीओरी कन्हाईरी ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (४९) केसें केसें गाय चराई गिरिधर ॥ गोरज मुखतें झार जसोदा लेत बलैयां फेरकर ॥१ ॥ कहां रहे तुम घाम छांह मध्य घन बरख्यो बल समेत सुन्दर बर ॥ नंददास प्रभु कहत जननीसों हम न डरे देखि बादर ॥

□ राग बिहाग □ (५०) बोलत काहेन नागरी बेना ॥ तोहि मिलनकों बहुत करत हें गिरिधरलाल कमलदल नेना ॥१ ॥ जबतें द्रष्टि परी मोहनकी बिसर्यो गोचारन सुख सेना ॥ रटत सूर राधे राधे कहि कहूं बनमाला कहूं उपरेना ॥२ ॥

□ राग बिहाग □ (५१) पोढ रहो घनश्याम बलैया लेहों पोढरहो घनश्याम ॥ अतिश्रम भयो बन गौचरावत द्योस परी हे घाम ॥१ ॥ सीयरी ब्यार झरोकनके मग अति शीतल सुख धाम ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर अंग अंग अभिराम ॥२ ॥

□ राग बिहाग □ (५२) अब मोय सोवन देरी माय ॥ गायनके संग फिरत बनबन मेरे पांय पिराय ॥१ ॥ आज सांझ ही तें नींद मेरे नयन पेठी आय ॥ खुलत नाहिन पलक मेरी खायो कछुअन जाय ॥२ ॥ कर कलेऊ प्रात जेहों फेर चरावन गाय ॥ परमानंद प्रभुकी जननी लेत कंठ लपटाय ॥३ ॥

देव दीवाली देव प्रबोधिनी के पद

□ राग बिलावल □ (१) लालको सिंगार करावत मैया ॥ करउबटनो न्हवाये रुचिसों हरि हलधर दोउ भैया ॥१ ॥ हँसुली हेम हमेल अरुदुलरी

बनमाला उर पहरैया ॥ परमानंददासको जीवन जसुमति लेत बलैया ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (२) आज परव दिन देव दिवारी ॥ बागो अतलस पीरो सोहे कुलही श्वेत सिरधारी ॥१ ॥ बावानंद जगाय देवकों तुलसीकी कीनी पूजारी ॥ कर विवाह निश जागरन करकें द्विजनकों दीनी दच्छिनारी ॥२ ॥ तबही जसुमति कही बधुनसों आज रतजगो कीजे प्यारी ॥ यह सुन बोले द्वारकेश प्रभु हमहूं रात जगें मैयारी ॥३ ॥

देव जगायवेके के पद (देवोत्थापन)

□ राग बिलावल □ (१) शुक्ल पक्ष और शुक्ल एकादसी हरि प्रबोध दिन आयो ॥ चंदन भवन लिपाय जसोदा मोतिन चौक पुरायो ॥१ ॥ मंडप रच्यो समार ईख सों बंदनवार बंधाई ॥ चहूंओर धरिकै दीपावलि व्रजनारी मिलि मंगल गाई ॥२ ॥ पंचामृत विधि सालिग्रामे राजा नंद न्हवावे ॥ नौतन तूल रचे पाटंबर प्रेम सहित पहिरावे ॥३ ॥ वेद पुरान मंत्र मरियादा विधि जगदीस जगावे ॥ कंद मूल फल पानादिक लै बहुविधि भोग धरावे ॥४ ॥ लखि व्रजनारि जाय घर अपने भवन सकल विधि कीनों ॥ जसुमति सुत पधराय प्रेम सों भक्त मांगि सब लीनों ॥५ ॥ नंद-भवन में आय व्रजवधू चारजाम निसि जागे ॥ उन उपनेह पुष्टि-रस कारन मोहन भोजन मांगे ॥६ ॥ अपुने-अपुने गृह ते भरिकैं लावत हैं पकवान ॥ व्रजभामिनी के हाथ लेत हैं देत पुष्टिरस दान ॥७ ॥ दै बीरा आरती उतारत यह विधि चारों याम ॥ श्रीविठ्ठल प्रभु की कृपादृष्टि ते 'माधो' पूरन काम ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (२) बहुत ईख मंडप करवाई ॥ मध्य चोकीतर चोक पुराई ॥१ ॥ चहुं ओर दीपक धरवाई ॥ व्रजबनिता सब मंगल गाई ॥२ ॥ गादी पर प्रभुकों पधराई ॥ तीनबार कर देव जगाई ॥३ ॥ पंचामृतसों स्नान कराई ॥ अंगपोंछ सिंगार बनाई ॥४ ॥ नौतन फलगुल गदल उढाई ॥ दुरह सेती देव तपाई ॥५ ॥ आरती कर पुनि भोग लगाई ॥

परिक्रमा दई हरख बढाई ॥६ ॥ यह बिधि रीत करी नंदराई ॥ द्वारकेश प्रभु देखन आई ॥७ ॥

□ राग कान्हरो □ (३) जागे जगजीवन जगनायक ॥ कीयो प्रबोध देव गण जबही उठे जगत सुखदायक ॥१ ॥ जा प्रभुकी प्रभुताई भारी शिव ब्रह्मादिक पायक ॥ कमलादासी पांय पलोटे निपुण निगमसे गायक ॥२ ॥ जहां जहां भीर परे भक्तनपे तहां तहां होत सहायक ॥ परमानंद प्रभु भक्त वत्सल हरि जिनके मनवचकायक ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (४) देव दिवारी शुभ एकादशी हरि प्रबोध कीजेहो आज ॥ निद्रा तजो उठोहो गोविंद सकल विश्वहित काज ॥१ ॥ घरघर मंगल होत सबनके ठोरठोर गावत व्रजनारी ॥ परमानंद दासको ठाकुर भक्त हेत लीला अवतारी ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (५) आज प्रबोधिनी परम मोद कर चल प्यारी पियपे ले जाउं ॥ बहुत ईख रस कुंज पुंज रच चहूं ओर दीपकन सुहाउं ॥१ ॥ चित्रविचित्र भूमि अति चीती कर उत्थापन हरिहि जगाउं ॥ ताल झांझ मृदंग शंख ध्वनि द्वारें बंदन बार बंधाउं ॥२ ॥ चारयाम जागरण जागिकें चारभोग अधरामृत पाउं ॥ रसिकप्रभुके रहसि सिंधुमें नयनन मीन झकोर न्हवाउं ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (६) प्रबोधिनी व्रतकीजे नीको ॥ जागे देव जगत हितकारन सबे व्रतनको टीको ॥१ ॥ निसवासर हरिको यश गैये जोबन जात अंजुलि जल करको ॥ गुण गावत दिनरात अधिक सुख छिनु एकयाम पलक नही फरको ॥२ ॥ या सुख महिमाकों को जाने नृप अंबरीष सरबरको ॥ कृष्णदास सुख सिंधु बढ्यो अति गावत भक्त सुजस गिरिधरको ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (७) आजप्रबोधिनी शुभदिन नीको अमलपक्ष एकादशी आई ॥ बहुत ईख कुंजन रचिकें सखी चहूं ओर दीपकन

सुहाई ॥१ ॥ घरघर गोपी चौक पूरत सब बंदनवार बंधाई ॥ सिंघासन गादीतकिया धर कर उत्थापन गोकुलराई ॥२ ॥ हरेहरे सब मेवा धरकें सामग्री सब भोग लगाई ॥ चारयाम जागरण जाग निशि जागे देव गोवर्धनराई ॥३ ॥ मंगल आरती कर व्रजसुंदरी प्रेम मगन आनंद न समाई ॥ रसिकप्रभु मंगल निधि आनंद मंगल रूप राधा सुखदाई ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (८) देव जगावत यशोदा रानी बहु उपहार पूजाके करकें ॥ इक्षु दंड मंडप पोहोपनके चौक चहूं दिश दीवाधरकें ॥१ ॥ ताल पखावज भेरि शंख ध्वनि गावत निशि मिल जागरनकरकें ॥ धूपदीप कर भोग लगावत दे पोहोपावलि अंजुली भरकें ॥२ ॥ घृतपकवान रचित परमरुचि व्यंजन सगरे सुथरे तरकें ॥ परमानंद जगदीश बिराजो गोकुलनाथ सुमर पदहरिकें ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (९) बैठे कुंजमंडपमें आय ॥ रच्यो सँवार सखी ललितादिक यह शोभा कछु वरनी न जाय ॥१ ॥ दीपमालिका रुचिर बनाई घृत परिपूरण ताई ॥ धूपदीप कर फूल माल धर नाना व्यंजन सुभगकराई ॥२ ॥ गावत मंगल गीत सकल मिल नंद नंदन पिय देव मनाई ॥ वार आरती युगल-रूप पर चत्रभुजदास वारनें जाई ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (१०) आनंद आज कुंजके द्वार ॥ सखी सकल मिल मंगल गावत नयनन निरखत नंददुलार ॥१ ॥ नवनव वसन नवल नव भूषण पोहोप दाम सब सुभग श्रृंगार ॥ मंडप मध्य बैठे मनमोहन संगलिये श्रीराधानार ॥२ ॥ दीपमालिका रची चहूं दिश जगमगात अंगजोति अपार ॥ वार आरती युगलरूप पर परमानंददास बलिहार ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (११) इक्षु मंडपमें बैठे आय ॥ चार चौक गांडे शुभ राखे पोहोप धरे नाना लपटाय ॥१ ॥ आठ दीप घृतसों परिपूरण पोहोपमाल अति धरी बनाय ॥ नव पीतांबर धरि गिरिधरकों चोवाचंदन छिरक जगाय ॥२ ॥ बहु व्यंजन फलहार भोगधर बीरा देकर देव उठाय ॥

बार आरती युगलरूपपर नमन करत बलजाय ॥३॥ बीतत याम भोगधरकें जब बार आरती युवतिन गाय॥ निरखत अंगमाधुरी सब अंग नृत्यत गावत निशिविहाय ॥४॥

□ राग कान्हरो □ (१२) सुभगप्रबोधनी सुभग आज दिन सुभग सखी प्रीतमहि मिलाउं॥ चहूं ओर दीपक घृत पूरित मध्य इक्षुको कुंज बनाउं॥१॥ सुभग भूमि पर चोक पुराउं तहां प्रभुकों ले पधराउं॥ घंटाताल मृदंग शंख ध्वनि उपर सुभग सुपेदी उढाउं॥२॥ चारो याम जागरणकराउं चारोंभोग धराउं॥ हरख हरख गुण गाउं श्यामके दास सदा सुखपाउं॥३॥

□ राग कान्हरो □ तुलसी के पद □ (१) धन धन माता तुलसी बडी॥ नारायण के चरनन चढी॥१॥ जोकोई तुलसीकी सेवा करहें॥ कोटिक पाप छिनमें परिहरहें॥ जो कोई तुलसीके फेरा देत॥ सहज जनम सुफल करलेत॥३॥ दान्य पुन्य में तुलसी जो होय॥ कोटिक पुन्य फल पावे सोय॥४॥ जे घर तुलसी करे निवास॥ सो घर सदा विष्णुको बास॥५॥ कृष्णदास कहे बारंवार॥ तुलसीकी महिमा अपरंपार॥६॥

ब्याह के और शेहरा के पद

□ राग बिभास □ (१) चिरैयनको चुंहचुहाट सुन प्रात उठी दुलही॥ रेनको सुख लूटलूट कनिकबेलि उलही॥१॥ सास ननदकी त्रास जान बडे भोर जागी॥ हरें हरें आय यशोदाके पांय लागी॥२॥ यशोमति दे असीस अविचल सुहाग तेरो॥ सुंदर जोरी निरख निरख हीयो सिरात मेरो॥३॥ सुखकी करन दुःखकी हरन कीरतजूने जाई॥ रामराय एसी वधू पूरे पून्य पाई॥४॥

□ राग भैरव □ (२) दुल्हे हो गिरिधरनलाल कैसो नीको लागे॥ देखत नैनन रसाल ठाडे हैं आगे॥१॥ जरकशी सुरंग पाग वाम भाग सोहै॥ कुंचित कच मानो केस मधु परम सुगंध मोहै॥२॥ मुक्ता मणि नील लाल

सेहरो बनायो ॥ मकर कुंडल तिलक भाल व्रजजन मन मोह्यो ॥३ ॥ फूले अति नंदराय मुदित गोपरानी॥ व्रजवासी फूले सब फिरत महा गुमानी ॥४ ॥ मदन भेर दुंदुभि सहनाई सुरन फेरी ॥ पंच शब्द आन कछु झांझ ढोल भेरी ॥५ ॥ बेन बीन मिलन तान बड मृदंग बाजे ॥ गान करत नाचत नट घोष सकल गाजे ॥६ ॥ मंडप कीनो बनाय बहु वितान ताने ॥ नंदगामकी बरात आई बरखान ॥७ ॥ फूले वृषभान देख सुनी कीरत रानी ॥ जोरी बनी अद्भुत कछु परत न बखानी ॥८ ॥ तोरन आये रसाल दुल्हे गिरिधारी ॥ कीनी कुलरीत ब्याह गावत व्रजनारी ॥९ ॥ निरखत मुख व्याहाल देख देह दशा विसारी ॥ दुलहे दलहनि पर 'माधो' बलिहारी ॥१० ॥

□ राग सूआ □ (३) ए जू नवल दुलहनि राधा बनी दूल्हे सुन्दर स्याम ॥ करत सखी ब्याह मोहनको पूजे मनके काम ॥१ ॥ स्याम वर अररह्यो ब्याह बधावो ललिता रच्यो बिधिकों लियो बुलाय ॥ देखन आये सबे अमर मुनि रहे विमानन छाय ॥२ ॥ फूलन वरखे देवता इन्द्र निसान बजाय ॥ सुरपुरकी नारी नचे करत मनोहर भाय ॥३ ॥ मणि माणिक मंडप रच्यो फूलन बंदनवार ॥ वारोठी दूल्हे अयों कुंजमहलके द्वार ॥४ ॥ में जु राधा उबट न्हवायकें षोडश कीयो शृंगार ॥ आनंद भर सब गावहीं देत लालजुकों गार ॥५ ॥ मोर मुकुट बन्यों सेहरो मरुवट करि मनुहार ॥ सूर कूर कैसें कहे वारों रति अरुमार ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (४) न्याय दिनदूल्हे हो नंदलाल ॥ रीझबिकाय जहां वसे मोहन नव दुलही व्रजबाल ॥१ ॥ शिथिलचाल अति डगमगी हो वसन मरगजे गात ॥ शोभितहें अति रसमसे मानों व्याह भयो जागे रात ॥२ ॥ नयनललोहें घूम रहेहें चितवन चित हर लेत ॥ कहि भगवान हितरामराय प्रभु हंसन बधाई देत ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (५) आज ललनकी होत सगाई ॥ आबोरी गोपीजन

मिलकें गावो मंगल चार बधाई ॥१ ॥ चोटी चुपर गुहूं सुत तेरी छांडो चंचलताई ॥ वृषभान गोप टीको दे पठ्यो सुंदरजान कन्हाई ॥२ ॥ जो तुमकों या भांत देखहै करहैं कहा बडाई ॥ पहर बसन आभूषण सुंदर उनकों देउ दिखाई ॥३ ॥ नखशिख अंग शृंगार महर मन मोतिनकी माला पहराई ॥ बैठे आय रत्न चौकीपर नर नारिनकी भीर सुहाई ॥४ ॥ विप्र प्रवीण तिलक कर मस्तक अक्षत चांप लीयो अपनाई ॥ बाजत ढोल भेर और महुवर नोबत ध्वनि घनघोर बजाई ॥५ ॥ फूली फिरत यशोदारानी वार कुंवरपर वसन लुटाई ॥ परमानंद नंदके आंगन अमरगण पोहोपन झरलाई ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (६) में बलजाऊँ मान कह्यो मेरो ॥ चंचल चपल चहूं दिश डोलत कोन व्याहकरेगो तेरो ॥१ ॥ शील गहो तो सब कोऊ जाने पूत यशोदा जायो भलेरो ॥ कीरति सुताको मांगनो करिहों सुन वृषभान वसतहे नेरो ॥२ ॥ मधुमेवा पकवान मिठाई मांग लेहो मोपें सांझ सवेरो ॥ सूरदास प्रभु धौरी धूमरिको दूध दही घरहेजु घनेरो ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (७) सजनी आनंद उर न समाऊं ॥ बरसाने वृषभान लगन लिखि पठईहे नंदगांऊं ॥१ ॥ धौरी धूमरी धेनु विविधरंग शोभित ठाऊं ठाऊं ॥ भूषण मणिगण पारनाहिनें सोधन देख लुभाऊं ॥२ ॥ गोप सभा कर लगनजु लीने मगन होय गुण गाऊं ॥ नंददास लाल गिरिधरकी दुलहनि पर बल जाऊं ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (८) मेहेंदी श्यामसुंदर के रचिरचि हाथन पाय लगावें ॥ आईं सिमिट सकल व्रजसुंदरि गीत पुनीतहि गावें ॥१ ॥ कनकथार भर जोर धरेहैं अति आनंद अजर छबिपावें ॥ देते सबनकों महरि रोहिणी आनंद रंग बढावें ॥२ ॥ अपने अपने पाणि लपेटें पुनि इन छबिसों मीड छुडावें ॥ कनकलतासी कोउ सुंदरि यशोमति मन आनंद दिखावें ॥३ ॥ बैठे पर्यंक मदनमोहन पिय बिहँसि सकुच्च सचुपावें ॥ सूरदास निजमेहल टहलमें व्याह सुहाग लडावें ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (९) मांगे सुवासिन द्वार रुकाई ॥ झगरत अरत करत कौतूहल चिरजीवो तेरो कुंवर कन्हाई ॥१ ॥ चिरजीवो वृषभान नंदिनी रूपशील गुणसागर माई ॥ निरख निरख मुख जीऊँ सजनी यही नेग बड संपतिपाई ॥२ ॥ दीनी धूमर धोरी पियरी ओर तिनकों सारी पहराई ॥ फिर सबहिनकी महर यशोदा मेवा गोद भराई ॥३ ॥ आरती करलिये रत्न चौकमें बेठारे सुंदर सुखदाई ॥ परमानंद आनंद नंदकें भाग्य बडे घर नवनिधि आई ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (१०) कंकण कुँवर कन्हैयाके कर देखरी आज फबी छबि भारी ॥ रत्न जटित मणि मोतिन जगमग द्विजवर पढ बांधत हितकारी ॥१ ॥ हरद चढावे हृदय लगावे उबट न्हवावे सब ब्रजनारी ॥ कृष्णदास गिरिधरन छबीले रंग रंगीलेकी बलिहारी ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (११) माई मेरो लाल दूल्हे बनि आयो ॥ रत्नजटितको सीस सेहरो हीरा मोतिन लाल जरायो ॥१ ॥ नंदरायको कुंवर कन्हैया जसुमति लाड लडायो ॥ रसिक प्रीतमजूकी बानिक निरखत रोम रोम सुख पायो ॥२ ॥

□ राग बिलावल चोखंडो □ (१२) अहो मेरी प्राणपियारी ॥ भोरही खेलन कहांजो सिधारी ॥ कुंकुम भालतिलक किनकीनो ॥ किन मृगमद को बेंदादीनो ॥चाल ॥ बेंदाजु मृगमद दीयो मस्तक निरख शशि संशय पर्यो ॥ शरद निशाको कला पूरण मेंन नृपको मदहर्यो ॥ बिहसिकें मुख कहत जननी अलप बेनी किनगुही ॥ सूरके प्रभु मोहिबेको रची मनमथही तुही ॥१ ॥ चाल ॥ नंद महरकी तरुणी यशोहे ॥ मेरो वदन फिरफिरकें जोहे ॥ खेलत डोलत ढिग बैठारी ॥ कछु मनमें आनंद कियो भारी ॥ढाल ॥ आनंद मनमें कियो भारी निरख सुत विह्वल भई ॥ बावाजुको नाम लेले तोहि हँसगारी दई ॥ पाटीजु पार संवार भूषण गोद में मेवाभरी ॥ सूरके प्रभु निरख मनमें विधिनासों बिनतीकरी ॥२ ॥चाल ॥

सुन यह बात कीरति मुसिकानी ॥ में व्रजरानीके जियकी जानी ॥ मेरी सुता है रूपकी रासी ॥ वहतो कान्ह बनवासी उपासी ॥ढाल॥ कान्ह बनवासी उपासी रंग ढंग ये क्योंबने ॥ मेरे ढिंगतो रत्न अमोलक काच कंचन क्यों सनें ॥ ललिता विशाखासों कह्यो तुम लली त्यज कित कूं रहीं ॥ सूरके प्रभु भवनबाहिर जानदीजो मत कहीं ॥३ ॥चाल॥ दिन दसपांच अटक जबकीनी ॥ सुंदरश्याम दिखाई दीनी ॥ मुरझपरी तब सुधि न संभारे ॥ प्यारी डसी भुजंगम कारे ॥ढाल॥ कारे भुजंगम डसी प्यारी गारूडी हारेसबे ॥ नंदनंदन मंत्र बिन सखी यह विषक्योंहुं दबे ॥ मनुहार कर मोहनकों लाईं सकल विष देखत हने ॥ सूरकेप्रभु जोरी अविचल जीवो जुगजुग दोउजने ॥४ ॥चाल॥ उठ बैठी तब बदन संभारे ॥ कछु मोहन तन हसत निहारे ॥ मुर बैठी मन भयो हुलास ॥ कीरति गई पति अपनेजु पास ॥ढाल॥ अपनेजु पतिपेंगई कीरति प्रीत रीत विचारहीं ॥ मंत्रकीयो ब्याहको सब सखी मंगलगावहीं ॥ वृन्दाजु बनमें रच्यो स्वयंबर पुष्प मंडप छाइयो ॥ सूरके प्रभु स्यामदूल्हे श्रीराधिका वर पाइयो ॥५ ॥ बिधना विधि सबकीनी ॥ मंडपकरकें भांवरदीनी ॥ विविध कुसुम बरसाये ॥ तहां मानिनी मिल मंगलगाये ॥छंद॥ गावेंजु मानिनी मिलकें मंगल कहत कंकण छोरीयो ॥ नहीं होय यह गिरि उचकलेवो ललाहँस मुख मोरीयो ॥ छोर्यो न छूटे डोरना यह प्रीति रीति ग्रन्थी कही ॥ सूरके प्रभु युवति जनमिल गारी मन माऩी दई ॥

□ राग बिलावल चोखंडो □ (१३) बूझत जननी कहां हुती प्यारी ॥ कोने भाल तिलक रुचिदीनो किन बेनी गुहि मांग संवारी ॥१ ॥ नंदघरनि खेलत मोसों कह्यो मेरे भवन आव सकुमारी ॥ तिल चांमर गुंजा गुडपुरी फरीया और दई नवसारी ॥२ ॥ मोतन चिते चिते ढोटातन कछु बिधना सों गोद पसारी ॥ मेरो नाम बूझ बावाको तेरो नाम बूझ दईगारी ॥३ ॥ द्वारेतें वृषभान बुलाये हंस हंस बूझत बात दुलारी ॥ सूरदास मनही मन दंपति दुहुन मेलकी बात बिचारी ॥४ ॥

□ राग बिलावल चोखंडो □ (१४) कहिधों कुंवरि कहातें आई ॥ कोहे एसी हितु हमारी जिनतोय साज सिंगार पठाई ॥१ ॥ खेलत हती नंदजूके आंगन तब जसोमति दे सेन बुलाई ॥ निकस भवनतें ले गडुवाकर अरघ देत आतुर उठधाई ॥२ ॥ अपने सुतको गात परसकर मोकों नवसारी पहेराई ॥ राई नोन उतार दुहुंकर अति सनेहसों ले कंठ लगाई ॥३ ॥ जननी बचन सुनत कुमरीके वहे बात वृषभानु सुनाई ॥ चत्रभुज प्रभु गिरधरन जान बर यह जोरी सबहिन मन भाई ॥४ ॥

□ राग बिलावल चोखंडो □ (१५) ललिताजीके आज बधायो श्रीवृन्दावन ब्याह रचायो ॥ आली सब न्योंत बुलाईं ॥ वे मंगलनिधि न्योतोलाईं ॥टेक ॥ मंगल न्योतोलाईं सखियन मंडली अद्‌भुत रची ॥ बांध वंदनवार चहूंदिश मध्य निधि वेदी सची ॥ संकेत देवी पूज ललिता हरख अति आनंद भरी ॥ मेरी नवल राधा दुलहनी कुंवर मिले दूल्हे हरी ॥१ ॥ देवी बहु भांत पुजाई ॥ सो बिधना बिध आन मिलाई ॥ जो राधे जिन हरी आराधे ॥ आजलई लग्न अनूपम साधे ॥टेक ॥ सोई लग्न परम अनूप साधे हरख मंगल गाईयो ॥ महा मंगलरूप अद्‌भुत भांत मंडप छाईयो ॥ मेरी उबट राधा दूलहनी जब श्यामकें उबटन कियो ॥ स्नानकर शिर गूंथ मोरी मुकुट मोहनके दियो ॥२ ॥ करसों कर जोर फिराई ॥ भाँवरदेकें ढिग बैठाई ॥ हँसकर दईहे बधाई ॥ ललिता फूली अंग न समाई ॥टेक ॥ फुलीजो अंग न समाय ललिता रंगकेवल भररही ॥ आज भाग्य सुहागकी कछु जातनहीं मोपें कही ॥ धन्यधन्य दिन यह रात धन्यधन्य यह पल शुभ घरी ॥ धन्यधन्य नवल किशोर दुलहे दुलहनी राधा वरी ॥३ ॥ यह दूलह निपट सयानो ॥ या दुलहनकें रूप लुभ्यानो ॥ आलीछिन छिनविलंव न कीजै ॥ अंचलजोरनो करलीजे ॥टेक ॥ अंचल जोरनो कर दीयो सखियन विचार गोनेको कियो ॥ करदिये कुंज प्रवेश दोउ धन्यललिताको हियो ॥ जहां नवल सखी अनेक छबिपर वारनें बलबलगई ॥ या ब्याहकी रसरीत सखियन जात नहीं मोपें कही ॥४ ॥

□ राग बिलावल चोखंडो □ (१६) एकदिन राधे कुंवरि नंद गृह खेलन आई ॥ चंचल ओर बिचित्र देख जसुमति मन भाई ॥ नंद महरि मनमें कह्यो देखि रूपकी रास ॥ यह कन्या मेरे श्यामकुं गोविंद पुजवे आश के जोरी सोहती ॥१ ॥ जसोमति महा प्रवीन एक द्विजनार बुलाई ॥ लीनी निकट बुलाय मरमकी बात सुनाई ॥ जाय कहो वृषभानसों बहोत करो मनुहारि ॥ यह कन्या मेरे श्यामकुं हो मागों गोद पसार के जोरी अधिक हे ॥२ ॥ व्रजनारी उठि चली पोर बरसाने आई ॥ जहां राधेकी माय बेठि तहां बात चलाई ॥ जसुमति रानी नंदकी हम पठई तुम पास ॥ बहोत भांत वंदन कही बहोत करी बिनतास कृपाकरि दीजीये ॥३ ॥ तेरी राधे कुंवरि श्याम मेरो अति नीको ॥ तुम किरपा करि करो लाल मेरेकों टीको ॥ सब भांतिन सुख होयगो हम तुम बाढे प्रीत ॥ और न कछु मनमें चहों यही जगतकी रीत परस्पर कीजीये ॥४ ॥ रानी उत्तर दियो नाहीन करों सगाई ॥ मेरी राधे कुंवरि श्याम तेरो अधिक चवाई ॥ यह ढोटा लंगर महा दधि माखनको चोर ॥ कहत सुनत लज्जा नहीं करत ओरसों ओर के लरिका अचपलो ॥५ ॥ व्रजनारी फिर आई महरिसुं बात कही तब ॥ सुनकें यह करतूत जानि सुत सोंचिरही तब ॥ अंतरयामी सांवरो तिहीं अवसर गये आय ॥ पूछन लागे मायते क्योंजू रही शिरनाय बात मोसों कहे ॥६ ॥ मैया लालसों कहे लालहों नाके आई ॥ जहां कहियत तेरी बात तहां तेरी होत बुराई ॥ में पठई वृषभानकें करन सगाई तोय ॥ तिनहूतो उत्तर दियो बाढी चिंता मोय कहे केसी करों ॥७ ॥ मैयातें मुसिकाय कह्यो हों नंददुलारो ॥ नाहिन करनो व्याह करे मति लाड हमारो ॥ जो तुमरे इच्छा यही उनहीकी हँम लेई ॥ जो हम ढोटा नंदके बे पायन परि परि देई शोच नहीं कीजिये ॥८ ॥ मोर चंद्र माथे धरे नटवर भेष बनाई ॥ बरसानेके बागमें मनमोहन बैठे आई ॥ सब सखियनके झुंडमें देखन चली मुरारि ॥ अरस परस दोऊ जने कुंवरि किशोरीलाल कुंवर फूलें फिरें ॥ ९ ॥ मनहरि

लीनो श्याम परी राधे मुरझाई ॥ बहोत शिथिल भई देह बात कछु कही न जाई ॥ दोरि सखी कुंजन चली मुख तें डारत नीर ॥ अरी बीर जतनन करो व्याकुल बिरह शरीर हर्यो मन मोहना ॥१० ॥ सखियन कहे उंचे बेन कुंवरि क्योंहु भांति न बोले ॥ बूझत बिविध विवेक रहत भरि नेंक न डोले ॥ बडी वेर बीती जबे तब सुध पाई नेंक ॥ श्याम श्याम कहिवे लगी एकही बेर अनेक भई ज्यों बाबरी ॥११ ॥ सखी कहे सुन कुंवरि तोये एक जतन बताउं ॥ चुपकरि रहो सुनिलेहो उठोतो घर ले जाउं ॥ कहियो काटी कारे नागने जो पूछे तेरी माय ॥ हमहें मित्र गोपालकीसो लेंगी तुरत बुलाय के वाकों पीरहे ॥१२ ॥ कर गहि लई उठाय पकरि सुंदरि ले आई ॥ जब निरखी निज माय दोरिके कंठ लगाई ॥ कहा भयो या कुवरिकों कहो मोय समझाय ॥ हों बरजतही लाडली दूर खेलन मति जाय कुंवरि माने नहीं ॥१३ ॥ गई घरी दोयक बीति लडेंती नेन उघारे ॥ ले ले बडे उसास डसीहे मानों कारे ॥ कारे डसी मैया सुनी गिरि धरनि मुरझाय ॥ वार वार यह भाखही मेरी कुवरिकों करो उपाय कोऊ अब बेगही ॥१४ ॥ सखी कही समझाय कहो तो गोकुल जाउं ॥ मनमोहन घनश्याम कहो तो वाकुं लाउं ॥ वह ढोटा अति सोंहनो पठवे वाकी माय ॥ बडो गारुडी नंदको सो छिनमें भलीकरि जाय गारुडी चतुर हे ॥१५ ॥ अरी बीर तुम गोकुल जाउ कहियो बिनती मेरी ॥ जो जीवेगी कुंवरि वीर हों करिहों तेरी ॥ ओर कहियो पाय लागनो जग जस आवे तोहि ॥ पठे दे नंदकुमारकों जीवदान दे मोहि रावरी शरनहे ॥१६ ॥ एक चली द्वेचारि चली गोकुलमें आई ॥ जहां बेठी निज माय बैठि तहां बात चलाई ॥ रानी कह्यो पायनलागनों तुम जसुमति किन लेउ ॥ जो तुमरे मन इच्छा यही तो कुंवर संग करि देउ सगाई कीजीये ॥१७ ॥ जसुमति मन आनंद दोरि नंदलाल बुलाये ॥ सुनि मैयाकी टेर दोरि मनमोहन आये ॥ देखि गुपाल झगरन लागे मैयासों मुसिकाय ॥ येतो नारि गमारि हे कोन गांवसों आय सोजु हमसों

कहे ॥१८ ॥ में वारी मेरे लाल तेरी हों लेत बलाई ॥ जित बरसानोगाम ग्वालि यह तिततें आई ॥ एक कुंवरि वृषभानकी कारे डसी कुठोर ॥ ब्याकुल होय धरनीपरी नेन पूरती मोर लाल जस लीजिये ॥१९ ॥ कोंन वाइकी सुनें ताहि किन मोय बतावो ॥ तुम ग्वालिन परपंच झूठ किन मोय बुलावो ॥ कोन राजा वृषभान है कित बरसानों गाम ॥ कोन तुमारी हें कोन जानत नांहि नाम लाल उत्तर दियो ॥२० ॥ सुनो नंदके लाल सांवरे कुंवर कन्हाई ॥ वही बरसानो गाम जहां तुम बेनु बजाई ॥ बरसानेके बागमें बैठेहो तुम जाई ॥ मुरलिबजाई टेर सुनि मोहि वृषभान की जाई के बंसी मोहनी ॥२१ ॥ अरे नंदके लाल सामरे कुंवर कन्हाई जो न चलोगे वेगि कुंवरि जीवनकी नाई ॥ काली यह तुम नाथियो तुमसो ओर न कोई ॥ वृंदावनमें सांवरे कहा सिखावत मोई बात जानत सबें ॥२२ ॥ वह राजा वृषभान एक हींडोल गढावे ॥ मोय कुंवरि बेठाय सखीनपें झोटा द्यावे ॥ अर्थ द्रव्य इच्छा नहीं पान पत्र नहिं लेउं ॥ एक बचन मोसों कहो कुंवरि भली करि देऊं बात यह कीजिये ॥२३ ॥ जो मांगोसो लेहु सांवरे कुंवर कन्हैया ॥ बिन मागेई देय तुमहि राधेकी मैया ॥ यह सुनि सुंदरि सांवरे लीने सखा बुलाई ॥ सिंघपोर वृषभानकी पायन पहुंचे जाई लगन हे नेहकी ॥२४ ॥ तब रानी उठ दोरि पोरितें मोहन लाई ॥ सिंघासन बेठाय हाथ गहि कुंवरि दिखाई ॥ दरश मंत्र दे विष हर्यो हरि सन्मुख बेठाय ॥ बोहोबिधि बारत वारनो मुदित कुंवरिकी माय धन्य हे यह घरी ॥२५ ॥ सुनत बचन ततकाल लडेंती नेंन उघारे ॥ निरखतही घनश्याम बदनते केस संवारे ॥ सब अपनें ढिग निरखिकें पुनि निरखी ढिग जाय ॥ अचरा डार्यो वदनपे मन दीयो मुसिकाय सकुच मनमें बढी ॥२६ ॥ देख दोउकी रीत सखी सब मृदु मुसिकाई ॥ जोरी यह चिरजीयो विधाता भली बनाई ॥ सखी कहे अरी प्रेमसों फ्होपनकी बनमाल ॥ राधेके कर छुवायकें गल मेले नंदलालके बात आछी बनी ॥२७ ॥ सुनत सगाई श्याम ग्वाल सब

अंगन फुले ॥ नाचत गावत चले प्रेम रसमें अनुकुले ॥ जसुमति रानी गृह सज्यो चंदन चोक पुराय ॥ बटत बधाई नंदकें नंददास बलिजायके जोरी सोहनी ॥२८ ॥

□ राग आसावरी चोखंडो □ (१७) नंद महरघर होत बधाई लाल बनीहे सगाई ॥ श्रीवृषभान कुंवर मन भाई श्रीराधा गुणनिधि गाई ॥छंद ॥ गाईजु सुखनिधि परम सुंदर रूप शील सुहावनी ॥ कुल गोत सजन समान गुणवती सुघर सब बिध भामिनी ॥ इत नंदनंदन व्रजकी शोभा गोप कुल भूषण बने ॥ उतराधा सब जगत युवती शीश मणी शुभ लक्षने ॥१ ॥ ये सुशील देखे दूल्हुनके ॥ लग्न लीनो दिन सुदिनके ॥ गावत मंगल सब कीनो ॥ यहजु प्रथम महूरत लीनो ॥छन्द ॥ लीनोजु लगन बिवाह कारण मांडवो अद्‌भुत भयो ॥ रत्न खंभ सुजटित चारों सब बिध फूलनसों छयो ॥ तोरण पल्लव नये कोमल धरे चित्र बनायकें ॥ रंगरंग फूलन रची तामध्य चित्र बहु बिध भायकें ॥२ ॥ भायन बहु झूमक रचे ॥ मणिगण मोतिनसों खचे ॥ बांधीजु बंदनमाला ॥ चहूंदिश ज्योति भईं रसाला ॥छन्द ॥ रतन ज्योति वितान बांध्यो विशद अजरन शोभहीं ॥ वाजित्र बाजत गाज सब व्रज छबि देख सब मनमोहहीं ॥ चौक पूरत व्रज बधू नंदलाल पटा वेठावहीं ॥ कर बांधि कंकण हरद अंग अंग उबटि तिलक बनावहीं ॥३ ॥ प्रमुदित मंगल गावें ॥ माता पिता हीये सुखपावें ॥ ब्याहसमें सब मिल आईं ॥ शीश तेल केसर रंगलाई ॥छन्द ॥ लाईंजु केसर जल न्हवाए सुधार पटभूषण हरा ॥ कर शृंगार पहेराय भूषण शीश शोभित सेहरा ॥ चढि अनूप स्वरूप हरि वृषभान मंदिर आइयो ॥ बेठ वेदी दुलह दुलहनि दृष्टि चारि मिलाईयो ॥४ ॥ बेद मंत्र पढे शुभघरी ॥ ब्याह भयो छबि रंगभरी ॥ दुलह दुलहनि गांठ जोरी ॥ मानो त्रिभुवन छबि बांधी गोरी ॥छन्द ॥ गोरीजु गावत गीत मंगल हरख दीठ बचावहीं ॥ तृणतोर डारत निरख शोभा पारकहुं न पावहीं ॥ नवल गिरिधर लाल दुलह राधिका नवदुलहनी ॥ चिरजीयो त्रिभुवन मांझ जोरी युवतीजन मन मोहनी ॥५ ॥

□ राग आसावरी चोखंडो □ (१८) हितकी बात कहतहे मैया ॥ मेरो कह्यो तू मान कन्हैया ॥ होतहै तेरे व्याहकी बातें ॥ तू त्यज चोरी करनकी घातें ॥छंद ॥ घात तज चोरी करनकी कह्यो मेरो मानले ॥ इन बातन तोहि लाज आवे जीये अपने जानले ॥ के वार तोसों कह्यो मोहन बान तू यह ना तजे ॥ व्यासदास लला भलोहे इन बातन तू ना लजे ॥१ ॥ यह सुनके मोहन मुसकाये ॥ मैया तू झूंठी कहेत बनाये ॥ हँसबोली फिर कहतहे मैया ॥ मानत झूंठी बूझ बलभैया ॥ हे वृषभान सुता गुण रासी ॥ दिनदिन बाढत चंद्रकलासी ॥छंद ॥ चंद्रकलासी रूप रासी लसत कंचनसी कनी ॥ नीलमणि ढिग लाल मेरो भली यह बानक बनी ॥ यह सुनके अति हरख हियमें मग्न भये मनमोहना ॥ व्यासदास लला भलोहे लागत छबि अति सोहना ॥२ ॥ जब वृषभान गोप सुधि पाये ॥ काहू मिस वाके घर आये ॥ कीरति कहत ललातू कोहे ॥ देखतही सबको मन मोहे ॥ नंदको सुत हलधरको भैया ॥ हेरन आयो निकसगई गैया ॥छंद ॥ गैयाजु हेरन इतें आयो प्यास मोकों अतिलागी ॥ प्याओ पानी घोषरानी घाम तनमें अति पगी ॥ बचन सुन वृषभान रानी ले चली निजगेहमें ॥ व्यासदास लला भलोहै लागत सुख अति देहमें ॥३ ॥ जननी बचन सुनतही आधे ॥ जलभर लाई तुरतही राधे ॥ देत परस्पर दोऊ जन अटके ॥ नयनसों नयन मिलतही मटके ॥ हरि आधीन जबे लखपाई ॥ कुंज मिलनकी सेन बताई ॥छंद ॥ बताई कुंजकी सेन मोहन आप चल आए तहां ॥ कमल फूले भंवरगुंजे पारथव कुंजे तहां ॥ आई तहां छल पाय राधे संग एकही सहचरी ॥ व्यासदास प्रभु पाणि पकर्यो जान मंगल शुभघरी ॥४ ॥ मंदमंद गहवर घन गाजें ॥ मानों सुरनके बाजेबाजें ॥ झालरही झनकारजु ठान्यो ॥ शुक पिक द्विज मानो वेद बखान्यो ॥छंद ॥ बोलत शुक पिक मंगल बानी बनी अद्भुत जोरीयां ॥ लाल बालमुकुंद दुलह दुलहनी नवलकिशोरीयां ॥ बहुत जतनन मिले मोहन लाडिलीके कारनें ॥ व्यासदास प्रभु निरख शोभा करत तन मन वारनें ॥५ ॥

□ राग आसावरी चोखंडो □ (१९) श्रीवृषभान भवन मन्दिरमें राजत राधा

गोरी ॥ रूप अनूप सकल युवतिनमें नागरि नवल किशोरी ॥छंद ॥ नागरि नवल किशोरी राधा गोरीको ब्याह रचाईयो ॥ मंडप छायो मंगल गायो मोहन व्याहन आईयो ॥ चित्रित कंचन पोर जगमगे द्वारे चौक पुराईयो ॥ कंचन चोकी राखी तापर ठाडे कुंवर कन्हाईयो ॥१ ॥ गावतहें वरनारि नवेली दूल्हे लागत नीको ॥ कीरतिजू अति मनमें फूली करत आरतो टीको ॥छंद ॥ आरती करतजु कनकथारमें जब होत रीति तैसेरी ॥ तैसोरी झलकत हरि मुख सुन्दर पलक नहीं लागत ऐसेरी ॥ तेसीये झलक सकल युवतिनकी छबि उपजत अति भारी ॥ सुख बढ्यो कछू कहत न आवे गावत मीठीगारी ॥२ ॥ जेंवत अति सुखरंग बढ्याहै छबि निरखत तहां न्यारी ॥ सखियनमें एको दुर देखत सुंदर राधा प्यारी ॥छंद ॥ प्यारी पियकों देखकें देख दोउ रस भीने ॥ सामल गौर परस्पर दंपति लोचन मन हर लीने ॥ नयननके वश नयन भएहें प्राणनके वशप्राण ॥ अति पागे अनुरागे प्रेम निरंतर दोउ रूप निधान ॥३ ॥ गावत मंगल व्याहसमें सब सखी भामिनी रूप गहेली ॥ आनंद भीनी राधाजूकी देख सखी सहेली ॥छंद ॥ देखत शोभा सहचरी जुरि भांवर दे सुखपायो ॥ हरि दुलहा दुलहनि श्रीराधा भयो ब्याह सुहायो ॥ नाचत गावत देव वधू सब दुंदुभी अमर बजावें ॥ हरष हरषकें वरषत पोहोपन जयजय शब्द सुनावें ॥४ ॥ चतुर शिरोमणि हरिनागरको कपटके देव पुजावें ॥ चमक महातन यौवन सुलक्षण हरि युवतिन छबि पावें ॥छंद ॥ छबि पावे देव पुजावें जन्म सुफल करलेखें ॥ परम मनोहर बदन बिलोकत नयनन लागत मेखें ॥ खेलत दूधा भाती दोऊ नागरि नागर भावें ॥ चलत परस्पर बदन बिलोकत कोरलियें सचुपावें ॥ रत्न जटित राजत मणि अंगना कंकण तहां हरिखोलें ॥ बांधी गांठ भीतर राधाकी युवती गारी बोलें ॥छंद ॥ गारी बोलें कंकण खोलें मन आनंद बढावें ॥ पियप्यारी पियके करखोले कौतुक जुर सब गावें ॥ यह खेल ब्याह वृन्दावन वरणत पार न पावें ॥ कहत सुनत रसरीत बाढे तहां दामोदर हित गावें ॥६ ॥

□ राग आसावरी चोखंडो □ (२०) मैया मोहि एसि दुलहनि भावे ॥ जैसी ये

काहूकी डिठोनिया रुनक झुनक घर आवे ॥१ ॥ करकर पाक रसाल रसोई अपने कर ले मोहि जिमावे ॥ कर अंचल पट ओट बाबाको ठाढी ब्यार ढुरावे ॥२ ॥ मोहि उठाय गोद बैठारे कर मनुहार मनावे ॥ अहोमेरे लाल कहो बावासों तेरो व्याह करावे ॥३ ॥ नंदराय नंदरानी हिलमिल सुख समुद्र बढावे ॥ परमानंद प्रभुकी बातें सुन आनंद उर न समावे ॥४ ॥

□ राग आसावरी □ (२१) तूतो ओघड बडो कन्हैया ॥ ऐहें काल देखवे तोकों हँसहँस कहत यशोदा मैया ॥ दुलहनि परम सलोंनी सुन्दर बाकी मोकों लगो बलैया ॥ मोहन कारो कुंवर हमारो निरख सजन कहा करिहैं बडैया ॥२ ॥ अजहूं समझ छांडदे चोरी दधि दूध माखनकी भैया ॥ बडे गोप घरहोय सगाई सूर धीर धनको अधिकैया ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (२२) आशा कर रही है कुमारी विरह व्यथा तन भारी। विनवे चंद्रावली प्यारी करो सहाय ललिता सुकुमारी ॥१ ॥ समुझावत स्यामा विवेकी सखी री तो सम और न पेखी। विनवत हों चंद्रावली देखी यासों को कहे कौन विसेखी ॥२ ॥

□ राग धनाश्री □ (२३) खेलन गई नंदबाबा के महर गोद कर लीनी जू ॥ प्रेम सहित आँको भर लीनी उर को कठुला कीनी जू ॥१ ॥ तेल फुलेल उबटनो कीनो उबटी देह निकाई हो ॥ सारी नई आन पहराई ॥ अङ्ग अङ्ग अधिक बनाई हो ॥२ ॥ खटरस भोजन पास थार धरि विधि सों आप जिमाई हो ॥ मेरो बदन विलोक नैन भरि फूली अङ्ग न समाई हो ॥३ ॥ इतनी सुनत सामरो ढोटा बाहर ते घर आयो हो ॥ मॉंपे हमहीं दोउ ठाड़े कछु एक बार दुरायो हो ॥४ ॥ रही पसार ओल सिसुता पे भवन काज बिसरायो हो ॥ जे जे सखी गई मेरे संग सबहिन लाड़ लड़ायो हो ॥५ ॥ एक एक पाटंबर आछो तिनहूँ को पहरायो हो ॥ जाकी करि मनुहार बहुत विध आनन्द अधिक बढ़ायो हो ॥६ ॥ सब ब्रजनारि सिंगारी डोलत बोलत परम सुहाई हो ॥ फूली फिरत प्रेम पुलकित तन विमल स्याम गुन गायो हो ॥७ ॥ जब में बिदा सदन कों माँगी पान मिठाई आनी हो ॥ मेरी गोद

भरी छाकें भरि चलत बहुत पछतानी हो ॥८ ॥ तुमकों आंको कही कुंवर और दीनी बात बखानी हो ॥ दई असीस दोउ चिरजीयो गंगा जमुना पानी हो ॥९ ॥ हँसिहँसि बात कहत जननी सों श्रीवृषभानदुलारी हो ॥ सुनिसुनि समुझ रहत उर अंतर मुख ही करि मनुहारी हो ॥१० ॥ जो उनको अति कुंवर लाडिलो मो पटतर को प्यारी हो ॥ लई लगाय कुंवरि हिरदेमें देत जसोदा हि गारी हो ॥११ ॥ जहाँ वृखभान सेज सुख पोढे तहाँ ले गई प्यारी हो ॥ जेजे बात चली महरि के कथि कथि अकथ कथारी हो ॥१२ ॥ अभरन बसन वरन पहराये तन तनसुख की सारी हो ॥ हरखवंत आनंदित दोउ भये पुरुष अरु नारी हो ॥१३ ॥ एक द्योस मैं नंदखिरक में देखे कुंवर कन्हाई हो ॥ माथे मुकुट पीत पट ओढे उर बनमाल सुहाई हो ॥१४ ॥ कुंडल लोल कपोलन की छबि बिचबिच झलकत झांई हो ॥ लोचन ललित ललाट अधिक छबि सोभा बरनी न जाई हो ॥१५ ॥ ता दिन ते हमहू अपने मन बातजु यही बिचारी हो ॥ जो कबहू जगदीस बनावे राधा वर बनमारी हो ॥१६ ॥ जो हों कियो आपुनो चाहत सोउ तहां ते चाली हो ॥ भली भई अब होय कहूं ते सुनरी भांवती आली हो ॥१७ ॥ इत वृषभान जानि सबही विधि उत वे नंद बडभागी हो ॥ इत रानी कीरति परिपूरन उत जसुमति जस जागी हो ॥१८ ॥ इत श्री राधा कुंवरि किसोरी उत गिरिधर अनुरागी हो ॥ 'नंददास' प्रभु चलें सदन कों जब नौछावरि वारी हो ॥१९ ॥

□ राग सारंग □ (२४) श्रीवृषभान सदन भोजनकों नंदादिक सब आये हो ॥ तिनके चरणकमल धरिवेकों पट पांवडे बिछाये हो ॥१ ॥ राम कृष्ण दोउ वीर बिराजत गौरश्याम दोउ चंदा हों ॥ तिनके रूप कहत नहि आवे मुनिजनके मन फंदा हो ॥२ ॥ चंदन घस मृगमद मिलायकें भोजन भवन लिपाए ॥ बिविध सुगंध कपूर आदिदे रचना चोक पुराए ॥३ ॥ मंडप छायो कमल कोमल दल शीतल छांय सुहाई ॥ आसपास परदा फूलनके मालाजाल गुहाई ॥४ ॥ शीतल जल कुमकुमके जलसों सबके चरण

पखारे ॥ कर बिनती करजोर सबनसों कनकपटा बेठारे ॥५ ॥ राजतराज गोप भूपति संग विमल वेष अहीरा ॥ मानो समाज राज हंसनको जुरे सरोवर तीराहो ॥६ ॥ धरे अनेकन कनट कटोरा और कंचनकी थारी ॥ ढिंग ढिंग धरी सबनके सुंदर शीतल जलभर झारी ॥७ ॥ गावन लागी गीत ब्याहके सुकुमारी व्रजनारी ॥ अति हुलास परिहास परस्पर यह सुख शोभाभारी ॥ परोसन लागे पुरोहित हितसों जिनकी वदन बडाई ॥ तिनके दरशपरस संभाषण मानों सुर सरिता आई ॥९ ॥ ओदन की उज्वलता मानों सहेज रूप धर आये ॥ यह हित प्रीति प्रीतम जन हितसों प्रकटहि आप जनाये ॥१० ॥ बरीबरा अरु बरन बिजोरा पापर पीत बनाए ॥ कनक वरण बेसन बहुतेरे प्रकार न जात गिनाए ॥११ ॥ आमल वेल आंब अदरख रस नीबू मिले संधाने ॥ सदसीरा और सुरभी घृतसों सौरभ घ्राण बखाने ॥१२ ॥ बासोंदी शिखरन और खोवा अमृत रसना तोषे ॥ आमल रस कटुक तीक्ष्णरस लोंन मधुर रस पोषे ॥१३ ॥ कंदमूल फल फूल पत्रजो व्यंजन सबे प्रकारा ॥ येहें मानों प्रकट भूतलमें अमृतके अवतारा ॥१४ ॥ और बहुत बिध षडरस व्यंजन परोसन वारे हारे ॥ यद्यपि होय शारदाकी मति तदपि न जात संभारे ॥१५ ॥ शीतल सुगंध चारु सुकोमल विविध भांत पकवान ॥ तेउ प्रकार परे नहीं कबहुं सुरपतिहूके कान ॥१६ ॥ कर आचमन उठे सब व्रजजन मनमें अति सुख पाये ॥ पट भूषण बीरा सोंधेसों पूजसदन पधराये ॥१७ ॥ यह सुख संपति यह रस शोभा कापें जात बखानें ॥ जूठन जाय उठाय गदाधर भाग्य आपने माने ॥१८ ॥

□ राग सारंग □ (२५) दिन दूल्हे मेरो कुंवर कन्हैया ॥ नित्य उठ सखा शृंगार बनावे ॥ नित्यही आरती उतारत मैया ॥१ ॥ नित्य उठ आंगन चंदन लिपावे नित्यही मोतिन चौक पुरैया ॥ नित्यही मंगल कलश धरावे नित्यही बंदनवार बँधैया ॥२ ॥ नित्य उठ ब्याह गीत मंगल ध्वनि नित्य सुरनर मुनि बेद पढैया ॥ नित्य नित्य आनंद होत वार निधि नित्यही गदाधर लेत बलैया ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२६) ब्याहकी बात चलावत मैया ॥ बरसानें वृषभानगोपकें लालकीभई सगैया ॥ ग्वालबाल सब बरात चलेंगे ओर चलेंबलभैया ॥ परमानंद नंदके आनंद हँसहँस देत बधैया ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२७) छांड मेरे लाल अजहुं लरकाई ॥ एहें काल देखवे तोकों ब्याहकी बात चलावन आई ॥१ ॥ डरहे सास ससुर चोरीतें सुन हँसहे दुल्हैया सुहाई ॥ उबट न्हवाय गुहूं चुटिया बल देख भलो वर करहें बडाई ॥२ ॥ मात बचन सुनि बिहस बोले दे भई वडीबेर कालि तो तांई ॥ जब सोवे काल तब व्हेहे नयनमूंद तव पोढे कन्हाई ॥३ ॥ उठ कह्यो भोर भयो झगुलीदे मुदित मन लखि आतुरताई ॥ बिहंसे गोपाल जान परमानंद सकुच चले जननी उरभाई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (२८) ब्याहकी बात चलावन आए ॥ अपने अपने गामतें ग्वालिन कहिकहि दूत पठाए ॥१ ॥ नंद महर मिल समधानो कीनो देख यशोदा आनंद पाए ॥ कब देखोंगी दुलह दुलहनी अपने कुलके देव मनाए ॥२ ॥ यह सुनकें हरखें संकर्षण प्रभु कछुक प्रभुता जनाए ॥ परमानंद मैया श्रीपतिकी तिहिंछिन भुषण बसन बनाये ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२९) पुजवो साध नंदमेरे मनकी ॥ करो ब्याह देखों ईन नयनन दुलहनि अपने ललनकी ॥१ ॥ व्रजपुरमांह बिचारो कन्या काहू गोप सजनकी ॥ रूप अनूप सकल गुण सुंदर जोरी सामलतनकी ॥२ ॥ कब देखोंगी मोरधरें शिर पनरथ ढांप बदनकी ॥ अति उतंग नीली घोरी चढ और छबि चँबर ढुरनकी ॥३ ॥ राई लोन उतार दुहूंकर लगे न दृष्टि दुर्जनकी परमानंद करे न्योछावर शोभारूप सदनकी ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३०) अपने लालको ब्याह करूंगी बडे गोपकी बेटी ॥ जासों हमसों जतिया चारो भोजन भेटा भेटी ॥१ ॥ मात यशोदा लाड लडयावे अंग शृंगार करावे ॥ कस्तुरीको तिलक बनावे चंदन पीत चढावे ॥२ ॥ कहिरी मैया कब लावेगी मोकों दुलहैया नीकी ॥ परोस परोसकें मोहि खवावे रोटी चुपरी घीकी ॥३ ॥ ये सब सखा वरात चलेंगे हुंव चढूंगो घोरी ॥ जन परमानंद पान खवावे बीरा भर भर झोरी ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३१) चलत तेरे ब्याहकी अब बात ।। मेरो कह्यो तू मान मन मोहन त्यज चोरी की घात ।।१ ।। बारे धूत गोप सब सुनिहें तातें सजन संकात ।। घरही दूध दही बहुतेरो काहेकों परघर जात ।।२ ।। सब गुण सुभग सुशील सुलक्षण राधा गोरे गात ।। सूर लगन आवेगी अबही सांझ दुपहरी प्रात ।।३ ।।

□ राग सारंग □ (३२) बरसानें वृषभान गोपकें तेल चढावत गोरी ।। नव तरुणी ले संग बाल सब रूप अनुपम जोरी ।।१ ।। सालू तान वितान बनायो कर गहें कुंवर किशोरी ।। ताके मध्य पकवान विविध धर कर कंकण विधिजोरी ।।२ ।। सप्त सुहागिन तेल चढावे भाग्यसुहागिन जोरी ।। राधाजू तब उबट न्हवाई छबिकी तटनि झकोरी ।।३ ।। भूषण बसन पहराय कुंवरकों मरुवट कर मुख रोरी ।। श्यामाकर पकवान दिवायो सबकूं भर भर झोरी ।।४ ।। ललिता आय करी तब आरती छबि न बढी कछु थोरी ।। अरघ बढाय लई तब भीतर सखी डारत तृण तोरी ।।५ ।। यह विधि ब्याह विलास बढावत छिन छिन गावत गोरी ।। परमानंद पूर्णावती कर टहल महलमें दोरी ।।६ ।।

□ राग नट □ (३३) प्रिया प्रिय बैठे पलका चार ।। मंडप तर शोभित नंदादिक झूमरहीं व्रजनार ।।१ ।। देत दानजो भान बडे नृप हय गज रतन भंडार ।। वंश वखानत घरके याचक पहराये मणिहार ।।२ ।। टीको भेट कराय सबनकों भेटे भुजा पसार ।। वीरी बदल सजन दोऊ हरखे बरखे रंग अपार ।।३ ।। गोपनकें गोधन अति प्यारो धोरी धेनु सिंगार ।। झूमर झूल फूल मखतूलन दीनीहें लखचार ।।४ ।। जगमग सोने सींग सबनके गरे घंटन के हार ।। मोतिन हार फबी पग पेंजनी चलत झनन झनकार ।।५ ।। बिदाभई कीरति तनयाकी लेचलीं पुरकी नारि ।। ललितादिक तनकी परछांही क्यों बिछुरत सकुमारि ।।६ ।। किंकर करन टहल हितकी संग झुंडनदई सिंगार ।। मनभोरीहे कुंवरि लाडिली संग दीनीहे विचार ।।७ ।। कनकलतासी लपट रहीहे कीरतिजु कुमारि ।। नेह नीर करि सींचत छिन

छिन कोन सके निरवार ॥८ ॥ काकी भाभी बहनि पुनि फूफी तिनलीनी उरधार ॥ पुन श्रीदामा सहोदरसों मिलि बढ गई प्रीति अपार ॥९ ॥ मिलि वृषभान कह्यो मेरी बछीया जिन रोवे सकुमार ॥ विवश भई तनकी सुध विसरी नेंनन जल किनडार ॥१० ॥ लेहों बेग बुलाय लडेंती पिता कह्यो पुचकार ॥ देहों बेग पठाय भैयाकों यों कहि रथ बेठार ॥११ ॥ यह शोभा यह प्रेम विवशहे यह व्रजको व्योहार ॥ या दुलहनि या दूल्ह ऊपर कृष्णदास बलिहार ॥१२ ॥

□ राग नट □ (३४) अरीचल दुलहे देखन जांय ॥ सुंदर श्याम माधुरी मूरति अँखियां निरख सिरांय ॥१ ॥ जुर आईं व्रजनारि नवेली मोहन दिस मुसिक्यांय ॥ मोर बन्योशिर कानन कुंडल मरुवटि मुखहिं सुहांय ॥२ ॥ पहेरें बसन जरकसी भूषण अंग अंग सुखदांय ॥ तेसीयबनी बरात छबीली जगमग रंग चुचांय ॥३ ॥ गोप सभा सरवरमें फूले कमल परम लपटांय ॥ नंददास गोपिनके दृग अलि लपटान कों अकुलांय ॥४ ॥

□ राग नट □ (३५) सजनीरी गावो मंगल चार ॥ चिरजीयो वृषभान नंदिनी दुल्हे नंदकुमार ॥१ ॥ मोहनकें शिर मुकुट बिराजत राधाकें उर हार ॥ नीलांबर पीतांबरकी छबि शोभा अमित अपार ॥२ ॥ मंडप छायो देख बरसाने बेठे नंद उदार ॥ भामर लेत प्रिया ओर प्रीतम तनमन दीजे वार ॥३ ॥ यह जोरी अविचल श्रीवृन्दावन क्रीडत करत विहार ॥ परमानंद मनोरथ पूरन भक्तन प्राण आधार ॥४ ॥

□ राग नट □ (३६) तू बनरा रे बनि-बनि आया मो मन भाया सुख उपजाया ॥ अति उतंग नीली घोड़ी चढ़ि धरि सिर सेहरा अति सुंदर अङ्ग सुगन्ध लगाया ॥१ ॥ अपने संग सकल जन सोहैं तिलक ललाट बनाया ॥ 'रसिक' प्रीतम बलिहारी तेरी उठि के अङ्ग लगाया ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (३७) राधा प्यारी दुलहनजूको दुलहा देखोरी आवतहें व्रज लटकत ॥ ग्वालन संग गावत ऊंचे स्वर श्रवण सुनत मन अटकत ॥

प्यारो लाल देखतही समातहीयेमें अँखियनहुं नहीं खटकत ।। प्रभुकल्याण गिरिधरजूकी माधुरी देख समर सरन तकि सटकत ।।२ ।।

□ राग गौरी □ (३८) सखीहो करों लडतीजूको आरतो मनमोहनको मुख जोई ।। भरी सखी सब गावत हितसों अति आनंद उर होई ।।१ ।। अत्तर बोर बाती संजोवो कर्पूर अन्तर पुटसोई ।। रत्न जटित कनकथारमें दीपक जोत संजोई ।।२ ।। जोरी अद्‌भुत रूपकी त्रिभुवन छबि पावे नहीं कोई ।। गौरश्याम शोभा अति राजत बरनी जात न सोई ।।३ ।। रसिक बिहारी रसमें पागे रहे प्रेम रस भोई ।।४ ।।

□ राग गौरी □ (३९) दुल्हे दुलहनि अधिक बनी ।। पूजन चली कल्पतरु सुंदर ओरे ठान ठनी ।।१ ।। कियो सखिन गठजोरो सबन मिलि आगें धँन पाछें धनी ।। गावत गीत चली मंगलके सबे सुघर सजनी ।।२ ।। रूनक झुनक पग धरत धरिनिपर छबि पावत अबनी ।। छिरकत सुगंध भूप रूपज्यों फूलन माल बनी ।।३ ।। अंगुलीजोर यहीवर मांगत रहो सुख प्रेमसनी ।। रसिक बिहारिन देख छके दृग केलिकलाजु बनी ।।४ ।।

□ राग खमाच □ (४०) मंगल भीनी प्यारी रात ।। नवल रंगहो देखो देखो कुंज सुहात ।।ध्रु० ।। दुलहनि प्यारी राधिका दूलह श्याम सुजान ।। ब्याह रच्यो संकेतमें ललिता रचित बितान ।।१ ।। चहल पहल आनंद महलमें जों न रुप दरसात ।। दुलहनिको मुख निरखकें पिय इकटकही रहि जात ।।२ ।। अंस भुजा दोऊ चलत हंसगति गवन ।। गावत मंगल रीतसों चलेहें भावते भवन ।।३ ।। कुसुम सेज बिहरत दोऊ जहां न कोऊ पास ।। यह जोरी छबि देखकें बल बल नागरीदास ।।४ ।।

□ राग ईमन □ (४१) बनारे बलैया लेहुं ।। आज सुहागकी रेन सुघरवर पायो तन मन धन न्योंछावर करेंहुं ।।१ ।। अधर तंबोल बीरी गनदेहुं वागो लाल सुनहरी सोहे मोर मुकुटको मोर धरेंहुं ।।१ ।। कृष्णजीवन लछीरामके प्रभुसों हिलमिलकें रसरंग वढेंहुं ।।२ ।।

□ राग कान्हरो □ (४२) मोहेसुरपति जे महामुनि देख कान्हको

गठजोरो ॥ नौतन पढ काढी पातनकी मटुकी मांडी कहूं बिधि देख बिधाता भयो भोरो ॥१ ॥ करत बिचार अचार बिहार ठाकुर कुंजन कियो अहो बहोरो ॥ धोंधीके प्रभुके सब पांइन परत सब मिल करत निहोरो ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (४३) आज बने सखी नंदकुमार ॥ वामभाग वृषभान नंदिनी ललितादिक गावें सिंघद्वार ॥१ ॥ कंचन थार लिये कर मुक्ता फल फूलनके हार ॥ रोरीको शिर तिलक बिराजत करत आरती हरख अपार ॥२ ॥ यह जोरी अविचल श्रीवृन्दावन देत असीस सकल व्रजनार ॥ कुंज महलमें राजत दोउ परमानंद दास बलिहार ॥३ ॥

शेहरा के पद

□ राग कान्हरो □ (१) सोहे शीश सुहावनो दिन दुल्हेतेरे ॥ मणि मोतिनको सेहरो सोहे बसियो मन मेरे ॥१ ॥ मुख पून्योको चंदहे मुक्ताहल तारे ॥ उनके नयन चकोरहें एसब देखन हारे ॥२ ॥ पीय बने प्यारी बनि आईं ॥ परम आगरी रूप नागरी एसब देखन आईं ॥३ ॥ दुलहनि रेंन सुहागकी दुलह वरपायो ॥ नंदलालको सेहरो जन परमानंद गायो ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (२) दुलह हो बनि आयो सुंदर दुलहनिजूसों नेह लगायो ॥ रत्न जटितको शीश सेहरो गजमोतिनसों गूंथ बनायो ॥१ ॥ वागो लाल सुनहरी छापो लालइजार चरणविरचायो ॥ रामदास प्रभु चढ घोरीपें सबको भलो मनायो ॥२ ॥

□ रागा कान्हरो □ (३) यह दुलरी वृषभान लई कब। ना जानों काहू को ढोटा पहुंची पलटे मोहि दई तब ॥१ ॥ सुनि मृदु वचन कुँवरि के मुख के बहुरि हसी जननी दोउ तब। यह विवाह अपने श्यामको त्रिभुवन जोट जुगल दंपति कब ॥२ ॥ एसी बहुरिया व्यार उडावे बडे महर जेंबन बैठे तब। 'कृष्णा' कहे दास गिरिधर की कारज सुफल होय मेरो जब ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (४) जशोदा तब गोपाल बुलायो। दुलरी कहां स्याम तेरे गरे की सुनि हस बचन सकुच सिर नायो ॥१ ॥ दुलरी लई दई मोहि

पहुंची मैया इन ढोटियन बहुरायो। राधा कही पहले तुम पलटी भले भले कहि भरम जु पायो ॥२ ॥ अंतर प्रीत वदन उठी मुख झगरो जसुमति के मन भायो। बाल विनोद चरित्र गिरिधर के 'कृष्णा जन' तहां यह जसु गायो ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (५) मेंदी लावन दे री सो आज मेरे आनंदकी रेन सोहागकी रेन। जगमग जोत जराबको गहनो विधविध रति सु सुखलेन ॥१ ॥ करो बधायो मनको भायो गरे है लगाई सुख पेन। 'धोंधी' के प्रभु चतुर सिरोमनी मन इच्छा पुरवेन ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (६) अब गूथ लाव रे मालनिया सहेरो। शुभ घरी शुभ दिन शुभ पल मुहूरत वागो बन्यो सुनेरो ॥१ ॥ हार चमेली गुलाब निवारो महेकत आवत केवरो। बना बन्यो श्री वल्लभवर प्रिय श्री गोकुलमें गेहरो ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (७) बना बनके ब्याहन आयो कीरतिसुता वदन देख हरखैया। पीतांबर मुक्तामाल सुभग उर सोहे लाल फूलको सहेरो सिर ढरकैया ॥१ ॥ मकरकुंडल कान मानो उदयो भान नखशिख बने सुजान सरस सुहैया। रसिक रसीले मेरे मनमें ठसीले 'दासकुंभन' छबि पर बल जैया ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (८) बना तेरी चाल अटपटी सोहे। सीस फूलनको सहेरो बन्यो है अलक तिलक मन मोहे ॥१ ॥ कर सिंगार चढे घोरी पर ले दरपन मुख जोहे। 'हरिनारायण श्यामदास' के प्रभुकी उपमाको नहीं को है ॥२ ॥

□ राग बिहागरो □ (९) गनत रहत गुन गननि लाल गोरी के गरब गरबीलौ ॥ कंचन तन धन के आनन्द में ऐंड़ाइल अरबीलौ ॥१ ॥ करत बिहार अहार विपिन बसि पान सुधा धर रसिक रसीलौ ॥ तैसीय सुखद सहचरी दासी बिहारिनि मिलियौ अंग सं॰/ सुवस बसीलौ ॥२ ॥

□ राग बिहागरो □ (१०) अरी हों स्याम रंग रंगी ॥ रीझ बिकाय गई वह मुरति सूरति माँहि पगी ॥१ ॥ संग हुतौ अपनों सपनों सौ सोइ रही रस खोई ॥ जागे हु आगें दृष्टि परै सखि नेंकु न न्यारौ होई ॥२ ॥ एक जु मेरी अखियन में निस द्यौस रह्यौ करि भौंन ॥ गाय चरावन जात सुन्यों सखि सोधों कन्हैया कोंन ॥३ ॥ कासों कहों कौन पतियावे कौन करै बकबाद ॥ कैसें कै कहि जात गदाधर गूंगे कौ गुर स्वाद ॥४ ॥

□ राग बिहागरो □ (११) दुलहे गिरिधरलाल छबीलो दुलहनि राधा गोरीजू ॥ जिन देखत मेन जिय लाजत एसी बनी यह जोरीजू ॥१ ॥ रत्नजटितको बन्यो सेहरो उर मोतिनकी माला ॥ देखत वदन श्याम सुंदरको मोहि रही व्रजबाला ॥२ ॥ मदन मोहन राजत घोरापर और बराती संगा ॥ बाजत ढोल दमामा चहूंदिश ताल मृदंग उपंगा ॥३ ॥ जाय जुरे वृषभानकी पौरी उततें सब मिल आए ॥ टीको करि आरती उतारी मंडपमें पधराए ॥४ ॥ पढत वेद चहूं दिश विप्र जन भये सबन मन भाये ॥ हथलेवा करि हरि राधासों मंगलचार पढाये ॥५ ॥ व्याह भयो मोहनको जबहीं यशोमति देत बधाई ॥ चिरजीयो भूतल यह जोरी नंददास बलिजाई ॥६ ॥

□ राग बिहागरो □ (१२) सेहरो हरि दुलहके कुसुम भांतभांत ॥ जाहि देख लघु लागत बने मोतिनकी कांत ॥१ ॥ श्रवणन हरि दूलहके बनेहें करणफूल ॥ छबि रविकी जगमगति जोति समतूल ॥२ ॥ कुंकुमको तिलक बन्योहे ललाट ॥ मानो यह विधि सँवारी मनसिजकी वाट ॥३ ॥ मुक्ताफल नासाको सबको चित्त चोरें ॥ हसन दशन रसन ज्योति अधर रंग तंबोरें ॥४ ॥ दुलरी गज मोतिनकी मध्य माणिक दमके ॥ मानो नक्षत्र पंक्तिमें मंगल चमके ॥५ ॥ भुज भुजंग अंगकी छबि कहाकहुं ॥ मानो पहुंची रुचिर रचि रीझरीझ रहुं ॥६ ॥ बरणबरण फुलनकी माला मनमोहे ॥ रतिपतिके झूलनासो झूलना उरसोहे ॥७ ॥ कटि तट किंकिणीं रुनझुनराव ॥ कूजत कलहंसनको नुपुर सुभाव ॥८ ॥ श्रीवृन्दावन भुमि

मंडप नव कुंज ॥ वदत वेदबानीसी मधुपनके पुंज ॥९ ॥ दुलह व्रजराज कुंवर दुलहनि व्रजनारी ॥ शरदनिशी रास विलास सबही सुखकारी ॥१० ॥ कोकिल कल गावतहें मंगलकल गीत ॥ बाजे द्वार देवमुनि पूजी सब रीत ॥११ ॥ फूली द्रुम लता वेली श्वेत पीतराती ॥ चंदन वंदन केसरसों चरचे बराती ॥१२ ॥ यह सुखजो हृदयरहेतो मिटे मनदाहु ॥ कहत हें गदाधर चित इत उत नहिं जाहु ॥१३ ॥

□ राग बिहागरो □ (१३) श्यामाजु दुलहनि दुलहे लाल गिरिधर कोन सुकृत पायो कुंवर रसिकवर ॥ सोहे सिर सेहरो नवल नव नेहरो प्रथम मिलन नयना भयेहें कल्पतर ॥१ ॥ रूपरास रुचि बाढी प्रेम गांठ परी गाढी सखी बांह गहें ठाडी गयोहै लाजको डर ॥ पोढे पिय रंगमहल तल्प रचित कुसुम दल श्यामा सहजोर जाय रह्योहे रंगन ढर ॥२ ॥

□ राग बिहागरो □ (१४) जुगल वर आवतहें गठजोरें ॥ संग शोभित वृषभान नंदिनी ललितादिक तृणतोरें ॥१ ॥ शीश सेहरो बन्यों लालकें निरख हरख चितचोरें ॥ निरख निरख बलजाय गदाधर छबि न बढी कछुथोरें ॥२ ॥

□ राग बिहागरो □ (१५) न छूटे मोहन डोरना अहो कसि बांध्यो गिरिधरजूके पाणि ॥ प्रथम व्याह विधि व्हे रहीहो कर कंकण चारु बिचार ॥ हँसहँस कसकस ग्रन्थ बनावत नवल निपुण व्रजनार ॥१ ॥ बडे होय इत खोलियोहो सुनो घोषके राय ॥ करजोरो हाहाकरोके छूवो कुंवरिके पाय ॥२ ॥ यह न होय गिरिवरको धरनों सुनोंहो कुंवर गोपीनाथ ॥ बहुत कहावतहो अपनपे कांपन लागे हाथ ॥३ ॥ सहज शिथिल कर पल्लव हरी लीनो छोर संवार ॥ किलकहँसी सखी श्यामकी अब तुम छोरोहो सुकुमार ॥४ ॥ तुमकिन अब करो सहाय सखी हो छोडो अधिक सयान ॥ छोरन देउं कुंवरिकों कंकण के बोलो वृषभान ॥५ ॥ कमल कमल कर वरणियो पाणि पियाके लाल ॥ अब कवि कुल सांचे

भये तब भये कटीले नाल ॥६ ॥ ज्यों ज्यों छूटे डोरना त्यों बढे प्रेमकी डोर ॥ देख दुहुनकी रीति सखीरी हँसत सबे मुखमोर ॥७ ॥ लीला ललित मुकुंद चंदकी करो रसिक रसपान ॥ यहजोरी अबचल वृंदावन बलबल दास कल्यान ॥८ ॥

□ राग बिहागरो □ (१६) नंद कहत वृषभानरायसों बहुत अनुग्रहकीनो ॥ ऐसो और नाहि हितकारीसो अब तुम सुखदीनो ॥१ ॥ रावल रमण राधिका प्रकटी में ताही दिन जानी ॥ ऐसी कृपाकरी करुणामय यशोमति कूंख सिरानी ॥२ ॥ यहसुन भान सगाईकीनी बिरह दवनमें नायो ॥ सूरदास फुले व्रजवासी ब्याह परम सुखगायो ॥३ ॥

□ राग बिहागरो □ (१७) दुल्हे मदन गोपाल राधेजु नवदुलही ॥ मानो श्याम तमालके ढिंग कनकवेल उलही ॥१ ॥ रूप भूप युवराज बिराजत बेस एकतुलही ॥ हरि नारायण श्यामदासके प्रभुसों चाह हुती सोजु लही ॥२ ॥

□ राग बिहागरो □ (१८) लाल बने रंगभीने गिरिधरलाल बने रसभीने ॥ध्रु० ॥ पियकें पाग केशरी सोहे ॥ देखत रतिपतिको मनमोहे ॥१ ॥ तापर एकचंद्रिका धारी ॥ प्यारीजू अपने हाथ संवारी ॥२ ॥ पियके अरुण नयन मन भाये ॥ प्यारी बहु विध लाड लडाये ॥३ ॥ पियकें पीक कपोल बिराजे ॥ अधरन अंजन रेखाछाजे ॥४ ॥ पियकें उरसी मगरजी माला ॥ बोलत शिथिल वचन नंदलाला ॥५ ॥ छबिपर नंददास बलिहारी ॥ अंगअंग राचे कुंज बिहारी ॥६ ॥

□ राग बिहागरो □ (१९) दुल्हे सुंदर श्याम मनोहर दुलहनि नवलकिशोरीजु ॥ मंगल रूप लोक लोचनकों रचीहे विधाता जोरीजु ॥१ ॥ रास बिलास व्याह विध नितप्रति थिर चर मन आनंदा ॥ शरद निशा दिशा सब निर्मल डहडहे पूरण चंदा ॥२ ॥ यमुना पुलिन नलिन

रसरंजित सुभग संवारी चौरी ॥ बोलत मधुर वेदवानीसी मिले भ्रमर ओर भौंरी ॥३ ॥ गोपीजुरी कंज कलिनको आमर मोर बनायो ॥ झलकत विमल नक्षत्र मुक्तासे गगन वितान तनायो ॥४ ॥ आसपास लहलही द्रुम वेली जुरी मानो कौतुक हारी ॥ कुसुम नयन अलि अंजन दीनो नव पल्लव तनसारी ॥५ ॥ फूलेद्रुम कुसुमनकी शोभा असित पीत सितराती ॥ चोवा चंदन वंदन केसर चरचे मानो बराती ॥६ ॥ मधुर कंठ कोकिला सुवासिन गीत परस्पर गावें ॥ बाजे द्वारपर सकल देव मुनि बहु वाजंत्र बजावें ॥७ । सारस हंस कपोत कीर द्विज शाखा गोत्र उच्चारें ॥ नचत मयून नोंछावर करकर द्रुम नवफूलन डारें ॥८ ॥ यह विध सदां विलास रासरस अगणित कल्प बितावें ॥ जो सुख शुक सनकादिक नारद शेष सहस्त्र मुखगावें ॥९ ॥ और कहांलग कहे गदाधर मोहन मधुर विलासा ॥ रसना सहज शुद्ध करवेकों गावत हरिके दासा ॥१० ॥

□ राग बिहागरो □ (२०) ललनकी बातनपर बल जैयें हँस तुतरात कहत मैयासों दुलहन मोकों चहियें ॥१ ॥ गातन गोरी बयसन थोरी दुलहनको कर गहियें ॥ अबही सांझ समे करगोनों मंदिरमाँझ पधरैयें ॥२ ॥ नंदराय नंदरानी हिलमिल सुखसों मोत बढैयें ॥ सुरश्यामके रुप शीलगुण व्रजमें कहांजु पैयें ॥३ ॥

□ राग बिहागरो □ (२१) लाल तेरी फिर फिर जात सगाई ॥ चोरीकी बात छांडदे मोहन लरलर जात लुगाई ॥१ ॥ दूध दही घरमें बहुतेरो माखन और मलाई ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर फिरगये बामन नाई ॥२ ॥

□ राग बिहागरो □ (२२) व्रज बेद बदत बरसानो ॥ वृषभान गोप तहांरानो ॥१ ॥ जाकी राधा रुचिर कुमारी ॥ पितु माता प्राणन पियारी ॥२ ॥ गुण रूप रास बिधु बदनी ॥ रति रमा उमा मद कदनी ॥३ ॥ भई वरस सातकी बाला ॥ लागी खेलन खेल रसाला ॥४ ॥ तहां सखी वृन्दरहीं घेरी ॥ मानोंहें याकी सब चेरी ॥५ ॥ वृषभान भवन नित आवें ॥

कहूं खेल्यो अनत न भावें ॥६ ॥ एक द्योस सबें मिल आई ॥ बिनती कर महरि बुलाई ॥७ ॥ आज खेलन उपबन जैये ॥ जोपें संग राधिका पैये ॥८ ॥ जहां कुसुमित द्रुम तरुबैली ॥ तहां खेलें सबे सहेली ॥९ ॥ सुन महरि कुंवरि शृंगारी ॥ नखशिखलों आभरण भारी ॥१० ॥ दुलहनसी बनीहे लडेंती ॥ सखियनमें गुणन बडेंती ॥११ ॥ देख रीझ रही महेंतारी ॥ कर पिंडुरी वार डारी ॥१२ ॥ लली आज्ञा मांग सिधारी ॥ संग विविध अहीर कुमारी ॥१३ ॥ एक श्याम वरण एक गोरी ॥ एक बाला एक किशोरी ॥१४ ॥ भुज कंठ परस्पर मेली ॥ चली गावत सुभग सहेली ॥१५ ॥ मुख पंकज पंकज राजें ॥ प्रतिबिंब कपोलन भ्राजें ॥१६ ॥ मानों शशि शशी अरविंदा ॥ अरविंद राजमें चंदा ॥१७ ॥ यह उपमा उनही नीकी ॥ पिय जान गये उनहीकी ॥१८ ॥ सब बाला उपबन आंई ॥ देख सलिल लता मन भाई ॥१९ ॥ रंगरंग कुसुम सुवासा ॥ अलिगण गुंजत चहुंपासा ॥२० ॥ आली औली भरभरलावें ॥ जाके भूषण विविध बनावें ॥२१ ॥ फूलनके लहेंगा अंगिया ॥ पोहोंची फूलन बहुरंगिया ॥२२ ॥ तहां फूली फिरें सहेली ॥ मानों कानन कंचनवेली ॥२३ ॥ तामें राधाजू अधिक सुहाई ॥ सब सखी रही शिरनाई ॥२४ ॥ मिल खेलत खेल रसाला ॥ जहां आयगये नंदलाला ॥२५ ॥ संग बहुत गोपके छैया ॥ विन एकही हलधर भैया ॥२६ ॥ करलीये गेंद चौगाना ॥ लगे खेलन रूप निधाना ॥२७ ॥ जबपरी दृष्टि व्रजबाला ॥ तब चकित भये नंदलाला ॥२८ ॥ देखि राधा रूप गुण गहरी ॥ फूलनके आभरण पहरी ॥२९ ॥ तब मन अभिलाखा बाढी ॥ नेंक देखो जो यहठाडी ॥३० ॥ हरि एक उपाय बनायो ॥ राधा सन्मुख गेंद चलायो ॥३१ ॥ जब आयगये हरि नेरे ॥ गेंदुक मिस सब तन हेरे ॥३२ ॥ जब चरण समीपे आयो ॥ तब निज कर नारिउठायो ॥३३ ॥ हँस कह्यो गेंदुक मेरोदीजे ॥ ऐसी हाँसी कबहु न कीजे ॥३४ ॥ कहे

कामिनी गेंदुक केसो ॥ काहे बोलत बचन अनेसो ॥३५ ॥ सखी हाथ गेंदुक दुरदीनों ॥ तब लाल अधिक रसभीनों ॥३६ ॥ हरि कहे तुम गेंद चुरायो ॥ अपने पट ओट दुरायो ॥३७ ॥ श्यामा कहे दूंढ पट मेरो ॥ जो पावेसो तेरो ॥३८ ॥ यों कहिकहि अंग दिखावे ॥ हरिदरश परस सचुपावे ॥३९ ॥ सब सखियन मतोजू कीनों ॥ नंदलालही उत्तरदीनों ॥४० ॥ जो अपने खेल सँकेलो ॥ अब ब्याह खेल तुम खेलो ॥४१ ॥ तो गेंदुक आपने पेहो ॥ नातर रीते फिर जेहो ॥४२ ॥ तुम दुलहेहोहु विहारी ॥ दुलहनि वृषभान दुलारी ॥४३ ॥ जब जोरी सुंदर बनहें ॥ तब खेल सरस हमगिनहें ॥४४ ॥ सुनश्याम सखन तन चितयो ॥ कहो ग्वाल भलो हमहितयो ॥४५ ॥ यह खेलिये खेलहे नीको ॥ यातें खेल हमारोफीको ॥४६ ॥ हरि ग्वालन टेर सुनायो ॥ अरी करो आप मन भायो ॥४७ ॥ सुन सुंदरि सबमुसकानी ॥ बिधि ब्याह खेलनकी ठानी ॥४८ ॥ एक भई दुलहनिकी मैया ॥ एक ग्वाल भयो बलभैया ॥४९ ॥ तव दुलहनि उबटि न्हवाई ॥ पटभूषण तन पहेराई ॥५० ॥ मनमोहन मज्जन कीनों ॥ निज भाल तिलक घसिदीनों ॥५१ ॥ एक सघन कदंबकी छैंया ॥ नरनारि भये एकठैंया ॥५२ ॥ दोऊ श्यामाश्याम नवीने ॥ दोऊ आसन ढिगढिग कीने ॥५३ ॥तहां सन्मुख दोऊ बैठाये ॥ मिल मानिनी मंगलगाये ॥५४ ॥ बिच अंतरपट जब धार्यो ॥ तब आतुर भये द्रगचार्यो ॥५५ ॥ मानो दरशन बिन युगबीतें ॥ ये विरह छिनककी रीतें ॥५६ ॥ जब करी जबनका भांती ॥ तब सब मन भई सुहाती ॥५७ ॥ गह्योपाणि कमल हरिराई ॥ वह सकत न शारदा गाई ॥५८ ॥ कछु सकुचत गर्व गहेली ॥ वनमाल लाल उरमेली ॥५९ ॥ दोऊ लोचन भर भर निरखें ॥ जानो चित्त परस्पर करखें ॥६० ॥ तहां सहचरी सब सचुपाईं ॥ वे रीझरहीं शिरनाईं ॥६१ ॥ एक बीरी देत बनाई । एक पुनपुन लेत बलाई ॥६२ ॥ श्यामा दई श्याम

मुखबीरी ॥ तब गावत गारि अहीरी ॥६३ ॥ अहो ग्वाल छाछके भोगी ॥ कहा जाने पान अरोगी ॥६४ ॥ मेरी राधाजू आज सिखावे ॥ ताते परम पुन्य फल पावे ॥६५ ॥ हरि निजकर बीरी लीनी ॥ त्रियमुख मेलन मति कीनी ॥६६ ॥ जब अधर अरूण तन हेर्यो ॥ तब राधाजू श्रीमुख फेर्यो ॥६७ ॥ जब हँसीहें सकल व्रजबाला ॥ भले डहकेहें नंदलाला ॥६८ ॥ एक कहे कह्यो सुन मेरो ॥ यह छुयो न खेंहे तेरो ॥६९ ॥ तेरी देह कांति अतिकारी ॥ वपु कंचन वरन कुमारी ॥७० ॥ लाला छांड दे हाथ ललीको ॥ मति भेटे कमल कलीको ॥७१ ॥ तेरो कर कठोर बनबारी ॥ कैसें परस सहे सुकुमारी ॥७२ ॥ ऐसे विविध वचन त्रिय भाखें ॥ हरि हृदयमें लिखि राखें ॥७३ ॥ ज्यों ज्यों ग्वालिनि गारी सुनावें ॥ त्यों त्यों मोहन मन अति भावें ॥७४ ॥ एक कहे अरी सुनमाई ॥ हम चौरी चारू बनाई ॥७५ ॥ जहां दंपति आन बिराजें ॥ तहां रीति करनके काजें ॥७६ ॥ यह बात सबन मन भाई ॥ वर वधू तहां पधराई ॥७७ ॥ दई छांड परस्पर बांही ॥ घृत होम हुताशन मांही ॥७८ ॥ तब फेरा चार फिराये ॥ ध्रुव मंडल साख दिखाये ॥७९ ॥ आरोगत सार कंसारा ॥ बाढ्यो मोद बिनोद अपारा ॥८० ॥ तेसी अधरनकी अरुणाई ॥ प्रतिबिंबित नखन सुहाई ॥८१ ॥ ताकी उपमा जो कोऊ गावे ॥ तोऊ पटतर कोऊ न पावे ॥८२ ॥ मिल गावत गोप कुमारी ॥ रसरंग परस्पर भारी ॥८३ ॥ तहां सात सुहागिन आईं ॥ दईं कान्ह अशीश सुहाईं ॥८४ ॥ तहां दान वधुन मिल दीनों ॥ निज तन मन अर्पण कीनों ॥८५ ॥ ऐसी व्याहकेलि बनि आई ॥ सुंदरि सुसरार पठाई ॥८६ ॥ एक सघन कुंजकी छैयां ॥ वरवधू बैठे तिहि ठैयां ॥८७ ॥ तब दोउ संगम रसराते ॥ भये भर जोबन मदमाते ॥८८ ॥ रतिकेलि रसीले दोउ ॥ तिनकी लीला लखे न कोउ ॥८९ ॥ उमग्यो रस सिंधु अगाधा ॥ श्रम स्वेद बिंदु तनराधा ॥९० ॥ हरि पोंछत पटगहि झीनों ॥ कहा कहिये नेह नवीनों ॥९१ ॥ भये सकल

मनोरथ भाये ।। दोउ वासर बाहिर आये ।।९२ ।। तहां ग्वाल सकल मिल आईं ।। हँस ललना गईहें लजाईं ।।९३ ।। एक पूछत्त वर तोहि भायो ।। एक अंगुरिन चिबुक उठायो ।।९४ ।। एक लेले कंठ लगावे ।। एक देख देख सचुपावे ।।९५ ।। फिरि श्याम सुंदरसों भाख्यो ।। एजू आज भलो रंग राख्यो ।।९६ ।। नित्य खेलन यह बन आवो ।। कहूं भूले अनत न जावो ।।९७ ।। यों कहि कहि आज्ञा मागी ।। सब गोपकुँवरि बडभागी ।।९८ ।। शिरनाय चलीं व्रजबाला ।। मानों कंचन मकरत माला ।।९९ ।। तामें मध्य राधिका बिराजे ।। सुख सुमर सुमर मन लाजे ।।१०० ।। वृषभान भवन चल आईं ।। तब महरि महा सचुपाईं ।।१०१ ।। गईं निज निज गृहन सहेली ।। श्रीराधाजू रही अकेली ।।१०२ ।। आय जननी ढिग भईं ठाडी ।। तब शतगुणी शोभा बाढी ।।१०३ ।। जब रानीजू भुज भर भेटी ।। कहो खेली कहां बनबेटी ।।१०४ ।। अरी मैया एकवर आयो ।। अति सुंदर मो मन भायो ।।१०५ ।। तासों ब्याह कियो मिल सजनी ।। दिनमान लियो कर रजनी ।।१०६ ।। नंदनंदनहे वाको नाम ।। सोजु वसतहे गोकुलगाम ।।१०७ ।। सुन श्रवण मुदित महतारी ।। तब बोली वचन बिचारी ।।१०८ ।। अरी वह सुनियतहे अति कारो ।। वपु कंचन वरण तिहारो ।।१०९ ।। बासों खेलत करे होय जैयें ।। जासों भूले नाहि पत्यैयें ।।११० ।। ना ना तेरीसों बरनीको ।। मेरे परम भामतो जीको ।।१११ ।। मेरो ब्याह बाहीसों कररी ।। यह नेम अटल जीय धररी ।।११२ ।। तहां पार परोसिन आईं ।। सुन बतियां अति सचुपाईं ।।११३ ।। हँस बोली देदे करतारी ।। श्रीराधाजुव्हैहे कारी ।।११४ ।। यह कारेसों बनखेली ।। परसो जिन कोउ सहेली ।।११५ ।। तब कह्यो बृषभान दुलारी ।। अरी तुमही होउगी कारी ।।११६ ।। मेरो ब्याह करेगी मैया ।। सुसरो गोकुलको रैया ।।११७ ।।

सुन चक्रत भई व्रजनारी॥ तेरे उत्तरकी बलिहारी॥११८॥ ऐसे बाल विनोद अपारा॥ कवि वरने कोन प्रकारा॥११९॥ जहां शेष शारदा हारे॥ तहां कविजन कोन बिचारे॥१२०॥ जाको अंत न कोउ पावे॥ जाहि दास नारायण गावे॥१२१॥

□ राग नायकी □ (२३) व्रजरानी कीरति गृह आवत। बासरको श्रम दूर करन हित राधा मुख देखत सुख पावत॥१॥ किलकत हसत लाडिली जब हि कोटि कोटि रतिपति ही लजावत। फूलत अंग समात न जननी राई लोन तत छिन हि वारत॥२॥ वार वार जृंभात कुंवरी जब प्रीत सहित पलना पोढावत। होत नींद वस जब ही अति वे सब मिल कानी गीत गवावत॥३॥ चिरजीयो जुग जुग रहो कुंवरी व्रजजन सब असीस सुनावत। कुंजकेली नित करही निरंतर 'हरिदासी' निरखत न अघावत॥४॥

□ राग केदारो □ (२४) कुंजभवनमें मंगलचार॥ नव दुलहनि वृषभान नंदिनी दुल्हे श्रीव्रजराज कुमार॥१॥ नयेनये पुष्प कुंजके तोरन नवपल्लवकी बंदनवार॥ चौरी रची कदंबखंडीमें सघनलता मंडप विस्तार॥२॥ करत वेद ध्वनि विप्र मधुप गण कोकिला गण गावत अनुसार॥ दीनी भूर दासपरमानंद प्रेम भक्ति रत्ननके हार॥३॥

श्री गुसांईजी की बधाई के पद (मागशर वद ९)

□ राग देवगंधार □ (१) बोहोरि कृष्ण श्रीगोकुल प्रकटे श्रीविठ्ठलनाथ हमारे॥ द्वापुर बसुधा भारहर्यो हरि कलियुगजीव उद्धारे॥१॥ तब वसुदेव गृह प्रकट होयकें कंसादिक रिपुमारे॥ अब श्रीवल्लभ गृह प्रकट होयकें मायावाद निवारे॥२॥ एसो कवि कोहे जगमहियां वरणे गुणजो तिहारे॥ माणिकचंद प्रभुकों शिव खोजत गावत वेद पुकारे॥३॥

□ राग देवगंधार □ (२) चहूंयुग वेद वचन प्रति पार्यो॥ धर्म ग्लानि भई

जबहि जब तब तब तुम वपु धार्यो ॥१ ॥ सत्ययुग श्वेत बाराह रूप धर हिरण्याक्ष उरफार्यो ॥ त्रेता रामरूप दशरथ गृह रावण कुल संहार्यो ॥२ ॥ द्वापर व्रज बूडततें राख्यो सुरपति पांयन पार्यो ॥ कंसादिक दानव सब मारे बसुधा भार उतार्यो ॥३ ॥ कलियुग श्रीवल्लभ गृह प्रकटे मायावाद निवार्यो ॥ माणिकचंद प्रभु श्रीविठ्ठल पुरुषोत्तम रूप निहार्यो ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (३) गोकुल घरघर अति आनंद ॥ पौषकृष्ण नौमी तिथि प्रकटे पूरण परमानंद ॥१ ॥ श्रीवल्लभकुलउदय भयोहे अद्‌भुत पूरण चंद ॥ भक्तन काज धरी नर देही सुंदर आनंद कंद ॥२ ॥ जहां तहां नाचत नरनारी गावत गीत सुछंद ॥ यादों श्रीविठ्ठलनाथ भैयाहो दूर किये दुखद्वन्द ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (४) भूतल आज महा आनंद ॥ पौषकृष्ण नौमीको शुभदिन प्रकटे पूर्णानंद ॥१ ॥ श्रीविठ्ठलनाथ पूर्ण पुरुषोत्तम अगणित कीर्ति छंद ॥ नवधा भक्ति प्रकाश करनकों अद्‌भुत पूरणचंद ॥२ ॥ नखशिख श्रीभागवत भाव रस भूषण लसत अमंद ॥ निरख वदन बिधु निजजन मनके मिटे सकल दुखद्वन्द ॥३ ॥ दुर्लभ यह अवतार भयोहे सेवो पद अरविंद ॥ रसिक महारस भक्त भयेहें करत पान मकरंद ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (५) प्रकटित श्रीवल्लभ गृहबाल ॥ संवतपंद्रहसेंजु बहत्तर गंगातीर रसाल ॥१ ॥ पौषकृष्ण नौमी वृषलग्ने शुभ घटिका ग्रहमाल ॥ प्राची दिशा महालक्ष्मी उर प्रकट भये द्विजपाल ॥२ ॥ जनक श्रीवल्लभ ज्ञाति कर्म कर दानदेत तिंहिकाल ॥ विप्र वेदपढि देत असीसन चिरजीयो यह लाल ॥३ ॥ नाम धर्यों पुंडरपुर प्रभुको श्रीविठ्ठल परम कृपाल ॥ घरघर मंगल बाजे बाजत गावत गीत सुताल ॥४ ॥ दास बधैया ले व्रज पुरकों आयो बहुत उताल ॥ कही सुनाय श्रीविठ्ठल प्रकटे प्रमुदित श्रीगोपाल ॥५ ॥

□ राग देवगंधार □ (६) जय श्रीवल्लभ राजकुमार ॥ पर पाखंड कपट

खंडन कर सकल वेद धुरीधार ॥१ ॥ परम पुनीत तपोनिधि पावन तन शोभित जीत मार॥ निज मुख कथित कृष्ण लीलामृत सकल जीव निस्तार ॥२ ॥ निजमुख सुदृढ सुकृत कर हरि पद नवधा भक्ति प्रचार॥ दुरित दुरे अचेत प्रेत गति हतित पतित उद्धार ॥३ ॥ नहीं मति नाथ कहांलों वरणुं अगणित गुण गणसार॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल प्रकट कृष्ण अवतार ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (७) अबके द्विज वर व्हे सुख दिनों॥ तबकें नंद यशोदा नंदन व्हे हरि आनंद कीनों ॥१ ॥ तब कीनो गोपाल रूप अब वेद स्मृति दृढचीनों छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल भक्ति सुधारस भीनों ॥२ ॥

□ राग देवगंधार □ (८) भयो श्रीवल्लभ गृह अवतार॥ पौषकृष्ण नोंमी प्रभु प्रकटे हस्तनक्षत्र भृगुवार ॥१ ॥ द्विज बुलाय सब कियो वेदध्वनि वरत्यो जयजयकार॥ लक्ष्मण नंदन महामोदसों देतहें दान अपार ॥२ ॥ युवती जन सब हिलमिलकें अति गावत मंगल चार॥ व्रजपति जगमें प्रकट भयेहें भक्तन प्राण अधार ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (९) जबतें भूतल प्रगट भये॥ तबतें सुख बरखत सबहिन पर आनंद अमित दये ॥१ ॥ श्रीवल्लभ कुल कमल अमल रवि आनंद उदधि उदये॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल युगयुग राजजये ॥२ ॥

□ राग देवगंधार □ (१०) व्रजजन गावत गीत बधाये॥ श्रीविठ्ठलनाथ प्रकट पुरुषोत्तम गोकुल गृह जब आये ॥१ ॥ धन्य धन्य यह घरी महूरत प्राण जीवन धन पाये॥ धन्यधन्य मंगलरूप नाथको दरशत कलह नसाये ॥२ ॥ गोवर्द्धनधर सुन आनंदित आतुर सन्मुख धाये॥ मिलत करत ओसेर पाछिली नयन नीरभर आये ॥३ ॥ अति आनंद भवनभवन प्रति मुदित निशान बजाये॥ घरघर मंगल होत सबनके मोतिन चौक

पुराये ॥४ ॥ श्रीवल्लभनंदन विरह निकंदन परस सकल सुखपाये ॥ दास चतुर्भुज प्रभु यह मंडल प्रेमके पुंज छवाये ॥५ ॥

□ राग देवगंधार □ (११) भक्ति श्रीगोकुलतें प्रकट भई ॥ पहेलें करी श्रीवल्लभ नंदन तब ओरन सिखई ॥१ ॥ चार्यों वरण शरण कर आपने विधसों वांटदई ॥ श्रीविठ्ठलनाथ प्रताप तेजतें तीन्यों ताप गई ॥२ ॥ अब देखतही जीव प्रेत व्है तिनहूं मांगि लई ॥ अब उद्धरे कहेत अपने मुख पत्री लिखपठई ॥३ ॥ श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल गिरिधर तीन्यों एक सही ॥ नवप्रकार आधार नारायण घोषलोक निवही ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (१२) व्रजजन फूले अंग न माय ॥ श्रीविठ्ठलनाथ प्रकट पुरुषोत्तम आनंद वेलि बढाय ॥१ ॥ श्रीवल्लभ मनमोद बढ्यो अति देत द्विजन बहुगाय ॥ युवतिन देत पाटंबर भूषण बंधु स्वजन पेहेराय ॥२ ॥ देत असीस सकल व्रजवासी चिरजीयो रसदाय ॥ गोविंद जनकों यह दीजिये चरण कमल समुदाय ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (१३) श्रीवल्लभ गृह सदा बधाई ॥ जबतें प्रकट भये श्रीविठ्ठल तबतें दास परमनिधि पाई ॥१ ॥ भक्ति भागवत कथा कीर्तन महा महोत्सव प्रकट गुसांई ॥ कल्पवृक्ष प्रफुलित सुखदाई नंदसुवन वृन्दावन राई ॥२ ॥ परम भजन पुरुषोत्तम लीला प्रमुदित देत दिवावत मुनिगाय ॥ लाल गोवर्द्धनधारी पदरज लालदास बलजाय ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (१४) प्रकट्यो प्राची दिश पूरण चंद ॥ प्रकट भये श्रीवल्लभके गृह सुरनर मुनि आनंद ॥१ ॥ अद्भूत रूप अलौकिक महिमा जननी तात यों भाख्यो ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल लोक वेद मत राख्यो ॥२ ॥

□ राग देवगंधार □ (१५) भयो श्रीगोकुल जयजयकार ॥ भक्ति सुधा प्रकटे श्रीविठ्ठल कलियुग जीव निस्तार ॥१ ॥ महाधोर काटे या कलिके प्रकट कृष्ण अवतार ॥ विष्णुदास प्रभु पर नोछावर तन मन धन बलिहार ॥२ ॥

□ राग देवगंधार □ (१६) विहरत सातों रूप धरें॥ सदां प्रकट श्रीवल्लभनंदन द्विज कुल भक्ति वरें॥१॥ श्रीगिरिधर राजधिराज व्रजराज उद्योत करें॥ श्रीगोविंद इंदु जग किरणन सींचत सुधा धरें॥२॥ श्रीबालकृष्ण लोचन विशाल देख मन्मथ कोटिडरें॥ गुण लावण्य दयाल करुणानिधि गोकुलनाथ भरें॥३॥ श्रीरघुपति यदुपति घनसांवल मुनिजन शरणपरें॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल जिहिं भज अखिलतरें॥४॥

□ राग देवगंधार □ (१७) श्री विट्ठलनाथ गोकुलके भूप॥ भक्तन हित कलियुगमें कृपाकर धर्यो प्रकट स्वरूप॥१॥ आपुनहीं यह सेवा सिखवत सकल रीति अनूप॥ भोग राग शृंगार नानाविध चर्चित दीप ओर धूप॥२॥ सकल धर्म धुरन्धर नरहरि भक्ति निज दृढ यूप॥ चरण अंबुज शिरपर परसत शोधक गृह अंधकूप॥३॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन युगल वपु लीला सदां अनूप॥ नंदनंदन श्रीवल्लभ नंदन एक मन द्वे रूप॥४॥

□ राग देवगंधार □ (१८) प्रकटे सकल कला गुणचंद॥ श्रीवल्लभ अगाध सुत सुंदर श्रीविट्ठल सुखकंद॥१॥ बरखत सुधा प्रवाह कथा हरि पीवत संत सुछंद॥ दासगोपाल चरण रज पावन नृप गयंद गति मंद॥२॥

□ राग देवगंधार □ (१९) भूतल श्रीविट्ठल अवतार॥ पोषकृष्ण नौमी भृगुवासर वेद वदत निरधार॥१॥ पुष्टिभजन रस रीति कहत मुख सेवा कर विस्तार॥ प्रीति अधिक गिरिधरन चंदसों कहत न आवेपार॥२॥ नीलमेघ तन रूप निहारत सेवो वारम्वार॥ श्रीवल्लभ नंदन त्रिभुवन वंदन द्वारिकेश बलिहार॥३॥

□ राग देवगंधार □ (२०) श्रीवल्लभ गृह प्रकट भये श्रीविठ्ठलनाथ हमारे॥ श्रीलक्ष्मण कुलदीप शिरोमणि कलिके पतित उद्धारे॥१॥ नंद नंदन आनंद कंदन जीवन प्राण हमारे॥ मन कर्म वचन किये जू कहतहों बहुत अधम कुलतारे॥२॥ सुभग वार तिथि नौमि शुभदिन व्रजमंगल

पांऊधारे ।। अक्का कुंवर श्रीमाधोके प्रभु सर्वस्व तुमजो हमारे ।।३।।

□ राग देवगंधार □ (२१) श्रीवल्लभ गृह आज बधाई ।। जयजय शब्द होत पुर वीथन घरघर आनंद माई ।।१।। मंगल कनक कलश शुभ मंगल मोतिन चौक पुराई ।। हरद दूब अक्षत दधि रोरी जहां तहांते ले धाई ।।२।। सुरनर मुनिजन कौतुक भूले शुक मुनि कीरति गाई ।। विष्णुदास गिरिधरन श्रीविट्ठल गोकुल प्रकटे आई ।।३।।

□ राग देवगंधार □ (२२) श्री विट्ठलनाथ नयन भर देखे ।। पूरण भये मनोरथ सब कछु निज जन जीये अपेखे ।।१।। श्रीवल्लभ नंदन शरण विना पहिले दिन गये अलेखे ।। दास चतुर्भुज प्रभु गिरिधर तुम करत कृपाजु विसेखे ।।२।।

□ राग कान्हरो □ (२३) जे जन शरण आये ते तारे ।। दीनदयाल प्रकट पुरुषोत्तम श्रीविट्ठलनाथ ललारे ।।१।। जितनी रवि छायाकी कणिका तितने दोष हमारे ।। तुमारे चरण प्रताप तेजतें तेऊ ततछिन टारे ।।२।। माला कंठ तिलक माथें धर शंख चक्र वपु धारे ।। माणिकचंद प्रभुके गुण ऐसे महा पतित निस्तारे ।।३।।

□ राग देवगंधार □ (२४) श्रीवल्लभ नंदनकी बलजाऊं ।। जे गोवर्धन बसत निरंतर गोकुल जाको गाऊँ ।।१।। जे यदुपति मिल बसे द्वारिका मथुरा जिनको ठाऊं ।। जे वृन्दावन केलि करतहें देखत छबि न अघाऊं।।२।। वामन रूप छल्यो बलिराजा ताहि चरण शिरनाऊं ।। छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल कहीयत जाको नाऊं ।।३।।

□ राग देवगंधार □ (२६) अपनकी आपही सेवा करत ।। आपनहीं प्रभु आपुन सेवक अपनो रूप उर धरत ।।१।। आपन नेम धर्म सब जानत मर्यादा अनुसरत ।। छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल भक्त वत्सल वपु धरत ।।२।।

□ राग देवगंधार □ (२७) श्रीवल्लभ गृह होत बधाई अनुदिन मंगलचार।। घर घर आनंद महा महोत्सव वेदनाद झनकार ।।१।। देत अशीश सकल नरनारी वरखत कुसुम अपार ।। नाचत देव करत बंदीजन जयजय शब्दउच्चार ।।२।। श्रीवल्लभ सुत तुम चिरजीयो सब संतन आधार ।। नरनारी सब देखन आईं भर भर कंचनथार ।।३।। नृत्यत आवें हरि यशगावें पुलकित प्रेम अपार ।। जन भगवान जाय बलिहारी जेजे दीनउद्धार ।।४।।

□ राग देवगंधार □ (२८) श्री विट्ठल मंगल रूप निधान ।। कोटि अमृत सम हँस मृदु बोलन सबके जीवन प्राण ।।१।। करुणासिंधु उदार कल्पतरु देत अभय पददान ।। शरन आयेकी लाज चहूंदिश बाजे प्रकट निशान ।।२।। तुमारे चरण कमलके मकरंद मन मधुकर लपटान ।। नंददास प्रभु द्वारें रटतहें रुचत नाहि कछुआन ।।३।।

□ राग देवगंधार □ (२९) अवनितल आनंद उदय भयो ।। पौषमास कृष्णा नवमींकु श्रीविठ्ठल दरश दयो ।।१।। यह अवतार पुष्टिजनकारन निगम पुकार कह्यो ।। प्रकट्यो कल्पवृक्ष श्रीवल्लभगृहे त्रिभुवन छाय रह्यो ।।२।। सदा नंदकी सेवा शिखवत प्रेम समुद्र बह्यो ।। विनु साधन उद्धरे अनेक जन भवदुःख भाज गयो ।।३।। गोविंद प्रभु श्रीविठ्ठल पदरज जो जन उमगि धर्यो ।। शचि पति ईश विरंचि दुर्लभ फल सो सुख लूट लयो ।।४।।

□ राग देवगंधार □ (३०) श्रीगोकुल अति सुख बास बसीजें ।। दिन दिनको मंजन अघ गंजन अति पुनीत जमुना जल पीजें ।।१।। श्रीविठ्ठलेश कुमार बिराजत छिनु छिनु दरशन लीजें ।। माधोदास श्रीवल्लभ सुतपर तन मन धन नोछावरि कीजें ।।२।।

□ राग देवगंधार □ (३१) श्रीवल्लभनंदन आनंद कंद॥ मायावाद निवारन कारन प्रगटे द्विज वृंदावन-चंद॥ भजनानंद निकुंज-निवासी रास बिलासी परम आनंद। 'परमानँद' प्रभु अगनित महिमा पार न पावत है स्तुति-छंद॥

□ राग देवगंधार □ (३२) जगद्‌गुरु श्रीविट्ठलनाथ गुसांई॥ ओर कोउ जो गुसांई कहावत उदर भरन के तांइ॥१॥ शरन आदि जो धरम कहियत सो उनके घर मांही सदा प्रसन्न कृपाके सागर बसत गोकुलमांही॥२॥ मायावाद खंड खंडन कर दिग्विजय तिमिर नसाई॥ सेठ परसोत्तम को दइ कृपा कर चरन कमल रजताई॥३॥

□ राग रामकली □ (३३) सुनोंरी आज नवल बधायोहे॥ श्रीवल्लभ गृह प्रकट भये पुरुषोत्तम जायोहे॥१॥ नयननको फल लेऊ सखी भयो मनको भायोहे॥ गिरिधरलाल फेर प्रगटेहें भाग्यतें पायोहे॥२॥ मणि माला वंदन माला द्वारद्वार बंधायोहे॥ श्रीगोकुलमें घरन घरन प्रति आनंद छायोहे॥३॥ द्विज कुल चंद उदित सब विश्वको तिमिर नसायोहे॥ भक्त चकोर मगन आनंदित हीयो सिरायोहे॥४॥ महाराज श्रीवल्लभजी दान देत मन भायो हे॥ जो जाके मन हुती कामना सो तिन पायो हे॥५॥ जाके भाग्य फले या कलिमें तिन दरशन पायो हे करकरुणा श्रीगोकुल प्रकटे सुखदान दिवायोहे॥६॥ मर्यादा पुष्टि पथ थापनकों आपते आयोहे॥ अब आनंद बधायो हैरी दुख दूर बहायोहे॥७॥ रानी धन्य धन्य भाग्य सुहागभरी जिन गोद खिलायोहे॥ रसिक भाग्यतें प्रकट भये आनंद दरसायोहे॥८॥

□ राग बिलावल चोखंडो □ (३४) पौषकृष्ण नौमी जब आई॥ प्रकटे श्रीविठ्ठलनाथ गुसांई॥ श्रीलक्ष्मणसुत श्रीवल्लभराई॥ सुनतही फूले अंग न माई॥टेक॥ फूले अंग न मांय श्रीवल्लभ लिये द्विजजन बोलकें॥ अति आतुर मन बधाये आये ध्यान मुनिजन खोलकें॥ बहुत आदर किये

सबहिन दीये बहुविध मानजू॥ दास माधो प्रकट भये श्रीगोकुलके भानजू ॥१ ॥ श्रीवल्लभ प्रभु स्नानजू कीनो ॥ आचमन करिकें तिलकजो दीनों ॥ पूजाकी बिधि ठानी ॥ बोलत मुनिजन अमृतबानी ॥टेक ॥ बोलत मुनिजन अमृतबानी गोत्र उच्चारजो कीनों ॥ वेद विधिसों मंत्र पढकें देव पूजन कीनों ॥ सूत मागध मुनी गंधर्व करत प्रमुदित गानजू ॥ दासमाधो प्रभु प्रकटभये श्रीगोकुलके भानजू ॥२ ॥ चंदन भवन लिपाये ॥ आंगन मोतिन चौक पुराये ॥ द्वारन बंदनवार बंधाई ॥ कंचन कलश ध्वजा फेहेराई ॥टेक ॥ कंचन कलश ध्वजा फेहेराई होत जयजयकारजू ॥ व्यास श्रीशुकदेवजी मिल करत वेद विचारजू ॥ सिद्धि शारद नारदादिक करत निर्मल गानजू ॥ दास माधो प्रभु प्रकट भये श्रीगोकुलके भानजू ॥३ ॥ घरघरतें आवत व्रजनारी ॥ अंगअंग नवसत साज श्रृंगारी ॥ हाथन कंचन थार संवारी ॥ मंगल कलश शीशपर धारी ॥ टेक ॥ मंगल कलश जो शीशन लीने गावत मंगल गीतजू ॥ भई आतुर दरश कारन अंतर उपजी प्रीतजू ॥ निरखलाल निहार प्रमुदित बारत तन मन प्रानजू ॥ दास माधो प्रभु प्रकट भये श्रीगोकुलके भानजू ॥४ ॥ दान देत श्रीवल्लभ सबहिन ॥ जेसे पाये काहू न कबहिन ॥ देत अशीश सकल जे आये ॥ मन वांछित फल सबहिन पाये ॥ मनवांछित फल सबहिं पाये करत जयजयकारजू ॥ ध्यान को फल हमही दीनों कृपा करी अपार जू ॥ चले अपने धामकों सब करत बहुत बखानजू ॥ दास माधो प्रभु प्रकट भये श्रीगोकुलके भानजू ॥५ ॥

□ राग बिलावल चोखंडो □ (३५) श्रीविट्ठलकों लाड लडावें ॥ मात महा मन मोद बढावें ॥ प्रात उठत सुतको मुख देखे ॥ जीवन जन्म सुफल कर लेखे ॥छंद ॥ धन्य जीवन लेखहीं मुख देख अपने लालको ॥ प्रेम पुलकित अंग अंगन सुख कहूं तिहिं कालको ॥ मगन मन हरखाय लालहिं लेत छतियां लायकें ॥ परमनिधि मानों रंक जैसें होत प्रमुदित पायकें ॥१ ॥

बारबार हुलरावत ॥ लालहिके गुण निशदिन गावत ॥ बलबल जाऊं लालतो मुखकी ॥ अति आनंद रास मोहि सुखकी ॥छंद ॥ सुखकी रास रसिकन शिरोमणि लाल मेरे प्राण हो ॥ अतुल तेज प्रताप पुलकित परम चतुर सुजानहो ॥ करुणा निधान कृपाल मूरति वेद जाकों गावही ॥ शेष सहस्रानन रटे गुण नेंक पार न पावही ॥२ ॥ न्हानी दतियां मुखसोंहें ॥ बाल केलि त्रिभुवन मन मोहें ॥ कठुला कंठ नासिका मोती ॥ जगमगात मुखचंद लजोती ॥छंद ॥ लजोति अंगन सजे भूषण पाय नूपुर बाजहीं ॥ करत स्तन पान प्रमुदित मात गोद बिराजहीं ॥ ध्यान कर मुनि सकल हारे नेंक ध्यान न पावहीं ॥ पुण्य पूरण भाग्य सबतें मात लियें खिलावहीं ॥३ ॥ राखतहें निजजन पर नेहा ॥ कृष्णारूप नाहि संदेहा ॥ जो लीला कीनी सोई करहें ॥ कलिके जीव सकल निस्तरहें ॥ निस्तारहें कलि जीव सगरे ताही हित द्विज वपु धर्यो ॥ पुष्टि रस दृढ भक्ति भूतल प्रकट श्रीमुखतें कर्यो ॥ होत जयजयकार तिहुंपुर सकल सुख संपति छयो ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन प्रकटे जगतमें आनंद भयो ॥४ ॥

□ राग बिलावल चोखंडो □ (३६) श्रीवल्लभ गृह प्रकट भये ॥ श्रीविठ्ठलनाथ परम उदार पोषकृष्ण नौमींको शुभदिन ॥ श्रीअक्काजी कूंख लियो अवतार ॥छंद ॥ अवतार लीनो ताप मेटे दैवी सुख दिखाईयां ॥ आनंद बाढ्यो दसो दिशमें घर घर बजत बधाईयां ॥ बंदीजन पटभूषन दीने दे आशीश सुहाईयां ॥ श्रीनंदनंदन व्रजचंद प्रकटे श्रीवल्लभ जस गाईयां ॥१ ॥ विमान चढि ब्रह्मा शिव आये ॥ कुसुमनकी बरखा बरखाये ॥ आंगन मोतिन चोक पुराये ॥ द्वारें मंगल कलश धराये ॥छंद ॥ मंगल कलश धराय द्वारें बंदनवार बधाईयां ॥ भई न ऐसी व्हे हे न कबहु जैसी अबनिधि पाईयां ॥ भक्त जनके अर्क उदये मारग रीत बताईयां ॥ श्रीनंदनंदन व्रजचंद प्रकटे श्रीवल्लभ जस गाईयां ॥२ ॥ रस रसिक रसिक शिरोमणी ॥ पार न पावे शेष नारद मुनि ॥ अन्याश्रय जे सब टारे ॥ हतित

पतित जीव उद्धारे ॥छंद॥ उद्धार कीने दैवी जनके आवागमन मिटाईयां॥ अष्टाक्षर उपदेशहीं दे परम पदवी पाईयां॥ सेवाफल बताय जीवकुं ब्रह्मसंबध कराईयां॥ श्रीनंदनंदन व्रजचंद प्रगटे श्रीवल्लभजस गाईयां ॥३॥ माया मतखंडनजु गाई॥ भक्ति मारग मंडन सुखदाई॥ प्रफुल्लित बदन कमल सुखकारी॥ सेवें सदा श्रीगोवर्द्धनधारी ॥छंद॥ सेवें श्रीगिरिवरधारी नित्य प्रति सेवारस विस्तारीयां॥ सातनिधी दई सात बालकन भक्तजन मन भाईयां॥ मनवांछित फल देत सबकुं दासके नित बसो हियां॥ श्रीनंदनंदन व्रजचंद प्रगटे श्रीवल्लभ जस गाईयां ॥४॥

□ राग बिलावल चोखंडो □ (३७) सबगुण पूरण श्रीवल्लभनंदन॥ अंग-अंग शीतल नाना चंदन॥ जाको यश गावत श्रुति छंदन॥ चरण कमल रज मुनिजन वंदन ॥छंद॥ वंदहि मुनि पद कमलरज सोसुरस क्यों करि चाखियें॥ बलि जाऊं श्रीविठ्ठल नाथ तुमारी शरण अपनी राखियें ॥१॥ तुम बिन लागी प्यारे चटपटी॥ देख्यो चाहत पाग लटपटी॥ मृदु मधु मुसकनि पीतपट कटी॥ चपल चितवनि भोंह अटपटी ॥छंद॥ अटपटी भोंहन चपल चितवनि सुनि श्रवनन सुख सोचियें॥ बलि जाउं श्रीवल्लभसुतकी दे दरस विरहजु मोचीयें ॥२॥ तुम गिरिधारी हो व्रजभूषण॥ जनुकुल अंबुज सुखके पूषण॥ बिहसनि बरखत बचन पियुषण॥ नखरुचि निरखत इंदुहि दूषण ॥छंद॥ होत दूषण विधु बहुत विध नख किरनपर वारियें॥ बलिजाउं गोपीनाथ बंधव छिनु न निकटते टारीयें ॥३॥ वृंदवल्लभ अधिक मंडन॥ अरस परस धरि भुजदंडन॥ कुंडल झलकन छबि गंडन॥ मंडन रतिपति मदखंडन॥ खंडना मद मदन रतिको आश ममचित्त पूरिहे॥ विष्णुदास बलि पद्मावति पति महालक्ष्मी जीवन मूरिहे ॥४॥

□ राग बिलावल □ (३८) प्रगटे श्री विठ्ठलनाथजू जग भयो उजियार॥ पौष कृष्ण नौमी दिना प्रभु लियो अवतार ॥१॥ निरखत पूरण चंद्रमा

कुमुदिनी विकसानी ॥ सरिता सिंधु सरोवर भयो उज्वल पानी ॥२ ॥ भक्तन मन आनंद भयो गावें मृदु वानी ॥ चढ विमान सुर देखहीं जयजय सुखदानी ॥३ ॥ गोकुलमें आनंद भयो सब करत कलोलें ॥ नरनारी मिल गावहीं लज्या पट खोलें ॥४ ॥ कलियुगमें द्वापर कियो सब जीव उद्धारे ॥ गुण अवगुण प्रभु नागिने कीये एक सारे ॥५ ॥ सेवारीति दिखायकें निरभय करिडारे ॥ योग यज्ञ जप तप नहीं या कलियुग भारे ॥६ ॥ वहे जात जीव देखकें राखें गहिवांही ॥ कृष्णदास अपनों कियो चरणनकी छांही ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (३९) जबतें श्रीविठ्ठलनाथजू नयनन भर देखे ॥ जन्म सुफल भयो आपनों करी कृपा विशेखे ॥१ ॥ कलियुग जान प्रकट भये करुणा विस्तारी ॥ भजनानंद दिखायकें भक्तन हितकारी ॥२ ॥ सगुण ब्रह्म थापन किये दे श्रुति सब साखी ॥ माणिकचंद प्रभु सर्वदा भक्तन पतिराखी ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (४०) सुखद स्वरूप श्रीविठ्ठलेश राय ॥ वेद वदत पूरण पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ गृह प्रकटे आय ॥१ ॥ लटपटी पाग महारसभीने अति सुंदर वर सहज सुभाय ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल अगणित महिमा वरनी न जाय ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (४१) श्रीवल्लभ नंदन फिर व्हे आये ॥ वेही स्वरूप वेही फिर क्रीडा करत आप मन भाये ॥१ ॥ वे फिर राज करत श्रीगोकुल वेही रीति प्रकटाये ॥ वेही शृंगार भोग छिनछिनके वेही लीला गाये ॥२ ॥ जे यशोमतिकों आनंद दीनों सो फिर व्रज में आये ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर पद पंकज गोविंद उरमें लाये ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (४२) प्रकटे श्रीविठ्ठलगुसांई ॥ पौष मास कृष्ण नौमीके दिन गौकुल बजत बधाई ॥१ ॥मोतिन चौक पुराये सुचित्रित बंदनवार बंधाई ॥ कनक कलश धर कोरन सथिये अभय ध्वजा

फहेराई ॥२ ॥ नाचत नरनारी प्रमुदित मन गावत अति उमगाई ॥ बजत निशान भेरि सहनाई मंगल शब्द सुहाई ॥३ ॥ अति आदर कर मात अक्कांजु सुंदरि सब पहेराई ॥ देत असीस चिरजीयो वल्लव-सुत रसिक सदां बलजाई ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (४३) ठाड़े व्रजजन पोर पोर ॥ पूछत आज कहा अद्‌भुत यह आनंद देखियत ठोर ठोर ॥१ ॥ धेनु वच्छ नग सर वन उपवन द्रुम गहबर कुंज खोरखोर ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर पुन प्रकटे यह सुन निकसी दोर दोर ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (४४) कहत सबनसों आओ आओ ॥ उदित भयो व्रज वृंदाबनको शशि आनंद मंगल गाओ गाओ ॥१ ॥ कंचन पट मणि माणिक भूषण भेट अमोलिक लाओ लाओ ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन प्रगट भये देखनकों तुम जाओ जाओ ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (४५) आंई व्रजवधू झूमझूम ॥ लोक लाजकी सुधि न रही तन अति आनंदित घूमघूम ॥१ ॥ पोढे जहां पालनें प्रीतम रहे झूंमका लूमलूम ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधर छबि निरखत लेत बलैया चूमचूम ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (४६) लाओ गाय सिंगार सिंगार ॥ शिर सोहे मोरनकी पटियां कीने चित्र संवार संवार ॥१ ॥ तांबे पींठ खुर रूपे सींग हेम शृंखला डारडार ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर श्रीवल्लभ देत सबनही बारबार ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (४७) श्रीवल्लभ गृह मंगलचार ॥ पूरण पुरुषोत्तम प्रकटेहें श्रीविठ्ठल अवतार ॥१ ॥ पंचशब्द मिल बाजे बाजत प्रकटे नंददुलार ॥ आवो युवती करो बधाई व्रजलीला विस्तार ॥२ ॥ आंगन मोतिन चौक पुरावो बरत्यो जयजयकार ॥ सगुणदास प्रभु गोकुल जीवन सदा सर्वदा करो विहार ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (४८) श्रीवल्लभ गृह आज बधाई ॥ जयजय शब्द

होत व्रज वीथन घरघर आनंद माई ॥१ ॥ मंगल कलश चली ले भामिनी मोतिन मांग भराई ॥ हरद दूध अक्षत दधि रोरी जहां तहां ते ले धाई ॥२ ॥ सुनसुन मुनिजन कौतुक भूले शुकमुनि कीरति गाई ॥ केशवदास गिरिधरन श्रीविठ्ठल गोकुल प्रकटे आई ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (४९) श्रीवल्लभ गृह बजत बधाई ॥ श्रीविठ्ठल पुरुषोत्तम प्रगटे पुष्टिरूप आनंद निधिपाई ॥१ ॥ पौषकृष्ण पुनीत नौमी तिथि लग्न नक्षत्र परम सुखदाई ॥ द्वारें भीर गणक गुनियनकी मिल मागध मुख करत बडाई ॥२ ॥ घरघर बंदनवार साथिये मणि मुक्ताफल चौक पुराई ॥ बाजे बाजत विचित्र शब्दसों सुर दुंदुभी ध्वनि लगत सुहाई ॥३ ॥ महा मोहकी निशामहामें मायावाद रह्यो चितछाई ॥ तिनके मुख मर्दन कर डारे निज भक्तन ही भक्ति दढ़ाई ॥४ ॥ श्रीविठ्ठल सुखरास चंद्रमा वचनामृत अतिरस वरखाई ॥ भजनानंद देत निज जनकों कृपादृष्टि ते व्रजजन गाई ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (५०) परम मनोहर श्रीगोकुलगाम ॥ प्रकटे श्रीविठ्ठल पुरुषोत्तम पतित पावन बिरूदहे नाम ॥१ ॥ नंदनंदन श्रीवल्लभनंदन श्रुति भागवत भूषण अभिराम ॥ चौदह लोकतें अधिक अधिक छबि नित्य विहार व्रज वैकुंठ धाम ॥२ ॥ आनंद कोटि विमल यश गावत दाता सदां सकल सुखकाम ॥ सगुणदास प्रभु श्रीविठ्ठलके मन कर्म वचन चरण विश्राम ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (५१) श्री विठ्ठलनाथ भूतल प्रगटे फिरि। दैवी जन पर अधिक कृपा करी। भक्तु जनन के भाग्य खुले अब। तनके ताप त्रिविध गये सब ॥ढाल॥ मिट गये तन ताप सब प्रमुदित जीवन सब किये। श्रवन सुन सुन सुजस प्रसर्यो खेंच शरन जे जन लिये। त्रय लोक अधिक प्रताप विस्तृत राख भवतें आगरे। नंददास जे चरन गह रहे श्रीविठ्ठल कृपा करे ॥१ ॥ प्रगटे श्रीविठ्ठलनाथ बहोरे। दैवी जीवनकुं

लागी ठगोरे। बजत ढोलन भेरि बाजे। नवसत साज व्रजवनिता साजे ॥ढाल॥ सज चली नवसत चतुर चंचल मानहुं गजगामनी। उतंग स्वर गावत कोकिल कंठ मधुर धुन अति कामनी। अति कुलाहल करत गई श्रीवल्लभराजे के द्वारही। मंगल गावत करत कुतूहल नंददास भये बावरे ॥२ ॥ यह अवतार धर्यो भूतल में। तैलंग कुल तिलक द्विज वरने। श्रीविट्ठलेश परम सुखकारी प्रगटे सहित वृषभान कुमारी ॥ढाल॥ होय भूतल प्रगट भये सब भक्तजन संग ले। श्री चंद्रावली ललितादि राधा अभय पद को दान दे। हँसि तरनि तनया तीर बिहरत श्रीवल्लभ गोकुल के पति। तिनके सुवन विट्ठलेश प्रकटित नंददास गावत यथामति ॥३ ॥ श्रीवल्लभ सुवन परम पुरुषारथ। दैवी जीवनकुं किये परमारथ। बिनु साधन उद्धार करत जगमें। जो कोऊ आय परत यही मग में ॥ढाल॥ अनुसार मारग धर्म पालत सोई भवसागर तरे। प्रताप तेज जाने नहिं सो अधम अन्ध कूप परे। अति दुर्लभ तें सुलभ कृपा करी अपने शरने लिये। नंददासनिनाथ विट्ठल परम उदार कृपा किये ॥पद॥

□ राग बिलावल □ (५२) देख्यो अद्भुत रूप सखीरी सूर सुताके साथ। विवश भये देख कर सुंदर कटि पर रहि गये दोउ हाथ ॥१ ॥ ताते गौर चित्र शामल तन उपमा कहेत न आवे गाथ। द्वारकेश प्रभु यह विधि देख में तो कर लियो जन्म सनाथ ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (५३) पौषकृष्ण नोंमीको शुभदिन पूत अक्कांजू जायेहो ॥ सुनसुन निजजन सब आनंदे ॥ हरखत करत बधाये हो ॥१ ॥ नारदादि ब्रह्मादिक हरखे शुकमुनि अति सच्चुपाये ॥ श्रीभागवत विवेचन करकें गूढ अर्थ प्रकटाये ॥२ ॥ कलिके जीव उद्धारण कारण द्विज वपु धर भुव आये ॥ अति उदार श्रीलक्ष्मण नंदन देत दानमन भाये ॥३ ॥ करत वेद ध्वनि विप्र महा मुनि ज्ञाति कर्म करवाये ॥ माणिकचंद श्रीविट्ठलप्रभुके विमल विमल यश गाये ॥४ ॥

□ राग आसावरी □ (५४) श्रीमद्वल्लभके घर प्रभुजो फिर अवतार न धरते ।। तो हम सरिके मूढ पतित जन कहो कैसें निस्तरते ।।१ ।। बिन पाये व्रजपति पदपंकज काको सेवा करते ।। श्रीगिरिधरन राधिका वर बिन रसना कहा उच्चरते ।।२ ।। शिव सुरेश दिनमणि गणेशके होय कनोंडे डरते ।। अति आतुर पुन अर्क तूलसे सबनके पांयन परते ।।३ ।। जबहमहूं लोगनकी न्याईं घरघर भटकत फिरते ।। कर्म योग पुन ज्ञान उपासन इनहीमें पचिमरते ।।४ ।। कहा भयो निज बिरदजानकें पतित जान उद्धरते ।। रुचिर रूप बल दास नारायण तृषित नयन क्यों ठरते ।।५ ।।

□ राग आसावरी □ (५५) व्रजमें बाजत आज बधाई ।। प्रकट भये भूतल श्रीविठ्ठल गोकुल पति सुखदाई ।।१ ।। प्रफुल्लित भये सकल दैवीजन मनहु रंक निधि पाई ।। भक्ति कल्पतरुकी सब शाखा नव अंकुरित बनाई ।।२ ।। गृहगृह तोरण ध्वजा पताका मंगलचार सुनाई ।। सुनत श्रवण आनंद भयो अति गिरिधरकेलि कराई ।।३ ।।

□ राग आसावरी □ (५६) देखदेख में श्रीवल्लभ त्रिविध ताप हारी ।। श्रीविठ्ठलेश प्रकट भये लीला अवतारी ।।१ ।। श्रीगिरिधर गोविंदराय भक्तजन सुखकारी ।। श्रीबालकृष्ण आनंद रूप परम मंगल चारी ।।२ ।। श्रीगोकुलेश वल्लभकुल तिलक मध्यधारी ।। श्रीरघुनाथ यदुनाथ बिराजत कोटि काम वारी ।।३ ।। श्रीघनश्याम रूप अनुप व्रजके हितकारी ।। यह लीलाको कोउ पार न पावत मुकुन्ददास बलहारी ।।४ ।।

□ राग आसावरी □ (५७) याचकजन जुर गावें सिंघद्वार ।। प्रकटभये श्रीवल्लभ कुल विठ्ठल प्रभु पूरण अवतार ।।१ ।। मधुर मृदंग और झांझ झमक मिल बाजत बहु विध तार ।। बिच सहनाई रस बरखत मानो ढोल ढमक मनहार ।।२ ।। कुंकुम रंग ओर अक्षत फल सुंदरी साज शृंगार ।। देत बधाई सुनत परम रुचि गावत मंगलचार ।।३ ।। नंदरायकें खेल कियो जिन युवती युथ बिहार ।। सो व्रजमंडल धरे ललित वपु वल्लभ

राजकुमार ।।४।। श्रीलक्ष्मण नंदन मुदित दान जल बरष अखंडित धार ।। हरित फूले फल फूल बंदीजन पाये रत्न भंडार ।।५।। फूले श्रीवृन्दावन तरुवर फूले खग परिवार ।। सुन कीरति ध्वनि उमडउमडकें आपही करत केवार ।।६।। नगवर फूले श्रवण अमीरस फूली तरुणि दुलार ।। माणिकचंदसों फूले निज जन निरख उदधि सुखसार ।।७।।

□ राग आसावरी □ (५८) श्रीवल्लभ गृह आज बधाई व्रज वधू गावत आईंहो ।। श्रीविठ्ठल प्रभु प्रकट भये सुन अति आतुर उठि धाईं हो ।।१ ।। कनक बरण आभूषण साजे मंगलथार भराईहो ।। दधि अक्षत फल पाहोपमाल ओर रोरी दूब धराई ।।२ ।। मगनभई नाचत गावत सब लोक लाज गमाई ।। देत वार तन मन धन सर्वस्व जयजय ध्वनि उपजाई ।।३ ।। मंगल कलश विराजत द्वारें विप्र वेदध्वनि लाई ।। मागध सूत बंदीजन याचक शुभ आशीश सुनाई ।।४ ।। श्रीवल्लभ मन मोद बढ्यो अति फूले अंग न माई ।। श्रीविठ्ठल गिरिधरन भये फिर गोकुल प्रकटे आई ।।५ ।।

□ राग आसावरी □ (५९) आज मंगल व्रज मंडल मध्य अद्भूत आनंद ।। प्रकटे श्रीविठ्ठलेश लीला रसकंद ।।१ ।। कस्तूरी तिलक ललित भाल रचित मन्द ।। तात निरख हियें प्रथम भावफंद ।।२ ।। आवत नित्य गावत गुण त्रिदश रूपछन्द ।। देखें मुख पावत सुख मिटे दुखद्वन्द ।।३ ।। पुष्टि पंथ सिंघसों विदारि महा मायिक मत्त गयंद ।। कृष्ण भजन स्वजन हृदय थापे नंदनंद ।।४ ।। विधि शंकर ध्यान धरें पदयुग अरविंद ।। द्वारकेश अनुचरकों दीजे मकरंद ।।५ ।।

□ राग आसावरी □ (६०) जुरि चलीहें बधायें श्रीवल्लभ गृह प्रकटे श्रीविठ्ठलराय ।। पूरन पुरुषोत्तम आनंदनिधि श्रीगोकुल सुखदाय ।।१ ।। चंदन शीतल द्वार धरत गजमोतिन चौक पुराये ।। आंगन भवन अवास अवनिपर गोमय हरद लिपाये ।।२ ।। चित्र विचित्र रचि रचि मंदिर बंदनवार बंधाई ।। भेरि मृदंग ताल धुनि बाजत श्रवन सुतन सहेनाई ।।३ ।।

मागध सूत भीर बंदीजन आंगन भवन भराई ॥ गोपी ग्वाल बाल सब व्रजजन झुंडन झुंडन आई ॥४ ॥ मंगल कलश लियें व्रजसुन्दरी आरती साज बनाई ॥ नाचत गावत आनंद बढावत देत अशीश मनभाई ॥५ ॥ मगन भई तन मन धन वारत निज तन सुधि न रहाई ॥ हरद दूब अक्षत दधि कुंकुम सबनके शीश धराई ॥६ ॥ सब मिलि छिरकत रंग परस्पर गोरस कीच मचाई ॥ धन्य दिवस धन्य रेन वार तिथि लग्न नक्षत्र निकराई ॥७ ॥ धन्य श्रीगोकुल गाम ठाम व्रज यमुना पुलिन वसाई ॥ पौषमास कृष्ण नौमी तिथि प्रगटे श्रीगोकुलराई ॥८ ॥ पंदरसें बहतर संवत्सर पत्री जन्म लिखाई ॥ वल्लभकुल धनि प्रगट भये श्रीविठ्ठलनाथ गुसांई ॥९ ॥ धन्य सुहाग भाग्य परिपूरन कुखिजू शुभ अक्काई ॥ जिनजायो श्रीगोकुलकेपति व्रजकी तपत बुझाई ॥१० ॥ बहेजात वसुधा भवसागर करगहि पार लगाई ॥ द्वापर वसुधा भार हर्यो हरि मिल मानो सुरराई ॥११ ॥ द्विज कुल प्रकटे कलिमल खंडन नाना वाद मिटाई ॥ विष्णुस्वामि पथ प्रगटे अलिकर पुष्टि मर्यादा चलाई ॥१२ ॥ तिलक भाल उरमाल पाल प्रति भगवान भाव दृढाई ॥ गोपीजन हरखत उर आनंद पूरन प्रीति जनाई ॥१३ ॥ रास बिलास यह सुखसो रचिके चित हित रुचि उपजाई ॥ पुरुषोत्तम पूरन नववपु धरि लीला ललित दिखाई ॥१४ ॥ रसिक शिरोमणि श्रीवल्लभसुत जन्म जन्म जसगाई ॥१५ ॥

□ राग आसावरी □ (६१) आज महा संभ्रम या व्रजमें व्रजवधु फूली फिरतरी ॥ प्रकटभये निजनाथ जानि उर आनंद करतहें तुरतरी ॥१ ॥ लेले भेट निकस गृहगृहतें दूध दही मधु घृतरी ॥ अति आतुर सुधि रही न कछु तन कुसुम शीशतें खसतरी ॥२ ॥ निरमोलिक आभूषण अंबर वरण वरण बहुभांत ॥ पहरपहर आईं झुंडनमानों लाल मुनिनकी पांत ॥३ ॥ नाचत गावत करत कुलाहल आनंद उर न समाई ॥ यह बिध आय जुरे सिंघद्वारें शोभा कही न जाई ॥४ ॥ बेगबुलाय लई अन्तरगृह रानी अक्कांजू माईं ॥

निरखलाल आनंद भयो उर मनकी आस पुजाई ॥५ ॥ कोऊ निरख मुख लेत बलैया कोउ मनमें हँसजाई ॥ कोऊ वारत मणि मोतिनमाला कोऊ निरख मुसकाई ॥६ ॥ मणि माणिक कंचनके भूषण सारी सुरंग अमोल ॥ देत सबनकों अति आदरकर आनंद हृदय कलोल ॥७ ॥ चिरजीयो युग-युग यह बालक कहत सबे मृदुबोल ॥ देत अशीश चली निज गृहकों निरखत नयन सलोल ॥८ ॥ द्वारें भीर बहुत याचककी करत विमल यशगान ॥ छंद भेद राग युवतिनसों लेत मगन मन तान ॥९ ॥ श्रीवल्लभ प्रभु अति आनंदित कियो सबन सनमान ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन प्रकट भये भक्तन जीवन प्राण ॥१० ॥

□ राग आसावरी □ (६२) हों याचक श्रीवल्लभ तुम्हारो याचन तुमकों आयोहो ॥ महा उदार देत सबहिनकों यह सुनकें उठिधायो ॥१ ॥ भूषण वसन ग्राम सुख संपत्ति सो हम याचत नाहीं ॥ द्वारें पर्यो रहुं सेवन कर चरण छत्रकी छांहीं ॥२ ॥ जो जिन याच्यो सो तिनपायो पूरी मनकी आशा ॥ पुत्र भयो श्रीवल्लभ प्रभुकें मिटे सकल कलित्रासा ॥३ ॥ जन्म कृतारथ करों निरंतर निजजन दास कहाऊँ ॥ मदनमोहन लावण्य सिंधुकों देखत मन न अघाऊँ ॥४ ॥ चरण कमल नित्य सांत्वन करकर सुफल करों निज देह ॥ तुम गुण छंद वृन्दसों राखों अधिक सनेह ॥५ ॥ मन प्रसन्न गिरिधरकी सेवा दीजे परम दयाल ॥ तुम्हारे श्रीमुख वचन सुननकों कीजे मनहि मराल ॥६ ॥

□ राग आसावरी □ (६३) प्रकटे रसिक श्रीविठ्ठलराय ॥ भक्तन हित अवतार लीनो बहुरि व्रजमें आय ॥१ ॥ शिव ब्रह्मादिक ध्यान धरतहें निगम जाकों गाय ॥ शेष सहस्त्र मुख रटत रसना यश न बरन्यो जाय ॥२ ॥ पीत पट कटि काछनी कर मुरली मधुर बजाय ॥ मोर चंद्रिका मुकुट मस्तक भाल तिलक बनाय ॥३ ॥ मकर कुंडल गंड मंडित देख मदन लजांय ॥ ग्वालनीके संग विलसत रासमंडल मांय ॥४ ॥ अंग अंग अनंग

सुंदर कहूं कहा बनाय ॥ प्राणपतिकी निरख शोभा चतुर्भुज बलजाय ॥५ ॥

□ राग आसावरी □ (६४) अक्काजू एसो सुत जायो सबहिन के मन भायो हो। श्रीमद्वल्लभ अतिआनंदित दान देत मनभायो हो ॥१ ॥ द्वारे बंदनवार बंधाई मोतिन चोक पुरायो हो। वाजत ताल मृदंग झांझ अरु बीना नाद सुहायो हो ॥२ ॥ विप्र सबे मिलि करत बेदधुनि लागत परम सुहायो हो। सुभघरी लग्न नक्षत्र सोधके श्रीविट्ठल नाम धरायो हो ॥३ ॥ बंदीजन और भिक्षुक सुनि सुनि गृह गृह ते उठि धाये हो। कीरति यस बोलत सब मूरति दिन दिन बढत सवायो हो ॥४ ॥ सुक मुनि नारदादि ब्रह्मादिक जाको पार न पायो हो। सो श्रीमद्वल्लभ अक्काजू आपनी गोद खिलायो हो ॥५ ॥ श्रीमुख सरदचंद्रमा निर्मल लागत परम सुहायो हो। श्रीगिरिवरधर हरखि निरखि के महा परमसुख पायो हो ॥६ ॥

□ राग आसावरी □ (६५) देखहो देख श्रीवल्लभाधीशके सुवन प्रगटे गोत्रनाथ हरखे। सुनत श्रवनन तिहुंलोक आनंद भयो बजे दुंदुभि देव कुसुम वरखे ॥१ ॥ विरह संयोग करि मूरति अलौकिक सिंगार कल्पतरु रूप सरखे। दुःसंग दोषको प्राबल्य टारिके कृष्णसन्मुख दैवी जीव करखे ॥२ ॥ कोंप यमराज निज भृत्यसों यों कह्यो ढिग जाउ तो तुम्हे न रखे। श्रीविठ्ठलनाथ भजनको मूल यह ओर तमीये द्वारकेस परखे ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (६६) आज भुव मंडल मध्य अद्भुत आनंद। प्रकटे श्रीविठ्ठलेश लीला रस कंद ॥१ ॥ कस्तूरी तिलक ललित भाल रचित मंद। तात निरखि हरख हिये प्रथम भाव फंद ॥२ ॥ आवत निज गावत गुन त्रिदलरूप छंद। देखे मुख पावत सुख मिटे दुःख द्वन्द्व ॥३ ॥ पुष्टिपथ सिंहसों विदारि मत्त गयंद। कृष्ण भजन स्वजन हृदे थापे नंदनंद ॥४ ॥ या विध संकर ध्यान धरे पदजुग अरविंद। द्वारकेस प्रभु अनुचरको दीजे मकरंद ॥५ ॥

□ राग धनाश्री □ (६७) आज बधाई श्रीवल्लभद्वार ॥ पौषमास वदि नौंमी शुभदिन श्रीविठ्ठल अवतार ॥१ ॥ ज्ञान रहित जीवन हित कारण नाम विवेक विचार ॥ यह जान सुंदर मधुराकृत मूरति परम उदार ॥२ ॥ भूतल भाग्य हमारे उघरे मायिक मत निस्तार ॥ ब्रह्मवाद कलि कल्पवृक्षकी फिर उलही सबडार ॥३ ॥ प्रेम समुद्र भक्ति मारगको उमग्यो ताहीवार ॥ याहीतें द्विजराज कहाये श्रीगिरिधर साकार ॥४ ॥

□ राग धनाश्री □ (६८) श्रीविठ्ठलेश प्रभु भये न व्हैहें ॥ पाछे सुने न आगे देखें फिर यह छबि न बनेहें ॥१ ॥ मनुष्य देह धर भक्तनहित कलि काल जन्म को लेहें ॥ को कृतज्ञ करुणा सेवक तन कृपा सुदृष्टि चितेहें ॥२ ॥ को कर कमल सीसनपर धर अधमन वैकुंठ पठेहें ॥ भूषण वसन गोपाल लालके कोन श्रृंगार सिखेंहे ॥३ ॥ को आरती वारति श्रीमुख पर आनंद प्रेम बढेहें ॥ चतुर्भुजदास आस इतनी इन सुमरत जन्म सिरेहें ॥४ ॥

□ राग धनाश्री □ (६९) श्रीवल्लभकें आनंद भयो प्रकट भये श्रीविठ्ठलनाथ ॥ आनंदे व्रजबासी सकल गुण भक्त मित्र मिल गावहिं साथ ॥ आनंदे त्रैलोक अमरगण पुष्प वृष्टि करें अनुसार ॥ आनंदे गोवर्धन गिरिधर कृष्णदास कीनो बलिहार ॥२ ॥

□ राग धनाश्री □ (७०) दानदेंनकों श्रीवल्लभ प्रभु बोल बोल सबहिनकों लेत ॥ मणि माणिक गहनो पट भूषण मन वांछित फल सबहिन देत ॥१ ॥ बहोर्यो गोकुल द्विज वपु धार्यो प्रकट भये निजजनके हेत ॥ दास गोपाल आजतें सब व्रज प्रेम पुंजको बांध्यो सेत ॥२ ॥

□ राग धनाश्री □ (७१) श्री विठ्ठलजूके दरशन देखत होत परमसुख आनंद ॥ प्रकट भये संतनहित कारण सकल कला वृन्दावन चंद ॥१ ॥ परम उदार कृपाल कृपानिधि रसिक शिरोमणि आनंदकंद ॥ कृष्णदास बलबल प्रतापकी यश गावत मुनि नौतन छंद ॥२ ॥

□ राग धनाश्री □ (७२) यह कलि परम सुभग जन धन्य श्रीविठ्ठलनाथ

उपासी ॥ जो प्रकटे व्रजपति श्रीविठ्ठल तो सेवक व्रजवासी ॥१ ॥ व्रजलीला भूल्यो चतुरानन व्रत टार्यो बलरासी ॥ अबलों शठ नही गिनत अभागे करत परस्पर हाँसी ॥२ ॥ आत्मा सहित आपभये हित अन्तर दियो प्रकाशी ॥ देखियत लोक समाज अलौकिक ज्यों गंगा सरितासी ॥३ ॥ घर हरि सदन सदां यश गावत भक्ति मुक्तिसी दासी ॥ वदत न कछू भीम अब वैभव भजनानंद उपासी ॥४ ॥

□ राग धनाश्री □ (७३) बधाई श्रीलक्ष्मणराजकुमार। तुम्हारे कुल मंडन श्रीविठ्ठल सौरभको नहि पार ॥१ ॥ पोष मास नौमी प्रगटे भुव लीनो अवतार। गुनी जन जस गावत आवत हे होत हे जेजेकार ॥२ ॥ फूले महाप्रभु श्रीवल्लभ गावत मंगल चार। व्रजजन मन उल्लास सबनके गोविंद जन बलहार ॥३ ॥

□ राग धनाश्री □ (७४) श्रीवल्लभ गृह आयो आज बधायो श्रीवल्लभ गृह आयो। बाजत ढोल दमामा भेरी धन्य श्रीअक्काजू बालक जायो ॥१ ॥ धन्य श्रीभागवत येही निरखेंगे सुक मुनि ब्यास परम सुख पायो। धन्य श्रीगोवर्धन धन्य श्री यमुनातट अबके श्रीगोकुल सुबस बसायो ॥२ ॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजीयो लाल भक्तन मन भायो। फूलि फिरे व्रजजन निरखि महातम भीमदास तहां नाच्यो गायो ॥३ ॥

□ राग धनाश्री □ (७५) श्रीवल्लभ गृह आज बधाइयां। श्रवन सुनत व्रजबधू उमगिके झूंडन झूंडन आइयां ॥१ ॥ नाचत गावत करत कुलाहल मंगल थार सजाइयां। कनककलस सीसन पर लीने फूली अंग न समाइयां ॥२ ॥ कुंकुंम अच्छत दूब और श्रीफल बहुबिध साजबनाइयां। दूध दहीं माखन और दधि घृत भरभर दुंदुभी नाद कराइयां। मदन भेरि महुवर सहनाई झमक झमक जु आइयां ॥४ ॥ श्रीलक्ष्मण सुत अति आनंदित नरनारी पहिराइयां। देत असीस जुगजुग चिरजीयो दास रसिक बल जाइयां ॥५ ॥

□ राग टोडी □ (७६) हेली रस मय श्रीवल्लभ सुत प्रकट भये आज॥ अंग अंग द्युति तरंग मधुरावलि केलि प्रसंग दृग विशाल भ्रोंह भाल कमनीय साज॥१॥ लीला अमृत रसाल प्रेम भक्तिके प्रतिपाल स्मरण करें निहाल भावकी बांधे पाज॥ पद्मनाभ वागधीश कुंवर केलि कल अखिल अवगाहत प्रेमसिंधु व्रजजन शिरताज॥२॥

□ राग टोडी □ (७७) चतुराई ताकी सांचीजो श्रीवल्लभ नंदनजूको स्मरण करे॥ सो जन निकट रहो के दूरे रसना श्रीविट्ठलेशधरे॥१॥ सेवा करे के न करे मन कर्म बचन इनहींके चरण कमल अनुसरे॥ चतुरविहारी जू कहे एसो सेवक मेरे हृदयतें कबहुं न टरे॥२॥

□ राग टोडी □ (७८) श्रीवल्लभकें आज बधाईयाँ॥ श्रवण सुनत व्रजवधू उमंगके झुंडनझुंडन आईयां॥१॥ नाचत गावत करत कुलाहल मंगलथार सुहाईयां॥ कनक कलश शीशनपर लीने फूली उर न समाईयां॥२॥ कुंकुम अक्षत दूब और श्रीफल बहुविध साज बनाईयां॥ दूध दही माखन और मधु घृत भरभर कलश ले आईयां॥३॥ ताल मृदंग झांझ डफ वीनां दुंदुभी नाद कराईयां॥ मदन भेरि महुवर सहनाई उमगउमगजु बजाईयां॥४॥ श्रीलक्ष्मणसुत अति आनंदित नरनारी पहेराईयां॥ दे अशीश युगयुग चिरजीवो दास रसिक बलजाईयां॥५॥

□ राग सारंग □ (७९) पौष निर्दोष सुख कोश सुंदरमास कृष्णनौमी सुभग नवघरी दिन आज॥ श्रीवल्लभ सदन प्रकट गिरिवर धरन चारु विधु बदन छबि श्रीविट्ठलराज॥१॥ भीर मागध भई पढत मुनिजन वेद ग्वाल गावत नवल बसन भूषण साज॥ हरद केसर दही कीचको पार नही मानो सरिता वही नीर निर्झर बाज॥२॥ घोष आनंद त्रिय वृंद मंगल गावें बजत निर्घोष रस पुंज कल मृदुगाज॥ विष्णुदास श्रीहरि प्रकट द्विजरूप धर निगम पथ दृढथाप भक्त पोषण काज॥३॥

□ राग सारंग □ (८०) चक्षुमुनि तत्वविधु असित निधि याम गुण समय प्रगट वल्लभ तनुज॥ धन्य चरणाट धन्य धन्य दैवी भाग्य सकल सौभाग्य

बिराजत गोपीश अनुज ॥१ ॥ लग्न वृष मिथुन गुरु सहज गति राहु चंद्र पंचम सुत स्थान राजे ॥ भौम कवि मंद दधि भानु बुध युक्त वसु धर्म गृह केतु संकेत छाजे ॥२ ॥ हस्त शोभन योग करण तैतिल धरण वरण नीरद अंग रूप सोहें ॥ द्वारकेशाधिपति श्रीविठ्ठलाधीश प्रभु नंदसुत प्रीतिकों और कोहें ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८१) जयति रुक्मिणी नाथ पद्मावती प्राणपति विप्रकुल छत्र आनंदकारी ॥ दीप वल्लभ वंश जगत निस्तम करन कोटी उडुराज सम तापहारी ॥१ ॥ जयति भक्तजन पति पतित पावन करन कामीजन कामना पूरनचारी ॥ मुक्ति कांक्षीय जन भक्तिदायक प्रभु सकल सामर्थ्य गुण गणन भारी ॥२ ॥ जयति सकल तीरथ फलित नाम स्मरण मात्र बास व्रज नित्य गोकुल बिहारी ॥ नंददास निनाथ पिता गिरिधर आदि प्रकट अवतार गिरिराजधारी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८२) दक्षण गति तरण अति सुखद हेमंत ऋतु पौष शुभ मास मध्य पक्ष अंध्यारो ॥ द्योस नौमी युगल याम गत वृष लग्न वार भृगु योग शुभहस्त तारो ॥१ ॥ धन भुवन देव गुरु सहज बैठ्यो राहु सुभग सुत भवन मध्य वारनिधि वारो ॥ शुक्र शनि भौमजाहमित्र तनु पुष्टिकरि भानु युत बुध वसु ग्रहसारो ॥२ ॥ धर्मको केतु यह हेतु सुखदेतहे तरण भव जलधिको सेतभारो ॥ भक्त दुख दमन द्विजराज वल्लभ सुवन प्रकट व्रजईश यशुमति दुलारो ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८३) जयति श्रीवल्लभ सुवन श्रुति उद्धार फेर नंदके भवनकी केलठानी ॥ इष्ट गिरिवरधरन सदा सेवत चरन द्वार चारों बरन भरत पानी ॥१ ॥ वेदपथ व्याससे हनुमानदाससे ज्ञानकों कपिलसे कर्मयोगी ॥ साधुलक्ष्मन निपुन मनहु व्रजराज सुत प्रकट सुखरास मानो इन्द्र भोगी ॥२ ॥ सिंधुसम गंभीर विमल मन अति धीर प्रीतिको जल क्षीर व्रज उपासी ॥ ध्यानकों सनकसे भक्तकों फनिगसे याहीते सद्यकिये व्रजमें

बासी ॥३ ॥ मनहु इन्द्रियजीति कृष्णसों करी प्रीति निगमकी चाल नित्य अति विशेखी ॥ रहित अभिमानते बडे सन्मानते शील और दाम गोविन्द टेकी ॥४ ॥ सदा निर्मलबुद्धि अष्ट सिद्धि नवविधि द्वारसेवत तहां मुक्तिदासी ॥ रामराय गिरिधरन जान आयो शरन दीनके दुखहरन घोषवासी ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (८४) वंदुं मृदु चरनयुग लाल गिरधरनके सरन दृढ करनकों प्रगट वल्लभ सुवन ॥ धर्मरक्षक काज सुभग द्विज तनु साज करनकों विस्तार विश्वकीनों अवन ॥१ ॥ जीत मायावाद दृढ कीयो श्रुतिनाद स्वादवानी विसदसार सुख भरी भवन ॥ भजनपथ भानु अज्ञान ब्रह्म तिमिर हरन जननि रस अंकुरित श्रीय रुक्मनिरमन ॥२ ॥ पुरुष भूषन अंग नित्य नौतन रंग आनंद लहरि क्षम मोक्ष सुखदुख दवन ॥ श्रीविठ्ठलनाथ पदकमल रज परसिकें दास गोपाल बलि जाय जाचक वदन ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८५) अग्नि कुल प्रकट श्रीविठ्ठलाधीश्वर पुष्टिमार्ग सुगम जिन दिखायो ॥ भाव भावित सकल गोपिका प्रकटभुवि ताहिको हेतु जिन श्रुतिन गायो ॥१ ॥ नित्य लीला ललित गोकुलाधीशकी आप सेवा विविधकर बतायो ॥ स्वीयजन हेत अज्ञान हारक सबन कपट पट दूर कर सुकृतलायो ॥२ ॥ शास्त्र श्रुति स्मृतिनमें कहि कह्यो सार यह नंदगृह प्रकट जिय सबन भायो ॥ तेई अब वल्लभाधीश पथ प्रकटकों सरस रंगी सबे रंग छायो ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८६) केसरकी धोती कटि केसरी उपरना ओढें तिलक मुद्रा धर ठाडे मंदिर गिरिधरकें ॥ दोऊजनकी प्रीति कछू काहूपें न कही जात उत नंदनंदन इत वल्लभ वरकें ॥१ ॥ करकें शृंगार आज लाडिले गोपालजूको लेतहें बलाय वारवार दोउकरकें ॥ बेउ मुसिकात जात फूले न समात गात कहें हरिदास में निहारे दृगभरकें ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (८७) केसरकी धोती कटि केसरी उपरना ओढें केसरको तिलक भाल मुद्रा मध्य सोहें ॥ श्रवणन मणि मुक्ता धरें कोटिमदन मानहरें मुकुलित शिर केश देख कोहे जो न मोहें ॥१ ॥ श्रीवल्लभ सुत सुजान उपमाकों नाहि आन नखशिख गिरिधरन रूप देखेही बनि आवें ॥ सुंदरताई निकाई तेज प्रताप अतुलताई नंदनंदन विठ्ठलेश एकही कहावें ॥२ ॥ अपने कर करि शृंगार देखरी छबीलो लाल ठाडे निजमंदिरमें निरांजन वारें ॥ घंटा तालझालरि बाजे जयजयजय शब्द गाजे अपनपो हरिदास बारबार डारें ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८८) रेशमकी धोती पहरें रेशमी उपरनां ओढें तिलक मुद्रा धरि बैठे आभूषण राजे ॥ पुत्रमैया संग बिराजें कुंकुमको तिलक भ्राजें श्रीफल बीरा दक्षिणभाग आरती मंगल साजें ॥१ ॥ संवत पंद्रहसें बहत्तर पौष कृष्ण नौमि शुभ तारा हस्त वार बुध आनंद योग भ्राजें ॥ भक्त सबन सुखदीनों विप्रकों दक्षिणा दीनों द्वारकेश यश गावे बाजे बहुबाजें ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (८९) जे वसुदेव किये पूरण तप सो फलफलित श्रीवल्लभ देह ॥ जे गोपाल हुते गोकुल में ते अब आन बसे करगेह ॥१ ॥ जे वे गोप वधूही व्रजमें सो अब वेदऋचा भईजेह ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल तेई एई एई तेई कछु न संदेह ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (९०) गो वल्लभ गोवर्द्धन वल्लभ श्रीवल्लभ गुण गिने न जांई ॥ भुवकी रेणु तरैंया नभकी घन की बूंदें परत लखांई ॥१ ॥ जिनके चरण कमल रज वंदित संतत होत सदा चितचांई ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल नंदनंदकी सब परछांई ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (९१) गायनसों रति गोकुलसों रति गोवर्द्धनसों प्रीति निवाहीं ॥ श्रीगोपाल चरण सेवारति गोप सखा सब अमित अथाईं ॥ गोवाणी जो वेदकी कहियत श्री भागवत भलें अवगाहीं ॥ छीतस्वामी

गिरिधरन श्रीविठ्ठल नंदनंदकी सबपरछांई ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (९२) श्रीवल्लभ नंदन रूप अनूप स्वरूप कह्यो न जाई ॥ प्रकट परमानंद गोकुल बसतहें सब जगतके सुखदाई ॥१ ॥ भक्ति मुक्ति देत सबनकों निजजनकों कृपा प्रेम वरखत अधिकाई ॥ सुखद एक रसना कहांलों वरनों गोविंद बलबलजाई ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (९३) श्रीलक्ष्मण सुतकें सुतजायो मंगलचार बधाई बाजत ॥ दुंदुभी भेरि ढोल सहनाई वीणा वेणु मधुर अति राजत ॥१ ॥ यह सुन देव कुसुम बरखावत व्योम विमान भीर भई छाजत ॥ जयजय शब्द होत पुर वीथन मानों सिंह गुंजारत गाजत ॥२ ॥ थापे देत द्वार द्वारन प्रति केसर हरद दूब दधि राजत ॥ श्रीविठ्ठलको जन्म भयो सुन दुःख संताप दूर भय भाजत ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (९४) श्रीवल्लभ गृह द्वार बधाई बाजत आज सुहाई ॥ भक्तनके हित कारण प्रकटे श्रीविठ्ठल सुखदाई ॥१ ॥ कंचनथार लियें व्रजसुंदरि गृहगृहतें सब आईं ॥ तिलक करत आरती उतारत पुनपुन लेत बलाईं ॥२ ॥ सहज तिलक मृगमदको देखियत दृग अंबुज न अघाईं ॥ गूढभाव अंतरको जानत रही सकल मुसिकाईं ॥३ ॥ कहिये कहा कहत नहि आवे शोभाकी अधिकाई ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरके प्रतिनिधि भाग्यन दईहे दिखाई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (९५) पुत्रभयो श्रीवल्लभके गृह जयजयकार भयो भू ऊपर ॥ श्रीविठ्ठल यह नाम सुनतही मिटे मूढ जीवनके जियडर ॥१ ॥ मृगमद तिलक भाल धर प्रकटे दूर किये मनके संदेह ॥ हरि अवतार स्वरूप दिखायो लीला फेर करी निजगेह ॥२ ॥ तब मारी पूतना अविद्या अब निज जनकी दूर करी ॥ तब मार्यो बक दंभ हन्यो अब पाखंडनको लेश हरी ॥३ ॥ तब काली अध्यास एकको दर्पदलन कीनों नृत्यन कर ॥ वही फेर अब चार रूपकों दूर किये करुणा भक्तनपर ॥४ ॥ तब रस

रसिक रास मंडलमें व्रजनारी अंगीकृत कीनी ॥ चार बरनकी अब नारिनकों हरीकी रीति सेवा ले दीनी ॥५ ॥ दावानलतें सखा बचाये सोच अनलतें अब टारे ॥ तब गिरिधर राखे व्रजवासी अब सिरउपर कर धर तारे ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (९६) व्रजमें श्रीविठ्ठलनाथ बिराजें ॥ जिनको परम मनोहर श्रीमुख देखत ही अघभाजें ॥१ ॥ जिनके पद प्रताप तेजतें सेवक जन सब गाजें ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल प्रकट भक्त हित काजें ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (९७) श्रीगोकुलमें आनंद भयो घरघर बजत बधाई ॥ श्रीवल्लभ गृह प्रकट भयेहें श्रीविठ्ठल सुखदाई ॥१ ॥ सबमिल संग चलो तुम मेरे जो भावे सो लीजे ॥ भये मनोरथ मनके भाये अपनों चीत्यो कीजे ॥२ ॥ उदय भयो गोकुलको चंद्रमा पूजी मनकी आशा ॥ भक्तन मन आनंद भयो दुख द्वंद भये सबनाशा ॥३ ॥ देशदेशतें भिक्षुक गुणिजन रहसि बधायो गायो ॥ एक नाचत एक करत कुलाहल जो माग्यो सो पायो ॥४ ॥ काहेकों विलंब करतहो भैया बेग चलो उठधाई ॥ श्रीवल्लभसुतको दरशन देखो जन्मजन्म सुखदाई ॥५ ॥अष्टसिद्धि नवनिधि लक्ष्मी ठाडी रहतहें द्वारें ॥ ताकी ओर दृष्टि हू भरकें कोऊ नाहिं निहारें ॥६ ॥ श्रीवल्लभ करुणामय सागर बांह पकरकें लीने ॥ कृष्णदास ढाढी अपनेकों अभय पदारथ दीने ॥

□ राग सारंग □ (९८) कलिमें एक बडो आधार ॥ श्रीवल्लभ गृह श्रीविठ्ठल प्रभु आनलियो अवतार ॥१ ॥ पूरण ब्रह्म श्रीकृष्ण बिराजत खेलत आंगनद्वार ॥ माधव चरण शरण जे आये ते उतरे भवपार ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (९९) प्रकटे श्री वल्लभ राजकुमार ॥ श्रीगिरिधरन हरन बहुविध दुख करत जगत उद्धार ॥१ ॥ श्रीवल्लभ गृह महा महोत्सव बांधी बंदनवार ॥ नवसत साज श्रृंगार नार मिल गावत मंगलचार ॥२ ॥ आज

बधाईको दिन मंगल महा मुदित नरनार ॥ बाजत भेरि निसान पखावज बीना दुंदुभी तार ॥३॥ श्रीलक्ष्मणसुत दान देत बहु प्रफुल्लित परम उदार ॥ भूषण वसन विविध पहराये स्वजन बंधु परिवार ॥४॥ शील महा लक्ष्मणसुत दाता सुखदायक सुकुमार ॥ अति आनंद बढ्यो तिहिं अवसर कछू न अंग संभार ॥५॥ पुष्टिभक्ति मारग करुणाकर भुवि कीनों विस्तार ॥ केशो जन प्रभु अधम उद्धारण श्रीविठ्ठल अवतार ॥६॥

□ राग सारंग □ (१००) वंदूंनाथ श्रीविठ्ठलेश ॥ भक्त हित अवतार भूतल प्रगट देव दिनेश ॥१॥ सुभग सुंदर श्रीगिरिधर गोविंद रसिक शिरमोर ॥ एक जिव्हा न कहत आवे उपमाकों नहिं ओर ॥२॥ श्रीबालकृष्ण वल्लभवंदे धीर श्रीरघुनाथ ॥ भजन जन सुखरासि वंदे श्यामघन यदुनाथ ॥३॥ श्रीवल्लभ नंदन जगत वंदन जीव किये सनाथ ॥ भगवानदास निवास चरणन गावत गुणगण साथ ॥४॥

□ राग सारंग □ (१०१) श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ मुख जाके ॥ सुन्दर नवनीतके प्रिय आवत हरि ताहीके हिय जन्मजन्म जप तप करि कहा भयो श्रम थाके ॥१॥ मन वच अघ तूल रास दाहनकों प्रकट अनल पटतरकों सुरनर मुनि नाहिन उपमाके ॥ छीतस्वामी गोवर्द्धनधारी कुंवर आये सदन प्रकटभये श्रीविठ्ठलेश भजनको फलताके ॥२॥

□ राग सारंग □ (१०२) श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ नंदन मेरे ॥ अब कछू ओर नाहिने करनों गहे चरण चित चेरे ॥१॥ यह स्वरूप कृत सबको फल कितकोऊ और बतावे ॥ ज्यों जल तृषित सुरसरीके तट कुमति कूप खुदावे ॥२॥ युगयुगराज करो भक्तनहित वेद पुराण वखाने ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल ये गोवर्द्धनराने ॥३॥

□ राग सारंग □ (१०३) श्रीवल्लभ सुप्रताप फलित लीला गुण भाव ललित प्रकट भये श्रीविठ्ठलेश गोकुल सुखरासी ॥ नख शिख शोभा अनूप कलियुग उद्धरण भूप रूप सुधा पान करत नयनन व्रजवासी ॥१॥

दीनबंधु कृपा करण चितवनि त्रैतापहरण छिनुछिनु आनंद कंद अंबुज मुखहांसी ॥ चतुर्भुज प्रभु युगल रूप नंद नंदन घोष नारि बिहरत एक साथ गिरि गोवर्द्धनवासी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१०४) श्रीविठ्ठलेश चरण कमल पावन त्रैलोक करण दरस परस सुंदर वर वारवार वंदे ॥ समरथ गिरिराज धरण लीला निज प्रकट करण संतन हित मानुषतनु वृन्दावन चंदे ॥१ ॥ चरणोदक लेत प्रेत ततक्षणते मुक्तभये करुणामय नाथ सदां आनंद निधिकंदे ॥ वारनें भगवानदास विहरत सदां रसिकराय जयजय यश बोलबोल गावत श्रुति छंदे ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१०५) प्रकटे श्रीविठ्ठलेश लाल गोपाल ॥ कलियुग जीव उद्धारण कारण संत जनन प्रतिपाल ॥१ ॥ द्विजकुल मंडन तिलक तैलंग श्रीवल्लभ कुल जो अति रसाल ॥ कुंभनदासप्रभु गोवर्धनधर नित्य उठ नेह करत व्रजबाल ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१०६) प्रकटे श्रीविठ्ठलेश चलो जहां जाई ॥ मेरे नयनके शृंगार दुर्लभ कर पाई ॥१ ॥ गावत निकसी बाल सब श्रीगोकुल आई ॥ नखशिख साज शृंगार साज तब विविध बजाई ॥२ ॥ भेट साज अब कहा कहों भरलिये कंचन थाल ॥ मानों बहु विध राजतही बहुविध वचन रसाल ॥३ ॥ गावत मंगलचार द्वार श्रीवल्लभ ठाडे ॥ ले ले सुतको नाम वामरुचि दूनी बाढे ॥४ ॥ बोलि लई सब भवनमें सब सखियनके वृन्द ॥ अरुण बसन बडलोचनी मृगी कहूंके चंद ॥५ ॥ आलिंगन सब धाईं पाय सब युवतिन लागी ॥ निरख लाल मुखबाल अक्काजू तुम बड भागी ॥६ ॥ मणि माणिक मुक्ता सब नाना दान दिवाय ॥ मानो मन्मथ मन बढ्यो फूले अंगन माय ॥७ ॥ सब मिल देत अशीश ईश ब्रह्मादिक नायक ॥ चिरजीयो विठ्ठलेश घोषके सब सुखदायक ॥८ ॥ राज करो निज भवनमें कहतहें बारही बार ॥ श्रीगिरिधर यश गावही रामदास बलिहार ॥९ ॥

□ राग सारंग □ (१०७) प्रकटे श्रीविठ्ठलेश सोवन फूल फुलेरी॥ सुरनरमुनि व्यास आदि नाहि कोऊ समतूले॥१॥ सुखद उदार करुणानिधि भक्ति भाव देही। भूतलमें अलभ्य लाभ व्रजके सनेही॥२॥ लीलारस सागर प्रभु गोवर्द्धन विलासी॥ श्रीवल्लभ सुवन चरण कमल गावत निज दासी॥३॥

□ राग सारंग □ (१०८) प्रकटे श्रीविठ्ठलेश करुणारस भीनेरी॥ निरखत वदनारविंद कोटि मदन हीने॥१॥ नंदनंदन मनमें अभिलाष यह बिचार्यो॥ यह सुख बिलसनकों भूतल वपु धार्यो॥२॥ पेहेलें निज विरही-तन भूतल प्रकटाई॥ तिनके ये कुंवर प्रकटे भय हरण सुखदाई॥३॥ अति उदार गिरिवरधर फूले मनमांही॥ अरस परस करत केलि व्रजजन मनभाई॥४॥ केसेंके बरनों गुण रसना मति थोरी॥ बारबार दास कहे चिरजीयो यह जोरी॥५॥

□ राग सारंग □ (१०९) सदा व्रजहीमें करत विहार॥ तबकें गोप भेख वपु धार्यो अब द्विजवर अवतार॥१॥ तब गोकुलमें नंद सुवन अब वल्लभ राजकुमार॥ आपुन चरित्र शिखावत ओरन निजमत सेवासार॥२॥ युगलरूप गिरिधरन श्रीविठ्ठल लीला एक अनुसार॥ चतुर्भुज प्रभु सुख शैल निवासी भक्तन कृपा उदार॥३॥

□ राग सारंग □ (११०) सेवककी सुख रास सदां श्रीवल्लभ राजकुमार॥ दरसनही प्रसन्न होत मन पुरुषोत्तम अवतार॥१॥ सुदृष्टि चिते सिद्धांत बतायो लीला जगविस्तार॥ यह तजि अन्य ज्ञानकों ध्यावत भूल्यो कुमति विचार॥२॥ छीतस्वामी उद्धरे पतित श्रीविठ्ठल कृपा उदार॥ इनके कहें गही भुज दृढ करि गिरिधर नंद दुलार॥३॥

□ राग सारंग □ (१११) प्रकट भये श्रीविठ्ठलेश करुणानिधि पूरण काम मेट अपराध ताप आनंदरस बरसे॥ दैवी सब हरखे मन बाढ्यो हीय अति हुलास दोरि दोरि निकट आय चरण कमल परसे॥१॥ करि कटाक्ष

सबही देख दीनो महा उज्वल भाव अधरसुधा प्याय प्याय कीने सब सरसे ॥ एसे प्रभु अति उदार रसिकदास कहा कहे जानत हो सबे नाथ तुमते विमुख नरसे ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (११२) श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठलमहाप्रभु एक एव देखियत द्वे रूप ॥ निजमहिमा अवनीतल प्रकट करन प्रकटे श्रीगोकुल भूप ॥१ ॥ प्राकृत धर्म रहित अप्राकृत निखिलधर्म सहित साकार ॥ निगम निरूपित श्रीपुरुषोत्तम वदनानल श्रीवल्लभ अवतार ॥२ ॥ अग्नि कुमाररूप श्रीविठ्ठल कलिमें कीयो भक्ति विस्तार ॥ असुरन बोरे भवसागरमें पुष्टि जीवको कियो उद्धार ॥३ ॥ मास वैशाख कृष्ण एकादशी लछमनकुल प्रकटे श्रीव्रजेश ॥ पौष मास कृष्ण नवमी दिन अनलते प्रकटे श्रीविठ्ठलेश ॥४ ॥ विविध सुगंध उबटनो कीजे तेल सुवासिन केसरनीर ॥ स्नान करावहु श्रीव्रजपतिकों करहु सींगार सुबलके वीर ॥५ ॥ पीतबसन परिधान करावहु कुल्हे केशरी सुंदर शीश ॥ विविध भांत भूषन पहिरावहु मृगज तिलक करो गोकुल ईश ॥६ ॥ खटरसविंजन विविध भांतके करहो विविध पकवान्न रसाल ॥ प्रेम सहित आनंद पुंजको भरभर करहुं समर्पन थाल ॥७ ॥ आज बडो दिन महा महोत्सव निजजन आनंद उर न समाय ॥ आंगन लींपहु चौक पुरावहु वंदनमाल बंधावो बनाय ॥८ ॥ गावहु नाचहु करहु बधाई निजजन भाग्य सफल भयो आज ॥ कहत गोविंदजन सदा सर्वदा हृदय वसो श्रीवल्लभ महाराज ॥९ ॥

□ राग सारंग □ (११३) आनंद भूतल देखि विशेष ॥ श्रीवल्लभसुत गोपी सानुज प्रगटे श्रीविठ्ठलेश ॥१ ॥ लक्ष बत्तीस अंगीकृतकीने जबही दीये उपदेश ॥ पुनि बहुरूप अंस अगनित होय सबे उधार नरेस ॥२ ॥ सबतें अति उज्वल यह मारग सेवन करेंही व्रजेश ॥ धन्य भागिनिधि द्वाराकेशके सेवत श्रीमथुरेश ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (११४) हरि मुख अनल सकल सुपुनीत मुख तिन

तनुधारि धर्म धुरी लीनी ॥ स्थिर राखे मख भाग लोक सुर निज मर्याद भक्ति भली कीनी ॥१ ॥ तनते सगुण उपासि सेवा भई मति विमल दोष दुर वाहिनी ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल सब सुख निधि अपनेकों दीनी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (११५) नंदनंदन घोखनारि करतहें नित व्रज बिहार आये श्रीवल्लभगृह द्विजवर वपु धारी ॥ अतिपुनीत पोष मास घरघर मन हरख हास बाढ्योहे अति उल्लास गावत व्रजनारी ॥१ ॥ वृंदावन करत केलि अंस भुजा भुजन मेलि नृत्यत संगीत निरखि कोटि काम वारी ॥ निजजन पर बरखि सुधा जेसे वृज भामिनिपर वेणु द्वार थाप्यो रस गोवरधन धारी ॥२ ॥ भजन भाव स्थापि आप निसवासर करत जाप कीने उपदेस त्याग सबकुं सुख कारी ॥ जोई अब गोकुलेश मेट्यो सब दुख क्लेश कृष्णदास विठ्ठलेश त्रिविधताप हारी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (११६) श्रीविठ्ठलेश चरण चारु पंकज मकरंद लुब्ध गोकुलमें सकल संत करत हें नित केली ॥ पावन चरणोदक जहां संतनहित सलिल बहत त्रिविध ताप दूर करत बदन ईंदु मेली ॥१ ॥ भुतल कृष्णावतार प्रगट ब्रह्म नराकार सींचत हरि भक्ति सुधा धरणि धर्म बेली ॥ छीतस्वामी गिरवरधर लीला सबफेर करत धेनु दुहत ग्वालन संग हाथ पाट सेली ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (११७) प्रगट ब्रह्म पूरन या कलि में, प्रगटे श्रीविठ्ठलनाथ। पतित-पावन मनभावन, जे पग धरत हैं तिन हीं, माथ ॥१ ॥ भवसागर अपार तरिवे कों अवलंबन दें तिन हीं हाथ। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविठ्ठल गावत गुन-गन-गाथ ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (११८) श्रीविठ्ठलनाथ अनाथके नाथ, सनाथ भए अपने जिये री। नैननि नेह जनावत ताकों जाही के वसत वल्लभ हिये री ॥१ ॥ श्रीपुरुषोत्तम प्रगट भए हैं, अभय दान भक्तनि दिये री। 'छीतस्वामी'

गिरिधरन श्रीविट्ठल ते बड़भागि, भजन किये री ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (११९) श्रीगोकुल में प्रगट बिराजें श्री विट्ठल पुरुषोत्तम रूप। दरसत ही गए पाप सबनि के हैं ए अखिल लोक के भूप॥ सेवा-रीति बताई विधि सों अपने मन की परम अनूप। 'छीत-स्वामी' श्रीविट्ठल-आगें और पंथ जैसे जल-कूप॥

□ राग सारंग □ (१२०) पिय नवरंग गोवर्धनधारी। अभिनव रस सिंगार सरस श्रीविट्ठल प्रभु चित-चारी॥१ ॥ सुखद सरूप, सुखद हित चितवनि, वृंदाविपिन-विहारी। 'छीतस्वामी' सुख सुलभ सुपथ श्रीवल्लभ-मत अनुसारी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१२१) बिराजत वल्लभ राजकुमार। श्रीगिरिधर गोविंद सुखद , अति बालकृष्ण जु उदार॥१ ॥ व्रज-वल्लभ श्रीगोकुलेश हैं जस-सरूप निरधार। जीव अनेक किए जु कृतारथ महिमा अपरंपार॥२ ॥ श्रीरघुपति जदुपति भक्तनि के जीवन प्रान-आधार। श्रीघनश्याम मनोरथ पूरन सकल स्तुतिनि के सार॥३ ॥ कलिजुग-जन सब दुरित जानिके आए भुव हितकार। 'छीत स्वामी' विट्ठलेश-सुवन सब प्रगट कृष्ण अवतार॥४ ॥

□ राग सारंग □ (१२२) विमल जस श्रीविट्ठलनाथ कौ। भुवन चतुर्दस मानों प्रगट भयौ महिमा स्तुतिगाथ कौ॥१ ॥ पतित सबै पावन करि लीने इहि प्रताप कुंज-हाथ कौ। 'छीत-स्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल राखत सरन अनाथ कौ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१२३) लाडिले श्रीवल्लभ राजकुमार। बलि-बलि जाऊं मुखारविंद की सुंदर अति सुकुमार॥१ ॥ भगवत-रस मधि लोचन छाके करुना-सिंधु अपार। कहि सुबोधिनी निज-जन पोषत अमृत वचन-उद्गार॥२ ॥ निज स्वामिनी भाव निधि झलकत निसि-दिन करत विहार। सदा करत हैं श्री गिरिराज की सेवा पुष्टि-प्रकार॥३ ॥ इन के

चरन सरन जे आए मिटे सकल झंजार। 'छीत-स्वामी' गिरिधरन श्रीविठ्ठल सकल वेद कौ सार ॥४॥

□ राग सारंग □ (१२४) अबके सबही रूप धर्यो। चार बेद के चार वदन कर सकल जगत उधर्यो ॥१॥ सुक्ल रक्त अरु पीत कृष्ण पद एक-एक अधिकार। चारों मिल एकत्र लखियत है श्री विट्ठल अवतार ॥२॥ ते जुग में आकास विसद अति अरुन कमलदल नैन। पीत वसन परिधान अङ्ग मानो उनयो गन सुख दैन ॥३॥ ज्ञान रहित जीवन को 'गिरिधर' राखे सिरधर हाथ। तेसेइ इनकों आप ज्ञान दे कर ग्रहि किये सनाथ ॥४॥

□ राग सारंग □ (१२५) अमृत रस श्रव्यो श्रीवल्लभ मुख माधुरी ताहि प्रीयो श्री विठ्ठलेश अतिही अधायके॥ कृपा कर रंच दीयो दैवीजीवन को, करहो अनुप्रान प्रपंचतें बचायके ॥१॥ औषधिन आन ऐसी, भवसागर तरबेकी, कीनी हें अनेक भांत विधसों बनायकें॥ विष्णुदास निशवासर भजो इनके पद चिंता मत करो, धनी श्री विठ्ठलेश पायके ॥२॥

नामरत्न नी बधाई

□ राग नट □ (१) तुमसे तुमही श्रीवल्लभ नंद॥ करुणासिंधु उदार कल्पतरु सुखनिधि आनंदकंद ॥१॥ रूपरासि गुणरसिक सुलक्षण पूरण परमानंद॥ लीलाविविध अपार अगोचर गावत कीर्तिछंद ॥२॥ श्रीविठ्ठलनाथ पुनीत करत जग काटत भव दुखद्वंद॥ तुमारी समसर ओरहि जानें सोई मूढ मतिमंद ॥३॥ श्रीगिरिधरन प्रकटित लक्ष्मणकुल पुरुषोत्तम व्रजचंद॥ माणिकचंद चकोर नयनन पीवत प्रेम मकरंद ॥४॥

□ राग नट □ (२) श्रीविठ्ठलनाथ अनाथके तारण॥ श्रीवल्लभ गृह प्रकट रूप यह धर्यो भक्तहित कारण ॥१॥ दीनबंधु कृपासिंधु सहजही भक्ति विस्तारण॥ दास चतुर्भुज प्रभुके निजमत चलत लाल गिरिधरण ॥२॥

□ राग नट □ (३) जोपें श्रीविठ्ठल रूप न धरते॥ तो केसेंके घोर कलियुग के महापतित निस्तरते ॥१॥ सेवारीति प्रीति व्रजजनकी

श्रीमुखतें विस्तरते ॥ श्रीविठ्ठलनाम अमृत जिन लीनों रसना सरस सुफलते ॥२ ॥ कीरतिविशद सुनी जिन श्रवणन विषय विष परहरते ॥ गोविंद बल दर्शन जिनपायो उमगउमग रसभरते ॥३ ॥

□ राग नट □ (४) जोपें श्रीविठ्ठलनाथहि गावे ॥ दिशदिश विदिश रसातल भूतल कितकोऊ दुख पावे ॥१ ॥ काहेकों त्रैताप सहत जन कित फिरफिर यहां आवे ॥ मन कर्म बच चरणारविंदकी महीमाजो उरलावे ॥२ ॥ योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रतकों विधि वेद बतावे ॥ कृष्णदास कों यही कृपाफल श्रीवल्लभ कुलशिरनावे ॥३ ॥

□ राग नट □ (५) कृपासिंधु श्रीविठ्ठलनाथ ॥ हस्त कमल निस्तारे जे हुते अधम अनाथ ॥१ ॥ बाधा कछू न रही अब तनमें भये सुदृढ सनाथ ॥ चतुर्भुज प्रभु सदां बिराजो श्रीगिरिवरधर साथ ॥२ ॥

□ राग नट □ (६) मेरें नाहिन साधन आन ॥ श्रीविठ्ठलनाथ मूल मंत्र यह पदपंकज रज धान ॥१ ॥ श्रीगोपीजन वल्लभ स्मरत संतन हित कल्यान ॥ सगुण स्वरूप प्रकट पुरुषोत्तम श्रीविठ्ठलको ध्यान ॥२ ॥ श्रीगिरिधर गोविंद इंदु श्रीबालकृष्ण गुण गान ॥ श्रीगोकुलपति रघुपति यदुपति सुयश श्रवण पुटपान ॥३ ॥ छहों पुत्र सर समरथ सातों पुत्र श्रीघनश्याम ॥ माधो चरण शरण जो राखो करहु कृपानिधान ॥४ ॥

□ राग नट □ (७) हमतो श्रीविठ्ठलनाथ उपासी ॥ सदा सेऊं श्रीवल्लभनंदन कहा करूं जाय काशी ॥१ ॥ इनें छांड जो औरे ध्यावे सो कहीये असुरासी ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल बानी निगम प्रकाशी ॥२ ॥

□ राग नट □ (८) प्रभुता प्रकटी श्रीविठ्ठलनाथकी ॥ आन ज्ञान सब ध्यान बाम गति यह बिध जगत अकाथकी ॥१ ॥ भक्तिभाव प्रकट्यो यह मारग कलियुग सृष्टि सनाथकी ॥ शरन गये सोंपत हें श्यामहिं करगहि भुजा अनाथकी ॥२ ॥ चतुर्भुजदास आस परिपूरन छायो अंबुज हाथकी ॥ कृपा विशेष बिराजे नित्य प्रति जोरी श्रीगिरिधर साथकी ॥३ ॥

□ राग पूर्वी □ (९) तुमारे चरण कमलके शरण॥ राखो सदा सर्वदा जनकों विठ्ठलेश गिरिधरन ॥१ ॥ तुमबिन ओरनही अवलंबन भवसागर दुस्तरण॥ भगवानदास जाय बलिहारी त्रिबिध ताप उरहरण ॥२ ॥

□ राग पूर्वी □ (१०) गिरिधरलाल देखतही जीजे॥ ओत प्रोत श्रीवल्लभ नंदन कोटि काम नोछावरि कीजे ॥१ ॥ कहारी कहूं कछू कहत न आवे पटतरकों को दीजे॥ माधवदास मांगतहे इतनी श्रीमुख देखि वोई कीजे ॥२ ॥

□ राग पूर्वी □ (११) श्रीवल्लभ नंदन हें जगवंदन पतित पावन नाम॥ गोकुलनाथ कहें सुखदायक प्राणजीवन व्रजधाम ॥१ ॥ वदनचंद आनंद कंद अंगअंग सुखधाम॥ रूप अनूप सकल भूप बारि फेरि डारों कोटि काम ॥२ ॥ शोभा सिंधु गति गयंद भक्तजन विश्राम॥ भूतल प्रगटत लीला कीनी तज्यो वैकुंठधाम ॥३ ॥ शिव विरंचि सुरनर मुनि रटत इनको नाम॥ विष्णुदास श्रीवल्लभ नंदन रसिकजन अभिराम ॥४ ॥

□ राग पूर्वी □ (१२) श्रीवल्लभके चरन कमल पर सदां रहो मन मेरो॥ शीतल सुभग सदा सुखदायक भवसागरको बेरो ॥१ ॥ रसना रटतरहों निस बासर प्रभु पावन जस तेरो॥ सगुणदास इतनी मागतहे नृत्य भृत्यको चेरो ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (१३) बधावो श्रीवल्लभरायकें गृह प्रकटे श्रीविठ्ठलनाथ ॥ध्रु. ॥ तैलंगतिलक श्रीलक्ष्मणसुत गृह जन्म लियोहे आय॥ पुरुषोत्तम वासों कहियतहे निगम सदा गुणगाय ॥१ ॥ पौषमास शुभ नौमी भृगुदिन हस्त नक्षत्रहे सार॥ वृषभ लग्न शुभयोग करणहे धन्यशिशु निरधार ॥२ ॥ धन गुरु तृतीये राहु पंचमे राकापति नवमे केत॥ सप्तम शुक्र भौम शनि शोभित अष्टम रवि बुध लेत ॥३ ॥ गिरि चरणाट सुरसरीके तट फिर लीनो द्विजरूप॥ ज्ञातिकर्म सबहोत बिविधबिधि बैठे श्रीवल्लभ भूप ॥४ ॥ पंचशब्द बाजे बाजतहें गावतगीत सुहाये॥ मंगल कलश बिराजत द्वारें बंदनवार बंधाये ॥५ ॥ मागध सूत पुरोहित मिलकें

शुभ आशीश सुनाये ।। देत दान महाराज श्रीवल्लभ फूले अंग न माये ।।६ ।। महा महोत्सव होत आंगनमें नांचत गुनी अनेक ।। विविध भांत पाटंबर भूषण देत न आवे छेक ।।७ ।। नवग्रहकी महिमा कहिये जो कहत सबे द्विज आय ।। पाखंड धर्म सब दूर करेंगे वेद धर्म प्रकटाय ।।८ ।। निराकार मायामत खंडन करेंगे सुखदाय ।। पुरुषोत्तम साकार भजन विधि करि सिखवेंगे आय ।।९ ।। दैवीजीव उद्धारण कारण महामंत्रकों दान ।। शरणगये गिरिधर रति उपजत करत कथा रसपान ।।१० ।। जे हरि ब्रह्म रुद्रके हृदये आवत नांहिन ध्यान ।। सो निजजन गृह वसत निरंतर अभय करतहें दान ।।११ ।। प्राकृत रूप दिखाय मोहित किये आसुर मानव जेह ।। कृपा सुदृष्टि उद्धार कियेहें स्त्री शूद्रादिक देह ।।१२ ।। पतित जन पावन करिहें प्रभु अनेक देश परवेश ।। हस्तकमल धर दूर करेंगे अन्य धर्मको लेश ।।१३ ।। गोवर्धनधरसों रति लीला करेंगे तहां जाय ।। भोग शृंगार बनाय करेंगे निरख निरख सुखपाय ।।१४ ।। व्रजमंडल खग मृगकी महिमा करेंगे विस्तार ।। श्रीयमुना गोवर्धन द्रुम वेली कहत सबे निरधार ।।१५ ।। प्रेमलक्षणा दे दासनकों कीनों भवनिस्तार ।। श्रीवल्लभराज तिहारे सुतकी कीर्ति अपरंपार ।।१६ ।। आनंद मग्नभये सुरनर मुनि गुण गण सुन सुखपाये ।। निरख मुखारविंदकी शोभा चरण कमल शिर नाये ।।१७ ।। सुखसागर उमग्यो महि ऊपर वरणत वरण्यो न जाई ।। श्रीवल्लभ पदरज महिमातें गोविंद यहयश गाई ।।१८ ।।

□ राग गौरी □ (१४) हो चरणात पत्रकी छैयां ।। कृपासिंधु श्रीवल्लभ नंदन बह्यो जात राख्यो गहिबहियां ।।१ ।। नव नखचंद्र शरद मंडल छबि हरतताप स्मरत मन महियां ।। छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल सुयश वखान सकत श्रुतिनहियां ।।२ ।।

□ राग गौरी □ (१५) वंदे श्रीविट्ठल चरणं ।। दशनख रवि उद्योत दशोंदिश निशदिन अचल तिमिरहरणं ।।१ ।। द्योषसंध्या आगमन श्रीगोकुल संग सखा तांडवकरणं ।। दरशन तृषित विथकि व्रजबाला

ज्वालायामिनि उद्धरणं ॥२ ॥ कुच कुंकुम रंजित रसपूरण मोचक नित्यप्रति अनुकरणं ॥ गौचारण मिष व्रजवीथनमें विरह आधि मन त्रियहरणं ॥३ ॥ शेषसहस्त्र मुख पार न पावत ध्यान धरत शुक मुनि शरणं ॥ खटदश चिन्ह सुभगता सीमा जनगोविंद शिर आभरणं ॥४ ॥

□ राग गौरी □ (१६) श्रीगोकुलपति नमोनमो ॥ भक्तहेत प्रकटे व्रजमंडन नंदनंदन जय नमोनमो ॥१ ॥ तन घनश्याम लाल बलसुंदर बकीविदारण नमोनमो ॥ शकट विभंजन वच्छ विमोचन निजजन पोषण नमोनमो ॥२ ॥ तृण खल मारण असुर संहारण विश्वरूप दर्शन नमोनमो ॥ कालिय मर्दन दावानल अर्दन यमलार्जुन तारण नमोनमो ॥३ ॥ व्रज फलदायक सब जगलायक वरण विमोचक नमोनमो ॥ सुरपति मान हरण व्रजरक्षक गोवर्द्धनधर नमोनमो ॥४ ॥ व्रजबनिता मनरंजन कारण रासविलासी नमोनमो ॥ सुदर्शन धारक सब सुखदायक कोटि मदन द्युति नमोनमो ॥५ ॥ बंसीधारी कंसप्रहारी जग दुखहारी नमोनमो ॥ सबगुन जयजय श्रीवल्लभसुत बलगोविंद प्रभु नमोनमो ॥६ ॥

□ राग गौरी □ (१७) वंदे श्रीविठ्ठल चरणं ॥ नख शशि विमल कोटि किरणावलि जनमन कुमुद विकस करणं ॥१ ॥ ध्वज वज्रांकुश चाप चंद्र नभ रेखा कलश यवाभरणं ॥ यत्कुरुते मंगलमय दिष्टं ध्यात्वा भववारिधि तरणं ॥२ ॥ दैवी सकल कामना पूरक भाव संपत गता शरणं ॥ ते कुर्वंतु वसो मम चेतसि गोविंदप्रभु गिरिवरधरणं ॥३ ॥

□ राग गौरी □ (१८) श्रीविठ्ठलप्रभु नमोनमो ॥ भक्तहेत प्रकटे पुरुषोत्तम गोपिनाथानुज नमोनमो ॥१ ॥ श्रीगिरिधर सुरनर मुनि वंदित श्रुति छंदन जय नमोनमो ॥ प्रेम समुद्र सकलगुण पूरण राज शिरोमणि नमोनमो ॥२ ॥ श्रीगोविंद कृपाल कृपानिधि रसिक शिरोमणि नमोनमो ॥ अति सुंदरवर भूषण भूषित निजजन पोषित नमोनमो ॥३ ॥ श्रीबालकृष्ण गोकुलपति रघुपति जय जय यदुपति नमोनमो ॥ श्रीघनश्याम लाल वर सुंदर अखिल भुवनपति नमोनमो ॥४ ॥ यह अवतार भक्तहित कारण अधमउद्धारण

नमोनमो ॥ जनभगवान जाय बलहारी श्रीवल्लभ कुल नमोनमो ॥५ ॥

□ राग गौरी □ (१९) वेदपथ बाजत तूर निशान॥ जन मनमोद मर्याद मगनता पुनि प्रगटे कलि कान्ह॥१ ॥ करुणा निधि भक्तहित प्रगटे श्रीविठ्ठल अभिधान॥ मायामत तम रासि मथनकों श्रीवल्लभ द्रगभान॥२ ॥

□ राग गौरी □ (२०) धनधन श्रीवल्लभ जुके नंदन श्रीविठ्ठलचरण सदा निज पालन॥ जुगपद कमल बिराजमान अति महिमा बहुत सदा गुण गावन॥१ ॥ सेवा करो भजो मति दृढ होई त्रिविध भांतके ताप नसावन॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल बरखत कृपा सबे जीय भावन॥२ ॥

□ राग गौरी □ (२१) भज श्रीविठ्ठल विमल सुचरणं॥ ताप शोक भय मोह माया लपटी बिपति सब टरन दुख दुरि हरणं॥१ ॥ भक्तहित प्रगट भव दुख दूरिकरन घोखपति रसिक रसविदति करणं॥ अमित माया जलद शोक सवीय नृप निगम पथ नर भूवन सुदृढ हरणं॥२ ॥ वचन पियुष मधु सुरति करुणा उदधी दरस परम सुमिरन त्रिबिध तरणं॥ अमर नरलोक पुर दुरय समता नही जन चतुर्भुज अधिकमलय शरणं॥३ ॥

□ राग गौरी □ (२२) प्रणमामि श्रीमद श्रीविठ्ठलं॥ वेदधर्म प्रमान कारन जीव मात्र सुखकंद॥१ ॥ कृष्ण निर्मल भक्ति तत्वादि शेष वरनन तत्परं॥ पाखंड वर्तित मनसि मायक मोह संशय खंडनं॥२ ॥ श्रीवल्लभ आत्मज अखिल स्या सक्ति पुरान रस पारजनं॥ करुणानिधि गोविंददास प्रभु सकल कलिभय नृसनं॥३ ॥

□ राग गौरी □ (२३) बोलैं श्री वल्लभ-नंदन मेरे। अब कछु मोहिं नांहिनें करनो गहे चरन चित चेरे॥१ ॥ इहै सरूप सुकृत सब कौ फल, कित कोउ औरु बतावै। सो-जो तृषित सुरसरी के तट कुमति कूप खनावै॥२ ॥ जुग-जुग राज करो भक्तनि हित वेद पुरान वखानें। 'छीत-स्वामी' गिरिधरन श्रीविठ्ठल सोइ गोवर्धन रानै॥३ ॥

□ राग मारू □ (२४) याचकजन श्रीगोवर्धन धरको वल्लभद्वार वर

भावेहो ॥ रंगभूमि यदुकुल दीपककों दे अशीश पहुंचावे ॥१ ॥ यमुना पुलिन सुभग वृंदावन व्रजगोकुल सुधि पाई ॥ गिरि चरणाट सुरसुरीके तट वल्लभ गृहजु बधाई ॥२ ॥ पुरुषोत्तम जाके गृह प्रकटे ढाढी तास कहाऊं ॥ जो कछु चरित्र किये और करिहें साख वेद मत गाउं ॥३ ॥ मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह वामन भृगु रघुराई ॥ हलधर बुध कलंकी रूप धर प्रकटे कृष्ण सुखदाई ॥४ ॥ नंदरायके भवन प्रकट भये बालक रूप मुरारी ॥ बकी आदि दुष्ट सब मारे पंच अविद्या टारी ॥५ ॥ महामेघ बरखत गोकुलमें लीला गिरिकर लीनेहो ॥ सुरपति मान उतारि रसिकवर गोप अभयपद दीनेहो ॥६ ॥ बंसीबट तट रसिक शिरोमणि मुरली मधुर बजाई ॥ प्रेमपुंज गोकुलकी नारी श्रवण सुनत उठधाई ॥७ ॥ युवति युवति प्रतिरूप रूप धर रास रमण रति ठानी ॥ मंडल मध्य प्रकटे पुरुषोत्तम संग श्रीराधारानी ॥८ ॥ वृंदावन रस सुखकी परमित शेष रुद्र नहि जाने ॥ वाणी ब्रह्मा पार नहि पावे कवि कुल कहा बखाने ॥९ ॥ बोल अक्रूर कंस यों भाख्यो काज हमारो कीजे ॥ राम कृष्ण पोहोंचाय मधुपुरी बोल यहांलों लीजे ॥१० ॥ सुफलक सुत सुन हरख भयो अति प्रेम सहित व्रज आयो ॥ हरि हलधर ठाडे गोकुलमें दरस परस सुखपायो ॥११ ॥ ज्यों दीपकसों दीपक जोरे भक्तिहेतु बिचार्यो ॥ संकर्षण संग आय मधुपुरी प्रथम रजक शठमार्यो ॥१२ ॥ तोर्यो धनुष कुवलिया मार्यो रंगभूमि चलआये ॥ दशविध रूप धर्योपुरुषोत्तम नानाभांत दिखाये ॥१३ ॥ मारे मल्ल भोजवंश मर्द्यो कंस केशगहि मार्यो ॥ मातपिताकों आनंद दीनों सब विधि ताप निवार्यो ॥१४ ॥ चरणपरस वसुदेव देवकी उग्रसेन नृपकीनो ॥ यादववंश उद्योत कियोहे पांडव सुधजो लीनो ॥१५ ॥ दुर्योधनकी सभा द्रौपदी अंबर हरत उबारी ॥ अशरण शरण दिखाय बिरद जग करुणासिंधु मुरारी ॥१६ ॥ जरासंधकी सेन वधकरी पुरी द्वारिकावासी ॥ सोरह सहस्त्र एकसो आठों रानी भोग विलासी ॥१७ ॥ पवनजते मागध मरवायो नृपबंधनते छोरे ॥ राजा सकल बंदते छूटे चरण परस करजोरे ॥१८ ॥

राजसूय यज्ञ कराय चैद्य हत्यो जोति थान पोहोंचायो ।। अवभृथ स्नान कराय युधिष्ठिर कीर्ति बहु जगछायो ।।१९ ।। विनश्रम कौरव सेनसंहारी अर्जुनकों यशदीनो ।। ब्रह्म अस्त्रते जरत परीक्षित राख दयानिधि लीनो ।।२० ।। सत्ययुग त्रेता द्वापर सुरहित वसुधा भार उतार्यो ।। कलियुग जीव अनाथ जानकें गिरिधर द्विजबपु धार्यो ।।२१ ।। श्रीविठ्ठलनाथ प्रगट पुरुषोत्तम भक्तनकों सुखदायक ।। कर्म धर्म थापेंगे भुव पर व्रज पति गोकुलनायक ।।२२ ।। श्रुतिपथ प्रकट करेंगे श्रीमुख मायामत सबखंडे ।। निज स्वरूपकी सेवाकरकें अर्थभागवत मंडे ।।२३ ।। प्रेम लक्षणा दे दासनकों भजनानंद बतावे ।। नामदेय सिरपरस कमलकर अनेक जीव सुख पावे ।।२४ ।। सात पुत्र व्हेहें हरि समसर सकल ब्रह्म यदुराई ।। वल्लभनाथ तिहारे सुतकी कीर्ति बहु जग छाई ।।२५ ।। सुनसुतको यश लक्ष्मण नंदन ढाढी निकट बुलायो ।। कंचनथार भरे मुक्ताफल भक्ति वसन पहरायो ।।२६ ।। मन वांछित फल बहुविध दीनों कियो अजाची ढाढी ।। माणिकचंद बलबल उदारता प्रीति निरंतर बाढी ।।२६ ।।

□ राग गौरी □ (२५) जयति नाथ विठ्ठल नवल चारुलोचन कमल अमल रस ताहिकों सर्व व्यापी ।। जीत मायावाद दशोंदिश विध्वंस कर लाल गिरिधरन दृढभक्ति थापी ।।१ ।। जयति शुक वचन श्रुति वचन ताहिको सार भजन विस्तार कर कृष्णजापी ।। अभयदीनों लेख हरिदास वर्य भेख कृष्णदास पंचवरण छापछापी ।।२ ।।

□ राग गौरी □ (२६) जयति चतुरानन स्तुति करत विमल जस ईश स्तुति करत स्वर्गवासी ।। श्रीवल्लभ तनय प्रगट भवतरन वर गिर शिखर तरनिजा तट निवासी ।।१ ।। जयति नेति नेति निगम रटत देव गंधर्व संतत मुनिजन चाहत दूर आसी ।। भूवपति नरपति अखिल ब्रह्मांडके सहज बस भये शरण चरण दासी ।।२ ।। जयति तिलक तैलंग कुल व्रजजन लोचन चंद्रमा झरत अमृत बचन किरन धारा ।। सींचत नित वल्लभी पुष्टिकृत मम भक्ति गोविंदजन रस पीवत किरनि द्वारा ।।३ ।।

□ राग हमीर □ (२७) भजो श्रीवल्लभ सुत के चरणं ॥ नंदकुमार भजन सुखदायक पतितन पावनकरणं ॥१ ॥ दूरकिये कलि कपट वेद विधि मत प्रचंड विस्तरणं ॥ अति प्रताप महिमा समाज यश शोक तापत्रय अघहरणं ॥२ ॥ पुष्टि मर्यादा भजन रस सेवा निजजन पोषण भरणं ॥ नंददास प्रभु प्रकट रूप धर श्रीविठ्ठलेश गिरिवरधरणं ॥३ ॥

□ राग हमीर कल्याण □ (२८) श्रीवल्लभलाल के गुण गाऊं ॥ माधुरी माधुरी मूरति देख आनंद सदन मदन मोहन नयन चेन पाऊं ॥१ ॥ श्रीवल्लभ नंदन जगत वंदन शीतल चंदन ताप हरण येही महाप्रभु इष्टकरण चरणन चित्त लाऊं ॥ छीत स्वामी मन वच कर्म परम धर्म येही मेरे लाडिलो लड्याऊं ॥२ ॥

□ राग हमीर कल्याण □ (२९) गये पाप ताप दूर देखत दरस परस चरण ॥ होंतो एक पतित तिहारो पतित पावन बिरदहो तुम जगतके उद्धरण ॥ १ ॥ स्तुति शेष कर न सके सफल कला गुण निधान जानतहों तिहारी सबविधि अनुसरण ॥ छीत स्वामी गिरिवरधर तेसई श्रीविठ्ठलेश होंतो तिहारी जन्म जन्म शरण ॥२ ॥

□ राग ईमन □ (३०) बलबल हों तनक तनक करडारों इनपर जे रहे निशदिन चरणन नेरे ॥ जीवन्मुक्त सदा तेही जन जो श्रीवल्लभनंदनके चेरे ॥१ ॥ तिनकी महिमा मोपें बरणी न जाई जिन तन हँस हँस हेरे ॥ चतुरकहे श्रीविठ्ठलनाथ प्रभुसों हमें हूं गिनीये तिनमे भलेबुरे तो तेरे ॥२ ॥

□ राग ईमन □ (३१) श्रीवल्लभ नंदन चंद देखत तनके त्रिविध ताप जात जात ॥ मिट गये सब दुरित दूर भक्तन की जीवनमूर भामिनी आनंदकंद ॥१ ॥ श्रीविठ्ठलनाथ विलोक बढ्यो सुखसिंधुकी उठत तरंग मिटगये दुखद्वन्द ॥ छीतस्वामी गिरिवरधर विठ्ठलेशके गुणगावत आनंद सुखछंद ॥२ ॥

□ राग ईमन □ (३२) जय श्रीवल्लभ नंदनगाऊं ॥ श्रीगिरिधरण सकल सुखदाता गोविंदको शिरनाऊं ॥१ ॥ श्रीबालकृष्ण बालक संग विहरत

श्रीगोकुलनाथ लड़्याऊं॥ श्रीरघुनाथ प्रताप विमलयश श्रवणन सदासुनाऊं॥२॥ यदुकुलमें यदुनाथ बिराजत लीलापार न पाऊं॥ विष्णुदासकों करों कृपा घनश्याम चरण लपटाऊं॥३॥

□ राग कल्याण □ (३३) जांचौं श्रीविठ्ठलनाथ गुसाँई। मन-क्रम वच मेरे श्रीविठ्ठल और न दूजौ साँई॥१॥ औरे जाचौं जननी लाजै, करौं इनके मन भाँई। 'छीत-स्वामी' गिरिधरन श्रीविठ्ठल तन-त्रयताप नसाँई॥२॥

□ राग कान्हरो □ (३४) प्रभु श्रीवल्लभ गृह प्रकट भये॥ हरि लीला रससिंधु सुधानिधि वचन किरण सब तापगये॥१॥ मायावाद तिमिर जीवनको प्रकटनाश पायो उर अन्तर॥ फूली भक्ति कुमुदिनी चहुंदिश शोभित भये भक्त मानस सर॥२॥ मुदित भये कमल मुख तिनके वृथावाद नाहिं गिनतबल॥ गिरिधर अन्य भजन तारागण मंदभये भागे गति चंचल॥३॥

□ राग कान्हरो □ (३५) श्रीवल्लभ गृह आज बधाई प्रकटे श्रीविठ्ठलनाथ॥ गावत मंगल गीत युवति जन मंगल कलश सुहाथ॥१॥ पंचशब्द ध्वनि बाजे बाजत आंगन मोतिन चौकपुराई॥ श्रीविठ्ठलनाथ प्रकट पुरुषोत्तम दास निरख बलजाई॥२॥

□ राग कान्हरो □ (३६) श्रीविठ्ठल प्रभु जगत उद्धारण देखो भूतल आयेरी॥ नखशिख सुंदर रूप कहा कहूं कोटिक काम लजायेरी॥१॥ अनेक जीव किये कृतारथ श्रवण सुनत उठ धाये॥ शरणमंत्र श्रवण सुनायकें पुरुषोत्तम कर गृहाये॥२॥ शेष सहस्त्र मुख निशदिन गावे तेऊ पार न पायेरी॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल प्रेम प्रतीत सब ध्यायेरी॥३॥

□ राग कान्हरो □ (३७) श्रीविठ्ठल सुखसागर आगर जगत उजागर पायेरी॥ भक्तनके हित कारण आली अति आतुर उठिधायेरी॥१॥ ताको

भाग्य कहांलों वरणों जो वल्लभ गुणगाये॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल आनंद रस बरखाये ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (३८) श्रीवल्लभ गृह विट्ठल प्रकटे सब भक्तन हितकारी॥ सुन उमगे नरनारि प्रफुल्लित पहरें झूमकसारी ॥१ ॥ कंचन थार साजलीयें कर मोतिन मांग संवारी॥ रूपदेख रतिपति मोहित व्है कोटि भांत बलहारी ॥२ ॥ दानदेतहें श्रीवल्लभ प्रभु जो जो जीयमें धारी॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल भक्तनके हितकारी ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (३९) श्रीविट्ठलको जन्म भयो सुन व्रज जन अति सुखपायेरी॥ नानाविध शृंगार साजकें अति सुखमें उठ धायेरी ॥१ ॥ निरख मुखारविंदकी शोभा कोटिक काम लजाये॥ नयन चकोर पीवत रसअमृत तनकी तपन मिटाये ॥२ ॥ सुरनर मुनि जन थके विमानन कुसुमन वृष्टि कराये॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल भक्तनहित भुव आये ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (४०) श्रीविट्ठल प्रकटे सुखदायक॥ भक्तनके सब काज सुधारे भजनानंदके लायक ॥१ ॥ शीतल सुखद हेमंतऋतु तहां मध्य नौमीके वासर॥ शोभित सुख बितान नभ मंडल पोहोप झरत तिहिं अवसर ॥२ ॥ व्रजजन मंगल गावत रससों आनंद उर न समाई॥ गोपालदास उरवसो निरंतर तनकी तापमिटाई ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (४१) आज धन्य भाग्य हमारे प्रकटे श्रीविट्ठलनाथ॥ निरखत त्रिविध ताप तनके गये भवसागरतें तारे ॥१ ॥ शामल अंग वदन पूरण चंद देखियत जगउजियारे॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल वल्लभ राज ललारे ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (४२) श्रीविट्ठलजूके चरन कमल भज रे मन जो चाहे परमारथ॥ मारग वाम काम हित कारन सब पाखंड कीजे उधारथ ॥१ ॥

देवी देव देवता हरि बीनु सब कोउ जगत आपुने स्वारथ॥ श्री भागवत भजन रस महिमा श्रीमुख वचन कहेजु यथारथ॥२॥ तीनलोक वंदित यह मारग जीव अनेक किये जु कृतारथ॥ सगुणदास शरण आये बिनु खोये दिना अकारथ॥३॥

□ राग कान्हरो □ (४३) देखत तन के त्रिविध ताप जात, श्रीवल्लभ-नंदन चंद। भजि गए सब दुरित दूरि, भक्तनि की जीवन-मूरि मानिनी आनंद-कंद॥१॥ श्रीविट्ठलनाथ विलोकि बढ्यो सुख-सिंधु की उठत तरंग मिटि गए दुःख-द्वंद। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठलेस के गुन गावत स्तुति-छंद॥२॥

□ राग कान्हरो □ (४४) श्रीविट्ठलनाथ कृपा-छवि ऊपर सर्वसु न्यौछावरि लै कीनौं। कोटि-कोटि यों सुनत ही मानत गुन अनेक ज्यौं गहि लीनौं॥१॥ ताही के वे बस जु सदा हैं जोही पिया के रँग भीनौं। 'छीत-स्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल कहा कहौं? जो सुख दीनौं॥२॥

□ राग कान्हरो □ (४५) रसिकराई श्रीवल्लभ-सुत के भजहु चरनकमल सुख-दाइक। बाल अकाल (?) रहित पुरुषोत्तम प्रगट भए श्रीविट्ठल नाइक॥१॥ देवलोक, भुव लोक, रसातल उपमा कों नाहिंन कोउ लाइक। चार पदारथ महलनि पावें अष्ट महासिद्धि द्वारें पाइक॥२॥ वदन-इंदु वरषत निसि-बासर वचन-सुधारस भक्ति बधाइक। 'छीत-स्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल पावन पतित, निगम जस गाइक॥३॥

□ राग कान्हरो □ (४६) तिहारी कृपा विट्ठलेस गुसाँई। अपथ मारग तजे, भक्ति-मारग रुचि श्रीगिरिवरधर दई दिखाई॥१॥ तन मन प्रान समर्पन कीनों श्रीभागवत-विधि नई सिखाई। 'छीत-स्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल अगनित महिमा वरनी न जाई॥२॥

□ राग कान्हरो □ (४७) परम पुष्टि रस जल अमित उर्मी प्रभावेस। नागर

प्रगटि आनंद निधि वल्लभ सुत विठ्ठलेस ।।१।। श्रीवल्लभाचार्य कलपतरु, फल लाग्यो विठ्ठलेस । या फल को रस रूपतैं, गोकुलनाथ व्रजेस ।।२।। धन वल्लभ विठ्ठलेस धन, धन्य सात सुत वंस । भव निस्तारण हित प्रगटि, नागर भक्त प्रसंस ।।३।। श्रीवल्लभाचार्य कुमार कुमुद कुल निसेस, भक्ति जन प्रसंसित श्रीमद् विठ्ठलेस । विष्णुस्वामी सम्पदाय चूड़ामणि चार, नागर प्रणमाम्यहं अव्हिकुल्हार ।।४।।

□ राग कान्हरो □ (४८) नौमी पोसकी अँधियारी । गिरि चरनाट सुरसरिके तट श्रीविठ्ठलवपुधारी ।।१।। गोकुल घरघर महा महोत्सव व्रजजन अति सुखकारी । लाल गोपाल वल्लभजुकी स्वामिनी बस कीने गिरिधारी ।।२।।

□ राग कान्हरो □ (४९) परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन करत कृपा निज हाथदे माथें ।। जे जन शरण आय अनुसरही गहि सोंपत श्रीगोवर्धन नाथें ।।१।। परम उदार चतुरचिंतामणि राखत भवधाराते साथें ।।१।। भजि कृष्णदास काजसब सरहीं जो जाने श्रीविठ्ठलनाथें ।।२।।

□ राग कान्हरो □ श्री विठ्ठलनाथ चन्द उग्यो जग में भक्त चाँदनी छाय रही । अंधकार जाके मन के मिट गये सो तो पिया मन भाई लई ।।१।। निश दिन नाम जपत रटत या मुखतें श्री वल्लभ विठ्ठलेश कही । छीत स्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल अब जो भई सो कब न भई ही ।।२।।

□ राग अडानो □ (५०) श्रीवल्लभ लाडिलेहो तुमारे चरण कमल शरण ।। नाम लेत पाप हरत ब्रह्मादिक स्तुति करत सुनियत त्रैलोक सुयश पतित पावन करण ।।१।। सुरनर मुनि नागलोक करतहें दिनरेन सेव विमल वचन बदत वेद प्रकट आरति हरण ।। गिरिराज धरण बलिहारी श्रीविठ्ठलेश गिरिधारी सकल जगतहें भवसिंधु विषम हरण ।।२।।

□ राग अडानो □ (५१) श्रीवल्लभ लाडिलेहो तिहारे चरण कमल शरण ।। पावन त्रैलोक करण जनमन संताप हरण दरशन सुखरोमरोम परसत अघहरण ।।१।। सुरनर मुनि नयन चकोर निरखत मुख चंद ओर करत अमीपान ध्यान इकटक नहीं टरन ।। गोविंदप्रभु गोकुलेश राजत श्रीवल्लभ गृह प्रकट भये श्रीविठ्ठलेश गोवर्धन धरण ।।२।।

□ राग केदारो □ (५२) श्री विठ्ठलनाथ आनंद कंद ।। प्रकट पुरुषोत्तम श्रीव्रजमें देख द्विज वर चंद ।।१।। तब व्रज यशोदा नंद कहियत अब श्रीवल्लभनंद ।।

तब धर्यो नट भेख गिरिधर अबनि श्रुतिपथ छंद ।।२।। जब बकी आदि अनेक आरति मेट सब दुखद्वंद ।। अब कृपाकर हरे प्रभु पाप माणिकचंद ।।३।।

□ राग केदारो □ (५३) प्रकटे रसिक विठ्ठलराय ।। भक्तहित अवतार लियो बहोरि व्रजमें आय ।।१।। शिव ब्रह्मादिक ध्यान धरतहें निगम जाकों गाय ।। शेष सहस्र मुख रटत रसना रस न बरन्यो जाय ।।२।। पीत पट कटि काछिनी कर मुरली मधुर बजाय ।। मोर चंद्रिका मुकुट मस्तक भाल तिलक बनाय।।३।। मकर कुंडल गंड मंडित देख मदन लजाय ।। ग्वालिनीके संग बिहरत रासमंडल माय ।।४।। अंगअंग अनूप सुंदर कहों कहा वनाय ।। प्राणपतिकी निरख शोभा चतुर्भुज बलजाय ।।५।।

□ राग केदारो □ (५४) फिर व्रजवसो श्रीविठ्ठलेश ।। कृपाकर दर्शन दिखावो वह लीला बहवेश ।।१।। गाय वछरा लाय गोकुलगाम करो प्रवेश ।। नंदनंदन आय प्रकटे अति उदार नरेश ।।२।। भक्तिमारग प्रकटकर कीयो जनन उपदेश।। रच्यो रासविलास सुखनिधि गिरिगोवर्धनेश ।।३।। श्रीवल्लभ नंदन असुर निकंदन विदित श्रुति सुरेश ।। चतुर्भुज प्रभु घोष कुलको हर्यो सकल कलेश ।।४।।

□ राग केदारो □ (५५) श्रीविठ्ठलनाथ प्रकटे आय ।। पौषवदि नौमी शुभदिन शुभघरी समुदाय ।।१।। ग्वाल गोपी सबें हरखे जहांतहांते उठिधाय ।। हाथन कंचन थार लियें सरस मधुरें गाय ।।२।। विविध बाजे बजत चहुंदिश आनंद उर न समाय ।। कुसुम वरखत सुरन नभतें जयजय शब्द सुहाय ।।३।। पूरे मनोरथ भक्त जनके आनंद निधिकों पाय ।। अन्यदोष जो मिटे जनके भये मनोरथ भाय ।।४।। जाति कर्म कराय वल्लभ दान अधिक दिवाय ।। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनको यश विविध विध गाय ।।५।।

□ राग केदारो □ (५६) श्रीवल्लभनंदन प्रकट भये ।। दैवीजन उद्धारण कारण अपनी शरण लये ।।१।। मायामतकों दूर कियोहे भजनानंद प्रकटाये ।। तेसे रसमूरति श्रीगिरिधर बहु विध लाडलड्याये ।।२।। पौष कृष्ण नौमी शुभदायक अति शोभित यह रूप ।। मातअक्कांजू अति बडभागी श्रीवल्लभ व्रजभूप।।३।। सुरनर मुनि सब थकित भये नभ कुसुमन वृष्टि कराई ।। यह सुख शोभा निरखत चतुरानन मनसुधि न रहाई ।।४।।

□ राग केदारो □ फेर व्रज बसावो श्री विठ्ठलेश । कृपा करी दरसन दिखावो वह लीला वह वेश ।।१।। गाय बछरा लाय गोकुल गाम करो प्रवेश । नंद नंदन

आय प्रगटे अति उदार नरेश ।।२।। भक्ति मारग को प्रगट करुणा कियो जनन उपदेश । रच्यो रास विलास सुख निधि श्री गिरिधर गोवर्धनेश ।।३।। वल्लभ नंदन असुर निकन्दन विदित जू रुचि मुरेश चत्रभुज प्रभु घोष कुल जू कल रह्यो सकल ही क्लेश ।।४।।

□ राग केदारो □ वल्लभ नंदन प्रगट भये । देवीजन उद्धारन कारन अपनी शरण लये ।।१।। मायामत को दूर कियो है भजननंद प्रगटायो । रस मूरति श्री गिरिधर बहुविध लाड लडायो ।।२।। पौष कृष्ण नोर्मा शुभदायक अतिशोभित यह रूप। मात अक्काजू अति बड़ भागी श्री वल्लभ व्रज भूप ।।३।। सुरनर मुनि सब थकित भये हैं नभ कुसुमन वृष्टि कराई । यह सुख शोभा निरखत चत्रभुज तन मन सुधि न रहाई ।।४।।

□ राग नायकी □ (५७) सुघर सहेली मिल आवो गावो मंगलगीत ।। पुत्र भयो श्रीवल्लभ प्रभुकें जिन चाख्यो नवनीत ।।१।। आंगन मोतिन चौक पुरावो चीतो भीत पछीत ।। सोंधे कुंकुम उबट न्हवावो पहरावो पट पीत ।।२।। पौष असित नौमीको शुभदिन लगे सरस जहां सीत ।। श्रीविट्ठल गिरिधारी कृपानिधि बाजे बजावो जीत ।।३।।

□ राग नायकी □ (५८) जन्म लियो शुभ लग्न विचार । पौषमास कृष्णनौमी शुभ दिन प्रगट भये द्विजवर वपु धार ।।१।। बाल विरध नरनारी प्रफुल्लित गावत दे करतार । मणिगण कंचन पटभूषण तन देत गुनिनकों वार ।।२।। बाजत भेरि मृदंग सहनाई झांझ झालरी तार । देत आशीष सूत मागध जन गावत गुन विस्तार ।।३।। जय जयकार भयो चहुंदिशतें बरखत कुसुम अपार । शिव विरंचि शुक शारद नारद करत सबे उच्चार ।।४।। मोतिन चोक पुराये बहुविध बांधी बंदनवार । रसिक शिरोमणि श्रीवल्लभ गृह गिरिधर लीनो अवतार ।।५।।

□ राग बिहाग □ (५९) श्री विट्ठलप्रभु-नाम नौका तुरत ही पार लगाए री । देखौ-देखौ अद्भुत लीला अनाथ सनाथ कहाए री ।।१।। धनि-धनि कहत सकल सुर नर मुनि सुजस चहूं दिसि छाए री । 'छीत-स्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल तन के ताप नसाए री ।।२।।

□ राग बिहाग □ (६०) जे कोई श्री गोकुल रस चाखे । ताको चित अनत न भटके लोभ दिखावे लाखे ।।१।। जेकोई ।। पर्यो रहे छोकरकी छैया

निरखत तरुवर साखे। श्री यमुना जल पान करत नित्य श्रीवल्लभ मुख भाखे ॥२ ॥ जेकोई ॥ सात स्वरूप आदिले गिरिधर ध्यान हृदेमें राखे। रसिक प्रितमकी वानिक उपर विश्व वारने नाखे ॥३ ॥ जेकोई ॥

□ राग बिहाग □ (६१) श्रीविठ्ठल प्रकटे व्रजनाथ॥ नंदनंदन कलियुगमें आये निजजन किये सनाथ ॥१ ॥ तब असुरनको नाशकियो हरि अब मायामत नाशे॥ तब गोपीजनकों सुखदीनों सब निजभक्त प्रकासे ॥२ ॥ तबकें वेद पथ छोड रास रमि नानाभाव बताये॥ अब स्त्री शूद्रादिक सबकों ब्रह्मसंबंध कराये ॥३ ॥ यह विध प्रकट करी निजलीला वल्लभराज दुलारे॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल इनकों वेद पुकारे ॥४ ॥

□ राग बिहाग □ (६२) जुगजुग राज करो श्रीगोकुल जुगजुग राजकरो॥ यह सुख भजन प्रताप तेजतें छिन इतउत न टरो ॥१ ॥ पावन रूप दिखाय महाप्रभु पतितन ताप हरो॥ विश्व विदित दीनी गति प्रेतन क्यों न जगत उद्धरो ॥२ ॥ श्रीवल्लभकुल कमल अमल रवि यश मकरंद भरो॥ नंददास प्रभु षटगुण संपन्न श्रीविठ्ठलेश वरो ॥३ ॥

□ राग रायसो □ (६३) प्रगटे श्रीविठ्ठलनाथजु नागर नवल किशोर। मृगमद तिलक विराजही सोहत चंदन खोर ॥प्रगटे. ॥१ ॥ किरन सकल जग छाइयो ज्यों उदयो रवि भोर। कोटि मदन विधु वारने उपमाकों नहीं ओर ॥प्रगटे. ॥२ ॥ श्रवन सुनत सब व्रजवधू भवन भवनतें दोर। गावत सब मन भावत आवत वल्लभ पोर ॥प्रगटे. ॥३ ॥ बाजे दुंदुभि भेरी बिच्र मुरलीकी घोर। हेरी दे दे नाचही बीच भुजन भुज जोर ॥प्रगटे. ॥४ ॥ दूध दहीं मधु खांड ले केसर सीसतें ढोर। मन इच्छा फल पावही देत न आवे छोर ॥प्रगटे. ॥५ ॥ यह सुखसागर देखही रसिक द्रगन भये भोंर। मदनमोहन श्रीस्यामजू निजजन सिरमोर ॥प्रगटे. ॥६ ॥

□ राग बिहाग □ (६४) श्री विठ्ठलनाथ बसत जिय जाके ताकी रीति प्रीति

छबि न्यारी ॥ प्रफुल्लित वदन कांति करुणामय नयननमें झलके गिरिधारी ॥१ ॥ उग्र स्वभाव परम परमारथ स्वारथ लेश नहीं संसारी ॥ आनंद रूप करत इकछिनमें हरिजुकी कथा कहत विस्तारी ॥२ ॥ मन क्रम वचन ताहिको संग कीजै पैयत व्रजयुवतिन सुखकारी ॥ कृष्णदासप्रभु रसिक मुकुटमणि गुणनिधान श्रीगोवर्धनधारी ॥३ ॥

श्री गुसांईजी के पलना के पद

□ राग आसावरी □ (१) श्रीविट्ठलनाथ पालनेझूले मात अक्कांजु झुलावे हो ॥ निरख निरख मुख कमल मनोहर आनंद उर न समावे हो ॥१ ॥ कबहुंक सुरंग खिलोना ले ले बहु विध लाल खिलावेहो ॥ निरख निरख मुसिकाय श्रीविट्ठल द्वे दतियां दरसावे हों ॥२ ॥ सहज तिलक मृगमद लिलाटपर कठुला कंठ बनावे हो ॥ माधोदास चरनरज वंदित द्वारे सदा गुण गावे हो ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (२) श्रीविट्ठलनाथ पालनेझूले मात अक्कांजु झुलावे हो ॥ वारंवार निहार कमल मुख भाव सहितगुण गावे हो ॥१ ॥ कबहुंक सुरंग खिलोनां लेले नानाभांत खिलावेहो ॥ देख देख मुसक्याय मनोहर द्वे दतियां दरसावेहो ॥२ ॥ मृगमद तिलक लिलाट बिराजत कठुला कंठ बनावे हो ॥ विष्णुदास चरननको सेवक पर्यो द्वार जसगावेहो ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (३) मनिमय आंगन श्रीवल्लभके कनक पालनो सोहेहो ॥ मात अक्काजू झुलावे श्रीविट्ठल देखि देखि मनमोहे हो ॥१ ॥ सुंदर मुख मृदुहास मनोहर चंचल नेन विशाल हो ॥ घुंघरारी अलकें अति राजत मृगमद तिलक सुभालहो ॥२ ॥ कनक फूल कंठी हथसांकर झगुली तनसुख झीनी हो ॥ स्निग्ध सचिक्कन झलकत झांई सुंदरता सब दीनी हो ॥३ ॥ वदन निहारत वारत सर्वस्व चुंबन चुचुकारी हो ॥ किलकि किलकि जननी तन चितवत राई लोन उतारीहो ॥४ ॥ श्रीवल्लभ समसर श्रीविट्ठल ऐसो और न कोई ॥ वल्लभदास दरसको प्यासो देखें सन्मुख

होई ॥५ ॥

□ राग धनाश्री □ (४) झूलें श्रीविठ्ठलनाथ मणिमय पालने ॥ निजजन किये सनाथ लालन लालने ॥ ध्रुव ॥ रमकि झमकि घुंघरु घंटावलि कनक जटित मनिहीर ॥ रत्न कलश कलपाट पटाकन उपर दक्षन चीर ॥१ ॥ मनि मोतिन के झूमक बिचबिच लटकन लटकत लोल ॥ छबिसों छगन मगन वल्लभ सुत झूलत झोटन झोल ॥२ ॥ सिर कुलही उलही लट लटकन तिलक भाल भृगु बंक ॥ नेन विशाल कृपाल कृपानिध मुख छबि शरद मयंक ॥३ ॥ चटक मटक चुटकी कर तारी चटकि चटकि चुटकारी ॥ जुवति वृन्द हँसि हँसि हुलरावत अपने तन मन वारी ॥४ ॥ आनंदभरी अक्कांजू मैया निरखि लड्यावति लाले ॥ मंगल गाय मुदित नरनारी वारत मोतिनमाले ॥५ ॥ जसुमतिके घर पलना झूले बहुत असुर सिंघारे ॥ सो श्रम निराकरन वल्लभ गृह व्रज मंडल पाउंधारे ॥६ ॥ द्विज अवतार सोई पुरुषोत्तम कलिके जीव उद्धारे ॥ गोकुल प्रभु तुम बेग बडे होउ पुष्टिभक्ति विस्तारे ॥७ ॥

श्री गुसांईजी के विवाह के पद

सात बालकन की बधाई

श्रीगिरिधरजी की बधाई (कार्तिक शुक्ल १२)

□ राग बिलावल □ (१) प्रकटे श्रीविठ्ठलनाथके गिरिधर सुखदाई ॥ मात श्रीरुक्मिणी कूखतें प्रकट्यो शशिराई ॥१ ॥ भई चांदनी जगतमें भक्ति-सरसाई ॥ कृष्ण भजन सबहीं करे यश पावन गाई ॥२ ॥ नवधा भक्ति दई सबे निजजन अधिकाई ॥ प्रेमसिंधुमें बोरिकें कीने हरिराई ॥३ ॥ स्वजनक आज्ञा मांगिके प्रतिवाद कहाई ॥ दूरि कियो सब बादको हरिभक्ति दृढाई ॥४ ॥ सेवत कृष्ण महा प्रभु गोकुल सुखदाई ॥ शेष महेश न पावही धरिध्यान महाई ॥५ ॥ दुखहारी सब जगतके सुखकरन महाई ॥ रसिकदास अति दीनहे तुम करो सहाई ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (२) प्रथम पुत्र प्रकट भये श्रीगिरिधर धर्मी स्वरूप षट् धर्मन सहित महा श्रीविठ्ठलेश धाम ।। चहुंदिश अति होत बधाई बाजत मुरली सहनाई साज सिंगार षोडषतन गावत व्रज भाम ।।१ ।। ध्वजा पताका तोरनादि अगर धूप अति सुगंध फेलि रह्यो ठांव ठांव हरखत सब गाम ।। नाचत सब नरनारी विहसत कर देत तारी बाजतहें थारी सकल कहेत जयजय नाम ।।२ ।। अति उदार महा दयाल जयति दुःख दूर करन देत दान निजजनकों पूरन करि काम ।। रसिकदास अतिहीं दीन ताहि अनतनाहि ठोर करुणामय प्रभु दीजिये चरणनतर ठाम ।।३ ।।

□ राग सारंग □ (३) जयति श्री गिरिधरन भामिनी वर रमण धाम अवतार गिरिधराजधारी। जयति गंभीर गुन गनन कवि करे भक्त आरतहरन देहधारी ।।१ ।। जयति तैलंग तिलक विशत दश ही दिश कीरति नवभवन भजनानुसारी। जयति अनुरागिणी भक्त विश्रामकृत विष्णु स्वामी पथ प्रगटचारी ।।२ ।। जयति विठ्ठल सुवन अधम कुल उद्धरण पोष त्रिय भावभरनचारी। जयति वल्लभ वंश प्रगट विख्यात करन रंगी 'सरस' व्रजबिहारी ।।३ ।।

□ राग नट □ (४) श्रीविठ्ठलनाथकें बजत बधाई ।। पूरन पुरुषोत्तम प्रकटेहें श्रीगिरिधर गुण राई ।।१ ।। बाजत झांझ पखावज मुरली वीना शब्द सुहाई ।। नरनारी सब प्रेम विवश भये देह दिशा बिसराई ।।२ ।। नाचत गावत सब हरखत मन जयजय ध्वनि उपजाई ।। रसिकदास वरने कहा एक मुख शोभा अमित अथाई ।।३ ।।

□ राग सारंग □ (५) श्रीविठ्ठल राजकुमार श्रीगिरिधर अवलोकत मन भयो आनंद ।। वेदपुराण सज्ञानसाध्य सब कलियुग उद्धरन आनंदकंद ।।१ ।। विमल शरीर नाम यश निर्मल विमल बदनकी मुसकनि मंद ।। गोविंद प्रभु प्रकटित संतन हित लीला रूप धर्यो गोविंद ।।२ ।।

□ राग कान्हरो □ (६) श्रीवल्लभ सुतकें सुत प्रकटे श्रीगिरिधर गुणराई ।।

बजत बधाई अतिही सुनत मन मुदित भये विठ्ठलेश गुसांई ॥१ ॥ बोलि लिये कुलगुरु ज्ञाति सब करत वेद विधि मन हुलसाई ॥ नांदी मुख निज पितर देवऋषि पूजत स्वस्ति वाचन जु पढाई ॥२ ॥ देत असीस विप्र मंत्र पढि जय जय जय ध्वनिमुख उपजाई ॥ सुनधाये नरनारी नगरकें गावत मंगल गीतबधाई ॥३ ॥ नृत्यत सुलप संच नौतन गति बहुविध हस्तक भेद बताई ॥ छिरकत दधि घृत माखन सब मिलि लूटत झपटत खात मिठाई ॥४ ॥ विधि शिव शक्र शेष सनकादिक दरसन कारन आये ॥ स्तुति मुख करत शीश धरिणी धर पुरुषोत्तम पूरण यह भाये ॥५ ॥ श्रीवृंदावन चंद उदय भये निज जनके रस सुखकें तांई ॥ रसिकदास अति दीनहीन मति पर्यो चरण शरणागति पाई ॥६ ॥

श्री गोविंदरायजी की बधाई (कार्तिक वद ८)

□ राग बिलावल □ (१) प्रकटे श्रीविठ्ठलनाथकें दूजे सुत माई ॥ गुण ऐश्वर्यको रूपहे महिमा श्रुति गाई ॥१ ॥ कीनो पालन जगतको निज किरणन राई ॥ सुंदररूप सुहावनो मुख प्रफुलित माई ॥२ ॥ शेष महेश न पावही कहुं अन्त जाई ॥ रसिकदासके तुम प्रभु करियेजु सहाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२) जयति गोविंद आनंदमय सर्वदा सकल व्रज ईश सेवो बिहारी ॥ गोपिका भाव उद्‌बोध निज दासकर दैवीजन हेत निज देह धारी ॥१ ॥ सूर सब ईशको मान मर्दन करन सुरभी पद पुन्यते प्रकट चारी ॥ भक्त सुखकरन दुखदलन संसार कृत सरस सुख रास रस रंगकारी ॥२ ॥

□ राग नट □ (३) श्रीविठ्ठलनाथजुके आज बधाई ॥ मार्गशिर कृष्ण अष्टमीको शशी उदयो पूरण माई ॥१ ॥ पूरेचोक धाममोतिनके वंदनवार बंधाई ॥ ध्वजा पताका दीप कलशसज धूप सुगंध महाई ॥२ ॥ बाजत ढोल निशान नगारे झांझ झमक सहनाई ॥ गगन विमानन छाय रह्योहे देव कुसुम बरखाई ॥३ ॥ श्रुति मुख बोलत जय जय बोलत डोलत चहुंदिश

धाई ॥ रसिकदास मतिहीन दीन अति गोविंद नाम कहाई ॥४ ॥

□ राग ईमन □ (४) श्रीविठ्ठलेश धाम आज अतिही सुहायो ॥ रानी श्रीरुक्मिणीने गोविंद सुत जायो ॥१ ॥ पायो अति दुर्लभ फल देख मात फूले ॥ करत बधाई चार मंगल अनुकूले ॥२ ॥ बाढ्योहे आनंद चहुंदिश गावत सब नारी ॥ नाचत सब मगन भई देह सुधि बिसारी ॥३ ॥ पतित पावन कीये सबही कीर्ति जग छाई ॥ रसिकदास शरणागति आयो राख्यो गहि बांही ॥४ ॥

श्रीबालकृष्णजी की बधाई (भाद्रपद वद १३)

□ राग देवगंधार □ (१) श्रीविट्ठलनाथके बजत बधाई ॥ अश्विन वदी तेरसकों प्रकटे श्रीबालकृष्ण सुखदाई ॥१ ॥ वीर्यरूप महा कीयो पराक्रम नेंन कमल दलएन ॥ कृपादृष्टि रस निज दासनपें बरसे अति सुखदेन ॥२ ॥ अंग अंग अति मधुर देख छबि मोहित कोटि अनंग ॥ वरनें कहा एक मति रसना रसिकदास मति पंग ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२) श्रीविठ्ठलेश धाम आज प्रकट भये वीर्य रूप श्रीबालकृष्ण अति अनूप तीजे सुतमाई ॥ गावत चहुंदिश बधाई झूंडन जुरि नारि आई मंगल साज करन थार कंचन सुहाई ॥१ ॥ नृत्यत संगीत रीति बाजत कटि किंकिणी पद नूपुर ध्वनि मंद मंद सुरन सुहाई ॥ बाजे बाजत अति अनूप रसिकदास कहा कहे बाढ्यो अति आनंद तहां प्रेम सिंधुमाई ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३) भयो श्रीविठ्ठलके मनमोद ॥ पूरण ब्रह्म श्रीबालकृष्ण प्रभु धायलिये जब गोद ॥१ ॥ वारंवार विधु वदन बिलोकत फूले अंग न समाय ॥ बालदशाकी सहज माधुरी अचवत दृग न अघाय ॥२ ॥ यह सुख देखेही बनि आवे जानो रसिक सुजान ॥ दोऊ ओर सत शोभा बाढी विष्णुदासके प्रान ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४) आनंद भूतल परमहे आज ॥ श्रीविठ्ठलजुके गृह

प्रकटे श्रीबालकृष्ण महाराज ॥१॥ आश्विन वदी तेरसदिन शुभ अति हरखे भक्त समाज॥ स्नेहभाव पूरन करुणा निधि दैवी उद्धारन काज ॥२॥ अद्भुत सुन्दर घनश्याम प्रभु सब देवन शिरताज॥ रुक्मिणीमाजी गर्भ भये हरि धर्मकी राखन लाज॥३॥ रूप अगाध अपार महिमा कमलदल लोचन आज॥ पुष्टि भक्ति विस्तार करन हित आये प्रेमकी बांधी पाज॥४॥ बजत बधाई होत मंगल ध्वनी निजजन सुखके काज॥ श्रीद्वारकेश रिझवत नित्य लीला दासनके उर गाज॥५॥

□ राग सारंग □ (५) सुनो सखी गोकुल बजत बधाई॥ श्रीविट्ठल गृह प्रकट भये श्रीबालकृष्ण सुखदाई॥१॥ सुंदर स्वरूप कोन गुण वरने लीला सब जगछाई॥ जे चरणनतर पर रहत जन तिनहीके मन भाई॥२॥ जो सुख इंद्रादिककों दुर्लभ सो प्रभु प्रकट दिखाई॥ सरस रंग गोकुलगलीयनमें आनंद उमंग बढाई ॥३॥

□ राग सारंग □ (६) जयति श्री बालकृष्णजी विठ्ठल सुवन विविध रस भाव कर जीव तारे। नित्य रमणीय कमनीय नौतन वस्त्रभोग रागादि सेवा विचारे॥१॥ स्वीय हित करनको प्रीति जिय धरनको भजन हिये करनको आप कीने। सकल सामर्थ्य गुन जान जिय सर्वदा सरस रंगी जब रंग भीने॥२॥

□ राग पूर्वी □ (७) श्रीविट्ठलनाथके प्रकटे तृतीय पुत्र श्रीबालकृष्ण सुखरासी॥ महा पराक्रम रूप बिराजत प्रफुलित आनन दरसत सब दुख नासी॥१॥ कदली खंभ बिराजतद्वारे मंगल कलश धरत दीपके ओल॥ अगर धुपकीने चहुंदिशही मधुर सुगंध अतोल॥२॥ लीये धाम अरगजा घसिकें मोतिन रत्नन चोक पुराये॥ ध्वजा पताका बिराजत अद्भुत कहा मुखवरनों शब्द सुहाये॥३॥ परमानंद छके नरनारी निर्तत सब मिलि दे कर तारी॥ बाढी छबि अति कहि न सके कोउ एक मुख रसना रसिकदास बलहारी॥४॥

□ राग अडानो □ (८) प्रकटे तृतीय पुत्र श्रीविट्ठलेशके श्रीबालकृष्ण

प्रफुल्लित मुख ॥ तेरस आश्विन कृष्ण सुखद अति दरसत परसत दुरि गये सब दुख ॥१ ॥ श्रीविठ्ठलनाथ निरख मन हरखे गणिक बुलाय लग्न सुधवायो ॥ ज्ञाति बुलाय लई तबही सब मंगल न्हान चले अतिहीं हरख मन छायो ॥२ ॥ सबही सजे देवनसे लागत ज्यों तारेन मध्य चंद सुहायो ॥ चमर ढुरत रविवदनी अद्‌भुत पंखा मोर छल श्वेत छत्र शिर छायो ॥३ ॥ रतन खचित छडी कर लीने बोलत छडीदार मधुरे सुर ॥ ध्वजा पताका लिये केऊ जन चले हरखसों सजे साज सबहीपुर ॥४ ॥ झांझ मृदंग बीन मुरलीसुर बाजत गावत मंगल साज सजे सब ॥ ढोल निशान नगारे भेरी अरु सहनाई बाजत चहुंदिश शब्द छयो तब ॥५ ॥ पहुंचे आनि तीर रविजाके बोल लिये बडडे कुल प्रोहित ॥ स्नान करावत मंत्रन पढिके जेसी वेदविधि करत श्रीविठ्ठलनाथ बडे चित ॥६ ॥ देव ऋषि अरु पितर पुजावत नांदीमुख षट दश प्रचार कर ॥ विप्र पढत आसीस मंत्र चिरजीयो सदा यह राज करो भुवि ऊपर ॥७ ॥ महा उदार श्रीवल्लभनंदन देत दान सबहिन गो हय गज ॥ धरिणी धाम कनकमणि भूषण मोतिन माला चले संग सबही सज ॥८ ॥ पोहोंचे गृह अति आनंद छाये बांटत सबकों खोल बधाई ॥ कहाबरनें यह रसिकदास मुख हीन मूढमति शेष विधि पार न पाई ॥९ ॥

श्री गोकुलनाथजी की बधाई (मार्गशीर्ष सुदि ७)

□ राग बिभास □ (१) आयो आयो आनंद रंगरंग सुन्यो रुक्मिनी सुत जायो ॥ जुवतिनके मन में व्हेरहे हँसि हँसि मंगल गायो ॥१ ॥ सब सुरति संग लगाये प्रफुल्लित मुख निरखी हीये हाव भाव कटाक्ष कीयो मनको भायो ॥ वृंदावनचंद श्रीवल्लभ रसही रसमें काम अनेक लाड लडायो ॥२ ॥

□ राग ललित □ (२) प्रकटे श्रीगोकुलनाथजी श्रीविठ्ठलनाथके धाम बधाई ॥ उग्र कियो यश या भूतल पर माला तिलक दृढाई ॥१ ॥ गुण लावण्य माधुरी मुख छबि देख अनंग लजाई ॥ दीनदयाल महा करुणामय

कृष्णारूप सरसाई ॥२ ॥ निज दासनपर करत सदा हित कीरति सब जग छाई ॥ अति उदार श्रीविठ्ठलनंदन रसिकदास शिरनाई ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (३) भयो श्रीविठ्ठलके मन मोद ॥ परम पुन्य फल श्रीगोकुलेश सुत धाय लिये जब गोद ॥१ ॥ बारबार बिधु बदन विलोकत फुले अंग न मात ॥ बाल दशाकी नवल माधुरी अचवत द्रगन अघात ॥२ ॥ और काज बिसराये चाहत चुटकी दे किलकावत ॥ छिनु छिनु होत पुलकित तन हरखि हरखि हीय लावत ॥३ ॥ यह सुख देखेही बनीआवे को कही सके सुजान ॥ चहुं ओरकी अद्भुत शोभा कृष्णदासके प्राण ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (४) आगम जन्म महोत्सवके दिन भयो सबन उत्साह ॥ मंगल साज करत मनोरथ अपने अपने चाह ॥१ ॥ नित्य नौतम सिंगार करत मन बाढ्यो मोद अथाह ॥ आई आई इह भांति सुहागिनि निरखत वल्लभनाह ॥२ ॥

□ राग देवगंधार □ (५) आज जनमदिन वल्लभलाल ॥ तेल सुगंध चुपरि सोंधेसों न्हाये रसिक रसाल ॥१ ॥ केसर रंग उपरना धोती ओर मुक्ताफल माल आरतिको सुख देहु वृंदावन भक्त जनन प्रतिपाल ॥२ ॥

□ राग देवगंधार □ (६) यह सुख कयों हु कहत न आवे ॥ सुखनिधि रससों न्हात रसही रस भाग्य रास जो न्हावे ॥१ ॥ निज जन निरखि निरखि सुख पावत वल्लभरस बरसावे ॥ भक्ति कृपा पूरन तें बल अपने नेनन निरखि सुख पावे ॥२ ॥

□ राग देवगंधार □ (७) अब जग प्रगटे श्रीगोकुलनाथ जु तब हुते श्रीरघुनाथ जु ॥छंद.॥ रघुनाथ व्हेके धर्मपाले नाम लीये जग तरें। अब दया श्रीगोकुलनाथजुकी जीव कलिके निस्तरे। फिर करो गोकुल राजलीला भक्ति तुमतें जानीये। हरिदास जन तुम चरन बंदे शरन अपने आनीये ॥१ ॥ चाल ॥ प्रभु यश अधिक बढ्यो संसार में ठाडी सिद्धि सर्वे

प्रभुद्वार में ॥छंद ॥ द्वारमें सब सिद्धि ठाडी देवलोक बखानीये। दृढ भक्ति श्रीगोकुलनाथजुकी ओर बात न जानीये। जे नाम पावे सुजश गावे धर्मके व्यवहार में। हरिदास जन तुव चरन वंदे जश वह्यो संसारमें ॥२ ॥चाल ॥ प्रभु जे सरन आये तिन गति पाई प्रभु तुम दयानिधि भक्ति दीखाई ॥छन्द ॥ करी भक्ति एक श्रीनाथजुकी दीन जानी दया करी। निज भजन करी जे लोक पाले नाथ मनमें यह धरी। स्थिर रहो श्रीविठ्ठलेश नंदन अस्तुति सब जग करे। हरिदास जन तुम चरन वंदे शरन आये ते तरे ॥३ ॥चाल ॥ प्रभु सुख फलन फली इन्द्र लजानो श्रीगोकुलनाथ धनी कृष्ण समानो ॥छन्द ॥ कृष्ण जो जश जगत् प्रगटे धर्म यातें स्थिर रहे। प्रगट परमानंद स्वामी कछुक जन विनति करे। करी कृपा अपनी भक्ति दीजे कहों कीर्ती हों भली। हरिदास जन तुम चरन वंदे सहज सुख शाखा भली ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (८) अगहन सुदि सातें शुभदिन आयो ॥ श्रीवल्लभपूत रानी रुक्मिनी जायो ॥ जुवती सब मिली मंगल गायो ॥ श्रीगोकुलनाथ हमारेंजु आयो ॥छंद ॥ श्रीगोकुलनाथ कलिमें भक्त मन भायो कीयो ॥ धन्य धन्य कूंख धन्य धन्य ए प्रगट जन्म जहां लीयो ॥ बांधती बंदनवार घर घर होत आनंद बधाईयो ॥ वृन्दावनको चंद श्रीवल्लभ सप्तमी दिन आईयो ॥१ ॥चाल ॥ आरती करि करि सब मुख देखे ॥ जीवन जन्म सुफल करी लेखे ॥ देत आशिष सबे व्रजबाला ॥ जीवों श्रीविठ्ठलनाथको लाला ॥छंद ॥ जीवों श्रीविठ्ठलनाथ को सुत सूल जन मनकी हरी ॥ कहत न आवे निमिषको सुख आज शुभदिन शुभ घरी ॥ एक वदन उघारि निरखें अंगोअंगही पेखीये ॥ वृन्दावनको चंद श्रीवल्लभ आरती करी मुख देखीये ॥२ ॥चाल ॥ जित तित होत कुलाहल भारी ॥ नाचत गावत सब नर-नारी ॥ सर्वस्व देत कछु ए न संभारी ॥ मग्न भये तन मन धनवारी ॥छंद ॥ वारति तन मन प्राण पियपर निरखी मुखकी शोभा ॥ कहत न आवे निमिषको सुख लालची रस

लोभा ॥ मोहनी सब अंग जाके एसी लीलाधारी ॥ वृन्दावनको चंद श्रीवल्लभ होत कुलाहल भारी ॥३ ॥ चाल ॥ अजन जन्म धरकें भुव आयो ॥ निगम जाको पार न पायो ॥ रानी रुक्मिनि ले गोद खिलायो ॥ भक्तन आनंद लाड लडायो ॥ छन्द ॥ आनंद लाड लडायो भक्तन कियो मनको काजजू ॥ सकल शोभा सहित राजे महाराज राजाधिराजजू ॥ जेसेही जेहि भांत चाहत तेसेही तिन पायोहे ॥ वृंदावनको चंद श्रीवल्लभ जन्म धरि भुव आयो हो ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (९) उत्सव अलौकिक कह्यो न जाई ॥ भक्तनके उर सदा बसत प्रभु प्रगट भये सुखदाई ॥१ ॥ श्रीगोकुलेश प्रागट्य सर्वोपर लीला रसिक सुहाई ॥ भक्ति रसिक रसमय प्रभु प्रगटे वल्लभदास महा निधि पाई ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (१०) हमारे अलौकिक उत्सव आयो ॥ प्रागट्य अलौकिक वल्लभ लालको दशों दिश मंगल छायो ॥१ ॥ वरस दिनालों मंगल इच्छित सोमंगल दिन पायो ॥ वल्लभदास जनमदिन राजे घरघर होत बधायो ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (११) श्रीवल्लभलाल अति सुखदाई प्रगटे भाग्य हमारे ॥ भक्तरसिक न्हवावे केसर रसरंग व्हे रह्यो भारे ॥१ ॥ श्रीअंग सुंदर रंग व्हे रहे शोभा मोपे कही न जाये ॥ प्रगटे श्रीगोकुलनाथ भक्त हित वल्लभदास महा निधिपाये ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (१२) आज आनंद भरी डोलत जुवती जन वीथन मंगल गावे ॥ विविध भांत भूखन पहरे तन नव सिंगार बनावे ॥१ ॥ गृह गृहतें निकसी मिलि युवती प्रफुल्लित तनमन मोद बढावे ॥ अंग अंग रस रंग उमगि अति भवन लालके आवे ॥२ ॥ आंगन आय भर्यो चहुं ओरतें निरखि निरखि लालन सुख पावे ॥ यह उत्सव परम सुखद सुख वल्लभके मन भावे ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१३) जन्म महोत्सवके रस बोलत अपने अपने

काज ॥ मंडप चित्र वहु भांतिन करत सुहागिन साज ॥१ ॥ आनंदमोद सकल आनन जुरि रह्यो रूप नगराज ॥ कहत परस्पर हँसि हँसि हितसों अति मंगल सबदिन गाज ॥२ ॥ कोउ काहुसों मागत हठ करि देत लेत नहि लाज ॥ वल्लभलाल रसालके सोहागवर फुल्यो फिरत समाज ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१४) रुकमनी सो दिन आयो आज ॥ जा दिनको तुम सबदिन संचिकें राख्यो हो सब साज ॥१ ॥ अब खरचो विलसो बहु पूजो मनको काज ॥ वृंदावनको चंद प्रगट भयो सब गोकुल सिरताज ॥२ ॥ चाल ॥ अबजग प्रगटे श्रीगोकुलनाथजी तब हुते श्रीरघुनाथजु ॥ छंद ॥ रघुनाथ व्हेकें धर्मपाले नाम लीये जगतरें ॥ अब दया श्रीगोकुलनाथजीकी जीव कलिके निस्तरे ॥ फिर करो गोकुल राजलीला भक्ति तुमते जानिये ॥ हरिदास जन तुम चरनवंदे शरन अपने आनीये ॥२ ॥ चाल ॥ प्रभु यश अधिक बाढ्यो संसारमें ॥ ठाडी सिद्धि सबें प्रभु द्वारमें ॥ छंद ॥ द्वारमें सब सिद्धि ठाडी देव लोक बखानिये ॥ दृढ भक्ति श्रीगोकुलनाथजीकी ओर बात न जानीये ॥ जे नाम पावे सुजस गावे धर्मके व्यवहारमें ॥ हरिदास जन तुम चरनवंदे जश वढ्यो संसारमें ॥ २ ॥चाल ॥ प्रभु जे शरन आये तिन गति पाई ॥ प्रभु तुम दयानिधि भक्ति दिखाई ॥ छंद ॥ करी भक्ति एक श्रीनाथजुकी दीन जानी दया करी ॥ निज भजन करि जे लोक पाले नाथ मनमें यह धरी ॥ स्थिर रहो श्रीविठ्ठलेशनंदन अस्तुति सब जग करे ॥ हरिदासजन तुमचरन वंदे शरन आये ते तरे ॥३ ॥चाल ॥ प्रभु सुखफलन फली इंद्र लजानो ॥ श्रीगोकुलनाथ धनी कृष्ण समानो ॥ छंद ॥ कृष्ण जो जश जगत प्रगटे धर्मयातें स्थिर रहे ॥ प्रगट परमानंद स्वामी कछुक जन विनति करे ॥ करी कृपा अपनी भक्ति दीजे कहों कीर्ति हों भली ॥ हरिदास जन तुम चरन वंदे सहज सुख शाखा फली ॥४ ॥

□ राग धनाश्री □ (१५) जायो पूत रुक्मिणीजु सब ठोर बधाई बधाई ॥ जग उद्योत परम मंगल निधि मंगल महानिधि पाई ॥१ ॥ फूली फिरत बाल

बिथनि सिंगार सुहाग सुहाई ॥ रूप रासि हुल्लास बढे तन उर आनंद न समाई ॥२ ॥ कंचन कलस थार मंगल कर लीनो साज बनाई ॥ उमडी सिंधु तरंगन रंगन भवन लालके आई ॥३ ॥ नाचत गावत अति प्रमुदित मन सोभा बरनी न जाई ॥ देत अशीश निहारि लाडिले वल्लभ वर रसदाई ॥४ ॥

□ राग धनाश्री □ (१६) श्री वल्लभ प्रगट भयो रुक्मिनी मन आनंद लयो ॥ अगहन सुदिसातें शुभदिन अति श्रीविठ्ठल घर जन्म लीयो ॥१ ॥ यह सुनि सुनि सब जुवती आईं गावत मंगल चार बधाये ॥ अति उत्साह आय मुख नीरख्यो भये सबनके मनके भाये ॥२ ॥ देत असीस रहसि मन सुंदर चिरजीयो यह लाल तिहारो ॥ श्रीगोकुलेश पूरन निधि मंगल वल्लभदास नेननको तारो ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (१७) यह आनंद सबको बडभागी ॥ सब मंगल शिरमोर महोत्सव आयो परम सुहागी ॥१ ॥ घर घर अति उत्साह मोद मन रहे प्रेम रंग पागी ॥ नख सीखलों शिंगार सज्यो हे सुंदर अति अनुरागी ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (१८) आनंद भर डोलत व्रजबाल ॥ कुमकुम तिलक कटोरन भर भर मंगल देत सबनके भाल ॥१ ॥ हसत परस्पर प्रेम मुदितमन पूरत प्रेम रसाल ॥ फूलनसो निरखत वल्लभ वर रसिक रसीले बाल ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (१९) फूली डोलत मालनि बांधत वंदन वार द्वारे द्वारे ॥ वल्लभ नौतम देत पराग रंग भांति विचित्र संवारे ॥१ ॥ कदली स्थंभ रोपे दुहुं ओरन झुक झुक रही पातनकी डारे ॥ अति आनंद प्रगट भई सोभा यह रूप निहारे ॥२ ॥ भूषन बसन तहां पहराये सुंदरी करि मनुहारे ॥ वल्लभलाल लडेंतेको जन्म उत्सव आज हमारे ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (२०) खुले द्वार आनंद प्रगट भयो निरखि लाल मुख

सुख पायोरी ॥ रति विलाससो विहँसि रहे अंग नेन सलोल रस भरी आयोरी ॥१ ॥ जुवती के सिंगार सिरोमनी भूषण भूषीत तन पायोरी ॥ रीझि रीझि प्रीय वल्लभ तन रुचित प्रेम रस उपजायोरी ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (२१) महोत्सव फूलन फूले आयो ॥ मनोरथ इच्छत आजु हमारे लाल रुक्मिनी जायो ॥१ ॥ नव नवरंग सिंगार सुहागिन सुहागिन अंग सुहायो ॥ आनंद मंगल निर्तत डोलत मोदही मोद बढायो ॥२ ॥ कंचनथार कलश केशर भरि मंगल साज बनायो ॥ घर घरतें निकसी उमडे रस गावत रंग बधायो ॥३ ॥ आईं सब सुंदरी मंदिर आंगन उत्साह छायो ॥ करत कल्लोल अलोल परस्पर हरखत हृदये समायो ॥४ ॥ देत अशीश परम प्रमुदित मन यह सुख सुबस बसायो ॥ पूरन काम निरख सचु पावत वल्लभ मनको भायो ॥५ ॥

□ राग आसावरी □ (२२) अगहन सुदि सातम शुभ दिन आयो ॥ श्रीवल्लभ पूत रानी रुक्मिणी जायो ॥१ ॥ कही कृष्णदासी यों कग्कें बुलायो ॥ श्रीगोकुलनाथ हमारें आयो ॥२ ॥ प्रगट प्रताप नितही नित छाजे ॥ श्रीरुकमनि गोकुल मध्य राजे ॥३ ॥ यह सुन भक्त सबे उठिधाये ॥ सहज सिंगार कीये मन भाये ॥४ ॥ प्रमुदित गीत जन्मके गाये ॥ ले ले मंगल चार बधाये ॥५ ॥ बालक वृद्ध तरुन नरनारी ॥ नाचत देत परस्पर तारी ॥६ ॥ मगन भये तन लाज विसारी ॥ मिल मिल नवल भरत अंकवारी ॥७ ॥ कुमकुम तिलक सबनकों दीने ॥ डोलत तेल फुलेलन भीने ॥८ ॥ भूषन बसन नये नये आये ॥ आप आप में सब पहराये ॥९ ॥ पीताम्बर आभूषण जे ते ॥ गिने नहिजात बनाये ते ते ॥ १० ॥ फूले अंग अंग अति रसमाते ॥ चले साजले प्रीय हि सुहाते ॥११ ॥ आरती पुरी थार ले आई ॥ मोतीनसों बोहोभांति बनाई ॥१२ ॥ केशर भर कलश वहु साथन ॥ ले कर फुलेल सोंधे सब हाथन ॥१३ ॥ वैष्णव भीड भई अति गाढी ॥ उमंगि चले सब अति रति बाढी ॥१४ ॥ कलोल करत त्रियगन फूले ॥ ज्यों ज्यों आवत प्रीय अनुकूले ॥१५ ॥ प्रमुदित अंग प्रकट भई

शोभा ॥ लाल निहारनकों मन लोभा ॥१६ ॥ यह बिधि सब मंदिरमें आये ॥ वल्लभ निरखत नेन सिराये ॥१७ ॥मुख जोवे और देहि आसिषन ॥ चीरजीयो तुम कोटिक बरसन ॥१८ ॥ गावें सब मिली अति बडभागी ॥ पूरे भाग्य सुहाग सुहागी ॥१९ ॥ पूरे मनोरथ मनके भाये ॥ गोकुलेश पूरन वर पाये ॥२० ॥ अती रस भरी सब मिलि गावे ॥ दुंदुभी नाद अरु ताल बजावे ॥२१ ॥ अति उत्साह पट भूषन वारे ॥ वारि वारि युवतीन पर डारे ॥२२ ॥ विवस भये कछु ओर न जाने ॥ प्रेम उमंग मन काहू न आने ॥२३ ॥ बाजे महा घोर सों बाजे ॥ आनंद मय सब गोकुल गाजे ॥२४ ॥ मनके चीते सब सुख भये ॥ प्राण वल्लभ के नियरे गये ॥२५ ॥ गादी पर राजे सुंदर वर ॥ अति प्रफुल्लित आनंद आनन भर ॥२६ ॥ अति प्रसन्नता अंगअंग अति राजे ॥ उत्सव जान भक्त हित काजे ॥२७ ॥ लगावत तेल सुगंध श्री अंगन ॥ अपने अपने राचे रंगन ॥२८ ॥ प्राणनाथ चोकी ढिग आये जब ॥ जयजयकार भयो दशों दिश तब ॥२९ ॥ तन मन प्रान प्रिया पर वारे ॥ एक चित मोहन रूप निहारे ॥३० ॥ केसरके रसही रस न्हाये ॥ श्रीअंग अद्भुत छबि सुहाये ॥३१ ॥ बहोर्यो जल जमुनाको लाये ॥ शीतल उष्ण समोय न्हवाये ॥३२ ॥ चरणामृत सबकोउ पावे ॥ भाजन भर भर ले ले आवे ॥३३ ॥ अंग अंगोछसों अंगुछाये ॥ पीळा सीप साजसों लाये ॥३४ ॥ केसरी रंग उपरना धोती ॥ पहेराये श्रवननमें मोती ॥३५ ॥ जूरा बाँधत बाहु विशाल ॥ पीळा बेठि तिलक दीयो भाल ॥३६ ॥ सुंदर पोंहोंची रतन जडाई ॥ मोतीनकी माला पहराई ॥३७ ॥ भांति भांति भूषण पहराये ॥ सोने छपी पांवरी उळाये ॥३८ ॥ पाँउधारे मंदिर प्रिय वल्लभ ॥ धन्य यह दिन पायो अति दुर्लभ ॥३९ ॥ यह छबि निरखत भयो आनंद अति ॥ पाट बेठाये श्री गोकुलपति ॥४० ॥ वेद पळत विप्र मिलि पांतन ॥ पूजे मर्कंडे बहु भांतिन ॥४१ ॥ चारि सुहागिन मिलि मंगल

गावे ॥ भरे भाव मन पियपें आवे ॥४२ ॥ प्रगट संजोय आरती लाई ॥ जगमग ज्योति चहूं दिश भाई ॥४३ ॥ भाल तिलक करि छबि ए निहारे ॥ अक्षत दे कर पींडी वारे ॥४४ ॥ बीडा दे कर आरती कीनी ॥ सर्वस्व वारति अति रस भीनी ॥४५ ॥ सोने रूपे फूलन लाये ॥ अंजुली भर भर मोती बधाये ॥४६ ॥ निरखी हरखी एसें उचरी ॥ धन्य यह दिन धन्य यह घरी ॥४७ ॥ जयजयकार करें सब ठाडे ॥ महा परम सुख आनंद बाढे ॥४८ ॥ कोउ आंगन कोउ छजे अटारी ॥ गावें मंगल आनंदकारी ॥४९ ॥ पाउं धारे वल्लभ रस भरे ॥ भक्त भावे सब मनमें धरे ॥५० ॥ बैठकमें वल्लभ अति राजे ॥ शोभा सकल स्वरूप बिराजे ॥५१ ॥ श्री मुख हँसि आज्ञा दीनी तब ॥ वैष्णव वेगे न्हाय आवो अब ॥५२ ॥ बेठेआय भक्त अनुरागे ॥ शोभा डोलत अंग अंग लागे ॥५३ ॥ महा प्रसाद जलेबी पाई ॥ लेत सब आनंद न अघाई ॥५४ ॥ भयो उत्साह सबें मन भायो ॥ उमंग सिंधु रस उर न समायो ॥५५ ॥ गादी तकिया नौतन साजे ॥ श्रीगोकुलेश तहां आय बिराजे ॥५६ ॥ भूषन वसन अनूप अनूपें ॥ पहेरावत जुवति सुखरूपें ॥५६ ॥ केसर छिरके ओर छिरकावे ॥ मृगमद सोधों अंग लगावे ॥५८ ॥ सबहिनके कीने सनमान ॥ करी कृपारस दीने दान ॥ ५९ ॥ सब भांतिन वल्लभ सुख दीने ॥ सकल मनोरथ पूरन कीने ॥ ६० ॥ जो या रसको सुने अरु गावे ॥ महा उत्सवको अनुभव पावे ॥ ६१ ॥ वल्लभदास वल्लभ रस गायो ॥ भक्ति कृपा पूरन तें पायो ॥ ६२ ॥

□ राग आसावरी □ (२३) धन धन तेरी कूख रानी जू तू भाग सुहाग भरी । जायो सुत श्रीवल्लभ सुखनिधि सब सुख फलन करी ।।१।। और हु जे जनम कियो तुम तिन हु पे कछु नहि चाहो सरी । 'वृंदावन' को चंद प्रगट शुभ लछन शुभ घरी ।।२।।

□ राग आसावरी □ (२४) चढि चढि रही अटा घर घर घर गान करत व्रज

भामिनी। नौतम विधि पकवान सँवारति फिरत चपल गति दामिनी ॥१ ॥ चहुँदिस स्वर माधुरी मंगल धुनि होत द्योस ओर जामिनी। वल्लभलाल महोत्सवके रस भरी सकल अंग कामिनी ॥२ ॥

□ राग टोडी □ (२५) मोतिनकी माल उर हार सोहे मोतिनके चोकी मध्ये नायक बिराजें गोकुलेशरी ॥ रतन कंचन माल गिनतन कहालों गीनो पहोंची जराव सोहे मुद्रिका सुवेशरी ॥१ ॥ धोती उपरेना धरे केसरी पावरी ओढे बेठे हे रसिक सुंदर सुवेशरी ॥ श्रीविठ्ठल कुमार प्राण वल्लभ जन्मदिन अगहन सुदि सातें जान्यो देशदेशरी ॥२ ॥

□ राग टोडी □ (२६) नीको बन्यो मन्दिर सुंदर प्राणवल्लभको बेठे प्राननाथ देखे अखियां सिरतरी। मखमली छत और पिछवाई सब जरतारी सोहत सिंघासन बिछोना भांति भांतिरी ॥१ ॥ मोतिनको माल उर हार सुकुमार कंठ चोकी मध्य सुदेश गन पांतिरी। धोती उपरेना सुखदेना सोंधेसो लपटात पहुंची जराय कान कुंडलकी कातिरी ॥२ ॥

□ राग टोडी □ (२७) चोकी धरी चोक मध्य मज्जनको साज कीये भरे धरे कुंभ तहां सीतल उष्णोदक। आनंद विलाससों विलसें पिय अंग अंग शोभा विराजे आइ प्रेमको प्रमोदक ॥१ ॥ मुसिकात मुसिकात कहत मधुरी बात मधुर वचन अति रसिक विनोदक। मज्जन प्रान वल्लभ को देखे त्रिय मज्जन करत अति रसिक रसोदक ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२८) जयति नाथ गोकुलनाथ प्राणपति जननके मालमुद्रा धर्म सबन दीने ॥ वे शंका खाय सन्यास दंडीयको भूपदिल्लीश धर दंड कीने ॥१ ॥ सकल भुव मंडलाधीश चूडा नम्यो जान माहात्मय गुण शरण आयो ॥ जान अपवाद जिय मूढ निज वेशको आत्म बंचक कपट दूर धायो ॥२ ॥ जयति जयदेव तिहुं लोकमें धुनि भई फिरत विख्यात जग मांझ छाई ॥ सरस रंगी प्रभु ईशके ईशकी शरण कीये महासिद्धि पाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२९) केसरकी धोती कटि केसरी उपरेंना ओढें श्रीगोकुलेश ठाडे निज मंदिरमें सोहे ॥ सुंदर विशाल रूप भूषन सोहे अनूप अंग अंग शोभा देखि कोटि मदन मोहे ॥१ ॥ कुंडल बिराजे कान उपमाकों नाहिन आन भाव भरे लटकतहें या छबीकों कोहे ॥ घंटा झालर बाजे आरती हाथन राजे बार बार निरख मुख व्रजपतिको जोहे ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३०) सब उत्सवको उत्सव आयो। अति प्रफुल्लित आनंद मगन मन छिनछिन बढत सवायो ॥१ ॥ जर तारी पाटंबर अंबर ढेरही ढेर लगायो। निरमोलिक आभूषण लेले प्रान प्रिया पहेरायो ॥२ ॥ काहू कछु अभिलाष न राख्यो जो जाके मन भायो। आरति करि करि निरखि निरखि मुख सबको हीयो सीरायो ॥३ ॥ बरस द्योस लों घरघर मंगल साज बनायो। वृन्दावन मनोरथ पूरन करि श्रीवल्लभ लाल लड्यायो ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३१) प्रकट भये धाम श्रीविट्ठलाधीशके महा रस सुखद श्रीगोकुलाधीश ॥ शुक्ल अगहन सप्तमी वारादि महा शुभ जानि दुखहरन जगदीश ॥१ ॥ बजत बाजे सकल सुरन सह बहु भांत देव दुंदुभी बजत हरखतमन ईश ॥ करत तहां नृत्य तांडव भांति भेदसों स्तुति करत आये विधि नारद मुनिश ॥२ ॥ कुसुम वृष्टि करत पढत जयजय नमत सबही देव धरिणी धरणीधर शीश ॥ महामहिमा अतुल शेष नहि पावही पार याको कहा तुच्छ कवि ईश ॥३ ॥ महा यश प्रकट कीनो सकल धरणिपें कीये दृढ भक्ति पथ खंड दंडीश ॥ अतुल महिमा कहा तुच्छ मुख कहि शके रसिकको दास तुव शरण मन ईश ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३२) आज हमारे मंगलमाई ॥ प्रकट भये पूरण पुरुषोत्तम गोकुलेश सुखदाई ॥१ ॥ तिहुं लोकमें आनंद उपज्यो घरघर

बजत बधाई ॥ विष्णुदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति कहि गाई ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३३) प्रागट्य अतुल प्रकट भयो सुनके जहां तहांते सुंदरी उठ धाई ॥ बधाई बधाई बधाई कहतहें मोद भरी मंदिरमें आई ॥१ ॥ धन्य रुक्मिनी तेरी कूंख सुहागिनी भाग्यन यह निधि भूतल आई ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि अलौकिक या देखत हम पाई बधाई ॥२ ॥ मगन भई निज अंग न संभारति वारत तन मन प्राण समेती ॥ अनेक मनोरथ कीये भावते न्योछावर कर संपति देती ॥३ ॥ चिरजीयो जुग जुग यह बालक या घरकी सुख संपत्ति बाढो ॥ दर्शन दानकी भीक्षा मागत दास गोपाल द्वार रह्यो ठाडो ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३४) घरघर अति आनंद बधायो ॥ श्रीविठ्ठलनाथ गुसांईके घर रुक्मिनी ढोटा जायो ॥१ ॥ नर नारी मिल नाचत गावत भयो भक्तन मन भायो ॥ अपने प्राणनाथकों नेनन निरखत हियो सिरायो ॥२ ॥ देत असिस रहसि मनसुंदरी आनंद मंगल गायो ॥ धन्य धन्य मात तात तुम यह सुत पूरे भाग्य न पायो ॥३ ॥ रह्यो न मन अभिलाष कछु अब श्रीवल्लभलाल लड्यायो ॥ वृंदावनको चंद हमारो श्रीगोकुलनाथही आयो ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३५) मंगल गावत देत असीस ॥ निरखि निरखि उर लेत बलैया जीवो कोटि बरीस ॥१ ॥ धन्य रुक्मिनी तेरी कूंख सुहागिन एसो पूत दीयो जगदीश ॥ राज करो श्रीवृंदावन वल्लभ श्रीगोकुलके ईश ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३६) पूत भयोरी श्रीविठ्ठल ग्रह बाजत बाजे ताल ॥ नर नारी मील नाचत गावत वारत मुक्तामाल ॥१ ॥ छिरकत केसर चंदन सोंधे सगबगी रंगीहे बाल ॥ वृंदावनको चंद प्रगट भयो भक्त जनन

प्रतिपाल ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३७) बहोरि श्रीकृष्ण अबके श्रीगोकुल प्रकटे श्रीगोकुलनाथ ॥ परम प्रसन्न चतुर चिंतामणी षटगुन लीने साथ ॥१ ॥ निजपुर आज आनंद बधाई घरघर मंगल चार ॥ सजत सिंगार सकल व्रजबनिता बांधत बंदन बार ॥२ ॥ श्रीविठ्ठल मन मोद बढ्यो अति देत द्विजन बहु दान ॥ गोसुत सहित अनेक रतनसों को कहिसके प्रमान ॥३ ॥ मागध सूत पढे बंदीजन करत विमल गुण गान ॥ मिट्यो तिमिर अज्ञान सबनको उदयो कोटिक भान ॥४ ॥ धन्य धन्य अगहन मास सातें सुदी धन्य दिवस धन्य रात ॥ जयजयकार करत सुरनर मुनि कुसुम फूल बरखात ॥५ ॥ हरद दही प्रवाह केसरिको वैष्णव सोहत महान ॥ बिहारीदास बडभागी गावत गोकुलेश गुणगान ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (३८) श्रीवल्लभ प्रगटे भाग्य हमारे जू ॥ भये मनोरथ मनके चिते श्रीरुक्मिनीलाल निहारेये जू ॥१ ॥ कही न जाय अंगे अंगकी शोभा उमंगी रसनी धारे जू ॥ श्रीगोकुल पतिजूकी या छबि उपर व्रजदास अपनपोवारेजू ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३९) अंगो अंग आनंद श्रीरुक्मिणी फूली ॥ निरखतही श्रीवल्लभ मुख गयो सकल दुःख भूली ॥१ ॥ एसो ढोटा भयो न देख्यो काहूदेव समतूली ॥ वृंदावनको चंद प्रगट भयो भक्तन जीवन मूली ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४०) श्रीविठ्ठलनाथ बधाई दीजे ॥ राणी रुक्ष्मणीजी ढोटा जायो निरखि लाल बलैया लीजे ॥१ ॥ जाकें लिए श्रीगोवर्धन आयो ताकुं निज घर बेठे पायो ॥ वृंदावनको चंद प्रगट भयो श्रीगोकुलमणी रायो ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४१) श्रीवल्लभ सुतकें सुत जायो श्रीगोकुलेश सुखरास ॥

पुष्टिमार्ग पथ दृढ कर राख्यो श्रीगोकुलकीनो वास ॥१ ॥ सेवा कर निजजनही सिखावत बसे आय हरि पास ॥ श्याम सुंदर पद रज प्रतापतें गावतहें निजदास ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४२) तें पुतजायोरी आली श्रीगोकुलकी मनी ॥ दिपति तिहुं लोक वल्लभ सर्व शिरोमनी ॥१ ॥ नखमनिपर वारि डारों कोटिक दिन मनि ॥ वृंदावन रुक्मिनीजु दानदीने तिने आये जे मनि ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४३) रुक्मिनी जायो श्रीवल्लभ लाल ॥ अगहन सुदी सातें शुभदिन अति प्रकटयो भक्तन प्रतिपाल ॥१ ॥ कोन सुकृत कीने श्रीविठ्ठल श्रीगोकुलनाथ निहार्यो बाल । वृन्दावनको चंद उदय भयो भक्त जनन प्रतिपाल ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४४) सब कोउ लें चलोरी आज बधाई । श्रीरुक्ष्मिणिके पुत्र प्रगट भयो देखोरी तुम आई ॥१ ॥ कनक थार संवार आरति निरखो सुंदरताई । वृन्दावनको चन्द प्रगट भयो भक्त जनन मन भाइ ॥२ ॥

श्री गुसांईजी के सात लालजी की बधाई

□ राग सारंग □ (१) एसो पूत काहु नहि जायो । एसो रानी तेरो ढोटा बड़े भाग्य तें पायो ॥१ ॥ जाको अन्त न पावे कोउ सो तेरे घर आयो । वृन्दावनको चन्द्र प्रगट भयो जान्यो ताहि जनायो ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२) धन्य धन्य रानी रुक्मिनी तेरो भाग्य सबन तें न्यारो । जायो पूत सपूत पनोता कुलदीपक उजियारो ॥१ ॥ गोद लाय गावत हुलरावत उर लागत अति प्यारो । वृन्दावन चिरजीयो लाल यह श्रीगोकुल आंखन तारो ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३) पहेरामनी पहेरावत प्यारी ॥ पाग केसरी धोती उपरेना रंगी कवाय जर तारी ॥१ ॥ फेंटा पामरी फरगुल छायो कनक ज्योत शोभा न्यारी ॥ वल्लभदास पिय गोकुलेशवर वागो धरें छबि भारी ॥२ ॥

□ राग मारू □ (४) आज बधाई श्रीमद्‌विट्ठल गृह श्रीवल्लभ व्रज फिर आये हो। श्रीरुक्मिनी ढोटा जायो सुनि सब व्रज उठी धाये हो ॥१॥ नवसत साज सिंगार सुंदरी मंगलचार बधाये हो ॥ करन कनकथार कंचन मनि मुक्ता भरि भरि लाये हो ॥२॥ कुमकुम मांग करत शिर टीको बोलत कछुक लजाये हो ॥ चिरजीवो श्रीविट्ठल नंदन जे सुखदही गाये हो ॥३॥ धाम धाम ते टीको आयो राजत महेल में आये हो ॥ देखत रूप जगत बंदनकी इतउत दृष्टि भराये हो ॥४॥ श्रीविट्ठलनाथ नाम धर्यो हे फिर श्रीवल्लभ पाये हो। श्रीगोकुलनाथ भयो प्रतिपालन व्रज मिल दुंदुभी बजाये हो ॥५॥ मागसर मास सप्तमी उज्वल आनंद प्रेम बढाये हो ॥ जन हरिदास वांछित सदा जन्म यह गाये हो ॥६॥

□ राग मारू □ (५) आज बधावन आये श्रीविट्ठलनाथ वरेश प्रगट्या श्रीगोकुलेश ॥आज॥ मागसर मास सुहावनो तेमां सुदी सातम भलीपेर ॥ श्रीरुक्मिनी यहपुत्र जायो मंगल होत घेर घेर ॥१॥ केसर चंदन छांटणां ते शोभा कहीय न जाय ॥ चोक पूर्यो मोतिएं त्यां मानिनि मंगल गाय ॥२॥ कदली स्थंभ सुहावना द्वार हाथा अतिही सुरंग॥ तोरण बांध्यां नवपल्लवदल ललके सौ मली संग ॥३॥ वाजींत्र वाजे भेरन भेरी धोंसा गीडगीड बहुय ॥ चौदलोक गाजी रह्युं हो फूल्या रसीया सहुय ॥४॥ धोल गाये महिला सहु मली आवे बिविध प्रकार ॥ शणगार कीधा भूषण अंगे साडी सुंदर सार ॥५॥ अेणी भांते आवी जोया में श्रीवल्लभलाल ॥ आशिष दई दई वदन निहाले भक्त रसिक रसाल ॥६॥ नवराव्या केसर श्रीअंगे मेहेके तेल फुलेल ॥ प्रवाह चाल्यो रस तणो त्यां बहु विध सुखनी रेल ॥७॥ चरणामृत ले भगवदी सहु भाग्य फल्यां अति आज ॥ पाम्यां परमानंद वल्लभवर अविचल पति माहाराज ॥८॥ आरती करी लई तिलक सुहाव्यो मंगल करी सहु साज ॥ दांन आप्यां मन इच्छीत त्यां आव्यो अनेक समाज ॥९॥ न्योछावरि करि चरन समर्प्यो सुंदरि सर्वे प्राण ॥ ए प्रागट्य सर्वोपरिजानुं महद भक्त निधान ॥१०॥ ए उत्सव जो

कोई जाने तिन होय श्रेष्ठ स्वरूप ॥ वल्लभदास श्रीपुरुषोत्तम ए श्रीगोकुल केरा भूप ॥११ ॥
□ राग हमीर □ (६) बरसगांठि वल्लभलालकी हो सब मिल गाओ मंगलचार ॥ मागधसुत बदत बंदीजन चिरजीयो गोकुलनायक सब सुखदायक परमउदार ॥१ ॥ जो इच्छाकरी आवत पावत भूषण वसन जलद मनुहार ॥ जगवंदन श्रीविट्ठलनंदन व्रजजन हरखत वरखत आनंद धार ॥२ ॥
□ राग हमीर □ (७) मंदिलरा बाजत अनगन भांति श्रीविट्ठलजीके धाम । प्रगट भये पूरन पुरुषोत्तम भक्तन पूरन काम ॥१ ॥ बंदीजन जाचक चारन जश गावत हे निज धाम । गोविंददास जाय बलिहारी श्रीवल्लभ सुख श्याम ॥२ ॥
□ राग जेजेवंती □ (८) माई आज तो श्रीवल्लभलाल रंग भरे सोहना ॥ केसरकी धोती पहेरे केसरी उपरना ओढे तुलसीकी माला राजे गुंजा मनमोहना ॥१ ॥ चहुं ओर व्रजबाल निरखत छबि रसाल दास गोपाल फुले सुधिबुधि भूलनां ॥२ ॥
□ राग कल्याण □ (९) तुमतें शोभित शोभा होत ॥ राजतहे धोती उपरेंना तुलसी माल ओर मोत ॥१ ॥ वारों एक रोमकी छबीपर कोटि शशीनकी जोत ॥ वृंदावन वल्लभ नग जगमें ओर कांचकी पोत ॥२ ॥
□ राग ईमन □ (१०) श्रीवल्लभ राजाधिराज राजत रजधानी ॥ सुनी सुनी जे शरण आये गर्वित अभिमानी ॥ अतुलित अति तेज कीरति चहुं चक्र वखानी ॥ वृन्दावन चंद माल राखी जगजानी ॥२ ॥
□ राग कान्हरो □ (११) प्रगट्यो सबको वल्लभमाई ॥ भई न कबहू होय न ऐसी जेसी अब निधि पाई ॥१ ॥ घर घर मंगल होत श्रीगोकुल उर आनंद न समाई ॥ वृन्दावनकों चंद बिराजत रसिक जनन सुखदाई ॥२ ॥
□ राग कान्हरो □ (१२) चिरजीवो श्रीवल्लभ सुखदाई ॥ जेसें बलि

परसराम मार्कंडे आदि चिरंजीवि रहेत सदा ऐसें वल्लभमाई ॥१ ॥ ओर गंग यमुना ज्योंलों धरनी ध्रुवतारे तोलों दिन निरखी हों आई ॥ वल्लभदास बिराजे श्रीगोकुल मध्य्य भक्त सहित जुग जुग तुम केलि करो मन भाई ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (१३) सब मिली आवोरी आवो आंगन मोंतिन चोक पुरावो ॥ यह उत्सवहे नित्य हमारे आनंद मंगल गावो ॥१ ॥ श्रीगोकुलनाथ जन्मदिन आयो नेंनन निरखि हीयो सीरावो ॥ वृन्दावन मन आरति कर कर श्रीवल्लभ लाड लड्यावो ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (१४) सुंदरी आवोरी आवो आनंद मंगल मोद बढावो । महा ओच्छव सर्वोपरि उत्सव निरखी निरखी सुख पावो ॥१ ॥ श्रीगोकुलनाथ प्रागट्य दिन आयो भक्त सबे मीली लाड लडावो । वल्लभदास श्रीगोकुलेश प्रिय सब मिल रीझ रीझावो ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (१५) सैयर भाग्य जागेरी आज सबनके प्रगटे वल्लभलाल रस पागे । रतन जटित थार धरे मनि मानिक मोती भरे पिय पर वारि न्योछावर सबे अनुरागे ॥१ ॥ आनंदके जिय आनंद उपज्यो मंगलको यह रूप प्रगट भयो भक्तनके भाग्य सुहागे । धन्य दिन धन्य रात यह धन्य नक्षत्र अविचल घडी वल्लभदास वारि अपनपों सबे दुःख भागे ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (१६) श्रीविट्ठलनाथहे गहे बधाई बधाई राजत नेहमइहे । श्रीगोकुलनाथ सपुत भयो महीमंडलमांज बधाई भइ हे ॥१ ॥ आकाश पातालके लोक सबे मिलि गावे बधाई बधाई नइ हे । भवन भयों हरिदास लुगाइन रुक्मिनी तिनकों बधाई दइ हे ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (१७) श्रीविट्ठलनाथके भवनमें मंगल पूत भयोरी । रातहु मंगल प्रातहु मंगल मंगल गानतें मोह गयोरी ॥१ ॥ मंगल गाजत मंगल बाजत मंगल राजत नेह नयोरी । मंगल साज कीये हरिदासे मंगल

मंगल दान दीयोरी ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (१८) महा उत्सवको महा उत्सव भयो तब आयो शुभ दिन जीवनजीको। मंगल मंगल महा उत्सव उत्सव करे अचल अचल सुहाग सब सुखदाई जीको ॥१ ॥ परम उदार महा उदार रायही उदार राय आनंद महा आनंद निस सबहीको। पूरन मनोरथ प्रागट देखी आशिषन आशिष दई श्रीगोकुलेशजीको ॥२ ॥

□ राग नायकी □ (१९) रंग बधावनोरी व्रजमें श्री विठ्ठलजूके धाम॥ कृष्ण कमलदल नेन प्रगट भयो मोहन मुरति काम ॥१ ॥ नाचक गावत होत बधाई मंगल गावत वाम॥ विचित्र बिहारीजुको प्यारो प्रगट भयो सुंदर तन घन श्याम ॥२ ॥

□ राग नायकी □ (२०) प्रगट ब्रह्म पूरन या कलिमें प्रगटे श्रीगोकुलनाथ॥ पतित पावन मन भावनये जे पग परही धरत हस्त कमल ताके दे माथ ॥१ ॥ भवसागर अपार तारनकों अविलंब देत सब साथ॥ एसे महाप्रभु जाके अर्थ धर्म काम मोक्ष रहत सदा साथ ॥२ ॥

□ राग नायकी □ (२१) तेरी गति तोहीपें बनी आवे। जेसेको तेसेई जान्यो ज्यों आरसी दिखावे ॥१ ॥ जोग जाग जप तप तीर्थ व्रत योंही हीयो भ्रमावे। वल्लभ नाम लेही क्यों न चित्त दई जीवन मुक्ति कहावे ॥२ ॥

□ राग नायकी □ (२२) आज आनंद हे माई अब हां भये मनके भाये। परमानंद स्वरूप श्रीवल्लभ प्रगट भये तें घर घर होत बधाये ॥१ ॥ गावो मंगल गीत सब मिली फुली अंग न समाई। हमारे यह उत्सव सर्वोपर वल्लभदास महानिधि पाई ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (२३) हमारे जीवन उत्सव आयो। अगहन सुदि सातें यह करो मनोरथ अपने चितये श्रीवल्लभलाल मन भायो ॥१ ॥ जे जे इच्छित बोहोत दिननके सो यह दिन दुर्लभ पायो। वल्लभदास प्रभु प्रगट भये सुंदर मंगल गायो ॥२ ॥

माला तिलक प्रसंग

□ राग मारू □ (१) जयति धन्य विठ्ठलसुवन प्रकट वल्लभ बली प्रबल पनकरि तिलक माल राखी ॥ खंड पाखंड दंडी विमुख दूर कर हन्यो कलिकालतम निगम साखी ॥१ ॥ कपट सीपात जहांगीर वशकरि कह्यो धरत उर माल गोकुल गुसांई ॥ नहि कही शास्त्र श्रुति दोष तोहि होतहे दूरकर वेगि यह देहु दुहाई ॥२ ॥ कोप महिपाल उमराव ढिंग बोलिकें कह्यो सबदेश फरमान कीजे ॥ तिलक शिर भाल ऊरमाल जो धरत हैं ताहि सब मूलतें काढि दीजे ॥३ ॥ तब सकल स्वामी दिल्लीश को कोप सुन डरपि ततकाल माला उतारी ॥ नहिं कह्यो शास्त्र श्रुति वेद निज धर्म यह कह्यो श्री वल्लभ बडे बिरद धारी ॥४ ॥ तव जाय काश्मीर जहांगीरसों यों कह्यो माल निजधर्म सब श्रुति बतावें ॥ तजें नहीं ताही हम शीश घट प्राणलों छांड यह देश कहुं ओर जावें ॥५ ॥ तब कह्यो शाह तुम मुलक मेरेवसो तजो निजगामके माल कंठी ॥ वसे सोरम जाय सब वास गोकुल तज्यो तिलक अरु मालकों सुदृढ ग्रंथी ॥६ ॥ सलिल कालिंदी तट गांव गोकुल निकट नाव चढि शाह एक दिवस आयो ॥ कह्यो वेरान सब महल क्यों देखियत तब असफखान सब कहि सुनायो ॥७ ॥ गाम गोकुल गोकुलेश बसत यहां जाय अब बास सोरममें कीनो ॥ मालकाढी नहीं तिलक मुद्रा रही पत्र पात्शाहको मान लीनो ॥८ ॥ राख अपुनी कान अकबर हुमायु आन जगद्गुरु प्रकट संसार चीन्हे ॥ लिखो फरमान कहे शाह सन्मानकरि आय फिर बसो अपने ठिकाने ॥९ ॥ मिले स्वामी सकल संप्रदा चारके कंध सुखपाल धरी शीश नायो ॥ दई प्रभुमाल तिहिं काल सन्मान करि पेहेरि उर मुदित सब सुजस गायो ॥१० ॥ धन्य गोकुलईश प्रकट जगदीश तुम कियो पन प्रबल जिन धर्म धार्यो ॥ कोप महिपाल विकराल डर मेटिकें माल अविचल करी दुख निवार्यो ॥११ ॥ भयो जयकार विस्तार जस जगतमें आय फिर प्रथम गिरिधरन दरसे ॥ बिरह परिताप संताप सब मिटिगयो सुखद शीतल चरन कमल परसे ॥१२ ॥

लग्नदिन देखि शुभ आय गोकुल बसे प्रकट कीरत तिहुंलोक बाढी ।। नाथ विठ्ठल सुवन प्रकट वल्लभ भये गाय निजदासकोदास ढाढी ।।१३ ।।

श्री गोकुलनाथजी पलना के पद

□ राग रामकली □ (१) श्रीवल्लभ सुरंग पालने झूले ।। झोटा देत रुक्मिनी करगही निरखि नेन मन फूले ।।१ ।। कबहुंक चुटकी देत मगन मन ले बलाय समतूले ।। भक्त सबे निरखत नेनन भरि न्योछावरि करि मूले ।।२ ।। देत अशीश सकल व्रज सुंदरी चिरजीयो श्रीवल्लभ लाल ।। वृन्दावन शोभा निरखतही तन मन होत निहाल ।।३ ।।

□ राग रामकली □ (२) श्रीरुक्मिनी पालने झुलावे ।। बार बार वल्लभ वल्लभ गुन अपने सुतके गावे ।।१ ।। चुंबति मुख आनंद आनन पर ले बलाय उर लावे ।। वृन्दावन प्रगट्यो सुख शोभा काहू कहत न आवे ।।२ ।।

श्रीगोकुलनाथजी के बाललीला के पद

□ राग रामकली □ (१) रुक्मिनि चलन शीखावत पायन। सुतकी गहे अंगुलियाँ डोलत शोभा कोटिक भायन ।।१ ।। मणिमय जडित घूंघरू बांधे नाचत अपने पायन। वृन्दावनको चंद ए वल्लभ हरख बढावत मायन ।।२ ।।

□ राग रामकली □ (२) बाल विनोद करत वल्लभ वर हरखत सबको मन माई। रुक्मिनी गोदतें उतारी घुंटुरवन जब चलत छबी बरनी न जाई ।।१ ।। कीलक कीलकके आवत धावत फिर मुसक्यात द्वे दूधकी दतीयां देत दिखाई। वृन्दावनको चंद सकल शोभा भई श्रीगोकुल मनिराई ।।२ ।।

□ राग रामकली □ (३) ठुमकी ठुमकी चरन धरतरी मन हरत श्रीवल्लभलाल। रुनुझुनु रुनुझुनु पग नूपुर बाजे तब चाय चाय चलत चंचल चाल ।।१ ।। बोलत कछु अलबलाय समझ नहि जातरी अतिमधुर वचन रसाल ।। यह छबि निरखी निरखी रुक्मिनि बहु भांति वृंदावन वारत

मनी लाल ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (४) रुनझुन रुनझुन बाजत घुघरियां। पग धरनी धरत करत मातसों अरियां चंचल कर चरन चंचल मन चलत सुकुमार सुंदर नेन अश्रुबा ढरियां ॥१ ॥ रुक्मिनि बलि जाई अरु लेत बलाय मुख चुंबति अचर रज झरियां। वृंदावन चंद उपर कोटिक चन्द वारुं वल्लभ वल्लभ वदन निहारीयां ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (५) व्रजपति तुम बिन कोन करे। उत मघवा को मान भंग कर इत व्रज गोपिन गोप भरे ॥१ ॥ वेणु बजावत कर पर गिरिवर वाम भुजा ले शंख धरे। द्वारकेश प्रभु गौरवर्ण वपु निगम प्रसंसित विपद हरे ॥२ ॥

□ राग मारू □ (६) श्रीगोकुलनाथ के जनम उत्सव मागन आये मंगल परव। रुक्मिनी बहु दान दीने इच्छित अर्व खर्व ॥१ ॥ भिक्षुकको भेख कीयो हे कोविद गायन गुति जे ते तेते सर्व। वृंदावन चंद निरखी राजा वे चले वल्लभदास रसके गर्व ॥२ ॥

□ राग मारू □ (७) जयति धन्य विट्ठल सुवन प्रगट वल्लभ बलि प्रबल पनकरि तिलक माल राखी। खंड पाखंड दंडी विमुख दूर करी हन्यो कलि काल तव निगम साखी ॥१ ॥ कपटि सीपात जहांगीर वश करी कह्यो धरत उर माल गोकुल गुसांई। नहि कही शास्त्र श्रुति दोष तोहि होतहे दूर कर वेगि यह दे दुहाई ॥२ ॥ कोपी महिपाल उमराव ढिंग बोलिके कह्यो सब देश फरमान कीजे। तिलक शिर भाल उरमाल जो धरतहे ताहि सब मूलते काढि दीजे ॥३ ॥ तब सकल स्वामी दिल्लीशको कोप सुनि डरपि तत्काल माला उतारी। नहि कह्यो शास्त्र श्रुति वेद निज धर्म यह कह्यो श्रीवल्लभ बडे बिरद धारी ॥४ ॥ तब जाय काश्मीर जहांगीर सों यों कह्यो माल निज धर्म सब श्रुति बतावे। तजे नहि ताही हम शिश घट प्राण लों छांडी यह देश कहुं ओर जावे ॥५ ॥ तब कह्यो शाह तुम मुलक मेरे बसो

तजो निज गामके माल कंठी। वसो सोरम जय सब वास गोकुल तज्यो तिलक अरु मालको सुदृढ ग्रंथि ॥६ ॥ सलिल कालिंदी तट गाम गोकुल निकट नाव चढि शाह एक दिवस आयो। कह्यो वेरान सब महल क्यों देखियत तब असफखान सब कहि सुनायो ॥७ ॥ गाम गोकुल गोकुलेश वसत यहां जाय अब वास सोरम कीनो। माल काढी नहि तिलक मुद्रा रही पत्र पादशाहको मान लीनो ॥८ ॥ राखत अपनी कान अकबर हुमायु आन जगद्‌गुरु प्रगट संसार चिह्ने। लिखो फरमान कहे शाह सन्मान करी आय फिर बसो अपने ठिकाने ॥९ ॥ माल स्वामी सकल संप्रदाय चारके कंध सुखपाल शीश नायो। दई प्रभुमाल तिहिंकाल सनमान करी पहेरी उर मुदित सब सुजश गायो ॥१० ॥ धन्य गोकुल इश प्रकट जगदीश तुम कीयो पन प्रबल निज धर्म धार्यो। कोप महिपाल विकराल डर मेटिके माल अविचल करि दुःख निवार्यो ॥११ ॥ भयो जय जयकार विस्तार जस जगतमें आय फिर प्रथम गिरिधरन दरसे। विरह परिताप संताप सब मिटि गयो सुखद शीतल चरन कमल परसे ॥१२ ॥ लग्न दिन देखी शुभ आय गोकुल बसे प्रकट कीरति तिहुं लोक बाढी। नाथ विट्ठल सुवन प्रकट वल्लभ भये गाय निज दासको दास ठाढी ॥१३ ॥

श्रीरघुनाथजी की बधाई (कार्तिक सुद १२)

□ राग देवगंधार □ (१) श्रीविट्ठलनाथकें आज आनंद ॥ पंचम पुत्र भये श्रीरघुपति पूरण परमानंद ॥१ ॥ मोतिन चोक पुराये घरघर छिरकत अत्तर सुगंध ॥ बंदनबार बिराजत द्वारें मोतिन झूमक बंद ॥२ ॥ भये मुदित नाचत नरनारी गावत गीत सुछंद ॥ रसिकदास उरवसो निरंतर या गोकुलके चंद ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (२) श्रीवल्लभ सुतकें सुत प्रकटे श्रीरघुपति रस रूपरी ॥ श्रीस्वरूप मुख शोभा अद्‌भुत व्रजपति पूरण रूपरी ॥१ ॥ चलो सबे मिलि साज सिंगारि तन नाना भांति अनूपरी ॥ ते सबही मिलि धाई

आई राजत सुंदर रूपरी ॥२ ॥ निरखे आय रुक्मिणी सुतकों पोढे राजत सूपरी ॥ देत असीस सदा चिरजीयो रसिकदास शिर भूपरी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३) जयति रघुनाथ गुणगाथ विख्यात व्रज जीत पंडितकों शरण लीने ॥ शास्त्र सब जानि अभिमान करि वादीजन आये मद गर्व सब खंडकीने ॥१ ॥ कपट पट दूरि करि प्रकट लीला धरी भक्ति नव भाव युत दशम दीने ॥ जानकी रमण गुण कोन कवि कहि सके सरसरंगी सबे चित्त छीने ॥२ ॥

□ राग मारू □ (४) श्रीविट्ठलनाथ धाम अति आनंद प्रकटे श्रीरघुनाथ हो ॥ सुन धाये नर नारि मुदित मन ले समाज सब साथ हो ॥१ ॥ गावत मंगल गीत बधाई छिरकत दधि घृत क्षीरहो ॥ देह गेह भूले मन फूले नृत्य करत भूज भीरहो ॥२ ॥ बाजत झांझ पखावज बीना बिच मुरली कलघोर हो ॥ सुरपुर देव दुंदुंभी बाजत बरखत कुसुमन झोरहो ॥३ ॥ स्तुति कर जोरि करत ब्रह्मा शिव शेष न पावत पार हो ॥ धन्य भाग्य या धरिणी तलके प्रकटे श्रीनंदकुमार हो ॥४ ॥ धन्य द्वादशी धन्य शुभ मुहुरत धन्य कार्तिक सुदिमानहो ॥ धन्य शरण आवेंगे जे जन तिनके भाग्य निधान हो ॥५ ॥ धन्य सुयश गावेंगे जे जन तिनके भाग्य अपार हो ॥ रसिकदास आयो शरणागति ताके शिर कर धार हो ॥६ ॥

□ राग बिहागरो □ (५) श्रीविट्ठलके धाम श्रवण सुनि बाजत आज बधाई ॥ पंचम श्री रघुपति सुत प्रकटे लागत परम सुहाई ॥१ ॥ बाजत ढोल भेरि सहनाई ध्वजा पताका राजे ॥ द्वारन तोरन वंदन माला घृतदीपक छबि छाजे ॥२ ॥ कदलीखंभ कलश सोनेके मोतिन चोक पुराये ॥ उठत सुगंध झकोर चहुं दिश जल गुलाब छिरकाये ॥३ ॥ आये विप्र महाकुल प्रोहित करी वेद विधि भारी ॥ गणिक लग्न देखत मुख बोलत हे यह शिशु अवतारी ॥४ ॥ कहा कहूं गुण इनके एक मुख शेष न पावत पार ॥ भयो उदय पूरण शशि भुविपर व्रजजन प्राण आधार ॥५ ॥ सुन

श्रीविट्ठलेशमन फुले महा उदार रसरूप ॥ दीने दान सबन मन भाये गोधन बसन अनूप ॥६ ॥ बंदी मागध सूत गुणी सब आये करिकरि टोल ॥ गावत पावन यश रघुपतिको जय जय जय मुख बोल ॥७ ॥ किये अयाचक सबहिनकों श्रीविट्ठलेश बडदानी ॥ हयगज हेम धाम धरणी धन दीये करि सनमानी ॥८ ॥ देत असीस चले घरघरकों कीरत करत अपार ॥ रसिकदास गावे कहा मुखतें शेष न पावे पार ॥९ ॥

श्रीयदुनाथजी की बधाई (चेत्रसुद - ६)

□ राग बिभास □ (१) श्री विट्ठलगृह मंगलचार ॥ माता रुक्मिणी कूखि प्रकट भये श्रीयदुनाथ छठे सकुमार ॥१ ॥ जयजयकार भयो भुवि उपर बजत बीन मुरली करतार ॥ द्वारें भीर विप्र गुणियनकी गावत यश पावन नरनार ॥२ ॥ देत दान अतिही मन फूले श्रीविठ्ठल मन बडे उदार ॥ सुनिकें आन पर्यो द्वारें यह रसिक दासकी ओर निहार ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२) महा सुख छायो आज सुहायो श्रीविट्ठलेशके ओक ॥ ज्ञानरूप महाप्रभु प्रकट भये श्रीयदुपति या भुवलोक ॥१ ॥ ध्वजा पताका पोहोप माल मणि मोतिन पूरे चोक ॥ गाय सिंगार ग्वाल सब आये कृष्ण सुबल अरुतोक ॥२ ॥ झुंडन जुरि आईं व्रज तरुणी राजत अपने थोक ॥ प्रेम विवश भये कबहुंक गावत बांधितानकी झोक ॥३ ॥ जयजय बोलत डोलत चहुं दिश हरखभरे पुरलोक ॥ रसिकदास कहा बरणि सके मुख महा मूढ मति फोक ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३) जयति यदुनाथ व्रज सकल पावन करन धीर गंभीर गुन कोन जाने ॥ जयति गोकुल सुभग नित्य रमणीयजे भक्ति एकत्र करिवास ठाने ॥१ ॥ जयति द्विजवर तिलक मुकुट विख्यात मणि सोमयाज्ञीय कृत नित्य भ्राजे ॥ जयति श्री भागवत श्रवण वाचक करन पुष्टि पथ दृढ करन नीत राजे ॥२ ॥ जयति श्रीविट्ठल सुवन प्रेम विश्रांतकर विविध सेवाधर्म सबन दीने ॥ जयति व्रजबास हुल्लास कर जननमें रंगी

सबे रंगभीने ॥३ ॥

□ राग हमीर □ (४) श्रीविठ्ठलनाथके धाम बधाई॥ ज्ञानरूप प्रकटे श्रीयदुपति छठे सुबन सुखदाई ॥१ ॥ छठ अमल मधु मास सुखद ऋतु मधुपन रूप दिखाई॥ परम प्रवीण कृष्ण सेवा पर अतिकर भक्ति दृढाई ॥२ ॥ श्रीमहाराणी पति प्रिय पूरण अशरण शरण कहाई॥ देत अभय फल निजदासनकों कीरति त्रिभुवन छाई ॥३ ॥ कर्ता हर्ता कारण जगके पालत सुख दरसाई॥ गुण अनंत कहा बरनसके मुख रसिकदास शिरनाई ॥४ ॥

□ राग केदारो □ (५) प्रकट भये सुवन विठ्ठलेशके आज॥ कूखरानी सुभग रुक्मिणीकी मांझ शशिवदन यदुनाथ सकल शिरताज ॥१ ॥ बढ्यो आनंद चहुं ओर दश दिशनमें भयो मंगल अधिक रह्यो जगछाज॥ सुनत नरनारि फूले सकल नगरके लियो सबसाज सजि मंगल समाज ॥२ ॥ चले सब धाय सिंघपोर विठ्ठलेशकी तारी देदे नचत बजत बहुबाज॥ आयकीनो दरस विठ्ठल उदारको रसिकदास करत तहां शुभ काज ॥३ ॥

श्रीघनश्यामजी की बधाई

□ राग खट □ (१) प्रकट भये सदन दुख दवन विठ्ठलेशके सातमें सुवन घनश्याम अभिराम॥ कृष्ण तेरस मास सुभग मार्गशिर्ष नाम मध्य पद्मावती कूख सिरनाम ॥१ ॥ भयो दिश बिदिश आनंद अति रस छयो गयो दुखभाज मन भये पूरण काम॥ कहा कहों सुयश मुख एक रसना करी रसिकको दास नित्य करत परणाम ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२) जयति पद्मावती सुवन विठ्ठल तनय नाम घनश्याम मुख चंद्र सरखो॥ रुचिर अंग अंग बहु सजे भूषण वसन दरस करि ध्यान निज रूप परखो ॥१ ॥ सदा सेवो महा परम फल जानि यह मान बड भाग्य मन सबे हरखो॥ रसिकको दास शिरनाय वारवार पियुस रस नित्य बरखो ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३) जयति घनश्याम गुण धाम विश्राम जे वेद विधि विहित व्रत नित्यकारी ॥ भक्ति अनुरागिणी देत निजजननकों तेह प्रभु सकल लीला बिहारी ॥१ ॥ आप सेवाकरे भक्त जिय अनुसरे स्वीयजन जान गुण गान दाता ॥ मधुर रस पुंज रस कुंज रमणीय जे वस्तु निर्दोषके ध्यान धाता ॥२ ॥ शरण तेई सबनकी आन भटकत वृथा परम पुरुषार्थ जहां सकल पावे ॥ सरस रस रंग सुखकंद धन छांडिकें मूढ मतिमंद सोई आन धावे ॥३ ॥

□ राग गौरी □ (४) जयति घनश्याम रसरूप निज देह धरि प्रकट भये आप श्रीवल्लभ कुमार घर ॥ तरण तारण सकल दुख हरण सुख करन विरह अनुभव करन वैराग्यरूप धर ॥१ ॥ सकल पुर घर घरन सजे नाना साज ध्वजा कनक कलश तोरण माल कुसुमकी ॥ विविध चंदवा बँधे रंग रंगननके खंभ रभानके ओल धरत दीपकी ॥२ ॥ उभय दिशद्वारके कुंकुमन करि छाप रचे सथीये धूप अगर सौरभ रली ॥ अरगजासों लिपी छीरकि सौरभनीर मणिन मुक्तानसों चोक पूरत अली ॥३ ॥ बजत दुंदुभी आदि नाद चहुंदिश भयो देव बरखे कुसुम अतिही फूले ॥ करत जय जय सुमुख पढत अस्तुति सबे विवश भये नचत आनंद कूले ॥४ ॥ वेद ब्रह्मादि वद देत आसीस बहु चिरजीयो बाल निजजनन काजे ॥ रसिकको दास यह परम फल रूप लखि दोरि आयो पोरि दरस काजे ॥५ ॥

□ राग बिहागरो □ (५) जयति घनश्याम वपु प्रकट सप्तम तनय विरह रसरूप विठ्ठलेश निज धाम ॥ बजत बाजे विविध वेणु सुरसों मिले भयो सुर नाद निर्तत सुव्रज भाम ॥१ ॥ सुनत धाये सकल गुणी मागध सूत पढत द्विज वेद ध्वनि करत मंगल काम ॥ देत बहु दान सनमान करि सबनकों गज धेनु हय कनक धन बसन भूषण गाम ॥२ ॥ देत आसीस बहु करत जय जयकार चले करि दरस मन भये पूरण काम ॥ रसिक दास मति हीन कहाकहे सुजस रटत मुनिशेष विधि ईश निशदिन जाम ॥३ ॥

श्रीगोपीनाथजी की बधाई

□ राग नट □ (१) श्री लक्ष्मणसुत गृह बजत बधाई । प्रगटे श्री गोपीनाथ प्रथम सुत संकर्षण वपु माई ।।१।। छंद रूप नर रूप मनोहर कीनी जग दरसाई । कोटि अनंग रोम रोमन प्रति महिमा वेदन गाई ।।२।। अति उदार करुणामय अक्षर उग्र प्रताप सहाई । ऐसे जानि शरण आयो यह 'रसिकदास' सिर नाई ।।३।।

□ राग नट □ (२) श्री वल्लभ सूत परम प्रगटे प्रथम लीलारस भाव गुप्त जन जय जय श्री गोपीनाथ भक्तन सुखदाई । गावत है वेदोचार तोहू नही आवे पार महिमा कोई कही न सके विप्र वंश राई ।।१।। पुष्टि पंथ करनकाज प्रगटे हैं, भूमि आज गावत सब व्रज जन मिल मंगलमय बधाई । हरिदास वंश गावे बहुत कछु बधाई पावे देखत त्रिलोकी जन सब बलि बलि जाई ।।२।।

□ राग सारंग □ (३) अश्विन वदी द्वादशी सुभग दिन श्री लक्ष्मन सुत के - सुत जायो । हलधर रूप देखी श्री वल्लभ महागुनन अज्ञान गणिक बुलवायो ।।१।। लग्न सुधवाए सबही गृह सुन्दर मन ही मन अनही हरख बढ़ायो । कुल प्रोहित बुलवाए हरख सो मंत्र सब विधि वाँछन पढ़वायो ।।२।। जाति कर्म अरु नामकरण करी श्री गोपीनाथ यह नाम धरायो । देत अशीष विप्र मंत्र न पढ़ी श्री वल्लभ दिनो दान मन भायो ।।३।। कियो अजाचक सकल गुनीन को मन वांछित पूरण करवायो । अति उदार श्री लक्ष्मन नंदन देत दान सब हीन मन भायो ।।४।। श्री अडेल पुर में अति आनन्द चँहूदिश उमग्यो नाही समायो । बरस्यो आय चरण अदरी पर अनत ठोर काहू नही पायो ।।५।। घर घर तोरण वन्दन माला जय जय धुनि हरख उपजायो । रसिकदास अति दीन हीन मति कहा जाने रसना रस गायो ।।६।।

□ राग सारंग □ (४) घर घर आनंद होत बधाई श्री वल्लभ गृह प्रगट भये है, श्री गोपीनाथ कुँवर सुखदाई ।।१।। धन-धन अश्विन वदी द्वादशी दिन धन धन वार नक्षत्र सुहाई । धन धन भाग्य फूले भक्तन के धन धन कुख अक्काजू माई ।।२।। मंगल कलश बिराजत द्वारे घर घर तोरण माल बंधाई । कुमकुम अक्षत थार हाथ में ले ले गावत व्रज वधू आई ।।३।। टीको करत निहारत श्री मुख वारती आरती राई लोन कराई । जुग जुग राज करो यह ढोटा देत अशीष सबही मन भाई।।४।। जय जयकार भयो त्रिभुवन में देवन दुन्दुभी नाद बजाई । श्री वल्लभ सुत चरणकमल रज कृष्णदास न्यौछावर पाई ।।५।।

श्रीपुरुषोत्तमजी (श्रीगोपीनाथजी के लालजी की बधाई)

(भादरवा वद ८)

□ राग सारंग □ (१) श्री वल्लभ सूतके सूत प्रगटे परिपूरन पुरुषोत्तम नाम । श्री गोपीनाथ निरखी मन फूले मंगल गावत चहुं दिश वाम ।।१।। अति आनंद बढ्यो पूर सबही जै जै धुनि चहुं दिश उपजाई । विप्र वेद धुनि पढत सुरनते देत असीस जियो चिर माई ।।२।। श्री गोपीनाथ देत सबहिनको पट भूषन गो भू धन धाम । पूरत सकल मनोरथ जनके 'रसिकदास' कीनो परनाम ।।३।।

□ राग नायकी □ (२) प्रगटे श्री वल्लभ सूतके सूत श्री पुरुषोत्तम यह नाम ।। आश्विन कृष्ण अष्टमी शुभ दिन प्रमान श्री पाय किये शुभ काम ।।१।। बाजत ढोल दुंदुभी मुरली वीन मृदंग समाज ।। नृत्य करत नरनारी मुदित मन कहेत रही धरनीपर गाज ।।२।। देव कुसुम बरखावत चहुंदिश जे जे बोलत करे शिर नाम ।। रसिकदास कहा वरनि सके गुन सबहिनके परिपूरण काम ।।३।।

श्री हरिरायजी की बधाई (भादरवा वद ५)

□ राग भैरव □ (१) रास रसिक भाव रूप स्वामिनी स्वरूप रूप प्रकट भये अति अनूप श्री हरिराय ।। अनिही शुन्य जीवजानि करुणा महा चित्त आनि सुंदर नर देह धरी आर्य वंश आय ।।१।। गुण अपार कही न सके रसना अनंत लहो शिक्षा के पत्र कीये हमपें चितलाय । दानी सुनी दोरि पोरि शरण पर्यो रसिक दास मागत तांबुल दान दीजे मुख नांय ।।२।।

□ राग रामकली □ (२) प्रकटे श्रीविठ्ठलनाथ गुसांई निजकुलहीमें फेर ।। दे चर्वित तांबूल पौत्रकों निकट आपने टेर ।।१।। सो प्रभु कल्याणराय घर निज स्वरूप वपुधारी ।। श्रीहरिराय नामहे जिनको दीननके दुःखहारी ।।२।। निजजनके शिक्षाके कारण दृढ हरिभक्ति दिखाई ।। रसिकदास अति दीन हीन मति वारंवार शिरनाई ।।३।।

□ राग सारंग □ (३) श्रीकल्याणराय घर नीकी बाजत आज बधाई ।। प्रकटे श्रीहरिराय महाप्रभु श्रीविठ्ठल अतिरूप कहाई ।।१।। निज पथ दृढ अति करन काजही निजलीला सब प्रकट दिखाई ।।२।। निजजनके शिक्षाके कारण शिक्षापत्र किये प्रकटाई ।। अशरण शरण कहावत जगमें रसिकदास शिरनाई ।।३।।

□ राग सारंग □ (४) जय जय श्री रसिकराय रसिक रसकी निधि ।। ध्रुव ।।

भूतल पर प्रगट होय भक्तन के कलेश खोय । दई देवीजनन शिक्षा देत फलकी सिद्धि ।।१।। विप्रयोग रसनिमग्न लगावत प्रभु सो लग्न । दीन जान निजजन के ऊपर कीजै कृपा सब विधि ।।२।।

□ राग मालव □ (५) श्रीकल्याणराय घर प्रकटे श्रीहरिराय महारसरूप ।। आश्विन कृष्णा पंचमी शुभदिन रसिकराय मन आनंद रूप ।।१।। बाजत मंगलचार बधाई झांझ मृदंग ढोल सहनाई ।। नरनारी सब निर्तत आंई गावत गीत आनंद बधाई ।।२।। सुन धाये द्विज गणिक गुनीजन द्वार भई अति भीर ।। देत सबन मन पूरण करकें गो धन भूषणचीर ।।३।। देत अशीश चले घरघर प्रति सदा जीयो यह बाल ।। रसिकदासकों शरण राखिये मेटिये भव जंजाल ।।४।।

□ राग नायकी □ (६) प्रकटे श्रीहरिराय श्रीकल्याण रायके धाम ।। श्रीवृन्दावनचंद मनोहर रास रसिक लीला अभिराम ।।१।। लिये बोल द्विज निज कुल प्रोहित करत वेद विधि मन विश्राम ।। देव पितर नांदीमुख पूजत जोरत कर शिर नाम ।।२।। बाजत बीन मृदंग बांसुरी नृत्य करत हिलमिल सब वाम ।। गान करत मन मगन भई अति निशवासर बिसरी सब वाम ।।३।। ध्वजापताका तोरणमाला अगर चंदन घसि लिये ठाम ।। किये अयाचक सकल गुनीनकों धेनु धाम दीने मणि ग्राम ।।४।। देत अशीश सदाजीवो यह वसो श्रीगोकुलगाम ।। करो सदा द्रढ रतिपथ निजहित पतित पावन इनको हे नाम ।।५।। सुजस बखान सकत नहीं इनकों रटत शेष मुख अनुदिन जाम ।। सुमरण मात्र सकल अघ भाजत सेवत सकल होत मनकाम ।।६।। अति उदार कल्पतरु जनकी मेटतहे भुविधाम।। रसिकदास अति दीन हीन मति वारंवार करत प्रणाम ।।७।।

भोगी संक्रांति के पद

□ राग भैरव □ (१) भोर भये भोगी रस विलस भयो ठाडो ।। जागे जामनी जणाय भामिनी अंग अंग समाय स्वास शिथिल निडर देत आलिंगन गाढो ।।१।। घूमत रसमत्त गमन सुधेहु न डग परत वचन पगन छिनु छिनु चित चोप मोजन मांनो बाढो ।। अति रसभरे रसिक राय शोभा बरनी न जाय बलिबलि बिहारी नंददास प्रेम रंग काढो ।।२।।

□ राग मालकोस □ (२) बनठन भोगी रस बिलसनकों भोर भवन ठाडे पिय प्यारी ।। ओढे कवाय फरगुल जो परस्पर सीत समय सुंदर सुख कारी ।।१।। ऋतु हेमंत शिशिर दोर ठाडी लेकर सोंज विविध रुचिकारी ।। कृष्णादास प्रभुको मुख निरखत अति आतुर भये पिय प्यारी ।।२।।

□ राग मालकोस □ (३) भोगीके दिन अभ्यंग स्नान कर साज सिंगार श्याम सुभगतन ।। पुनि फूलि तिलवा भोग धरके परम सुंदर आरोगावत सब निजजन ।।१।। श्रीधनश्याम मनोहर मुरत करत विहार नित्य व्रज वृन्दावन ।। परमानंददासको ठाकुर करत रंग निशदिन ।।२।।

□ राग आसावरी □ (४) भोगी भोग करत सब रसको ।। नंदनंदन जसोदाको जीवन गोपीन मान पति सर्वसको ।।१।। तिलभर संग तजत नही निजजन गान करत मनमोंहन जसको ।। तिलतिल भोग धरत मन भावत परमानंद सुख ले यह रसको ।।२।।

□ राग पंचम □ (५) देख सखी मोहनमदन गोपाल ।। वाघो घेरदार शिर पगीया पहेरें मोजा लाल ।।१।। पचरंग कवाय छीटकी फरगुल उर धरें मनि माल ।। ले चोगान गेंद खेलन चले संग लीयें व्रजबाल ।।२।। करत आरती मात जसोदा गावत गीत रसाल ।। कृष्णदास प्रभु पर न्योछावर वारत मुक्ता माल ।।३।।

मकर संक्रांति के पद

□ राग बिभास □ (१) तरणि तनया तीर आवतहें प्रातसमें गेंद खेलत देख्योरी आनंको कंदवा ।। काछिनी किंकणी कटि पीतांबर कस बांधे लाल उपरेना शिरमोरनके चंदवा ।।१।। पंकज नयन सलोल बोलत मधुरे बोल गोकुलकी सुंदरी संग आनंद स्वछंदवा ।। कृष्णदास प्रभु गिरि गोवर्धनधारी लाल चारु चितवन खोलत कंचुकीके बंदवा ।।२।।

□ राग ललित □ (२) गिरिधर गेंद मांगत आय । सेजतें उठ झांकत इत उत बैठे जहां नंदराय ।।१।। मधुर वानी सुन सयानी आई रोहिनी धाय । 'कृष्णदास' के प्रभुकी मंगल आरती करत जसोमति माय ।।२।।

□ राग पंचम □ (३) कहत नंदरानी गोपालसों तातकों बुलाय लावो बडो परव उत्तरायन ।। द्विजनकों दान देंहो अशीश वचन पढेहों खेलन ना जावो लाल बेठ रहो आंगन ।।१।। यह सुन मोहन कियो सिंगार सखा संग लेकें चले खिरक गो दोहन आय देखे बिन परत न चेन ।। सूरश्याम बाबा सों कहत हैं जु आज कहा तिहारे मैया कही मोसों वह मोदक ले आवे भवन ।।२।।

□ राग पंचम □ (४) बोल पठाई श्यामपे जसोदा रोहिनी कीयो सनमान ।। अपनो परिकर सबे बुलावो मकरसंक्रांति बडो परव जान ।।१।।

रीझे गोपालपें दान करावहु तुमहो चतुर सुजान ॥ मन मान्यो सज सोंज करावहु भर भर तिल गुड धान ॥२ ॥ सब सखियन मिल मंगल गावत अपनो भवन निदान ॥ सूर श्यामकों अंक मध्य ले असिस पठाय दिजे बहुदान ॥३ ॥

□ राग पंचम □ (५) खेले सांवरो गोपाल गोप कुंवर के साथ गेंदुक चलाय अवनी लिये सुहाग। लीजो रे लीजो रे बोलत भांवते अनुराग ॥१ ॥ कुंडल हलन चूडामनि नूपुर झनकार। झुकी पाग सुंदर मुख पर सोभित श्रमवार ॥२ ॥ ऐसे ही मे मो तन चितवन कीनी मुसिकान। 'रामराय' गिरिधर 'भगवान' जीवन प्रान ॥३ ॥

□ राग धनाश्री □ (६) ग्वालिन तें मेरी गेंदचुराई ॥ खेलत आन परी पलकापर अंगियां मांझ दुराई ॥१ ॥ भुज पकरत मेरी अंगियां टटोवत छूवत छतियां पराई ॥ सूरदास मोहि येही अचंबो एक गई द्वयपाई ॥२ ॥

□ राग धनाश्री □ (७) गोपाल माई खेलत हें चोगान ॥ व्रज कुमार बालक संग लीने वृन्दावन मैदान ॥१ ॥ चंचल बाजि नचावत आवत होड लगावत आन ॥ सबही हस्त ले गेंद चलावत करत बाबा की आन ॥२ ॥ करत न शंक निशंक महाबल हरत नृपति कुलमान ॥ परमानंद दासको ठाकुर गुन आनंद निधान ॥३ ॥

□ राग धनाश्री □ (८) गोपी नेनसों नेन मिलावत ॥ मदन गोपाल छांड ग्वालनसों सन्मुख गेंद चलावत ॥१ ॥ लेय उठाय राधिका तिहिछिन गोपीजन मुसक्यावत ॥ लीनी घेर ग्वाल सब गोपी काहेन गेंद बतावत ॥२ ॥ कित डोलत इतरात ग्वालतुम चोरी आन लगावत ॥ कुंभनदास प्रभु गोवरधनधर बातन हीजु बनावत ॥३ ॥

मकर संक्रांति भोजन के पद

□ राग पंचम □ (१) भयो नंदरायके घर खीच ॥ सब गोकुलके लरकन के संग बेठे हें आये बीच ॥१ ॥ परोस थार धरे ले आगें सद्य मांखन घी

खीच ॥ परमानंद प्रभु भोजन कीनो अतिरुचि माग्यो ईछ ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (२) जानि परव संक्रांति नंद-घर गर्गादिक मिलि आये हो। देखि तहां व्रजराज मुदित मन भीतर भवन बुलाये हो ॥१ ॥ दोऊ कर जोरि किये पद बंदन करि सनमान बैठाये हो। सबहि विप्र मिलि वेद मंत्र पढि सब आसीस सुनाये हो ॥२ ॥ महरि जसोदा अति हरखित मन लालन उबटि न्हवाये हो। करि सिंगार दे विविध सामग्री मेवा गोद भराये हो ॥३ ॥ कहति जसोदा दोऊ भैया मिलि दान देहो मन भाये हो। आज परव संक्रांति को दिन खेलो सखन बुलाये हो ॥४ ॥ यह सुनि बचन हरखि बल-मोहन धाय महर पै आये हो। देखि मुदित 'व्रजराज' हुलसि के लीने कंठ लगाये हो ॥५ ॥

□ राग आसावरी □ (३) मात जसोदा परव मनावे ॥ भोगीके दिन तिल लडुवा ले लाडिले लालनकोंजु जिमावे ॥१ ॥ गोद बेठाय निहारत सुत मुख नानाविध के दान दिवावे ॥ कुंभनदास प्रभु गोवरधन धर निरख निरख सबही सुख पावे ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (४) बैठे व्रजराज गोद मोद सों गोपाललाल देत द्विजजन कों दान। व्रजवधू मङ्गल थाल साजि कर मे लिये गावत सुघर सुजान तरंग तान ॥१ ॥ आये निकट जसुमति के आंगन लाई भीतर भवन मांझ विविध भांति सों कियो सनमान। 'सूरज' प्रभु की महिमा सारी सुरत मंगाये व्रज-तरुनी पहिराये सब पठाई भवन कीन दान ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (५) भोजन कीजे जननी सुखदाई। ओदन खोचरी सुरुचिसों लीजे सांवरे कुंवर कन्हाई ॥१ ॥ पापर सरस सधानोपूरी रोटीबरी कढोजु बनाई। माखन मिश्री लीटी लडुवा सेव संजावले सरस मिठाई ॥२ ॥ सिखरन खीर विविध व्यंजन सिध बासोंधी धरी मिठाई। श्री विट्ठलगिरिधरन लाडीलो बीरी लेहो मुखवास सुहाई ॥३ ॥

□ राग धनाश्री □ (६) लाल कछु कीजे भोजन तिलतिल कारी हों वारी

हो। अब जाय बेठो दोऊ भैया नंदबाबाकी थारीहो ।।१ ।। कहियतहे आज संक्रांति भलोदिन करिके सब भोग संवारीहो। तिलहीके मोदक कीने अति कोमल मुदित कहत यशुमति महतारी ।।२ ।। सप्त धानको मिल्यो लाडिले पापर ओर तिलवरी न्यारी। सरस मीठो नवनीत सद्य आजको तिल प्रकार कीने रुचिकारी ।।३ ।। बेठे श्याम जब जेमनलागे सखन संग देदें तारी। परमानंददास तिहि औसर भर राखे यमुनोदक झारी ।।४ ।।

□ राग आसावरी □ (७) मलरा मठा खीचको लोंदा। जेवत नंद अरु जसुमति प्यारो जिमावत निरखत कोद ।।१ ।। माखन बरा छाछके लीजे खीच मिलाय संग भोजन कीजे ।।२ ।। सखन सहित मिल जावो वनको पाछे खेल गेंदकी कीजे। सूरदास अचवन बीरी ले खेलनको चित दीजे ।।३ ।।

□ राग कान्हरो □ (८) आज भलो संक्रांति पुन्य दिन ताते मोदक लेहो मेरे लाल। बरसाने ते न्योति बुलाई संग लिये व्रजबाल ।।१ ।। नीके धोय मधुर रस बांध्यो भरि-भरि राखे कंचन थाल। बैठो रतन जटित सिंहासन सखा संग लै अपुने ग्वाल ।।२ ।। खेलो बैठो आय परस्पर सखा मंडली जोरि गोपाल। आपुन खाओ देहो सबन कों करो परस्पर ख्याल ।।३ ।। देखत फूलत मात-बबा दोउ वारत हैं मोतिन की माल। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर प्रेम प्रीति प्रतिपाल ।।४ ।।

□ राग टोडी □ (९) लाडीले ललन चलो वेग भोजन करन ठाडे निज भवन देखत बाट व्रजराज। बोलत तुतरात दोऊ भ्रात बूझत बात चुम मुख तात कह्यो बैठो भोगी आज ।।१ ।। खीर चीला अपूप फीके मीठे बहुत चुपर कर नवनीत जेंवो धरे तुम काज। औरहु पकवान मन भाये धराये लाय कृष्णदासनि नाथ थार भर भर साज ।।२ ।।

□ राग टोडी □ (१०) नंद नंदन-सदन हरख प्रफुल्लित वदन करत भोजन बैठे भोगी हलधरवीर। लेत रुचि कोर दूरी देख जसोमति और कहत

नीके। बने अपूप चीला खीर ॥१ ॥ और सब सोंज लेके आई हैं व्रज की वधू कहत रोहिनी ठाडी धरत नाहिन धीर। मांग लेई लेई बोल निकट हु कृष्णदास भई आतुर निरख मिटी तन की पीर ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (११) खेलनमें कौ काको गुसैयां॥ हरिहारे जीतेश्रीदामा वरवटही कित करत हसैयां ॥१ ॥ जातपाँत हमसों बडे नाहीं नाहम वसत तुम्हारी छैया॥ अतिअधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारे हैं कछु गैया ॥२ ॥ रूटकरे तासों को खेले रहो सखासब ठाके ठैया॥ सूरदासप्रभु खेल्योई चाहत दाव दियो कर नंददुहैया ॥३ ॥

□ राग नट □ (१२) तुम मेरी मोतिन लर क्यों तोरी॥ रहो रहो ढोटा नंद महेरके करन कहत कहा जोरी ॥१ ॥ मेंजान्यो मेरी गेंद चुराई ले कंचुकी बिचहोरी॥ परमानंद मुसक्याय चली तब पूरन चंद चकोरी ॥२ ॥

□ राग पूर्वी □ (१३) गेंद बची हो खेलो अरी मैया। घरघरतें सब सखा टेरके गेंद उछारी ही झेलो ॥१ ॥ रीत बातन ब्योरावत मैया होंन जेहों अकेलो। जसुमति मन अभिलाख भयो तब प्रभु कल्यान याहि खेलो ॥२ ॥

□ राग मालव □ (१४) आज गेंद खेलनकुं निकरे हरि हलधर दोउ भैया। यह संक्रांति मकरकी कहिए घरघर तिलवा खिचरो घैया ॥१ ॥ साज सिंगार सबे मिल निकरे हाथन गेंद पाटकी लैया॥ चले लिवाय संग श्रीदामा पाछे बड़े गोपके रैया ॥२ ॥ यह चोगान बड़ो आछो है इहां खेल मचावोरे भैया॥ अपनी अपनी जोरी करले बलदाऊ और कुंवर कनैया ॥३ ॥ श्रीदामा जब खेलन लागे आनंद उर प्रसन्न ठैया॥ फेंकत गेंद आपु आपस में उचटी जाय करे रुनदैया ॥४ ॥ देखत ठाडे व्रजजन आये या शोभा सुख श्रवण सुहैया॥ सांझु भई सब चलोरे घरनकुं करत शंख ध्वनि वेणु बजैया ॥५ ॥ गोपी सब झरोखन ठाडी डारत कुसुमभाल मुसकैया॥ जन्म जन्म व्रजवास वसो यहे गोविन्द बलबल जैया ॥६ ॥

□ राग गौरी □ (१५) गहि रहे भामिनी की बांहि॥ मदनगोपाल मनोहर

मूरति जानत सब मन मांहि ॥१ ॥ ठाडे बात करत राधे सों तहां जसोमति चलि आई ॥ झूंठेमिस करि झगरन लागे तें मेरी गेंद चुराई ॥२ ॥ कोनटेव तिहारे ढोटाकी बरजत काहेन माई ॥ या गोकुलमें श्याममनोहर उलटी चाल-चलाई ॥३ ॥ सुन मृदु बचन श्याम श्यामाके महेरि चली मुसक्याई ॥ परमानंद अटपटी हरिकी सबी बात मनभाई ॥४ ॥

□ राग गौरी □ (१६) हँसत गुपाल कहत गोपन सों किन मेरी गेंद चुराई जु। सुनि हो स्याम हम जानि ॥ लई तुम मिलन मिस जूठी लगाई जु ॥१ ॥ ग्वालन संग खेलत हें नीके इन को लालच आई जु। बात बनावत नैंन चलावत इनमें कहा भलाई जु ॥२ ॥ लेहो ढंढोर कौन पें गेंदुक तुम पें लाल कहा आँई जु ॥ 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर धर इक गई द्वे पाई जु ॥३ ॥

□ राग धनाश्री □ (१७) निरख मुख घूंघट ओट संवार्यो ॥ खेलत खेलत आये लालन ओचक बदन निहार्यो ॥१ ॥ लज्जा बेरिन भईरी मोकूं नेकहू टरत न टार्यो ॥ गेंद उछारत चले सूरप्रभु नेन कटाक्ष सर मार्यो ॥२ ॥

□ राग बिहाग □ (१८) खेलत गेंद राय-आंगन में हरि-हलधर दोऊ भैया। किलकत हँसत करत कोलाहल सो छबि निरखि जसोधा मैया ॥१ ॥ सुबल श्रीदामा सखा संग लै और सकल व्रज के लरकैया। 'कृष्णदास' प्रभु की छबि निरखत तन मन वारत लेत बलैया ॥२ ॥

पतंग के पद

□ राग हमीर □ (१) जमुनाके तीर कान्ह चंग उडाय छबीसों रमैया ॥ हों जमुना जल भरन गईरी ओचक दृष्टि पर गई दैया ॥१ ॥ अेंचन तनक मन उरझोरी व्याकुल भई कोउ धीर न धरैया ॥ व्रजाधीश घट पकरत भुली लाज कान कुल अब न रहैया ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (२) कान्ह अटा चढि चंग उडावत हों अपुने आंगन हू ते हेरो। लोचन चार भये नंदनंदन काम कटाक्ष भयो भटु मेरो ॥॥१ ॥ कितो

रही समुझाय सखी री हटकर न मानत बहुतेरो। 'नन्ददास' प्रभु अब धों मिले हैं एंचत डोर किधों मन मेरो ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (३) कान्ह अटा पर चंग उडावत मैं इतने उत आंगन हेर्यो। नैन भये विभिचारी नारायन भाजत लाज किधों भट मेरो ॥१ ॥ मोहि तो यह जक लगी रहत है क्यों हू क्यों हू फिरत न फेर्यो। 'परमानंद' प्रभु यह अचंभो एंचत डोर किधों मन मेरो ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (४) उडी उडावन लागे लाल। सुंदर पथक बांध मनमोहन बाजत मोरनके ताल ॥१ ॥ काऊ पकरत कोऊ एंचत कोऊ देखत नैन विशाल। कोऊ न कोऊ करत कुलाहल कोऊ बजत बोहो करताल ॥२ ॥ कोऊ गुड गुडीसों रिझ आपुन खेंचत डोर रसाल। 'परमानंद' स्वामी मनमोहन रीझ रहत एक ही ततकाल ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (५) सुंदर बदनरी सुख सदन श्यामको निरखि नेन मन थाक्यो॥ हो ठाडी विथन व्हे निकस्यो उझकि झरोका झांक्यो ॥१ ॥ लालन एक चतुराई किनी गेंद उछार गगन मिस ताक्यो॥ बेरिन लाज भईरी मोकों में गंवार मुख ढांक्यो ॥२ ॥ चितबनमें कछु करगयो मोतन चढ्यो रहत चित चाक्यो॥ सूरदास प्रभु सर्वस्व लेकें हंसत हंसत रथ हांक्यो ॥३ ॥

□ राग बिहाग □ (६) आवत जात हों हार परी री॥ ज्यों ज्यों प्यारो बिनती कर पठवत त्यों त्यों तू गढ मान चढी री ॥१ ॥ तिहारे बीच परे सो बावरी हों चौगानकी गेंद भई री॥ गोविंद प्रभु सों मिले क्यों न भामिनी सुभग जामिनी जात बही री ॥२ ॥

□ राग बिहाग □ (७) गिरिधर सेन कीजे आय॥ चांदनी यह घटत नाहीं कहत जसोदा माय ॥१ ॥ खेल सोई खेलिये बलि जो हमहि सुहाय॥ जा खेलते तेरे चोट लागे सो खेल देहो बहाय ॥२ ॥ खेलि मदनगोपाल आये जननी लेत बलाय॥ पीओ पय तुम धोरी धेनु को सुख करहु माखन

खाय ॥३ ॥ स्वच्छ सेज सुगंध बहु विधि लाल पोढे आय ॥ 'मदनमोहन' बाल के सखि चरन चांपति माय ॥४ ॥

श्री दामोदरदासजी की बधाई (महासुद ४) हरसानीजी

□ राग सारंग □ (१) आज बधायो मंगलचार ॥ माघ मास शुक्ल चोथ हे हस्त नक्षत्र रविवार ॥१ ॥ प्रेम सुधा सागर रस प्रगट्यो आनंद बढ्यो अपार ॥ दास रसिक जन जाय बलिहारी सरवस दीयो वार ॥१ ॥

□ राग सारंग □ (२) प्रगटे भक्त शिरोमणीराई ॥ माघ मास शुक्ल चोथ अधिक लोक निधि आई ॥१ ॥ दैवी जीवके भाग्य उदय भये जिन यह दर्शन पाई ॥ करि करुणा प्रभु भूतल आये पुष्टि पंथ प्रगटाई ॥२ ॥ महा महोत्सव होत पुर घर घर फूले अंग न समाई ॥ रसिकदास चितयेही चहतहे चरन कमल मन लाई ॥३ ॥

द्वितीया पाटोत्सव के पद

(डोल उत्सव के दूसरे दिन)

□ राग रामकली □ (१) आवत ललन पिया रस भीने ॥ शिथिल अंग डगमगात चरणगति मोतिनहार उरचीने ॥१ ॥ पारिजात मंदारमाल लपटात मधुप मधुपीने ॥ गोविंदप्रभु पिय तहां जावो जहां अधरदशन छतकीने ॥२ ॥

□ राग रामकली □ (२) आवत कुंजनतें पोंहोपीरी ॥ पिय अलसात जूंभात रसभरे ललन खवावत बीरी ॥१ ॥ सुरत शिथिल अंगअंग शिथिल अति भुजभर स्यामा रसकी रसीली ॥ विठ्ठलविपिन विनोदकरो मिल नई ललितादिकनीली ॥२ ॥

□ राग काफी □ (३) चार पहेर रसरंगभरे रंगभीनेहो ॥ अरुन नेन अतिरसमसे लाल रंगभीनेहो ॥१ ॥ अधरन रंग लागत फीको लाल रंगभीनेहो ॥ मिटगयो तिलक लिलार लालरंग० ॥२ ॥ कसूंबी पागसिर लटपटी रंगभीनेहो ॥ उरसि मरगजी माल लालरंग० ॥३ ॥ केस सिथिल

वर बेस सिथिल रंगभीने हो ॥ सिथिल भये सबगात लालरंग० ॥४॥ गोविंदप्रभु छबि निरखहीं रंगभीनेहो ॥ विवस भईं व्रजबाल लाल रंगभीने० ॥५॥

□ राग काफी □ (४) रसिक शिरोमनि नंदलाल रंगभीनेहो ॥ लाड लडयाये नवल बाल लाल रंगभीनेहो ॥१॥ भले मनाये भूरि भाग रंगभीनेहो ॥ रूपछके लोचन घुमात लालरंग० ॥२॥ अलक सीस रहीं शोभा देत रंगभीनेहो ॥ कामकेत के बीज वये लालरंग० ॥३॥ वाहुदंड गह्यो करन फूल रंगभीनेहो ॥ असिस रंग को मूल लालरंग० ॥४॥ मदनमथ डगमगो चाल रंगभीनेहो ॥ उरसि मरगजीमाल लालरंग० ॥५॥ मेहेकत तन मिली सुवास रंगभीनेहो ॥ अलिगावत कीरत आसपास रंगभीनेहो ॥६॥ ताही सों मिलि हैं हमें चेन रंगभीनेहो ॥ सहिन सकत यह गूढ सेन रंगभीनेहो ॥७॥ रामराय प्रभु सुनहंसे रंगभीनेहो ॥ भाग्यवानके हीय बसे रंगभीनेहो ॥८॥

□ राग काफी □ (५) आये भोर जिस कहाँ रहे रंगभीनेहो ॥ भली किनी भले आये प्रातः बाल रंगभीनेहो ॥१॥ बाकी पाग पेंच ऊरझे प्रीत ॥ भई कामगढ़ जीत लाल ॥२॥ तिलक रेख लगी बेदी भाल ॥ चिन्ह कुसुम ऊर माल लाल ॥३॥ मुख अलके रति रसकि केल ॥ बिधु सिंगार कि बेल लाल ॥४॥ छके नेन अल सात जात ॥ ठगे त्रिया कहो कहो बात लाल ॥५॥ अधर अरुणता ताही दई ॥ जावक छाप आप लई लाल ॥६॥ बोले मुख मृदु सुगंद बात ॥ गावत मधुप चहु पास लाल ॥७॥ नंद जसोदा सुख बिलसो ॥ व्रजाधीस सहाय बसो लाल ॥८॥

□ राग काफी □ (६) रति रस केल बिलास हास रंगभीनेहो ॥ काहु सुन्दर नारी के लगे गात रंगभीनेहो ॥१॥ अरुन नेन अति रसमसे ॥ मानो भोर भए जलजात ॥२॥ बोलत बोल प्रतितके ॥ सुन्दर सावल गात लाल

रंग ॥३ ॥ प्रिया अधर रस पान मत ॥ केहेत कहुकि बात ॥४ ॥ अति लोहीत दृग रग मगे ॥ मानो भोर भए जलजात लाल ॥५ ॥ चाल सीथल भुवे भाल सिथल ॥ रस सी मुख सिथल जभांत लाल ॥६ ॥ केस सिथल बरबेस सिथल ॥ वयकृम सिथल ॥७ ॥

□ राग सारंग □ (७) लाल नेक देखियें भवन हमारो ॥ द्वितीयापाट सिंहासन बैठे अविचल राज तिहारो ॥१ ॥ सास हमारी खरिक सिधारी पीय वनगयो सवारो ॥ आसपास घरकोऊ नाहीं यह एकांतहे न्यारो ॥२ ॥ ओट्यो दूध सद्य धौरीको लेहु श्याम घन पीजे ॥ परमानंददासको ठाकुर कछु कह्यो हमारो कीजे ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८) लाल नेंक भवन हमारे आवो ॥ जो मांगो सो देहों मोहन ले मुरलीकल गावो ॥१ ॥ मंगलचार करो गृह मेरे संगके सखा बुलावो ॥ करो विनोद सुंदर युवतिनसों प्रेम पियूष पिवावो ॥२ ॥ बलबल जाऊं मुखारविंदकी ललित त्रिभंग दिखावो । परमानंद सहचरी रसभर ले चली करत उपावो ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (९) राधे तेरे भवन हों आऊं ॥ सादर कहत सांवरो मोहन नेंक दूधजो पाऊं ॥१ ॥ मात पिता हू विलगु न माने ओर यह भेद न जाने ॥ जो तू सोंह करे बाबाकी तो मेरे मनमाने ॥२ ॥ सब दिन खेलो मेरे आंगन अपने नेन सिराऊं ॥ परमानंद प्रभु विनती कीनी अपने मित्र बुलाऊं ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१०) बातनि लई री ! लाई। खेलनि मिस आउंगौ तेरें दूध राखि जमाई ॥१ ॥ कनक बरन सुढारि सुंदरि देखि मुख मुसिकाई। रूप-राचे स्यामसुन्दर नैन रहे अरुझाई ॥२ ॥ गुपत प्रीति न प्रगट कीजै लाल ! रहौ अरगाई। 'दास परमानंद' सँग हैं नातरु गहती पाई ॥३ ॥

संवत्सर उत्सव के पद (चैत्र सुदि १)

□ राग सारंग □ (१) चैत्रमास संवत्सर परवा वरस प्रवेश भयोहे आज ॥ कुंज महेल बैठे पीय प्यारी लाल नये हेरे नौतन साज ॥१ ॥ आपुही कुसुम

हार गुहलीने क्रीडा करत लाल मन भावत ॥ बीरीदेत दास परमानंद हरखि निरखि जस गावत ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२) चैत्रमास संवत्सर परिवा नयो परव मान्यो हे आज ॥ नूतन लाड लडावत सब विधि श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल महाराज ॥१ ॥ नये बसन मनिगन आभूषण धरत असन नये रुचि उपजाय ॥ अचमन करि मुख पोंछि बसनतें बीरीदेत सुगंध मिलाय ॥२ ॥ विविध फूलमंडली मनोहर आंगन मोतिन चोक पुराय ॥ आरती करत जु मात जसोदा न्योछावर करि अति सचुपाय ॥३ ॥ नवदल निम्ब मधुर मिश्री ले देत सबनकों मन हरखाय ॥ ब्रह्मदासकों माला बीडा देत प्रभु अति निकट बुलाय ॥४ ॥

□ राग ईमन □ (३) लालन आयेरी तेरेई भवन मान मनावन काज ॥ आपुनो मान छांड दे मानिनी संवत्सरको शुभ दिन आज ॥१ ॥ करि सिंगार अपुन मनोहर विविध सुगंध धरी सब साज ॥ कृष्णदास प्रभुके संग भामिनी कीजे सुख सों अविचल राज ॥२ ॥

गनगोर के पद (चैत्र सुद तीज)

□ राग खट □ (१) ठाडे कुंज द्वार पीय प्यारी करत परस्पर हसहस बतीयां ॥ रंगीली तीज गनगोर भोर सज आंई घर घर तें सब सखीयां ॥१ ॥ करत आरती अति रसमाती गावत गीत नीरख मुख अखीयां ॥ कृष्णदास प्रभु चतुर नागरी कहा बरनों नांहीं मेरी गतीयां ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२) कहत जसोदा सब सखीयन सों आवो बैठो मंगल गावो ॥ हे गनगोरकी तीज रंगीली मदन मोहनकों लाड लडावो ॥१ ॥ ललिता चन्द्रभगा चन्द्रावली बेग जाय राधा ले आवो ॥ स्यामा चतुरा रसिका भामा तुम पीयकों सिंगार बनावो ॥२ ॥ कमला चंपा कुमुदासुमना पहोपमाल ले उर पहेरावो ॥ ध्याया दुर्गा हरखा बहुला ले दरपन कर बेनु

गहावो ॥३ ॥ नबला अबला नीला सीला गूंजापुवाले भोग धरावो ॥ हीरा रत्ना मेना मोहोला ले वीना तुम तान सुनाओ ॥४ ॥ घूमर खेलो मन रस झेलो नेह मेह बरखा बरखावो ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधरको सुख निरख निरख दोउ नेन सिरावो ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (३) अरवीलो गरवीलो रंगीलो छबीलो कान्ह करि के सिंगार ठाढौ देखो सखी कुँजद्वार। वाम भाग राधा प्यारी ओढे चुनरी की सारी कंचुकी उतंग गाढी ठाडी बहियाँ गरे डार ॥१ ॥ चूनरी चटकदार पाग सीस नंदलाल सूथन चूनरी बागौ बन्यो अंग घेरदार ॥२ ॥ फूल-छरी बेनु धरी बजत है रस भरी सुनत स्त्रवन धाय आये सब नर नगरा। निरखि मुखारविंद फूले मानो अरविंद करत गुँजार तहाँ 'कृष्णदास' भमरा ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (४) भोर निकुंज भवन पिय प्यारी करत परस्पर हँसि-हँसि बतियाँ। बाजत बीन पखावज अधोटी गावति चतुर ताल दै सखियाँ ॥१ ॥ तुम पहरो बागो आभूषन सीस बांधि अलबेली पगियाँ। तोरा झोरा लूम कलंगी ढरकावो मोरन की पखियाँ ॥२ ॥ स्याम कंचुकी कसि तन गाढ़ी मैं ओढों सिर सुरंग चुनरियाँ। कर कंकन बाजूबंद पहोंची कंठ पोत दुलरी तिमनियाँ ॥३ ॥ अलकावलि भाल टीकी नथ पायल नूपुर अनवट बिछियाँ। यह विधि करि सिंगार दोऊ ठाड़े लै दर्पन मुख निरखि हरखियाँ ॥४ ॥ मृगमद तिलक अलक घुंघरारी देखि चकित भई मद भरी अंखियाँ। 'कृष्णदास' प्रभु चतुर बिहारी लई लगाय स्यामा कों छतियाँ ॥५ ॥

□ राग नूर सारंग □ (५) कमल दल चंद वदनी मृगनेनी ॥ ललिता विशाखा बनि बनि निकसीं फूलन गुहीहें बेनी ॥१ ॥ हंस चकोर कोकिला मृगगण बोलत शुकपिक बेनी ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी तूं है प्यारी कुंजनमें सुख देनी ॥२ ॥

□ राग नूर सारंग □ (६) छबीली राधे पूज लेनी गनगोर ॥ ललिता

विसाखा सब मिल नीकसीं आंई वृषभानकीपोर ॥१ ॥ सघनकुंज गहवर बन नीको मिल्यो नंदकिशोर॥ नंददासप्रभु आये अचानक घेरलिये चहुंओर ॥२ ॥

□ राग नूर सारंग □ (७) रंगीली तीज गनगौर आज चलो भामिनी कुंज छाक ले जैये। विविध भांति नई सोंज अरपि सब अपने जिय की तृपत बुझैये ॥१ ॥ लै कर बीन बजाय गाय पिय-प्यारी जेंमत रुचि उपजैये। 'कृष्णदास' वृखभानसुता संग घूमर दै नंदनंद रिझैये ॥२ ॥

□ राग नूर सारंग □ (८) नवल निकुंज महेल मंदिर मे जेंवन बैठे कुंवर कन्हाई। भरि-भरि डला सीस धरि अपने व्रजबधू तहाँ छांक ले आई ॥१ ॥ हरखित वदन निरखि दंपति को सुंदरि मंद-मंद मुसकाई। गूँजा-पूआ धरि भोग प्रभु कों 'कृष्णदास' गनगौर मनाई ॥२ ॥

□ राग नूर सारंग □ (९) क्यों बेठी राधे सुकुमारी॥ बूझतहे व्रज जानके महेरी क्यों जेंबत बाबाकीथारी ॥१ ॥ आज हमारो गोरी व्रत ताकी विध ताहीपे पाउं॥ सुंदर सुभग सलोनो ढोटा ताको पूज बहों हाथजीमाउं ॥२ ॥ ऐसो ढोटा नंदरायको ताकों अबही ले आउं॥ तुम जानोरी सयानी मैया बेग चलो हों चरन शिरनाउं ॥३ ॥ सुनरी जसोमति कुंवर आपुनो वेगपठेहों नोतन आई॥ परमानंद स्वामी सब जानत देख देखतें सब निध पाई ॥४ ॥

□ राग नूर सारंग □ (१०) फूल गई वृषभान दुलारी॥ पहेले तो निरखत नेनन भर क्यों पूजों एकांतन न्यारी ॥१ ॥ कर अंजन नेनन दे मोहन अपने हाथ जीमायो॥ अंग अंग सब भूषण भूषित बसन मनोहर तिलक करायो ॥२ ॥ रूप रास केसेंक बरनों नव नागरि नवनागर पायो॥ रति रस केलि करो दोउजन लीलारस परमानंद पायो ॥३ ॥

□ राग नूर सारंग □ (११) बैठि रही राधे सकुमारी। बूझति है वृषभानु की महरी क्यों न जेंवति बाबा की प्यारी ॥१ ॥ आजु हमारें गौरी को व्रतु ताकी विधि तोही पें पाऊं। सुंदर सुभग सलौनौ ढोटा ताकों पूजि हौं हाथ

जिबाऊँ ॥२ ॥ ऐसौ ढोटा नंदराई को ताकों हौं अबही लै आऊँ। तुम जानों सयानी मईया ! बेगि चलहु चरननि सिर नाऊँ ॥३ ॥ सुनि री जसोमति ! कुँवर आपनौ बेगि पठै हौं न्योंतनि आई। 'परमानंद' स्वामी सब जानत देखि-देखि तिहि सब निधि पाई ॥४ ॥

□ राग नूर सारंग □ (१२) मुदित व्रजनागरी पहरि नये-नये बसन आई सब कुंज लै असन मोहन काज। खाटे खारे मधुर तिक्त व्यंजन विविध बहोत पकवान फल-फूल डलियन मांझ ॥१ ॥ धरे आगे लाय-लाय जिय सचुपाय-पाय करत गुनगान कर मांझ ले ले साज। 'कृष्णदासनिनाथ' जेंवत राधा साथ चैत्र सुद तीज गनगौर मानी आज ॥२ ॥

□ राग नूर सारंग □ (१३) तीज गनगौर त्यौहार को जानि दिन करत भोजन लाल-लाड़िली पिय साथ। चतुर चंद्रावली बैठि गिरिधरन संग देति नई-नई सोंज ले-ले अपने हाथ ॥१ ॥ छबि बरनी न जात दोऊ रुचि सों खात करत हँसि-हँसि बात उमगि-भरि-भरि बाथ। उपजी अंतर प्रीति मदनमोहन कुंज जीत पीवत पय सद्य प्रभु 'कृष्णदासनिनाथ' ॥२ ॥

□ राग नूर सारंग □ (१४) नंद घरुनि वृखभान घरुनि मिलि कहति सबन गनगौर मनाओ। नये बसन आभूषन पहरो मंगल गीत मनोहर गाओ ॥१ ॥ करि टीकौ नीकौ कुमकुम कौ आँगन मोतिन चौक पुराओ। चित्र-विचित्र वसन पल्लव के तोरन बंदनवार बँधावो ॥२ ॥ घूमर खेलो नवरस झेलो राधा गिरिधर लाड़ लड़ावो। विविध भांति पकवान मिठाई गूँजा पूआ बहु भोग धराओ ॥३ ॥ जल अचवाय पोंछि मुख वस्तर माला धरि दोऊ पान खवावो। 'कृष्णदास' पिय प्यारी को आनन निरखि नैन मन मोद बढ़ावो ॥४ ॥

□ राग नूर सारंग □ (१५) सजि-सजि आईं सकल व्रजनारी। कसि कंचुकी बेंदी अंजन दृग ओढ़ि विविध रंग सारी ॥१ ॥ बाजूबंद बेरखी चूरी कर कंकन फोंदना री। पहोंची गूजरी बाँह बिजोटी मूंदरी अँगुरियन

न्यारी ॥२ ॥ करनफूल अवतंस फूल नथ ढलकत मनि मुक्तारी। अलकावली दामिनी-फूलनि बेनी गूंथि सँवारी ॥३ ॥ हँसुली पोत तिमनियाँ दुलरी हिये हार सिंगारी। गुँज माल बेजंती माल बिच लटकत बहु झोंरा री ॥४ ॥ कटि किंकिनी पग नूपुर अनवट बाजत चलत सुढारी। गज-गमनी अवनी मृगनैनी गावत है करतारी ॥५ ॥ मुखहि तंबोल अधर पर लाली कहा कहें रूप छटा री। हँसन-रेख झलकत दसनन बिच मानो चमक चपला री ॥६ ॥ बनी रंगीली गनगौर श्री राधा बिलसन कुंज बिहारी। भेटी जाय धाय गिरिधर सों श्री वृषभान-दुलारी ॥७ ॥ धन्य सुहाग भाग तेरो भामिनि कहा बरनों रसना री। 'कृष्णदास' प्यारे की प्यारी तोपे सर्वस्व वारी ॥८ ॥

□ राग नूर सारंग □ (१६) सहेली मेरे आज तो रंगीली गनगौर। नख-सिख अंग आभूखन पहेरों ओढ़ों पीत पटोर ॥१ ॥ नाचों गावों भाव बताउं जाय नंद की पौर। बाँधों वंदनवार मनोहर चीतों सुकपीक मोर ॥२ ॥ विविध भांति नई सोंज अपने कर अरपों नंदकिसोर ॥ करि अचवन जल बीरी दै मुख भेटों दोऊ कर जोर ॥३ ॥ सेज कुसुम रचिपचि पोढाऊँ राखों नैन की कोर। मदन केलि रस-बेलि बढ़ाऊँ मंद हँसनि चितचोर ॥४ ॥ चांपों चरन निज करन प्रीतम के उलटि-पुलटि दोऊ ओर। बींजना ढोरों श्रमजल पोंछों अपने अंचल छोर ॥५ ॥ अधर सुधारस पिऊँ पिआऊँ निरखि वदन मुख मोर। आलिंगन चुंबन परिरंभन दै-दै प्रेम हिलोर ॥६ ॥ मनमथ अंग-अंग प्रति उमग्यो राधा नंदकिसोर। 'कृष्णदास' प्रभु रति रस पागे निसि बीती भयो भोर ॥७ ॥

□ राग नूर सारंग □ (१७) जल अचवाय लाल लाड़िली कों कुंज भवन में पान खवायो। कर लै बीन बजाय गाय सखी ललिता सारंगराग जमायो ॥१ ॥ धरि उर कुसुममाल दोऊन कों सहचरि रति-रस रंग बढायो। 'कृष्णदास' गनगौर तीज को पिय-प्यारी त्यौहार मनायो ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (१८) सघन कुंज भवन आज फूलन की मंडली रचि ता मधि लै संग राधा बैठे गिरिधरनलाल। चूनरी की बांधि पाग अङ्ग बागो चूनरी को उपरेना कंठ हीरा हार मोती माल ॥१ ॥ स्याम चूरी हरित लहँगा पहरि चूनरि झूमक सारी मानो गनगौर बनी ऐन मैन कीरति-बाल। 'कृष्णदास' पिय प्यारी अपने कर दरपन लै देखत मुख बार-बार हँसि-हँसि भरि अंक जाल ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (१९) तीज गनगौर त्यौहार को जानि दिन ठाडे कुंजद्वार संध्या समै पिय प्यारी। दौरि नर नारि सब आये दरसन करन भई आंगन मधि भीर भारी ॥१ ॥ बजत बीना मृदंग तानपूरा चंग गान गावत सखा आठों करदे तारी। 'कृष्णदास' निनाथ रानी जसुमति मात करत आरती करन मधि ले थारी ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (२०) राधा नवल लाडिली भोरी। आवत गावत सब मन भावत सब एक बैस किसोरी ॥१ ॥ सोंधे भीनी झूमक सारी ओढि पहरि तन चोली। विविध भांति आभूषण अंग में हीरा-हार अमोली ॥२ ॥ कहा कहों अङ्ग-अङ्ग की माधुरी सोभा सिंधु झकोरी। ले गनगौर संग सब आई श्रीव्रजराज की पोरी ॥३ ॥ ललिता चन्द्रभगा चन्द्रावलि स्यामा भामा गौरी। बिमला कमला कृष्णा रंगा सुखमा सुमिता बौरी ॥४ ॥ जमुना तारा कृष्णा हंसा गहि करसों करजोरी। नैनां मैनां प्रेमा जुहिला नाचत हँसि मुख मोरी ॥५ ॥ दुरगा ध्यावा बहुला रसिका ठाढ़ी हरि की ओरी। दुहूं ओर अस्तुति करत तिय झुकि-झुकि सब कर जोरी ॥६ ॥ राधा गिरिधर चिरजीयो जुग सदा-सर्वदा जोरी। 'कृष्णदास' यह बानिक उपर डारत हैं तृन तोरी ॥७ ॥

□ राग नूर सारंग □ (२१) बन ठन आई रंगीली गनगौर। सजि सिंगार चञ्चल मृगनैनी पहेरें पीत पटोर ॥१ ॥ सखी सहेली लै संग राधा गावत नंद की पोर। निरखत हरखत अतिरस बरखत मोहे नंद किसोर ॥२ ॥ उपजी प्रीति परस्पर अन्तर मानो चंद चकोर। 'कृष्णदास' पिय प्यारी की

छबि पर डारत हैं तृन तोर ।।३।।

□ राग कान्हरो □ (२३) देखि गनगौर गहि अंगूरी बल मोहन की करन ब्यारू आय बैठे लै संग तात । पूरी पकवान कढ़ी साग ओदन दार घृत सान दूध भात लाई जसुमति मात ।।१।। जेंमत दोऊ भ्रात मुसिकात करि-करि बात छबि न बरनी जात फूले अंग न मात । भरे लाल आलस प्रभु 'कृष्णदासनिनाथ' पीवत पय गाढो लै कनक बेला हाथ ।।२।।

□ राग कान्हरो □ (२४) देखि गनगौर पिय प्यारी नवकुंज में आय बैठे ब्यारू करन दोऊ मिलि साथ । विविध पकवान व्यंजन बहो भांति के ठाडी भरि थार लै ललिता अपने हाथ ।।१।। जेंवत आलस भरे देखि चंद्रावलि ढोरत बिजना श्रमित जान वल्लभ नाथ । दूध तातो मिष्ट भरि कनकपात्र पियो सचुपाय प्रभु 'कृष्णदास' के हाथ ।।२।।

□ राग केदारो □ (२५) बन-ठन व्रजराजकुंवर बैठे सिंघद्वार आय देख गनगौर आंगन ले संग सब ग्वाल-बाल । नखसिख सजि-सजि सिंगार आईं सकल घोखनारि परम सुंदर चतुर सुघर गावत सुर गीत रसाल।।१।। मंडल जोरि घूमर लेत आरस-परस चहुँ ओर सखी सहचरी व्रज की बधू उमगि-उमगि दै दै ताल । 'कृष्णदास' प्रभु की बानिक निरखि जुवती विवस भई निकट आय पाँय लागि पहेरावत कंठमाल ।।२।।

□ राग बिहाग □ (२६) तोसी तिया नहीं भवन भटूरी । रूपरासि रसरासि रसिकिनी तोय देखि भये नंदलाल लटूरी ।।१।। सु तन कर दृढ़ गांठ दई जुरि सुरंग चूनरी पीत पटूरी । 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी वे नवल नटूरी ।।२।।

□ राग केदारो □ (२७) धन्य वृन्दा विपिन धन्य गोकुल गाम धन्य राधा कोन गौर तैं पूजी । धन्य बडभाग्य सौभाग्य तेरो सुजस रसिक नंदनंदन

की तू बहूजी ।।१।। चक्र चूडामनी रूप गुन आगरी नाहि त्रिभुवन वाम तोसी दूजी । 'कृष्णदास निनाथ' साथ बिलसन सदा तोही सम नाहि नवनारी सूझी ।।२।।

□ राग सारंग □ (२८) राधा कौन गोर तें पूजी नंदनंदन ब्रजचन्द ललन की तोसी न दुलहिनि दूजी ।।१।। रमा रती रंभा सावित्री झुकति चरन नित तोरी । उमयापति अज तनया सुक मुनि धरत ध्यान कर जोरी।।२।। भाग सुहाग अचल तेरो बाढ़े गाढो पिय सों गोरी । 'कृष्णदास' समता करिवे कों नाहिन त्रिभुवन जोरी ।।३।।

गनगोर के दिन छाक के पद

□ राग सारंग □ (१) क्यों बेठी राधे सुकुमारी ।। बूझतहे व्रज जानके महेरी क्यों जेंबत बाबाकीथारी ।।१।। आज हमारो गोरी व्रत ताकी विध ताहीपे पाउं ।। सुंदर सुभग सलोनो ढोटा ताको पूज बहों हाथजीमाउं।।२।। ऐसो ढोटा नंदरायको ताकों अबही ले आउं ।। तुम जानोरी सयानी मैया बेग चलो हों चरन शिरनाऊँ ।।३।। सुनरी जसोमति कुंवर आपुनो वेगपठेहों नोतन आई ।। परमानंदस्वामी सब जानत देख देखतें सब निध पाई ।।४।।

□ राग सारंग □ (२) फूल गई वृषभान दुलारी ।। पहेले तो निरखत नेनन भर क्यों पूजों एकांतन न्यारी ।।१।। कर अंजन नेनन दे मोहन अपने हाथ जीमायो ।। अंग अंग सब भूषण भूषित बसन मनोहर तिलक करायो ।।२।। रूप रास केसेंक बरनों नव नागरि नवनागर पायो ।। रति रस केलि करो दोउजन लीलारस परमानंद पायो ।।३।।

□ राग सारंग □ (३) बैठि रही राधे सकुमारी । बूझति है वृषभानु की महरी क्यों न जेंवति बाबा की प्यारी ।।१।। आजु हमारें गौरी को व्रतु

ताकी विधि तोही पें पाऊं। सुंदर सुभग सलौनौ ढोटा ताकों पूजि हौं हाथ जिंबाउँ ॥२॥ ऐसौ ढोटा नंदराई कौ ताकों हौं अबही लै आऊं। तुम जानों सयानी मईया! बेगि चलहु चरननि सिर नाऊँ ॥३॥ सुनि री जसोमति! कुँवर आपनौ बेगि पठै हों न्योंतनि आई। 'परमानंद' स्वामी सब जानत देखि-देखि तिहि सब निधि पाई ॥४॥

श्री यमुनाजी की बधाई (चैत्र सुद ६)

□ राग बिलावल □ (१) प्रकटी सूरज सुता अधम उधारनकों को कहे महिमा जाकी॥ छठी उजियारी चैत्रमासकी उपजी वेलि सुधाकी ॥१॥ पटरानी प्यारी श्रीयमुना श्रीव्रजराजललाकी रास विलास महा सुखदेनी अद्भुत केल कलाकी॥ इच्छाराम गिरिधरकी जीवन शोभा श्रीमथुराकी ॥२॥

□ राग बिलावल □ (२) जयजय श्रीयमुना आनंद कंदिनी॥ दरशपरश त्रिविध ताप जात दुख निकंदिनी ॥१॥ अंगअंग छबि तरंग शोभा सिंधुनी॥ ताहीके अघ कुठार जाकें वंदिनी ॥२॥ अक्षय आनंद गोविंद अगम गामिनी॥ हरिदास तट निवास जन्मजन्मनी ॥३॥

□ राग बिलावल □ (३) जयजय श्रीसूरजा कलिन्द नंदिनी ॥ गुल्मलता तरुसुवास कुंज कुसुम मोद मत्त गुंजत अलि सुभग पुलिन वायु मंदिनी ॥१॥ हरि समान धर्म शील कान्त मंजुल जलद नील कटीनितंब भेदत नितगति उतंगनी ॥ सिकता जनुंमुक्ताफल कंकण युत भुजतरंग कमलन उपहार लेत पिया चरण वंदिनी ॥२॥ श्रीगोपेन्द्र गोपी संगम श्रमजलकण सिक्त अंग अति तरंग निरखरस सुंफदिनी ॥ छीतस्वामी गिरिवरधर नंदनंदन आनंदकंद यमुने जन दुरित हरण दुख निकंदिनी ॥३॥

□ राग टोडी □ (४) वधावनो हेली भानके आज जन्मीहे जीवन मूल ॥ध्रु०॥ धन्य धन्य संजा कूंख सजनी धन्य धन्य दिन ए जाम॥ प्रकटी

श्रीयमुना जगतारण सफल भये सब काम ॥१ ॥ ऋतु वसंत मधुमास गुरुदिन पक्ष पुन्य उजियार ॥ द्योस छठ जन्म लियो सूरज सुता कुमार ॥ धर्यो नाम कलिदनंदनी रूप गुणनकी खांन ॥२ ॥ महिमा अपरंपार जाकी वरनी वेद पुरान । कहत श्रीविश्राम ढिग नित्य सकल सुखकी रास ॥३ ॥ चार पदारथ दान दाता भक्ति मुक्ति अनुसार ॥ अद्‌भुत कन्या देख दिनपति बढ्यो मन उल्लास ॥४ ॥ जलहि जमुना तीर तपकुं दियो हे दिनकर वास ॥ लिये अर्जुन संग यदुपति सुनत आये धाय ॥ जानजियकी दोउ कर गहे लीनी रथ बेठाय ॥५ ॥ तुरत पिय पटरानी व्याही द्वारका निज धाम ॥ ढोल मृदंग निशान बाजत गावत मंगल वाम ॥६ ॥ चढविमान मुनि देव वरखत कुसुम ले ले धाय ॥ निरख शोभा नेन फूले रहे थकित नव छाय ॥७ ॥ नागर कुलमें जन्म मथुरा वासकीनो आय ॥ कृपाबल गिरिधरन इच्छाराम जीवन जस गाय ॥८ ॥

□ राग आसावरी □ (५) दिनकर घर आनन्द उदित बढ्यो अति चलि सखी आज वधावें ॥ प्रकट भई यमुना जगतारण सब मिलि मंगल गावें ॥१ ॥ धन्य कूंख संजारानीकी एसी सुताजो जाई ॥ कृष्णप्रिय पटरानी जन्म सुन जित तित बजत बधाई ॥२ ॥ चैतमास शुभ लग्न मुहुरत छठ गुरुवार उजेरी ॥ जुरत निशान नाचत नरनारी गावत देदे हेरी ॥३ ॥ घर घर मंगल मुदित माननी मोतिन चोक पुरावे ॥ ध्वजा पताका कदली रोपत वंदनवार बंधावे ॥४ ॥ अधम उद्धारन कारन भूपर भाग्यनदे दरसाई ॥ महिमा अपरमपार कहा कहुं वेदपुराणन गाई ॥५ ॥ मन्जन करत हरत अघ ओघन भक्त मुक्त गति देनी ॥ मानो विधि वैकुंठ चढनकुं अभय तट रचींहे । निसेनी ॥६ ॥ शोभा श्रीमथुरामंडलकी चरण शरणरहुं ताकी ॥ माथुर मणि पोखत तोखत नित जिये भरोंसे जाकी ॥७ ॥ श्रीविश्राम निकट वहेतहे लागत धार सुहाई ॥ जाके दरस परस यम किंकर कबहुं न देत दिखाई ॥८ ॥ कीजे कृपा निजदास जानके मन वांछित फल पाई ॥ इच्छाराम मधुपुरी वसकें जन्म कर्म गुण गाई ॥९ ॥

श्री रामनवमी की बधाई

□ राग रामकली □ (१) मेरे रामलला को सोहिलो सुन नाचो सुर नर नारीहो ॥ उमग उमग आनंदमें डोलें तन मन धन सब वारीहो ॥१ ॥ गृहगृहतें सब सजि चले अपनें अपने टोलहो ॥ देत बधाई रहसि परस्पर गावत मीठे बोलहो ॥२ ॥ मंगल साज सवारकेंहों हाथन कंचनथार ॥ मानों कमलन शशि चढ चले राजा दशरथ के दरबार ॥३ ॥ अवधपुरी अति सोहीयेहो मंगलपुरहि निशान ॥ मौतिनचौक पुराय केंहो मंगल विविध विधान ॥४ ॥ देव पितर गुरु पूजकें हो जातकर्म सबकीने ॥ द्विजवर कुल सनमानकें दान बहुत विधदीने ॥५ ॥ मागध सूत बिरदावलीहो ॥ सूरजवंश वखान ॥ याचकजन पूरणकीये सब दानमान परिधान ॥६ ॥ विधि महेश सुर शारदाहो देख सिहात समोद ॥ ध्यानधरे नहीं पाईयेंहो सो देखो कौशल्याकी गोद ॥७ ॥विविध कुसुम बरखा भई आनंद प्रेम प्रकाश ॥ रामललाके रूपपें जन बलबल गोविंददास ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (२) नौमिके दिन नोबत बाजे कौशल्या सुत जायो ॥ सातघरी दिन उदित भयोहे सब सखियन मंगल गायो ॥१ ॥ कांप्यो सिंधु कंगूरा ढरियो लंका अगम जनायो ॥ सब लंकामें शोक पर्योहि राजदेव गृहआयो ॥२ ॥ दशरथ मन आनंद भयोहे वंश हमारे गृह आयो ॥ विप्र बुलाय शोधना कीनी अभे भंडार लुटायो ॥३ ॥ कंचनके बहु कलश बनाये मोतिनचौक पुरायो ॥ घरी एक निगम सोच हियभाख्यो रामचन्द्र गृहआयो ॥४ ॥ गृहगृहतें सब सखी बुलाईं आनंद मंगल गायो ॥ दशरथराय दोऊ आंगनमें आदर कर बैठायो ॥५ ॥ दशरथ उठ बजार पधारे सारी सुरंग बस्यायो ॥ जो जाके जैसो मनभायो तेसो ताहि पहरायो ॥६ ॥ पाट पटंबर खासाझीनो जेसो जाहि सुहायो ॥ परमानंददास कहांलों बरनों तीनलोक यश छायो ॥७ ॥

□ राग बिलावल □ (३) सोहिलो सुहायो आज ॥ घरघर मंगल होत

अवधपुर भयेहें मनोरथ काज ॥१ ॥ फूली फिरत सुवासिन दाई अति आनंद महाराज॥ रघुकुल तिलक भानुव्है आये तुलसीदास शिरताज ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (४) राम जन्म मानत नंदराई। प्रथम फुलेल उबटनों सोंधो यह बिध लाल न्हवाई ॥१ ॥ रंग केसर बागो कुलही आभूषण पहिराई ॥ सबको व्रज एक लरिका तातें बेगही लियो जिमाई ॥२ ॥ जन्म समे पंचामृतसों देव न्हवावत गाई ॥ चर्चित पीतांबर उढायके फूलमाल पहिराई ॥३ ॥ भोग धरायके आरतीवारत बाजत बहुत बधाई ॥ दुहुकर जोर बलैयां ले के तुलसीदास बल जाई ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (५) आज महामंगल कौशलपुर सुन नृपकें सुत चार भये ॥ सदन सदन सोहिलो सुहायो नभ ओर नगर निसान हये ॥१ ॥ अति सुख वेग बोल सुरगुरु मुनि भूपति भीतर भवनगये ॥ जात कर्म कर कनक बसन मणि भूषण सुरभी समूह दये ॥२ ॥ दधि अक्षत फलफूल दूब नव युवतिन भरभर थार लये ॥ गावत चलीं भीरभई वीथन वंदन मांग सिंदूर दये ॥३ ॥ कनक कलश ओर ध्वजा पताका बिचबिच बंदन बार नये ॥ उडत गुलाल अरगजा छिरकत सकल लोक इकरंग रये ॥४ ॥ सजसज साज अमर किन्नर मुनि जान समागम गगन ठये ॥ नृत्यत नव अप्सरा मुदित मन पुन पुन वरखत कुसुम चये ॥५ ॥ अति आनंद मग्न पुरवासी देत सबन मंदिर रितये ॥ तुलसीदास पुनभरेहि देखियत राम कृपा चितवन चितये ॥६ ॥

□ राग जेतश्री □ (६) फूले फिरत अयोध्या बासी ॥ सुन्दर सुत जायो कौशल्या रामचंद्र सुखरासी ॥१ ॥ द्वारन बंदनबार साथिये मोतिन चौक पुराये ॥ नाचत गावत देत बधाई मानों घर घर सुत जाये ॥२ ॥ गली गली गज बाजि जहां तहां हकलाय दिये तबेले ॥ दान बहुत याचक जन थोरे कापें जात संकेले ॥३ ॥ दशरथ भूप भंडार मुक्त किये वंदी अभर भरे ॥

शकट सलीताही सोहे मालन ठोर ठोर धरे ॥४ ॥ संत कमल मुख देखन कारन रवि उद्योत कर्यो ॥ मुदित देव दुंदुभी बजावत निश्चर तिमिर हर्यो ॥५ ॥ देत अशीश सकल नरनारी चिरजीयो रघुवीर ॥ अग्रदास आनंद अखिल पुर मिटी ताप तनपीर ॥६ ॥

□ राग जेतश्री □ (७) राम जन्म आनंद बधाई ॥ सुरतरु कामधेनु चिंतामणि अवधपुरी मानों घरघर आई ॥१ ॥ अंतरिक्ष जन फिरत अवनीपर मिलत परस्पर दूब बंधाई ॥ प्रफुल्लित हदें नगर बासिनके बाल वृद्ध सब बात सुहाई ॥२ ॥ धीर गंभीर नाचें नरनारी बाचे बहुत गिने नहीं जाई ॥ मंगल कलश चौक मोतिनके द्वारन बंदनवार बंधाई ॥३ ॥ सुतको वदन निहार नारि सब बारत भूषण लेत बलाई ॥ रत्न गर्भ कौशल्यारानी धन्य भाग्यकी करत बडाई ॥४ ॥ दशरथराय न्हाय भये ठाडे कंचन वसन अनेक मगाई ॥ परम पुनीत विप्र पद वंदित दान मान जन घन बरखाई ॥५ ॥ मागध सूत भाट बंदीजन अष्टसिद्धि नवनिधि बांछित पाई ॥ दशरथ सुत नितप्रति हों देखों अग्रदासके यह जीय भाई ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (८) माई प्रकट भये हें राम ॥ हत्या तीन गईं दशरथकी सुनत मनोहर नाम ॥१ ॥ बंदीजन सब कौतुक भूले राघव जन्म निधान ॥ हरखे लोग सबे भुवपरके युव जन करतहें गान ॥२ ॥ जयजयकार भयो वसुधापर संतन मन अभिराम ॥ परमानंददास बलिहारी चरन कमल विश्राम ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (९) रघुकुलमें प्रकटे रघुवीर ॥ देशदेशतें टीको आयो दिव्य रत्न मनिहीर ॥१ ॥ घरघर मंगल होत बधाई अति पुरवासिन भीर ॥ आनंद मगन भये अति डोलत कछुव सुधि न शरीर ॥२ ॥ हाटक बहु इच्छाजो लूटायो रत्न गायदेचीर ॥ देत असीस चूर चिरजीयो रामचंद्र रणधीर ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१०) आज अयोध्या मंगलचार ॥ मंगल कलश माल

अरु तोरन बंदीजन गावत सब द्वार ॥१ ॥ दशरथ कौशल्याजु कैकेई बेठे आय मंदिर के द्वार ॥ रघुपति भवत शत्रु घन लक्ष्मण चार्यों धीर उदार ॥२ ॥ एक नाचत एक करत कुलाहल पांयन नूपुर को झनकार ॥ परमानंददास मनमोहन प्रकटे असुर संहार ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (११) आज अयोध्या प्रकटे राम ॥ दशरथवंश उदे कुलदीपक शिव विरंचि मुनि भयो विश्राम ॥१ ॥ घर घर तोरन वंदनमाला मोतिन चौक पूरे निजधाम ॥ परमानँददासतिहिं अवसर बंदीजनके पूरत काम ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१२) कौशलपुर में बजत बधाई ॥ सुंदर सुत जायो कौशल्या प्रकट भये रघुराई ॥१ ॥ जातकर्म दशरथ नृपकीनो अगणित धेनु दिवाय ॥ गज तुरंग कंचन मणि भूषण पावस ऋतुमानो बरषाय ॥२ ॥ देत असीस सकल नरनारी चिरजीयो सतभाय ॥ तुलसीदास आस पूरन भई रघुकुल प्रकटे आय ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१३) अवध राज एक आगम आयो ॥ करतल निरख कहेत सब गुणिजन बहुत ने परचो पायो ॥१ ॥ बूढो बडो प्रमाणिक बामन शंकर नाम सुनायो ॥ संग सुशिष्य सुनत कौशल्या भीतर भवन बुलायो ॥२ ॥ पाय पखार पूजदियो आसन अशन वसन पहरायो ॥ मेले चरण चारू चार्योंसुत माथें हाथ दिवायो ॥३ ॥ नखशिख बाल बिनोद विप्र तन पुलक नयन जल छायो ॥ लेले गोद कमलकर निरखत उर प्रमोद अनुमायो ॥४ ॥ जन्म प्रसंग कर्यो कौतुक मिस सीय स्वयंवर गायो ॥ तुलसीदास निवास चरणहि सबहिनके मन भायो ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (१४) नगरमें बाजत कहां बधाई ॥ गर्भ उदय कौशल्या माता रामचंद्र निधि आई ॥१ ॥ ऋषि बूझे कौशल्या माता केसो जन्म गुसांई ॥ नौमी सोमवार तिथि नीको चौदह भुवन बडाई ॥२ ॥ ब्राह्मण वेद पढत अति निर्मल ऋषि अभिषेक कराई ॥ द्वारें भीरभई दशरथके

सामवेद ध्वनि गाई ॥३ ॥ घर घर मंगल चार साथिये मोतिनचौक पुराई ॥ सोहत राजरामको नीको मांनदास जहांपाई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (१५) आज अयोध्या मांझबधाई ॥ दशरथ सदन चैत्रसुदि नौमी दिन प्रकटे संतन सुखदाई ॥१ ॥ वडभागिनी कोशल्यारानी जाकी कूख भये रघुराई ॥ अमरलोक यह लोगन आवत उर आनंद न समाई ॥२ ॥ सत्यलोक संताप हरण भूभार उतारन आयो माई ॥ मर्यादा पुरुषोत्तम लीला प्रेम मुदित गोकुलचंद गाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१६) अयोध्या बाजत आज बधाई ॥ गावत मंगल करत कुलाहल प्रकट भये रघुराई ॥१ ॥ दशरथ मन आनंद भयोहे विहंसी सबे लुगाई ॥ सुरविमान चढ कौतुक आये वरखा पोहोप कराई ॥२ ॥ रघुपति तिलक त्रिलोक चिंतामणि सबहिनके सुखदाई ॥ जनसों कछू कहत नहीं आवे प्रेमभक्ति निधिपाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१७) आज सखी रघुनंदन जाये ॥ सुंदररूप नयनभर देखो गावत मंगलचार बधाये ॥१ ॥ परम कौतुहल नगर अयोध्या घरघर मोतिन चोक पुराये ॥ द्वारद्वार मारग गरियारे तोरन कंचन कलश धराये ॥२ ॥ पूरण सकल सनातन कहीयत जे हरि वेद पुराननगाये ॥ महाभाग्य राजादशरथको जिहिंघर रघुपति जन्मही आये ॥३ ॥ ब्रह्मघोष मिल करत वेदध्वनि जयजय दुंदुभी देव बजाये ॥ गुणि गंधर्व चारण यश बोले भूवन चतुर्दश आनंद पाये ॥४ ॥ पान फूल फल चौवा चंदन बहु उपहार लोक ले आये ॥ परमानंदप्रभु मन-मोहनकों ले कोसल्या गोद खिलाये ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (१८) महा मंगल उदय आजतें अवधिमें राजराजें दशरथ दुलारे ॥ सुनत प्रागट्य आनंद मग्न भये सकल ब्रह्मा रुद्रादि सब समाधि टारे ॥१ ॥ कुसुम वृष्टि निज यष्टि रस द्रष्टिसों बरष सुरहरष गंधर्व गानें । वदत जस वेद मर्यादके भेदकर कथित ऋषिराज जोतिष बखानें ॥२ ॥

लग्न कर्कहु चन्द देव गुरु संयुक्त तुलअरि यमजु रिपु तमसिकोमे ॥ मकर कुंभ मीन उसना उच्च भानु अजलाभ बुझ कतवय अधिक सोभे ॥३ ॥ पुष्य वालव विधुज जोग सिव मधु विमल अंक घटिका रत्न समय देखे ॥ फिरत उन्मत्त सुरयूथ पुर गलिनमधि जनम जीवन करत सुफल लेखे ॥४ ॥ बजत बाजे धन्य धन्य धुनि व्हेरही लोक विस्मित सदानंद तन्मे ॥ जगत मोहन द्वारकेश बलिश्याम वपु व्युह श्रुति सहित श्रीरामजन्मे ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (१९) वन्दों अवध गोकुल गाम ॥ इते राजत जानकी वर उतें श्यामा श्याम ॥१ ॥ इते सरयू वहत निर्मल उते यमुनानीर ॥ हरत कलि विष युगल मूरत जान जनकी पीर ॥२ ॥ इते शवरी स्वर्ग दीनो चित्रकूट बनाई ॥ उते कुब्जा रूप दीनों चन्दन चारु घिस लाई ॥३ ॥ इते खेवत सखा-तारे बेठिकें रघुराई ॥ उते कर नख भूप तारे करगहे यदुराई ॥४ ॥ इते शार्गपाणि सोहे ललित लछमनधीर ॥ उते मुरलीकर विराजे हल गहें बलवीर ॥५ इते गौतम घरनिकीगति कीनी राम सुजान ॥ उते द्रौपदी लाज राखी द्वारका पति कान्ह ॥६ ॥ धीर सागर राम मूरत करे गीध निहाल ॥ उते गज वैकुंठ पठ्यो दोरिकें नंदलाल ॥७ ॥ कबहु बावानंदके घर जात माखन खात ॥ तनक भोजन करो विलमो कहत कौशल्या मात ॥८ ॥ भक्त हेत अवतार लीनें धरि दोऊ अवतार ॥ दास तुलसीशरण आये को उतारे पार ॥९ ॥

□ राग सारंग □ (२०) हमारे मदनगोपाल हें राम ॥ धनुषबान वर विमल बेनुकर पीत वसन ओर तन घनश्याम ॥१ ॥ अपनी भुजा जिन जलनिधि बांध्यो रास रच्यो जिन कोटिक काम ॥ दशशिर हत जिन असुर संहारे गोवर्धन धार्यो करवाम ॥२ ॥ वे रघुवर यह जदुवर मोहन लीला ललित विमल बहुनाम ॥ परमानंद प्रभु भेद रहित हरि संतन मिलि गावत गुनग्राम ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२१) भोजन लावरी तू मैया ॥ हम कबके तोकों टेरतहें

भूखे चारों भैया ॥१ ॥ सुनत बचन कौसल्या आई लीयें हाथ मिठैया ॥पूरी ले ताती अरु बूरो दार सुमित्रा मैया ॥२ ॥ कैकेई दधि ओदन ले आई मीठे बचन सुहैया ॥ में जानी तुम राजसभामें बेठें हें रघुरैया ॥३ ॥ जेमत राम लक्ष्मन अरु शत्रुहन और भरत रघुछैया ॥ फूंक फूंक सीरोकर पीवत तातो मीठो घेया ॥४ ॥ जल अचवाय कपूर सुवासित लागत परम सुहैया ॥ तुलसीदास सुख नेनन निरखत मैया लेत बलैया ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (२२) चैत्र शुक्ल नौमी दिन जन्म ॥ नगर अयोध्या बजत बधाई दसरथनंदन ब्रह्म ॥१ ॥ राम लक्ष्मन भरत शत्रुघ्न चार व्यूह निज धर्म ॥ पूरन जब अवतार लेहि तब इह बिध जानो मर्म ॥२ ॥ रस मर्यादा पुष्टि श्रीब्रजपति पुरुषोत्तम यह भेद ॥ द्वारकेस बलि कौसल्यासुत निज गुन गावत वेद ॥३ ॥

□ राग गौरी □ (२३) आज बधावो दशरथ रायकें चलो सखी देखन जांय ॥ घरघर पुर आनंद भयो फुले अंग न मांय ॥१ ॥ कौसल्याकी कुखि कल्पतरु प्रकट भये श्रीराम ॥ देवलोक और भुवलोकनमें पुरवन मनके काम ॥२ ॥ दशरथ भाग्य सराईयेहो कौसल्या बडभाग ॥ नरनारी सब गावहींहों उमग उमग अनुराग ॥३ ॥ युवती यूथ मिल आवहींहो हाथन कंचनथार ॥ मानो कमलन शशि चढ चलेहो नृप दशरथ दरबार ॥४ ॥ मोतिनचौक पुरावही साथीये रचितदुवार ॥ नेगलेंहि सब यों कहेंहो जीवोराजकुमार ॥५ ॥ बालक वृद्ध तरुण सबेहो भवन रह्यो नहि कोय ॥ एसोदिन माई आजकोहो एसो जो नितहोय ॥६ ॥ भुषणवसन पहेरावहींहो निकसी देत असीस कुंटुंब सहित तुवसुत लाडिलेहो जीवो कोटिवरीस ॥७ ॥ जिनयाच्यो सोईदीनो हो छिनछिन बढतहुलास ॥ रामललाके रूपपेहो बलबल गोविंददास ॥८ ॥

□ राग कान्हरो □ (२४) प्रगट भयेहें दशरथके रघुवर ॥ महा महोत्सव मंगल घरघर ॥ देखो आय अवधपुर शोभा ॥ नर नारी आनंद

उरगोभा ॥१ ॥ सुनत सबे आतुरव्है धाये॥ हरीदूब दधि नृपति बंधाये॥ मोतियन वंदनवार बंधाये॥ नवतरुणी साथिया बनाये॥२ ॥ ध्वजा पताका मंडित घरघर॥ दिव्य दुकूल सुगंध सींचिधर॥ धर अंबर बाजें बहुबाजे॥ मानो उदधि लहेरिन गाजे॥३ ॥ विप्र वेदध्वनि व्योमन परसत॥ सुरपति कुसुमन अतिसे बरखत॥ भीर भूपघर अतिसी राजें॥ कोऊ लेवे कोऊ देवेकाजें॥४ ॥ भूमि वाजि गज विप्रनपाये॥ धेनुवसन ओर रत्न बधाये॥ याचकजन याचनजो आये॥ दानमान वांछित फल पाये॥५ ॥ कहत तपोधन वचनहमारे॥ चिरजीयो चार्यों पुत्र तिहारे॥ अग्र बधाई जहां नितपावे॥ जन्मकर्म लीला गुणगावे॥६ ॥

□ राग कान्हरो □ (२५) नौमी चैत्रकी उजियारी॥ दशरथके गृह जन्मलियोहे मुदित अयोध्या नारी॥१ ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न भूतलप्रकटे चारी॥ ललित विशाल कमलदल लोचन मोचनदुःख सुखकारी॥२ ॥ मन्मथ मथन अमित छबि जलरुह नीलवसन तनसारी॥ पीतवसन दामिनि द्युति विलसत दशनलसत सितभारी॥३ ॥ कठुलाकंठ रत्नमणि वधना धनुभृकुटी गतिन्यारी॥ घुटुरुवनचलत हरतमन सबको तुलसीदास बलिहारी॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (२६) गावत रामजन्मकी गाथा॥ दशरथके गृह प्रकटभये प्रभु पूरणब्रह्म सनाथा॥१ ॥ आजप्रार्थना सुफलभई यह अब काज देव सब सरहें॥ दुष्टदलन संतनसुखदायक भुवको भार उतरहें॥२ ॥ भुवन चतुर्दश करत प्रशंसा भूरिभाग्य रघुकुलको आहि॥ नेतिनेति निगमादिकगावे सोई सुत कोशल्याजाहि॥३ ॥ देत असीस सूतमागधजन पुरवासी नर नारि॥ कोशल्या नंदनके ऊपर तनमन डारत वारि॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (२७) रामचन्द्र पद भजवेलायक॥ अभयकरण भवतरण तपोधन युगयुग साखिवेदके वायक॥१ ॥ चितवत चरण सदा सुखदायक पापताप नहि सुखके मायक॥ भक्तनकी रक्षाकेकारण

अनुदिन लिये रहत करसायक ॥२॥ गौतमनारि ग्राह गजतारक भक्त विभीषणकेजु सहायक ॥ सेवा अल्प सुमेरसी मानत करुणासिंधु अयोध्या नायक ॥३॥ जेपद रटत मुनिनारद शारद शेषसहस्र मुख पार न पायक ॥ जानकी रमण हरि सर्व शिरोमणि अग्रदास उर आनंददायक ॥४॥

□ राग कान्हरो □ (२८) ललित कथा एक कहों लडेंते नेकु सकुच तज छांडदे आर ॥ सूरज वंश नृपति दशरथकें भये सुंदर सुभग सुतचार ॥१॥ तामें बडे रामचंद्र राजा जनकसुता जाके घर नार ॥ पंचवटीकों चले राजतज पिता बचन माथें परधार ॥२॥ वैकुंठनाथ रनधीर वीर रघु तापस अनुहार ॥ मारे कुटिल सबल राक्षस अति कानन बसति बिघनसब टार ॥३॥ कपटरूप रावन सीताको लेगयो लंक सिंधुके पार ॥ जानकी हरन सुनत सूरजप्रभु चोंक उठे लाओ धनुष संभार ॥४॥

□ राग बिहागरो □ (२९) नंदनंदन एक कहूं कहानी ॥ रामचंद्र राजादशरथके जनकसुता याके घर रानी ॥१॥ तातवचनसुन पंचवटीबन छांडचले ऐसी रजधानी ॥ तहां वसत सीता हरलीनी रजनीचर अभिमानी ॥२॥ पहिलीं कथा पुरातन सुनसुन जननीके मुखबानी ॥ लक्ष्मण धनुषधनुष कहिटेरत यशुमति सूर डरानी ॥३॥

□ राग बिहागरो □ (३०) सुन सुत एक कथा कहुं प्यारी ॥ नंदनंदन मन आनंद उपज्यो रसिकशिरोमणि देत हुंकारी ॥१॥ दशरथ नृप जोहते रघुवंशी तिनके प्रकटभये सुत चारी ॥ तिनमें राम एक व्रत धारी जनकसुता ताके घर नारी ॥२॥ तात वचनसुन राज तज्योहै भ्रातासहित चले बनवारी ॥ धावत कनकमृगाके पाछें राजीवलोचन केलिविहारी ॥३॥ रावण हरण कियो सीताको सुन नंदनंदन नींद निवारी ॥ परमानंदप्रभु रटत चांपकर लछमनदै जननी भ्रम भारी ॥४॥

रामनवमी के पालना के पद

□ राग बिलावल □ (१) झूलत रामपालने सोहें ॥ भुरिभाग्य जननी

जनजोहें ॥१ ॥ तन मृदुमंजुलमेचकताई ॥ झलकत चाल विभुषण झांई ॥२ ॥ अधर पाणि हित लोहितलोने ॥ सरस शृंगार भवसार सलोने ॥३ ॥ किलकत हँसत विलोक खिलोना ॥ मानो विनोद करत छबिछोना ॥४ ॥ रंजनखंजन विलोचन ॥ भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥५ ॥ लसे मसि बिंदु बदन विधुनीको ॥ चितवत चित चकोर तुलसीको ॥६ ॥

□ राग बिलावल □ (२) श्रीरघुनाथ पालने झूले कौसल्या गुण गावे ॥ बल अवतार देवमुनि वंदित राजीवलोचन भावे ॥१ ॥ राजा दशरथ पलना गढायो नवचंदनको साज ॥ हीरा जटित पाटकी डोरी रत्न जराये वाज ॥२ ॥ एते चरणकमल करराते नील जलद तनसोहे ॥ मृगमद तिलक अलक घुंघरारी मृदुल हास मनमोहे ॥३ ॥ घर घर उत्सव चारु अयोध्या राघव जन्म निवास ॥ गावत सुनत लोक त्रैपावन बल परमानंददास ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (३) कनक रतन मय पालनो रच्यो मारु सुत्रधार ॥ विविध खिलौना किंकिनी मंजुल मुक्ताहार ॥ रघुकुल मंडनराम रामललाहोहो ॥१ ॥ जननी ऊबट न्हवायकें मनि भूषन सजिलीये गोद ॥ पीढाये शिशु पालने निरखि मगन मनमोद ॥ दशरथ नन्दन राम रामललाहोहो ॥२ ॥ मत्त मयूरकी चंद्रिका झलके रतनन ज्योति ॥ नील कमल अरु जलदकी उपमा कहें लघु होत ॥ नेन सुकृत फलराम ॥३ ॥ लघु लघु लोहित ललितहें पदपान अधर एकरंग ॥ सो छबि को कवि कहिसके नखशिख सुन्दर सब अंग ॥ राजीव लोचन राम रामलला ॥४ ॥ पदनूपुर कटि किंकिनी कर कंकन पहोंची मंजु ॥ हीयें केहरिनख अद्भुत बने मानो मनसिज मदके गंजु ॥ पुरजन उरमनि राम ॥५ ॥ लोचन नीलसरोजसे भ्रुव मसिबिंदु बिराज ॥ जनु मुख विधु छबि अमीयकों रक्षक राख्यो रसराज ॥ शोभा सागर राम ॥६ ॥ घुंघरारी अलकावली लसे लटकन ललित लिलाट ॥ मानों उडुगण विधु मिलनकों चले तम

बिडारकर बाट ॥ जगत तिमिर हर राम ॥७ ॥ देखि खिलोना किलकहीं पद पान विलोचन लोल ॥ विचित्र विहंग अली जलजज्यों सुषमा सर करत कलोल ॥ भक्त कल्पतरु राम ॥८ ॥ बाल बोल बिन अरथके सुनि देत पदारथ चार ॥ सो पैहन बचनानतें भये सुरनर मुनि त्रिपुरार ॥ नाम काम धुक् राम ॥९ ॥ मात सुमित्रा वारहीं मनि भूषन वसन विभाग ॥ मधुर मल्हाय झुलावहीं गावें उमगि उमगि अनुराग ॥ हें जग मंगल राम ॥१० ॥ मोती ऊपज्यो सीपमें अरु अदिति जन्यो जगभान ॥ रघुपति कोसल्या जन्यो गुन मंगल रूप निधान ॥ भुवन विभूषन राम ॥११ ॥ राम प्रगट जगमे भये गये सकल अमंगल मूल ॥ मीन मुदित हित उदित व्हे नित बैरिनके उर सूल ॥ भव भय भंजन राम ॥१२ ॥ अनुज सखा संग शिशुले खेलन चले चौगान ॥ लंकामें खरभर परी हो सुरपुर बजे हें निशान ॥ रिपुगन गंजन राम ॥१३ ॥ राम अहेरट कुं चले हो जब गजरथ बाजि संवार ॥ दसकंधर उर धुकधुकी अबजिन धावे धनुधार ॥ अरि कुल केहरि राम ॥१४ ॥ गीत सुमित्रा सखीनके सुनि सुनि सुरमुनि अनुकूल ॥ दे असीस जयजय कहें सब हरषें बरषें फूल ॥ सुरसुखदायक राम ॥१५ ॥ बाल चरित्रमय चंद्रमा यह सोलह कलानिधान ॥ चित चकोर तुलसी कीयो कर प्रेम अमीरस पान ॥ तुलसीके जीवनराम ॥१६ ॥

श्री राम के बाल लीला के पद

□ राग विभास □ (१) रामकृष्ण ऊठ कहीयें भोर ॥ यह अवधेश वे व्रजजनजीवन यह धनुष धरन वे माखन चोर ॥१ ॥ इनकें चमर छत्र शिर सोहें उनकें लकुट मुकुट कर जोर ॥ जनकलली राजत इनके संग उनसंग राधा करत कलोल ॥२ ॥ इनसंग भरत शत्रुघ्न लछमन बलदाऊ संग नंदकिशोर ॥ इन सागरमें शिला तराई उन गोवर्धन नखकी कोर ॥ इन मार्यो लंकापति रावन उनमार्यो कंसा बरजोर ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२) सुभग सेज शोभित कौशल्या रुचिर रामशिशु

गोदलियें ॥ बाललीला गावत हुलरावत पुलकित प्रेम पीयूष पियें ॥१ ॥ कबहूं पोढ पयपान करावत कबहूं राखत लाय हियें ॥ वारवार विधु वदन बिलोकत लोचन चारु चकोर पियें ॥२ ॥ शिव विरंचि मुनि सब सिहातहें चितवत अंबुज ओटदियें ॥ तुलसीदास यह सुख रघुपति को पायो औरन काहू बियें ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (३) कोंसल्या रघुनाथकों ले गोद खिलावे ॥ सुंदर वदन निहारकें हँस कंठ लगावे ॥१ ॥ पीत झंगुलिया तनलसे पग नूपुर बाजे ॥ चलन सिखावे रामकों कोटिक छबिछाजे ॥२ ॥ सीस सुभग कुलही बनी माथे बिंदु विराजे ॥ नीलकंठ नखकेहरी कर कंकण वाजे ॥३ ॥ बाल लीला रघुनाथकी यह सुने ओर गावे ॥ तुलसीदासकों यह कृपा नित्य दर्शनपावे ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (४) करतल सोहत बान धन्हैयां ॥ खेलत फिरत कनिक आंगनमें पहेरें लाल पन्हैयां ॥१ ॥ रघुकुल कुमुदचंद चिंतामणि प्रगटि भूतल महीयां ॥ दशरथ अरु कोंसल्या आगें बिहरत नेनन छैयां ॥२ ॥ आये दान देन रघुवंशी आनंद सबही कहैयां ॥ मानोचार हंस सरवरके बैठे आये देहैयां ॥३ ॥ यहसुख तीन लोकमें नाहीं सोपायो हे यहीयां ॥ सूरदास प्रभुबोल भगत कूं निरबाहत हैं बहीयां ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (५) राम मुख देखीयत सुन्दर गात ॥ दशरथ अरु कोंसल्या माता निरख बदन सचुपात ॥१ ॥ बदन चंद राजीवदल लोचन मनिमय कुंडललोल ॥ अलकतिलक मृगमद रुचिराजत सुंदरचारु कपोल ॥२ ॥ बालकदिसा कंठमुक्ता मनि नागचूड सम हाथ ॥ करतल हाथ धनुषशर राजत सुघर अयोध्यानाथ ॥३ ॥ विश्वामित्र सकल सुरनर मुनि ठाडे देत असीस ॥ परमानंद प्रभु अविचल कीरत महाराज जगदीश ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (६) फूलनकी माला हाथ फूली सब सखी साथ

झमक झरोखा झांके नंदिनी जनककी ॥ देखन पियाकी शोभा सीयाके लोचन लोभा एकटक ठाडी मानो पूतरी कनकक्की ॥१ ॥ पितासों कहत बात कमलसो कोमल गात टारोहो प्रतिज्ञा याशिवके धनुषकी ॥ नंददास प्रभु जान्यो तृनकर तोर्यो बान्यो बांसकी धनैया जेसें बालके करकी ॥२ ॥

श्रीराम के ढाढी के पद

□ राग सारंग □ (१) रघुवंशी जिजमान तिहारो ढाढी आयोहो ॥ रामजन्म सुनकें हों आयो राख हमारो मान ॥१ ॥ एक वार हों पहलें आयो अब कोसल्याजाई ॥ दे गहनों ढाढिन पेहेराई बहुत बधाईपाई ॥२ ॥ अब जन्मे भरत शत्रुघन लक्ष्मण रघुपति परम उदार ॥ चारोंनेग निवेरो मेरे दशरथनृप दातार ॥३ ॥ बडीबेस सुत दियो विधाता तबही आयहों गायो ॥ अश्व रक्ष गज सोंनो मोती दे यशवितान जगछायो ॥४ ॥ करहा वाजदिये करजोरे कनक रत्न भर नाग ॥ बहुत दूधकी भेंसेंदीनी भले हमारे भाग ॥५ ॥ मेरे आस तिहारे घरकी ओरनसों नहि काज ॥ फलो अशीश हमारे मुखकी बढोवंश रघुराज ॥ करहाकी गति नाचन लाग्यो ढाढिन हुरक बजाई ॥ कौशल्या कैकई सुमित्रा कंचनमुठी चलाई ॥७ ॥ बारबार दान देत हें लेहिं जननकों लागो ॥ दियोदुशाला कियो निहाला ओर गुदीतेंबागो ॥८ ॥ रत्न जटित टोडर पेहेराये ढाढी कुंडलकान ॥ महाराज दशरथ तिहीं अवसर हाटक वरस्यो दान ॥९ ॥ ढाढिनकों भीतरतें आयो कंचन पचरंग चीर ॥ फूली डोले चांयन चांयन छायो तिनपें हीर ॥१० ॥ गागन भेंस पोरी मुकलाई मेल गुदीमें हास ॥ रत्नदाम मानों हेमजराये दे खोली मनगांस ॥११ ॥ तब ढाढी प्रफूल्लित व्हे बोल्यो सुन नृप मेरी बात ॥ पोरी बंधावो रावरी फुल्यो अंग न मात ॥१२ ॥ यह मनोरथ मेरे मनको द्वार पर्यो हों गाऊं ॥ कौसल्या सुत नयनन देखों अपनी गोद खिलाऊं ॥१३ ॥ जन्म बधाई दशरथ सुतकी सीखे सुने ओर गावे धर्म अर्थ कामना मुक्तिफल भक्ति पदारथ पावे ॥१४ ॥ बहुत भांत ढाढी पेहेरायो जो माग्यो सोदीनो ॥

अग्रदासकों दान अभयपद बहुत अयाचीकीनो ॥१५ ॥

श्री महाप्रभुजी की बधाई (चैत्रवद ११)

□ राग देवगंधार □ (१) आज जगतीपर जयजयकार॥ प्रकटभये श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम वदन अग्निअवतार॥१ ॥ धन्यदिन माधव मास एकादशी कृष्णपक्ष रविवार॥ श्रीमुख वाक्य कलेवर सुंदर धर्यो जगमोहन मार॥२ ॥ श्रीभागवत आत्म अंग जिनके प्रकट करण विस्तार॥ दुंदुभी देव बजावत गावत सुरवधु मंगल चार॥३ ॥ पुष्टिप्रकाश करेंगे भूपर जनहित जग अवतार॥ आनंद उमग्यो लोक तिहूंपुर जन गिरिधर बलहार॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (२) आज जगतीपर जयजयकार॥ अधम उद्धारन करुणा सागर प्रकटे अग्नि अवतार॥१ ॥ गृहगृहतें सुंदरि सब आईं मोतिन भरभर थार॥ निरख कमलमुख प्राणनाथको तनमनधन बलिहार॥२ ॥ करत वेदध्वनि सकल महामुनि सुंदर दृष्टि रसाल॥ विविध दान प्रेमसों दीने श्रीलक्ष्मणभट परमउदार॥३ ॥ करुणासिंधु सकल सुखदायक सकल सृष्टि आधार॥ अपने जीव कृतारथकीने दशविध भक्ति अधार॥४ ॥ परमआनंद बसत त्रिभुवनमें मुदित फिरत नरनार॥ हरिजीवन प्रभु यज्ञपुरुष श्री लक्ष्मणसुत अवतार॥५ ॥

□ राग देवगंधार □ (३) भूतल महा महोत्सव आज॥ श्री लक्ष्मणगृह प्रकट भयेहें श्रीवल्लभ महाराज॥१ ॥ आज्ञादई दयाकर श्रीहरि पुष्टि प्रकटवे काज॥ कलिमें जन्म उबार्यो ततछिन बूडत वेद जहाज॥२ ॥ आनंदमूरति निरखत नयनन फूले भक्तसमाज॥ नाचत गावत विवशभए सब छांड लोक कुललाज॥३ ॥ घरघर मंगल बजत बधाई सजत नयेनये साज॥ मगनभये तन गिनत न काहू तीनलोकपर गाज॥४ ॥ लीलासिंधु महारस अबतें बंधी प्रेमकी पाज॥ रसिकशिरोमणि सदाविराजो श्रीवल्लभ शिरताज॥५ ॥

□ राग देवगंधार □ (४) भाग्यन वल्लभ जन्म भयो शुभ वैशाख कृष्णएकादशी पूरण विधु उदयो ॥१ ॥ संतन मन मायामत्तको अति गहवर तिमिर गयो ॥ रसस्वरूप व्रजभूप सबनकों रूप प्रकाश दयो ॥२ ॥ सेवक नयन चकोर सदा सेवामृत रसअचयो ॥ वचन किरण कर पुष्टिभक्तिरस सब जगमांझ छयो ॥३ ॥ भावरूपको भावरूपही भजनपंथ जतयो ॥ सब सिरावो नयन आपने दुर्लभ पायलयो ॥४ ॥ रस शृंगार एक उद्बोधक विरहताप नशयो ॥ रसिकनके मन वसो दिवस निश प्रभु आनंदमयो ॥५ ॥

□ राग देवगंधार □ (५) भाग्यन वल्लभ भूतल आये ॥ कर करुणा लक्ष्मणगृह कलिमें व्रजपति प्रकट कराये ॥१ ॥ चिंता तजो भजो इनके पद महा पदारथ पाये ॥ दास जननके सकल मनोरथ पूरेंगे मनभाये ॥२ ॥ साधनकर जिन देह दुखावो ये फलरूप बताये ॥ रहो शरणपर दृढ मनकर सब अब आनंद बधाये ॥३ ॥ तनमनधन न्योछावर इनपर कर क्यों न देहो उडाये ॥ रसिक सदां बडभागी ते जे श्रीवल्लभगुण गाये ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (६) सबमिल गावो गीत बधाई ॥ श्रीलक्ष्मणगृह प्रकट भयेहें श्रीवल्लभ सुखदाई ॥१ ॥ उघरे भाग्य सकल भक्तनके पुष्टिभक्ति प्रकटाई ॥ यशोमति सुत निज सुखदेवेकों मुख मूरति प्रकटाई ॥२ ॥ अति सुंदर विधु वदन विलोकत सकल शोक विनशाई ॥ कहत फिरत सबहिनसों फूले आनंद उर न समाई ॥३ ॥ श्रीभागवत अर्थ प्रकट करनकों भाग्यनदईहे दिखाई ॥ भई न कबहूं व्हेहे न ऐसी जैसी अब निधिपाई ॥४ ॥ सदां विराजो शीश हमारे यह मूरति मनभाई ॥ चरणरेणु सेवकको सेवक दास रसिक बलिजाई ॥५ ॥

□ राग देवगंधार □ (७) भयो यह श्रीवल्लभ अवतार ॥ प्राची दिशतें शरदचंद्र ज्यों लक्ष्मण भूप कुमार ॥१ ॥ श्रीभागवत गूढ रस प्रकटन कारण कीयो विचार ॥ आज्ञादई निज यज्ञपुरुषकों ताते वह अनुहार ॥२ ॥

हरि लीलामृत सिंधु संपूरित भक्तहेतु अवतार ॥ श्रीगोपीजन वल्लभ करत जु नित्य विहार ॥३ ॥ व्रजपति पद सेवन मारग जन कारण कियो प्रचार ॥ जिहिं अवसर अनुसरत जीव कछु अर्पत वदन कमल स्वीकार ॥४ ॥ बाजे बाजत बीन दुंदुभी झांझ मृदंग और तार ॥ नाचत गावत प्रेम मगन मन निजजन ठाडे द्वार ॥५ ॥ जननी मुदित उछंग लिये सुत मुख देखत वारंवार ॥ अति सुख पावत हियो सिरावत बडभागिनजु उदार ॥६ ॥ श्रीलक्ष्मण नव वधु स्वजन पेहेराये सब परिवार ॥ भूदेवनकों दिये दान बहु निगम विहित अनुसार ॥७ ॥ जाके गुणगणशेष सहस्र मुख कहेत न आवे पार ॥ यह फल देहु सदा रसिकनकों श्रीवल्लभ जगत उद्धार ॥८ ॥

□ राग देवगंधार □ (८) प्रकटे श्रीवल्लभ सुखधाम ॥ श्रीलक्ष्मणनंदन दुःखनिकंदन भक्तन पूरणकाम ॥१ ॥ श्रीगोकुल गोवर्धनवासी सब वसुधाके मंडन ॥ तिलकरूप हरि भक्ति शीशधर और मतेसबखंडन ॥२ ॥ श्रीव्रजराज कुमार विलासी व्रजकी लीला भावे ॥ व्रजहीके संयोगी बिरही व्रजहीमें रहिआवे ॥३ ॥ व्रजहीके गुणगान दृढ करकें व्रजही मतोदृढावे ॥ गिरिधरलाल किये वश अपने जयजय जगत कहावे ॥४ ॥ श्रीवल्लभ पूरण पुरुषोत्तम सकलवेद यश गावे ॥ श्री विट्ठल गिरिधरनलालसों अहर्निश प्रीति बढावे ॥५ ॥

□ राग देवगंधार □ (९) प्रकटे श्रीवल्लभ निजनाथ ॥ श्रीलक्ष्मणवंश हंस उज्ज्वल यश द्विजकुल किये सनाथ ॥१ ॥ दरसपरस दिये जीवनकों निरमल हियो कियो ॥ करुणासागर रूप उजागर शरण आपनी लियो ॥२ ॥ भाव भक्ति दई भक्तनकों प्रभुकों दिये गहाई ॥ मनवांछित फल सबहिनपाये जेरहे चरण शिरनाई ॥३ ॥ कीने दास लालगिरिधरके आपन भये सहाय ॥ पूजे सकल मनोरथ मनके श्रीविट्ठल गिरिराय ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (१०) आज व्रजजन आनंदभरे ॥ अग्निरूप श्रीवल्लभ प्रगटे मायिक तूलजरे ॥१ ॥ पूरण पुरुषोत्तम गोकुलपति चरण

कमल अनुराग ॥ दृढ विश्वास दियो भक्तनकों जाके हें बडभाग ॥२ ॥ ज्ञानकर्म ओर भक्ति उपासन भयो विवेक विचार ॥ मिथ्या जगत कहे तत्वतें सब होय गये निरधार ॥३ ॥ रूप नाम लीला गिरिधरकी फिरकीनी कलिमांझ ॥ नाम प्रताप प्रकाश भयेतें गई मोहकी सांझ ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (११) जय श्रीलक्ष्मण राजकुमार ॥ श्रीवृन्दावन वदन इन्दुतें प्रकटित भाव शृंगार ॥१ ॥ आनंदरूप स्वरूप आनंदमें आनंद नधि आनंदसार ॥ आनंद दानदेत आनंदकों आनंद इलंमागार ॥२ ॥ दासगोपाल कहांलों वरनों मनोरथपूरे नंद दुलार ॥ श्रीवल्लभ नंदन उभय आनंद कर भक्तन भावविचार ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (१२) श्रीवल्लभ वर प्रकट भये व्रजजन छत्र छये ॥ रसिकमनमें उल्लास बढ्यो अति आनंद ठाठ ठये ॥१ ॥ घरघर मंगल होत बधाई जिततित रंगभये ॥ सब मन प्रकट विलास रासरस तनत्रय ताप गये ॥२ ॥ गोपीजन व्योहार बीजले फिरकर खेलबये ॥ कृपासिंधु श्रीलक्ष्मणसुत् श्रीभट वरतन स्वादलये ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (१३) श्रीवल्लभ भूतल प्रकट भये ॥ माधवमास कृष्ण एकादशी पूरन विधु उदये ॥१ ॥ पुत्र जन्म सुन श्रीलक्ष्मण भट बहुविध दान दये ॥ मागध सूत बंदीजन बोलत सब दुःख दूर गये ॥२ ॥ पुष्टि प्रकाश करनकों आये द्विज स्वरूप धर ये ॥ विष्णुदासके शीश बिराजत प्रभु आनंद मये ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (१४) उदयो भानु भूतल द्विजराई ॥ मिटगयो तिमिर पाखंड कर्म पथ पुष्टिभक्ति प्रकटाई ॥१ ॥ वदि वैशाख पवित्र एकादसी श्रीलक्ष्मण गृह सुखदाई ॥ जयजयकार भयो त्रिभुवनमें कुसुमन वृष्टिकराई ॥२ ॥ नवसत साज सुंदरि सब आंईं हरखित मंगलगाये ॥ ध्वजा पताका तोरण द्वारें मोतिन चौक पुराये ॥३ ॥ पूरे सकल मनोरथ जियके उर आनंद न समाई ॥ यह लीला कहांलों बरणों निरख दास

बलजाई ॥४॥

□ राग देवगंधार □ (१५) बरनों श्रीवल्लभ अवतार ॥ गोकुल पति प्रकटे फिर गोकुल सकल विश्व आधार ॥१॥ सेवा भजन बताय निजजनकों मेट्‌यो यम व्योहार ॥ कुंभनदास प्रभु गिरिधर आये दैवी उतरेपार ॥२॥

□ राग देवगंधार □ (१६) प्रकटे कृष्णानन द्विजरूप ॥ माधव मास कृष्ण एकादशी आये अग्नि स्वरूप ॥१॥ दैवीजीव उद्धारण कारण आनंदमय रस रूप ॥ वल्लभप्रभु गिरिधर प्रभु दोऊ तेई एई एई तेई एक स्वरूप ॥२॥

□ राग देवगंधार □ (१७) आज अति आनंद होत बधाई ॥ श्रीलक्ष्मण गृह प्रकट भयेहैं श्रीवल्लभ सुखदाई ॥१॥ बंदनवार बांधत सब द्वारें मंगल कलश सजाई ॥ विप्र भाट चारण बंदीजन सबहिन मन हुलसाई ॥२॥ जातकर्म कियो श्रीलक्ष्मण भट द्विजपें वेद पढाई ॥ देख स्वरूप भयो अति आनंद पूरण ब्रह्म दृढाई ॥३॥ गाय वच्छ सब दे उमड्‌यो मन विप्रनकों जु बुलाई ॥ सोंनेरूपे सींग मणि जटित अंबर अरुण उढाई ॥४॥ देवलोक दुंदुभी बजाई पोहोपन वृष्टि कराई ॥ शेष गणेश निगम यशगावत श्रीलछमण भाग्य बडाई ॥५॥ जयजयकार भयो तब जगमें कहाकहों अधिकाई ॥ श्रीलछमणसुत जयजय बोलत चरणगहे शिरनाई ॥६॥

□ राग देवगंधार □ (१८) श्री वल्लभ मंगल रूप निधान ॥ कोटि अमृत सम हस मृदु बोलत सबके होत कल्यान ॥१॥ परम उदार चतुर चिंतामणि देत अभय पद दान ॥ विष्णुदास द्वारें यश गावत रुचत नाहि कछु आन ॥२॥

□ राग देवगंधार □ (१९) प्रकटे श्रीलछमण सुत महाराज ॥ शुभवैशाख सुखद एकादसी भक्तनके सुखकाज ॥१॥ श्रीवल्लभ नाम सबहिनके वल्लभ सुंदरवर सुकुमार ॥ अति आनंदभयो त्रिभुवनमें होतहें मंगलचार ॥२॥ वरखत कुसुम देव मुनि हरखत बोलत जयजयकार ॥

मायावाद खंड खंडनकों भूतल द्विज अवतार ॥३॥ कलिके जीव कृतारथकीये भक्तिमारग विस्तार ॥ अपने जान सनातन कीने दास जाय बलिहार ॥४॥

□ राग देवगंधार □ (२०) जय श्री वल्लभदेव धनी ॥ रासविलास करत गोवर्धन मुरति ललितबनी ॥१॥ पुरुषोत्तम मुख कमल विकसित रसिकन मुकुटमनी ॥ चरणनिवेदन दे निज जनकों कृपाकरीजु घनी ॥२॥ श्रीभागवत सुधानिधि मथकें बानी निगम भनी ॥ लीला सृष्टि सिंधु सब पूरित दैवी निज अपनी ॥३॥ श्रीविठ्ठल प्रकटित परमानंद भजन प्रचारबनी ॥ श्रीयमुना पुलिनकेलि वृन्दावन गिरिधर गुणितगुनी ॥४॥

□ राग देवगंधार □ (२१) आजु बधाई मंगल चार ॥ गावत मंगल गीत जुवतिजन नवसत साज सिंगार ॥१॥ मंगल कनक कलश शुभ मंगल बांधी बंदनबार ॥ मंगल मोतिनचोक पूराये पंचशब्द गृह द्वार ॥२॥ घर घर मंगल महामहोत्सव श्रीवल्लभ अवतार ॥ हरजीवन प्रभु यज्ञपुरुष श्रीलक्ष्मन भूप कुमार ॥३॥

□ राग देवगंधार □ (२२) जय श्रीवल्लभवर अवतार ॥ प्रकटभये पूरण पुरुषोत्तम सकल श्रुतिनके सार ॥१॥ तबही प्रकटभये वसुदेवकें तुम हर्योसकल भूभार ॥ बालकेलि सुख नंदमहरकें दिये विविध विस्तार ॥२॥ जात वहेहे सकलजीव कलि भवसागरकी धार ॥ तिनकीबांह गही कमलपद राखे परम उदार ॥३॥ युगयुगराजकरो श्रीगोकुल व्रजमें नित्यविहार ॥ रामदास प्रभु सब भक्तनके जीवन प्राण आधार ॥४॥

□ राग देवगंधार □ (२३) श्रीवल्लभ भक्तन प्राण आधार ॥ श्रीलक्ष्मणगृह प्रकटभये प्रभु सेवा भक्तिविहार ॥१॥ श्रीभागवत प्रकाश विशद कहि धर्मवेद आचार ॥ परमकृपाल दयानिधि पूरण तीनलोक परसार ॥२॥ कोनकहे गुण रूपतिहारे लीला अगमअपार ॥ श्रीगोवर्धन

स्थित उत्साह निरखत प्रेम भरभार ॥३ ॥ बलबल चरणदास अभिलाखन तोरे भवजंजार ॥ अबहुलसत विलसत दिनरातिन दर्शन भोग अहार ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (२४) आनंदभयो श्रीलक्ष्मण नंदकुमार ॥ भूपर प्रकट भये पुरुषोत्तम जीवकीये उद्धार ॥१ ॥ कर निःसाधन सुदृण होयकें कियेजु अंगीकार ॥ कृष्णदास श्रीहरिकी लीला जानें जाननहार ॥२ ॥

□ राग देवगंधार □ (२५) बधाई सबमिल गावो आज ॥ श्रीमद् वृन्दावनविधु प्रकटे आनंद निधि व्रजराज ॥१ ॥ तैलंग तिलक द्विज लक्ष्मण भट गृह आये भक्ति विस्तार ॥ बाजत तूर तरुणी मिलगावत बांधत बंदनवार ॥२ ॥ वेद विदित लीला अवतारी निजमति सेवासार ॥ गोविंद प्रभु वल्लभपद अंबुज सुमरत भव निस्तार ॥३ ॥

□ राग देवगंधार □ (२६) श्रीलक्षमण भट देत बधाई ॥ श्रीवल्लभप्रभु आनंदकी निधि प्रकटभये गृह आई ॥१ ॥ धर्म आदि पुरुषारथ चार्यों सबहीकों उरलाई ॥ निजजनकों कृपा प्रेमरस आनंद वेलि बढाई ॥२ ॥ निजजन सुन सुन अति आनंदित गावत मंगलआई ॥ उदयभयो धन्यभाग्य हमारो फिर लीला प्रकटाई ॥३ ॥ यह कालिंदी यह वृन्दावन गिरि गोवर्धनधारी ॥ नंदनंदन संग केलि करो बलदास चरण बलिहारी ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (२७) बधाईको दिन मंगलआज ॥ गावत गीत मुदित वनितासब पूरेमनके काज ॥१ ॥ श्रीलक्ष्मणगृह महा महोत्सव बांधी बंदनवार ॥ प्रकटे यज्ञ पुरुष पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ द्विजतनधार ॥२ ॥ विप्रनदान बहुत विधदीने वेद विहित अनुसार ॥ जयजय करत देवमुनि नारद शरणागत निस्तार ॥३ ॥ श्रीभागवत गूढ रस प्रकटनकों भूलीनो अवतार ॥ निगमनके अनुसार प्रकाशित नवविधि भजन प्रकार ॥४ ॥ नखशिख तेसो रूप दर्पदल कीनो जगत उद्धार ॥ अगणित गुण गण वरणि सके को केशव जन बलिहार ॥

□ राग देवगंधार □ (२८) श्रीलक्ष्मण घर बाजत आज बधाई ॥ पूरण ब्रह्म

प्रकट पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ सुखदाई ।।१ ।। नाचत तरुण वृद्ध और बालक उर आनंद न समाई ।। जयजय यश बंदीजन बोलत विप्रन वेद पढाई ।। हरद दूब अक्षत दधि कुंकुम आंगन कीच मचाई ।। बंदनमाला मालिन बांधत मोतिन चौक पुराई ।।३ ।। फूले द्विजवर दान देतहें पट भूषण पहराई ।। मिट गये द्वंद नंददासनके मन वांछित फलपाई ।।४ ।।

□ राग देवगंधार □ (२९) प्रकटे श्रीलक्ष्मण कुलभूप ।। श्रीवल्लभ गुण रास मनोहर विश्वको रूप स्वरूप ।।१ ।। शोभा सुभग सुजान शिरोमणि रूप रह्यो तन यूप ।। जग हित प्रकट भये हितकारण तारण अंध जड कूप ।।२ ।। भक्ति कीर्ति प्रवाह प्रकट किये लीला भाव अनूप ।। गोपालदास श्रीवल्लभको प्रकट अगणित गुण रूप ।।३ ।।

□ राग देवगंधार □ (३०) श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम रूप ।। सुन्दर नयन विशाल कमलरंग मुख मृदु बोलत वचन अनूप ।।१ ।। कोटि मदनवारों अंग अंगपर भुज मृणाल अति सरस स्वरूप ।। दैवी जीव उद्धारन प्रकटे दास शरण लक्ष्मण कुलभूप ।।२ ।।

□ राग देवगंधार □ (३१) बधाई श्रीलक्ष्मण गृह द्वार ।। करुनानिधि पूरण श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम साकार ।।१ ।। मधुर बचन पोषत निजजनकों श्रीभागवत उच्चार ।। मधुर रूप कृपादृष्टिसों सींचत वारंवार ।।२ ।। सेवानंतर कथा श्रवनको कह्यो आप विस्तार ।। द्वारकेश प्रभु प्रगट भयेते भूतल जयजयकार ।।३ ।।

□ राग रामकली □ (३२) सुनोंरी आज नवल बधायोहे ।। श्रीलक्ष्मण गृह प्रकट भयेहें श्रीवल्लभ मन भायोहे ।।१ ।। बाजत आवज ढोलक महुवर घनज्यों ढोल बजायोहे ।। कोकिल कंठ नवल वनिता मिल मंगल गायोहे ।।२ ।। हरदी तेल सुगंध सुवासित लालन उबट न्हवायोहे ।। नखशिखलों आभूषण भूषित पीतांबर पहरायोहे ।।३ ।। अशन वसन कंचनमणि माणिक घरघर याचक पायोहे ।। श्रीविठ्ठल गिरिधरन कृपानिधि पलनामांझ झुलायोहे ।।४ ।।

□ राग रामकली □ (३३) श्रीवल्लभजूकों देखेंजीजे ॥ नखशिख सुन्दरता को सागर रूप सुधारस भरभर पीजे ॥१ ॥ वचन माधुरी परम मनोहर भक्त जनन सबकों सुखदीजे ॥ छीतस्वामी श्रीवल्लभजूके पदपंकज अपने उरलीजे ॥२ ॥

□ राग रामकली □ (३४) कोन रस भूतल प्रकट भयो ॥ देखोरी देखो भरि नेनन प्रभु आनंद मयो ॥१ ॥ जो रस निगम अगमहू अगोचर सो सब सद्य लयो ॥ सो रस श्रीलक्ष्मण भट गृह प्रकटित प्रेम मयो ॥२ ॥ घर घर नंद नंदन फल फूल्यो सेवा विधि सिखयो ॥ आपनु किये रसाल रीतिसों श्रीवल्लभ गिरिधर रिझयो ॥३ ॥

□ राग रामकली (३५) कलियुग सब जुगते अधिकाई। जा जुगमें प्रगटे जग शीतल श्रीवल्लभ सुखदाई ॥ कलिजुग० ॥ जो कोउ शरन जाय हें इनके ताकी करत सहाई। दास शरन हरि वागधीश की चरण रेणु निधि पाई ॥कलिजुग० ॥

चोकडा

□ राग बिलावल □ (१) श्रीवल्लभ सुखकारी॥ पुरुषोत्तम लीला अवतारी ॥ काल अकाल तें न्यारे ॥ रसनिधि प्रेम भक्ति प्रतिपारे ॥छंद ॥ प्रेम भक्ति पुष्टिमर्याद सीमा श्रवण कीर्तन स्मरणा ॥ युगल चरण सेवा नित्य अर्चन प्रीतिपूर्वक वंदना ॥ दासत्व सख्य सदा निवेदन अखिल आनंद धारी ॥ गोविंद प्रभु गिरिराज उद्धरण श्रीवल्लभ सुखकारी ॥१ ॥ युगल रसिक शिरमोरें ॥ नवनागर नृप नंद किशोरें ॥ वेद परम रुचिराजें ॥ गिरिधर टहल महल बिचसाजें ॥छंद ॥ साजेंजु टहल महल निरंतर नृपति निजजन कारणें ॥ शृंगार भोजन सुभग शय्या ललित गिरिवर धारणें ॥ गुण गान नृत्य सुतान मानो अंग सामल गोरें ॥ गोविंदप्रभु गिरिराज उद्धरण युगल रसिक शिरमोरें ॥२ ॥ गुणनिधि श्रीगिरिधारी ॥ पूरण पुरुषोत्तम भक्त हितकारी ॥ करुणा किये पति परम उदार ॥ अवलोकित

गुण पतित उद्धार ॥छंद॥ पतित उद्धारण विश्व तारण सकल सुरनर सेवई॥ गुण गाय गोविंदराय राजा बालकृष्ण सुदेवई॥ भये श्रीवल्लभराय रघुपति श्रीयदुपति सामलघन॥ गोविंदप्रभु गिरिराज उद्धरण गुणनिधि श्रीगिरिधरण॥३॥ ताहि शरण जे जीवआवे॥ गोकुलपतिकों अतिहीभावे॥ निर्भयकर शिरधारे॥ चित्रगुप्त निज कागद फारे॥छंद॥ चित्रगुप्त कागद फारडारें डरप धारेताहिकें॥ सुछंद निजजन नित्यमुदितमन नेकडरहि न काहिकें॥ निजजन प्रति प्रीति निशदिन रास रसिकही भावे॥ गोविंदप्रभु गिरिराज उद्धरण ताई शरण जे जीव आवे॥४॥

□ राग बिलावल □ (२) माधवमासे भर वैशाखे॥ श्रीवल्लभ हरि जन्मलिया॥ श्रीलक्ष्मण नंदना त्रिभुवन वंदना॥ भक्तिमार्ग जिन प्रकटकिया॥टेक॥ प्रकटिया जिन भक्तिमारग बंध जीव छुटाईया॥ संसारतेंते मुक्तिकीने शरण जेजन आईया॥ अभय दान निसानमेल्या चित्तजिन हरिकोंदिया॥ गोपालदास अनंतलीला प्रकट श्रीवल्लभ भया॥१॥ दाता भुक्ता और न दूजा॥ साचा त्रिभुवन राय वहां॥ विरह निवारणा भवजल तारणा॥ देखत उपजे चाव उहां॥टेक॥ देखत हरिकों चाव उपजे सकलदुःख निवारही॥ जाकोनाम सुमरेंजरें पातक करजोर निगम पुकारही॥ पतित पावन बिरदजाको शीसमाधो करमया॥ गोपालदास अनंतलीला प्रकट श्रीवल्लभ भया॥२॥ ये व्रजबालिया गोपगुवालिया॥ ये गोकुलके लोगवहां॥ एकन क्रीडा हरिमुखब्रीडा हरिसेवारस भोग वहां॥टेक॥ रसभोग ओर संयोग मिलियो हियें अंतर रमरह्या॥ तुब बालचरित्र अनंतलीला दान दे सब गुण कह्या॥ तेरी भली मुरति देख सूरत राधिका अंचल गह्या॥ गोपालदास अनंतलीला प्रकट श्रीवल्लभ भया॥३॥ पूरणब्रह्म सनातन माधो॥ कलि केशव अवतार वहां॥ जिन जेसा देख्या तिनतेसा पेख्या॥ भक्तन प्राणआधार

वहां ॥टेक ॥ भक्तन प्राण आधार श्रीवल्लभ हिये अंतर राखिया ॥ रामकृष्ण मुकुंदमाधो सदाजिब्हा भाखिया ॥ गोपीनाथ अनाथ बंधू वेदमें करुणामया ॥ गोपालदास अनंत लीला प्रकट श्रीवल्लभ भया ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (३) श्रीलक्ष्मणगृह बधाये ॥ श्रीवल्लभ भूतल आये ॥ भक्तिप्रकाश विलासी ॥ सुंदर बदन मधुर मृदुहांसी ॥टेक ॥ नयन नीके बेनमीठे रूपरंग सुहावनों ॥ बालचरित्र बिनोद नीके प्राणपति जियभावनो ॥ श्रीवल्लभ रसहीखेलें रसहीबोलें रसहीरसमें हुलसहीं ॥ धन्यमाय सुहाग भागिन गोदले सुत विलसहीं ॥१ ॥ पूरव दिशा निधि आई ॥ श्रीगोकुल वृन्दावनछाई ॥ श्रीगोवर्धनधारी व्रजमें प्रकटे रासबिहारी ॥टेक ॥ बुलाय भक्त बिलासकीनों विविधभांत बनायकें ॥ नंदघरकी सुभगलीला प्रगट जनन दिखायकें ॥ मेंट सबदुःख किये सबसुख शरण लीने तानकें ॥ बलजाय चरणन दास दासी भाग्य अपने मानकें ॥२ ॥ श्रीवल्लभ प्रीतम प्यारे ॥ वल्लभजगमें जगतउज्यारे ॥ दैवीनके हितकारी ॥ प्रेमभक्तिके जयजयकारी ॥टेक ॥ प्रेमगावें प्रेमभावें प्रेममें अनुदिनरहें ॥ प्रेमस्नेही प्रेमदेही प्रेमबांनी नित्य कहें ॥ प्रेमसेवा करें करावें नंदसुत हृदेरहें ॥ वल्लभी निजदासदासी सुखसमूह कहा कहें ॥३ ॥ श्रीवल्लभके गुण गाऊं ॥ श्रीवल्लभ चरण हृदयमें लाऊं ॥ मूरति हियमें वसाऊं ॥ श्रीवल्लभजूकीहों बलबल जाऊं ॥छंद ॥ बलजाऊं वल्लभनाथ प्रभुकी शरण वल्लभके रहुं ॥ नयन वल्लभ चेन वल्लभ वेन वल्लभके कहुं ॥ वल्लभ मुखकी माधुरी हों निरख जिय आनंदलहुं ॥ बलजाय चरण निजदास व्हेकें शरण वल्लभके रहुं ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (४) धन्य धन्य माधव मास एकादशी ॥ प्रकटे श्रीवल्लभ सुखरासी ॥ श्रीगोकुल गोवर्धनवासी ॥ यमुनाकुंज निकुंज निवासी ॥टेक ॥ कुंजन कुंज निवास यमुना पुलिन वेणु बजाइयो । अकुलाय नव व्रजसुंदरी तब सुखद रास रचाइयो ॥ सातदिन गिरिधर्यों

कमलकर गर्व सुरपति हरणजू ॥ दासजनके हेत प्रकटे फेर गिरिवरधरणजू ॥१ ॥ श्रीलक्ष्मणगृह नवनिधि आई ॥ श्रीवल्लभ द्विज रूप कहाई ॥ जायो पूत इलंमामाई ॥ हरखत फूली अंग न समाई ॥टेक ॥ फूली अंग न समाय जननी करत आनंद बधावने ॥ गोरसकीच भई अजरमे दूध दधि सिरनावने ॥ पहरभूषण मुदित सहचरी वसन नानावरणजू ॥ दासजनके हेत प्रकटे फेर गिरिवरधरणजू ॥२ ॥ श्रीलक्षमणगृह होत बधाई । श्रवण सुनत व्रजबधू उठधाई ॥ सहज शृंगार किये मन भाये ॥ बोलत जयजय शब्द सुहाये ॥टेक ॥ जयजय शब्द सुनाय बोलत गीत झूमक गावहीं ॥थार कंचन हाथलीने जुरजुर झुंडन आवहीं ॥ मुदित दे करतार नाचत बाजत नूपुर चरणजू ॥ दासजनके हेत प्रकटे फेर गिरिधरवरणजू ॥३ ॥ श्रीलक्षमणगृह नवनिधि आई ॥ अद्‌भुत शोभा वरणी न जाई ॥ कंचन कलश ध्वजा फहराई ॥ दीपदान कर जुगत बनाई ॥टेक ॥ बनाई जुगत धर दीपमाला जोतफेली गगनजू ॥ धेनु धन गृह वसन भूषण देत कंचन नगनजु । मुदित व्है नरनारि जुर देत असीस चले घरनजू ॥ दासजनके हेत प्रकटे फेर गिरिवरधरनजू ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (५) श्री लक्ष्मण भवन आनंद ॥ प्रकटे श्रीवल्लभ हरिमुखचंद समय सकल गुण भाये ॥ जसुमति सुत जिन सदा सुहाये ॥ ढाल ॥ सुहाय दरस सनाथकीने दैवीजन चित चायसों ॥ गिरिराजधर पीय सरसलीला अमित पुरुष सुहायसों ॥ खंड मायावाद सहजहि हुलसि सब गुन गावहीं ॥ धन्य धन्य दक्षिण देश सब मिलि तात गोद लडावहीं ॥१ ॥ धन धन माधो मासा ॥ एकही पाखंड खंड परकासा ॥ तिथि एकादशी नीकी ॥ लीला भाव ललित प्रभुजीकी ॥ ढाल ॥ शुभ ग्रह लग्न नक्षत्र तारा योग करन सुठानहे ॥ सबगुन संयुत शरण आये उदये अंश सुथानहे ॥ ए ऋतु वसंत अनंत गुननिधी केल सुखहिन रासी ॥ तिहिं समें हरिमुख श्रीवल्लभ प्रकटे नित्य विलासी ॥२ ॥ अंबुजनेंन विशाला ॥

ललित सुभग निधी शोभित भाला ॥ गुननिधी श्याम शरीरा ॥ लीला जलनिधी रास गंभीरा ॥ढाल ॥ भुजदंड प्रबल अखंड पदयुग अंबुज नख जग जोहना ॥ अरविंद मुख अलिवृन्द कुंचित अलक गन मन मोहना ॥ युग गंडमंडल रवि अखंडल कोटि कुंडल वारियें ॥ पिय नंदनंदनरूप प्रतिनिधी अलि विचित्र निहारियें ॥३ ॥ अवतरने हरि रूप ॥ श्रीवल्लभ लीला रस रूप ॥ दैवी किये उद्धारा ॥ प्रगटे हें प्रभु गुणन अपारा ॥ ढाल ॥ अपार शुकवच सार पथ उच्चार निगमनि भायो ॥ युगरूप एकही रूप अनुभव प्रगट दासनिपायो ॥ खंड परमत डंड कुगति सनाथ सब तीरथ किये ॥ निश्चय चरण मनवच शरण प्रभु विचित्र उर धर जिये ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (६) पतित उद्धारणा कलिमल तारना ॥ श्रीवल्लभ परम उदार वहां ॥ दीनदयाला परमकृपाला ॥ सब जीवनको कियो उद्धार वहां ॥टेक ॥ उद्धार जीवनको कियो प्रभु कर कृपा करुणामया ॥ जात देखे वहे कलिमें चित्तमें उपजी दया ॥ करण कारण अभयदाता अभयपद जनकों दिया ॥ कृष्णदास प्रभुकी गाय लीला मन मनोरथ करलिया ॥१ ॥ कमल दल नयना मधुर बेना भक्तन प्राण आधार वहां ॥ श्रीगोकुलनाथा सकल सुखदाता शोभा परम अपार वहां ॥टेक ॥ अपार पारा वार मति नहीं सकल जग उद्धारियो ॥ पुरुष परमानंद पूरण भक्तहित वपु धारियो ॥ नाम सुमरत भये पावन सकलखल कलिके जिया ॥ कृष्णदास प्रभुकी गाय लीला मन मनोरथ कर लिया ॥२ ॥ चरणन प्रेमबढाऊं ॥ यह छबिपर बलिहार वहां ॥ तुव गुणगाऊं लाड लडाऊं ठाडो निशदिन द्वारवहां ॥टेक ॥ द्वारठाडो करूं विनती चित्त चरणनमें धरूं ॥ येही निश्चय जान जियमें अपनो जन्म सुफल करूं ॥ चाहना नहिं और मेरें जीवनको फल प्रभुदया ॥ कृष्णदास प्रभुकी गाय लीला मनमनोरथ करलिया ॥३ ॥ शरणागत आये दोष मिटाये तजिये यह संसार वहां ॥ गहिजु लीनो अपनो कीनो ॥ छांड्यो सकल जंजाल वहां ॥टेक ॥ जंजाल छांड्यो सकल भव भ्रम त्रास तृष्णा

सब वही ॥ शूलसागर तर्यो छिनमें नामकी कणिकागही ॥ बलजाऊं ऐसे वदन ऊपर जगत सुनकें तरगया ॥ कृष्णदास प्रभुकी गाय लीला मनमनोरथ करलिया ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (७) धन्य धन्य माधव मास एकादशी कृष्णपक्ष रविवार वहां ॥ धन्यदिन पहर घरी पलमहूंरत प्रकट्या परमदयाल वहां ॥टेक ॥ प्रगट्या प्रान अधार श्रीवल्लभ भक्तहित वपु धारियो ॥ दैवीजीव उद्धार कारण करुणासिंधु विचारियो ॥ अंगअंग फूले श्रीलक्ष्मणभट भये पूरण कामजू ॥ बल विष्णुदास विनोद घर घर होत गोकुलगामजू ॥१ ॥ चंदन भवन लिपाये ॥ कुंकुमरस छिरकाव कराये ॥ मोतिन चौक पुराये ॥ कंचन कलश ध्वजा फेहेराये ॥टेक ॥ कंचन कलश ध्वजा फेहेरावत बंदनवार बंधाइयो ॥ करबिछोना महा अद्भुत जरी वितान तनाइयो ॥ कहाकहूं कछू कहत न आवे होत जगमग धामजू ॥ बल विष्णुदास विनोद घर घर होत गोकुलगामजू ॥२ ॥ घरघरतें आवत व्रजनारी ॥ बालक वृद्ध तरुण सुकुमारी ॥ नवसतसाज शृंगारी ॥ हाथन पूजा कंचन थारी ॥टेक ॥ हाथन पूजा कंचन थारी गावत आवत गीतजु ॥ आईं झुंडन चहूंदिशतें अंतर उपजी प्रीतजु ॥ बहुत आदर दिये भीतर बोललईं सब भामजु ॥ बल विष्णुदास विनोद घरघर होत गोकुलगामजु ॥३ ॥ दानदेत श्रीलक्ष्मणभट ॥ द्वारें आय जुरे गुणीजन ठट ॥ वागो पाग पिछोरा पेचकट ॥ कंचन मणि माणिक बहु पट ॥टेक ॥ कंचनमणि माणिक भूषण पट देत अति आनंदसों ॥ वेदध्वनि मुनि करत हरखत गावत गुणीजन छंदसों ॥ चिरजीयो युगयुग कृष्णानन जाको श्रीवल्लभनामजू ॥ बल विष्णुदास विनोद घरघर होत गोकुलगामजू ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (८) वीते परि वत्सरबहुते ॥ विछुरे जीव ब्रह्मते जबते ॥ भ्रमित फिरत बहु श्रमित महाई ॥ रहे आसुरी सृष्टि मिलाई ॥टेक ॥ रहे आसुरी सृष्टि मिलायकें सब कृष्ण विरह भुलायकें ॥

भवसमुद्र अगाध बूडत कितही तट नही आयकें ॥ तब दया आई हरि हियेमें प्रकट मुख मुरतिकरी ॥ तब दई आज्ञा जाय प्रकटो भूमि द्विजवर तनुधरी ॥ सब वहे जात अनाथ भवनिधि दैवीजन सगरे अबे ॥ आसुरतें निरबार करगहि करो शरणागति सबे ॥१ ॥ माधो मास पुनीत सुहायो कृष्णपक्ष हरिवासर आयो ॥ नक्षत्र वार गुरु शुभदिन नीको ॥ प्रकट्यो परम भांवतो जीको ॥टेक ॥ प्रकट्यो जोभांमतो परममनको देख ॥ सब हुलसाइयो ॥ ब्रह्म पूरण देह द्विजवपु श्रीलक्ष्मणगृह आईयो ॥ सुनत हरखे दैवीजन सब काज मनवांछित भयो ॥ देखदृग अति भये शीतल ताप तनमनको गयो ॥ बजत घर घर प्रति बधाई गीतमंगल गावहीं ॥ नभ निशान बजाय सुर सब कुसुमगण बरखावहीं ॥२ ॥ लक्ष्मण सदन सुहायो लागे ॥ देखत सुखदृगको दुःखभागे ॥ वंदन तोरण वार बंधाये ॥ आंगन रचना चौक पुराये ॥टेक ॥ चौक रचना भई आंगन मंगल कलश सुहावने ॥ सजे भूषण त्रियागण मिल गावत सरस बधावने ॥ पढत द्विजवर वेद ध्वनि मिल वैदिक कर्म करावहीं ॥ जो जाके मन जैसी वांछित तेसो सो जन पावहीं ॥ सूत मागध भीर द्वारें लक्ष्मण कुलवर भावहीं ॥ हीरचीर अमोल माणिक धेनु दान दिवावहीं ॥ नाचत नरनारि आंगन फूले अंग न समावहीं ॥ धन्य धन्य मात ईलमागारु सुत गोदले हुलारावहीं ॥३ ॥ श्रीवल्लभ रवि जगत प्रकाशे ॥ मायावाद तिमिर भयनाशे ॥ भयो पुष्टि पंथ कमल विकासी ॥ देख मित्र भये परम हुलासी ॥टेक ॥ भये परम हुलास सबहिन वेद पंथ विस्तारियो ॥ देशदेश पवित्र कर पद धरि जन निस्तारियो ॥ सूत्र भाष्य प्रकाश श्रीमुख ग्रन्थ भवनौकाधरी ॥ गूढ श्रीभागवत प्रतिपद अर्थकर टीकाकरी ॥ प्रकट गिरिवर धरण गिरिमें लिये निकट बुलायकें ॥ मिल परस्पर बात जियकी कही सब समझायकें ॥ वंश निर्मल प्रकट करि बहुभांत हरिहीं लडायकें ॥ दास निजजन भये प्रमुदित श्रीवल्लभ पदरज पायकें ॥४ ॥

श्री महाप्रभुजी की बधाई

□ राग बिलावल चोकडा □ (१) कृष्ण एकादशी अरु गुरुवार ।। श्रीवल्लभ प्रभु प्रकट भये ।। भक्त जननके मनोरथ साधे ।। देखत तनके ताप गये ।।ढाल ।। गये त्रिविध ताप भये सब भक्त जगत शिरोमणी ।। श्रीनाथजीकी कृपा दृष्टितें प्रगट भये श्रीवल्लभ मणी ।। कलिके जीव उद्धारन कारन चिंता धरी भूतल आय कें ।। कृष्णदासके प्रभु प्रगट भये कृपावलोकन पायकें ।।१ ।। लग्न महूरत माधोमासे ।। शुभदिन सत श्रीवल्लभ प्रकाशे ।। पुरुषोत्तम अवतार मनोहर ।। उदयो कोटि किरनले दिवाकर ।।ढाल ।। कोटि आए भानु अलौकिक शोभा कही न परे रावरे ।। सनकादिक शुक शिव शेष नारद शारद वरन भये बावरे ।। निगम आगम कोऊ पार न पावे नेति नेति कही गावहीं ।। कृष्णदासके प्रभु प्रकट भये जाकुं मुनीश्वर ध्यावहीं ।।२ ।। श्रीवल्लभ नाम लेत हें जेजन ।। पावन होतहें दैवीनके मन ।। प्रकट भये भूतलपर श्रीवल्लभ ।। खंडन कियो मायामत सुल्लभ ।।ढाल ।। कीयो खंडन सबही सुलभकर दैवीनके कारज सरे ।। तैलंगकुल दीपक बिराजत त्रिभुवनमणि दिवाकरे ।। शोभा शिरोमणि प्रकट पुरुष प्रमाण भूतल आवीया ।। कृष्णदासके प्रभु आयप्रगटे व्रजसुंदरी मन भावीया ।।३ ।। भूतल वल्लभ प्रगटे महाराज ।। शिवविरंचि वंदित चरन रज ।। पार न पावत करत वेदधुनि ।। यशगावत त्रिभुवनमें महामुनि ।। ढाल ।। मुनीराज गावत यश अनूपम रूप बरनत न आवहीं ।। जेही नेति कही निरंतर गावत ध्यान कबहुंक पावहीं ।। पाणि जोरत देव मुनिजन तिहूंलोक दुंदुभी बाजहीं ।। कृष्णदासके प्रभु आय प्रगटे दैवी जीवन शिर गाजहीं ।।४ ।।

□ राग बिलावल चोकडा □ (२) माधोमास कृष्ण एकादशी ।। शुभ लग्न नक्षत्र गुरुवार ।। श्रीलक्ष्मणगृह प्रकट होयकें ।। भूतल लियो अवतार ।।छंद ।। भूतल लियो अवतार श्रीवल्लभ दैवीजीव उद्धारियां ।। पंच दोष सब दूर

करिकें शरण जेजन आईयां ॥ शरण आये जेजन तारे सकल ताप निवारियां ॥ श्रीवल्लभ मुखचंद प्रगटे जगत यश विस्तारीयां ॥१ ॥ मायामत खंडन करि नाख्यो ॥ निगम स्मृति सत्य करि भाख्यो ॥ भक्ति मुक्ति सब पूरन काम ॥ पुष्टि मार्ग प्रकाशित नाम ॥छंद ॥ नाम वल्लभ प्राण वल्लभ ध्यान वल्लभ ध्याईयें ॥ विश्राम वल्लभ भक्तजनके श्रीवल्लभ गुण गाइयें ॥ वल्लभ लखि आनंद बाढ्यो कोटि मनमथ वारियां ॥ श्रीवल्लभ मुखचंद प्रगटे जगत यश विस्तारीयां ॥२ ॥ अदेयदानके दाता तुमहीं ॥ निजजन कृपा प्रेमरस बरखहीं ॥ पतित उद्धारन नाम तिहारो ॥ कृपादृष्टि मोपेजु निहारो ॥छंद ॥ कृपादृष्टि निहारो मोपें दास अपनों जानीयें ॥ दोष मेरे जिन विचारो भवसागरतें तारीयें ॥ मीठे मधुरे बोल तुमारे व्रजवासी हरखे हियां ॥ श्रीवल्लभ मुखचंद प्रगटे जगत यश विस्तारीयां ॥३ ॥ श्रीभागवत मथन सुबोधिनी ज्ञाता ॥ दैवी जीवनके ये सुखदाता ॥ भक्तिमारग प्रकटे ये भान ॥ निजजनको मेट्यो अज्ञान ॥छंद ॥ अज्ञान मेटे भक्तजनके दैवी केहि विधि जानीयें ॥ ब्रह्मसंबंध आज्ञाजु दीनी शरण मेरी आनीयें ॥ सारस्वतकल्पकी लीला प्रगट ताही दिखाइयां ॥ श्रीवल्लभ मुखचंद प्रगटे जगत यश विस्तारियां ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (३) श्रीवल्लभ अवतार भयो भुव ॥ श्रीभागवत गूढ सर्वरस प्रकट कियो भुव श्रीलक्ष्मण सुव ॥१ ॥ बाजेबजत विविध मंगलके ध्वनि तिनकी तिहुंलोक रही छुव ॥ पुष्टिभक्ति मारग अब निजकर प्रगट्यो यह सुन संत मुदित भुव ॥२ ॥ सहज भावते किये कृतारथ जे आये सब छांड शरण तुव ॥ निजजन लीला जलनिधि यह अब आये अनुपम शशि हुव ॥३ ॥ श्रीवल्लभ प्रभुकी निरख यह रीति देत अशीश वृद्ध वारे युव ॥ हरि जीवन प्रभु श्रीवल्लभकी रहो राजधानी अविचल ध्रुव ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (४) प्रगट भये श्रीलक्ष्मणनंद ॥ माधवमास कृष्ण एकादशी प्रकटे आनंदकंद ॥१ ॥ मायावाद खंड खंडन कर दृढजु भूले मतिमंद ॥ दैवी जीव उद्धारण कारण सेवा बताई भजनानंद ॥२ ॥ घरघर मंगल होत सबनके सब मिल गावत गीत सुछंद ॥ श्रीवल्लभकी चरण कमल रज निशदिन याचत गोकुलचंद ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (५) बाजत मंगलचार बधाई ॥ प्रकटे श्रीवल्लभ श्रीलक्ष्मणगृह धन्य इलंमा माई ॥१ ॥ उघरे भाग्य दैवीजीवनके जिन ऐसी निधि पाई ॥ व्रजवल्लभ मुख कमल मनोहर द्विजवर देह धराई ॥२ ॥ नाचत गावत गुणीजन सज्जन मोतिन चौक पुराई ॥ तोरण वंदनवार द्वारपें जयजयकार सुहाई ॥३ ॥ वदि वैशाख एकादशी शुभ दिन आनंद उर न समाई ॥ हरि-जीवन प्रभु श्रीवल्लभकी बार बार बलिजाई ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (६) प्रगट भये तैलंग कुल दीप ॥ श्रीलक्ष्मण भट अति आनंदित सुत मुख निरखत आय समीप ॥१ ॥ मात इलंमा कूख उदय भयो ज्यों उपजत मुक्ताफल सीप ॥ सगुणदास मुख कहत न आवे यश प्रसर्यों नव खंड सप्त द्वीप ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (७) श्रीलक्ष्मणगृह आई नवनिधि ॥ प्रगटे जान पूरण पुरुषोत्तम द्वार बुहारत फिरत अष्टसिद्धि ॥१ ॥ बजत निशान भेर सहनाई देखियत तहांई सकल रिद्धि ॥ सगुणदास प्रभु जन्म श्रवण सुन दरसन कारण आये हरबिधि ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (८) आये देव विमानन चढ चढ ॥ महा महोत्सव दरस करनकों एकएकतें आगें बढ बढ ॥१ ॥ विन गिरिधर इन समकोऊ नाहीं कहो कोउ बातें कछु गढ गढ ॥ सगुणदास प्रभु जन्म श्रवण सुन दे असीस मुनि मंत्रन पढ पढ ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (९) द्वारें आये गुणिजन ठाडे ॥ प्रकटे पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ सबहिन आनंद मंगल बाढे ॥ श्रीलक्ष्मण भट दान देनकों पट

भूषण मणि माणिक काढे ॥ सगुणदास आस सब पूजी मानो बरखत इन्द्र अषाढे ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (१०) झुंडन गावतहें व्रजनारी ॥ नवसत साज श्रृंगार कनकतन पहेरें झूमक सारी ॥१ ॥ कंचन थार लियेंजु कमल कर मंगल साज सँवारी ॥ दधि अक्षत अरु श्रीफल कुंकुम और दूब कुसुम मालारी ॥२ ॥ नाचत गावत करत कुलाहल उठीं देत कर तारी ॥ श्रीलक्ष्मणगृह खेल मच्योहे भीर भई अति भारी ॥३ ॥ घरघर बांधी वंदनमाला मंगल कलश ध्वजारी ॥ श्रीवल्लभ मुख कमल निरख छबि दास रसिक बलिहारी ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (११) श्रीलक्ष्मण गृह प्रगटे श्रीवल्लभ घरघर होत बधाई ॥ नाचो गावो करो कुतुहल आनंदकी निधि आई ॥१ ॥ आंगन लीपो चोक पुराओ द्वारें बंदन माल बंधाई ॥ घरघर मंगल महा महोत्सव आनंद उर न समाई ॥२ ॥ अति बडभागिन मात इलम्मा हुलसत अति सचुपाई ॥ वल्लभ प्रभु गिरिधर फीरि प्रगटे सब भक्तन मनभाई ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१२) श्रीवल्लभ गुन गाउं ॥ निरखत सुंदर स्वरूप वरखत हरि रस अनुप द्विज वर कुल भूप सदां बलि बलि जाउं ॥१ ॥ निगम अगम कहेत जाहि सुरि नर मुनि न लहे ताहि सकल कला गुन निधान पूरन उर लाउं ॥ गोविंद प्रभु नंद नंदन लक्ष्मण सुत जगत वंदन सुमरण त्रय ताप हरण चरण रेणु पाउं ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (१३) श्रीवल्लभ देवको बल मेरें ॥ ओरनते हुं नेक न डरिहों परि रहों इनके पद नेरें ॥१ ॥ एक बल मोहि आनि त्योहें जे श्रीवल्लभ के चेरे ॥ श्रीवल्लभ सम भयो न व्हेहे श्रीवल्लभ कहे टेरे ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (१४) वल्लभ की वानिक मन भाई। करि स्नान संवारि केश माथे तिलक बनाई ॥१ ॥ संध्या करत हरत मेरो मन इत उत नयन चलाई। करि शृंगार तब मो तन चितयो रामदास बलि जाई ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (१५) वल्लभ करि शृंगार बिराजे। कोटिक चंद वारों श्रीमुख पर कोटिक मन्मथ लाजे ॥१॥ कोटि भानु सम तेज प्रकासे अंधकार सब भाजे। रामदास यह रूप धर्यो है निज भक्तन हित काजे ॥२॥

□ राग आसावरी □ (१६) दिनमणि श्रीवल्लभ उदयो॥ श्रुतिपथ कियो प्रकाश अवनीतल माया तिमिर गयो ॥१॥ विदुषवृन्द उडुगण नहीं देखियत त्रास तिमिर अलग भयो॥ रासरसिक लीलामृत सागर आप दिखाय दयो ॥२॥ कर करुणा निज उद्धारणको भक्तनेम दिखाये॥ अनल कृपातें मधुकर हरि भाव मधुपान कराये ॥३॥

□ राग आसावरी □ (१७) श्रीलक्ष्मण गृह आज बधाई॥ प्रकटे श्रीवल्लभ सुखदाई ॥१॥ धन्य धन्य माधवमास सुखकारी॥ अति फूले श्रीगोवर्धनधारी ॥२॥ नामकरण ऋषि गर्ग कराये॥ श्रीलक्ष्मण बहु दानदिवाये ॥३॥ महा महोत्सव व्रजपुर घरघर॥ पूरणब्रह्म प्रकटे जगतीपर ॥४॥ वेद ध्वनी मुनि विप्र सुनाई॥ व्रज सुंदरि आतुर अति धाई ॥५॥ हाथन कंचन थार सुहाई॥ गावत मंगल मंदिर आंई ॥६॥ निरखचंद मुख नयन सिराने॥ त्रिविध ताप तनकेजु नसाने ॥७॥ घरघर मंगल चौक पुराये॥ महाभाग्य निधि भूतल आये ॥८॥ दास निरख निरख गुण गावे॥ मागध बंदी नोछावर पावे ॥९॥

□ राग आसावरी □ (१८) प्रकट भये प्रभु श्रीमद् वल्लभ श्रीलक्ष्मणजूके गेहरी॥ मात इलंमा ढोटा जायो रसिक शिरोमणि जेहरी ॥१॥ देवन दिव्य दुंदुभी बजाई॥ कुसुमन वरषत मेहरी॥ मुनि मन प्रफुल्लित करत वेदध्वनि अंतर उपज्यो नेहरी ॥२॥ नारद नृत्य करत गुण गावत श्रीमुख कर तब गानरी॥ श्रीभागवत वेद उपनिषद वेद व्यास पुराणरी ॥३॥ मागधसूत विमल यश बोलत गंधर्व शब्द सुर तानरी॥ याचक आय जुरे सिंघद्वारें सुनत बधाई कानरी ॥४॥ धन्य धन्य माधवमास एकादशी

कृष्णपक्ष शुभरातरी ॥ सात घरी उपरांत पलचालीस उपज्यो जग विख्यातरी ॥५ ॥ श्रीलक्ष्मण भट अति आनंदित मनही मन मुसकातरी ॥ परमकृपाल कृपाकर आये भई अलौकिक बातरी ॥६ ॥ पुत्र उत्साह भयो सबहिनकों पशु पक्षी व्रजमांझरी ॥ बनठनकें आईं व्रजसुंदरि मानो फूली सांझरी ॥७ ॥ बजत निसान भेरि सहनाई ताल पखावज झांझरी ॥ तूर मुरझ पिनाक डफ महुवर उमग उमग मन मांझरी ॥८ ॥ मोतिन चौक पुराये बहु विध बांधी बंदनवाररी ॥ नूतन तरु पल्लव पट कुसुमन मुक्ताफल अतिसाररी ॥९ ॥ कहाकहों शोभाजु भवनकी कहेत न आवे पाररी ॥ जयजयकार करत नरनारी भक्तनहित अवताररी ॥१० ॥ दानदेनकों अति आदर कर बोल सबनकों लेतरी ॥ मणिमाणिक कंचन पट भूषण मन वांछित फलदेतरी ॥११ ॥ चिरजीयो करुणानिधि वल्लभ प्रेमसिंधु-को सेतरी ॥ सगुणदास गुण वरण सके को निगम पुकारत नेतरी ॥१२ ॥

□ राग आसावरी □ (१९) माधवमास एकादशी शुभदिन श्रीलक्ष्मण कुल आयेहो ॥ नंदनंदन जासों कहियत सो द्विजवर रूप कहायेहो ॥१ ॥ बालकलीला व्रजमें कीनी सोई आय फिरकीनेहो ॥ यशुमति जोसुख पावत सोई मात इलंमा दीनेहो ॥२ ॥ बकी विदारण तबही कीनो अबे अविद्या गमायेहो ॥ शकट विभंजन व्रजमें कीने अब संसार नसाये हो ॥३ ॥ तृणावर्तकों मार्यो तबही अब जन भ्रमण मिटायेहो ॥ नामकरण तब द्विजवर दीनों अबे अभय पदपायेहो ॥४ ॥ चोरी करि मन-हर्यो जु तबही अब अनन्य जन कीनेहो ॥ तब कुबेर सुतकों गतिदीनी अब विषयिनकों गति दीनेहो ॥५ ॥ तब धेनुक गर्दभही मार्यो अब माया वाद निवार्यो ॥ तब काली विषधर वशकीनो अब दुर्बुद्धि प्रहार्यो हो ॥६ ॥ सखासंग व्रज फिरे वनमें अब भवदुःख जो टार्योहो ॥ पृथ्वी परिक्रमा अब करि प्रभु सब अनर्थकों मार्योहो ॥७ ॥ तब दावानल दुखहरे अब भवके

ताप नसायेहो ॥ तब प्रलम्ब हत कियो दुष्टमति अब सब कपट मिटायेहो ॥८ ॥ वेणुनाद कर तब वशकीने अब भागवत बिचारेहो ॥ तब व्रजभक्तनकों फलदीनों अब अन्याश्रय ते टारेहो ॥९ ॥ द्विज पत्नीको लियो तबही अन्न अब निजजनकों सुखदीयोहो । गोर्वधन तबही कर धार्यो अब जगत उद्धारण कीयोहो ॥१० ॥ रास रसिक सुख गोपिनकों तब बहुविध कर सुखदीनोहो ॥ भजनानंद बतायकें अब श्रुति स्मृति दृढकीनोहो ॥१ ॥ यहविध क्रीडाकरी महाप्रभु सबजन शुभपद पायोहो ॥ श्रीवल्लभ पदरज महिमाते जनगोविंद यश गायोहो ॥१२ ॥

□ राग आसावरी □ (२०) हों याचक श्रीवल्लभ तिहारो याचन तुमकों आयोहो ॥ महाउदार देत भक्तनकों अपअपनों मनभायोहो ॥१ ॥ हेमग्राम भूषण सुखसंपत्ति सो मोहि मन न सुहायो हो ॥ पर्योरहूं नित्य जूठन पाऊं यहमेरो चित्तलायोहो ॥२ ॥ प्रफुल्लित भयो निरंतर द्विजवर ब्रह्मवाद तरु छायोहो ॥ गाउंगुण लावण्य सिंधुके दास चरण रजपायोहो ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (२१) श्रीवल्लभ तज अपुनों ठाकुर कहो कोनपें जैये हो ॥ सबगुण पुरन करुणासागर जहां महारस पैये हो ॥१ ॥ सुरतही देख अनंग विमोहित तन मन प्रान विकैये हो ॥ परम उदार चतुर सुखसागर अपार सदा गुन गैये हो ॥२ ॥ सबहिनते अति उत्तम जानी चरनपर प्रीत बढैये ॥ कान न काहूकी मन धरीये व्रत अनन्य एक ग्रहीये ॥३ ॥ सुमर सुमर गुन रूप अनूपम भवदुख सब विसरैये ॥ मुख विधु लावण्य अमृत इकटक पीवत नाहीं अघैये ॥४ ॥ चरन कमलकी निशदिन सेवा अपने हृदे वसैये ॥ रसिक कहे संगिनसों भवोभव इनके दास कहैये हो ॥५ ॥

□ राग आसावरी □ (२२) प्रीत बँधी श्रीवल्लभ पदसों और न मनमें आवेहो ॥ पढ पुरान षट दरशन नीके जोकछु कोऊ बतावेहो ॥१ ॥ जबतें अंगीकार कियोहे तबतें न अन्य सुहावेहो ॥ पाय महारस कोंन मूढमति जित तित चित भटकावेहो ॥२ ॥ जाके भाग्य फले या कलिमें शरण सोई

जन आवेहो ॥ नंद नंदनको निज सेवकहे दृढकर बांह गहावेहो ॥३ ॥ जिनकोउ करो भूलमन शंका निश्चय करि श्रुति गावेहो ॥ रसिक सदा फलरूप जानकें ले उच्छंग हुलरावेहो ॥४ ॥

□ राग आसावरी □ (२३) अद्भुत आनंद सों श्रीलछमन सुत राजे हो ॥ निजजन गुण गावत सुख देख मेन लाजे हो ॥१ ॥ केसरी ज्यों चिकुर फेल रहे एसे चंद रवि किरनसों अभिषेक होत जेसे हो ॥ कृपादृष्टि देखे जब दरसन तब पावे एसे श्रीवल्लभकों द्वारकेश भावे हो ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (२४) धन्य माधव मास कृष्ण एकादसी भट्ट लछमन धाम प्रगट वल्लभ भये। धन्य चंपारन्य धन्य धरनी सकल धन्य घटिका प्रहर धन्य अति पल भये ॥१ ॥ धन्य यसपुंज पावन करन सृष्टि कों प्रगट करी कृष्णलीला सहित सो किये। धन्य गावत 'रसिकदास' बारंबार कीजिये सफल पूरन मनोरथ हिये ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (२५) रंगरासी मधुरासि श्रीवल्लभ श्री लछमन गृह आये हो। विविध मधुरन प्रतिपल वपु धरि सिंगार सघनता बेनुरंध्र मधि पाये हो ॥१ ॥ व्रजजन विरह अग्रफल लुब्धित अति आतुर उठि धाये हो। उत गिरिधरमुख इत प्राकट्यसुख श्रीभट दुहुं विधि गाये हो ॥२ ॥

□ राग धनाश्री □ (२६) प्रगट्या एमा श्रीवल्लभदेव ॥ श्रीलक्ष्मण भट गृहे बधाईयां ॥ मंगल सुहेलरा ॥१ ॥ गावें एमा गीत रसाल ॥ सबे सुहागिनि आईयां ॥२ ॥ ब्राह्मण एमा वेद पढाय ॥ देत असीस सुहाइयां ॥३ ॥ मोतिन एमा चौक पुराय ॥ बंदनवार बधाईयां ॥४ ॥ घरघर एमा मंगलचार ॥ ध्वजा कलश फेहेराईयां ॥५ ॥ देवन एमा दुंदुभी बजाय ॥ पोहोप अंजुली वरखाईयां ॥६ ॥ दीने एमा बहु विधदान ॥ नरनारी पहेराईयां ॥७ ॥ धन्य धन्य एमा एलंमागारु ॥ आशा सबे पुजाईयां ॥८ ॥ सबदिन एमा सुखसंपत्ति राज ॥ हरि-जीवन मन भाईयां ॥९ ॥

□ राग धनाश्री □ (२७) सोहिलो आज सुहावनो बधाई बाजे श्रीलक्ष्मण भटके द्वार ॥ध्रु. ॥ युवती जन सब आवहीं हाथन कंचनथार ॥ हरद दूब अक्षतरोरी धर गावें मंगलचार ॥१ ॥ कदली रोपें द्वारपेंहो बांधी बंदनवार ॥ गजमोतिनके चौक पुराये मंगल कलश संवार ॥२ ॥ शोभा सदन कहा कहूं सखी वरत्यो जयजयकार ॥ प्रकट भये वल्लभ पूरण निधि वदन अग्नि अवतार ॥३ ॥ होत मधुर ध्वनि वेदकी हो बैठे द्विजवर आय ॥ वैदिक कर्म करायकें हो विधिसों दीनीगाय ॥४ ॥ बंदी मागध सूतको हो करत बहुत सनमान ॥ जोजाके मनजेसो वांछित तेसो ताको दान ॥५ ॥ नरनारी पहरायकें हो सबकी लेत असीस ॥ श्रीलक्ष्मण भटके लाडिलेहो तुमजीवो कोटीवरीस ॥६ ॥ धन्य धन्य माय एलंमागारु फूली अंग नमाय ॥ लियेलालकों गोदमें हो मुख निरखत न अघाय ॥७ ॥ पोहोप वृष्टि सब सुरकरेंहो गंधर्व गावें गान ॥ नृत्य करें सब अप्सराहो देखें चढे विमान ॥८ ॥ नाचें भक्त सुहावनेहो तन मन मोद न माय ॥ श्रीवल्लभ पद कमलकीहो निजजन बलिबल जाय ॥९ ॥

□ राग सारंग □ (२८) तत्वगुण बाण भुवि माधवासित तरणि प्रथम भगवद दिवस प्रकट लक्ष्मन सुवन ॥ धन्य चंपारण्य मन त्रैलोक जन अन्य अवतार होयहे न एसो भुवन ॥१ ॥ लग्नवसु कुंभगति केतु कवि इन्दु सुख मीनबुध उच्च रवि वैरनासें ॥ मंद वृष कर्क गुरु भौम युत तमसिंघयोग ध्रुवकरण बवयश प्रकासें ॥२ ॥ ऋक्ष धनिष्ठा प्रतिष्ठा अधिष्ठान स्थित विरह वदनानलाकार हरिको ॥ येहि निश्चे द्वारकेश इनकी शरण ओर श्रीवल्लभाधीश सरको ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२९) फल्यो जन भाग्य पथ पुष्टि प्राकट करण दुष्ट पाखंड मत खंड खंडन किये ॥ सकल सुख घोषको तिमिर हर लोक को कृष्णारस पोषको पुंज पुंजन दिये ॥१ ॥ सकल मर्याद मंडन प्रभु अवतरे खलन दंडन करन भक्त निर्मल हिये ॥ प्रकट लक्ष्मण सदन निरख हरखत

वदन मदन छबि कदन भई पदन नखनाछिये ॥२ ॥ उदित भयो इन्दु वृन्दाविपिनको हरख वरख रस वचन सुन श्रवण निजजन पिये ॥ कृष्णदास निनाथ हाथ गिरिवर धर्यो साथ सब गोप मुख निरख नेनन जिये ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३०) कृष्ण मुख अनल कलि खलनकों दंडदे प्रबल प्रताप भुवि भक्ति निर्मल करी ॥ वेदमत थाप पाखंड मत काटकें पाप विध्वंश जन प्रगट कीने हरी ॥१ ॥ भक्ति भानु धर आन उदयो दीप तिमिर गयो दूर भयो दिवस गई सर्वरी ॥ स्वीय जन मन कमल निरख प्रफुल्लित भये गये दुःख सकल त्रय ताप तनतें हरी ॥२ ॥ लाल गिरिधरन मन हरन लीला ललित बिसुर निर्धार सेवा सकल सिर धरी ॥ भस्म भये दुष्ट सकल पुष्टिमारग विमल होत कलिमलन सुन श्रवन अंग अंग जरी ॥३ ॥ दीनके बंधु लक्ष मन सुवन आपुने राखि निशदिन हिये सदा पलछिन घरी ॥ सरन कृष्णदास रसरास हरि आस मुख रहत पद पास नित निरख आनंदभरी ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (३१) जयति लक्ष्मण तनुज कृष्ण वदनानल श्रीएलंमागारु गर्भरत्ने। दैवीजन समुध्धृति करुणकृति निजाविर्भाव विहित बहु विविध यत्नें ॥१ ॥ महालक्ष्मीपतौ गोपिकानाथ श्रीविट्ठलाभिध सुभग तनुज ताते। प्रथित-मायावादवर्ति वदन ध्वंसि-विहित निजदासजन पक्षपाते ॥२ ॥ पुष्टिपथ कथनर चिताने कसुग्रन्थ मथित भागवत पीयूष सारे। रासयुवती-भाव सतत भावित हृदय मानस जनित मोदभारे ॥३ ॥ निज चरण-कमल धरणी-परिक्रमण कृतिमात्र पावन वितत तीर्थजाले। कृष्णसेवन विहित शरणगत शिक्षणा-क्षिप्त संदेहदासैक पाले ॥४ ॥ निज वचन पियूष वर्षित सतत साहित्य पुरुषजन भृत्य-युक्ते विविधवाचो युक्ति निगमवचनादितैरपिच दूरीकृत दुष्टजन द्रुरुक्ते ॥५ ॥ इदशे सति शिरसि सर्वदा वल्लभाधीश पद सकल कर्तरी दयालौ। कैव परिवेदना भवति

हरिदास जन सकल साधनरहित निज कृपालौ ॥६ ॥

□ राग सारंग □ (३२) माधव मास सुभग सुखद एकादशी प्रगट लक्ष्मण सदन वल्लभाधीश्वर ॥ जगत उद्योत खद्योत सब मिट गये भक्त दसविध रचन वसत निज सुहागभर ॥१ ॥ स्वीय जनहित वपु धार लीला करत गोपीको प्रेम उछलत प्रती मृदुलतर॥ होत आनंद जाहि दरस कीए सकलजन दुख सबे मिटत निज जनन हीए प्रेमभर॥२ ॥ तैलंग कुलतिलक ध्वज चक्र चूडानृपत पादयुग भुवन अखिल दिगविजय कर ॥ धाम गोकुल वास नीत्यलीला करत सरस रंगन रहत नीत्य जीय नेमधर॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३३) केसरकी धोति पहेरें केसरी उपरेना ओढें तिलक मुद्रा धरेबैठे श्रीलक्ष्मणभट धाम॥ जन्म द्योस जानजान अद्‌भुत रुचि मानमान नखशिखकी शोभाऊपर वारों कोटिकाम॥१ ॥ सुंदरताई निकाई तेजप्रताप अतुलताई आसपास युवती जन करतहें गुण गान॥ पद्मनाभ प्रभु विलोक गिरिवरधर वागधीश यह अवसर जे हुते ते महा भाग्यवान॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३४) भक्ति सुधा वरखतही प्रकटे श्रीवल्लभ द्विजराज॥ माधवमास कृष्णएकादशी पिय पुनीत दिन आज॥१ ॥ करुणा वंत अतुल सुखसागर संगलिये सकल समाज॥ बंधु कुमुद अनुचर चकोरके भये मनोरथ काज॥२ ॥ आनंदरूप जगतके भूषण लसत सबन शिरताज॥ विष्णुदास गुण गणित थकित भये पंडित पावत लाज॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३५) सावन सुदी एकादशी अर्धरात्री प्रगट भये करुणा करि साधन बिनु जीव सब उद्धारे॥ आज्ञा दई श्रीवल्लभ प्रभुकों ब्रह्मसंबंध की करुणा करि जीवनके पंच दोष टारे॥१ ॥ सेवा करवाय सबपें अपने मुख भोजन करि अधरामृत जु दे परम फल विचारे॥ रसिक सदा चरन आस रहेतहे निसद्योस पास दासनके दासतेउ भव जलतें

तारे ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३६) कांकरवार तैलंग तिलक द्विज वंदो श्रीमद् लक्ष्मणनंद ॥ श्रीव्रजराज शिरोमणि सुंदर भूतल प्रकटे बल्लभचंद ॥१ ॥ अबगाहत श्रीविष्णुस्वामी पथ नवधा भक्ति रत्न रसकंद ॥ दर्शनही प्रसन्न होत मन प्रकटे पूरण परमानंद ॥२ ॥ कीरति विशद कहांलो वरणों गावतलीला श्रुति सुरछंद ॥ सगुणदास प्रभु षट्गुण संपन्न कलिजन उद्धरण आनंदकंद ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३७) श्रीलक्ष्मणगृह महामंगल भयो प्रगटे श्रीवल्लभ पूरणकाम ॥ माधवमास कृष्णपक्ष शुभलग्न उदित एकादशी दूसरो याम ॥१ ॥ मंगल कलश चौक मोतिनके विविध विचित्र चित्रबने धाम ॥ मंगलगावत मुदित मानिनी नखशिख रूप कामसी वाम ॥२ ॥ मिट्यो तिमिर दुख वृंद जगतको भोरभयो मानों मिटगई याम ॥ माणिकचंद प्रभु सदां विराजो आयवसो श्रीगोकुलगाम ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३८) ऐसी बंसी बाजी वनघनमें व्यापिरही ध्वनि महामुनिनकी समाधि लागी ॥ भयो ब्रह्मनाद उठत अहल्लाद जहां तहां व्रजघोष रत्न वृंद भये सब त्यागी ॥१ ॥ रास आदि अनेक लीला रस भाव पूरित मूरति मुखारविंद छबि धरें विरह अनंग जागी ॥ तब वेणुनाद द्वार अब श्रीलक्ष्मणभट भूप कुमार दैवोद्धार अर्थ त्यागी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३९) आनंद आज भयोहो भयो जगती पर जयजयकार ॥ श्रीलक्ष्मणगृह प्रकट भयेहें श्रीवल्लभ सुकुमार ॥१ ॥ धन्य धन्य माधवमास एकादशी कृष्ण पक्ष रविवार ॥ गुणनिधान श्रीगिरिधर प्रकटे लीला द्विजतन धार ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४०) द्विजवर रूप प्रकट पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ आचार्य नाम ॥ कृष्णानन साकार ब्रह्महरि पूर्णानंद पूरणकाम ॥१ ॥ निःसाधन पति पाखंडखंडन मायावाद निराकृत रूप ॥ जगत उद्धारण सब सुख कारण

पुष्टी व्रजमंडलके भूप ॥२ ॥ श्रुति आचार धर्म प्रतिपालन लालन गुणगण गाथ ॥ निजजन मनरंजन गंजन मिथ्यावाद अनाथ ॥३ ॥ श्रीभागवत सार गूढरस कथन जपत जनपोषण आस ॥ महिमा अमित अल्पमति क्योंकर कहि न सकतहे दास ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (४१) अपनपो आपन प्रकट जनायो ॥ श्रीवल्लभ अवतार सनातन वेद पुराणन गायो ॥१ ॥ भक्त पूरण रूप पुरुषोत्तम श्री लक्ष्मण भट जायो। श्रीभागवत सुदृढ करकें श्रुति जगत निशान बजायो ॥२ ॥ नाचत देव किन्नर मुनि नारद सबहिनके मन भायो ॥ हरखत अति प्रफुल्लित मन सुरपति बिविध कुसुम वरषायो ॥३ ॥ जयजयकार होत तिहुंपुर में घरघर होत बधायो ॥ महाप्रसाद चरण रज पंकज माधोदास बलपायो ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (४२) श्रीलक्ष्मणसुत नेंकहूं गावे ॥ दमला प्रभुदास बडभागी तिनकों पुनपुन आप सिखावे ॥१ ॥ प्रेम विवश होय श्रीवल्लभ प्रभु नयनन सेंनन अर्थ जनावे ॥ प्रकट प्रसिद्ध यशोदानंदन रसिक शोभा मय सकल जनावे ॥२ ॥ वृन्दावन रमणीक रमणअति उर संपुटकी कोउ न पावे पद्मनाभ गिरिधर रसलीला वेणुनादकी बतीयां भावे ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४३) जै श्रीलक्ष्मण सुवन नरेश॥ प्रकटभये पूरण पुरुषोत्तम कलियुग धारें द्विजवर वेश ॥१ ॥ जान जन्म दिन हरख हरख मुनि बरखत कुसुम सुदेश ॥ गयो तिमिर अज्ञान तुरत नश मान्नो उदित दिनेश ॥२ ॥ नखशिख रूप कहांलों वरनों पार न पावतशेष ॥ विष्णुदास प्रभु मुख अवलोकत पल नही परत निमेष ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४४) सहेली आज मंगलमें महा मंगल प्रकट भये प्रभु वल्लभ राई ॥ चलोहो बधावन सब मिल जैयें श्रीलक्ष्मण गृह आज बधाई ॥१ ॥ नाचत गावत करत कुलाहल आनंद उर न समाई ॥ प्रेम मग्न तनकी सुधि भूली देत दान वारत नही अघाई ॥२ ॥ आईं सब मिल करत

बधाई भीतर लई बुलाई॥ आवो कर कर आसन दीने बहु सनमान कराई ॥३ ॥ घरघर बांधी बंदन माला चंदन भवन लिपाई॥ मोतिन चौक पुराये बहुविध चित्र विचित्र शोभा कही न जाई ॥४ ॥ देत अशीश द्विजवर मंत्रन पढ जय जय शब्द सुनाई॥ सदा विराजो श्रीवल्लभ प्रभु दास रसिक बल जाई ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (४५) शुभ वैशाख कृष्ण एकादशी श्रीवल्लभ प्रभु प्रकट भये॥ दैवी जीवनके भाग्य विस्तरे निरखत तनके ताप गये ॥१ ॥ पुष्टि भक्तिरस निजदासनकों अति उदार मन दान दये॥ माणिकचंद हीयें वसो निरंतर श्रीवल्लभ आनंद मये ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४६) श्रीवल्लभ अवनीमें प्रकटे निजजन रूप निधानरी॥ प्रभु संबंध करदेहें मूढकर तू निश्चय जिय जानरी ॥१ ॥ नंदनंदन इनसोंनहीं अंतर निशवासर कर जानरी॥ रसिक कहें लीला दरसेहें यह ठान्योहे ठानरी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४७) कलिमें जीवन वल्लभ प्रगटे॥ गति न हुती जेकहुं अधमनकी अब सब पापकटे ॥१ ॥ करीजो कृपा धरकें कर मस्तक कीने अपनेदास॥ ये साक्षात पूर्णपुरुषोत्तम दासरसिक भलीआस ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४८) आज भलोदिन हेरी माईं प्रकटे श्रीवल्लभ जगभूप॥ लक्ष्मणगृह अति होत बधाई मंगल गावत नारि अनूप ॥१ ॥ दानदेत मनभायो लक्ष्मण अधिक दयाल स्वरूप॥ रसिकनके प्रभु वल्लभ भुवपर आये भाग्यन निज युप ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४९) मुख कमलकी हो बलबल जाऊं॥ शोभा निधि निरख निरख नयन युग सिराऊं ॥१ ॥ करुणाकर चितवत इत तब हों ढिगआऊं॥ चरण कमल युगल परसि मनमें सचु पाऊं ॥२ ॥ अपनो कर बोलत जब तब न कहुं समाऊं॥ आनंदनिधि उमगहिये गुणगण हों गाऊं ॥३ ॥ सेवों निश दिवस चरण ओर फल भुलाऊं॥ चरणरेणु नयन

भालकंठ उरलगाउं ॥४॥ रूपसुधा अचवत दृग नेक नाही अघाऊं॥ रसिक सुखद वल्लभको जन्म जन्म दास कहाऊं॥५॥

□ राग सारंग □ (५०) रतिपथप्रकट करणकुं प्रकटे करुणानिधि श्रीवल्लभ भूतल॥ हुलसे सकल दैवीजनके मन साधन विन हमपावेंगे फल॥१॥ मायामतको तिमिर नसायो पंथ दिखायो वेद वचनबल॥ यह मारग जो दृढ तिनको हरि मेलतमुखमें पत्र कुसुमजल॥२॥ सींचत वचन सुधाकर सेवक मारग रिपु दाहे वचनानल॥ सेवारस सागर प्रकटायो वदन अनलतें अतिशय शीतल॥३॥ उपजत ताप छिनक सानिध्यमें देत विरह आनंद रस केवल॥ देखो संत विचार चारु चित्त श्रीगोकुलपतिहैं यह निश्चल॥४॥ दे चरणोदक दोष निवारे सूधे किये काल कलिके खल॥ रसिक भजत नित्य श्रीवल्लभ पद ते बडभाग्य सदा मन निर्मल॥५॥

□ राग सारंग □ (५१) श्रीवल्लभ श्रीलक्ष्मण गृह प्रकट भये माई॥ काहेकों सोच करत कर्मन निधि पाई॥१॥ व्रजजनकी रासमूरति भाग्यन दईहे दिखाई॥ दैवीसृष्टि आपुनीकर आसुरते बचाई॥२॥ लीला सब प्रकट करी सेवक जनन बताई॥ हरिसों हठकर श्रीभागवतकी टीका प्रकटाई॥ भाग्यनके पूरेजे तिनने कीरति गाई॥ रसिकसदा लक्ष्मणसुत सेवो सुखदाई॥४॥

□ राग सारंग □ (५२) हों श्रीवल्लभजूको दास॥ मन न धरत काहूकी आस॥१॥ सेवूं चरण रहूं नित्यपास॥ भयो सबहिनतें व निरास॥२॥ मेरेदृढ मन मांहि विश्वास॥ हों न डरों दुर्जन उपहास॥३॥ ताते होत जीय भक्ति बिकास॥ पजर जात पातक ज्यों घास॥४॥ वागधीशपति के बचन बिलास॥ रसना क्यों कर कहे मिठास॥५॥ काटेहें दुष्कृतके पाश॥ रसिक विषयमति होत विनाश॥६॥

□ राग सारंग □ (५३) भजभज श्रीवल्लभ पदकमल॥ भूलि कछू न

विचारे रे मन सब को हे यहफल ॥१ ॥ विनकीने कछुसाधन तारत कर अपनोंही बल ॥ रसिकजन शिर सदा विराजो श्रीव्रजपति श्रीमुख अनल ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (५४) श्रीवल्लभकी हों बलिहारी ॥ सबहिनकों वचनामृत सींचत कहि अंतर दुखहारी ॥१ ॥ नवनिकुंज मंदिरकी लीला नित्य विहार विहारी ॥ रसिक मनकी आसा पूजी होंतों शरण तिहारी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (५५) तैलंक कुल दीपक प्रगटे श्रीवल्लभ महाराज ॥ आज्ञादई कृपाकर श्रीहरि पुष्टि प्रगटवे काज ॥१ ॥ मुख मूरति प्रकट जबकीनी निजजन भक्तसमाज ॥ रसिक शिरोमणि श्रीवल्लभप्रभु तीनलोक पर गाज ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (५६) प्रगटे श्रीवल्लभ सुखदाई ॥ फूले डोलत जन सब मनमें अति दुर्लभ निधि पाई ॥१ ॥ घरघर मंगल होत जहां तहां द्युति बढी अतिभाई ॥ माधोमास कृष्णएकादशी शुभदिन प्रकटे आई ॥२ ॥ यज्ञपुरुषहे यह सुत तिहारो द्विज सब हेत सुनाई ॥ युग युग राजकरो भक्तनगृह दासरसिक बलजाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (५७) प्रकटभये प्रभु श्रीमद्वल्लभ द्विजदेह ॥ निजजन सब आनंदित गावत बजत बधाई सबहिनके गेह ॥१ ॥ भूतल प्रकटयो भाव श्रुतिनको उपज्यो नंदनंदन पदनेह ॥ मिटे ताप निजजनके मनके बरखे प्रेमभक्ति रसमेह ॥२ ॥ निरखत श्रीमुखचंद सबनके दूर भये सब निगम संदेह ॥ मिटगये कपट कुटिल खल मारग भस्म भये सब आसुर जेह ॥३ ॥ करत केलि कुंजन नित गिरिधर सुधि करवो जे पूरव नेह ॥ कहत दास जोरी चिरजीयो क्योंगुणवरनों नाहिनछेह ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (५८) दानदेत श्रीलक्ष्मण प्रमुदित मणिमाणिक कंचन पटगाय ॥ श्रीव्रजराज कुंवर यशोदासुत करुणाकर प्रगटे हरिआय ॥१ ॥

रही न मन अभिलाष कछू अब याचक नामहतो कोउ जोय ॥ विष्णुदास उमगे अंतरतें दे असीस तुमसे नहि कोय ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (५९) श्रीलक्ष्मण गृह प्रकटभयेहें आनंदनिधि श्रीवल्लभ भूपर ॥ स्त्री शूद्र साधन बिन जानें करुणाकर आये स्वीय हितकर ॥१ ॥ मायिक खंडे विमुखजु दंडे मंडे मारग धर्मस्थापनपर ॥ भूपरिक्रमाके के व्याज तीर्थ सब पावनकर पोषे दैवीनर ॥२ ॥ जे जन आय भजे पदअंबुज ताकों दिये साकार रसिकवर ॥ वल्लभदास तुम्हारे चरणके शरणागत कलिकाल व्यालडर ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (६०) श्रीवृन्दावन चंद वदन रुचि अग्निरूप प्रकटेहें देहधर ॥ मायिकमत पाखंडके दाहक शीतलता सुन नाम श्रवणकर ॥१ ॥ ब्रजपति अति रति प्रकट होयकें जेजन शरण आये ताके उर ॥ श्रीवल्लभ सब सिद्धि आनंदनिधि वल्लभ साधन तजि पायनपर ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (६१) सुंदर ताकी रास श्रीवल्लभ जायो इलंमामाई ॥ धन्य धन्य माधवमास एकादशी धन्य धन्य शुभवार लग्न धन्य प्रकट भये हरि आई ॥१ ॥ फूलेतरुवर फूलेनगवर फूले पशु पक्षी वनराई ॥ फूली गाय श्रवत पय स्तन धारें दूधकी सरिता बहाई ॥२ ॥ फूले द्विजवर करत वेद ध्वनि फूले बंदीजन करत बडाई ॥ फूले निजजन फिरत मग्नमन पायें परम पदारथ महा अब श्रीवल्लभके दास कहाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (६२) श्रीवल्लभ सबके हित कारण ॥ श्रीलक्ष्मण गृह प्रकट भये हें दैवी जीव उद्धारण ॥१ ॥ श्रीभागवत विशद करणकों भक्ति मार्ग विस्तारन ॥ कृष्णदास करुणानिधि प्रकटे निजजनके प्रतिपालन ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (६३) श्रीवल्लभ वृन्दावन चंद ॥ आज्ञानांधि निवारण कारण प्रकटे आनंद कंद ॥१ ॥ मुदित भये मन दैवी जनके मिटे सकल भवफंद ॥ मुग्धभये मन मायिक जनके दुष्ट मूढमति मंद ॥२ ॥ योग यज्ञ

जप तप ध्यान अगोचर गुण गावत श्रुति छंद ॥ करत पान सेवक चकोर लख बल बल दास गोविंद ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (६४) श्रीलक्ष्मण गृह बजत बधाई ॥ पूरण ब्रह्म प्रकटे पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ सुखदाई ॥१ ॥ नाचत वृद्ध तरुण ओर बालक उर आनंद न समाई ॥ जय जय यश बंदीजन बोलत विप्रन वेद पढाई ॥२ ॥ हरददूब अक्षत दधि कुंकुम आंगन कीच मचाई ॥ बंदनमाला मालिन बांधति मोतिन चौकपुराई ॥३ ॥ फूले द्विजवर दान देतहें पटभूषण झरलाई ॥ मिटगये द्वन्द दीनदासनके मनवांछित फलपाई ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (६५) प्रगटभये श्रीवल्लभ आज ॥ माधवमास कृष्णएकादशी मंगल लग्न महूरतराज ॥१ ॥ घरघर बंदन तोरण माला युवतिन साजे मंगलसाज ॥ गावतगीत पुनीत महारस अति आनंदित भक्त समाज ॥२ ॥ ब्रह्मादिक सुरनर मुनि हरखे व्हैहें सकल हमारे काज ॥ मायावाद दुखी उद्धारे वेद विहित सबहिन शिरताज ॥३ ॥ कलिके अधम उद्धारण कारण अब दृढ बंधी प्रेमकी पाज ॥ अभयदान श्रीलक्ष्मण नंदन राखे जात यमराज ॥४ ॥ यह अवतार कृष्ण मुख रूपी करिकरुणा त्रिभुवन शिरताज ॥ चाहत चरण सदा श्रीवल्लभ वसो निरंतर श्रीव्रजराज ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (६६) श्रीमद् वृन्दावन विधु प्रकटित आनंदसिंधु रूपधरें प्रकट भये श्रीलक्ष्मण भट गेह ॥ अति कोमल पुलकित तन पूरित रासादि लीला निजजन पर वर्षत नित्य व्रजपति पदनेह ॥१ ॥ अति गूढ श्रुति विचार विशद् करण पंडितजन कोटि मदन सुंदरवपु आये द्विजदेह ॥ यज्ञपुरुष कविजन कहें वारवार स्तुतिकरें दासगोविंद जीयमें वसो श्रीगोकुलपति येह ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (६७) वैशाख मास शुभ कृष्णएकादशी मारग कमल वल्लभ दिनेश ॥ प्रगट परमानंद दैवीजीव उद्धरन भक्तिमार्ग स्थापि भागे

कलेश ॥१ ॥ श्रुति अर्थकर मायिक मत खंडन त्रिविध लीला मग्न सदा आवेश ॥ जे जाय शरन पाय प्रगट गिरिधरन दासन दास कीनी द्वारकेश ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (६८) परमबधाई श्रीलक्ष्मण सुखदाता प्रेम भक्ति आकार ॥ हुलसी माय बाप अति हुलसे तापगये तन दरशन सार ॥१ ॥ फूले भक्त जान निज रूपहि नाथ किये निरधार ॥ सुरनर मुनि गंधर्व गुण गायक नाचत कछु न संभार ॥२ ॥ शिव विरंचि सनकादिक नारद शेषहू करत विचार ॥ बलबल दास चरण अभिलाषन या सुख वारन पार ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (६९) श्रीलक्ष्मण वर ब्रह्मधाम काम मुरति पुरुषोत्तम प्रकट भये श्रीवल्लभ प्रभु लीला अवतारी ॥ रसमय आनंदरूप अनुपम गुण ग्रन्थभरे वचनसुधा सींचत नित्य निजजन सुखकारी ॥१ ॥ भजन पंथ कमल भानु अमल भाव दान करत व्रजपति रस रास केलि विहरत मनुहारी ॥ नवल लाल पिया गिरिधर दृढकरि कर गहत ताहि जे जन इन शरन आये चरण छत्र धारी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (७०) श्रीवल्लभनाथ कौ रूप कहा कहों ? प्रगटे हैं सब सुख के सागर ॥ लीला-भाव जो प्रगट जनावत कीनों है सब जगत उजागर ॥ देखि-देखि जो यह निधि आई गहों जो चरन-सरन मन दृढ कर । 'छीत-स्वामी' गिरिधर रस बरसत अपुने जीव पर अति करुनाकर ॥

□ राग सारंग □ (७१) मंगलमंगलं अखिलभुवि मंगलं मंगलमय श्री लक्ष्मणनंद । मंगलरूप महालक्ष्मीपति जलनिधि पूर्णचंद ॥१ ॥ मंगल मयकृत सात्मज गोपीनाथ मङ्गलरूप रूक्मिणीश मङ्गल पद्मावतीशं मङ्गल जनित तनुज श्रीगिरिधर गोविंद बालकृष्ण गोकुलपति रघुनाथ जगदीशं ॥२ ॥ मङ्गलवर्धक श्रीयदुपति घनश्याम पितुः समान श्रीविट्ठल शुभाभिधानं । मंगलमयकृत महाप्रियवल्लभ सेवनमत मंगलकृत दैवीसंतानं ॥३ ॥ मङ्गल मङ्गल गोवर्धनधर मंगलमय रसलीलासागर

रससंपूरित भावं। वंदेहं तं सततं मन्मथ 'परमानन्द' मदनमय व्रजपति मुखगतमुरलीरावं ॥४ ॥

□ राग सारंग □ (७२) सुखद माधव मास कृष्ण एकादसी भट्ट लछमन गेह प्रगट बैठे आई। व्रज जुवती गूढ मन इंद्रियाधीस आनंद गृह जानि विधु निगमगति घट पाई ॥१ ॥ अज्ञ जन ग्रहन सुत भवन तैसो जानि बिमल मति पाइ विधु जात हेरी आइ। दनुज मायिक मत नम्र कंधर किये लिये ध्वज जानि ध्वज सुक्र है सुखदाई ॥२ ॥ अवनितल मलिनता दूरि करिवे काज गेह-सुख दैन जामित्र गति सनि जाइ। धर्म पथ भूप गुरु चरन वल्लभ जानि देवगुरु भौम अनुचर भए री आइ ॥३ ॥ प्रखर मायावाद सत्रु संघात कारन सुररिपु सदन कों छाइ। 'गिरिधरन' कर्म अर्पन विधुतुंद दसम गेह गहि रहत अनुकूल कृति कों पाइ ॥४ ॥

□ राग काफी □ (७३) श्रीलक्ष्मणजुके द्वारे बाजे बधाईरी ॥ प्रगटे श्रीमद वल्लभ सब सुखदाईरी ॥१ ॥ धन्य धन्य माधो मास धन्य एकादशी ॥ धन्य धन्य तेज प्रकाश देख्यो जेसें सोमसी ॥२ ॥ धन्य धन्य देश जहां प्रगटे सुख दाईरी ॥ सुनि हरखे निज जन मन मंगल गाईरी ॥३ ॥ बाजत ताल पखावज गीत सुहावनो ॥ निरख निरख व्रजसुंदरी लेतहें भावनो ॥४ ॥ एक रही कर जोर मुख छबि देखकें ॥ एक रही चकोरीसी चंदकों पेखकें ॥५ ॥ रूप स्वरूप एसो कबहु नहीं देख्योरी ॥ सब अनुहारहें नंदनंदन उर पेख्योरी ॥६ ॥ भूतल भार उतारन मायावादही ॥ खंड किये मत वामके वेद मर्यादही ॥७ ॥ पद्म बिराजत चरन ओर अर्धचंद्रहें ॥ दैवी जनके काटत भव दुःख द्वन्दहें ॥८ ॥ एसो जस सुनिकें अब अपुने पूतको ॥ देत दान लक्ष्मणभट मागध सूतकों ॥९ ॥ बंदीजन ओर जाचक जुरि जुरि आयेहें ॥ देतहें दान अभय पद जिन जेसे लायेहें ॥१० ॥ रीझ रहे सुरनर मुनि शेष पातालहें ॥ व्योम विमानन भीरसुर वधु मालहें ॥११ ॥ जय जय जय जय शब्द करत निर्दोषही ॥ कलि जिवके बडभाग्य सुधा सो यों

सही ॥१२ ॥ चिरजीयो ब्रजराजके सुखको राजीयो ॥ जन गोविंद वदन पर वारनें वारीयो ॥१३ ॥

□ राग काफी □ (७४) श्रीलक्ष्मण राज के धाम बाजे बधाईयां ॥ जायोहे पुत्र श्रीवल्लभ इलम्मा माईयां ॥१ ॥ घरघरतें नरनारी बधावन आईयां ॥ मंगल साज सिंगार सबे मिल लाईयां ॥२ ॥ मृगमद आड ललाट अलकलर छुटि हे ॥ ललित कपोलन गाढ सुंदर मुख जोतिहे ॥३ ॥ हाथन कंचनथार कलस लिये ठाडी हें ॥ मानों रूपकी रंभा सलिलता बाढीहें ॥४ ॥ अगनित झुंडन झुंड सहेली सुहाई हें ॥ गावत कोकिल गान मृदंग मिलाई हैं ॥५ ॥ मधुर ताल कठताल मंजीरा बाजहीं ॥ नृत्य करत बहु भांति गुनी जन राजहीं ॥६ ॥ श्रीवल्लभकों मात इलम्मा झूलावहीं ॥ भयो हे आनंद आज मंगल सब गावहीं ॥७ ॥ थाप द्वारन द्वार जो माल बंधाई हे ॥ तिलक करें लछमन जु दान दिवाई हे ॥८ ॥ विप्रन बेद पढाय मंत्र धुनि कीनी हे ॥ सबे विचार विचार शोधना कीनी हे ॥९ ॥ माधो मास एकादशी लगन धरावहीं ॥ समेघरी उपरांत पत्रिका लिखावहीं ॥१० ॥ कृष्णपक्ष गुरुवार घटी शुभ जोगहे ॥ प्रगटे हें अवतार लीलारस भोगहे ॥११ ॥ दैवी जनके हेत आप वपु धार्योहि ॥ कृष्ण कथारस पूरन फेर विस्तार्योहि ॥१२ ॥ श्रीभागवत कथारस फेर प्रगटावहीं ॥ नरक यातनके हेत दयाजीय लावहीं ॥१३ ॥ व्रज वृन्दावन रूप रास रस खेलहीं ॥ जो कीनी फिर करहें महा प्रभुकेलिहीं ॥१४ ॥ नाम सुनाय जीयके त्रय दोष निवारहीं ॥ भक्ति भाव ओर सेवा आप बतावहीं ॥१५ ॥ ऐसे प्रभु दयाल अभयपद दीनोहे ॥ सुख समुद्र रस प्याय निर्भर कर दीनोहे ॥१६ ॥ श्रीवल्लभको ध्यान सदा जिय लावहीं ॥ जापें कृपा कृष्णदास ह्रदें प्रभु आवहीं ॥१७ ॥

□ राग नट □ (७५) जोपें श्रीवल्लभ प्रगट न होते ॥ भूतल भूषण विष्णुस्वामी पथ श्रंगार शास्त्र सब रोते ॥१ ॥ प्रेमस्वरूप प्रकट पुरुषोत्तम

बिनपाये केसें जोते ॥ सेवा काज लाल गिरिधरकी कुसुम दास केसें पोते ॥२ ॥ कर आसरो रहे जे निजजन ते भवपार क्यों होते ॥ सगुणदास सिद्धांत बिना यह उर कपाट क्यों खोते ॥३ ॥

□ राग नट □ (७६) जोपें श्रीवल्लभ धरते न रूप ॥ अर्थ श्रीभागवतको कहि सकतोको पतित परते सब कूप ॥१ ॥ अघ गज वनवपु वसन न पावह नाम सुनत मृगभूप ॥ विष्णुदास चरणन छायातक अकुलानो भव धूप ॥२ ॥

□ राग नट □ (७७) श्रीमद् वल्लभ रूप सुरंगे ॥ अंगअंग प्रति भावनके भूषण वृन्दावन संपति अंग अंगे ॥१ ॥ दरस परस गिरिधरकी न्यांई एनमेन व्रजराज उछंगे ॥ पदनाभ देखें बनि आवे सुधिरही रास रसाल भुवभंगे ॥२ ॥

□ राग नट □ (७८) जोपें श्रीवल्लभ प्रकट न होते ॥ वेद पुराण अलौकिक मारग तेहोते अन होते ॥१ ॥ तीरथ सकल माया संयुतते ते केसेंक शुद्ध होते ॥ दैवी जन चकोर मुख बिधुविन जन्म अकारथ खोते ॥२ ॥ अपने मुख अपनी महिमा कहि गुरुजन कोऊ कहोते ॥ जेसें दीन मनोरथ भोजन रहिजाते सब न्योंते ॥३ ॥ अवश्य बचन संदेह निवारण क्योंहू करत न होते ॥ गिरिधर श्रीमुखकी शोभाकों कहो केसें कर जोते ॥४ ॥

□ राग नट □ (७९) जोपें श्रीवल्लभ रूप न जानें ॥ तो केसें यह जन लीलाके नित्य संबंध करि मानें ॥१ ॥ प्राकृत निखिल धर्मनही परसत अप्राकृत जो बखाने ॥ प्रतिपादित निगमादिक वचनन साकृत सिद्धि निदाने ॥२ ॥ कलि कालादि दोषके तमकर पंडितहू नही जाने ॥ संप्रति अविषय ताहीतेहे भुव प्रादुर्भाव कहाने ॥३ ॥ दया देख निजभाव प्रकटकों देत महातम दाने ॥ वाणीकर जब तब निजमुखकों प्रादुर्भाव बखाने ॥४ ॥ तिनको कह्यो अबोल सबनकों तुरत सुबोध बखाने ॥ अष्टोत्तर शत नाम जपनकर पाप होत सबहाने ॥५ ॥ अग्निकुमार ऋषीश्वर बरन्यों जगती छंद

बखाने ॥ देवरूप श्रीकृष्ण रसानन बीज कारुणिक जाने ॥६ ॥ कर विनियोग भक्तियोगमें प्रतिबंध सबहाने ॥ अधरामृत रसस्वाद कृष्णको यह सिद्धि करमाने ॥७ ॥ आनंद परमानंद रूप मय कृष्ण मुखाकृत आने ॥ कृपासिंधु दैवीजो उद्धारक स्मृति आरतिहि नशाने ॥८ ॥ श्रीभागवत गूढार्थनको प्रकट परायण जाने ॥ गोवर्धनधर साकृत निश्चय स्थापक वेद बखाने ॥९ ॥ मायावाद निराकारण कर सकल वादबलहाने ॥ मार्ग भक्तिकमलकर वरन्यो तिनके रवि कर माने ॥१० ॥ नरनारी उद्धार करणकों समरथ प्रकट कहाने ॥ अंगीकृत कर गोपीपति मानव निजवश कर गही आने ॥११ ॥ अंगीकृत मर्यादा बोधक करुणाकर विभुगाने ॥ नाहिन दीयो काहूने एसो दान परायण जाने ॥१२ ॥ महाउदार चरित्र जिनके निजगावत निगम बखाने ॥ कर प्राकृत अनुकृति मोहे सुररिपु जनवृन्द समाने ॥१३ ॥ जोपें अग्निरूप तन वल्लभ रूप जलधि नहिं आने ॥ भक्तनके हित कारण ऐसे नही देखे न कहाने ॥१४ ॥ सेवकजन शिक्षाके कारण कृष्ण भक्ति प्रकटाने ॥ निखिल सृष्टि इष्टके दाता इच्छा यह मनमाने ॥१५ ॥ लक्षण सर्व संपन्न महाप्रभु कृष्ण ज्ञान यह दाने ॥ याहीते गुरु वेद पुरान पुकारें कहेत परमाने ॥१६ ॥ आनंदभर परिपूरण अंबुज नयन देख ललचाने ॥ कृपादृष्टि आनंद दे दासी दास प्रियापति जाने ॥१७ ॥ रोष दृष्टि के पात भयेतें भक्त वृन्दारिपहाने ॥ याहीतें भक्तन कर सेवित यह निरधार बखाने ॥१८ ॥ सुखको सेवन करिये जाकों दुराराध्य करमाने ॥ दुर्लभ चरण कमल जाके निज उग्र प्रताप कहाने ॥१९ ॥ वानी कर पूरत सेवक जन निज शरणागति आने ॥ श्रीभागवत समुद्र मथनकर रासरूप हरिजाने ॥२० ॥ सानिध्यतें जु दियो हित हरिको भक्ति मुक्तिके दानें ॥ लीला रास विलास एक रचि कृपाकथा परमानें ॥२१ ॥ अनुभव विरह करणकों सबको त्याग एकमन आने ॥ भक्ति आचार दिखायो जनकों मारग कर्म निदाने ॥२ ॥ यागादिक भक्तिनके साधक मनक्रम वच करजाने ॥ पूर्णानंद पूरण रतिपति वागधीश

गुणगाने ॥२३ ॥ यहीतें विबुधेश्वर पदकी कहियत चित्तमें निसाने ॥ कृष्णसहस्त्र नामके दायक भक्तपरायण माने ॥२४ ॥ भक्ति आचार विविध बोधनकों नाना वचन बखाने ॥ अपने काज तजे प्राणनतें प्रिय पदारथजाने ॥२५ ॥ तादृश भक्तन कर परिवेष्टित देखत मती हिरानें ॥ दासजननके हितके कारण साधन सब दरशानें ॥२६ ॥ सकल शक्तिव्हे रूप दिखावत श्रीवल्लभ हरि माने ॥ भूतल पुष्टि प्रकट करिवेकों श्रीविट्ठल निधिआने ॥२७ ॥ पिताभयो राख्यो महिमा सब अपने कुल मधि जानें ॥ दूरकियो हरिमायामतकों गर्व आप धरमानें ॥२८ ॥ पतिव्रता पति पार लोकिक यह लौकिक वरदानें ॥ गूढ हृदय भक्तन मन आशय दायक पर गुणगानें ॥२९ ॥ उपासनादिक मारग करकें मुग्ध मोह नशानें ॥ मारग भक्ति प्रकटकर सबतें वैलक्षण ठहरानें ॥३० ॥ शरण आयेतें लये ज्ञानकृष्ण हृदयकी जानें ॥ प्रतिक्षण नवनिकुंज लीलारस पूरण निज मनमानें ॥३१ ॥ तिनकी कथा विवश चितव्हेकें बिसरे सबगुण आनें ॥ व्रजपति प्रिय ताहीकों कहीयत प्रिय व्रजवास बखानें ॥३२ ॥ लीलापुष्टि करण ए कहियत भक्तकाम धर्मदाने ॥ सबन अजानी लीला इनकी मोहरूप कहानें ॥३३ ॥ सबते दृढ़ आसक्त भये भक्त वश पतित पवित्र बखानें ॥ यश अपने गुण गान श्रवणते आनंद बखानें ॥३४ ॥ यश पियूष लहरिन कर छांडे अन्य भाव पर जानें ॥ लीलामृत रस करि पोखे तब कहेत फिरत महारानें ॥३५ ॥ गोवर्धन वास उत्साह एकचित्त लीलाप्रेम समानें ॥ यज्ञभोग बलि यज्ञ करनकों चार वेद विकसानें ॥३६ ॥ सत्य प्रतिज्ञा त्रिगुणातीत सुन नीति विशारद जानें ॥ कीरति बढन महा तत्व सूत्र प्रकाशक मानें ॥३७ ॥ मायावाद तूल उन्मूलन अग्निरूप कहिगानें ॥ ब्रह्मवाद उद्धारण कारणकों भूतल जन्म बखानें ॥३८ ॥ अप्राकृत भूषण परि भूषित सहज हास मुख ठानें ॥ ब्रह्मलोक भुवलोक रसातलके भूषणयुत जानें ॥३९ ॥ उघरे भाग्य अवनीतलके निज सुंदर सहज

कहानें ॥ भक्तनकर सेवित निज पदरज तेई बहुधन दानें ॥४० ॥ यह प्रकार आनंद निधि प्रभुके नाम पदारथ गानें ॥ अष्टोत्तर शत ते कहीयत जे अपने सर्वस्वमानें ॥४१ ॥ श्रद्धा निर्मल बुद्धि करजे नित्य पठत भक्तजन मानें ॥ एकचित्त करकें अधरामृत सिद्धि यहीते जाने ॥४२ ॥ वृथा मुक्तिबिन पाये ताके पायें यह गतिमानें ॥ कृष्ण पदारथ रस ग्रहिवेकों जप करियतहें रानें ॥४३ ॥ यहविधि द्विजकुल पतिके गिरिधर नाम वितान बखाने ॥ श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल प्रभुको निज अनुचर करमाने ॥४४ ॥

□ राग नट □ (८०) जो श्रीवल्लभ हृदे धारे ॥ ताके हृदे बसे आनंदनिधि ललित त्रिभंग तिहारे ॥१ ॥ साधन तजो इनके पद रस निधि रूप बिचारे ॥ वल्लभदास आसरे इनके उघरे भाग्य हमारे ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (८१) श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ कृपा-निधान अति उदार करुनामय दीन द्वार आयो । कृपा भरि नैन कोर देखिये जु मेरी ओर जनम-जनम सोधि-सोधि चरन-कमल पायो ॥१ ॥ कीरति चहुँ दिसि प्रकास दूर करत विरह ताप संगम गुन गान करत आनंद भरि गाऊँ। बिनती यह मान लीजे अपनो 'हरिदास' कीजे चरन-कमल बास दीजे बलि-बलि-बलि जाऊँ ॥२ ॥

□ राग पूर्वी □ (८२) श्रीवल्लभराज व्रजजन प्राणआधार ॥ सुखसागर रूपके आगर नागर अति सुकुमार ॥१ ॥ कुंचित केशपाश सुदेश निरख तिलक मोह्यो मार ॥ अंबुज नयन मधुर वेंन सेंनन मनहार ॥२ ॥ पीत वसन उपरेना भुजपर लटकट मुक्ताहार ॥ रत्नजटित आभूषण अंग अंग कुंडल मकराकार ॥३ ॥ श्री गोकुलनायक नही कोऊ लायक यह लीला वपुधार ॥ भक्त हेत विदित वेद पथ पतितनके उरधार ॥४ ॥ करुणामय कृपाल प्रेमवश निजजनको प्यारो ॥ विष्णुदास श्रीलक्ष्मण नंदन यहहे नंद दुलारो ॥

□ राग जेजेवन्ती □ (८३) माई आज तो बधाई छाई चंपारन्य धामरी। जायो है इलम्मागारू श्री लछमननन्दरी ॥१ ॥ प्रकटे हैं पूरन ब्रह्म अखिल

निगम रूप। अग्निकुण्ड मध्य देखो द्विजकुलचंदरी ॥२॥ दोड आये मात तात हरख निरख श्याम गात। दष्टसुं दष्ट मिली भयो है आनन्द री ॥३॥ लियो है उछंग मात दियो पुनि गोद तात। निरखि के भयो है जु सबको आनन्द री ॥४॥ छूटी स्तन दुग्धधार नभ भयो जैजैकार। दियो है मारग जननी आनन्दकन्द री ॥५॥ भई है आकासबानी सबन के मनमानी। पुष्टिपथ स्थापन कियो जशोमति नन्द री ॥६॥ कृष्णपक्ष माधो मास सुभ एकादशी आज। दधि दूध छिरकत नाचे सुखकंद री ॥७॥ दियो है ओगार माल निसिदिन नंदलाल। नाम धर्यो श्री वल्लभ गयो दुखद्वन्द्व री ॥८॥ ब्रह्मा सिव इन्द्रादिक सुरनरगुनीजन। नारद गंधर्व जैजै करे जगवंदरी ॥९॥ देवता विमान चढी पुष्पन की वृष्टि करि। कृष्णदास जस गायो भयो है आनंद री ॥१०॥

□ राग गौरी □ (८४) आज बधावो श्रीलक्ष्मणरायकें ड़लंमाजायो श्रीवल्लभलाल ॥ध्रु॥ माधोमास एकादशी कृष्णपक्ष ओर रविवार ॥ प्रकट भये कुमार पूरणब्रह्म लियो अवतार ॥१॥ तैलंगकुलको तिलक भूषण लसत भाव अपार॥ अंगअंग शोभा अमितरसना कहत न आवेपार ॥२॥ पढत द्विजवर वेद आंगन बजत दुंदुभिद्वार॥ सूत मागध भाट बंदी करत वंश विस्तार ॥३॥ रचे पल्लव रचे तोरण बांधी बंदनवार॥ मंगल कलश भराय पूरे मोतिन चौक सुढार ॥४॥ पहेर भुषण वसन नवअंगसाज कंचन थार॥ चली त्रियगण गीत गावत पग नूपुरझनकार ॥५॥ आय निरखें नयन उत्सव परम अतिसुकुमार॥ करि प्रणाम असीस दे मुख भेट धरत फलसार ॥६॥ सदन शोभा अतिबढी सखीहोत जयजयकार॥ देत दान बुलाय विप्रन अन्न धन गाय अपार ॥७॥ सुरंग सारी पट अमोलिक और मणिगणहार॥ हरखकें पहराय युवती लक्ष्मण भूपउदार ॥८॥ चौवाचंदन छिरक केसरनीर घनसार॥ नाचत सब नरनारि आंगन गावत जयजयकार ॥९॥ दैवीजन

सब हरखत घरघर करत मंगलचार ॥ दास निजजन निरख शोभा जात तहां बलिहार ॥१० ॥

□ राग गौरी □ (८५) श्रीमद वल्लभ नमोनमो ॥ विमल बाहु जिन द्विजवपुधार्यो पुरुषोत्तम जय नमोनमो ॥१ ॥ स्वयंभुवकीनों मुख प्रकटित मार्ग वरण प्रति नमोनमो आगमअगम निगम सब जानत सबविधि समरथ नमोनमो ॥२ ॥ सकलकला संपूरण गुणनिधि आदिअंत जय नमोनमो ॥ धर्म अर्थ पुष्टि मर्यादा ज्ञान अगोचर नमोनमो ॥३ ॥ आगें एसो कोऊ न प्रकटित बहोरि न प्रकटित नमोनमो ॥ नंद नंदनको अंतःकरण प्रभु जय हरि वल्लभ नमोनमो ॥४ ॥ निज इच्छा भई जबहीं मनमें आपहि प्रकटित नमोनमो ॥ गीता भागवत अमृत रसमय यश विस्तारण नमोनमो ॥५ ॥ हतित पतित उद्धारण कलि में जग निस्तारण नमोनमो ॥ नामनिवेदनसेवा सबविध आप सिखावत नमोनमो ॥६ ॥ व्रजपति वल्लभ एकही जानों भेदनहीहे नमोनमो ॥ भजनानंद रसिक गिरिधारी आप दिखावत नमोनमो ॥७ ॥ शिवसनकादिक नारद मुनि जन पार न पावत नमोनमो ॥ में मतिमंद नाहिमतिमोटी कृष्णदास प्रभु नमोनमो ॥८ ॥

□ राग गौरी □ (८६) जयति तैलंगतिलक भट्ट लक्ष्मणतनुज वल्लभाधीश पद कमल वंदे ॥ हरिवेद अनल अवतार सुकुमारतन निरख नयनन जीव सब आनंदे ॥१ ॥ होत जयजय कुसुम बरखत समूह सुर पढत द्विजवर अजर मुदित छंदे ॥ धन्य निज ज्ञान पायचरणरेणु धन शीश धरसुयश गावत कटित दुरित फंदे ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (८७) नातरलीला होती जूनी ॥ जोपें श्रीवल्लभ प्रकट न होते वसुधा रहती सूनी ॥१ ॥ दिनप्रति नईनई छबी लागत ज्यों कंचननग चुनी ॥ सगुणदास यह घरको सेवक यशगावत जाकोमुनी ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (८८) श्रीलक्ष्मणनंदन जैजैजै ॥ भक्तहेत प्रगटे पुरुषोत्तम मनवांछित फल निजजनदे ॥१ ॥ शुकमुख द्रवित सुधारस मथकें गूढभाव

दसविधि करले ॥ मायावाद करींद्र दर्पदल दैवीजीवन दानअभे ॥२ ॥ परिक्रमामिस परसि पूतकृत भूतल तीरथराज सबे ॥ वसो निरतर मेरे जियमें दास गोपाल पदांबुज द्वे ॥३ ॥

□ राग गौरी □ (८९) जयजय जय श्रीलक्ष्मणनंद ॥ प्रकटे अधम उद्धारण कारण कलियुग जीव महामति मंद ॥१ ॥ तबही नंदजुकें प्रकट होयकें तुम व्रजवासिनको देतआनंद ॥ केसी कंस महाबल तृणसे बकी बकासुर दुष्टनिकंद ॥२ ॥ अब द्विजवपुधर प्रकटे श्रीवल्लभ जयजय अखिल देवमुनि वृंद ॥ शेष सहस्त्रमुख पार न पावत गावें यश अहर्निश श्रुतिछंद ॥३ ॥ दुरितनमांझ गये दुर जेजन तिनहूं टारे कोटि अघफंद ॥ प्रेमदास प्रभुशरण आये जे तिनके दूर किये दुखद्वन्द ॥४ ॥

□ राग गौरी □ (९०) जेजे श्रीलक्ष्मणनंदन जय ॥ तैलंग द्विज कमनीय कलानिधि निजजनके जितदुःखन जय ॥१ ॥ जयजय प्रकटित पुरुषोत्तम भुवपर अनेक जीव उद्धारण जय ॥ जय दिनमणि गजमत्त चूडामणि भक्तिसुधामति भाखन जय ॥२ ॥ जयजय श्रीभागवत अमृत उद्धारण अनेक पथहि निवारण जय ॥ जयजय मायावाद निवारण पुष्टिभक्ति उद्धारण जय ॥३ ॥ जयजय निजजन सदा सुखकारी प्रेमभक्ति बढावन जय ॥ जय मथुराजन शरण तुम्हारी कालीनाग नाथधारण जय ॥४ ॥

□ राग गौरी □ (९१) श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ गुण गाऊं ॥ निरखत सुंदर स्वरूप बरखत हरिरस अनूप द्विजवर कुल भूप सदां बल बल जाऊं ॥१ ॥ आगम निगम कहेत जाहि सुरनर मुनि न लहें ताहि सकलकला गुणनिधान पूरण उरलाऊं ॥ गोविंद प्रभु नंदनंदन श्रीलक्ष्मणसुत जगतवंदन सुमिरत त्रैतापहरत चरणरेणु पाऊं ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (९२) श्रीवल्लभ राजकी बलबल जाऊं ॥ मुद्रा तिलक सहित मुखजाकी छबि निरख मेरे नयन सिराऊं ॥१ ॥ श्रीवल्लभ पुन श्रीगिरिधर मुरति एक अनेक हियें सोभित नाऊं ॥ अभय रास विलास

करो प्रभु लालगोपाल सकल गुणगाऊं ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (९३) तिलक तिलंगनाहो॥ त्रिभुवन वंदनाहो भव भयभंजनाहो कलिमलखंडनाहो ॥ प्रकटे श्रीवल्लभ महाराज ॥ पुष्टि भक्ति दृढ प्रकट करनकों श्रीलक्ष्मण सुत द्विजराज ॥१ ॥ माधव मास कृष्ण एकादशी अमल उदित रविवार ॥ प्रकटभये द्विजराज कुल दीपक वदन अग्नि अवतार ॥२ ॥ दैवीजन कलियुगमें हुतेजे ते सब किये सनाथ ॥ सबसागरमें बहें जातहें राखे निजगहि हाथ ॥३ ॥ पूरण पुरुषोत्तमकी लीला प्रकट करी रसमूल ॥ हरिसेवा सोंपी करुणाकर मुक्ति नाहिं समतूल ॥४ ॥ मायावाद खंड खंडनकर निगम सुवचन प्रकाश ॥ श्रीभागवत सुधारस बरखत सुफल कियो निजदास ॥५ ॥ अपने जान अभयपद दीने ऐसे परमकृपाल ॥ आरती हरण चरण अंबुजपर बलबल दास गोपाल ॥६ ॥

□ राग गौरी □ (९४) बंदेहं तंविमल हुताशं॥ जाते प्रकट प्रदीप श्रीविट्ठल अमल अद्भुत तिमिर भ्रमनाशं ॥१ ॥ उठत स्फुलिंग विषद निजसेवक वचन मृदु प्रेर मारुतबलश्वासं ॥ अन्य भजन दावानल चहूंदिश मायावाद मनुज मृगत्रासं ॥२ ॥ सीत समीपदूर जनतापक अनुभव उभय एकगुण भासं ॥ देवानन जड अमित समीर वश पुरुषोत्तम मुख पद्मविकासं ॥३ ॥ वागीशज्ञ रसज्ञ वरण पुन अतुल स्वभाव गृहीत रुचिग्रासं ॥ अखिल धरापद परस पूतकृत व्रज यमुना विहरत रुचिरासं ॥४ ॥ श्रीवल्लभ वल्लभ सुत गिरिधर नर भूषण मति गूढ प्रकाशं ॥ श्रीलक्ष्मणसुत विष्णु स्वामि पथ श्रुति वच्च मंडन कहे विष्णुदासं ॥५ ॥

□ राग गौरी □ (९५) एरी चली जांय जहां हरिवदनानल भुव आये। चले श्री लछमन-गृह बाजे विविध बजाये ॥ चलि अनेक दुंदुभी मदन भेरी तुरई सहनाई। घनमृदंग की घोर झालरी झांझ सुहाई ॥टेक ॥ मुरली सुर लिये बजे ही संख संग सरसात। घर-घर कंचन कलस-ध्वजा मानो उदित

भयो रवि प्रात ॥१ ॥ एरी चलि मृदु चंपक-तन मृदु भूषन भूषाय। एरी बर बसन हसत लखि अंग अनंग लजाय॥ चाल-भुकुटी समर सरासन आसन अलि ज्यों बैठे। कुंचित कच मिस नलिन पंख समार एंठे ॥टेक॥ चोंचन रस रोचन रचे हो खंजन मृग आधीन। कबहुक रस राते माते मानों जावक भींजे मीन ॥२ ॥ ए चलि सब्द सदन सुठ सोहत कुंडल हीर। फूली कमल कली जानो रूप सुधाकर नीर॥ चाल-बिम्बाधर युग अधर-दंत दमकत रस भींजे। ओप धरे अरविन्द मध्य जनु विश्वल बीजे ॥टेक॥ चिबुक चारु चित चुभि रही हो जग जोतिन ऐन। मानो सरस हकार की हो मुदित मृदु खचिहि मैन ॥३ ॥ ए चलि सौरभ-गृह पर गजमुक्ता सोहत। उर मंडित हारन लर पन्नग गुहत॥ चाल-कटि किंकिनी जु बनी मदन-गृह बंदन माला। पद बिछुवन सुर झनक करत मद मदन बिहाला ॥टेक॥ तब सब मिलि एकत्र भये हो श्री लछमनभट-गेह। मात मनोरथ पूर ही हो मानो बरखत मेह ॥४ ॥ ए निज आँगन बैठे लछमन भट देत बधाई। लेत मगन मन गोपगन जो जाके मन भाई॥ चाल-देत असीसन सास नाय नृत्यत हरसाने। गोरस कीच मचाय दूधदधि माट ढुराने ॥टेक॥ निज भक्तन चित चाय भरे हो मायिक तिमिर नसाय। श्रीवल्लभवर पुडंरीक पर 'दास-दास' बलि जाय ॥५ ॥

□ राग मारू □ (९६) हरिको ब्रह्मकुल अवतार। अप्राकृत प्राकृत द्वै प्रकटे रूप सहित साकार ॥१ ॥ अखिल धर्म सकल गुन पूरन इहि विधि निगम बतायो। तबके गोपीनाथ कहे अब वल्लभ नाम कहायो ॥२ ॥ तब हरिकी माया सब मोहे विदुष दृष्टि कलि छायो। रूप प्रकाश दया करि श्री हरि भागवत विषे जनायो ॥३ ॥ अप्रमेय दुरवधि महाजस विठ्ठलेस चित आयो। नाम आप अष्टोत्तर जगति छंद सो छायो ॥४॥ आनंद रूप अग्निकुमार ऋषि यह प्रकाश ग्रंथ भावे। अनुभवी जो पावक है सो अधरामृतको पावे ॥५ ॥ जाके हृदे कृष्ण कारुणिक महारस सिंधु बढाये।

प्रथम नाम वल्लभजू को आनंदरूप धराये ॥६ ॥ पुष्टि भक्तिको संसे द्वे हैं श्री विट्ठलेश विचारे। अगणितानंद दूसरो नाम श्री आचार्य जीको धारे ॥७ ॥ कृष्ण कृपानिधि नाम कहाये दैवी जीव उद्धारे। सुमिरन किए सकल सुखदाता सेवकके दुख टारे ॥८ ॥ श्री भागवत महारस प्रकटे गूढ कथा विस्तारे। ब्रह्मवाद स्वरूप हि स्याने निगम मारग निर्धारे ॥९ ॥ मायावाद तब दूरि भयो सब सकल शास्त्र मति हारे। भक्ति कमल प्रकास करनको मारतंड पाउं धारे ॥१० ॥ चार्यो वरन कृतारथ कीने स्त्री शूद्रो धर लीने। गोपी वल्लभ नाम कहावे भक्त कृपारस भीने ॥११ ॥ ब्रह्म संबंध करे जीवनको कारुणिक विभु कहाये। अदेय दान दीने भक्तनको नाम उदार कहाए ॥१२ ॥ मनुष भेष धर्यो हरि ताते आसुर जीव लुभाए। आचार्य अग्नि रूप हैं जसुमति गोद खिलाए ॥१३ ॥ कृष्ण कृपाल दयानिधि जन शिक्षाको पाउं धारे। याही नामके गुरु कहाये गावत वेद पुकारे ॥१४ ॥ आनंद रूप कमल दल लोचन दासन प्रति सुखकारी। जे भक्तन के द्वेषी ताहि पर क्रोध दृष्टि हरि डारि ॥१५ ॥ सुख सेव्य हरि दुराराध्य है कैसे करि ध्यावे। चरनकमल देवनको दुर्लभ पुष्टि भक्ति ते पावे ॥१६ ॥ उग्र प्रताप वाणी मुख भाख्यो दास कथा रसमाते। श्री भागवत अमृत दधि मथिके रासभाव रस राते ॥१७ ॥ जे जन इनके सन्मुख आये कृष्ण प्रेमरस पाए। कृष्णदास मेघन अरु दमला कृपा कथारस छाए ॥१८ ॥ वियोग रसको दान कियो हरि त्यागकी भांति बताए। पुष्टि भक्ति उपदेश जु करिके कर्मके बंध छुडाए ॥१९ ॥ अंतःकरणके सुधकरनको जज्ञादिक कर्म करवाये। निगम कथित पुरुषोत्तम प्रगटे विबुध ईस कहेवाए ॥२० ॥ कृष्ण नाम अलौकिक प्रगटे हरिलीला विस्तारी। सेवक जनके फल देवेको ग्रंथ किये सुखकारी ॥२१ ॥ स्वारथ रहित भक्त जे पुष्टि सेवाके अभिलाषी। तिनके निकट सदा पुरुषोत्तम वेद वदित इह साखी ॥२२ ॥ मारगके प्रचार

करनको पुरुषोत्तम हि विचारे। अखिल धर्म सकल गुण संपन्न श्री विट्ठलेश पाउं धारे ॥२३॥ आनंद रूप अकाजी ता सुत श्री विट्ठलनाथ गुसांई। बोहरो श्रीपुरुषोत्तम प्रकटे भक्ति वेलि बढाई ॥२४॥ महादान सेवकको दीने पतिव्रता पति सुखदाई। पूजा मारग न्यारे स्थापे सेवा रीति बताई ॥२५॥ सेवा गतिको भेद कह्यो हे हरिके अंतरजामी। स्वरूपानंद भक्तनको दीने निकुंज लीलाके स्वामी ॥२६॥ अर्जुन कही हरि शरन लाए हैं मुक्ति पदारथ दीने। इह विवेक श्री वल्लभजीमें लीला रससों भीने ॥२७॥ सदा निरंतर व्रजलीला प्रिय प्रिय हैं व्रज के वासी। सेवककी इच्छा सुखदाता अप्रमेय अविनासी ॥२८॥ पतित पावन नाम कहाए भक्तनके दुखहारी। पुष्टि रूप सब सेवक कीने गूढ चरित्र विचारी ॥२९॥ हृदे कमलमें वास कियो हरि एक पलक नहीं न्यारे। पुष्टि भक्ति रसरूप कहाए वसुधा जीवके प्यारे ॥३०॥ लीला रसमें मग्न होय के अपनो वदन सराए। अंतररूप गिरिराज रत्नमय भक्तनको दिखराए ॥३१॥ जग्य रूप पुरुषोत्तम प्रगटे कर्ता भुक्ता एही। सत्य प्रतिज्ञ गुणातीत है चारी पदारथ देही ॥३२॥ जस प्रकार त्रिभुवनमें हरिको सूत्र भाष्य जब कीनो। मायावादको भस्म कियो है ब्रह्मवाद हरि लीनो ॥३३॥ अप्राकृत भूषण भूषित हैं पुष्टि भक्त इह पाये॥ तीन लोकके भूषण स्वामी भूमि भाग्य प्रकटाए ॥३४॥ चरणकमलकी रेनि महानिधि पुष्टिभक्त सिर छाए। इह लोक परलोक संबंधी सकल पदारथ पाए ॥३५॥ सत्य प्रतिज्ञा करे श्री वल्लभ भक्त सबै मुसिकाए। कोटि मुक्ति वारों मुसकनि पर अग्निकुमार रिषि गाए ॥३६॥ महा समुद्र श्री वल्लभ लीला कवि कैसे ही विचारे। एक बिन्दु प्रकाश करन को शेष विधाता हारे ॥३७॥ श्रीवल्लभ पद ध्यान धरिके भाव धरे जे गावे। फल रूप पुरुषोत्तम को सुख लीला हियमें आवे ॥३८॥ श्री हरिराय अधर रस दीनो दया सिंधु गिरिधारी। अल्प बुद्धि सेवकको सेवक 'जनुमादास' बलिहारी ॥३९॥

□ राग हमीर □ (९७) श्रीवल्लभजुके चरण कमल भज अरे मन जोचाहे परमारथ ॥ मारग वाम काम हित कारण सब पाखंड करत उदरारथ ॥१ ॥ देवी देव देवता हरि विन सबकोऊ भजत आपने स्वारथ ॥ श्रीभागवत भजनरस महिमा श्रीमुख वाक्य कह्यो जो यथारथ ॥२ ॥ तीन्योलोक विदित यहमारग जीव अनेक कियेजु कृतारथ ॥ मोहनदास शरण आये बिन खोये दिन पाछिले अकारथ ॥३ ॥

□ राग हमीर □ (९८) श्रीवल्लभको नाम लेत श्रीवल्लभको ध्यानधरत श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ गुन गाऊं ॥ वल्लभके लेत नाम पूरण होत सकल काम श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ रटत रहो अचल पद निभाऊं ॥१ ॥ श्रीवल्लभ महा अति उदार वल्लभ गृह देत दान इनते छांड ओरन ध्यावे सोइ अति अभागे ॥ रसिकराय विनती कीनी दास छाप शिर दीनी श्रीवल्लभ रटत हीये ओर पंथ त्यागे ॥२ ॥

□ राग हमीर □ (९९) हेली नवनिकुंज लीलारस पुरीत श्रीवल्लभ तन मन मोरे ॥ अंगअंग विपिन छबि निधान घन दामिनी दुति फल फल प्रती दोरे ॥१ ॥ करत प्रवेश विरह वन्ही सुत भूतल बहोत ईकठोरे ॥ पद्मनाभ मथुरेश विचारत लक्ष्मणभट सुत ओरे ॥२ ॥

□ राग हमीर □ (१००) नमो वल्लभाधीश पद कमल युगले सदा वसतु मम हृदय विविध रसभाव बलितं ॥ अन्य महिमा भास वासना वासितं मा भवतु जातु निज भाव चलितं ॥१ ॥ भजतु भजनीय मति शयित रुचिरं चिरं चरण युगलं सकल गुण सुललितं ॥ वदति हरिदास इति माभवतु मुक्तिरपि भवतु मम देह शत जन्म फलितं ॥२ ॥

□ राग कल्याण □ (१०१) रुचिरपद कमल श्रीवल्लभाधीशके रेन ओर दिवस निज शिरसि धरियें ॥ गहत दृढ बांह जिहिंकान श्रीनंदसुत पत्र फल पुष्प सेवानुसरियें ॥१ ॥ प्रेमभावते निकट संतत रहेत राख विश्वास व्रततें न टरियें ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन हित प्रगट लक्ष्मणसुवन भक्तके भवनमें वास करियें ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (१०२) प्रकटे पुष्टि महारस देन ।। श्रीवल्लभ हरि भाव अति मुखरूप समर्पित लेन ।।१ ।। नित्य संबंध कराय भावदे विरह अलौकिक वेन ।। यह प्राकट्य रहत हृदयमें तीनलोक भेदनकों जेन ।।२ ।। रहियें ध्यान सदा इनके पद पातक कोऊ लगेन ।। रसिक यह निरधार निगमगति साधन और नहेन ।।३ ।।

□ राग कल्याण □ (१०३) जगतगुरु नाम सुन्यो जब श्रवणन ऐसो देख्यो रूपनिहार ।। तिलक विलोक तैलंग देश द्विज श्रीवल्लभगृह विहार ।।१ ।। राजसंबंध भेष भुव सुरकुल भजन दुरायो श्रुतिसार ।। विमुख लोक पाषंड चलेमत धर्महीन धरा क्यों सहे भार ।।२ ।। जबजब हीनहोत निगमपथ तबतब आप धरत अवतार ।। कहूं कला कहूं अंश काज बल पुरुषोत्तम द्विजवर श्रृंगार ।।३ ।। निजकर टहेल दिखाय सिखावत ज्यों गिरिपूजन सोई विचार ।। विष्णुदास दृढकियोजु वेदमत श्रीवल्लभकुल विप्र आधार ।।४ ।।

□ राग कल्याण □ (१०४) आज बधाई श्रीलक्ष्मणघर ।। जायो पूत इलम्मा माई श्रीवल्लभ सुंदरवर ।।१ ।। बजत निशान भेरि सहनाई नाचत मुदित नारीनर ।। मागध सूत बंदीजन याचक देत अशीश उमगे आनंद भर ।।२ ।। कर गुन गान वेद विधि सों गुण देत दान कंचनपट नग धर ।। सगुणदास बलबल बानिकपर लेत बलैया वार फेर कर ।।३ ।।

□ राग कल्याण □ (१०५) श्रीलक्ष्मण कुल चंद उदित जग उद्योतकारी ।। मात इलम्मा विमल राका उडुगण निजजन समाज पोषत पीयुष वचनहरि यश उजियारी ।।१ ।। करुणामय निष्कलंक मायावाद तिमिर हरण सकलकला पूरण मन द्विज वपुधारी ।। बलबल माधोदास चरणकमल किये निवास भयो चकोर लोचन छबि निरखत गिरिधारी ।।२ ।।

□ राग कान्हरो □ (१०६) आज प्रकट भये श्रीवल्लभराज ।। सुतमुख निरखत अति मनही मन फूले श्रीलक्ष्मणभट द्विजराज ।।१ ।। मंगल कनक

कलश धर नारी लाईं सब मंगलको साज ॥ देतदान कंचन मणिमाणिक पूरे सबके मनके काज ॥२ ॥ नाचत गावत करत कुलाहल गिनतनही मन राजाराय ॥ श्रीव्रजपति पिय सदा बिराजो दास रसिक जहां बलबलजाय ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (१०७) श्रीलक्ष्मणगृह प्रकट भयहें श्रीवल्लभ परमानंद रूप ॥ ब्रह्मवाद उद्धारण कारण गोपीपद पति रति पतिभूप ॥१ ॥ महाभाग्य पूरण दैवीजन जिनके हित अवतार लियो ॥ प्रकट अमल देखत निजजनको मायामतको तिमिर गयो ॥२ ॥ अपने दीन जान करुणामय वचनामृत पोखे संतत सब ॥ नंदरायकी फेरि दिखाई गिरिधरकी लीलाहीजे तब ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (१०८) श्रीलक्ष्मणभटके आनंद ॥ अग्निरूप श्रीवल्लभ प्रकटे पुत्र भावसों परमानंद ॥१ ॥ ब्रह्मवाद उद्धारण कारण मायावाद कियो मतखंड ॥ गयो तिमिर अज्ञान निशाको श्रीवल्लभ उदयो मार्तंड ॥२ ॥ दृढकर थाप्यो कृष्ण भक्तिपथ दूरकिये कलिके पाखंड ॥ निरख गई जडता जीवनकी चरणसरोज प्रताप प्रचंड ॥३ ॥ वेद कर्म मर्यादा राखी भजनानंद कियो विस्तार ॥ राजस मेंट सबे ले जेहें कर निर्गुण यश कियो संचार ॥४ ॥ पुष्टि ललित लीला गिरिधरकी सेवा सुलभ दिखाय दई ॥ अधम उद्धारण श्रीवल्लभ प्रभुकी लीला प्रतिछिन नईनई ॥५ ॥

□ राग कान्हरो □ (१०९) प्रकटे श्रीवल्लभ द्विजरूप ॥ पुरुषोत्तम मुख कमलमनोहर आनंद कंद उद्धरण स्वरूप ॥१ ॥ श्रीलक्ष्मण पुत्र मुख मूरति जनमत जगमें जयजयकार ॥ वदिवैशाख कृष्णएकादशी भये इलंमा कूखकुमार ॥२ ॥ भामिनी मंगलगावत आवत द्वारें द्विजवर ताकीभीर ॥ दान मान पावत मनवांछित बाजत भेरि निशान गंभीर ॥३ ॥ दैवीजनके भाग्य अपरिमित रीझे श्रीगोवर्धननाथ ॥ मौतिनचौक पुराये गोकुल पुष्टि

भक्त सब भये सनाथ ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (११०) श्रीलक्ष्मण भूपकुमार प्रकटे श्रीवल्लभ पूरणकाम ॥ परमकृपाल कृपाकर जनपर भक्तनके अभिराम ॥१ ॥ प्रेमभक्ति दिखाय निजजनकों ओर दीने परम सुखधाम ॥ जन मथुरा कहे कहांलो वरनों जगत कृतारथ तुम्हारो नाम ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (१११) कृपासिंधु श्रीलक्ष्मणनंद ॥ भक्तन हित प्रकटेहें भुवपर कृष्णवदन वृन्दावनचंद ॥१ ॥। तबही वेणुद्वार गोपिनकों सींचत रसमय परमानंद ॥ अबही इलम्मा कूख उदय व्है दैवीजन वचनामृत आनंद ॥२ ॥ साकार युगल रासरसिकनी अंबुजमें वेणुमकरंद ॥ देचरणोदक शरणलियेजे त्रिविध ताप टारे दुखद्वन्द ॥३ ॥ तुमहो परम उदार महाप्रभु गावत नेतिनेनि श्रुतिछंद ॥ तबगुण गणित शेषनहि पावत क्यों वरणे वल्लभ मतिमंद ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (११२) वागधीश महाप्रभुजीको जपना ॥ पंचदोष या तनमें जीवके ते छूटे इनके गृहे शरना ॥१ ॥ सीतल दृष्टि सदा दैवीनपर त्रिविध ताप निज जनके हरना ॥ वल्लभ ध्यान धरो नित्य चित्तमें यह रीतिसों भवसागर तरना ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (११३) श्री लक्ष्मण भट गेह प्रभु अवतार लिवायो। श्री वल्लभ आचार्य महाप्रभु नाम कहायो ॥ मायावाद विखंड भक्ति पथ पुष्टि बधायो। देवी जन उद्धार होन यह मार्ग बतायो ॥ भट्ट माधव कृष्णहि दासजू दामोदर कौ करि सुधिर। धरि विग्रह रूप सुचित्र मेय जयति जयति नृप रूप शोर ॥

□ राग कान्हरो □ (११४) श्री लक्ष्मण भट्ट गृह भये, श्री वल्लभाधिराज। पनरा सै पेतीस में भक्त उधारन काज ॥१ ॥ शाह सिकन्दर लोदि भो, दिल्ली पति बड़ भाग। प्रभता सुनि लखि हिय भयो, सरस श्रवन अनुराग ॥२ ॥ भयो श्रवन अनुरागतें, दरसन को अनुराग ॥ तब दिल्ली

पति चित्त भई, चित्र करावन लाग ॥३ ॥ पाय अनवसर समय कौ, श्री जमुना तट धाम। कहत भागवत की कथा, श्री सुबोधिनी नाम ॥४ ॥ तहां भट्ट माधोदासजू, हाजर रहत हमेश। श्री सुबोधिनी लिखत है, शीघ्रसु शुद्ध विशेष ॥५ ॥ कृष्णदास मेघन जहां, हाजर ह्वेकर जोर। तीन दिवस ठाढो रह्यो, पुरुषोत्तम के जोर ॥६ ॥ दामोदर हरसानि जहां, करत दंडवत आय। ग्रीसम ऋतु के समय में, ऐसो समय सुपाय ॥७ ॥ पनरासौं सडसठ लखो, संवत को अनुमान। सम्प्रदाय कल्प द्रुम सु, पुस्तक माहि प्रमाण ॥८ ॥

□ राग नायकी □ (११५) नीको शुभ दीन आज प्रगटे श्रीवल्लभ महाराज ॥ मंगल गीत मधुर प्रमदा मिली गावत सुभग समाज ॥१ ॥ मंगल कलश द्वार प्रती शोभित बजे पंच शब्द बाज ॥ मंगल कनक देत मन भाये हरखि विप्र पढे गाज ॥२ ॥ मंगल भूषण पट पहेरावत पीत कुलह सिरताज ॥ मंगल भाल विसाल विलोचन अंबुज लखि जीय लाज ॥३ ॥ मंगल थाल आरती उतारत कुमकुम अक्षत साज ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन कृपा निधि पुजवत मंगल काज ॥४ ॥

□ राग रायसो □ (११६) द्विजकुल प्रकटे श्रीहरि सुंदरताकी रास ॥ परम पुनीत एकादशी धन्य धन्य माधोमास ॥१ ॥ लग्न नक्षत्र बल शोधकें बेठे द्विजवर आय ॥ श्रीलक्ष्मणभट मनमोदसों दीनी बहुविध गाय ॥२ ॥ फूले द्रुम ओर वेली फूली सरस बनराय ॥ निजजन फूले निरखकें रहसि बधाई गाय ॥३ ॥

□ राग रायसो □ (११७) प्रकट भये श्रीवल्लभ प्रभु आनंद बढ्योहे अपार ॥ भूतल महा महोत्सव घर घर मंगल चार ॥१ ॥ प्रमुदित करत कोलाहल नाचत हें नरनार ॥ आनंद मग्न भये सबे बोलत जे जे कार ॥२ ॥ कुंकुम सथिये धरावत बांधी वंदनवार ॥ मोतियन चौक पुरावत कुंभ कलस हें अपार ॥३ ॥ मात इलम्माजु कूंखि द्विजवर लियो अवतार ॥ कोटि किरन ज्यों रविकी शोभा उजीयार ॥४ ॥ धन्य संवत पंद्रहा पेंतीस

माधोमास ॥ कृष्णपक्ष एकादशी नक्षत्रवार सुप्रकाश ॥५ ॥ द्वारें भीर भई अति गंधर्व करत हें गान ॥ नारद सारद शेसजू ब्रह्मा रुद्र समान ॥६ ॥ देत दान कंचन मनि श्रीलक्ष्मण भटजु उदार ॥ भुवन बसन दिये सबे माला मुद्रिका हार ॥७ ॥ बाजत ताल पखावज बीना ताल सुढार ॥ ढोल दमामा भेरी नाचत सब नरनार ॥८ ॥ बाजे बिविध बजे तहां गिनत न आवे पार ॥ देव विमानन चढिकें बरखत पुष्पन थार ॥९ ॥ महिमा कहां लगि बरनों कहत न आवे पार ॥ यह छबि पर बलिहारी जन गोविंद किये निहार ॥१० ॥

□ राग केदारो □ (११८) रह्यो मोहि श्रीवल्लभ गृहभावे ॥ सुनि मैया तुंमोडर माखन दूध दह्योजु छिपावे ॥१ ॥ तू अति क्रूर कृपन हुं कहा कहुं नित्य प्रति मोहि खिजावे ॥ मेरो प्रान जीवन धन गोरस मोको नित्य प्रति भावे ॥२ ॥ खीरखांड पकवान बहोत ले प्रातहि मोहि जगावे ॥ तेल सुगंध लगाय प्रीतिसों ताते नीर न्हवावे ॥३ ॥ भूषन वसन विविध मन भाये पलटि पलटि पहरावे ॥ नेन आंजि तिलक मृगमदको दरपन मोहि दिखावे ॥४ ॥ खटरस व्यंजनमोहि जिमावे हितसोंबीरी खवावे ॥ भौंरा चकई विविध खिलोना लेकर मोहि खिलावे ॥५ ॥ विविध कुसुम अपने कर गुहिके ले माला पेहेरावे ॥ सुखद पर्यंक समारि मृदुल अतितापर मोय सुवावे ॥६ ॥ उत्थापन भयो पहर पाछिलो व्रजजन दरस दिखावे ॥ संझा भोगधरत अति रुचिसों सेन भोग करलावे ॥७ ॥ गोदोहन ग्वालन संग करिके मुरली करमें गहावे ॥ गायन मिलवत बछरा बुलावत व्रजजन मोद बढावे ॥८ ॥ जन्म दिवस जब आवत मेरो आंगन चोकपूरावे ॥ बाजें बाजत बहु विध द्वारे बंदनवार बंधावे ॥९ ॥ मेरे गुन गुनियनपर मोकों सुरनसों गाय सुनावे ॥ हरद दूध अक्षत दधि कुंकुम मंगल कलश धरावे ॥१० ॥ धेनु दिवाय द्विजन पें मोसों आशीरवाद पढावे ॥ केतिक बात कहोंमें हितकी मोपें कहत न आवे ॥११ ॥ पलनां झुलावत विविध

भांतिके रंग रंगके लावे ॥ दधि कादो अति करत प्रीतिसों फूले अंग न समावे ॥१२॥ रावल में राधा मंगल कीरति जस सरस बधाई गावे ॥१३॥ वामन रूप धर्यो पृथ्वीमें बलिके द्वारे आवे ॥ तीन पेड धरती जब मांगी सो हरि कहूं न समावे ॥१४॥ लीला दान महा रजनीमें करि सिर मुकुट धरावे ॥ दानीराय नाम धरि मेरो करमें लकुट गहावे ॥१५॥ सांझीचिति रतन थारीमें वारत सांझी गावे ॥ नव दिन नये भोग धरि मोकों विधिसु रीझ रीझावे ॥१६॥ विजे करनको दिन दशमीको राम लंकापर धावे ॥ जब अंकुर शिर पर धरिके वीजे मुहूरत सजावे ॥१७॥ पून्यो शरद रात दिन मेरो नटवर भेष बनावे ॥ मोर मुकुट पीतांबर काछनि राग विलासहि गावे ॥१८॥ धनतेरस दिन धन धोवन मिस धन एक मोहि जनावे ॥ विविध सिंगार भोग रस अरपत व्रजभक्तन मन भाव ॥१९॥ रूप चतुर्दशी मंगल दिन लखि अंग अंग उबटावे ॥ विविध भांत पकवान मिठाई ले ले भाग धरावे ॥२०॥ सुरभी वृंदन न्योति कुहू निश सुरभी कान जगावे ॥ दीपदान दे निश हटरीमें चोपड मोहि खिलावे ॥२१॥ प्रात भये गोधन पूजन करि मलरा ग्वाल गहावे ॥ विधिसों अन्नकूट रचि मोको गोधनलीला गावे ॥२२॥ भाईदूज भावे यमुनाको विधिसों न्योति जिमावे ॥ बहनि सुभद्रातिलक करत हे आशिर बच्चन सुनावे ॥२३॥ गोप अष्टमी गाय चराई ग्वालनके संग धावे ॥ धोरी धुमरी गांग बुलावत मुरली मधुर बजावे ॥२४॥ कार्तिक सुदि एकादशी शुभदिन इखसु कुंज बनावे ॥ पाट सुरंग बसन पहरावे परम प्रमोद मनावे ॥२५॥ धनुर्मासको भोग विविध रचि चीरहरन जस गावे ॥ व्रतचर्या लीलारस अनुभव गुप्त सो प्रगट दिखावे ॥२६॥पोषमास नोंमीको शुभदिन उत्सव मोमन भावे दैवी जीव उद्धारे मेरे द्वितीय स्वरूप पधरावे ॥२७॥ ऋतु वसंत जानि जिय अपने रुचि सुगंध छिरकावे ॥ वसंत बनाय लिये व्रजललनां बहु विधि खेल मचावे ॥२८॥ डांडो रोपन करि पून्यो दिन सरस धमारहि गावे ॥ बहु

विधि हिलिमिल चाचर खेले छिरके ओर छिरकावे ॥२९ ॥ सातम पाट उछव दिन मेरो केसरि रंग छिरकावे ॥ सुरंग गुलाल अबीर कुंकुमा बूकाचंदन लगावे ॥३० ॥ कुंज बनाय प्रीतिसों मोहन माथे मुकुट धरावे ॥ चोवा चंदन छिरकत कुंजन अद्भुत लीला गावे ॥३१ ॥ पून्यो जहां तहां तब प्रगटी झूमक चेतव गावे ॥ रात दिवस रस हो हो हो कहि गारी भांड भंडावे ॥३२ ॥ भोग राग बहु रचित डोलपर झोटा देत दिवावे ॥ परिवा डोल झुलाय प्रीतिसों भारी खेल खिलावे ॥३३ ॥ द्वितीया पाट सिंघासन रचिके तापें मोय बेठावे ॥ मर्यादा चितलाय श्री वल्लभ दान देत हरखावे ॥३४ ॥ विविध फूल रचि करत मंडली अद्भुत महेल बनावे ॥ कोमल गादीधरो ता उपर तापें मोय पधरावे ॥३५ ॥ चैत्र सुदि नोमीको शुभदिन रामचंद्र ग्रह आवे ॥ मात कौशल्या कुखि पधारे जन्म जयंति गावे ॥३६ ॥ वदि वैशाख एकादशी प्रगटे श्रीवल्लभ मन भावे ॥ मात इलंमा करत बधाई वल्लभ नाम धरावे ॥३७ ॥ सुदि वैशाख अक्षय तृतीया दिन शीतल भोग धरावे ॥ चंदन लेप करत अंग अंग प्रति पंखा वायु ढुरावे ॥३८ ॥ सुदि वैशाख नृसिंघ चतुरदशी भक्तन पक्ष दढावे ॥ जन प्रल्हाद राख संकट ते वेद विमल जस गावे ॥३९ ॥ ज्येष्ठा पून्यो स्नान यात्रा जल शीतल स्नान करावे ॥ शीतल भोग धरत मन भाये मो मन ताप नसावे ॥४० ॥ सुदि अषाढ दुतिया पुष्य नक्षत्र रथमें मोहि बेठावे ॥ तुरंग चलत अवनीपर चंचल राग मल्हारहि गावे ॥४१ ॥ व्रज भक्तनको सुख दे गिरिधर भोग अनुपम लावे ॥ गोपीजन मन मान्यो करिके सजि आरती उतरावे ॥४२ ॥ उखाषष्ठी परव अनूपम कसुंभी साज सजावे ॥ बरखत मेघ घोर चहुंदिशतें लीला सकल बनावे ॥४३ ॥ हिंडोला श्रावनमें गृह गृह रचि ललितादिकन झूलावे ॥ पचरंग वागे वस्त्र रंग रंगनि आभरन बहुत धरावे ॥४४ ॥ श्री ठकुरानी तीज हिंडोरा बरसानो मन भावे ॥ कुंजनकुंजन झूलि झूलावत सरस मधुर सुर गावे ॥४५ ॥ पवित्रा एकादशी निश आज्ञा

ले मनमें मोद बढावे ॥ ब्रह्मसंबंध किये श्री वल्लभ मिश्री भोग धरावे ॥४६ ॥ दैवी जीव उद्धार कीये सब पवित्रा ले पहेरावे ॥ भयो प्रगट मारग वल्लभको व्रजजन मोद बढावे ॥४७ ॥ राखी बांधत बहनि सुभद्रा मोतिन चोक पुरावे ॥ तिलक करत रोरी अक्षत ले आरती वारति भावे ॥४८ ॥ यह विधि नित नौतम सुख मोको वल्लभ लाड लडावे ॥ में जानुं के वल्लभ जाने के निजजन मन भावे ॥४९ ॥ अति मति मंद कर्म जड कलिके जे मिथ्या करि जाने ॥ रसिक कहे श्री वल्लभ कृपा बिन यह फल कबहू न पावे ॥५० ॥

□ राग केदारो □ (११९) नमो श्री वल्लभभाधीश स्वामी। अखंड अवतार जुगधार लीलाकरी आसुरी जीव सब मोह पामी ॥नमु० ॥ निगम करजोर के करत स्तुति सदा सनक शुक व्यास नहीं पारपामी। शेष अज रुद्र सुर तेंतीस ध्यावत सदा रटत हे मुनि सकल दीवस जामी ॥नमु० ॥ देखके दीनपर अतुल करुणाकरी भाग्य विधि प्रकट भये गुरूडागामी। नंदगृह प्रकट भुव भक्त आरत हरी तैलंग कुल तिलक शिरछत्र छामी ॥नमु० ॥ वेदमथ सकल सिद्धान्त नवनीतरस दैवीजन दूर किये हृदय भ्रामी ॥नमु० ॥ कपट कली दंड सबग्रंथ खंडन किये व्यासनंदन वचन पार ग्रामी ॥ कोटि ब्रह्माण्ड तन रोमही रोम प्रति जगत आधार धर धीर धामी। पुष्टिपथ प्रकट कर नाम नौका करी पार संसार जे शरन आमी। कोउ कहे विप्र कोउ विविध पंडित कहे कोउ कहे अश कोउ आत्मारामी। स्वकीयजन एक निर्धार निश्चेकये वस्तुतः कृष्णजो बंधे दामी ॥ कोन गुण कहि शके अखिल व्रजइशके दीन व्हे चरनतर शीशनामी। शरन वल्लभही भाग्य को पार नहीं भजो कृष्णदास प्रभु अंतरजामी ॥नमु० ॥

□ राग केदारो □ (१२०) श्रीमदाचार्य चरण नख चिन्हको ध्यान उरमें सदा रहत जिनके। कटत सब तिमिर महादुष्ट कलिकाल के भक्तिरस गूढ

दृढ होत तिनके ।। जंत्र ओर मंत्र महातंत्र बहुभांति के असुर ओर सुरनको डर न जिनके रहत निरपेक्ष अपेक्ष नहि काहुकी भजन आनंद में गिने न किनके । छांड इनको सदा ओरको जे भजे ते परे संसार मांहि भ्रमके ।। धारमन एक श्री वल्लभाधीशपद करन मनकामना होत जिनके ।। मत्त उनमत्त सो फिरत अभिमान में जन्म खोयो वृथा रात दिन के । कहत श्रुति सार निरधार निश्चय करी सर्वदा शरण रघुनाथ जिनके ।।

□ राग बिहाग □ (१२१) प्रकटव्हे मारग रीति दिखाई ।। परमानंद स्वरूप कृपा निधी श्रीवल्लभ सुखदाई ।।१ ।। करश्रृंगार गिरिधरनलालको जब कर वेणुगहाई ।। लेदर्पण सन्मुख ठाडे व्हे निरखनिरख मुसकाई ।।२ ।। विविध भांत सामग्री हरिकों कर मनुहार लिवाई ।। जल अचवाय सुगंध सहित मुखबीरी पानखवाई ।।३ ।। करआरती अनोसर पटदे बैठे निजगृह आई ।। भोजनकर विश्राम छिनक ले निजमंडली बुलाई ।।४ ।। करत कृपा निज दैवी जीवनपर श्रीमुख वचन सुनाई ।। वेणुगीत पुन युगलगीतकी रस बरखा बरखाई ।।५ ।। सेवारीति प्रीति व्रजजनकी जन हित जग प्रगटाई ।। दास शरण हरि वागधीशकी चरणरेणु निधिपाई ।।६ ।।

□ राग बिहाग □ (१२२) श्रीलक्ष्मणगृह आज बधाई ।। प्रकटे श्रीवल्लभ सुख रासी भक्तनके सुखदाई ।।१ ।। अद्भुतरूप कहत नहि आवे कोटिक काम लजाई ।। यहसुन नरनारी मंगलसज गावतआये धाई ।।२ ।। माधवमास कृष्ण एकादशी शुभघरी लगन सुहाई ।। देत दान लक्ष्मण आनंदित जातकर्म करवाई ।।३ ।। मात इलंमा तनमनफूली आनंद उर न समाई ।। देख थके सुरपति सुरवनिता नृत्यत अति सुखदाई ।।४ ।। मायामतकों दूर करेंगे पुष्टिभक्ति प्रकटाई ।। सगुणदास पर कृपाबहुतकर राखलियो शरणाई ।।५ ।।

□ राग बिहाग □ (१२३) श्रीलक्ष्मणगृह आये श्रीवल्लभ ।। उघरे भाग्य सकल भक्तनके ब्रह्मादिक सनकादिक दुर्लभ ।।१ ।। शेष सहस्र मुख रटत

निरंतर पार न पावत जाकों ॥ सो प्रभु प्रकट भये करुणाकर वेद वखानत ताकों ॥२ ॥ माधवमास कृष्णा एकादशी सुभग महुरत सोहे ॥ नंद नंदनकी लीला रसमय सो मूरति मन मोहे ॥३ ॥ यह सुन देव विमानन आये कुसुमन वृष्टि कराई ॥ जयजय शब्द होत चहुं दिशतें बाजत रंग बधाई ॥४ ॥ नरनारी सब मुदित भयेहें प्राण जीवन धनपाई ॥ केशवके प्रभु गोकुल प्रकटे भक्तन आस पुजाई ॥५ ॥

□ राग बिहाग □ (१२४) प्रकटे श्रीवल्लभ सुखराशी ॥ प्राची दिशा ज्यों चंद्र प्रकट होय त्यों श्रीअंग प्रकाशी ॥१ ॥ देख स्वरूप रतिपति लाजतहें मोही सब सुरवनिता ॥ भक्त चकोर मग्न रस पीवत तन शुद्धि कोऊ न जनिता ॥२ ॥ ब्रह्मवाद दृढ भूपर करकें दुष्टन मतहिं बिदार ॥ गज गति चाल निरख वल्लभकी भीम कियो बलिहार ॥३ ।

□ राग बिहाग □ (१२५) सदा श्रीगोवर्धन में स्थित। सदा बिराजें श्रीवल्लभ विट्ठल, महा महोच्छव नित्त ॥ जग्य-भोक्ता जो जग्य करत हैं भक्त जननि के हित्त ॥ 'छीत- स्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल लग्यौ रहत नित चित्त ॥

□ राग बिहाग □ (१२६) श्रीवल्लभ वरनों कहा वडाई। जाके रोम रोम प्रति प्रकटित कोटि गोवर्धनराई ॥ वाके यूथभये न्यारे न्यारे बरनत बरने न जाई। रामदास कमलासी दासी सो घर छांड बसाई ॥

□ राग बिहाग □ (१२७) श्री वल्लभ करुणा करके मोहे कीजे निज दासन को दास। पूरण काम है नाम तिहारो इतनी मो मन पूर हो आस ॥१ ॥ तिहारी कृपा कटाक्ष तें दुर्लभ पाइये सुलभ करों ब्रजवास। तिहारे सेवक जन संगत बिनु निसदिन मो मन रहत उदास ॥२ ॥ श्री वृन्दावन गिरि गोवर्द्धन श्री यमुना तट करूँ निवास। श्री हरि वदन चंद सु विमल यश गान करत सुर सदा अकास ॥३ ॥ कृपा निधान कृपा कर दीजे जो सब लोक मिटे उपहास। दीजे दिव्य देह गोविंद को इन दृग निरखों

अनुदिन रास ॥४ ॥

□ राग बिहागरो □ (१२८) जे जे जन बिछुरे प्रभु तें ते अभैदान करन। कासी में प्रभु पत्रावलंबन कीनों माया-मत हरन! श्रीभागवत पुरान वेद मथि श्रीगोवर्धन-धरन॥ को कहि सकै गान गुन इनिके आगम निगम-वरनन। 'छीत-स्वामी' प्रभु पुरुषोत्तम निधि श्रीविट्ठलेस-सदन॥

श्री आचार्यजी के पलना के पद

□ राग बिलावल □ (१) निजजन निरख निरख सब फूले॥ श्रीलक्ष्मणगृह आज भलोदिन श्रीवल्लभ पलना झूले ॥१ ॥ जो सुख नंद यशोदा आंगन गोपीजन मिल निरख्यो॥ सो अब दैवी जनके आंखन निरख कमल पद हरख्यो ॥२ ॥ देत दान कंचन पट भूषण याचक भये अजाची॥ कृष्णदास आशा विधना सब कीनी मनकी सांची ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२) पलना झूलत वल्लभ राई॥ प्रेम बिवश गावत हुलरावत मुदित इलंमा माई ॥१ ॥ अंग अंग प्रति अमित माधुरी नख शिख भेख बनाई॥ सुंदर श्याम कमलदल लोचन शोभा वरनी न जाई ॥२ ॥ मारग पुष्टि प्रकाश करनकों प्रगट भये भुव आई॥ श्रीवल्लभ चरनारविंद पर दास रसिक बलजाई ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (३) इलम्मा श्रीवल्लभ लालहि झूलावे॥ लाले झूलावे मन हुलसावे प्रमुदित मंगल गावे ॥१ ॥ गहि करडोर पाटकी करसों मनहि मन हुलसावे॥ कुंभनदास प्रभुकी छबि निरखत व्रज जन मंगल गावे ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (४) श्रीवल्लभलाल पालने झूले मात इलम्मा झुलावे हो॥ निरख निरख छबि अपने लालकी तनकी तपत बुझावे हो ॥१ ॥ कठुला कंठ वज्रके हरि नख द्वै दतियां दरसावे हो॥ भाल विशाल तिलक गोरोचन भृकुटी अनंग लजावे हो ॥२ ॥ कबहुक सुरंग खिलोना लेले नाना भांति खिलावे हो॥ सगुणदास प्रभु शिशु व्है पोढे श्रीवल्लभ दरस दिखावे हो ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (५) मात इलम्मा श्रीवल्लभ लाडिलो लडावे ॥ रतन जटित पोढाय पालनें प्रेम नेह हुलरावे ॥१ ॥ चरन कमल भक्तन लख देत आनंद रस हेत ॥ पलना झुलें मुग्ध व्है कें श्रीभागवत प्रगट रस निज जन देत ॥२ ॥ कोमल चरन चलत ठुमकत गत श्रीलक्ष्मणभट श्रीवल्लभकों निरखि छबि आवेश ॥ रसिक दास वल्लभ रस निरखत श्रीवृंदावन भूमि प्रवेश ॥३ ॥

श्री आचार्यजी की बाललीला के पद

□ राग भैरव □ (१) श्रीवल्लभ देखे मैं जब जागे। घूमत नेनसों बोलत है जुं प्राणप्रिया रस पागे ॥१ ॥ सिथिल अंग जृंभात कछुकहि बैठ प्रिया अंग लागे। रामदास वल्लभजन ठाडे चरनकमल अनुरागे ॥२ ॥

□ राग भैरव □ (२) श्रीवल्लभ रसरंग भरे प्यारी उर बाँह धरे बैठे निकुंजधाम करत है कलेऊ। निज कर पिय सामग्री मेलत प्रिया के मुख वेहु हँसी देत कौर जेंवत हैं दोऊ ॥१ ॥ हिये अति स्नेह भरि ललिता प्रभु पास खरी लाये हैं ये भक्तजन आरोगो सोउ। सुनिके यह गूढ वचन सबन निकट बोल लियो रामदास माँग लियो हरखि सब कोउ ॥२ ॥

□ राग भैरव □ (३) वल्लभ प्रिया मिल करत कलेउ। नव व्यंजन कर दियो ढाँपि जब प्रीत हृदैकी लख्यो न कोऊ ॥१ ॥ राख्यो थार अमरती घेवर माखन मिश्री मिठाई मेवा अरु सलोने जेंवत हैं दोऊ। रामदास वल्लभजन ठाडे पूछत राज कछु लेऊ ॥२ ॥

□ राग देवगंधार □ (४) वल्लभ उठी प्रातःकाल दरस दियो अति रसाल भई हैं निहाल सखी राजत संग प्यारी। दोऊनके चिह्न देख ललिता मुसकाय कह्यो आज हो जु बेंदी यह नीकी तुम धारी ॥१ ॥ प्रिया-कपोल पीक छाप सोभा कछु कही न जात जेती जग उपमा सबै वार फेर डारी। दुहुँ दिसि बाढी छबि प्यारी की अधिक कछु ऐसी री सुन्दरता पैं रामदास वारी ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (५) श्रीवल्लभलाल आंगन मध्य खेलन ॥ पहले प्रगट श्रीयशोदा नंदन गोपीनकों रस देनन ॥१ ॥ अबही प्रगट श्रीलक्ष्मण

नंदन श्रीभागवत रस एनन ।। परमानंद प्रभुकी छबि निरखत सुख आवत नही बेनन ।।२।।

□ राग आसावरी □ (६) इलम्मा श्रीवल्लभ गोद खिलावत ।। गोद खिलावत मन हुलसावत कर गहि चंद दिखावत ।।१।। रुनन झूनन पग पेंजनी बाजत लाल घुटुरुवन धावत ।। श्रीलक्ष्मणभट निरख प्रफुल्लित सूर निरख जस गावत ।।२।।

□ राग सारंग □ (७) श्रीवल्लभ जेंवत रस रंग भीने । अति रंगभीनी सन्मुख ठाडी थार हाथ में लीने ।।१।। करि-करि सेनन अंग दिखावत लालन मन वश कीने । रामदास अचवाय प्रभुको बीरा करमें दीने।।२।।

□ राग झींझोटी □ (९) नेन कटाच्छको बान चलावत वल्लभ प्रीतम प्यारो री । घायल सी हौं घूमत डोलत नेन निरख छबि हारों री ।।१।। प्रानजीवन धन मेरे वल्लभ इन नेनन को तारो री । रसिक श्रीवल्लभ-मुखमुसकनि पर तन मन धन सब वारों री ।।२।।

□ राग कान्हरो □ (१०) श्रीवल्लभ लाल बियारु कीजे । पूरी शाक संधानों खटरस बिलसारु रुचिकर ही लीजे ।।१।। गुंजा मठडी जलेबी घेवर थपडी सेव चनाकी लीजे । वृन्दावन चंद जेंवत रुचिसों जूठन रामदास को दीजे ।।२।।

□ राग कान्हरो □ (११) वल्लभ के रूप पर मनमथ कोटि कोटि वार फेर डारों शोभा जेतिक त्रिभुवन की । उपमा विलोकी सारी नहीं सम गिरिधारी छबि सब वारी कारी नंदके सुवनकी ।।१।। बैठे प्रभु चित्रसारी संग सोहे नव नारी करत बातें जु मीठी अमृत चुंबन की । स्त्रवनन सुखकारी नेनन हु लागे प्यारी शामदास वारि आस चरन छुवनकी।।२।।

महाप्रभुजी के विवाह खेल के पद

□ राग बिलावल □ (१) भई सात बरसकी दुलारी मनमें ब्याहकी बात विचारी। महालक्ष्मी रजो जु कुमारी दोऊ मिल गंगा तीर सिधारी ॥१ ॥ दूध दही के कलस लिए भर छाब फूलन संगको। निज सखीनको संग ले चली करन पूजन गंगको ॥२ ॥ आतुर मन व्है करत पूजा भोग सामग्री धरी घनी। मांगत है कर जोरके हमे देहो पुरुषोत्तम धनी ॥३ ॥

□ राग आसावरी □ (२) आशा कर रही है कुमारी विरह व्यथा तन भारी। विनवे चंद्रावली प्यारी करो सहाय ललिता सुकुमारी ॥१ ॥ समुझावत स्यामा विवेकी सखी री तो सम और न पेखी। विनवत हों चंद्रावली देखी यासों को कहे कौन विसेखी ॥२ ॥

□ राग टोडी □ (३) चन्द्रावली कहत नाथ राधाजूको गहो हाथ काहेको दुरावो प्यारे जगत उजियारे। करो ब्याह लाल आप मेटो त्रिविध तनके ताप हरो दुख करो सुख नेननके तारे ॥१ ॥ तब ही कृष्ण अवतार कियो रास जमुनाघाट गोपिन प्रति रूप धर्यो आप प्राण प्यारे। आप द्विज तनु धार तरस रहि व्रजनार करो ब्याह बहु रूप दिखावो मेरे बारे ॥२ ॥ कासी पधारो पिय तरसे मधुमंगल हि वे गैल देख रहे पिय बूझत सब कोय। कहां रहे प्राणनाथ वेगि मिलो ग्रहो हाथ देहो जु प्राणदान प्यारे बचाय लेहो आय ॥३ ॥

□ राग मधुमाती सारंग □ (४) कियो जु लाल विचार फिर कासी जू आये। दुलह श्री नंदलाल सखा संग जु सब आये ॥टेक ॥ सखा सबै बराती बना श्री वल्लभलाल। दामोदर कृष्णदास जु हो माधव भटके स्याल ॥१ ॥ दास कुंभन सूरदास जु हो पद्मनाभ रसाल। राणा व्यास वासुदेव जु हो रामदास गोपाल ॥२ ॥ हरिदास कृष्णदास जु रामदास चौहान। पांडे मानिक चंद जु हो नरोबाई मन मान ॥३ ॥

□ राग काफी □ (५) एरी सखी संभरवारे दामोदरदास तुलसा आये प्रेमसों रंग रस छाय रह्यो। एरी सखी रघुनाथदास सुहावने आये जु लाये

निज वधु रंग रस छाय रह्यो ॥१ ॥ एरी सखी राम गदाधरदास वेणी माधवदास सोहावनो रंग रस छाय रह्यो। एरी सखी हरिवंश पाठक आये अम्मा क्षत्राणि मन भावने रंग रस छाय रह्यो ॥२ ॥ एरी सखी गोविन्द भला मनमाने गजन धावनसों बखाने रंग रस छाय रह्यो। एरी सखी ब्रह्मचारी नारायणदास देवा कपूर मनमाने रंग रस छाय रह्यो ॥३ ॥ एरी सखी महावनसों क्षत्राणि जीया दिनकर के मनमानी रंग रस छाय रह्यो। प्रभुदास मुकुंद सुखदानी प्रभु भाट जस कहत बखानी रंग रस छाय रह्यो ॥४ ॥

□ राग होरी □ (६) बराती सब पर जाऊं वारी ॥ध्रुव ॥ राजघाटसों पुरुषोत्तम आये सेरगढसों त्रिपुरारी। जेवल पूरणमल्ल सोभित हैं यादवेन्द्रकी बलिहारी। गुसांईदास गुन भारी ॥१ ॥ पद्मा रावल पुरुषोत्तम जोशी जगन्नाथ महतारी। रामदास गोविन्द दुबे सोहे अरु कृष्णदास अधिकारी। बुला मिश्र रुचिकारी ॥२ ॥ जीयादास रामानंद पंडित विष्णु वेणीदास गण भारी। भगवानदास कवि भाट जु लघु पुरुषोत्तम मनुहारी। जाय गोपाल बलिहारी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (७) हां हां ललना एक क्षत्री सेठ चोपडा लाये जनार्दन संग ललना। ललना नारायण मदनगोपाल जु है प्रभु के अंग ललना ॥१ ॥ ललना गरुड कन्हैयालाल जू नरहरि मन भान ललना। ललना उत्तमश्लोक बल कृष्ण बादरायण जु भान ललना ॥२ ॥ ललना राजा दुबे माधो दुबे राणा व्यास पीतांबरदास ललना। ललना जटाधारी गोपाल जु गोरजा समराई सास ललना ॥३ ॥ ललना यादवदास अच्युतदास जु आनंद विश्वंभरदास ललना ललना स्याम सुथार क्यों भूलिये जाको चरणन वास ललना ॥४ ॥ ललना नारायणदास दिवान जु संतदास विरक्त ललना। ललना सिंहनदके मात जु हे आनंद जगता सकृत ललना ॥५ ॥

□ राग नूर सारंग □ (८) सेठ पुरुषोत्तमदासके घर परमानंद भयो री। दुलहे बन आये पिय प्यारे बिरह न जात सह्यो री ॥१ ॥ बेटी रुक्ष्मणि सुत

गोपाल जु मनवांछित फल पायो जु। सब मिल गाय बजाय प्रेमसों बराती बना पधरायो जु ॥२ ॥

□ राग मारू □ (९) मधुमंगल आनंदित तन पुलकित न माये हो। सब अपने मित्र सुबंधु बोल जोतसी बोलाये हो ॥१ ॥ बूझत लग्न लेहें कौन दिनको कहो जु तुम ज्ञानी हो। पुरुषोत्तम आये हैं ब्याहन मेरी कुंवरी सयानी हो ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (१०) कहे जोतसी मधुमंगल तुम सुनो जु बात। बिन प्रभु दिन सब कोन काज जग विख्यात ॥१ ॥ जा दिन प्रभुको मिलन मुहुरत आछो जान। दुलहे व्है आयो ब्याहन पूरण पुरुष प्रमाण ॥२ ॥ आये है बराती जो संग सबै उनके हैं अंग। इन्द्र महेस ब्रह्मादिक सबन आये हैं संग ॥३ ॥ करनी धरी लगन दीन पांडे दियो पठाय। बाजन बाजत बहो विधि शोभा कही न जाय ॥४ ॥

□ राग जेजेवंती □ (११) माई आज तो सोभा बाढी कासी नगरकी ॥ध्रुव ॥ फूले नरनारी आनंद बढ्यो अपार जहाँ भीर भई डगर डगरकी ॥१ ॥ कर्यो है सिंगार लाल सेहरो अति रसाल। भाल तिलक मोती लर सोभा कुंडलकी ॥२ ॥ फूल सेहरो विशाल देख तिलक लाल। लजित अंग देख तुरा हलनकी ॥३ ॥ मोती कठसरी पहेर हीराकी हमेल घर। चमकन मणिहार हीरा पदकनकी ॥४ ॥ माणिक के हार सोहे बांधी फेंट मन मोहे। कटि मेखला जु मानों पांत चंद्रनकी ॥५ ॥ जरकसी सूथन पर सोभा देत जामा धर। चरन भीर भई निज भक्तनकी ॥६ ॥ बाजूबंद कडा सोहे हीरा मुंदरी मन मोहे। श्रीफल विराजे हाथ सोभा स्याम घनकी ॥७ ॥

□ राग मेघ मल्हार □ (१२) स्याम घन बादरके जेसे सब भक्त सोहे दामिनी दमकत तेसे वल्लभ सुजान। अंधियारी रैन मध्य जेसे उडुगन सोहे पावस ऋतुमें सोहे जेसे मलार तान ॥१ ॥ बना बने नंदलाल बराती हैं ग्वाल बाल सोहे लीली घोरी पर रूपके निधान। घोषकी जु नारी सब अटा चढी देखवेको देव सब देखत हैं बैठे जु विमान ॥२ ॥

□ राग बसंत □ (१३) दुलहे लाल आय खरे द्वारे सोभा बरनी न जाई। ठाडे वेद पढत हैं ब्राह्मण सोहासन गावत आई ॥१ ॥ भीतर दुलहे लाल पधारे जहां मंडप रह्यौ छाई। समय पायके नवल किसोरी मंडपमें पधराई ॥२ ॥ लोक वेद मर्यादा कारण अंतर पट जु कराई। सहि न सकत विरह दोऊ वेग करो मुनि राई ॥३ ॥

□ राग पूर्वी □ (१४) आगे भक्त पाछे भक्त इत भक्त उत भक्त भक्तनमें सोहे प्यारे दुलहे दुलहनि। भक्तनसों मंडप छायो वल्लभके मन भायो स्याम तमाल कनक वेल सोभा वनि ॥१ ॥ पांडे जब बोले बोल अंतर पट लियो खोल मिले दोऊ आपसमें कहत न बनी। दुलहे दुलहनि सोहे सबनको मन मोहे नभसों सुरगण करे पहोपवृष्टि घनी ॥२ ॥

□ राग आसावरी □ (१५) भोजनको बैठे लाल दुलहा दुलहनि संग मिल कौर देत ललिता सहचरी। पकवान बहो भांत छाब भरे धरे आन पांचो भातन थाल वेगन बडी करी ॥१ ॥ खोवा बासोंदी संजाब मेवा मीठा धरे आम कोन कहि सके डला बेला भरि धरी। अति हि अघाय दोऊ अचवत है रतन जटित कंचन झारी जमुना जल भरी ॥२ ॥ सुंदर बीरी बनाय अरोगावत ललिता मुसक्यात जात प्रिय सखी पास खरी। गल बहियां मेल खरे भक्तनके ताप हरे सुघर रसिकराय रस रेल करी ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (१६) नव दुलहा दुलहनि किसोरी। युग युग रहो भक्तन उर अंतर अविचल रहो यह जोरी ॥१ ॥ युग युग रहों सब भक्त बराती राज करो व्रज पोरन पोरी। देत असीस प्रियकान्तवती रानी मेरे हृदय बसो यह जोरी ॥२ ॥

श्री महाप्रभुजी की ढाढी लीला

□ राग मारू □ (१) तिहारी ढाढी श्रीलछमनराज। तिहारे पूत भये पुरुषोत्तम सुफल भये मेरे काज ॥१ ॥ तिहारे पितर भये जे पहेले महापुरुष अवतार। तिलंग तिलक द्विज जग्यनारायन किने जग्य अपार ॥२ ॥ ताके

पूत भये गंगाधर कीने बहुत सोमयाग। तिनके गनपति सोमजग्य करि वे हैं बड़े सोहाग ॥३॥ ताके श्रीवल्लभ अग्निहोत्री तव पितु अति कृपाल। तिहारे पूत आचारज वल्लभ वदन अनल बीजपाल॥४॥ दैवी जीव उद्धारन कारन मायावाद निवार। श्री भागवत स्वरूप बताये सेवा पुष्टि प्रकार॥५॥ इनके पूत होयके दोऊ श्रीहलधर गोपकुमार। गोपीनाथ विट्ठल पुरुषोत्तम तिहि गोकुल उजियार॥६॥ श्री विट्ठल को सात होई सुत ते सब आप समान। सुतके सुत नाती पाँति सब दीपत दीप प्रमान॥७॥ नरनारी जे सरन आये हैं ते सब किये सनाथ। नाम सुनाये भक्ति देके पकरे दृढ करि हाथ॥८॥ तव सुतके गुन रूप बखाने तोहु न आवे पार। गोकुलपति मुख्य व्है वह्नि वपु आकृति सीतल सार॥९॥ हौं ढाढी तिहारे घरको तव सुत कीरत करों गान। पर्यो रहूँ हरिवदन विलोकुं मागूं न भिच्छा आन॥१०॥ तुम हो परम उदार दानेश्वर हौं मांगु सो दीजो। ढाढिन मेरी इनकी चेरी मोहे चेरो करि लीजो॥११॥ निसदिन भक्ति करों तव सुतकी इतनी पूजहु आस। जनम जनम नित लीला निरखूं बलि-बलि वल्लभदास॥१२॥

□ राग मारू □ (२) तिहारो ढाढी आयो हो हौं बलि वल्लभ राज। प्रगट भये तैलंग कुलदीपक लीने सब सुख साज॥१॥ एक बार प्रगटे जसुमतिके बलयुत नंदकुमार। भक्तजनन की आशा पूरी नंद जूं महा उदार॥२॥ अब के प्रगट तिहारे श्री हरि सुनि लछिमन भटराई। या ढोटाके गुन लीलारस मोपे बरनी न जाई॥३॥ मायावाद खंड भुव ऊपर कृष्णभक्ति प्रकटाई। तीरथ सकल सनाथ करेंगे चरणकमलसों धाई॥४॥ या ढोटाके सुत द्वै होंगे रामकृष्ण सुखदाता। नाम श्रीगोपीनाथ श्रीविट्ठल निजजन के रसत्राता॥५॥ विट्ठलप्रभु के सात पुत्र व्है हैं ज्यों व्रज में गिरिधारी। प्रथम पुत्र गिरिधर परिपूरन भुव पर जस विस्तारी॥६॥ श्रीगोविन्द श्रीबालकृष्ण अरु श्रीगोकुलपति जोरी।

श्रीरघुपति जदुपति मन मोहे खेलत व्रज की खोरी ॥७ ॥ श्रीघनश्याम आदि बालक संग पुत्र पौत्र जसधारी ॥ लेत सबन लाला दरसे हैं दरसन में अघहारी ॥८ ॥ रस श्रृंगार भोगरस बहुहि नंदराय ज्यों कीने ॥ कलिके जीव कृतारथ व्हैहैं वारि अपन पो दीने ॥९ ॥ सुन सुतको जस लछमन भट तब ढाढी ले निज पासी ॥ मन भायो दियो ढाढी को पूरन कीनी आसी ॥१० ॥ श्रीवल्लभके चरन दोऊ ले ढाढी सीस छुवायो ॥ मगन होय तब नाचन लाग्यो तन त्रैताप नसायो ॥११ ॥ ले बलाय वारत तन मन धन ढाढी मन सुख पायो ॥ कृष्णदास श्री वल्लभ के गुन जन्म जन्म जस गायो ॥१२ ॥

श्री नृसिंहजी के पद

□ राग कान्हरो □ (१) यह व्रत माधो प्रथमलीयो ॥ जो मेरे भक्तनकों दुखदे ताकोफारूं नखनहीयो ॥१ ॥ जो भक्तनसों वैरकरतहे परमेश्वरसों वैरकरे ॥ रखवारीकों चक्रसुदर्शन माथे ऊपर सदांफिरे ॥२ ॥ पराधीनहों अपने भक्तनको जाकारण अवतार धर्यो ॥ यहजु कही हरि मुनिजन आगें अभिमानीको गर्वहर्यो ॥३ ॥ भजते भजों त्यजों नहि कबहू पारथप्रति श्रीपति यों भाखी ॥ परमानंददासको ठाकुर अखिल भुवन सबसाखी ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (२) तोलों हो वैकुंठ न जेहों ॥ सुन प्रल्हाद प्रतिज्ञा मेरी जोलों तो शिरछत्र न देहों ॥१ ॥ मनकर्म वचन मानजिय अपने जहीं जहीं जाने तहिंतहिं लेहों ॥ निगुण सगुण हेर सबदेखे तोसो भक्तमें कबहु न पेहों ॥२ ॥ मो देखत मेरोदास दुखित भयो यह कलंक अबही जुचुकेहों ॥ हृदय कठिन पाषाण है मेरो अबही दीनदयाल कहेंहों ॥३ ॥ गहि तन हिरण्यकशिपुकों चीरूं उदर फार नख रुधिर वहेहों ॥ यह सुन वात तात अब सूरज यह कृतको फल तुरत चखेहों ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (३) जाकों तुम अंगीकार कियो तिनके कोटि विघ्न हरिटारे अभयदान भक्तनकों दियो ॥१ ॥ बहु सनमान दियो प्रल्हादे सबहीं

निशंक जियो ॥ निकसे खंभफारकें नरहरि आपुन राखलियो ॥२ ॥ दुर्वासा अंबरीष सतायो सो पुन शरणगयो ॥ प्रतिज्ञा राखी मनमोहन फिर उनहीपें पठ्यो ॥३ ॥ मृतक भये हरि सबे जिवाये दृष्टिहू अमृत पियो ॥ परमानंद भक्तवश केशव उपमा कोन बियो ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (४) हरिराखे ताहि डर काको ॥ महापुरुष समर्थ कमलापति नरहरीसो ईशहे जाको ॥१ ॥ अनेक शासना करकर देखी निष्फल भई खिस्याय रह्यो ॥ ता बालकको बार न बांको हरिकी शरण प्रल्हाद गयो ॥२ ॥ हिरण्यकशिपुको उदर विदार्यो अभय राजप्रल्हादे दिनो ॥ परमानंद दयाल दयानिधि अपने भक्तको नीको कीनो ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (५) श्रीनरसिंह भक्त भय भंजन जन रंजन मन सुखकारी ॥ भूत प्रेत पिशाच डाकिनी यंत्र मंत्र भव भय हारी ॥१ ॥ सबे मंत्रते अधिक नाम जन रहत निरंतर उरधारी ॥ निजजन शब्द सुनत आनंदित गिर गये गर्भ दनुज नारी ॥२ ॥ कोटिक काल दुरासद विघ्नें महाकालको काल संघारी॥ श्रीनरसिंह चरण पंकज रज जन परमानंद बल बलहारी ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (६) निकसे खंभ बीचतें नरहरि हिरण्यकशिपुको उदर विदार्यो ॥ दे शिरतिलक भक्त अपनेकों हस्त कमल शिर ऊपर धार्यो ॥१ ॥ जलतें राख अग्नितें राख्यो गिरपरतेंले डार्यो ॥ जयजयकार भयो भूऊपर सुरनर मुनिजन कोटि निहार्यो ॥२ ॥ कमला हरिजूके निकट न आवे एसो रूप प्रभु कबहूं न धार्यो ॥ प्रल्हादे चूंबत ओर चाटत भक्त हृदय धरि क्रोध निवार्यो ॥३ ॥ असुरमार कियो निस्तारो धरणीको सब भार उतार्यो ॥ श्रीभटके प्रभु दीयो अभयपद भक्तताप ततछिन निस्तार्यो ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (७) जयजय श्रीनरसिंह हरि ॥ जय जगदीश भक्त भय मोचन खंभ फारि प्रकटे करुणा करि ॥१ ॥ हिरण्यकशिपुकों नखन

बिदार्यो तिलक दियो प्रल्हाद अभयशिर ॥ परमानंद दासको ठाकुर नाम लेत सब पाप जात जर ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (८) अपनो जन प्रल्हाद उबार्यो ॥ प्रकटे खंभ फारिकें नरहरि हिरण्यकशिपु ले नखन विदार्यो ॥१ ॥ लक्ष्मी हरिजूके निकट न आवत यह स्वरूप प्रभु कबहूं न धार्यो ॥ परमानंददास को ठाकुर भक्त वचन प्रतिपार्यो ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (९) अपनो जन प्रल्हाद उबार्यो ॥ खंभ बीचतें प्रकटे नरहरि हिरण्यकश्यपु उर नखन विदार्यो ॥१ ॥ बरखत कुसुम शब्द ध्वनि जेजे सुर देखत सदा कौतुक हार्यो ॥ कमला हरिजूके निकट न आवत एसो रूप हरि कबहूं न धार्यो ॥२ ॥ प्रल्हादे चूंबत और चाटत भक्त जानिकें क्रोध निवार्यो ॥ सूरदास बलिजाय दरशकी भक्त विरोधी देत्य निस्तार्यो ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (१०) भक्तके हेत नरसिंघको रूप धर खंभकों फार हरि प्रकट आये ॥ भक्त विरोधी दैत्य जीय जानकें उदर फार नखनसों आंतलाये ॥१ ॥ प्रकट रूपहि देख देव भय भीतसों आगें प्रल्हाद करि स्तुतिहि गाये ॥ रमा तो निरखिकें दूरतें भाजगई ऐसो रूप व्रजपति कबहूं न दिखाये ॥२ ॥

□ राग मारु □ (११) हिरण्यकश्यप कहत पुत्रसों ढीट तू सबे चटसार हरिनाम बोले ॥ रीस करि बांध करि डार दियो आगमें फिर जलमांझ पुनि गांठ खोले ॥१ ॥ सैलतें पटकि सब ठोर रच्छा भई तोहू अतित्राससों बहुत डाँटे ॥ ल्याई घरबीच यों कहत हरि हे यहां भोंह टेढी होठ जीभ काढे ॥२ ॥ गर्ज्यो तिहुं लोक अरु भूमि कंपन भयो लात मारी सोई खंभ फाटे ॥ धधुकि भाजत लोग बाट नहि पावही मेह आंधि चढी आंख आंटे ॥३ ॥ हिरण्यकश्यप करि डार लियो गोदमें नखनसों उदरको चीर डार्यो ॥ पर्यो हाहाकार ब्रह्मा शिव सुर डरें कर्यो मन सोच यह रूप

न्यारो ॥४॥ देखि कमला लया चकित ठाडी भई सुनो प्रह्लाद अब तुम सिधारो ॥ विकट आनन्द न लगत जीभ पलपल करे कियो हु या रूप को क्रोध टारो ॥५॥ जायप्रह्लाद कर जोड ठाडे रहे बिनति बहु बिध करी करी बडाई ॥ सुनतही देखके क्रोध दीनों डार कछुक मुसकाय करि भुज उठाई ॥६॥ टेरि उत्संगमें लई चाटत अंग भक्तवत्सल अभयहस्त दीने ॥ देव सब स्तुति करे रमा आई पास पुष्पकी वृष्टि गंधर्व कीने ॥७॥ भक्तको भीर जब जब परे आइके तबें तब आप अवतार लीने ॥ कर जोरके द्वारकेस वंदन करे नरसिंहरूप यह आज चीन्हें ॥८॥

□ राग हमीर □ (१२) खंभ बिडारी निकसे जब नरहरि ॥ तबही हिरण्यकश्यप को लेके डार्यो फार उदरको नख धरी ॥१॥ ब्रह्मा बरतें यह बपु धार्यो देखतही सब भाज गये डरी ॥ टेर अभयपद दे प्रह्लादको माधव शुक्ल समय संध्या करी ॥२॥ नंद जयन्ती मानी देवकों अमृत पंच न्हवावत ॥ झालर घंटा संखधुनि सुनके घरघरतें व्रजरत्न आवत ॥३॥ यह बिलास देखत चपलनेनसों नेह अधिक उपजावत ॥ द्वारकेस प्रभु बंक हु गति करि भक्त हेत यह बिध समझावत ॥४॥

□ राग हमीर □ (१३) कहां पढ्यो प्रहलाद ललारे ॥ पूछत तात वचन एक मानो तोसों सकल कोटि पचहारे ॥१॥ जो कछु पढावत पांडेसों मोपें पढ्यो न जाय पितारे ॥ मेरे हृदे नाम नरहरिको कोटि करो तो हुं टरत न टारे ॥२॥ तबही क्रोध भयो हिरनावांस पायक सब जु काय हंकारे ॥ बांधो इनही त्रास दीखायो कहां हे इनके राम रखवारे ॥३॥ अतिही त्रास भयो बालक जिय तब श्रीपति रघुनाथ संभारे ॥ सूरदास प्रभु निकस खंभतें हिरनकश्यप नख उदर बिदारे ॥४॥

गंगा दसमी के पद (जेठ सुदि १ से जेठ सुद १० तक)

□ राग बिभास □ (१) श्रीगंगा जगतारण को आई ॥ भगीरथ तपस्या कीनी शिवले सीस चढाई ॥१॥ पापी दुष्ट अजामिल गणिका पतित परम

गति पाई ॥ परम पुनीत प्रीत ब्रह्मादिक वेदव्यास मिल गाई ॥२ ॥ नाम लेत तुम ध्यान धरतहें तारत वार न लाई ॥ विप्र गदाधर भारद्वाज कुल केवल गंगा सहाई ॥३ ॥

□ राग बिभास □ (२) जे जन गंगा गंगा कहे ॥ जन्म जन्मके कोटिक दुष्कृत छिनहीं मांझ दहे ॥१ ॥ स्नान करत तें मन वांछित फल ततछिन सर्व लहे ॥ व्रजपतिकी प्यारी संगमते बहुसुख देन चहे ॥२ ॥

□ राग बिभास □ (३) परमेश्वरी देवमुनि वंदत पावन देवी गंगे ॥ पावन चरण कमल नखरंजित सीतलबाहु तरंगे ॥१ ॥ मज्जनपान करत जे प्राणी त्रिविध ताप दुःख भंगे ॥ तीरथ राजप्रयाग प्रगटभयो जब यमुना वेणी संगे ॥२ ॥ भगीरथकुल सगरोत्तारण वालमीक यशगायो ॥ तुवप्रतरपहरि भक्ति प्रेमरस जन परमानंद पायो ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (४) आगे आगे भाज्यो जात भगीरथ को रथ पाछें पाछें आवत रंग भरी गंग ॥ झलमलात अति उज्ज्वल जल ज्योति अब निरखत मानों सीस भर मोतिन मंग ॥१ ॥ जहां परेहैं भूप कबके भस्म रूप ठौर ठौर जाग उठे होत सलिल संग ॥ 'नंददास' मानो अग्निके यंत्र छूटे ऐसे सुरपुर चले धरे दिव्य अंग ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (५) गंगा पतितन कोसुखदेनी ॥ सेवाकरभगीरथ लाये पापकाटनको पैनी ॥१ ॥ सकल ब्रह्मांड फोरकेआवत चलत चाल गजगयनी ॥ परमानंद प्रभुचरण परसतें भई कमलदल नयनी ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (६) गंगा तीन लोक उद्धारक ॥ ब्रह्म कमंडलतें तुम निकसी सकलविश्वकी तारक ॥ दरसन परसन पानकिये तें तुम कीने जीव कृतारथ ॥ परमानंद स्वामी को संगम आपुन भई सुखारथ ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (७) गंगापावन नीर बहत ॥ तार लेत पातकी यों कहत नित्य प्रति हरि जूके चरण रहत ॥१ ॥ सकल सिद्धि यमुना जू के संगम करत सबन को दीनसहत ॥ रसिक करत तुम सों बिनती मोहि दीजे

दरस याते हरिपद चहत ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (८) जय जय श्रीयमुना आनंद कंदिनी ॥ दरशपरश त्रिविध ताप जात दुःख निकंदिनी ॥१ ॥ अंगअंग छबितरंग शोभा सिंधुनी ॥ ताहीके अघ कुठार जाकें वंदिनी ॥२ ॥ अक्षय आनंद गोविंद अगम गामिनी ॥ हरिदास तट निवास जन्म जन्मनी ॥ ३ ॥

□ राग बिलावल □ (९) श्री गंगा तै त्रिभुवन जस छायो ॥ सगर वंस तारन के कारन भगीरथ लै आयो ॥१ ॥ जटा संकरी मात जान्हवी परसत पाप नसायो ॥ महा मलीन पापी अपराधी सौं वैकुंठ पठायो ॥२ ॥ जै जै कार करत सुर नर मुनि भागि अपुने आयो ॥ 'कृष्णदास' सुर सुरी महातम बेद पुरानन गायो ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१०) जे जन गंगा गंगा रटे ॥ पातक कोटिक जनम जनम के ततक्षन मांझ कटे ॥१ ॥ मंजन किये होत तन निरमल आवागमन मिटे ॥ 'परमानँद' जल पान कीये तें बसे श्री जमुना तटे ॥२ ॥

□ राग बिभास □ (११) जय भगीरथ नंदनी मुनि चय चकोर चंदनी नर नाग विबुध वंदनी जय जन्हु बालिका ॥ विष्णुपद सरोज जासी ईस सीस पर विभासि त्रिपथ गाथ पुण्य पाथ पाप छालिका ॥१ ॥ विमल विपुल वहसि वारि सीतल त्रै ताप हारि ॥ भँवर बर बिभंग तरन रंग मालिका ॥ निज जन पूजोपहार सोभित शशि धवल धार भंजन भव भार भक्त कल्प थालिका ॥२ ॥ निज तर वासी विहंग जलचर थिर पसु पतंग कीट जटित ताप शशिर सरस पालिका ॥ 'तुलसी' तव नीर सुमिरत रघुवंश बीर विचरति मति मेहे गेह महिष कालिका ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१२) नमो देवी गंगे नमो मात गंगे हर सीरसी निखिल मघ मलकनंदे ॥ध्रु० ॥ मधु मथन मूर्तिवर बिंदु कर कामकं बहसि बहुवार सतरंगे ॥ हरिचरण नख भीधुर गजदंत निर्गता ब्रह्म जल कृत पात्र संगे ॥ नमो देवी गंगे ॥१ ॥ त्वमसि जलपावनी चतुरुदधि गामिनी सप्त

ऋषि सुकृत कुल साले ॥ कनक गिरिलंबिता सकल मुनिवंदिता हर मुकुट सित कुसुम माले ॥ नमो देवी गंगे ॥२ ॥ पावयति नागरं पूरयति सागरं संगता विदुर्गिरि पादे ॥ तीर्थवर कारिणी स्वर्ग जो उधारिणी हेम शैल पाषाण भेदे ॥ नमो देवी गंगे ॥३ ॥ इह निखिल सुरगणै रिह निखिल मुनीजनै रिह निखिल वेद समुचारे ॥ सुयश गीयसे पीयसे जहनु मणीकर्णिके देवी संसार सारे ॥ नमो देवी गंगे ॥४ ॥ गलुष जल मीष्टतं सत मेघतो फलं तव कर मकर गंभीरतोये ॥ तट निकट सिंधुरसी परलोक बंधुरसी सुरसदन साधनोपाये ॥ नमो देवी गंगे ॥५ ॥ कृत सलील नीरधुता पुलीन मुपकुर्विता तव नाम निर्मला लापे ॥ नीरयति बाधके निर्वाणपद साधके भक्तजन दहती संतापे ॥ नमो देवी गंगे ॥६ ॥ सगर सुत संगमे लसदमर सुंदरी दुती के दुष्कृत दुरापे ॥ सेविता चिन्तिता तर्पितावगाहिता मर्जिता मम हरसि पापे ॥ नमो देवी गंगे ॥७ ॥ इति राम लक्ष्मणौ कौशीको नुज्ञया सुर सुरीत कृत नमस्कारे ॥ वदति मतिसागरे धीर जयदेव कविस्तारयसि भव जलधि पारे ॥ नमो देवी गंगे ॥८ ॥

स्नान यात्रा के पद (ज्येष्ठ सुदि १५)

□ राग काफी □ (१) नमो देवी यमुने नमो देवी यमुने हर कृष्ण मिलनांतरायं ॥ निजनाथ मार्ग दायिनि कुमारी काम पूरिके कुरु भक्तिरायं ॥ध्रु. ॥ मधुपकुल कलित कमलावलीव्यप देश धारित्त श्रीकृष्ण युत भक्त हृदये ॥ सततमति शयित हरिभावना जाततत्सारूप्य गदित हृदये ॥१ ॥ निजकूल भव विविध तरु कुसुमयुत नीर शोभया विलसदलि वृन्दे ॥ स्मारयसि गोपीवृन्द पूजित सरसमीशव पुरानंद कंदे ॥२ ॥ उपरिवलदमल कमला रुणद्युतिरेणु परिमलित जल भटेणामुना ॥ व्रज युवति कुचकुंभ कुंकुमारुणमुरः स्मारयसिमार पितुर धुना ॥३ ॥ अधिरजनि हरि विहतिभीक्षितुं कुवलयाभिधसुभग नयनान्युशति तनुषे ॥ नयनयुगमल्पमिति बहुतराणि च तानि रसिक तानिधि तयाकुरुषे ॥४ ॥

रजनिजा गरज नितं राग रंजित नयन पंकजै रहनि हरिमीक्षसे ॥ मकरंद भव मिषेणा नंदपूरिता सततमिह हर्षाश्रुमुंचसे ॥५ ॥ तटगतानेकशुक सारिका मुनिगण स्तुत विविध गुण सीधु सागरे ॥ संगता सततमिह भक्तजन तापहृति राजसे रासरस सागरे ॥६ ॥ रतिभर श्रमजलोदित कमल परिमल व्रजयुवतिजन विहृति मोदे ॥ ताटंकचलन सुनिरस्त संगीतयुत मद मुदित मधुपकृत विनोदे ॥७ ॥ निज व्रजजनावनायत्त गोवर्धने राधिका हृदयगतकर कमले ॥ रतिमतिशयित रस विठ्ठलस्याशु कुरुवेणु निनदाव्हन सरले ॥८ ॥

□ राग बिलावल □ (२) नंदको मनवांछित दिन आयो ॥ फुलीफिरत यशोदा रोहिनी उरआनंद न समायो ॥१ ॥ गाम गामतें जाति बुलाई मोतिन चोक पुरायो ॥ व्रजवनिता सब मंगल गावत बाजत घोष बधायो ॥२ ॥ प्रथम रात्रि यमुनाजल घटभरि अधिवासन करवायो ॥ उठि प्रभात कंचन चोकीधरि तापरलाल बेठायो ॥३ ॥ राजबेठ अभिषेक करतहें विप्रन वेद पढायो ॥ जेष्ट शुक्ल पून्यो दिन सुरबधु हरखि फूल वरखायो ॥४ ॥ रंगी कोर धोती उपरेना आभूषण सब साज ॥ द्वारकेश आनंद भयो प्रभु नाम धर्यो व्रजराज ॥५ ॥

□ राग बिलावल □ (३) मंगलजेष्ठ जेष्ठा पून्यो करत स्नान गोवर्धनधारी ॥ दधि ओर दूब मधुले सखीरी केसरघट जल डारत प्यारी ॥१ ॥ चोवा चंदन मृगमद सौरभ सरस सुगंध कपूरन न्यारी ॥ अरगजा अंगअंग प्रति लेपन कालिंदी मध्य केलि विहारी ॥२ ॥ सखियन यूथयूथ मिलि छिरकत गावत तान तरंगन भारी ॥ केसो किशोर सकल सुखदाता श्रीवल्लभ नंदनकी बलहारी ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (४) जमुना जल क्रीडत नंद नँदन ॥ गोपी वृंद मनोहर चहूँदिस मधि अरिष्ट निकंदन ॥१ ॥ छिरकति पान परसपर सोभित सिथिल होति भूज चंदन ॥ जनु जुवति पूजति अहि पति कौं लग्यों अंग पें

वंदन ॥ कुटिल सुकचि सुदेस अंबुकन चूँबत अग्र अति मंदन ॥ जनु गंडूक कवल रस मुख भरि डारत अलि आनंदन ॥ दूरि भरि अंक अगाधि चलत लै जनु लुब्धक खग फंदन ॥ 'सूर स्याम' श्रीपति के गुन कों गावत हैं श्रुति छंदन ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (५) यमुना देवी कोन भलाई ॥ नाम रूप गुन लहरि जू को न्यारी अपनी चाल चलाई ॥१ ॥ उजर देस कीयो भ्राता को तुम परसत उत कोउ न जाई ॥ जे तन तज तेरे तट तात तरुन पर गेल चलाई ॥२ ॥ मुग्ध वधूं कु करे दूतपनो अधम नरु कों आनि मिलाई ॥ आपुन स्याम आन उजल करी तात तपति निज सीतल ताई ॥३ ॥ जल कों छल करी अनल अधम कुं पहे सुनि कें कोऊ न पत्याई ॥ यद्यपि पछिपात पतितन को तदपी 'गदाधर' पीय मन भाई ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (६) विहरत जल जमुना रस भीने ॥ मानौ मत्त गज राज परसपर करीनी जुथ संग लीनें ॥१ ॥ तिन में वृषभानु दुलारी नील सुरंग पट झीनें ॥ राजत रास रमन द्विज दंपति मोहित कर बस कीनें ॥२ ॥ उभय वदन पर जल कनिक मानौं, जलज सरस छबि छीनें ॥ 'सूर' आरज हित अवलोकत मोहित सजनी प्रेम धन दीनें ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (७) विहरत नारि हँसत नंद नँदन ॥ आंक में भरि भरि लेत आनंदन ॥१ ॥ निरमल देह छूटत तन चंदन ॥ अति सोभा त्रिभुवन जन वंदन ॥२ ॥ कंठन पीठि नारि अरु सोभा ॥ वे उनको वे उन को गोभा ॥३ ॥ वह अंक में भरि चलत अगाध हि ॥ अरसपरस मेटत से मन साध हि ॥४ ॥ कोऊ भजे कोऊ पाछें धावें ॥ जुवतिन सों कहि ताहि मगावें ॥५ ॥ ताको गहि अथाह जल डारें ॥ सुख व्यास लता रूप निहारें ॥६ ॥ कंठ लगाय लेत पुनि ताही ॥ देत आलिंगन रीझि जाही ॥७ ॥ 'सूर स्याम' व्रज जुवतीन भोगी ॥ जाकों धावत सिव मुनि जोगी ॥

□ राग बिलावल □ (८) जेठ मास पून्यों ऊजियारी करत स्नान श्री गोवरधनधारी ॥ सीतल जल घट हाटक भरि भरि रजनी अधिवासन सुखकारी ॥१ ॥ विविध सुगंध बहुत पोहोपले तुलसी दल दै सरस सवारी ॥ कर ले संख न्हवावत प्रभु को श्री विट्ठल प्रभु की बलिहारी ॥२ ॥ तैसेइ निगम पढत द्विज आगै तेसीये गान करत व्रजनारी ॥ जै जै सब्द होत चहूँ दिस तें सुरपति करत कुसुम बरषारी ॥३ ॥ करि सिंगार परम रुचिकारी सीतल भोग धर्‌यो भरि थारी ॥ दे बीरा आरति करत है । 'गोविन्द' तहाँ तन मन सब वारी ॥४ ॥

□ राग बिलावल □ (९) जल क्रीडा सुख अति उपजायो ॥ रास रंग मन तें नहि भुलत उहे भेद मन आयो ॥१ ॥ जुवती जन कर जोरि मंडली स्याम नागरी बीच ॥ चंदन अंग कुँमकुमा छूटत जल मिल तट भई कीच ॥२ ॥ जो सुख स्याम करत जुवतीन संग सो सुख तिहुंपुर नाहि ॥ 'सूर स्याम' देखे नारिन को रिझि रिझि लपटाई ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (१०) विहरत है जमुना जल स्याम ॥ राजत है दोऊ बांहा जोरि दंपति ओर व्रज वाम ॥१ ॥ कोऊ ठाढी जल जानु जंघलों कोउ कटि हृदय ग्रीव ॥ यह सुख बरनि सके एसो को सुंदरता की सीव ॥२ ॥ स्याम अंग चंदन की आभा नागरि केसर रंग ॥ मलयज पंक कुँमकुम मिलि के जल जमुना इक रंग ॥३ ॥ निस स्त्रम मिट्‌यो तन आलस परिहार जमुना भई पावन ॥ 'सूर' स्त्रम जल मध्य जुवतीगन जन के मन भावन ॥४ ॥

□ राग रामकली □ (११) यमुनाजल क्रीडतहें घनश्याम ॥ दक्षिणभाग चपल चंद्रावलि राधे राजत वाम ॥१ ॥ अपने अपने यूथन ठाडीं खेलत छिरकत भाम ॥ गजवर ज्यों सोहत मनमोहन दिवस न जानत जाम ॥२ ॥ बेनी उलटि वदन पर आवत लपटी चंपकदाम ॥ कनक जंजीर गयंद मदनकी झूमत हेत सकाम ॥३ ॥ इहिविधि ग्रीषमकी ऋतु मानत द्योस

परत्तहे घाम ॥ द्वारिकेश प्रभु कह्यो सबनसों चलो आपने धाम ॥४ ॥
□ राग रामकली □ (१२) नमो देवि जमुने मन बचन कर्म करुं सरन तेरी ॥ सकल सुख कारनी भव सिधु तारनी दरसने कटत है कर्म बेरी ॥१ ॥ अभै पद दायिनी भक्त मन दायिनी करि कृपा पूरिये साध मेरी ॥ दीजिये भक्ति पद लाल गिरिधरन की काटिये विषै 'कृष्णदास' केरी ॥२ ॥
□ राग टोडी □ (१३) श्यामाश्याम सुखद यमुनाजल निर्भय करत बिहार ॥ श्वेतकमल इन्दीवर पर मानो भोरही भईहे निहार ॥१ ॥ श्रीराधाकर अंबुज भरभर छिरकत वारंवार ॥ अतसी कुसुम कलेवर बूंदे प्रतिबिंबित मानो नार ॥२ ॥ कनक लता मरकत रंध्रनपर मेलत चित्र प्रकार ॥ जोतिष चक्र गगन पर डोलत सखी सब करत विचार ॥३ ॥ जाय गहत वृषभान नंदिनी मोहत सब संसार ॥ विधुत जलद सूरमुनि बिधुमिल श्रवत सुधाकी धार ॥४ ॥
□ राग टोडी □ (१४) करत गोपाल यमुनाजल क्रीडा ॥ सुरनर असुर थकित भये देखत बिसरगई तनमनजीय पीडा ॥१ ॥ मृगमद तिलक कुंकुमा चंदन अगर कपूर वास बहुभुरकन ॥ कुचयुग मग्नरसिक नन्दनन्दन कमल पाणि परस्पर छिरकन ॥२ ॥ निर्मल शरद कला कृत शोभा बरखत स्वांति बूंदजल मोती ॥ परमानन्द कंचन मणि गोपी मरकतमणि गोविंद मुख जोती ॥३ ॥
□ राग टोडी □ (१५) यमुनाजल गिरिधर करत विहार ॥ आसपास युवती मिलि छिरकत हंसत कमल मुखचार ॥१ ॥ काहुकी कंचुकी बंदटूटे काहूके टूटेहार ॥ काहुके वसन पलट मनमोहन काहु अंग न संभार ॥२ ॥ काहुकी खुभी काहुकी नकबेसर काहुके विथुरेवार ॥ सुरदास प्रभु कहांलो वरनों लीला अगम अपार ॥३ ॥
□ राग टोडी □ (१६) जेष्ट मास सुदि पुन्यो शुभदिन करत स्नान श्रीगोवर्धनधारी ॥ शीतल जल हाटकघट भरि भरि रजनी अधिवासन

सुखकारी ॥१ ॥ विविध सुगंध पोहोपकी माला तुलसीदलदे सरस संवारी ॥ कर ले शंख न्हवावत हरिकों श्रीविट्ठल प्रभुकी बलिहारी ॥२ ॥ तेसेई निगम पढत द्विज आगें तेसोई गान करत व्रजनारी ॥ जेजे शब्द चार्योदिश व्हेरह्यो यहबिधि सुख वरखत अतिभारी ॥३ ॥ करि सिंगार परम रुचिकारी शीतलभोग धरत भर थारी ॥ दे बीरा आरती उतारत गोविंद तन मन धन दे वारी ॥४ ॥

□ राग टोडी □ (१७) लालकों छिरकतहें व्रजवाल ॥ यमुनाजल उछलित चहुंदिशतें हँसत हँसावत ग्वाल ॥१ ॥ बांहजोटी फिरत परस्पर पीत कमल मणिमाल ॥ परमानंद प्रभु तुम चिरजीयो नंदगोपके लाल ॥२ ॥

□ राग टोडी □ (१८) पूरणमास पूरणतिथि श्रीगिरिधर करत स्नान मनभायो ॥ अति आनंदसों न्हवावत श्रीविट्ठल ज्योंविधि बेद बतायो ॥१ ॥ उत्तम ज्येष्ठ ज्येष्ठा नक्षत्र होत अभिषेक भक्तन मनभायो ॥ परमानंद लाल गिरिवरधर अति उदार दरशायो ॥२ ॥

□ राग टोडी □ (१९) यमुनाजल घट भर चली चंद्रावलि नारि ॥ मारगमें खेलत मिले घनश्याम मुरारि ॥१ ॥ नयनसों नयनामिले मन रह्यो लुभाई ॥ मोहन मूरति मनवसी पगधर्यो न जाई ॥२ ॥ तबकी प्रीति प्रकट भई यह पहिलीभेंट ॥ परमानंद ऐसी मिली जेसें गुडमेंचेंट ॥३ ॥

□ राग टोडी □ (२०) मोहि मिलन भावे बलवीर की ॥ शरद निसा पूरन शशि निरमल खेलन यमुना नीर की ॥१ ॥ हरि हमकों हम हरिकों छिरकें पैसद फेलन नीरकी ॥ हंसकर खेंच लेत ओंडे जल अंक मालभुज भीरकी ॥२ ॥ जलतें निकसी होत जब ठाडे निरखि अंगोछनि चीरकी ॥ परमानंद स्वामी रतिनागर बलि बलि श्याम शरीरकी ॥३ ॥

□ राग टोडी □ (२१) जमुनाजल क्रीडत नंदनंदन ॥ गोपी वृन्द मनोहर चहुंदिश मध्य अरिष्ट निकंदन ॥१ ॥ छिरकत पानि परस्पर शोभित शिथिल होत भुजबन्धन ॥ जनु युवती पूजत अहिपतिकों लग्यों अंगअंगपें चन्दन ॥२ ॥ कुटिल केश सुदेश अंबुकन चूवत अग्र मतिमंदन ॥ जनु

गंडूक कमल रस मुखभरि डारत अलि आनन्दन ॥३ ॥ दुरि मुरि अंस अगाध चलत ले जनु लुब्धक खग फंदन ॥ सूरश्याम श्रीपतिके गुनकों गावत हें श्रुति छंदन ॥४ ॥

□ राग टोडी □ (२२) क्रीडत कालिंदी जल मांहीं ॥ नवसातसाज सिंगार कीये तहां श्रीराधा गलबाहीं ॥१ ॥ आसपास शोभित व्रज बनिता मधि राधा नन्दलाल ॥ जल सीकर डारत चहुंदिशतें मुदित निरख गोपाल ॥२ ॥ आनंद मगन भये सब खेलत करत कुलाहल भारी ॥ गोविंद प्रभुकी यह लीला निरख निरख बलिहारी ॥३ ॥

□ राग टोडी □ (२३) राधे छिरकत छींट छबीली ॥ ऊँचेकुच कंचुकी बंद छूटे लटकि रही लटकीली ॥१ ॥ बदनचन्द्र ताटंक कनकमय रतनजटित मनिनीली ॥ मत्तगयंद गति राजत कटिपर सोहत किंकिनी ढीली ॥२ ॥ मच्यो खेल यमुना जल अन्तर प्रेममुदित रस झीली ॥ नन्द सुवन भुज ग्रीव बिराजत भाग सुहाग भरीली ॥३ ॥

□ राग टोडी □ (२४) गोविंद छिरकत छींट अनूप ॥ इत वृषभान नन्दिनी सोहत उत घनश्याम सरूप ॥१ ॥ पावन जल यमुनाको निरमल करत बिविध बिधि केलि ॥ सजल सुमन शोभित अंगनमें उडत तरंगन रेलि ॥२ ॥ कीने सबे गोवरधनधारी बेद शृंखला पेलि ॥ गोविंद प्रभु आनन्द सिंधुमें रहे मगनमन झेलि ॥३ ॥

□ राग हमीर □ (२५) मुग्धा तू कित करत विलंबु ॥ तोलों जाय क्यों न घर अपने भरि घट यमुना अम्बु ॥१ ॥ जो लों नाहि धरत हरि मुरली मोहन मंत्र अधर अवलंबु ॥ सुधिकर देख तुही व्रजपति जब बैठे बिटप कदंबु ॥२ ॥

□ राग कल्याण □ (२६) आज बजाई मुरली मनोहर सुधि न रही री कछु मो तन मन में ॥ हो जल जमुना भरन जात ही सो वे कान्ह ठाढे श्रीवृंदावन में ॥१ ॥ मोर मुकुट माथे अति राजत कनक कुंडल सोहत कानन में ॥ 'ब्रह्मदास' प्रभु मोहि लई हो गावत राग सुरन में ॥२ ॥

□ राग कल्याण □ (२७) चारु नट भेख धर बैठे गोविंद जहां सघन गहवर नव निकुंज भवने। नागरी जबहि नेनासों नेना मिले तबही नागर मुदित बिपिन गवने ॥१ ॥ रसिक नंद सुत सुहस्त सज्जा रची विविध गत्त विविध पट फूल छबने। हंसजा तट निकट बिमल जल बहत तहां सुखद सीखंड चल मलय पवने ॥२ ॥ दास कुम्भन प्रभु सुजान तव मिलनकों बहुत आतुर निमिख जुग बीत बने। जोवत पथ एक टीक लाल सुकुमार सखी गोवरधन धरन अखिल जुवति रवने ॥३ ॥

खंडिता के पद ज्येष्ठ वदि १ से आषाढ़ सुदि १ (सुहा-बिलावल)

□ राग सुहा □ (१) आज हों अधिक हँसी री माई ॥ काम विवस मों सौं रति बाढी अवलोकत समझाई ॥ १ ॥ रवि ससि कौंति भई जू सखी री कांच भवन में माई ॥ विस्मय भयो प्रतिबिंब बिंब सौं अंक भरे जदुराई ॥२ ॥ कर अंचल मुख मुंद रही हों ठाढी ही इक ठांई ॥ 'सूरदास' प्रभु निश्चय जानी तब ही उर लपटाई ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (२) आये सुरत रंग रसमाते ॥ मानौं विश्राम निमित पिय पाये श्रमित भरे हो ताते ॥१ ॥ डगमगात मग धरत परत पग उठतम बेगि तहाँ तें ॥ मानौं गज मत्त चरन चंकारि करि गहि आनत तिहि ठांते ॥२ ॥ उर नख छत्त कंकन छत्त पाछें सोभित है पहिराते ॥ मदन सूभट के बान लाग मानौं निकसि गये इहि घातें ॥३ ॥ साँचे करत आपने बोलनि टरत न मरजादा तें ॥ 'सूर स्याम' कहि गये आई है पग धारे तिहि नातें ॥४ ॥

□ राग सुहा □ (३) आवत बाबा नंद कों हाथी ॥ बाहु बिसाल कमल दल लोचन संकरषन कों साथी ॥१ ॥ अपनी इच्छा रहत व्रज भीतर गायन के संग खेले ॥ केसि तृणावर्त कों मार्‍यों सकट पूतना पेले ॥२ ॥ श्रीवसुदेव देवकी नँदन कंस वंसकों काले ॥ 'परमानँद' दास कों ठाकुर नायक नंद कों लाले ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (४) उपरना वाहि के जू रह्यों। जाहि के उर बसे स्याम घन निस को जो सुख रह्यों ॥१ ॥ छबि तरंग अंग अंग दृग भेद न जात कह्यों ॥ 'नंददास' प्रभु चले सेन दे जब दावन दोर गह्यों ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (५) कहां लों अलकें देहो ओट॥ चंचल चपल सुरंग छबीलो आनि बन्यों मृग जोट ॥१ ॥ खंजन कमल मीन अति लाजत उपमा दीजे कोट॥ 'सूरदास' प्रभु कहां लो बरनो नाहि न रूप की टोट ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (६) किसोरी अंग अंग भेटी स्याम ही॥ कृष्ण तमाल तरल भुज साखा लटकि मिलि जैसे दामि दाम हि ॥१ ॥ अरज इक लता गिरि उपजे सो दीने करुना महि॥ कछुक स्यामल गिरि की छायो कनक अगामही ॥२ ॥ गिरिवरधरन सुरत रति नायक रति जीतें संग्राम हि॥ 'सूर' कहे यह उभय सुभट बीच क्यों जू बसे रिपु काम ही ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (७) कोउ मेरे आंगन व्हे जू गयो ॥ जगमग जोत वदन की सोभा सपनों सों जू भयो ॥१ ॥ हों दधि मथन सुनि भोर ही सजनी लेन जू गई मथानी ॥ कमलनैंन की नांई चितवत यह मूरति में जानी ॥२ ॥ विथकित भई चरन गति याकी बहोत खेद में पायो ॥ 'परमानँद' प्रभु चरन सरन गति रहतो कित हे आयो ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (८) चलो सखी सोतन के घर जैए॥ मान घटे तो कहा घटे तेरो पीय के दरसन पैए॥१ ॥ इह जोबन अंजली को पानी समय गये पछितैए॥ 'धोंधी' के प्रभु रस बस कर लीये तन की तपत बुजैए॥२ ॥

□ राग सुहा □ (९) जैये वा के धाम जाके जागे चारो जाम लाल॥ मोसों अवध वदि वहीं रति मानी जानी उवटी है उर माल ॥१ ॥ दिखियतु हे नख क्षत अंग अंग में अधर अंजन पीक गाल॥ मदन मोह पीय क्यों व दूरत हो लटकि रही जो पाग अर्धभाल ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (१०) जानति हों जैसे गुनन भरे॥ काहे को दुराव करत हो बलि जांउ सोई व कहो काके जू ढरे ॥१ ॥ निस के उनी दे नैंन अरुन दोऊ आलस बस सब अंग भरे॥ चंदन तिलक मिट्यों काहू वंदन स्याम

सुभग तन नख उघरे ॥२ ॥ अब तुम कुटिल किसोर नंद सुत कोन कोन के मन जु हरे ॥ अब एते पर समझ 'सूर' प्रभु सोंह करन कों होत खरे ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (११) नागरि नागर करति बिहार ॥ काम नृपति सेना अंग दोऊ सोभा वार न पार ॥१ ॥ अधर अधर नैंन नैंन मधु जँभात कीयो इक ठोर ॥ मानौं इंदी वर कमल कुसेसय चारु भँवर रंग ओर ॥२ ॥ वंदन भाल विन सम दोऊ अरस परस वर नारि ॥ मानौं विविध चंद चकोर परस पर कमल अमल रवि धार ॥३ ॥ रति आगम हित अति उपजायो पीय प्यारी मन एक ॥ 'सूरदास' स्वामी स्वामिनि मिलि कोक कला अनेक ॥४ ॥

□ राग सुहा □ (१२) नागर स्याम नांगरि नारि ॥ सुरति रति रनजीत दोऊ अंग मनमथ धारी ॥१ ॥ स्याम तनु घन नील मानो तडित तनु सुकुमारि ॥ मानो मरकत कनक संजुत खच्यो काम समार ॥२ ॥ कोक गुन करि कुसल स्यामा उत कुसल नंदलाल ॥ 'सूर स्याम' अनंग नायक विबस कीनी बाल ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (१३) नाहिन दूरत नैंना रतनारे ॥ मानौं बंधुप कुसुम पर सोभित सुंदर स्याम सिलीमुख तारे ॥१ ॥ कुटिल अलक रही विथुरि वदन पर सकुच हित हरि निरस निहारे ॥ भ्रोंह सिथिल मानौं मदन धनुष गुन गरे कोकनद बान विसारे ॥२ ॥ मूंदेई आवत नैंन आलस रस बस छीन भये उघरत न उघारे ॥ 'सूरदास' प्रभु सोईं करो तुम भामिनी जिहि रतिरन हारे ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (१४) बने हो रसमसे आए प्रात ॥ प्यारी नख पद रत्नावली रस रंजित नवरंग गात ॥१ ॥ मुख रेखा मोहन जुवतिन मन प्रमुदित पुलकि जँभात ॥ 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर चंचल जे तरवर के पात ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (१५) बरस उघर गयो मेहा टपकत पाँति द्रुम बेलि ॥ झमकत झार नीर भरे बूंदन सोभा देख सहेली ॥१ ॥ हों जू मनावत तूं नही

मानत प्रकटी प्रीत नवेली ।। 'तानसेन' के प्रभु रस बस कर लीनें यातें तुम गर्व गहेली ।।२ ।।

□ राग सुहा □ (१६) रति संग्राम वीर रस माते ।। हो हरि सूर सिरोमनि अज हूं न संभारत तातें ।।१ ।। आनि ही बरन भये दोऊ लोचन आपुन सहज बनातें ।। मानौं भीर भई जोधन की भये क्रोध अति राते ।।२ ।। परिमल लुब्ध मधुप जहाँ बैठत उडि न सकत तिंहिं ठां तें ।। मानौं मदन के हे सर फावे फोक वा राधा तें ।।३ ।। बैठि जात अलसात उनी दे क्रम क्रम उठत तहाँ ते ।। मानहूं मूरछा कटाच्छ नाट सर कटि न सकत हियरा तें ।।४ ।। डगमगात घूमत मानौं घाइल सोभा सूमर कला तें ।। 'सूरदास' प्रभु रति रन जीतें अब संकात धोका तें ।।५ ।।

□ राग सुहा □ (१७) रस लम्पट भोगी भँवरा रे तोहि कहू न अघाय ।। निस दिन भ्रमित फिरत बन बेली वासर तोहि मुखाय ।।१ ।। जो कोई मधुप तौ अमल कमल मन को सुरताई ।। जगन्नाथ कवि राय के प्रभु सों मनमथ सौं अरुझाई ।।२ ।।

□ राग सुहा □ (१८) वायस तेरी सोने चोंच मढाऊं ।। सगुन बिचार प्रान प्यारे को तब तोहि बहुत रिझाऊं ।।१ ।। फरकत भुजा नैंन रतनारे किधौं गाय सुनाऊं ।। 'मुरारीदास' प्रभु भोर भये सपनो सों भये जाग परे गुन गाऊं ।।२ ।।

□ राग सुहा □ (१९) जानी में आजु मिली प्यारे सौं अपनों भामतों हरि कीनों ।। सकल रेंनि रति रस भरे खेलत पलकु पल न लागन दीनों ।।१ ।। कंठ लगाईं भुज दे सिरहानें रसिक लालकों अधर रस पीयो ।। 'कुंभन दास' प्रभु गिरिधर पीयकों भर भेटिये दीयो हीयो ।।२ ।।

□ राग सुहा □ (२०) जैए वाके गेह जासों बढयों हे सनेह लाल ।। अवधि वदि इहाँ, रात रहे तहाँ, एसे भये हो बिहाल ।।१ ।। नख छत चिन्ह प्रकट दिखियतु है दाग अधर मिस गाल ।। 'रसिक' पीतम पीय जानत हो जिय क्यों व दूरत वह चाल ।।२ ।।

□ राग सुहा □ (२१) जैए वाके महल जहाँ सों कीनी है रस केलि ।। वाही

के तुम क्यों न सिधारो आवत भूले गेल ॥१ ॥ सिथिलित बसन अटपटे भूषन केसें दूराबत छेल ॥ पीतांबर कटि सिथिल 'रसिक' पीय जानौं उरझी द्रुम बेलि ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (२२) जैए वाही ठौर जहाँ के जागे नंदकिसोर ॥ सांज कहि गए आवेंगे तेरे आए निपट उठि भोर ॥१ ॥ लटपटी पाग अटपटे भूषन ओढे पीत पटोर ॥ पीक कपोल अधर मिस काजर अरुन भए दग डोर ॥२ ॥ आधे बचन कहत तुतराते चितवत जाकी ओर ॥ ताहि पें जू सिधारीए प्यारे, 'रसिक' राय सिर मोर ॥ ३ ॥

□ राग सुहा □ (२३) तेरे कच बिथुरे मानौं नव घन उदय आये दसन जोति दामिनि दरसाती ॥ ता पर भ्रोंह धनुष बूंद सूरत स्रम ही बरखत पानी ॥१ ॥ रोमावली किधौं हरित भूमि पर सुवन बनी तेसीय बोलत पिक बानी ॥ तापर रिझे 'तानसेन' के प्रभु अंग अंग सरसानी ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (२४) स्यामा स्याम आवत कुंज महेल तें रगमगे रगमगे ॥ लटपटी पाग सिथिल कटि किंकिनि अरुन नैंन चारों जाम जगे ॥१ ॥ सब सखी सुधराई गावत बीन बजावत सरस संगीत पगे ॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज विहारी की कटाच्छ पर कोटिक काम डिगे ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (२५) हरि मुख निरखत नैंन लुभाने ॥ ज्यों मधुकर रवी कमल कोस वस फिर हू तो न उडाने ॥१ ॥ कुंडल मकर कपोलनकी छबि जानो रेनि बीहाने ॥ दृग चंचलता देखत ही मानौ खंजन मीन लजाने ॥२ ॥ अरुन अधर द्युती वज्रपात मिलि नव घन रूप समाने ॥ 'सूरदास' यह स्याम पीत पट क्यों हूं न जात बखाने ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (२६) आवत स्याम तिया रस माते ॥ दोर जात संग कोई नाहि ज्यों गज मद झर चुचाते ॥१ ॥ कौन तिया के बचन बिधे हो कौन ही के घर जाते ॥ साँच बचन तुम कबहु न बोलत जुठी बनावत बातें ॥२ ॥ कुटिल कपटी लबार लालची चोर चतुर रंग राते ॥ 'धोंधी' के प्रभु जाऊ जहाँ तहाँ चंचल नैंन सुहाते ॥३ ॥

□ राग सुघराई □ (२७) नयना श्याम सदा संग माने। नैननरस बरखत उर अंतर तातें वे अधिकाने ॥१ ॥ देख देख थाकी सुघराई बहुनायक जो लुभाने। परमानंददास को ठाकुर श्री मुखतें जो बखाने ॥२ ॥

□ राग सुघराई □ (२८) आज सखी कुंजन फाग उड़ाऊं। प्रान प्रीतम अब हि मोहे मिलिहें तो मुख मिसरी भराऊं ॥१ ॥ ऐसी सुघर नार को व्रज में ताको नाम धराऊं। रसिक प्रीतम पिय मिलो मया कर सब तन ताप नसाऊं ॥२ ॥

□ राग सुघराई □ (२९) बने लाल रंग भरे नीके रहे तुम रजनी आज ॥ नेंन तो अरुन भये बैन तोतरात भले जु भले राजाधिराज ॥१ ॥ कोन कोऊ उपरना लाये अपनी तो छांड़ि आये सकुचत नाहिंन डारी सब लाज ॥ कल्यान के प्रभु गिरिधरन सज रही कीधों कहा कछु हम सों काज ॥२ ॥

□ राग सुघराई □ (३०) बोलत बैठे आम की डारी, नहीं जानत विरहिणी विवशता ॥ उडाय देओ कोकिला कारी, कुहू कुहू श्याम ही सोचत, शेष निशा दीनो दुःख भारी ॥१ ॥ अवध बन्धन खोजत मानत, बचनन कर पंचम सुर भारी ॥ तब नीकी लागे सुन सजनी, जब पाऊँ पिय निकुंज बिहारी ॥ कृष्णदास स्वामी सुख सागर, रसिकलाल श्रीगोवर्द्धन-धारी ॥२ ॥

□ राग सुघराई □ (३१) सुन सखी निठुर पपैया बोले ॥ पिहु पिहु कर पिय सूरत जनावे ॥ मेरो प्राण पात जिहुँ डोले ॥१ ॥ सूरत समुद्र में मेरो मन कर्कश, मदन वायु झकझौरे ॥ वाम भाग कोकिला पुकारे, सिथल सवित टकटोरे ॥२ ॥ मोहनलाल गोवर्द्धनधारी, पठ्यो कौन आवे तुम तोले ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर, दासी लेहो किन मोले ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (३२) बमना रे कह रे मुहूर्त्त, कब नंदनंदन पिय घर आवे ॥ निस दिन बैठी मारग देखूँ, को एकटक ऐसी बात सुनावे ॥१ ॥ तोको दूँगी इच्छा भोजन, जो तेरे जिय भावे ॥ रसिक प्रीतम बिन भई हौं

ब्याकुल, मोको क्यूँ न जिवावे ॥२ ॥

□ राग सुघराई □ (३३) फरकत वाम नैना प्यारी के ॥ आवन हार भए मनमोहन हर्षभये सब नरनारी के ॥१ ॥ कसमसात अंगिया बन्ध टूटत फरहरात अञ्चल सारी के ॥ लगि लगि श्रवण भ्रमर गुञ्जारत सगुन होत गिरधारी के ॥२ ॥ उडो काग आवे मनमोहन भाखत युवति वार वारी के ॥ देहो भात दूध सि पागरी जुर अञ्चल अपने फारी के ॥३ ॥ होत मगन मन प्रीत शकुन शुभ भयो प्रेम मद अधिकारी के ॥ रामदास दरस मिलवे तेई चातक गति घन कारी के ॥४ ॥

□ राग देवगंधार □ (३४) बिहरन बिहरत श्याम धनी ॥ नंदनंदन वृषभानु-नंदनी रति रस रीति ठनी ॥१ ॥ श्याम सरूप सन्यौ प्रिय तन में ज्यों घन तड़ित बनी ॥ 'कृष्णदास' गिरिधर रस-बस भए गुन गावत रजनी ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (३५) मेरे तनकी तपत बुझाई। बिदा भई ग्रीषम ऋतु आली अब बरखा ऋतु आई ॥१ ॥ जब मेरे गृह आवेंगे गिरिधर तब हों नीके करूंगी बधाई। नाना विधि के साज सिंगारौं बिरहनि पीर मिटाई ॥२ ॥ सुभ मंगल आज कुंज भवन में पोहोप सुवास सुगंध छवाई। 'चतुर्भुज' प्रभु मेरे भवन में पधारो वासों तन विसराई ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (३६) मुरली मन मोद बढावति। मीठे मधुरे बोल सुनावति याहीं तें मोहि भावति ॥१ ॥ राग रागिनी भेद दिखावत नेह नयो उपजावति। जैसी भाँवर मो मन भावति तैसी ताननि गावति ॥२ ॥ पसु पंछी तहाँ दोरे आवत सुधि बुधि सब बिसरावति। 'सूरदास' स्वामी बिरमावति चढि सुरभिन टेरि सुनावति ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (३७) कोनकी उपरनी ओढे आये साची कहो पीव मोसो ॥ लटपटी पाग अटपटे पेचन विन गुन माल हिये अधरन अंजन लाये ॥१ ॥ जानत जो कोनके पुराये जात हो छीपतन तोहे छिपाये ऐदी चतुराई जीन करो मोहन मोसो कोन त्रिया भरमाये ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (३८) झूमक सारी होतन गोरें। जगमग रह्यो जराव कोटीको छबि की उठत झकोरें ॥१ ॥ रत्नजटितके तरल तरोना मानों हो जातर बिभोरें ॥ दुलरी कंठ निरख नकबेसर पियदृग भये हैं चकोरें ॥२ ॥ मंदमंद पग धरत धरनी पर हँसत लसत चितचोरें ॥ स्यामदास प्रभु रसवस करलीने चपल नयन की कोरें ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (३९) मंद गजराज की सी चाल ॥ भुजवर दंड सूंड की शोभा हरलीनी नंदलाल ॥१ ॥ चलत कचकुंचित अनेक अकुंशसे लटकत भाल ॥ चमर चारु अवतंस मंजरी मदकण श्रमजल जाल ॥२ ॥ धातु विचित्र चित्रतन शोभा गलगल दांवनमाल ॥ मोरपच्छ फहरात बातवशजनु ढरकतहैं ढाल ॥३ ॥ कुलधर्म ढीहढाहत जेरदन कटाक्ष विशाल ॥ गंध अंध धावत अलीघेरे गुंजत मंजु रसाल ॥४ ॥ घनन घनन घंटिका रुणत कटि उपजत शब्द सुताल ॥ खनन खनन कल से नूपुर बाजत लजत मराल ॥५ ॥ युवती हदै सरस सरसी मेंजनों खेले बहुकाल ॥ मानों अंग अंग लपटाने उनके मन सिवाल ॥६ ॥ मुरलीरव गुंजार सुनतही कंपतचित व्रजबाल ॥ रिस रूसनो गदाधर योंहीं वनवेली बेहाल ॥७ ॥

□ राग सुहा □ (४०) कमल मुख देखत तृप्त न होय ॥ यह सुख कहा दुहागिन जाने रही निसा भरसोय ॥१ ॥ जों चकोर चाहत उडुराजे चंदवदन रही जोय ॥ नेक अकोर देत नहिं राधा चाहत पियहि निचोय ॥२ ॥ उनतो अपनों सर्वस्व दीनों एक प्राण वपुदोय ॥ भजन भेद न्यारो परमानंद जानत विरला कोय ॥३ ॥

□ राग सुहा □ (४१) कमलमुख देखत कौन अघाय ॥ सुनरी सखी लोचन अलिमेरे मुदित रहे अरुझाय ॥१ ॥ मुक्तामाल लाल उर ऊपर जन फूली बनराय ॥ गोवर्धन धर अंग अंग पर कृष्णदास बलजाय ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (४२) नई बात सब नई रीत सब नई देखियत हे पिय प्यारी ॥ नई हसन नई नेनन की फरकन नई बिलसत भई अचरा की फरकन न्यारी ॥१ ॥ नई चलन नई मूरत नई गत नई अंग सोहे सारी ॥

रसिक प्रीतम सों नई एक रति उपजी बरनत विमल विहारी ॥२ ॥

□ राग सुहा □ (४३) नैंन उनींदे भए रंग राते ॥ मानौ हों सुरंग सुमन पर सजनी भँमर भ्रमत मदमाते ॥१ ॥ प्रेम पराग पांखुरी फल दल प्रफुलित मदन लता तें ॥ सुभग सुवास बिसाल बिलोकन प्रकट प्रीति कर ताते ॥२ ॥ तैसे ई मंद मारुत गज भाँवर मुदित खुलत छबि यातें ॥ सिंचे 'सूर स्याम' रस नागर हीत कर केलि कला तें ॥३ ॥

गौड सारंग के पद (ज्येष्ठ वदि १ से आषाढ सुदि १)

□ राग सारंग □ (१) राधे तू अति रंगभरी में जानी मिली मोहनसों अंचल पीक परी ॥ छुटी लट छूटी नकबेसर मोतिन की दूलरी ॥ मैं जानी तें फौज मन्मथ की लूट लई सगरी ॥२ ॥ अरुन नेन मुख सरस नासिका कुसुम गुहित कबरी ॥ सूरदास प्रभु नगधर के संग सुरत समुद्र तरी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२) सांची प्रीत भई इक ठोर ॥ मृगनयनी कमलदल लोचन लाल स्याम राधा तन गोर ॥१ ॥ इत सर सोहत पाटकी दोरी हरि सिर रुचिर चन्द्रिका मोर ॥ यह रसिकन वे रसिक सिरोमनि यह ग्वालिन वे माखन चोर ॥२ ॥ यह करिनी वे गजवर नायक यह मालनी वे भोगी भोंर ॥ परमानन्द नंदनंदन की राधा सी जोरी नहि और ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (३) यमुना पुलिन सुभग बृन्दावन नवल लाल श्रीगोवर्द्धन धारी ॥ नवल निकुंज नवल कुसुमित दल नवल नवल बृषभान दुलारी ॥१ ॥ नवल हास नवल छब क्रीड़त नवल विलास करत सुखकारी ॥ नवल श्रीविट्ठलनाथ कृपाबल नंददास निरखत बलिहारी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४) राधे सों रस रीत बढ़ी ॥ आदर करि भेटी नंदनंदन दूने चाव चढी ॥१ ॥ बृन्दावन में क्रीडित दोऊ जैसे कुंजर संग करनी ॥ परमानन्द स्वामी मनमोहन ताको मन हरनी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (५) रूखरी मधुवन मोहन संग निसदिन रहत खरी।

जबतें परस भयो मोहनको तबतें रहत हरी ॥१ ॥ सीतल जल जमुनाको सींचत प्रफुल्लित्त द्रुमलता सगरी। नंददास प्रभु की सरनाई जीवन्मुक्त भई भरी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (६) प्यारी तुंहेरी गजगामिनी ॥ हंस चाल तेरी नहीं पावे ओर कोन हें कामिनी ॥१ ॥ मनमोहन तोहिपें रीझे छोड सकल व्रज भामिनी ॥ सूर स्वामिनी दसन अलक छबि जेसें घनमें दामिनी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (७) माई मेरो हरि नागरसों नेह। सुनरी सखी क्योंहु नहिं छुटत पूर्व जन्म सनेह ॥१ ॥ सब अंग निपुन सकल व्रजसूंदर स्याम बरन सब देह ॥ जबतें द्रष्टि परी नंदनंदन तबतें बिसर्यो गेह ॥२ ॥ कोउ निंदो कोउ वंदो मनको गयो संदेह ॥ सरीता सिंधु मिलि परमानंद एक टिक बरस्योमेह ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८) घनमें छिप रही ज्यों दामिनी ॥ नंद कुंवरके पाछे ठाडी सोहत राधा भामिनी ॥१ ॥ बाल दिशा अपने रंग खेलत शरद सुहाई जामिनी ॥ परमानंद स्वामी रसभीजे प्रेम मुदित गजगामिनी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (९) अब द्वार मेरे बेन बजावे गावे घनश्याम ॥ सेंनन बेनन अर्थ जनावत मेरो लेले नाम ॥१ ॥ में अपनी कुलकान डरत सखी लाज तजी सब गाम ॥ रामदास प्रभु मिल बसकीनी कहत कहा करूं भाम ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१०) में नहीं जान्यो माई बहु नायकको नेह ॥ मास अषाढकी घटा घुमड आई रिमिझिमि बरखत मेह ॥१ ॥ काहु त्रियन संग नेह जोरके काहु के आवत प्रात उठ गेह ॥ धोंधी के प्रभु रसबस कर लीने बडभागिन जुवति ऐह ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (११) दिनही दिन होत कंचुकी गाढी ॥ श्याम जलद घन अति रस बरखत जोवन सरिता बाढी ॥१ ॥ अति भयभीत उरोज कुचन

पर मोहन मुरति चाढी ॥ व्यास सखी दरशनकी प्यासा निकस किनारे ठाडी ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१२) नंदसुवन मिलि गावत भामिनी ॥ अद्‌भुत ओर आई देखो सखी तरुन मेघमें गरजत दामिनी ॥१ ॥ नाचत उरप लेत प्रीतम संग तिरप भेद दरसत गजगामिनी ॥ उघटत शब्द संगीत सुघर पर चुवत भोंह लोचन अभिरामिनी ॥२ ॥ रवि तनया पुलिन रास महा बिलसत बूंद शरदकी जामिनी ॥ कृष्णदास स्वामी गिरिधर पिय रीझवत सुरत केलि कोमल कला कामिनी ॥३ ॥

□ राग टोडी □ (१३) बेठीअटा मानों काम छटासी सोच करत दृगबारिन बोरे ॥ जाय कहोकोउ मेरे भैयासों। एते भुपति तेंने काहेकुं जोरे ॥१ ॥ नंदनंदन व्रजचंद विराजे ते देखे तेतेकारे अरु गोरे ॥ नंददास सब सजल कहावत हारके कांमन आवत ओरे ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१४) ए कहू उमडे घुमडे गाजतहो पिय कहुं बरखत कहुं उघरजात ॥ कहुं दमकत चमकत चपला ज्यों एकठोरन ठहरात ॥१ ॥ स्याम घनके लछन तुमहीपें स्यामघन मेहनेह आडंबर वृथा वहे जात ॥ मुरारीदास प्रभु तिहारे वाम चरन पुजीयेजु को किनकी कही न बात को पत्यात ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१५) हों नीके जानतरी आली बहुनायक को नेह। कहुं धूप कहुं छाँह जनावत कहुं बादल कहुं मेह ॥१ ॥ कहुँ कहुं प्रीत की रीत जनावत कहुँ काहुँसो करत सनेह। 'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक छिन आँगन छिन गेह ॥२ ॥

□ राग सोरठ □ (१६) ॥ माधोजू के वदन की शोभा ॥ कुटिल कुंतल कमलप्रति मानों मधुप रस लोभा ॥१ ॥ भृकुटी मैन धनुप कंजपर दृष्टि चंचल मीन ॥ मकरकुंडल किरण रवितेनकस विकसत कीन ॥२ ॥ सुरभीरेणु पराग रंजित मुरलीध्वनि अलिगुंज ॥ निरख सुभग सरोज मुदित

मराल शिशु समपुंज ॥३ ॥ दशन दामिनी विविधमिली मानों जलद निकरप्रकाश ॥ निगम वानी नेति कहे को सके सूरजदास ॥४ ॥

□ राग सोरठ □ (१७) राधेजू के वदन की शोभा ॥ जाहि देख मयन थाक्यो कृष्ण मन लोभा ॥१ ॥ सीसफूल सिर माँग सोहे भाल कुंकुमबिंदु ॥ मानों गिरि सुमेरु उपर वस्यो रवि अरु इंदु ॥२ ॥ दियें आड कुरंग मदकी मलय केसर सींच ॥ मानों सुर गुरु उदय कीनो हेमगिरि के बीच ॥३ ॥ तनक तरोना श्रवणसोहे कनकरत्न जराय ॥ मानों रविकी किरण पसरी रही भूपर छाय ॥४ ॥ चंचल नयन कुरंग मानों सजल जलद जल एन ॥ चिते वांकी चितवनी में उभयमारें मैन ॥५ ॥ सुभग नासा वेसर सोहे स्वाती सुतराजें ॥ निरख मुक्तन यह शोभा असुर गुरु लाजे ॥६ ॥ अधर दशन तंबोल राजत सहज विहँसत वाम ॥ मानों दामिनी दसोंदिश की वसत एकही धाम ॥७ ॥ निरख प्रियातन यह शोभा चिबुक सांवल बिंदु ॥ मानों छबिकी जालमें पर्‌यो अलिसुत फंद ॥८ ॥ अंगअंगसौं प्रेमवरषत सकल सुखकी मूरि ॥ राधेजूके चरण की रज गदाधर सिर भूरि ॥९ ॥

□ राग सोरठ □ (१८) देखरी देख राधा रवन ॥ मदनमूरत स्यामघन तन बढत शोभा भवन ॥१ ॥ कुसुम कुंचित केश विचविच मंजुरी बंधूक ॥ नक्षत्र कहूंकहूं देखियत मानों उपमालायक मूक ॥२ ॥ श्रवणमें नव झलक मानों लसत कुंडल किरण ॥ अंगअंग छबि चलत सुहाय मानों बादर वरण ॥३ ॥ मुरलिका स्वर वरष चहूँदिश छूटी धरवा धार ॥ मानों बूड़ बिनोद विरहत बंधु निपुणविहार ॥४ ॥ धनुष उर वनमाल राजत गिरागरज गंभीर ॥ सूरश्रीगोपाल बनव्रज सदां पावस धीर ॥५ ॥

□ राग सोरठ □ (१९) चितवनि रोकेहू न रही ॥ स्यामसुंदर सिंधुसन्मुख सरित उमग वही ॥१ ॥ प्रेमसलिल प्रवाहमोही कबन थाहलई ॥ लोल

लहर कटाक्ष घूँघटपट कगार ढई ॥२॥ थके पलकन धीरनावक परत नाहि गही ॥ मिली सूर समुद्र स्यामहि फिर न उलट वही ॥३॥

□ राग सोरठ □ (२०) कटि पटपीत वसन सुदेश ॥ मानों नवघन दामिनीमें कियो सहज प्रवेश ॥१॥ कनकमणि मेखला राजत सुभग सांवल अंग ॥ मानों सरसिज मधुपपंक्ति नार बालक संग ॥२॥ सुभग मुकुट काछिनी राजत लसत सीससिखंड ॥ सूर अंगअंग निरख शोभा मदन सिरपर्‍यो दंड ॥३॥

□ राग सोरठ □ (२१) निरखत रूप नागरि नार ॥ मुखपर मन अटक लटक्यो मानत नाहीं हार ॥१॥ स्याम तनकी जलद आभा चंद्रिका झलकाय ॥ बारबार विलोकथकरहे नयनहीं ठहराय ॥२॥ स्याम मरकतमनि महानग सखा नृत्यत मोर ॥ देख धरपर हरख ऊपर नाहि न आनंदथोर ॥३॥ कोऊ कहत सुर चाप मानों गगन भयो प्रकाश ॥ थकित व्रजललना जहांतहां हरख कबहुं उदास ॥४॥ निरख जोजिहिं रंग राची तांहि रही भुलाय ॥ सूरप्रभु गुण रास शोभा रसिकजन सुखदाय ॥५॥

□ राग सोरठ □ (२२) विराजत वनमालाजू गरें बहुत भांत कुसुमन सों गूँथी गुंजत भ्रमर अरें ॥१॥ इंद्रधनुष की उपमा राजत ठाडे कुंजतरे ॥ रामदास प्रभु नटवर काछें मुरली अधर धरें ॥२॥

□ राग सोरठ □ (२३) देखरी देख कुंडल झलक ॥ नयन यह छबि धरें कैसे लागत नाहीं पलक ॥१॥ ललित चारु कपोल दोऊ विच जलज लोचनचार ॥ मुख सुधाशर मीन मानों मकर संग विहार ॥२॥ कुटिल अलक स्वभाव हरिके भुवन पर रही आय ॥ मानों मन्मथ फांदी फंदन मीन विविध त्रसाय ॥३॥ लता तन चपल कुंडल चपल भृकुटी बंक ॥ सखी व्याकुल देखवे कूं बनत नाहिं निसंक ॥४॥ सूरप्रभु नंदसुवनकी छबि कापें वरणी जाय ॥ निरख गोपी निरख बिथकी विधिपै अतिही

रिसाय ॥५ ॥

□ राग सोरठ □ (२४) देखरी देख आनन चंद॥ मुदित चित्त चकोर प्लावित नयन कुमुदिनी वृंद ॥१ ॥ विपिन नभते प्रकट संध्यासमय दरशन देत॥ मध्य उडुगण सखा संगही गोधन जलद समेत ॥२ ॥ क्रीडत घोष तडाग मनजु मराल सूरजदास॥ एक रसना कहि सके को रंक विविध विलास ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (२५) देखरी देख कुंडल लोल॥ चारु श्रवणननृहीत कीनो झलक ललित कपोल ॥१ ॥ वदन मंडल सुधा सुरवर निरख मन भयो बोर॥ मकर क्रीडत गुप्त प्रकटत रूप जल झक झोर ॥२ ॥ नयन मीन भुजंगिनी भ्रू नासिका स्थल बीच॥ सरस मृगमद तिलक शोभा लसतहैं लगी कीच ॥३ ॥ मुख विकास सरोज मानों युवती लोचन भृंग॥ विथुरी अलकें परी मानों प्रेम लहर तरंग ॥४॥ स्याममुख छबि अमृत पूरण रच्यो काम तडाग॥ सूरप्रभु अंग निरख शोभा व्रजयुवती बडभाग ॥५ ॥

□ राग सोरठ □ (२६) देखरी देख शोभारासी॥ काम पट तर कहा दीजे रमा जिनकी दासी ॥१ ॥ मुकुटसीस सिखंड सोहे निरख रही ब्रजनार॥ कोटि सूरज चंद्र आभा निरख डारों वार ॥२ ॥ केश कुंचित विथुरी भ्रूपर बीच शोभित भाल॥ मानों चंद्र अबही लजानों राहु घेर्‌यो जाल ॥३ ॥ चारु कुंडल सुभग श्रवणन को सके उपमाय॥ कोटि कला सूर छबि देखत रह्यो मन भरमाय ॥४॥ सुभग मुखपर चारु लोचन नासिका यह भांत॥ मीन खंजन वीच शुक मिल बैठे एकही पांत ॥५ ॥ सुभग नासातर अधर छबि रसभरे अरुणाय॥ मानों निहार शुक छुवत नहि भ्रूघनुष देख डराय ॥६ ॥ हँसन दशन चमक ताई व्रजकण रची पांत॥ दामिनी दाडिम नहीं सम कियो अति मन भ्रांत ॥७ ॥ चिबुक पर चित लियो चुराये नवल

नंदकिशोर ॥ सूरप्रभुकी निरख शोभा व्रजतरुणी भई बोर ॥८ ॥
□ राग सोरठ □ (२७) देखरी देख यह सुंदरताई ॥ चपलनयन अरु नासिका इकटक रहे ठहराई ॥१ ॥ करत विचार परस्पर युवती उपमा अनंतबुद्धि अनाई ॥ मानों खंजन बीच शुक बैठो यह कहिकें मन जात लजाई ॥२ ॥ कछु एक तिल प्रसून की आभा मनमधुकर जहां रह्यो लुभाय ॥ सूरस्याम नासिका मनोहर कापें वरणी नजाय ॥३ ॥
□ राग सोरठ □ (२८) देखरी देख मोहन चितचोर ॥ नयन कटाक्ष विलोकन मधुरी भंग भृकुटी चितमोर ॥१ ॥ चंदन खोर ललाट स्यामके निरखत अतिसुखदाई ॥ मानों अधरचंद पर अहिनी सुधा चुरावन आई ॥२ ॥ मलयज भाल भृकुटीरेखा क्यों कर उपमा कल्पाय ॥ मानों इक संग गंगा यमुना नभ तिरछी धार वहाय ॥३ ॥ भृकुटी चारु निरख व्रजसुंदरी यह मन करत विचार ॥ सूरदास प्रभु शोभा सागर पावत कोउ नपार ॥४ ॥
□ राग सोरठ □ (२९) देखरी देख रूप निधान ॥ स्यामघन तन पीत अंबर लसत तडित समान ॥१ ॥ नीलकुंतल तिलक मृगमद भृकुटी बियसरस कमान ॥ सीस सिखर सिखंड भ्राजत मुरलिका कल गान ॥२ ॥ नयन कमल विशाल चंचल चितवनी सुखसार ॥ सुधा वरषत चित आकर्षत निरख विथकित मार ॥३ ॥ ललित लोल कपोल कुंडल मानो नृत्यत काम ॥ नासिका बेसर विराजत देख प्रमुदित वाम ॥४ ॥ अरुणबिंबही अधर मानों दशन कुंदकली ॥ हँसत क्रीडत छैल गिरिधर नंदगाम गली ॥५ ॥ चिबुक सुंदर शोभा अति तन कंबु कंठ सुदेश ॥ कोटि रवि शशि मणिप्रकाशित महामोहन वेश ॥६ ॥ चंद्रमणि हाटक खचित उरपदक पांति अनूप ॥ बडे भाग्यन दृष्टि गोचर कृष्ण व्रजके भूप ॥७ ॥ विपुलबाहु सुकमल फेरत हेरत राधा ओर ॥ बलबल यह रूपकी सुखसिंधु

रासकिशोर ॥८॥ बहु तापनाशन उदर त्रिवली नाभि सब जगमूल॥ वैजयंतीमालके बिच पारिजातक फूल॥९॥ लालकछिनी ललित किंकिणी सुभग कटितट चारु॥ वनकी धातु विचित्र चित्रित अंगअंग शृंगार॥१०॥ मानों कदलीखंभ जंघा पर रूप रसाल॥ सुभग चरण सरोज मंगल मत्त गयंद की चाल॥११॥ ध्वजा अंबुज वज्र अंकुश स्याम चिन्ह मुरार॥ चित्र मानों बहुविचित्रित निरख थकित बिसार॥१२॥ सकल भूषण भूषणा व्रजनाथ गोकुल राय॥ पलक ओट न सहि सकें मेरे नयन रहे हैं लुभाय॥१३॥ जब न देखों मदन मूरति नयन वरसत तोय॥ हिलगमनकी सोई जाने जाय बीती होय॥१४॥ प्रमदावर घोष बांध्यो मनुज खग मृग गाय॥ कृष्ण दर्शन डोरी लागी आन कछू न सुहाय॥१५॥ नंदनंदन जगतवंदन दीनबंधु दयाल॥ सूरदास ही भक्ति दीजै रूपरास गोपाल॥१६॥

□ राग सोरठ □ (३०) यह छबि देखरी उठ धाय तरसती जा दरशकारन पैर निकस्यो आय॥१॥ जटित मणिमय क्रीटनग छबि निकर जगमग जोत॥ मानों घनते शरदशशि सतलिये नक्षत्र उद्योत॥२॥ चारु तिलक सुभाल केशर बन्यो बिंदुगुलाल॥ मानों शावक हेम द्रुम पर लसत हैं मुनि लाल॥३॥ कनककुंडल किरण मानों परत बिंब कपोल॥ मानों अमल अगाध जल निधि मकर करत कलोल॥४॥ छूट चहुंदिश चिकुर चखपर बांसुरी सुरथोर॥ मानों अही मृग निकस ठाडे सुनतहै घनघोर॥५॥ अरुण अधरन दमक दशनन सुभग पांत विशाल॥ दाडिम उडुपति कला वज्रकण गुप्त करत प्रवाल॥६॥ कंठ कोमल कोकिला स्वर शिखि कीर कपोत॥ मानों नाना कुसुम पर विधु धरें विद्रुम जोत॥७॥ बाहुवारिज युगल इहि विधिमुदित हैं इहि ओर॥ मानों वक्रित भान शशि दोऊ रहे हैं मुखमोर॥८॥ उर उरोज सजे संपुट कुंदकली शरीर॥ मानों दधिसुत

मिली सुरसरी बोले चकवा तीर ॥९ ॥ और वृंदा हार राजत रोम नाभि गंभीर ॥ मानों संगम त्रिविध मिलकें परत जलनिधि नीर ॥१० ॥ स्याम अंग सुरंग रंजित पीतपट फरहाय ॥ मानों कंचनबरण बादर रहे तहाँ लुभाय ॥११ ॥ किंकिणी कटिक्कणित केहरि जटित लाल प्रवाल ॥ मानों मिल खद्योत सेना रही लपटत माल ॥१२ ॥ अतिहि चित्रविचित्र सोहें काछनी कलधार ॥ मानों रंभापर लता फैली फूल रही फुलबार ॥१३ ॥ चरणनूपुर बजत रुनझुन गर्जन करत झनकार ॥ मानों निशाकर अवनी कूंजत कुंजकुंज विहार ॥१४ ॥ सूर रसना विना निरखें कहा कहे अनूप ॥ मूक होयके छबि निहारों वरणूं कहा स्वरूप ॥१५ ॥

□ राग सोरठ □ (३१) मोहन वदनकी शोभा ॥ जाहि निरखत उठत मन आनंद की गोभा ॥१ ॥ भ्रोंह सोहन कहा कहूं छबि भाल कुंकुम बिंदु ॥ स्यामबादर रेख पर मानों अबही उदयो इंदु ॥२ ॥ नयन धीर अधीर कछुकछु असित सित राते ॥ प्रिया आनन चंद्रिका रसपान मदमाते ॥३ ॥ ललित लोल कपोल कुंडल मानों मकराकार ॥ युगल शशी सौदामिनी मानों नचत नट चटसार ॥४ ॥ विमल सजल सुढार मुक्तानासिका दीनो ॥ ऊँचे आसन असुर गुरु मानों उदय सो कीनो ॥५ ॥ बंसका कलहंसका मुखकमल रस राची ॥ पवन परसत अलक अलिकुल कलह सीमाची ॥६ ॥ रह्यो मन ललचाय छबि पर टरत नहीं टार्‍यो ॥ अमित अद्‌भुत माधुरी पर गदाधर वार्‍यो ॥७ ॥

□ राग सोरठ □ (३२) राधे रूप अद्‌भुत रीत ॥ सहजजे प्रतिकूल तुव तन रहे छाँड अनीत ॥१ ॥ कचन रचना राहुके ढिग मुदित वदन मयंक ॥ तिलक बाण कमान भ्रू छबि नयन हरिण निशंक ॥२ ॥ रत्न यतनन जटित युगताटंक रबि छबि छाज ॥ तदपि दूनी जोत मोतिन मंडली उडुराज ॥३ ॥ नीलपट तन जोति तमसम अंगसंग रसाल ॥ कोकयुगल उरोज परसत माहिं भुजा मृणाल ॥४ ॥ अधर मधुर सुपक्क बिंब सुभग दशन अनार ॥

धीर धर रही कीर नासा करत नहीं संचार ।।५ ।। निकट कटिके हरि पेंगज गति न मेटी जाय ।। प्रकट युग तहां जंघ कदली सुभग रुचि हुलसाय ।।६ ।। गदाधर बल तोहि बूझत लगतहै जिय त्रास ।। एति संपति सहित क्यों पिय पूतरिनमें वास ।।७ ।।

□ राग सोरठ □ (३३) नयनन निरख हरिको रूप ।। मनहिं विच सुविचार देख्यो अंगअंग अनूप ।।१ ।। कुटिल केश सुदेश अलिगण वदन शरद सरोज ।। मकर कुंडल किरणकी छबि दुरत फिरत मनोज ।।२ ।। अरुण अधर कपोल नासा सुभग ईषद हास ।। दशनकी द्युति कहि न आवे भृकुटी मदन विलास ।।३ ।। अंगअंग अनंग जीते रुचिर उर वनमाल ।। सूर शोभा हृदय पूरण देत श्रीगोपाल ।।४ ।।

□ राग सोरठ □ (३४) नयनन ध्यान नंदकुमार ।। सीस मुकुट सिखंड राजत नाहिन उपमापार ।।१ ।। कुटिल केश सुदेश भ्राजत मानों मधुकर जाल ।। रुचिर केशर तिलक दीनो परम शोभा भाल ।।२ ।। भृकुटी बंक सुचारु लोचन रही युवती देख ।। मानों खंजन चांप डरतें उडत नाहिं निमेख ।।३ ।। मकर कुंडल गंड झलकत निरख लज्जित काम ।। नासिका छबि कीर लज्जित कविनवरणित नाम ।।४ ।। अधर विद्रुम दशन दाडिम चिबुकहै चितचोर ।। सूरप्रभु मुखचंद पूरणनारी नयन चकोर ।।५ ।।

□ राग सोरठ □ (३५) तन मन धन डारूं वार ।। स्याम शोभा सिंधु मानों अंगअंग निहार ।।१ ।। पच रही मन ध्यान करकर लहत नाहिन तीर ।। स्यामतन जलराशि पूरण महागुण गंभीर ।।२ ।। पीतपट फहरात मानों लहर उठत अपार ।। निरख छबि तकतरण पैठी कहूं वार नपार ।।३ ।। चलत अंग त्रिभंग करके भ्रोंह भाव चलाय ।। मानों बिचबिच भ्रमर डोलत चितये चित भरमाय ।।४ ।। श्रवण कुंडल मकर मानों नयनमीन विशाल ।। सलिल झलकत रूप आभा देखरी नंदलाल ।।५ ।। बाहुदंड भुजंग मानो जलधि मध्य विहार ।। मुक्तमाल मानों सुरसरी वहि चली द्वयधार ।।६ ।। अंगअंग

भूषण विराजत कनक मुकुट विलास ॥ उदधिमथन प्रकटकीनो श्री अरु सुधा प्रकास ॥७ ॥ चक्रत भई त्रिय निरख शोभा देह गति विसराय ॥ सूरप्रभु छबि रासि सागरजान्यो न कापें जाय ॥८ ॥

□ राग सोरठ □ (३६) मुखपर चंद डारों वार ॥ कुटिल कचपर भ्रमर वारो भोंह पर धनुवार ॥१ ॥ भाल केसर तिलक छबि पर मदन शतशत वार ॥ मानों वहि चली सुधा धारा निरख मन धोंवार ॥२ ॥ नयन खंजन भृंगवारों कमलके कुलवार ॥ मानों सरस्वती गंगा यमुना उपमा डारों वार ॥३ ॥ निरख कुंडल तरणि वारों कूप श्रवणन वार ॥ झलक ललित कपोल छबि पर मुकुर शतशत वार ॥४ ॥ नासिका पर कीर वारूं अधर विद्रुम वार ॥ दशनपर कण वज्र वारों बीज दाडिम वार ॥५ ॥ चिबुक पर चित वित्त वारों प्राण वारों डार ॥ सूर प्रभु की निरख शोभा को सके जो निहार ॥६ ॥

□ राग सोरठ □ (३७) इकटक रही नारि निहार ॥ कुंजवन श्रीस्याम स्यामा बैठे करत विहार ॥१ ॥ नयनसेन कटाक्षसों मिलकरत रंगबिलास ॥ नाहिन शोभा पारपावत वचन मुख मृदुहास ॥२ ॥ तरुण श्रीवृषभान तनया तरुण नंदकुमार ॥ सूरसो क्यों वरन आवे रूपरस सुखसार ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (३८) तरुणि निरख हरि प्रति अंग ॥ कोऊ निरख नभ इंदु भूली कोऊ चरणयुग रंग ॥१ ॥ कोऊ निरख नूपुर रही थक कोऊ निरख युगजान ॥ कोऊ निरख युगजंघ हरिके करे मन अनुमान ॥२ ॥ कोऊ निरख पटपीत काछनी मेखला रुचिकार ॥ कोऊ निरख छबि हृदय नभकी डारत तन मन वार ॥३ ॥ चारु रोमावली हरिकी चारु उदर सुदेश ॥ मानों अलिश्रेणी विराजत बने एकही वेश ॥४ ॥ रही इकटक नारि ठाढी करत बुद्धि विचार ॥ सूर आगम कियो नभते यमुना सूक्ष्मधार ॥५ ॥

□ राग सोरठ □ (३९) स्याम पहरें जलसुतमाल अति अनूपम छबि छाजेंरी ॥ मानों कला कपोत नवघन पर यह उपमा कछु भ्राजेंरी ॥१ ॥ पीत हरित सित अरुणमाल वन विराजत हृदय विशाल हरी ॥ मानों इंद्रधनुष नभमंडल प्रकट भयो तिहिं कालरी ॥२ ॥ भृगुपद चिन्ह उरस्थल पर कंठ कौस्तुभमणि ढिग दरसतरी ॥ बैठो मानों खटपद विधु एक अरुघनसों मिल हरखतरी ॥३ ॥ भुजाविशाल स्यामसुंदर की चंदनखोर चढायेंरी ॥ सूर सुभग अंगकी शोभा व्रजललना ललचायेंरी ॥४ ॥

□ राग सोरठ □ (४०) सांवरे अंग सुखकी खान ॥ जगमगे तन जोति दूनी रूपरसिक निधान ॥१ ॥ भृकुटी अलकें सोहनी मुख कमलपर रहीफैल ॥ मधुप मधुमकरंद पीवत रहे मुखमें झेल ॥२ ॥ भोंह बांकी धनुषकी छबि भालरेखा बान ॥ निरख मोहें कामिनी हरें मानिनी को मान ॥३ ॥ नयन लोल विशाल सुंदर अधिक रसराते ॥ प्रिया प्रेम विलोक आनन नेह रसमाते ॥४ ॥ कुंडल कपोल विशाल सुंदर परतहै झांई ॥ स्वच्छ सरोवर प्रवाह झलके सूरकीनाई ॥५ ॥ चिबुक चित्त चुरावही छबि माधुरी मुसकान ॥ छके मुखरस देख तैसी अंगकी अलसान ॥६ ॥ नरम ग्रीवा लसत सुंदर पीतपट सोहे ॥ मिटत मान जु मदनको यह रूपरस कोहे ॥७ ॥ ध्यानधर जिय एही निशदिन सांवरे सुखसार ॥ सूर शोभा हृदय पूरण देत नंदकुमार ॥८ ॥

□ राग सोरठ □ (४१) व्रजयुवती हरिचरण मनावे ॥ जे पदकमल महामुनि दुर्लभ वे सपनेहू नपावे ॥१ ॥ तनु त्रिभंग युगजानु एकपग ठाढे एक दरसाय ॥ अंकुश कलश वज्र ध्वजा प्रकटत तरुणी मनहि भ्रमाय ॥२ ॥ यह छबि देख रही एकटक हियेमें करत विचार ॥ सूरदास मन चरण कमल पर सुखसों करत विहार ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (४२) स्याम कमलपद नखकी शोभा ॥ जे नखचंद्र इंद्र सिर परसे शिव विरंचि मन लोभा ॥१ ॥ जे नखचंद्र सनकमुनि ध्यावत

नहिं पावत भरमाई॥ ते नखचंद्र प्रकट व्रजयुवती निरख निरख हरखाई॥२॥ जे नखचंद्र फणींद्र हृदयते एक निमिष नहिं टारे॥ ते नखचंद्र महामुनि नारद पलक न कबहु बिसारे॥३॥ जे नखचंद्र भजन दुःख नासत रमा हृदयते परसत॥ सूरस्याम नखचंद्र विमल छबि गोपी जन मिल दरशत॥४॥

□ राग सोरठ □ (४३) देखरी देख आनंद कंद॥ चित्त चातक प्रेम घन लोचन चकोर सुछंद॥१॥ चलत कुंडल गंडमंडित झलक ललित कपोल॥ सुधारससजनु मकर क्रीडत इन्दुदंड हिंडोल॥२॥ सुभग कर आनन समीप हरि मुरलिका यह भाय॥ मानों उभय अंभोज भाजन लेत सुधा भराय॥३॥ स्याम देह दुकूल द्युति छबि लसत तुलसीमाल॥ तडित घनसंयोग मानों सेनकाशुकजाल॥४॥ अलक अविरल चारुहास विलास भ्रुकुटी भंग॥ सूर हरिकी निरख शोभा भई मनसापंग॥५॥

□ राग सोरठ □ (४४) देखरी हरिके चंचल तारे॥ कमल मीनकी कहा इति छबि खंजनहूं नजात अनुहारे॥१॥ वे देख निरखनमित मुरलीपर कर मुख नयन एक भयेचारे॥ मानों सरोज विधु वैरी वंचीकर करतनाद वाहन चुचकारे॥२॥ उपमा एक अनूपम उपजत कुंचित अलक मनोहर भारे॥ विडरत विझुक जात रथते मृगजनु सशंक शशिलंगर सारे॥३॥ हरि प्रति अंग विलोक मान रुचि व्रजवनितान प्राण धनवारे॥ सूरस्याम मुखनिरख मग्न यह विचार चित अनत न डारे॥४॥

□ राग सोरठ □ (४५) देखरी नवल नंदकिशोर॥ लकुटसो लपटाय ठाडे युवतीजन मनचोर॥१॥ चारुलोचन हंस विलोकन देखके चितभोर॥ मोहनी मोहन लगावत लटक मुकुट झकोर॥२॥ श्रवण ध्वनि सुननाद मोहत करत हृदयमें ठोर॥ सूरअंग त्रिभंग सुंदर छबि निरख तृणतोर॥३॥

□ राग सोरठ □ (४६) हरि तन मोहनी माई अंगअंग अनंग सतसत वरनी

नहीं जाई ॥१ ॥ कोऊ निरख विथुरी अलक मुख अधिक सुखपाई ॥ कोऊ निरख रही भाल चंदन एक चितलाई ॥२ ॥ कोऊ निरख रही चारु लोचन निमिष भरमाई ॥ सूरप्रभुकी निरख शोभा कहत नहीं जाई ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (४७) सखी कैसेंक कहो हरीके रूपको रसही ॥ अपनेही तनमें भेद बहुत विध रसना न जानत नयनकी दशही ॥१ ॥ जिन देखेते आहि वचन बिन जिन ही वचन दरशनन तरसरही ॥ बिनबानी अति उगम प्रेमजल सुमरसुमर यह रूप यशही ॥२ ॥ यह समझ पछतात मनही मन कहा करों मोहि विध नहिं नशहीं ॥ सूर सकल अंगनकी यह गति कहा रच्यो बिध पक्ष द्वय रसहीं ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (४८) पावे कौन लिखे बिन भाल ॥ काहूको षट रस नहीं भावत कोऊ भोजन कों फिरत बिहाल ॥१ ॥ तुम देख्यो हरिअंग माधुरी मैं नहीं देख कौन गोपाल ॥ जैसे रंक तनक धन पावे ताहीमें वह होत बिहाल ॥२ ॥ तुम्हें मोहि इतनो अंतरहै धन्य धन्य व्रजकी तुम बाल ॥ सूरदास प्रभु की तुम संगन तुमही मिले यह दरश गोपाल ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (४९) देख सखी हरिको मुख चारु ॥ मानों छुडाय लियो नंदनंदन वा शशिको सतसार ॥ रूप तिलक कच कुटिल किरण छबि कुंडल कला विस्तार ॥ पत्रावली पर वेशसुमन शशि मिल्यो मानों उडुदार ॥२ ॥ नयन चकोर विहंग सूर सुन पिय तन पावत पार ॥ अब अंबरसो लगत है ऐसे जैसे जूठोथार ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (५०) अंग अनंग न रंगरस्यो ॥ नंदगृहते नंदसुत वृषभान भुवन वस्यो ॥१ ॥ धेनुके संग मिषहीं मिषकर विपिन पंथ धस्यो ॥ निरखके सब ग्वाल सेन नयन फेर हँस्यो ॥२ ॥ बहुर क्यों छूटत तहांतें बाहुबंध कस्यो ॥ नेक राधा वदन चितयो हुलस इत विलस्यो ॥३ ॥ सांझ सब एकत्र है के घोष पथ परस्यो ॥ सूर ऐसे दरश कारण मन रहत तरस्यो ॥४ ॥

रथ यात्रा के पद (आषाढ़ सुदि २)

□ राग सारंग □ (१) यह ढोटा हठ हरत परायो मन ॥ देखत रूप ठगोरी सी लागत जगत विमोहन स्याम बरन तन ॥१ ॥ दिन दिन चोंप चोगनीसी लागत पावस ऋतु मानौं नव तन घन ॥ दामिनि कोटि पीतांबर की छबि 'परमानँद' राजति ब्रिंदाबन ॥२ ॥

रथ में पधारे तब मल्हार की अल्पचारी

□ राग मल्हार □ (१) श्री व्रजराज कुमार लाडिलो ललनवर गाईये ॥ आनंद की निधिवर गाईये भक्तन के मन भांवतो लाडिलो ललनवर गाइये ॥१ ॥ श्री यशोदोत्संग लाडिलो ललनवर गाइये ॥ श्रीगिरिराज धरनधीर लाडिलो ललनवर गाइये ॥२ ॥ श्रीगोवर्धन लाडिलो ललनवर गाइये ॥ श्री बालकृष्णलाल लाडिलो ललनवर गाईये ॥३ ॥ श्रीमदन मोहन श्याम सुंदरलाल लाडिलो ललनवर गाईये ॥ व्रज की जीवनधन गाइये ॥४ ॥

(यह अलपचारी नित्य जगायवे में प्रथम और उत्सव में अधिवासन होय तब राग बदल के गाना)

□ राग मल्हार □ (२) द्विज असाढी सरस दिन नछत्र पुष्य संजोग ॥ रथ शोभा रवि कोटि सम करत नंद सुत भोग ॥१ ॥ ऋतु बरखा सुहावनि बरखें मेघ मलार ॥ भोंम हटी हरखित सबें चंद वधू चटसार ॥२ ॥ सोर करत दादुर बन बोलत चात्रक मोर ॥ कोकिल कलख बोल ही करत पपैया सोर ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) कुंवर चलो जू आगें गहवर में जहां बोलत मधूरे मोर ॥ विगसत बन राजी कोकिला करत रोर ॥१ ॥ मधुरे बचन सुनत प्रीतम के लीनों प्यारी चित चोर ॥ 'गोविंद' बलि बलि पिय प्यारी की जोरि ॥२ ॥

रथ के पद

□ राग बिलावल □ (१) तुम देखो सखीरी आज नयन भर हरिजूके रथ की शोभा ॥ योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत कीजियतहे जिंहि लोभा ॥१ ॥ चारुचक्रमणि खचित मनोहर चंचल चमर पताका ॥ श्वेत छत्र जनुशशि प्राचीदिश उदितभयो निशि राका ॥२ ॥ श्यामशरीर सुदेश पीतपट शीश मुकुट ओर माला ॥ मानोदामिनी घन रवि तारा गण उदित एकही काला ॥३ ॥ उपजत छबि कर अधर शंखध्वनि सुनीयत शब्द प्रशंसा ॥ मानहुं अरुण कमल मन्डल में कूजतहें कलहंसा ॥४ ॥ आनंदित पितुभ्रात जननी सब कृष्ण मिलन जीय भावे ॥ सूरदास गोकुलके बासी प्राणनाथ वरपावे ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (२) आजमाई रथबैठे गिरिधारी ॥ वामभाग वृषभान नंदिनी पहरेंकसुंभी सारी ॥१ ॥ तेसोई घन उनयो चहूंदिशतें गरजतहे अतिभारी ॥ तेसेई दादूर मोर करत रट तेसी भूमि हरियारी ॥२ ॥ शीतलमंद वहेत मलयानिल लागतहे सुखकारी ॥ नंदनंदनकी या छबि ऊपर गोविंद जन बलिहारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) तुम देखो भाई हरिजूके रथकी शोभा ॥ प्रात समय मानों उदित भयो रवि निरख नयन अतिलोभा ॥१ ॥ मणिमय जटित साज सरस सब ध्वजा चमर चितचोभा ॥ मदनमोहन पिय मध्य विराजत मनसिज मनके छोभा ॥२ ॥ चलत तुरंग चंचल भू ऊपर कहाकहूं यह ओभा ॥ आनन्दसिंधु मानो मकर क्रीडत मग्नमुदित चितचोभा ॥३ ॥ यहविध बनि व्रजबीथन महीयां देत सकल आनंद ॥ गोविंद प्रभू पीय सदांवसो जीय वृन्दावन के चंद ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (४) तुम देखो सखी रथ बैठे व्रजनाथ ॥ संकर्षण के संग विराजत गोप सखा ले साथ ॥१ ॥ एक ओर राधा युवतीसब

छत्रचमर ललिताके हाथ ।। विविध भांत श्रीगोवर्धनधारी कृष्णदास कियो सनाथ ।।२ ।।

□ राग मल्हार □ (५) तुम देखो सखी रथ बैठे गिरिधारी ।। राजत परम मनोहर सब अंग संग राधिका प्यारी ।।१ ।। मणि माणिक हीरा कुंदन खचि डांडी चार संवारी ।। विधिकर विचित्र रच्यो जो विधाता अपने हाथ संवारी ।।२ ।। गादी सुरंग ताफताकी सुंदर फरेवाद छबि न्यारी ।। छत्र अनूपम हाटक कलशा झूमक लरमुक्तारी ।।३ ।। चपल अश्व द्वे चलत हंसगति उपजतहे छबि न्यारी ।। दिव्य डोर पंचरंग पाटकी करगहि कुंजबिहारी ।।४ ।। विहरत व्रजवीथन वृन्दावन गोपीजन मनहारी ।। कुसुम अंजुली वरखत सुरमुनि परमानंद बलिहारी ।।५ ।।

□ राग मल्हार □ (६) तुम देखो माई रथ बैठे गोपाल ।। हीरा मोती पांतबनी हें विचविच राजत लाल ।।१ ।। बेरख फरहरात कलशनपर अरुण हरित बहुरंग ।। अतिही विचित्र रच्यो विश्वकर्मा शोभित चारुतुरंग ।।२ ।। खेंचत ग्वालबाल सब संगके करत कुलाहल भारी ।। किलकत हँसत दोउरी मैया मुदित होत गिरिधारी ।।३ ।। खेलन चले सुभग वृन्दावन शोभा वरणि न जाई ।। याछबिपर तनमनधन वारत दास परमनिधि पाई ।।४ ।।

□ राग मल्हार □ (७) रथचढ आवत गिरिधरलाल ।। रत्न खचित मुक्ताफल लागे ।। नवपद्मनकी माल ।।१ ।। गरें दुलारी शिरमोर चंद्रिका कुंडल गंडविशाल ।। वसनपीत परिधान मनोहर विमल गुंज वनमाल ।।२ ।। शोभित सुभग चारुलोचन मृग मोहत मन्मथसाल ।। झलकत ललित कपोल लोलपर श्रम जल बूंद रसाल ।।३ ।। अमरनारि अवलोक रूप छबि देख डिगे दिगपाल ।। तनमन धन वारत परमानंद विवश भई व्रजबाल ।।४ ।।

□ राग मल्हार □ (८) रथचढ चलत यशोदा आंगन ॥ विविध शृंगार सकल अंग शोभित मोहत कोटि अनंगन ॥१ ॥ बालक लीला भाव जनावत किलक हँसत नंदनंदन ॥ गरें बिराजत हार कुसुमनके चर्चित चोवाचंदन ॥२ ॥ अपने अपने गृह पधरावत सब मिलि व्रजयुवती जन ॥ हर्षित अति अर्पत सब सर्वस्व वारतहें तन मन धन ॥३ ॥ सब व्रजदे सुख आवत घर कों करत आरती ततछन ॥ रसिकदास हरि की यह लीला वसो हमारे ही मन ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (९) तुम देखो सखी रथ बैठे नंदलाल ॥ अति विचित्र पेहेरें पटझीनो उरसोहे वनमाल ॥१ ॥ सुंदर रथ मणि जटित मनोहर सुंदरहे सब साज ॥ सुंदर तुरंग चलत धरणीपर रह्यो घोष सब गाज ॥२ ॥ ताल पखावज बेन बांसुरी बाजत परम रसाल ॥ गोविंद प्रभु पियपर बरखतहें विविध कुसुम व्रजबाल ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) मैया मैं रथचढ डोलूंगो ॥ घरघरतें संग खेलन कों गोप सखनकों बोलूंगो ॥१ ॥ मोहि जडाय देहु अति सुंदर सगरो साज बनाय ॥ कर शृंगार ताऊपर मोकों राधा संग बैठाय ॥२ ॥ घरघर प्रति हों जाऊं खेलन संगलेहुं व्रजबाल ॥ मेवाबहुत मगाय मोहिदे फल अति बडे रसाल ॥३ ॥ सुतके बचन सुनत नंदरानी फूली अंग न माय ॥ सब विधि सहित हरि रथ बैठारे देख रसिक बलजाय ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (११) तू मोहि रथले बैठरी मैया ॥ इतकी ओर बेठि हे राधा उतकी ओर बल भैया ॥१ ॥ गोप सखा सब संग चलिहें मेरे ओर गावेंगे गीत ॥ मेरे रथकी शोभा देखत सुख पावेंगे मीत ॥२ ॥ व्रजजन भवन भवन प्रति ठाडीं देखनकों मेरी गाडी ॥ आरती लेकें उतारत मोपर व्है व्है मारग आडी ॥३ ॥ सुनत बचन आनंदसिंधु में मगन यशोदा माई ॥ रसिक मनोरथ पूरण गोविंद वैकुंठ तजब्रज आई ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) जसोदा रथ देखन कों आई ॥ देखोरी मेरोलाल

गिरेगो कहाकरों मेरीमाई ॥१ ॥ मेरो ढोटा पालने सोवे उंधरक उधरक रोवे ॥ अघासुर बकासुर मारे नेन निरंतर जोवे ॥२ ॥ देहरी उलंघन गिर्योरी मोहन सोई घात में जानी ॥ परमानंद होऊ तहां ठाडे कहत नंदजुकी रानी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) रथबैठे मदन गोपाल अंगअंग शोभा वरनी न जाई ॥ मोर मुकुट वनमाल बिराजत पीतांबर ओर तिलक सुहाई ॥१ ॥ गजमुक्ता की माल कंठ नंदलाल मानो नील गिरि सुरसरी धसिधाई ॥ श्रीवृन्दावन भूमि चारुसंग सोहे राधानारि मानों घनदामिनि की छबिछाई ॥२ ॥ बोलें पिक मोर कीर त्रिगुण वहे समीर पुष्प वरषा करें अमरपति आई ॥ कुंभनदास प्रभु गिरिधरलाल की बानिक पर बलि बलि जाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) रथचढ आवत गिरिधरलाल ॥ नवदुलहनि वृषभान नंदिनी नवदूल्हे नंदलाल ॥१ ॥ निरखत नयन सिरात मुदितमन मिटत विरहकी ज्वाल ॥ व्यास स्वामिनी कंचन वेली लपटी श्यामतमाल ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) रथ पर राजत सुंदर जोरी ॥ श्रीघनश्याम लाडिलो सुंदर श्रीराधाजू गोरी ॥१ ॥ व्योम विमान भीर भई सुरमुनि जयजय शब्द उच्चारी ॥ कुंभनदास लाल गिरिधर की बानिक पर बलिहारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) राजत रथ बैठे पिय प्यारी ॥ आस पास युवतीजन गावत देत परस्पर तारी ॥१ ॥ ताल पखावज बहुविध बाजत गावत है सिंघद्वारी ॥ निरखि निरखि आंई व्रजसुंदरी करत कुतूहल भारी ॥२ ॥ देखि देखि जित तित सुरनारी शोभा बाढी भारी ॥ जय गोकुल शिरताज विराजो कृष्णदास बलिहारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) देखो माई नंदनंदन रथही बिराजे ॥ संग सोहे वृषभान नंदिनी देखत मन्मथ लाजे ॥१ ॥ व्रजजन सब मिल रथ खेंचतहें

शोभा अद्भुत छावे ॥ सीतल भोगधर करत आरती नंददास गुण गावे ॥२ ॥

भोग आवे तब

□ राग मल्हार □ (१) तुमदेखो सखीरी रथबैठे हरिआज ॥ अग्रज अनुज सहित श्यामघन सबे मनोहर साज ॥१ ॥ हाटक कलशा ध्वजा पताका छत्र चमर शिरताज ॥ तुरंग चाल अति चपल चलेहें देख पवन मनलाज ॥२ ॥ सुदि आषाढ़ द्वीज शुभदिन पुष्य नक्षत्र शुभयोग ॥ वनमाला पीतांबर ओढें धूप दीप बहुभोग ॥३ ॥ गारी देत सबे मनभाई कीरति अगम अपार ॥ माधोदास चरणनको सेवक जगन्नाथ श्रुतिसार ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (२) व्रजमें रथचढ चलेरी गोपाल ॥ संग लिये गोकुलके लरिका बोलत वचन रसाल ॥१ ॥ श्रवण सुनत गृहगृहतें दौरी देखनकों व्रजबाल ॥ लेत फेरकर हरि की बलैया वारत कंचन माल ॥२ ॥ सामग्री ले आवत शीतल लेत हरख नंदलाल ॥ बांटदेत ओर ग्वालन कों फूले गावत ग्वाल ॥३ ॥ जय जयकार भयो त्रिभुवन में कुसुम बरखत तिहिं काल ॥ देखदेख उमगे व्रजवासी सबेदेत करताल ॥४ ॥ यह विध बन सिंघद्वार जब आवत माय तिलक करभाल ॥ ले उछंग पधरावत घरमें ॥ चलत मंदगति चाल ॥५ ॥ कर नोंछावर अपने सुतकी मुक्ताफल भरथाल ॥ यह लीलारस रसिक दिवानिशि सुमिरत होत निहाल ॥६ ॥

चौथे भोग में

□ राग मल्हार □ (१) आज व्रज सोभा की निधि आई ॥ जसोदा नँदन रथ पर बैठें व्रज जन अति सुखदाई ॥१ ॥ कुलह सेत सेत ही बागो ओर सुथन सेत सुहाई ॥ भूषन विविध कहालों बरनों बरनत बरनी न जाई ॥२ ॥ व्रज वधू मिलि रथ खैंचति अपनें घर पधराई ॥ विविध भाँति सामग्री सीतल करि मनुहार लिवाई ॥३ ॥ जल अचवाय बीरी खवावति प्रेम हरखि न समाई ॥ करत आरती जुगल रूप पर न्यौछावर बहुत दिवाई ॥४ ॥ इही विधि व्रज घर घर प्रति आवत भक्त जनन सुखदाई ॥

'व्रजपति' तब निरखि सुख बाढ्यों मात चरन बलि जाई ॥५ ॥
□ राग मल्हार □ (२) लालके रथकी शोभा देखी॥ कर्यो मनोरथ व्रजकी बनिता मानिक जडित विशेखी ॥१ ॥ बागो कुलही सारी चोली चित्रित कोमल सेती॥ दोउ भोग दोउ मिल अरपत तीजो सखी समेती ॥२ ॥ बीथन कीरत सुनत जो श्रवनन झांक झरोखन देखत॥ बंक विलोकन चितई चन्द्रमुखी धन्य भाग्य जिय लेखत ॥३ ॥ सिंघद्वार आये तब जसोमति गावत मंगल चार॥ पट की ओट कराय चहुंदिश लाई धरावन थार ॥४ ॥ बीरा देय दिवाय सबनकों हितसों आरति वारी॥ द्वारकेश प्रभुकों ले आई राई लोन उतारी ॥५ ॥
□ राग मल्हार □ (३) जेश्रीजगन्नाथ हरि देवा॥ रथ बैठे प्रभु अधिक बिराजत जगत करत सब सेवा ॥१ ॥ सनक सनंदन ओर ब्रह्मादिक इन्द्रादिक जुर आये॥ अपनी अपनी भेटसबे ले गगन विमानन छाये ॥२ ॥ रत्नजटित रथनीको लागत चंचल अश्व लगाये॥ नरनारी आनंदभये अति प्रमुदित मंगल गाये ॥३ ॥ गारीदेत दिवावत अपनपे यह विधि रथहिं चलाये॥ रामराय श्रीगोवर्धनवासी नगर उडीसा आये ॥४ ॥

दूसरे दिन मंगला में

□ राग मल्हार □ (१) तुम देखो माई रथ बैठे जदुराय॥ प्रात समै आवत अलसाने नैननि झुकि झुकि जाँय ॥१ ॥ संख चक्र गदा पद्म बिराजत सुंदरस्याम स्वरूप॥ स्वेत पिछोरा कुल्हे रही लसि मुक्तामाल अनूप ॥२ ॥ सीसफूल भाल तिलक बिराजत रवि ससि सम कनफूल॥ आरति वारत प्रानप्यारे पर 'गिरिधर' जमुना-कूल ॥३ ॥

रथ में से उतरने के पद

□ राग मल्हार □ (१) लालमाई खरेई बिराजत आज॥ रत्न खचित रथ ऊपर बैठे नवल नवल सबसाज ॥१ ॥ सूथन लाल काछनी शोभित

उरवैजयंती माल ॥ माथें मुकुट ओढें पीतांबर अंबुज नयन विशाल ॥२ ॥ श्यामअंग आभूषण पहरें झलकत लोल कपोल ॥ बारबार चितवत सबही तन बोलत मीठे बोल ॥३ ॥ यह छबि निरख निरख व्रजसुंदरि लोचन भरभर लेहो ॥ फिर फिर झांकझांक मुख देखो रोमरोम सुखपेहो ॥४ ॥ उतरलाल मंदिरमें आये मुरली मधुर बजाय ॥ निरख निरख फूलत नंदरानी मुख चुंबत ढिगआय ॥५ ॥ अति शोभित करलियें आरती करत सिहाय सिहाय ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरनलाल पर बारत नांहि अघाय ॥६ ॥

□ राग मल्हार □ (२) वा पट पीतकी फहेरान ॥ करगहि चक्र चरणकी धावन नहि विसरत वहबान ॥१ ॥ रथतें उतर अवनि आतुरव्है कचरजकी लपटान ॥ मानों सिंहशैलतें उतर्यो महामत्तगज जान ॥२ ॥ धन्य गोपाल मेरो प्रणराख्यो मेट वेदकी कान ॥ सोई अब सूर सहाय हमारें प्रकट भये हरिआन ॥३ ॥

रथयात्रा के पद

□ राग मल्हार □ (१) सुंदर बदनरी सुख सदन श्यामको निरख नैन मन थाक्यो ॥ हो ठाडी विथन व्हे निकस्यो ऊझकि झरोका झांक्यो ॥१ ॥ लालन एक चतुराई कीनी गेंद उछार गगन मिस ताक्यो ॥ बेरिन लाज भईरी मोकों में गंवार मुख ढांक्यो ॥२ ॥ चितबनमें कछु करगयो मोतन चढ्यो रहत चित चाक्यो ॥ सूरदास प्रभु सर्वस्व लेकें हंसत हंसत रथ हांक्यो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) तेरोई मान मनावन रथ चढ आयेरी मोहन मदन गोपाल ॥ नवदुलही वृषभान नंदिनी नव दुलहे नंदलाल ॥१ ॥ निरखत नेन बदन कमल मुख मीटीहे मदन विरहकी ज्वाल ॥ व्यास स्वामिनी कंचन वेली लपटीहे श्याम तमाल ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) तजहु सयानी कबके मग जोवत हे नंदकुमार ॥ चन्दन भवन सैया समार मग जोवत कबके तुव सारंग पानी ॥१ ॥ छांड मान कर सयानी उठ चल उन पर नातर वह ऐहें सुघर अयानी ॥ नंददास

छांड मान सुघर चली उठ जाय मिली गिरिधर पिय मिले सुखदानी ॥२ ॥

मल्हार जगायवे के पद अषाढ सुद ३ थी श्रावण सुद १०

□ राग मल्हार □ (१) प्रात समे सुमरन कर श्रीवल्लभ श्रीविट्ठलनाथ चरन राज लीजे ॥ घुम घटा आई चहूँ दिस तें ता मधि बीजरी जु नाम लहीजे ॥१ ॥ नाम प्रताप उधरयों सब जग निरमल होय रस पीजे ॥ 'रसिक' निज दास जान के सदा निकट अपनो कर लीजे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) उठत प्रात रसना रस पीजे लीजे श्रीवल्लभ प्रभुको नाम ॥ आनंद बीतत सब निशदिन मन वांछित सुधरे सब काम ॥१ ॥ सुजस गान मन ध्यान आन उर जे राखे दृढ आठो याम ॥ परमानंद दासको ठाकुर जेहि वल्लभ तेहि सुन्दर श्याम ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) लाल ओर ललनाजू बांह जोटी उठे प्रात पवनलगत कमल लपटात ॥ यह अजरज मोपें कहेत न बनि आवे दोउनको प्रतिबिंब देख दृग न समात ॥१ ॥ बागे बीर बनठन सोंधेही अरगजे एसे भीजे मधुकर तिनपें उड्यो न जात ॥ सूरदास मदनमोहन पियप्यारी पर वारत तनमन देखत नांहि अघात ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) झूम रहे बादर सगरी निशाके बर्षनकों रहे हें छाय ॥ जागे सब ग्वाल बाल आय दोर ठाडे द्वार लीने हे लाल जगाय ॥१ ॥ दोहनी धोय दीनी हाथ हलधर दीये हें साथ बछरा जोवत मग रांभत हें गाय ॥ परमानंद नंदरानी फूली अंग न समानी बार बार लेत हें बलाय ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) बादर झूम झूम बरसन लागे ॥ दामीनी दमकतें चोंक चमक श्याम घनकी गरज सुन जागे ॥१ ॥ गोपीजन द्वार ठाडे नारीनर भीजे मुख देखन कारन अनुरागे ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल ओतप्रोत रस पागे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) घुमडरहे बादर सगरी निंशाके अहो महेरि लालें

दीजे जगाय ॥ वर्षारितु कहुं बरसें अचानक बालक जाय डराय ॥१ ॥ चिरैयनके चुंह चहात जसोदा कर अपुनो निरवारि घरकाज ॥ दधि मंथन बैठि लावो दुध दही द्योस बढत व्रजराज ॥२ ॥ बछरा छोर बलभद्र जगाउं दुहि दुहि लावत हें सब गाय ॥ नंददास लाल जगाय तिहिं छिन लीनो अंक जसोदा माय ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (७) जसुमति लालको बदन दिखैयें ॥ भोर उठत आय देखत मुख निरखतही सचुपैयें ॥१ ॥ उमड रही घटा चहुंदिशतें बेग तुरत उठ धैयें ॥ परमानंद प्रभु उठे तुरतही निरख मुखारविंद बलजैयें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) उमड घूमड बादर आयेरी चहुंदिशतें जसोदा लाले जगाय ॥ ग्वाल बाल सब टेरत ठाडे बेग चलहु उठधाय ॥१ ॥ कबकी कहत बेग उठ बेठहु बहु बिध बिंजन धरेहें बनाय ॥ परमानंद प्रभु मात वचन सुन उठे लाल मुसकाय ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (९) घुमरे बादर सगरी निशाके बरखनकों रहेहें छाय ॥ जागे सब ग्वालबाल आये घेर ठाडे द्वार लीनेहे लाल जगाय ॥१ ॥ दोहनी धोय दीनी हाथ हलधर दीने साथ बछराजोवत मग रांभत हें गाय ॥ परमानंद नंदरानी फूली अंग न समानी वारवार करसों लेतहें बलाय ॥११ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) जब जब दामिनी कोंधत तब तब भामिनी डरात प्रीतम उरलावत ॥ उनमद मेघ घटा ध्वनि सुन आपन जागत पीयही जगावत ॥१ ॥ दादुरमोर पपैया बोलत मदमाती कोयल वन गावत ॥ कुंजकुटीर व्यासके प्रभु संग श्रीराधा रस पावत ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (११) बरखत गरज चहुंदिसते घन जसोमति उघारत मुख ॥ गोपीजन गावत ठाडी जस उठ हू लाल देखन आई ॥ मुख सुनत नागरी वचन स्याम घन गोपीनको दिखवत हें श्रीमुख ॥

□ राग मल्हार □ (१२) सगरी रेन उनपें बादरको भोर घटा अतीसे

जलभरी। कुंज बरखत गरजत श्रवन सुनत प्यारी सोवत उचक चौंक परी ॥१ ॥ जागे लाल कहत जो कहा भयो लाय लइ उर अंक भरी। बरस रहे तुव तनक चितये नव घन दामिनी मानो निवरी ॥२ ॥ हंस हंस कहत होत हरि न्यारे लेत करवट हियमांझ डरी। गोपीजन मन हास बढ्यो वृषभान सुता उन नेंन ढरी ॥३ ॥ तब प्यारी निरखत हरिको मुख लेत जमाय अरु पाय खरी। सूर स्नेहतें इन बातन कहा कछू नई रीत करी ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) प्रात समे सुमरन कर श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठलनाथ चरनरज लीजे॥ घूम घटा आई चहूँदिस तें ता मधि बीजरी जु नाम लहीजे ॥१ ॥ नाम प्रताप उधर्‌यों सब जग निरमल होय रस पीजे॥ 'रसिक' निज दास जान के सदा निकट अपनो कर लीजे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) जगाई माई बोलि बोलि इन मोरा॥ बरखत मेह अंधियारी छाई कैसे मिले नंद किसोरा ॥१ ॥ सेज अकेली अरु दामिनि कोंधत घन गरजत चहूँ ओरा॥ 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर मोहिं मन मेरो तेहि कोरा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) जागो हो तुम नंद किसोर॥ स्याम घटा चहूँदिस तें आई न्हेनी न्हेनी बूंदन बरखत थोर ॥१ ॥ व्रज नारी आई रस भींनी देखन कों मुख चंद चकोर॥ 'सूरदास' सोवत उठि बैठें बारत कंचन खोर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) ललित लाल भयो भोर जागों हो वारी ऊमडि घुमडि घटा आई झुमि॥ बदन ऊघारि नीहारत जसुमती उधरत दृग गए कंठ लुमि ॥१ ॥ गोपीजन देखत ठाढी अति हि अधिक प्रीत बाढी लिए ऊछंग नंदरानी ढोटा मुख चुमि॥ धन्य नंद 'सूरदास' जाके द्वार बसो वास मथना सहस्त्र जाके भवन रहे घुमि ॥२ ॥

मल्हार कलेऊ के पद अषाढ सुद ३ थी श्रावण सुद १०

□ राग मल्हार □ (१) बूंदन झर लायो आंगन जहां करत कलेऊ दोऊ भैया ॥ भवनमें आवो लाल संग सब लाओ बाल कहत यशोदा मैया ॥१ ॥ भीजेगो बसन तन खेलवेको सब दिन मेरो कह्यो मान लालन लेहों बलैया ॥ परमानंद प्रभु जननी कहत बात प्यावत मथ मथ दूधकी घैया ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) आंगन उजारे बैठ करो हो कलेऊ लाल भवन अंधेरो हे कहें मैया ॥ घुमडी घन घटा आई चहुंदिश तें छाई हंसत खरे दोऊ भैया ॥१ ॥ माखन मिश्री ओर ओट्यो पय प्यावत मथ मथ दूधको घैया ॥ एसो सुख देख नंददास प्रभुकी पुन पुन लेत बलैया ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) करत कलेऊ मदनगोपाल ॥ बहु बिध पाक थार मध्य राखे लेहु मनोहर लाल ॥१ ॥ जो भावे सो लेहु मेरे मोहन माधुरी मधुर रसाल ॥ परमानंद प्रभु बेग लेहो किन चहुँदिश घटा उमड रही लाल ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) करत कलेऊ किलकत दोऊ भैया ॥ सद माखन मिश्री ले जसोदा सान सान देत श्री मुख मैया ॥१ ॥ बरसत गरजत परत पनारे देखत हुलसत दोऊ भैया ॥ कृष्णदास प्रभुकी छबि निरखत ग्वाल बाल सबही हुलसैया ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) करत कलेऊ किलकत मोहन ॥ चहुंदिशतें गरजी घटा बरस रही मोहन लागे गोहन ॥१ ॥ बांट बांट ग्वाल बालकनकुं जूठे विंजन सोहन ॥ निरख चतुर्भुजदास प्रभु छबि वारत मुक्ता जोहन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) करत कलेऊ बलि अरु मोहन। गोपीजन निरखत दोऊकी छबि परम हुलास भयो मन ॥१ ॥ न्हेंनी न्हेंनी बूंदन बरसत गरजत सुन पतुवा ले ले भाजन। परमानंद निरख आनन्द भयो दुरे कुंजकी ओटन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) कहां कहूं छबि करत कलेऊ। थार साज बिंजन धर राखे कर कर कोर मुख देऊ ॥१॥ गरज गरज बरसन चहुं दिसतें मनमोहन कछु ओर हो लेऊ। सुनत वचन जननीके सूर प्रभु कही न जात मुख कहु ॥२॥

□ राग मल्हार □ (८) आंगन बेठि उजियारे करिहों कलेऊ भवन भवन अंधेरी हे मैया। उमड घुमड घटा आई चहुँदिसतें सुहाई हँसत खरे दोऊ भैया ॥१॥ माखन मिश्री ओर ओट्यो पय प्यावत मथ मथ दूधकी धैया। एसो सुख देखत नंददास प्रभु की पुन पुन लेत बलैया ॥२॥

□ राग मल्हार □ (९) करत कलेऊ किलकत हरि हँसि हँसि दे दे तार देखत परत पनारे॥ गोपी ग्वाल ओले लई गौ बछ पर छांई ओट भये भींजत इक किनारे ॥१॥भोर हि तें झरलायो केसें बन जईये आज तुम कहों कान आज भोजन जू कीजें॥ 'छीत स्वामी' गिरिधारी श्री विट्ठलेस हितकारी बेला भरे लिए ठाढे मीठो दूध पीजें ॥२॥

<u>मल्हार मंगला दरशन</u> (अषाढ सुद ३ थी श्रावण सुद १०)

□ राग मल्हार □ (१) बोले माई गोवर्धनपर मुरवा॥ तेसीये श्याम घन मुरली बजाई तेसेही उठे झुकधुरवा ॥१॥ बडी बडी बूंदन वर्षन लाग्यो पवन चलत अति झुरवा॥ सूरदास प्रभु तुम्हारे मिलन कों निश जागत भयो भुरवा ॥२॥

□ राग मल्हार □ (२) लागत बूंद कटारी पियाबिन॥ छिन भीतर छिन बाहिर आवत छिनमें चढत अटारी ॥१॥ दादुर मोर पपैया बोले कोयल कुजें कारी॥ सूरदास प्रभु तिहारे मिलेबिन दुःख व्याप्यो मोहि भारी ॥२॥

□ राग मल्हार □ (३) सखीरी मोय बूंद अचानक लागी॥ सोवत हुती मदन मद माती घन गरज्यो तब जागी ॥१॥ दादुर मोर पपैया बोले कोयल शब्द सुहागी॥ कुंभनदास लाल गिरिधरसों जाय मिली बडभागी ॥२॥

□ राग मल्हार □ (४) आये माई वरषाके अगवानी॥ दादुर मोर पपैया

बोले कुंजन बग पांत उडानी ॥१ ॥ घनकी गरज सुन सुधि न रही कछु बदरन देखडरानी ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर लाल भये सुखदानी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) आजमें देखे कुंवर कन्हाई ॥ प्रातसमें निकसे गायनसंग श्याम घटाजुरि आई ॥१ ॥ पीतवसन पहरें तन सुंदर कसुंभी पाग सुहाई ॥ मुक्तामाल रुरत उर ऊपर मुरली मधुर बजाई ॥२ ॥ कहाकहों अंग अंगकी शोभा मोपें वरणी न जाई ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर देखेतें क्योंहु कल न पराई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (६) श्याम देख नाचत मुदित वनमोर ॥ ताऊपर आनंद उमगभर सुनत मुरली कलघोर ॥१ ॥ चहुंदिशतें कोकिलाकल कूजत और दादुरकी रोर ॥ गोविंदप्रभु सखा संग लियें विहरत बल मोहनकी जोर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) जहांतहां बोलत मोर सुहाये ॥ सामन रमण भवन वृन्दावन घोरघोर घनआये ॥१ ॥ नेन्ही नेन्ही बूंदन वरषनलाग्ये व्रजमंडलपें छाये ॥ नंददास प्रभु संग सखा लियें कुंजन मुरली बजाये ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) देख सखी ठाडे नंदकिशोर ॥ श्रीगोवरधन परवतके उपर तेसेई नाचत मोर ॥१ ॥ लाल पागसिर सुभग लालके लाल लकुटिया हाथ ॥ लाल रतन सिरपेंच बिराजत मोतिनकी लर माथ ॥२ ॥ लालनके आभूषण अंग अंग पीत बसन फहरात ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन छबिलो स्याम सलोने गात ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (९) बोलत गोवर्धन पर मोर ॥ तेसीये नव वृषभान नंदिनी नवलही नंदकिशोर ॥१ ॥ तेसीये नवलनवल व्रजसुंदरि रसिक गोवर्धनधारी ॥ नवलहीबूंद परत बादर की छबि लागत अति भारी ॥२ ॥ देखदेख युवतीजन फूलत प्रीतम लोचनतारे ॥ सब व्रज जीवन श्रीविट्ठल

प्रभु नेंकहू न कीजिये न्यारे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) गिरिपर बोलरी मुरवा॥ मंदमंद मुरलीघोर सुन निरख स्यामकी उरवा ॥१ ॥ चहुंदिशतें दामिनिसी कोंधत पीतांबरको छुरवा॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर मानों वरखत अधर सुधाके धुरवा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (११) वृन्दावन क्यों न भये हम मोर॥ करत निवास गोवर्धन उपर निरखत नंदकिशोर ॥१ ॥ क्यों न भये बंसीकुल सजनी अधर पीबत घनघोर॥ क्यो न भये गुंजा बनवेली रहत स्यामजुकी ओर ॥२ ॥ क्यों न भये मकराकृत कुंडल स्याम श्रवण झकझोर॥ परमानंददास को ठाकुर गोपिनके चितचोर ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) गोवर्धन परवतके ऊपर परममुदित बोलतहें मोर॥ अतिआवेश होत सबहीके मन ठांयठांय नाचत मोर ध्वनि सुन मुरलीकी मंदस्वर कलघोर ॥१ ॥ श्रीअंग जलद घटा सुहाई वसन दामिनी इन्द्रधनु वनमाल मोतिनहार झलकडोर॥ कुंभनदास प्रभु प्रेम नीर बरखत नित निरंतर अन्तर गिरिवर धरनलाल नवल नंदकिशोर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) देखोमाई नई वरखा रितुआई॥ उमगी घटा चहुंदिशतें जुरजुर बिजुरि चमक सुहाई ॥१ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल शब्द सुहाई॥ निशदिन रहत सदा प्रीतम संग निरखत नेन अघाई ॥२ ॥ धन यमुना धन पुलिन मनोहर वायु वहत सुखदाई॥ सूरदास प्रभुकी छबि ऊपर नेनन नीर वहाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) सखीरी व्रजको वसवो नीको॥ वछरा गाय चरावत बनमें कान्ह सबन को टीको ॥१ ॥ वृन्दावन में होत कुलाहल गरजत सुर मुरलीको॥ ठाढे लाल कदंबकी छैयां मागत दान दहीको ॥२ ॥ उपजतहे अति प्रीत उर अन्तर गावत जस हरिजीको॥ सूरदास प्रभु मिलेहें गिरिधर यह जीवन सब हीको ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) निठुर पपैया बोल्योरी अधरतीयां ॥ हों भेचक पर रही सेजपे सुरत भई वे बतियां ॥१ ॥ राग मल्हार कियो काहुनें देह जरत जिहि भतियां ॥ कृष्णदास गिरिधरन मिलनकी नही भूलत गुण गतियां ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) तुमसों बूझत बात कुमार ॥ जेविरही तिनकी प्रीतको करिये को उपचार ॥१ ॥ आजकाल बोले सबपंछी गरजे वरषे मेह ॥ बेजुरहें भरहें मंदिरमें होय रही ताती देह ॥२ ॥ यह उपचार करे सोई मरमी जो उनकी गतिजाने ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर उपरेना फेर ओट मुसकाने ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) ससक ससक रही मोरनकी कूंक सुन अजहू न आये पीय मुरझानी मनमें ॥ चहूं ओर बादर तंबुआसे तनरहे पावस को पेसखांनो आय पर्योवनमें ॥१ ॥ वालम विदेश देश केसें राखुं बालवेष कोकिला की कूंक सुन हूंक उठी तनमें ॥ मदन मोहन बिन अति दुःख पावे वाम काम करे टूकटूक सुरजेसें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) में जाने हो जू ललना तहीं न सिधारिये जहाँ नयो नेहरां ॥ मूंह की हल मलाई मोहू सौं करन आये जिय की जो सौं ता सौं तुम बिनु सूनो बाके गेहरा ॥१ ॥ निसि के सुख की बात कह देत अंधर नैंना उर नख लागें छबि देहरा ॥ बेगि सबारे पांउ धारिये 'सूर' के स्वामी नातरु भींजेगो पियरो पट आवतु हे पीय मेहरा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) बरिखा को आगम भयो री चात्रक मोर बोलत चहूँ दिसा ॥ उनये उनये उठि करि बादर सोहाये तामें बग उडत समूहनि कर लाये दिन निसा ॥१ ॥ हरि समीप बेनु दीन केंसें भरो दादुर की रटनि नींद न परति निसा ॥ 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधरनलाल बिनु कहा भई मेरी दिसा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२०) मोहिं सों निठुराई ठानी ही मोहन प्यारे काहे कों आवन कह्यों साँचे हो जू साँचे।। प्रीत के बचन वाचे बिरहानल आंचे अपनी गरज को तुम इक पाई नाँचे ।।१ ।। भले हो जू जानें लाल अरगजा भींनी माल, केसरि तिलक भाल, मेंन मंत्र काचें।। निसि के चिन्ह चिन्हे, 'सूर स्याम' रति भीने, ताही के सिधारौ पीय जाके रँग राचे ।।२ ।।

□ राग मल्हार □ (२१) आगम आषाढी मेह बरसे हरियारी भूमि चंद वधू सेन मुख हिमत बढाई है। दामिनि पलीता नाल गरज तुरंग पौन मोर हुन बानि चोंच कंचन मढाई हैं।।१ ।। कोकिला गाबै कछु बग पांति के निसान मानौं दादुर भीखारी पाठक चात्रक पढाई है। 'व्रजाधीस' रूप कोटि जोबन मेरो पास धीर न धरेगो वार पावस चढाई हें ।।२ ।।

□ राग मल्हार □ (२२) आगम सांवन के क्यों भरिये।। चात्रक पिक मोर बोलत सुनि स्रवनन डरिये ।।१ ।। चहूँदिस उठत पाहर से दादुर स्याम सब रेन देखि देखि धीरज केसे धरिये।। 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर को आलि मिलन होय सो करिये ।।२ ।।

□ राग मल्हार □ (२३) आजु बन भींजत कुंवर कन्हाई।। निकसि सघन आगम के सखीरी गरजित घटा घन छांई ।।१ ।। न्हेंनी न्हेंनी बूँदन बरसन लाग्यों भींजत पीत पछोरी।। चमकत बीज गरज घन घोरत होत मलार धुनि थोरी ।।२ ।। दादुर मोर पपैया बोलत कोयल कुंक-सुहाई।। देखि देखि सोभा त्रिभूवन की 'सूरदास' बलि जाई ।।३ ।।

□ राग मल्हार □ (२४) बरिखा को आगम भयोरी चात्रक मोर बोलत चहूँदिसा।। उनये उनये उठि करि बादर सोहाये तामें बग उडत समूहनि कर लाये दिन निसा ।।१ ।। हरि समीप बेनु दीन कैसे भरो दादुर की रटनि नींद न परति निसा।। 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधरन लाल बिनु कहा भई मेरी दिसा ।।२ ।।

□ राग मल्हार □ (२५) ओचक ही आये पीये आय के दरस दीयो सोभित तन स्याम सुंदर अंग अंग अति अलसे हो ॥ घन के लक्षन सब तुम ही पें दिखियतु गाज इहाँ आये पीय अनत जाय बरसे हो ॥१ ॥ जो कोऊ चाहत तुम कों पीय तासूं तुम रुखे रहत जो कोऊ रूस जाय री सखी ताके पग परसे हो ॥ 'धोंधी' के प्रभु तुम बडे सोदागर धूर्त विद्या का पें सीखे स्याम सब बिधि सरसे हो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२६) अज हूं न आयो पिय परदेसी में जानी कोन देस मेह बरषायो ॥ जलद घुमडि आयो सीतल पवन लायो घन अंबर छायो बिनु देखे मेरी तनु अति दुःख पायो ॥१ ॥ सब्द सुनायो दादुर मोर ठौर ठौर मेघ मलार गायो ॥ 'रसिक' प्रीतम तुम बिनु एसें समें केसें होत मन भायो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२७) गिरि पर खेलत गिरि के राय ॥ सखा मंडली मध्य मनोहर मुरली मधुरे बजाय ॥१ ॥ फुल फल सकल वृंदाबन गुंजत मधुप लुभाई ॥ कुहु कुहुत मोर कोकिला कूजत स्त्रवन सुनत सुखदाई ॥२ ॥ बोलत खग मृग धेनु चरत तृन हरीत भोम मन भाई ॥ आनंद बरषत गोवरधन प्रेम पुंज रह्यो छाई ॥३ ॥ लावन निधि गुन निधि अंग अंग प्रति मो पें बरनी न जाई ॥ 'कृष्णदास' गुपाल लाल पर बार बार बलि जाई ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (२८) पिय बिन लागत बूंद कटारी ॥ दादुर मोर पपैया बोलत घटा जुरि आंई कारी ॥१ ॥ यह जोर सिखावन आये पहिलें क्यों न बिचारी ॥ 'परमानँद' प्रभु तिहारे मिलन कों प्रकट रैंनि पुकारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२९) बोलत मोर मदन के मातें ॥ गरजत गगन लीला रस उपजत सब्द सुनावत तातें ॥१ ॥ गिरिधरलाल बिदेस गमन कीयो तहाँ कोऊ आवे न जातें ॥ 'सूरदास' बिरहिनि अति व्याकुल प्रगट प्रेम के नातें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३०) बोल्यो पपी हरा पीउ पीउ बन ॥ बार बार पिय

सुरति जनावे बिरह संताप बढावे मेरे मन ॥१ ॥ ए लय पल घरी इक में जु पांऊं बलिहारी मधूप गनक गन ॥ पूरन काम रास मंडल पति नंद सुवन जुवतिन तन मन धन ॥२ ॥ मदन अगिन जारे कुच अंतर नाहि न धीर धरत छिनकु अब ही मन ॥ कहे 'कृष्णदास' लाल गिरिवरधर कब हि मिले हरि तरून स्याम घन ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३१) सखी सिखर चढि टेर सुनायो ॥ विरहीनी सावधान व्है रहियो सजि पावस दल आयो ॥१ ॥ बादर अति नौक तब नेति जा चढि चुटकी जनायो ॥ दामिनी सेल समाज घटा घन गरजि निसांन बजायो ॥२ ॥ दादुर पिक सुक भृंग झिल्लीन मिलि सुर गायो ॥ मदन सुभग कर पांच बान ले व्रज सन्मुख उठि धायो ॥३ ॥ जानि विदेस नंद नँदन कूं विरहीनी त्रास जनायो ॥ 'सूर स्याम' हम कहें कहा लगि नाथ प्रान विरमायो ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (३२) सरस सरवांग अंग अंग रंग भीजि के रिझि कें भवन आगमन कीनों ॥ अवधि बदि के सब बल जोरी नंद किसोर काहू बदलि ठोर इहि लीनों ॥१ ॥ सपथ करि सुंदरी हस्त तोही चरन धरि निरधार बोलि कल विमल बांनी ॥ बिहँसि स्याम नैंन चूंमि अमृत वेंन मेंन कोटि कला तन लुभानी ॥२ ॥ भुजबंध खेंची सुबल बिहँसि मंदिर चली मुख अधर जुद्ध न्याय डोलें ॥ झूंमत झूंमत सेज निकट नौतन चढी मन ही मुसिकाय कोऊ न बोलें ॥३ ॥ 'सूर' सकल सहचरी देखि गति तजि विकलता परम फल प्रानपति सुरति आये ॥ आए आदरु कीये सुमुखि बहू सुख दीये इकतें इक अधिक मोद पाये ॥४ ॥

मल्हार के पद

□ राग मल्हार □ (१) आयो आगम नरेश देश देशमें आनंद भयो मन्मथ अपनी सहायकुं बुलायो ॥ मोरनकी टेर सुन कोकिला कुलाहल तेसोई दादुर हिलमिल सुरगायो ॥१ ॥ चद्‌यो घन मत्तहाथी पवन महावत साथी

अंकुश बंकुश देदे चपल चलायो ॥ दामिनी ध्वजा पताका फरहरात शोभा बाढी गरज गरज धोंधों दमामा बजायो ॥२ ॥ आगें आगें धाय धाय बादर वर्षत जाय व्यारनकी बहुकन ठोर ठोर छिरकायो ॥ हरी हरी भूमि-पर बूढनकी शोभा बाढी वरण बरन रंग बिछोना बिछायो ॥३ ॥ बांधेहें विरही चोर कीनहे जतन रोर संजोगी साधनसों मिल अति सचुपायो ॥ नंददास प्रभु नंदनंदनके आज्ञाकारी अति सुखकारी व्रजवासीन मनभायो ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (२) गरज गरज उठेबादर चहुं ओरनते वर्षाऋतु माई आगम जनायो ॥ आनमनसिजदल साज विरहनिपर कर कोप मानों अति सुरपतिव्हे सहाय धनुष तनायो ॥१ ॥ आवन अवधि मन भावन पहेलें आय इतनों अंतर मोहि जनायो ॥ मदन मोहन श्याम तिहिं छिन आयमिले प्यारी अंकभर प्यारो पिय अपनायो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) देखो कैसी नीकीऋतु आई बदरा ओल्हर आये दामिनी कोंधत नीकी लियें पुरवाई ॥ ठोरठोर हरियारी कुंजन सघन ताई मोर सोर करें जेसें घन घहेराई ॥१ ॥ मनमोहन मन मोहनी क्रीडा विनोद दंपति परस्पर अति सुखदाई ॥ धोंधीके प्रभुकी यह लीला मोपें वरणत वरणी न जाई ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) आगम गहेरी गरज सुन घोर मेघकी औचकी बाल सलोंनी ॥ प्यारीके अंकमें दुररही एसें जेसें केहरि कंदर मंदिर में ध्वनिसुन मृगीके अंक मृगछोंनी ॥१ ॥ नेंक न धीरज धरे हीयो थरथर करे सोचत मनहीमन जेसें मुखमोनी ॥ नंददास प्रभु बेग चलो क्योंन भई जो कहा आगें होनी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) आली मोरनको सोर सुनि बेग चली राधा प्यारी सारी भीजे शिरकी रंग गुलावांसकी ॥ फुली बन बेली देखि मधुकर करत केलि भूमि भई हरी जो विपुन विलासकी ॥१ ॥ स्याम ओर स्यामा ठाडे कंदमकी डारतर आवत झक झोर झुक त्रिविध बयारकी ॥ अंसपर बाहु धरें मुरली बजावें ॥ हरि शोभा देखीनीकी धुनी लागतहे मलारकी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) तुम घनसेहो घनश्याम गरजगरज आये अनत जाय वरषे ॥ कहूं वरषत कहूं नेह जनावत कहूं लावत झरसे ॥१ ॥ मुखकी हलबलाई हमसों करन आये ओरनके तुम पग परसे ॥ धोंधीके प्रभु तुम बहुनायक इन बातन सरसे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) माईरी घन मृदंग रसभेदसों वाजत नाचत चपला चंचल गति ॥ कोकिला अलापत पपैया उरपलेत मोर सुघर सुरसाजत ॥१ ॥ दादुर तालधार ध्वनि सुनियत रुनझुन रुनझुन नुपूर बाजत ॥ तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक कुंज महेल दोऊ राजत ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) कारेरी बादर ओल्हर आये मानो कामके हाथी ॥ पवन महावत लिये धावत धुरवा सूंढ देखियत दशन बगपांति शोभा साथी ॥१ ॥ चातक मोर पिक घंटा धनुष झूल दामिनी मानों ध्वजा फेहेराती ॥ वरसत ताल जोर बूंद मानत काहूकी न कान धरधर करे सुरप्रभु छाती ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (९) दृगनमेरे जोलों सुख होय तोलों देखवो करों तिहारो आनन ॥ एकपल अंतर होय अंधियारो सूझत न दिन दीयें बोल न सुहात काहूको कानन ॥१ ॥ तुम्हारोई ज्ञान ध्यान तुम्हारोई सुमिरन तुम बिन मेरें ओर नाहिं कोऊ आनन ॥ तानसेन के प्रभु तिहारी मयातें मोय सब कोऊ लाग्यो पंहिचानन ॥१ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) किये घुंघट नील कलेवर दिपत जोति मुख सुखको सदन ॥ पीतांबर कटि बनमालकी लटक सोहे कंचन लकुट आछे जटित नगन ॥१ ॥ ऊँची चित्रसारी तामें बैठी वृषभान दुलारी जाको मुख देखदेख भीजत कदंबतट ॥ कहि भगवान हितरामराय प्रभु गाय ग्वालन की सुध गई जीयतें उचट ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (११) ईंद्र की अस्वारी पपैया नकीब कीनों देस देस खबर करी ॥ गरज नगारे बाज धुरवा निसान बान बदरा की फोज धाई बूंदन तीर कारी ॥१२ ॥ दामिनी रंक तामें ओला गोला तोपखानो कहा

करे बिरहन मन में बिचारी ॥ 'तानसेन' के प्रभु तुम बहु नायक जिन के पिया विदेस देस तिनको यह जग भारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) गुमानी घन बरषत काहे न पानी ॥ उमड घुमड आवत हें ओल्हरि बिजुरी की चमकानी ॥१ ॥ मकना हाथी जलद अनारी अंकुस दे दे हारी ॥ 'सूरदास' ब्याकुल भई ग्वालिन मदन बान ऊर मारी ॥२ ॥

मल्हार (अभ्यंग) के पद

□ राग मल्हार □ (१) ठाडे रहो अंगना हो प्रिय जोंलों नख शिख देह न भीजे ॥ न्हाय क्यों न लेहो लाल आंगन पानी डार देहो वस्त्र ओर पहेरो तब गृह देहरी पाय दीजे ॥१ ॥ रति के चिन्ह प्रगट देखियत हें ता पाछें तुम सोंह कीजे ॥ धोंधी के प्रभु तुम बहु नायक देह सुधार पाछे मोहि छीजे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) कोनकरे पटतर तेरी गुण रूप रास राधेप्यारी ॥ श्रियप्रभृति जेती जगयुवती वारफेरडारों तेरेया रूपपर ॥१ ॥ रागमल्हार अलापत सकल कला गुण प्रवीण हेरीतू सुघर ॥ गोविंद प्रभु को तूं न्यायनवसकर कहेत भलेजु भले व्रजराज कुंवर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) वृन्दावन कनकभूमि नृत्यत व्रज नृपति कुंवर ॥ उघटत शब्द सुमुखी रसिक ग्रग्रततत तथेईथेई गति लेतसुघर ॥१ ॥ लाल काछ कटि किंकिणी पगनूपुर रुनुझुनात बीचबीच मुरली धरत अधर ॥ गोविन्द प्रभु केजु मुदित संगी सखा करत प्रशंसा प्रेमभर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) पावस नटनटयो अखारो वृन्दावन अवनीरंग ॥ नृत्यत गुणरास बरुहा पपैया शब्द उघटत ओर कोकिला कल गावत तानतरंग ॥१ ॥ जलधर तहां मंदमंद सुलप संचगति भेद उरप तिरप मानलेत सरस मृदंग ॥ गोविन्द प्रभु गोवर्धन सिंहासन पर बैठे सुरभी सखा सभा मध्य रीझे वह ललित त्रिभंग ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) आईजू स्याम जलद घटा ओल्हर चहूंदिशतें

घनघोर ॥ दंपति अति रस रंग भरे बांह जोटी फिरत कुसुम बीनत कालिंदीतटा ॥१ ॥ नेन्ही नेन्ही बूंदन बरखन लाग्यो तेसीय चमकत बीजुछटा ॥ गोविंद प्रभु पिय प्यारी उठि चलि ओढें लालपट दोरलियो जाय बंसीबटा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) गावत रसिकराय व्रज नृपति कुंवर ॥ तीसरे सुर संचबांध रत्नखचित अधोटी सोहत दक्षिणकर ॥१ ॥ रागमल्हार अलापत चोखीतानन मनहर्यो गंधर्व खेचर ॥ गोविन्द प्रभु पर कुसुम वरखत कहेत जयजय सकल कला गुण प्रवीणहें अति सुघर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) माईरी श्यामघन तन दामिनी दमकत पीतांबर फरहरे ॥ मुक्तामाल बगजाल कही न परत छबि विशाल मानिनीकी अरहरे ॥१ ॥ मोर मुकुट इन्द्रधनुषसो सुभग सोहत मोहत मानिनी द्युत थरहरे ॥ कृष्ण जीवन प्रभु पुरंदरकी शोभा निधान मुरलिका की घोर घरहरे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) श्रीवृन्दावन भुवि कुन्दादिक युत मंदानिल रुचिरे ॥ध्रु० ॥ पुलिनोदित नवनलिनोदर मिल दलिनोदित रसगाने ॥ कर्णादिक पुट चरणांबुज ध्वनि चारु हरिणाक्षि वलिते ॥ निजरसमयता प्रकटन परितःप्रकटित रासविहारे ॥ गिरि धारण रतिहारण कारण ममरतिरस्तु सदारे ॥

□ राग मल्हार □ (९) सारीमेरी भीजतहेजु नई ॥ अबही प्रथम पहेर हों आई पिता वृषभान दई ॥१ ॥ अपनो पीतांबर मोहि उढावो वरखा उदित भई ॥ सुंदर श्याम जायगो यह रंग बहुविध चित्र ठई ॥२ ॥ कहि हों कहा जाय घर मोहन डरपत हों अतिई ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर मुदित उछंग लई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) हों केसें आऊं बूंदन भीजे मेरी सारी ॥ एक घन गरजे दूजे पवन झकोरे तीजे रेन अंधियारी ॥१ ॥ एक गोरी दूजे दधिकी

मथनीयां तीजे यमुनाजल भारी ॥ सूरदास प्रभु वेसर अरुझी लालन आय निवारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (११) मदन मोहन बन देखत अखारोरंग॥ सुलप सचगति वरुहानृत्यकरे कोकिला कुहु कुहु तानतरंग ॥१ ॥ उघटत शब्द पपैया पीउपीउ करे मधुव्रत गुंज मानों सरस उपंग॥ गोविंद प्रभु रीझे सकल सभा सहित जल धर सुघर बजावत मृदंग ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) अरी इन मोरनकी भांत देख नाचत गोपाला॥ मिलवत गति भेदनीके मोहन नटशाला ॥१ ॥ गरजत घन मंदमंद दामिनी दरशावें॥ रमक झमक बूंदपरें राग मल्हार गावें ॥२ ॥ चातक पिक सघन कुंज वारबार कूजें॥ वृन्दावन कुसुमलता चरण कमल पूंजे ॥३ ॥ सुरनर मुनि कामधेनु कौतुक सब आवें॥ वारफेर भक्ति उचित परमानंद पावें ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) एरी यह नागर नंदलाल कुंवर मोरन संगनाचें॥ कटितटपट किंकिणी कल नूपुर रुनझुन करे नृत्य करन चपल चरण पात घात सांचे ॥१ ॥ उदित मुदित सघन गगन घोरत घन देदेभेद कोकिला कलगान करत पंचम स्वरवाचें॥ छीत स्वामी गोवर्धननाथ साथ विहरत वरविलास वृन्दावन प्रेमवास याचें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) अरीयह नागर नंदलाल कुंवर मोरनसंग नाचें॥ कूजत कटि किंकिणी कल नूपुर पद साचें ॥१ ॥ उरप तिरिप सुलप लेत धरत चरण खांचे॥ वारवार हरख निरख चंचलगति सांचे ॥२ ॥ उदित मुदित सघन गगन भेद कोऊ न वांचे॥ कोकिला कलगान करत पंचम सुर सांचे ॥३ ॥ छीतस्वामी गिरिवरधर विट्ठलेश वांचे॥ विहरत वन रासविलास वृन्दावन राचें ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) आज सखी गोकुलचंद बिराजे॥ नेन्ही नेन्ही बूंदन बरसन लाग्यो मंद मंद घन गाजे ॥१ ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल

बनमाला अति राजे ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर प्रगटे भक्तहित काजे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) धूंम रंग सारी पहिरें आवत पावस प्यारी ॥ पचरंग किनारी सोहें मानौं ईंद्र धनुष यो हें बग पंगति मानौं मुक्तामाल गरे डारी ॥१ ॥ दसनन दमकत दामिनि चमकत धुरबा सी अलकें घुघर बारी ॥ 'हरिजिवन' प्रभु प्रेम नीर बरखत अग ग ग ग ग ग ग बूंद परत देत तारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) अब वे मोरा बोलत नाही ॥ करि करि सुरति नंद नंदन की सोचि हीये पछिताही ॥१ ॥ तब घनश्याम निरखि निजु नैंननि मुदित होत मन माही ॥ निरतत चित्र विचित्र विविधि गति आनंद उर न समाही ॥१ ॥ ढूंढत फिरत बाग बन बिथिनि तरु कदंब की छांही ॥ 'सूरदास' प्रभु के बिरही सब बार-बार मुरझाही ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) देखो माई सुंदरता के नैंन ॥ अति हि स्वच्छ चपल अनियारे सहे जल जीवत मेंन ॥१ ॥ कमल मीन मृग खंजन वसुधा तजि अपने सुख चेंन ॥ निरखि सखी सब इक अंस पर सब सुख कीयों हे देन ॥२ ॥ जब अपने रस गूढ भाव करि कछुक जनावत सेंन ॥ ' सूरदास ' प्रभु गोवरधन धर जुवति मन हर लेन ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) असुवन कों लग्यों झर दूर गयो कजरा स्याम मेरे घर नाही कासों करुं मुजरा ॥ चात्रक वियोगी भयों फूल्यों हे वैराग्य मन बिरही चोमासो भयो नैंन भये बदरा ॥१ ॥ दीन के दयाल कान्ह चतुर प्रवीन सहान आरति के बिन्दु मानौं जाने जोग सगरा ॥ कहि 'हरिदास' कोउ हरि जु सौं जाय कहो दाम के दमामा बाजे काम करे झगरा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२०) आज ब्रज पर बरषत बरषासी ॥ देखत सुनत अधिक ऋचि उपजत तन मन होत हलासी ॥१ ॥ आए मेघ चहूँदिस गरजत बिच चमकत चपलासी ॥ कोकिला सब्द करत द्रुम उपर निरतत मोर

कलासी ॥२ ॥ जल पूरत सरवर अति सोभित पवन बहत मलयासी ॥ सारस हँस चकोर सबे मिलि कूंजत हें सुखरासी ॥३ ॥ देखि सकल कहत परसपर मुदित भए व्रजवासी ॥ करत केलि गिरिधर पीय तहँ 'गोविंद' चरन उपासी ॥४ ॥

मल्हार - शृंगार दर्शन के पद

□ राग मल्हार □ (१) देखो माई सुन्दरताको रास ॥ अति प्रवीण वृषभान नंदिनी निरख बंधे दृगपास ॥१ ॥ अंग अंग प्रति अमित माधुरी भृकुटी मदन विलास ॥ जबतें दृष्टिपरी सुन्दर मुख वशकीने अनायास ॥२ ॥ प्रथम समागम कों सुन सजनी उपजतहे अतित्रास ॥ अबतो मनवचक्रम सबदीनों यह सुन सूरजदास ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) देखोमाई सुन्दरताकी सीवा ॥ व्रज नवतरुणी कदंब मनोहर निरख करत अधग्रीवा ॥१ ॥ जो कोई कोटि कल्पलग जीवे कोटिक रसना पावे ॥ तो यह रुचिर वदनारविंद की शोभा कहत न आवे ॥२ ॥ देवलोक भुवलोक रसातल सुनकविकुल मत डरिये ॥ सहज माधुरी अंगअंगकी कहो कासों पटतरिये ॥३ ॥ हित हरिवंश प्रताप रूपयुत विव्हल श्याम उजागर ॥ जाकी भ्रू विलास पशुपक्षी दिन विथकित वनसागर ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (३) देखो माई अबलाकी बलरास ॥ अतिगजमत्त निरंकुश मोहन निरखबंधे लटपास ॥१ ॥ अतिही पंगु भई मनकी गति बिन उद्यम अनायास ॥ तबकी कहा कहों जब प्रिय प्रति चाहत भृकुटी विलास ॥२ ॥ कच संयमन ब्याज भुजदरसत मुसिकनि वदन विकास ॥ हितहरिवंश अनीत रीत कित डारत हे तृणत्रास ॥३ ॥

□ राग मल्हार □(४) देखामाई रूप सरोवर साजें ॥ व्रजवनिता व्रजवारि वृन्दमें श्रीव्रजराज बिराजें ॥१ ॥ लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीनसलोलें ॥ कुच चक्रवाक विलोक वदन विधु विछुरि रहे

बिनबोलें ॥२ ॥ मुक्तामाल बगपांति मनोहर करत कुलाहल कूल ॥ सारस हंस चकोर मोर शुक वैजयंती समतूल ॥३ ॥ कनक कपिश निचोल विविध रंग विरह व्यथा बिसरावे ॥ सूरदास आनंद सिंधुकी शोभा कहेत न आवे ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (५) तुम देखो माई सुंदरताको रूप ॥ मन बुद्धि देदे चिते रही हों कमल नयनको रूप ॥१ ॥ कुंचित केश सुदेश अलिगण वदनजो सहज सरोज ॥ मकर कुंडल किरनकी छबि दुरत फिरत मनोज ॥२ ॥ अरुण अधर कपोल नासिका सौभग ईषदहास ॥ दशननकी द्युति जलज नवशशि भ्रुकुटि मदन विलास ॥३ ॥ अंग अंग अनंग जीत्यो रुचिर उर वनमाल ॥ शोभा सूर हृदय परिपूरण सब सुख देत गोपाल ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (६) वरसिरे सुहाये मेहा तें हरिको संगपायो ॥ भीजनदे पीतांबर सारी बडी बडी बूंदन आयो ॥१ ॥ ठाडे हंसत राधिका मोहन राग मल्हार जमायो ॥ परमानंद प्रभु तरुवरके तर लाल करत मनभायो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) गरजगरज रिमझिम रिमझिम बूंदन लाग्यो बरषनघन प्रीतम प्यारी राजें रंगमहेल ॥ बोलत चातक मोर दामिनी दमक आवे झूमझूम बादर अवनी परसन ॥१ ॥ तेसोई हरियारो सावन मन भावन इन्द्रवधू ठौरठौर आनंद उपजावन ॥ पियविहारी प्रियासंग गावत मल्हार राग ललित लता लागी सुनसुन सरसावन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) सखीरी लाल चकडोरि फिरावत ॥ सुंदरडोर झलकत अंगुरिनसों मधुरेंई झनकावत ॥१ ॥ ठाडेभये निकस सिंघद्वारें सुबल श्रीदाम बुलावत ॥ सजलघटा देखत बादरकी राग मल्हार ही गावत ॥२ ॥ कछुक वचन कहि लाग श्रवणनसों काहूकुं न जनावत ॥ जोइबाल आवतजनों घातन तिनहीसों उरझावत ॥३ ॥ तब मुसकात हँसत बोहोयों खुलजब आपुन समझावत ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरनलाल कछु गाढे मनहीं गावत ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (९) दोऊजन क्रीड हें बनमांही ॥ उमडी घटा घुमडी चहुंदिशतें देखत उर न समाई ॥१ ॥ देखियत घटा धावत कुंजनकों बीचही बूंदन आई ॥ कृष्णदास गहि ओट कदंब की भीजत कुंज सुहाई ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) राधे रूपकी घटा पोषत चातक मदन गोपालें ॥ दामिनी वारों दशनन ऊपर छूटी अलकन पर धुरवा बारों बग पंगति मुक्तामालें ॥१ ॥ इन्द्रधनुष पचरंग सारीपर वारडारों ओर यावकपर बूठनलाल ॥ जनभगवान मदन मोहनपर तनमन पिकवारूं सुन सुन बचन रसाल ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (११) भजसखी हरिगोवर्धन रानो ॥ तुलसी वल्लभ कमलावल्लभ राधावल्लभ बानो ॥१ ॥ जाके तेजप्रताप रूप बल नहीं उपमा को आनो ॥ प्रतिदिन तरुण लावण्य सागरमें लजिबूडत शशि भानो ॥२ ॥ गोपीनाथ सुयश रसलंपट मधुप करत गुणगानो ॥ ताकी ओट रटत कृष्णदास सखी चातक अंबुदमानो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) जोसुख होत गोपालें गायें ॥ सो न होत जपतप व्रत संयम कोटिक तीरथ न्हायें ॥१ ॥ गदगद गिरा लोचन जलधारा प्रेमपुलक तनुछायें ॥ तीनलोक सुख तृणवत लेखत नंदनंदन उर आयें ॥२ ॥ दियें नहीं लेत चार पदारथ श्रीहरिचरण अरुझायें ॥ सूरदास गोविंद भजनबिन चितनही चलत चलायें ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) ए सखी सावन आयों बरखा ऋतु आगम नैंना तपत प्रान प्यारे बिन ॥ चहूँ दिस तें घन उमड घुमड छाये छतियां उमंगी कान्ह कारे बिन ॥१ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोकिला की कूंक छाँडे हू न मारे बिन ॥ 'सूर' के प्रभु सों इतनी बीनति मेरी घायल कों कल न पुकारे बिन ॥२ ॥

मल्हार - कसुंबा छठ और लाल घटा के पद

□ राग मल्हार □ (१) सब सखी कसुंबा छठही मनावो॥ अपने अपने भवन भवनमें लालही लाल बनावो॥१॥ बिविध सुगंध उबटनों लेकें लालन उबट न्हवावो॥ उपरना लाल कसुंबी कुल्हे आभूषन लाल धरावो॥२॥ यदि छबि निरख निरख व्रज सुन्दरि मन मन मोद बढावे॥ लाल लकुटी कर मुरली बजावे रसिक सदा गुन गावे॥३॥

□ राग मल्हार □ (२) बरखत मेघ मोर पिक बोलत लागत बूंद सुहाई॥ तब गिरिधर पिय गोड रागकर मद मंद ध्वनी गाई॥१॥ कसुंभी चीर देख मेरो भीजे तब गोपाल उर लाई॥ या सुखकी बतियां सुन सजनी मोपें बरनी न जाई॥२॥ कनक लता श्रीराधा भामिनी श्याम तमाल अरुझाई॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर अधर माधुरी प्याई॥

□ राग मल्हार □ (३) नीकसि ठाडी भईरी चढ नवल धवल महेल रंगीली आलीयन मांझ॥ तेसेई उनये घन तेसीये बूंदन तेसीये कसुंभी सारी तेसीये फुलीहे सांझ॥१॥ कोऊ प्रवीन सो बीन बजावत कोऊ स्वर झीने झनकावत झांझ॥ नंददास लटकत पिय प्यारी छबी रची विरंची मानों निपुणता भई वांझ॥२॥

□ राग मल्हार □ (४) ठांय ठांय नाचत मोर सुन सुन नवघनकी घोर बोलतहें चहुं और अतीही सुहावने॥ घुमडत घनघटा निहार आगम सुख जाय विचार चातक पिक मुदित गावत द्रुमन बैठे सुहावने॥१॥ नवल वनमें पहरे तनमें कसुंभी चीर कनक वरण श्याम सुभग ओढे वसन पीत सुहावने॥ पावस ऋतुको रंग बिलास दास चतुर्भुज प्रभुके संग मोहत कोटिक अनंग गिरिधर पिय अंग अंग अतिही सुहावने॥२॥

□ राग मल्हार □ (५) आजबन भीजत कोंन कुमार॥ को अबसेर किये हिये में बैठीहे घरबार॥१॥ काकी भीजे पाग कुसुंभी सोंधे भीजे वार॥ कटि पिछोरा भीजे उपरना भीजे मोती हार॥२॥ कोन चढत भीजे वृक्षन

पर कोन बुलावत गाय॥ श्रीविट्ठल गिरिधर तेरे प्रीतम नवनिकुंजके राय॥३॥

□ राग मल्हार □ (६) रंगनीको फूही थोरी थोरी॥ हरित भूमि तामें कसुंबी चीर फबी सखी समुह ओट बनी जोरी॥१॥ नवल पीतांबर गिरिधर पीय तन नवल घटा ओर नौतन गोरी॥ पावस रितु सुख दास चत्रभुज स्वामिनी बिलास नवबनकी खोरी॥२॥

□ राग मल्हार □ (७) लाल माई बाधें कसुंभी पाग॥ कसुंभी छड़ी हाथमें लीयें भीज रहे अनुराग॥१॥ कसूंभोई कटि बन्योहे पिछोरा कसुंभी उपरेना॥ कसुंभी बात कहत राधासों कसूंभे बने दोऊ नयना॥२॥ हरित भूमि यमुना तट ठाडे गावत राग मल्हार॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन छबीलो श्याम घटा अनुहार॥

□ राग मल्हार □ (८) मोहन शिरधरें कसुंबी पाग॥ तापर धरी कुल्हे शिर सोहत हरित भूमि अनुराग॥१॥ तेसेही बन्यो कसुम्भी पिछोरा छडी हाथमें लीने॥ करत केलि गिरिधरनलाल तहां परमानंद रसभीने॥२॥

□ राग मल्हार □ (९) पहेरें सुभग अंग कसुंभी सारी सुरंग भूमि हरियारी तामें चन्द वधू सोहे॥ हरिके संग ठाडी कंचुकी उतंग गाढी बाल मृगलोचनी देखत मन मोहे॥१॥ तेसीये पावस ऋतु तेसेई उनये मेघ तेसीये बानिक बनी उपमाकों कोहे॥ कुंभनदास स्वामिनी विचित्र राधिका भामिनी गिरिधर पिय मुख इकटक जोहे॥२॥

□ राग मल्हार □ (१०) कुंज मेहेलके आंगन मध्य पीय प्यारी बांह जोटी फिरत रंगसों रगमगे॥ अरुण बसन धरें मोतिन की माला गरें च्होंटे शरीर चीर नीरसों सगवगे॥१॥ छूटे वार भीजन लागे ललित कपोलनसों कुण्डल किरण नग भूषण जगमगे॥ नागरीदास घन वरखत पानी तामें रूपके जहाज मानों डोलत डग मगे॥२॥

□ राग मल्हार □ (११) भवन मेरे केसे लागत नीके॥ जबहि लाल

आवत यह मन्दिर खरे भांवते जीके ॥१ ॥ कसुंभी पाग खुभि रही नीकी विहंसति नंदकिशोर ॥ तेसीये श्याम घटा जुर आई बोलत वन मोर ॥२ ॥ तादिन विधना भली बनाई अकेलीही घर मांझ ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन लालसों बातनही भई सांझ ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) व्रजपर नीकी आजघटा ॥ नेन्हीनेन्ही बूंद सुहावनी लागत चमकत बीजछटा ॥१ ॥ गरजत गगन मृदंग बजावत नाचत मोरनटा ॥ तेसेई सुरगावत चातक पिक प्रगट्योहे मदनभटा ॥२ ॥ सब मिलि भेटदेत नंदलालहिं बैठे ऊंचेअटा ॥ कुंभनदास गिरिधरनलाल शिर कसुंभी पीतपटा ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) आजबन भीजत कोंन कुमार ॥ को अबसेर किये हियेमें बैठीही घर वार ॥१ ॥ काकी भीजे पाग कसुंभी सोंधेभीजे वार ॥ कटि पिछोरा भीजे उपरेंना भीजे मोतिनहार ॥२ ॥ कोनचळत भीजे वृक्षनपर कोन बुलावत गाय ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर तेरे प्रीतम नवनिकुंजके राय ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) ललित लतान पर नांन्ही नांन्ही बूंदपरें भीजत रंगीले दोऊ प्रीतम पियारी हँसहँस बात करें भुजभुज मूलधरें लाग्यो पीतपट तन सुरंग कसुंभी सारी ॥१ ॥ बिंब वदनपर रही कछु फूहीं फवि उपमा न जात कछु जीयमें विचारी ॥ रसिक उभय उदार गावत राग मल्हार हित द्वे सुनि तान देत प्रानवारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) देहो कान्ह कांधेको कंबर ॥ रिमझिम रिमझिम घन वरषतहें भीजे कसुंभी अंबर ॥१ ॥ घन गरजत डरपतहों मोहन देख मेघके डंबर ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर साथ ग्वालको संभर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) लाल हि लालके लाल हि लोचन लाल हिके मुख लाल हि बीरा। लाल पिछोरा बन्यो अति सुन्दर लाल बैठे जमुना तट तीरा ॥१ ॥ लाल ह्नि पाग सोहे अति सुन्दर लाल ही साज मनोहर धीरा।

'गोविन्द' प्रभुकी लीला निरखत लालके कंठ विराजत हीरा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) नीके लाल लागत आज सुहाए। श्री वृषभान नंदिनी रचि रुचि आभूषन पहिराए ॥१ ॥ पाग कसुंभी सीस विराजत मधि लटकन लटकाए। हीरा लाल रतन निरमोलक रचि रचि पेच बंधाये ॥२ ॥ अलक तिलक लखि आननकी छबि कोटिक चंद लजाए। सिंघद्वार ठाढे पिय मोहन निरखत मो मन भाये ॥३ ॥ बलि बलि जाऊं मुखार विन्दकी दरसन ताप नसाये। 'श्रीविठ्ठल गिरिधरन' छेलछबीलो निरखि नैन सचुपाए ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) देखो माई कालिंदी अति कारी ॥ ता मधि ठाढे श्री नंद नंदन घोरें ईंद्र अति भारी ॥१ ॥ लाल पाग रंग चुवत आवत लाल पिछोरा छबि न्यारी ॥ विजुरी चमकि महा डर लागत ओर बोलत कोकिला री ॥२ ॥ भींजत गोपी महा घन तरसत मलार जम्यो सुखकारी ॥ 'सूरस्याम ' निरखि यह सोभा बार वार बलिहारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) आजू माई पीतांबर फहरात ॥ स्यामा स्याम अधिक छबि लागत गौर सांवरे गात ॥१ ॥ कुंडल लोल कपोल विराजत लाल पाग सरसात ॥ 'चतुरभुज' प्रभु की बानिक निरखति सोभा बरनी न जात ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२०) आजु छबि देखियतु हे गिरिधारी ॥ कसुंभी पाग सुरंग पिछोरा छबि लागत अति भारी ॥१ ॥ केसरी रंग भीज्यों उपरेना उर बनमाल गरे ॥ स्याम अंग पर भूषन सोभित मुरली अधर धरें ॥२ ॥ एसी भाँति चले गौचारन नंद कुमार कन्हाई ॥ 'श्रीविठ्ठल गिरिधर' में देखे कहि न जात छबि माई ॥३ ॥

मल्हार - श्याम घटा के पद

□ राग मल्हार □ (१) स्यामघन कारे कारे बादर ऋतु पावसहें कारे ॥ कारी कोयल वन वन बोलत मोरकरा हिलकारे ॥१ ॥ कारे धुरवा धार

छूटतहें कारे कारे काजर भारे ॥ कारे मदन सदन सूरज प्रभु कारे चीर संभारे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) देखो माई अति बनेहें गोपाल ॥ तन राजतहे श्याम पिछोरा श्याम पाग धर भाल ॥१ ॥ स्याम उपरना श्यामही फेंटा श्याम घटा अति लाल ॥ रसिक प्रीतम अबकें जो पाऊं गरें धराऊं वनमाल ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) देखो माई बसन ओरही चटक ॥ शोभा देत सरस सुंदर तन स्याम पाग सिर लटक ॥१ ॥ स्याम पिछोरा श्याम उपरना श्याम छरी हाथ मटक ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लालदेख अखीयां रही अटक ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) व्रज पर श्यामघटा जुर आई ॥ तेसीये दामिनी चहुं दिश कोंधत लेत तरंग सुहाई ॥१ ॥ सघन छांय कोकिला कूजत चलत पवन सुखदाई ॥ गुंजत अलीगण सघन कुंजमें सौरभकी अधिकाई ॥२ ॥ विकसत श्वेत पांत बगलनकी जलधर शीतल ताई ॥ नवनागरि गिरिधरन छबीलो कृष्णदास बलिजाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (५) श्याम घटा उठी चहुंदिसतें बरसन लागो भारो ॥१ ॥ स्यामही पाग स्यामही पटका प्यारी जुको भीज्यो सालु कारो ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन लाल पर तन मन धन सब वारो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) बादर भरन चलेहें पानी ॥ श्याम घटा चहुं ओरतें आवत देख सबे रति मानी ॥१ ॥ दादुर मोर कोकिला कलरब करत कोलाहल भारी ॥ इन्द्र धनुष बग पांति श्याम छबि लागतहे सुखकारी ॥२ ॥ कदम वृक्ष अवलंब श्याम घन सखा मंडली संग ॥ बाजत बेन अरु अमृत सुधा सुर गरजत गगन मृदंग ॥३ ॥ रितु आई मन भाई सबे जीय करत केलि अति भारी ॥ गिरिवर धरकी या छबि उपर परमानंद बलिहारी ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (७) श्याम साज पर श्याम मनोहर श्याम घटा उमगि

अति भारी। उत घनमें दामिनी अति दमकत इत वसनन पर झलक किनारी ॥१ ॥ श्याम पिछोरा दुमालो धरे सिर हीराको सिंगार माला अति भारी। मृगमद बेंदी ललित भाल छबि पर 'परमानंददास' बलिहारी ॥२ ॥
□ राग मल्हार □ (८) कारी घन घटा भारी प्यारी पहिरे कारी सारी नैंन में सोहे तेरो कारो कजराई॥ कारो ई कुरंग घिस के लगायो अंग कारी चोली कंचुकी भली जू भींजाई ॥१ ॥ कारो पाट सुंदर आभूषन पोये सब कारी बेनी पीठपर बे हे सुखदाई॥ एसे में एसी व्है हे मिलि कान्हर कारें सौं आज तो सबे कारो 'रसिक' मन भाई ॥२ ॥

मल्हार - जांबली घटा के पद

□ राग मल्हार □ (१) निरख सखी नीलांबर को छोर॥ झूम रह्यो सखी वदन चंदपे आई घटा घनघोर ॥१ ॥ हंसन लसन दामिनी द्युति बिलसत दशनख चंद चकोर॥ कृष्णदास प्रभु रूप घटा में मानो नाचत मोर ॥२ ॥
□ राग मल्हार □ (२) कुमुदवन स्याम करतहें विहार॥ रही ढरक शीर पाग सोसनी गावत राग मल्हार ॥१ ॥ तेसोई बन्यो सोसनी पिछोरा मोतिन माल गरेंधार॥ बरसत मेह उमग्यो चहुंदिशतें न्हेनी परत फुंहार ॥२ ॥ जमुना तट वृन्दावन कंजन राधाजु करत सिंगार॥ जदपि सूर गुन कहांलो बखानो रहे प्रेम पचिहार ॥३ ॥
□ राग मल्हार □ (३) बादली साज बन्यो अति सुन्दर चहुंदिसतें बादर जुरी आई ॥ध्रुव॥ गरजत गगन दामिनी दमकत ता मधि जुगल किसोर सुहाई। बादली पाग पिछोरा बादली सारी चोली सुभग मनभाई॥ १ ॥ मानिकको सिंगार सुभग अति तिलक करनफूल भाल धराई। सुभग चन्द्रिका कलगी लटकन सीसफूल बेसर लर लाई ॥२ ॥ पोहोंची और दुगदुगी सोभित गुंजमाल सिरकंठ धराई। फूलनकी माला अति मेहकत 'नंददास' निरखत सुख पाई ॥३ ॥

मल्हार - गुलाबी घटा के पद

□ राग मल्हार □ (१) रही झुक लाल गुलाबी पाग ॥ तापर एक चंद्रिका राजत लाल तिलक छबि लाग ॥१ ॥ तेसोई बन्यो पिछोरा गुलाबी कोर जरकसी लाग ॥ हाथ लकुटिया लाल गुलाबी मुरली शब्द सुहाग ॥२ ॥ चीर गुलाबी अबही राधिका अपने हाथ शृंगारी ॥ आप लाल संग रंगीली छबीली दास रसिक बलिहारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) मधुवन श्याम करत हें विहार ॥ रही ढरक रंग पाग गुलाबी गावत राग मल्हार ॥१ ॥ तेसोही पिछोरा लागत भारी मोतीनमाल संवार ॥ सूर घटा घुमडी चहुंदिसतें तिनकी परत फुंहार ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) रही झुक लाल गुलाबी पाग ॥ तापर सुभग चंद्रिका राजत लाल तिलक छबि लाग ॥१ ॥ तेसोई बन्यो हे चीर प्यारी को कोर जरकसीकी लाग ॥ आप लाल रंग रंग छबीली निरखदास बडभाग ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) फुल गुलाबी साज अति सोभित ताहि राजत बालकृष्णजी विहारी ॥ फेंटा गुलाबी पिछोरा रह्यो फबि फुल गुलाब अति भारी ॥१ ॥ वाम भाग वृषभान नंदिनी पहेरे गुलाबी कंचुकी सारी ॥ फूल गुलाबी हस्त कमलमें छबि पर 'कुंभनदास' बलिहारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) आजुं में देखे कुंज बिहारी ॥ सीस धरी रंग पाग गुलाबी तेसोई पिछोरा छबि न्यारी ॥१ ॥ राग मलार अलापत गावत कोयल सब्द उचारी ॥ घोर घटा घन गाज चहूँ दिस चमकत हे चपला री ॥२ ॥ स्यामा स्याम कुंज तर ठाढे फूल रही फूल बारी ॥ सावन मास देखि बरखा ऋतु मानौं भूमि हरियारी ॥३ ॥ तब हरियारे मारग निकसे चूंबत आवत सारी ॥ 'सूरदास' प्रभु लेति वलैया सोभा देखत भारी ॥४ ॥

मल्हार हरी घटा के पद

□ राग मल्हार □ (१) देखो माई गोवर्धन सुखरास ॥ रामकृष्ण दोऊ

ऊपर बैठे सखा मंडलीपास ॥१ ॥ हरीपाग ओर हर्यो पिछोरा कोर सुन्हेरी लाग ॥ माणिकके आभूषण सोहें मुरली शब्द सुहाग ॥२ ॥ चहूंदिश भूमि हरियारी देखियत मोर फिरत तापास॥ श्रीविट्ठल पदकमल कृपातें निरखत यह सुख दास ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) देखो माई सुन्दरताको बाग॥ हरी व्रजभूमि हरी द्रुमवेली हरी गिरिधर शिर पाग ॥१ ॥ हरे हरे मोर हरी हरी शुकसेना भीज रहे अनुराग ॥ राजत हरी मन हरण राधिका निरख दास बडभाग ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) सखी हरियारो सावन आयो ॥ हरे हरे मोर फिरत मोहन संग हरे वसन मन भायो ॥१ ॥ हरी हरी मुरली हरी संग राधे हरी भूमि सुखदाई ॥ हरे हरे बसन राजत द्रुमवेली हरी हरी पाग सुहाई ॥२ ॥ हरी हरी सारी सखी सब पेहेरें चोली हरी रंगभीनी ॥ रसिक प्रीतम मन हरित भयो हे तन मन धन सबदीनी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) आज अति राजत हरि हरे ॥ तन शोभित हे हर्यो पीछोरा हरी पाग सीर धरे ॥१ ॥ हरी चंद्रीका शीश बिराजत हरे हरे ही बढे ॥ सूरश्याम प्रभु सब राजत दिन दिन प्रीत बढे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) देखो माई हरियारो सावन आयो ॥ हर्यो टिपारो शीश बिराजत काछ हरी मन भायो ॥१ ॥ हरी मुरली हे हरि संग राधे हरी भूमि सुखदाई ॥ हरी रही वनराजत द्रुमवेली नृत्यत कुंवर कन्हाई ॥२ ॥ हरी हरी सारी सखी जन पहेरें चोली हरी रंग भीनी ॥ रसीक प्रीतम मन हरित भयोहे सर्वस्व न्योछावर कीनी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (६) मोहन सीर धरें हरीसी पाग ॥ हर्यो पीछोरा राजत झीनो हरे बिराजत साज ॥१ ॥ हरी रंगीली छरी हाथ मे हरोई फेंटा रंगबोर ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरनलाल भामिनी के चितचोर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) आज माई नीके बने नंदलाल ॥ हरी हे पगिया हर्यो पिछोरा मुक्तामाल बगजाल ॥१ ॥ हरी रही छडी हाथनमें सोभित हरे

उपरना भाल ॥ सूरदास प्रभु हरे कंठपें हरी राजत बनमाल ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) लीलो ही साज बन्यो अति सोभित ता पर सोहत पीत किनारी। लीली पाग सिरपेच चन्द्रिका कलगी सीसफूल भारी ॥१ ॥ भाल तिलक नासा गजमोती कंठ दुगदुगी पोहोंची न्यारी। नूपुर छुद्रघंटिका दुलरी मोतिन की माला अति भारी ॥२ ॥ लीलोई सुभग पिछोरा सोभित बेन बेत्र चोटी अति भारी। पोहो पमाल सिर कंठ विराजत ले दर्पन देखत पिय पिय प्यारी ॥३ ॥ घरघरतें आई व्रजनारी जमुनाजल भरि कंचन झारी ॥ 'परमानंद' प्रभुकी छबि निरखति विट्ठलनाथ आरती वारी ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (९) हरी हरी कुंज बनी हरि हरी द्रुमवेली हरी व्रजभूमि हरियारी छाई माई ॥ हरे हरे बन राजे प्रिया-प्रियतम भ्राजे हरे सिर हर्यो मुकुट प्यारी के हरियारी लागी सोहाई माई ॥१ ॥ हरी हरी मुरली कर सप्त सुरन अधर धरे गावत मल्हार राग तान लेत मन भाई। हरे हरे महेल बने हरे हरे बितान तने निरख शोभा दंपतीपर हरिदास बल जाई ॥२ ॥

मल्हार पीरी घटा के पद

□ राग मल्हार □ (१) प्यारो माई बांधे पीरी पाग ॥ पीरो पीछोरा पीरो उपरना पीरे बसन अनुराग ॥१ ॥ पीरो पपैया वन वन बोले कोयल शब्द सुहाग ॥ राजत पियसंग प्यारी राधा निरखि दास बडभाग ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) धरें शिर प्यारो पीयरी पाग ॥ पीतांबर पेहेरें अति झीनो निरखि सखी छबि वाग ॥१ ॥ तेसोई चीर बन्यो प्यारीकें चोली रही उर लाग ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर प्यारी पिय निरखत चित अनुराग ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) आज पट पीतकी छबि पाई ॥ श्यामघटा जुर सघन देखियत न्हेनी बूंदें आईं ॥१ ॥ मोरचंद शिर मुकुट बिराजत इन्द्र धनुष तिहि ठांई ॥ कानन कुण्डल दामिनी दमकत वरसत नीर सुहाई ॥२ ॥ मोतीनमाल मानो बग पंगति सुन्दरता झरलाई ॥ सूरदास प्रभु कहांलो

बरनों यह छबिकी अधिकाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) सखीरी देख शोभावनकी ॥ इत मोहन मधुर मुख मुरली उत गरजन नवघनकी ॥१ ॥ उतही श्याम बादर सोहत इत राजत सामल तनकी ॥ उत बग पांति हीरावली मुक्ता गिरिधर गरें लसनकी ॥२ ॥ इतही रुचिर वनमाल बनी उर उतही रहेन इन्द्र धनुकी ॥ उत दामिनी चपला चमकत इत फरकनि पीत वसनकी ॥३ ॥ उत धुरवा इत धातु विचित्र रुचि सुभग श्रीअंग लसनकी ॥ उत बूंदे द्रुमवेली सींचत इत प्रेमनीर बरखन की ॥४ ॥ अति आनंद निरख दोऊ सुख गावत विहंग मगनकी ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन रसिकवर करि विनती बिलसनकी ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (५) आज अति शोभितहें नंदलाल ॥ उत गरजत बादर चहूं दिशतें इत मुरली शब्द रसाल ॥१ ॥ उत राजत कोदंड इन्द्रको इत राजत वनमाल ॥ उत शोभित दमकत दामिनि इत पीत वसन गोपाल ॥२ ॥ उत धुरवा इत धातु बिचित्र किये बरषत अमृत धार ॥ उत वगपांति उडत बादर में इत मुक्ताफल हार ॥३ ॥ उत दादुर स्वर कोकिला कूजत इत बाजत किंकिणी जाल ॥ गोविंद प्रभुकी बानिक निरखत मोहि रहीं व्रजबाल ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (६) पीरी पाग सिरपेच चन्द्रिका सीसफूल लर लटकन सोहे ॥ भाल तिलक कर पोहोंची दुगदुगी बेसरको मोती मन मोहे ॥१ ॥ करन फूल कटि छुद्र घंटिका लगी नूपुर चरनन छोहे ॥ मोतिन माल हार गुंजा मनि पोहोपन की माल अति सोहे ॥२ ॥ पीत पिछोरा साज अति सोभित दामिनी दमकिनी की छबि को है ॥ 'कुंभनदास' प्रभुकी छबि निरखत चक्रत भये निजजन मन मोहे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (७) यह छबि देखि री नैन निहार ॥ तन सोहत है केसरी पिछोरा पाग सुरंग रंग धार ॥१ ॥ बरखत मेह चहुंदिस गरजत गावत राग

मल्हार। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर पर बलि बलि सब व्रजनार ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) लालन माई पीत बसन तन राजे ॥ स्याम बरन तन स्याम घटा में दामिनि की दुति लाजे ॥१ ॥ चंदन खोर बिचित्र किये तन मुक्ता माल विराजे ॥ कुंडल लोल कपोलन की छबि मुरली मधुर धुनि बाजे ॥२ ॥ मंद मंद मधुरे मधुरे सुर गावत सौं धुनि गाजे ॥ 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' छबीले नैंन बान उर साजे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (९) सखी री ठाढे हे नंद नँदन ॥ कदंब दार को छतना तनायो करत केलि गिरिधरन ॥१ ॥ पीयरे बसन पहिरे अति सुंदर मोतिन माल गरें ढरन 'चतुरभुज' प्रभु गिरिधर जू की बानिक देखत हें दृग भरन ॥२ ॥

मल्हार मुगट के पद

□ राग मल्हार □ (१) देखो माई ये बडभागी मोर ॥ जिनकी पंखको मुकुट बनतहें शिरधरें नंदकिशोर ॥ ये बडभागी नंद यशोदा पुन्यकीये भरझोर ॥ वृन्दावन हम क्यों न भई हें लागत पग की ओर ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक नारद ठाडें हे करजोर ॥ सूरदास संतन को सर्वस्व देखियत माखन चोर ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) कदंबतर ठाडे हें पिय प्यारी ॥ मोहन के शिर मुकुट बिराजत इत लहरिया सारी ॥१ ॥ मंदमंद वरखत चहुंदिशतें चमकत बीज छटारी ॥ मुरली बजावत श्रीनंदनंदन गावत राग मल्हारी ॥२ ॥ लेततान हरि के संग राधा रंगहोत अति भारी ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर कों रिझवत श्रीवृषभान दुलारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) नयोनेह नयोमेह नयेरसमाते दोऊ नवल कान्ह वृषभान किशोरी ॥ नवल पीतांबर नवल चूनरी नई नई बूंदन भींजत गोरी ॥१ ॥ नववृन्दावन हरित मनोहर चातक बोलत मोरा मोरी ॥ नवमुरलीजु नाद मल्हार राग नई गत्ति श्रवण सुनत आये घनघोरी ॥२ ॥

नवभूषण नवमुकुट बिराजत नई नई उरप लेत थोरी थोरी ॥ हित हरिवंश आशीश देत मुख चिरजीयो भूतल यह जोरी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) लाल माई ठाडे निकुंज के द्वार ॥ शीश मुकुट मकराकृत कुंडल गरें गुंजको हार ॥१ ॥ मुरली मधुर बजावे मोहन सुनधांईं व्रजनार ॥ सूरदास प्रभु की या छबि ऊपर तन मन धन बलिहार ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) रीझेमाई मोरमुकुट छबि निरखें ॥ कुंडल चलन हलन नयनन की मृदुमुसकें मन हरखें ॥१ ॥ संगलियें नौतन व्रजबनिता रमत तरणिजा करषें ॥ कृष्णदास के मनकी गमता संग सांवरी सरषें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) तुम देखो माई सुंदर गिरिधरलाल ॥ सुन्दर मुकुट कुंडल हीरा मणि सुन्दर झलकें भाल ॥१ ॥ सुन्दरबने कपोलजु सुंदर सुन्दर नयन विशाल ॥ सुन्दर हार दशन व्रजसुन्दरि सुन्दर वचन रसाल ॥२ ॥ सुन्दर अंग भूषण अति सुन्दर सुन्दर संग व्रजबाल ॥ सुन्दर कटि पीतांबर सुन्दर सुन्दर चालमराल ॥३ ॥ सुन्दर अंगअंग वरसुंदर सुंदर सुखद वनमाल ॥ सुंदर शोभा सूर हृदय धरि सुंदर झलकतमाल ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (७) देखोमाई सुंदरताको सागर ॥ बुद्धि विवेक बल पार न पावत मग्नहोत मननागर ॥१ ॥ तन अतिश्याम अगाध अंबुनिधि कटिपट पीत तरंग ॥ चितवत चलत अधिक छबि उपजत भ्रमर परत सब अंग ॥२ ॥ नयन मीन मकराकृत कुण्डल भुजबल सुभग भुजंग ॥ मुक्तामाल मिली मानों सुरसरी द्वै सरिता लियें संग ॥३ ॥ कनक मुकुट किंकिणी मणि भूषण अवलोकन सुखदेत ॥ जनुजलनिधि मथ प्रकटकियो शशि श्री अरु सुधा समेत ॥४ ॥ देख स्वरूप सकल गोपीजन रहीं विचार विचार ॥ तदपि सूर दरसकी शोभा रही प्रेम पचिहार ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (८) देखो माई सुन्दरताको देश ॥ अंगअंग छबि

मदनमनोहर राजत रूपनरेश ॥१ ॥ मोर मुकुट गहवर गिरिसीमा अलक झलक बहुशेष ॥ मुख छबि कोटि विकट गढगाढे मन नहीं करत प्रवेश ॥२ ॥ ग्रीवा मेरुभुजा नदीनद उरसागर सतवेश ॥ गतिगयंद मृगराज कटीपर त्रिवलि त्रिवेणीवेष ॥३ ॥ जंघा झील नाभि हृदें पूरण नखमाणिकमणिलेप ॥ तन सब भूमि हरित रोमावलि देखियत सूर विशेष ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (९) देखो माई भीजत गिरिवरधारी ॥ मोर मुकुट तन श्याम पीतपट घनदामिनी अनुहारी ॥१ ॥ बडीबडी बूंद परत धरनीपर भई भूमि हरियारी ॥ सावन मास सघन तरुवरबन कोकिला शब्द उच्चारी ॥२ ॥ करत बिचार चलेकिनी सजनी वरषत हे बरसारी ॥ सूरदास प्रभुकी बानिक पर तनमन डार्यो वारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) देखो माई सुन्दरता को कंद ॥ श्याम अंग घन घोरत मुरली गरजत मंदस मन्द ॥१ ॥ इन्द्रधनुष बनमाल बिराजत गजमुक्ताहल द्वन्द ॥ मानों बिचबनी बगपंगति केहरी कामनीकन्द ॥२ ॥ मुकुट श्याम कच सिथल बसन मानो बादरन छायो चन्द ॥ चमकत उर राधासो दामिनी चलत पवन दृढ छन्द ॥३ ॥ पीतांबर तन चित्र विचित्र अरुन काछनि फंद ॥ पुलकित प्रेम उमगि उमगि मानो नौतन वर्षानंद ॥४ ॥ तिहितरु बरनि फुलित वृन्दावन तरलित तनय निकंद ॥ सुरजदास रसिक ललितादिक हित चात्रक सखी वृन्द ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (११) गोवर्धन पर ठाडे नंदकिशोर किरीट मुकुट अरु ओढे पीत पट तेसेई नाचत मोर ॥१ ॥ नेन्हीं नेन्हीं बूंदन बरखन लाग्यो तेसेई पवन झकोर ॥ सूरदास प्रभु वे बडभागी निरख रही मुख ओर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) देखो री मुकट झोटा ले रह्यो ॥ ले रह्यो यमुना के तीर ॥१ ॥ कौन वरण प्यारी राधिका कौन वरण बलवीर ॥२ ॥ गौर वरण प्यारी राधिका सुन्दर श्याम शरीर ॥३ ॥ दादुर मोर पपीयरा

कोकिल बोलत कीर ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझन झमक मंजीर ॥४ ॥ मोर मुकट कटि काछनी प्यारी कसूंभी चीर ॥ ललिता बिसाखा चन्द्रावली बोलत बचन गंभीर ॥५ ॥ गरजत गगन सुहावनों वरषत अमृत नीर ॥ सब व्रज छायो प्रेम सों नंददास के हीय ॥६ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) आज घनश्याम की उनहार। भले उनए आए सवारे देख रूप सुकुमार ॥१ ॥ मोर मुकुट इन्द्र धनुष दामिनी दमकनि वार। मानो बग पंगति माल मोतिनकी चितवत चित्त विसार ॥२ ॥ जानो गिरिराज कर धरि राख्यो स्त्रवन सुनत मनुहार। 'सूरदास' प्रभु हमसे पतित कौन करे निस्तार ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) गोवर्धन पर ठाढे नंद किशोर ॥ किरीट मुकुट और ओढे पीत पट तेसेई नाचत मोर ॥१ ॥ नेन्हीं नेन्हीं बूंदन बरषन लाग्यो तेसेई पवन झकोर ॥ 'सूरदास' प्रभु वे बडभागी निरखि रही मुख ओर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) बाजत मृदंग उघटित सुधंग तकझां कुकुझां धीधि कीटता धुमुकीटि धी लांगतक ॥ दीगिड दाम दीगिड दामिनि दीगिड दाय धुकि जन नगर तट तग धिंना धुंम धुंम धुम तजग तजग तजग झंत झंत ॥१ ॥ गति बादर गरज घन दामिनि लरज अलाप लेति खरज होत अनुपम तरज ॥ 'कृष्णदास' प्रभु पास पूरन भई आस दिग् दिग् थों दिग् दिग् दिग् दिग् थों दिग् दिग् ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) फूल के महल में फूल बैठे रसिक करति हे केलि संग लिये प्यारी ॥ फूल को मुकुट सिर फूल कटि काछनी फूल बनमाल उर गरे धारी ॥१ ॥ पीत लेहगां फूल फूल सारी लाल फूल कंचूकी कुचन कसि कारी ॥ फूल के हार सिंगार सब फूल को फूल बेनी लटक पन्नग न्यारी ॥२ ॥ ताल बीना मृदंग लीए व्रज सुंदरी मलार सुर गान कीये भारी ॥ 'चतुरभुज दास' प्रभु गिरिधरन छबि निरखि कोटि मनमथ काम

दीये वारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) आज घनश्याम की उन हार ॥ भलेइ उनय आए सवारे देख रूप सुकुमार ॥१ ॥ मोर मुकुट ईंद्र धनुष दामिनी दमकनि वार ॥ मानौं बग पंगति माल मोतिन की चितवत चित्त बिसार ॥२ ॥ जानों गिरिराज कर धरि राख्यो स्रवन सुनत मनुहार ॥ 'सूरदास' प्रभु हम से पतित कोन करे निस्तार ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) आज सखी गोकुल चन्द बिराजे ॥ नेन्हीं नेन्हीं बूंदन बरखन लाग्यों मंद मंद घन गाजे ॥१ ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल बनमाला छबि राजे ॥ 'कुंभनदास' प्रभु गोवरधनधर प्रकट भक्त हित काजे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) दिपति जोति मुख सुख को सदन नील कलेवर कियें घूंघटी ॥ सीस मुकुट सोहे कानन कुंडल चटक कर कंचन की लकुट आछे नगन जटी ॥१ ॥ ऊंची चित्रसारी तहां बैठी श्रीवृषभानु दुलारी ताको रूप देखि रीझि भींजित कदंब तटी ॥ कहें 'भगवान हित रामराय' प्रभु गाय ग्वालन की सुधि हियें हु ते उचटी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२०) देखो माई सुंदरता को नीर ॥ दादुर मोर पपैया बोलत नदी जमुना के तीर ॥१ ॥ कारी घटा आईं चहूँदिस तें कोयल करत पुकार ॥ नेंन्ही नेंन्ही बूंदन बरषन लाग्यों रहे प्रेम पचिहार ॥२ ॥ कुंडल लोल कपोल बिराजत झलकत मोतिन माल ॥ मुकुट काछिनी और उपरेना अति बने हे गुपाल ॥३ ॥ बदरा उमगि अधेरी आई बिजुरी चमक सोहायो ॥ गरजत गगन मृदंग बजावत चात्रक पीयु पिक गायो ॥४ ॥ यह छबि निरखि ब्रह्मा सुर पीतांबर फहरायो ॥ सावन मास देखि वरषा ऋतु 'सूरस्याम' मन भायों ॥५ ॥

मल्हार टिपारा के पद

□ राग मल्हार □ (१) सखी मोहे गिरि गोवर्धन भावे ॥ मोहनके सिर

लाल टीपारो चंद्रिका लाल सुहावे ॥१ ॥ मोतिनकी चोसर अतिसोहे श्याम अंग छबि पावे॥ श्रीविट्ठल गिरिधरनलाल को दरसन करि सचुपावे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) आज सखी देख कमलदल नयन॥ शीश टिपारो जरद सुनेरी बाजत मधुरे बेन ॥१ ॥ कतरादोय मध्य चंद्रिका काछ सुनेरी रेन॥ दादुर मोर पपैया बोले मेरे मन भयो चेन ॥२ ॥ नाचत मोर श्यामके आगें चलत चाल गजगेन॥ श्रीविट्ठल गिरिधर पिय निरखत लज्जित भयोहे मेन ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) कदमतर ठाडे श्रीमदन गोपाल॥ शीश टिपारो कटि लाल काछिनी उर वैजयंती माल ॥१ ॥ राग मल्हार अलापत सप्त सुर गावत गान रसाल॥ सूरदास प्रभुकी छबि निरखत मोहि रही व्रजबाल ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) सीस टीपारो धरें मल्लकाछ उर गजमोतिन माल। तापर तीन चंद्रिका राजत सोभित हैं नंदलाल ॥१ ॥ नकबेसर झलकनि कुंडल की मृगमद तिलक सुभाल। कहा कहों अंग-अंग की माधुरी अंबुज नैन विसाल ॥२ ॥ भोरहि उठि जात दधि बेचन मैं देखे नंदद्वार। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर चित्त चोर्‌यो एकटकी लागी तन रही न संभार ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (५) आज मोहन छबि अधिक बनी। सेभित तीन चन्द्रिका माथे धरत गोवर्धनधारी ॥१ ॥ मल्लकाछ सोहत है नीके मोतिन माल वहु सारी। 'सूरदास' प्रभु तिहारे दरसको मोहि रही व्रजनारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) स्याम टिपारो एसे माई स्याम घटा जुरी आई। तेसेई स्याम स्यामा संग सोहत निर्तत कुंवर कन्हाई ॥१ ॥ स्याम काछ और स्याम टिपारो सोहै स्याम मन भाई॥ हीराके चुडा और जेहर चंद्रिका सरस सुहाई ॥२ ॥ नाचत मोर स्यामके सन्मुख दादुर शब्द सुनाई। वरषत मेघ रहत नहीं नेक हु पवन चलत सुखदाई ॥३ ॥ यह समयो देखि व्रज

सुंदरी ज्यों मिलन समुद्रहि जाई। 'रसिक' प्रीतम बंसीवट ठाडे बेनु बजाये बुलाई ॥४॥

□ राग मल्हार □ (७) बन ठन ठाढे मनमोहन गहे कदंब की दार॥ संग लीए वृषभानु नँदिनी बांह भुजा गरे डार॥१॥ तेसीये पहिरे कसूंभी सारी कसी कंचुकी गाढी॥ मलकाछ टिपारो लाल के सीस अद्भुत सोभा बाढी॥२॥ मधुर मधुर सुर दोऊ मिलि गावत तेसेंई नाचत मोर॥ 'कृष्ण दास' दंपति रस बस भये पुलकित भरत अकोर॥३॥

□ राग मल्हार □ (८) देखो देखो सजनी केसी सोभा लागत नाचत स्याम सुंदर नट॥ लाल टिपारो सीस बिराजत मल्ल काछ फरहरत पीत पट॥१॥ चहूँ दिस राजत गोकुल वनिता भानु किसोरी निपट निकट॥ 'गोविंद' प्रभु पीय बसो हिये में गिरिधर नंद सुभट॥२॥

□ राग मल्हार □ (९) नवल निकुंज धाम संग लीये स्यामा स्याम गावत मलार राग पावस के नागर नट॥ प्यारी के कसूंभी सारी लहंगा लहक भारी अंगिया किनारी पर छूटी अलक लट॥१॥ निरतकारी निरत करत गोपी जन सुर भरत उरप तिरप लेत त्यों त्यों तारी दे दे शब्द उघट॥ सुरंग टिपारो सीस गोकुल पति जग धीस 'कृष्ण दास' वारूं काम मल्ल काछ कट॥२॥

□ राग मल्हार □ (१०) रंग भरे महल बैठे हे रंग भर्‌यो टिपारो लाल सीस पर सोहत हें॥ रंग भरी सारी पहिरे रंग भरी प्यारी रंग भरी गिरिधर को मन मोहत हें॥१॥ चहूँ ओर घन घोर बोलत कोकिला मोर रंग भरी बूंद मानौं मोती माल पोहत हें॥ बाजत मृदंग ताल गावत मलार बाल 'व्रजाधीस' भर्‌यो श्री मुख जोहत हें॥२॥

□ राग मल्हार □ (११) गोवरधन परवत के ऊपर नाचें मोर त्यो त्यों नाचत नंद किसोर॥ उमड घुमड आई घटा चहूँ दिस छांई बाजत मृदंग मानौं घन घोर॥१॥ तेसेंई नागर नट सुरंग टिपारो कटि मल्ल काछ सोभा

देत सखा चहूँ और ॥ जे जे कहे 'कृष्णदास' दीजें व्रजवास सदा या बानिक बसो मन मोर ॥२ ॥

मल्हार - सेहरा के पद

□ राग मल्हार □ (१) देखो माई सांवन दूल्हे आयो ॥ शीश शेहरो सरस गजमुक्ता हीरा बहुत जरायो ॥१ ॥ लाल पिछोरा सोहे सुंदर सोवत मदन जगायो ॥ तेसीये वृषभान नंदिनी ललिता मंगल गायो ॥२ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत बदरा बराती आयो ॥ सूरदास प्रभु तिहारे दरशकों दामिनि दरस दिखायो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) सखीरी सांवन दूल्हे आयो ॥ चार मास के लग्न लिखाये बदरन अंबर छायो ॥१ ॥ बिजुरी चमंके बगुला बराती कोयल शब्द सुनायो ॥ दादुर मोर पपैया बोले इन्द्र निशान बजायो ॥२ ॥ हरी हरी भुमिपर इन्द्र वधूसी रंग बिछोना बिछायो ॥ सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकुं सखियन मंगल गायो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) अरी माई नई नई धरती दुलहनि होय रही मेघ मल्हार आये व्याहन ॥ इन्द्रके नगारे बाजें बूंदनको शहेरो बादर बराती आये बरन बरन ॥१ ॥ दादुर पपैया बोले कोयल करत रोर मोर कुहु कुहु लागे करन ॥ रसिक प्रीतमकी बानिक निरखत रतिपति काम लाग्यो डरन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) धरतीजु दुलहनि मेघ दुल्हे व्याहनकों आयो ॥ इन्द्रके दमामा बाजे बूंदनको सेहरो छाजे गरज निसान आतसबाजी बरन बरन बदरा बराती लायो ॥१ ॥ कोयल गावत पपैया बजावत दादुर नृत्य नचायो ॥ सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को आनंद मंगल गायो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) जेसी घन घटा तेसो सांवरे को संग तेसोई कुंज भवन अंधियारो ॥ रतन जटित आभूषन राजत तेसोई राधिका तन उजियारो ॥१ ॥ तेसोई नेह नवल नागरी को तेसोई दुल्हे नंद दुलारो ॥

'आसकरन' प्रभु दंपति राजत तेसोई प्रान प्यारो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) सुंदर चतुर सुघर वलमा सौं उठि चलि करि आली नैहरा ॥ रेनि अंधेरी बीज चमके रिमि झिमि बरसे मेहरा ॥१ ॥ नव जल जन की सेज बिछाई नवल कुंज नव गेहरा ॥ 'लघु' मोहन प्रभु की छबि निरखति मुख मरुवट सिर सेहरा ॥२ ॥

मल्हार चन्द्रिका के पद

□ राग मल्हार □ (१) शोभा माई अब देखन की बहार ॥ गोवर्धन पर्वतके ऊपर मोरनकी पतवार ॥१ ॥ ठाडे लाल पीतपट ओढें मुरली मधुर रसाल ॥ मोर चंद्रिका माथें सोहे और गुंजनके हार ॥२ ॥ घनगरजत और दामिनी दमकत नेन्ही नेन्ही परत फुहार ॥ सूरदास प्रभु तोऊ न अघेहें अखियां होंय लख चार ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) हों इन मोरनकी बलिहारी ॥ जिनकी सुभग चंद्रिका माथें धरत गोवर्धनधारी ॥१ ॥ बलिहारी या वंश कुल सजनी बंसीसी सुकुमारी ॥ सुंदर कर सोहे मोहनके नेंकहू होत न न्यारी ॥२ ॥ बलिहारी गुंजाकी जातपर महाभाग्यकी सारी ॥ सदा हृदय रहत स्यामके छिन हू टरत न टारी ॥३ ॥ बलिहारी व्रज भूमि मनोहर कुंजनकी अनुहारी ॥ सूरदास प्रभु नाँगे पायन अनुदिन गैया चारी ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (३) माथे बने मोरके चंदवा अरु घुंघचिनके हार हिये। पीतांबरकी फेंट बांधे सुमन सदल बने धातुके रंग अंग अंग चित्र किये ॥१ ॥ स्त्रावन समय संध्या घन घन वन अरु इन्द्र धनुष लिए। 'सूर' ससि उदै दामिनी भई मानों बरख़त प्रेम पीयूष पिये ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) आजु छबि देखियत है गिरिधारी। कसूंभी पाग सुरंग पिछोरा छबि लागत अति भारी ॥१ ॥ केसरी रंग भीज्यों उपरेना उर वनमाल गरे। स्याम अंग पर भूषण सोभित मुरली अधर धरे ॥२ ॥ एसी भांति चले गोचारन नंदकुमार कन्हाई। 'श्री विट्ठल गिरिधर' मैं देखे कहि

न जात छबि माई ॥३ ॥

मल्हार - ग्वाल पगा के पद

□ राग मल्हार □ (१) आज अति शोभितहें नंदलाल ॥ ग्वाल पगा शिर उपर सोहे उर राजत वनमाल ॥१ ॥ तापर एक चंद्रिका जरकसी धोती उपरना लाल ॥ आगें गाय ग्वाल सबलेकें मुरली शब्द रसाल ॥२ ॥ दादुर मोर कोकिला कूजत बाजत किंकिणी जाल ॥ गोविंद प्रभुकी बानिक निरखत मोहि रही व्रजबाल ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) ग्वाल पगा गोविंद सीस पर मानौं गिरि ऊपर नाचत मोर ॥ अधरन पर मुरली कल कुंजे वरषा ऋतु मानौं नव घन घोर ॥१ ॥ अरुन बसन पहिरे गोपी जन देखन द्वार जुरि सब दोर ॥ 'कृष्ण दास' मानौं चंद वधू सी रिझि रिझि डारत तृन तोर ॥२ ॥

मल्हार - चूनरी के पद

□ राग मल्हार □ (१) लाल मेरी सुरंग चूनरी देहु ॥ मदन मोहन पिय झगरो कोने वढ्यो अपनों पीतपट लेहु ॥१ ॥ तुम व्रजराज कुमार कोनडर हों कहाकहूंगी गेह ॥ गोविन्द प्रभु पिय देहु बेगि अब आवत चहुंदिशतें मेह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) सुरंग चूनरी प्यारी पचरंग पेहेरें पियाको चोर चित डगरी ॥ स्याम कंचुकीपर अचरा उलट दियो ठमकि धरी शिर गगरी ॥१ ॥ लहेंगा हर्यो छपाऊ कटि घूमत नखशिख रूप अचगरी ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर तोहीसों रति लाय लई उर सगरी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) स्यामसुन नियरें आये मेह ॥ भीजेगी मेरी सुरंग चूनरी ओट पीतांबर देह ॥१ ॥ दामिनी देख डरपत हों मोहन निकट आपुने लेह ॥ चतुर्भुजदास लाल गिरिधरसों बाढ्यो अधिक सनेह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) लाल मेरी सुरंग चूनरी भीजे ॥ लेहु बचाय आय

पिय मोकों बूंद परे रंग छीजे ॥१ ॥ बरखत मेह रहेनहीं नेकहुं कहा उपाय अब कीजे ॥ हम तुम कुंज भवनमें चलियें मान सबे सुखलीजे ॥२ ॥ ऐसो समयो बोहोर न व्हेहे मेरो कह्यो पतीजे ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन छबीले निरख निरख मुख जीजे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (५) देखोमाई भीजत रसभरे दोऊ ॥ नंदनंदन वृषभान नंदनी होडपरीहे जोऊ ॥१ ॥ सुरंग चुंनरी श्यामाजुकी भीजतहे रस भारी ॥ गिरिधर पाग उपरना भीज्यो या छबि उपरवारी ॥२ ॥ वातही वात होडभई भारी ललितादिक समुजावें ॥ दोऊ मिल झगरत मानत नही सखी सब बुंद बचावें ॥३ ॥ तब मोहन हारे शीरनाये हँसी सकल व्रजनारी ॥ परमानंद प्रभु यह विध क्रीडत या सुखकी बलिहारी ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (६) देखो तुम श्याम घटा जुर आंई ॥ नेंक लाल छांडो किन अचरा हम अपने घर जांई ॥१ ॥ नेन्ही नेन्ही बूंदन वर्षन लाग्यो भीजे पीत पिछोरी ॥ और भीजे मेरी सुरंग चूनरी हों आई मति भोरी ॥२ ॥ देखेंगे बलदाऊ भैया ठाडे मारग मांझ ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर सब जानत बात नही भई सांझ ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (७) अपने हाथ पातनको छतना मोहीकों करि देह ॥ भीजेगी मेरी सुरंग चुनरी वर्षत आवत मेह ॥१ ॥ तुम ओढो मेरे उरको अचरा ऊपर कामर देह ॥ रामदास प्रभु कर मुरलीधर गावत बाल सनेह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) भीजत कब देखों इन नयना ॥ स्यामाजूकी सुरंग चूनरी मोहनको उपरेना ॥१ ॥ श्यामा श्याम कुंजतर ठाडे जतन करत कछु एना ॥ उमडी घटा चहूंदिशतें श्रीभट घिर आंई जलसेना ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (९) बदरीया तु काहेकों व्रजपर दोरी ॥ चमकत बीज महाघन ओल्हर दुःख पावत हे किशोरी ॥१ ॥ भीजत गोपी सघन कुंज तर चुवत चूंदरी मोरी ॥ सूरदास प्रभु तुम बहु नायक राधा मोहन जोरी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) गायो हे मल्हार सुन आई हें व्रजनार सब करकें सिंगार चल ठाडी आय अरसें ॥ चुनरी की सारी पहेरें कंचन कीनारी सोहें राधे सुकुमार हियो होंस अति सरसें ॥१ ॥ सुन मान छांड दियो जल भरन को मिस कियो ईंडुरी जडाय लीने कंचन के करसें ॥ त्योहार भटु साज ठकुरानी तीज आज चमकत हें बीज शोभा देख मेह वरसें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (११) चूनरी पाग ओर चूनरी पिछोरा मुक्तामाल हिये। उमगी घटा सावन भादोंकी पंछी सब्द किये ॥१ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल टेर दिये। 'व्रजजीवन' प्रभु गोवर्धनधर यह सुख नैन पिये ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) जमुना तट स्याम घटन की पाँति ॥ हरी हरी भोंम पर हरित सिखंडि बोलत अति रस मांति ॥१ ॥ सुरंग चूनरी की छबि दुलहनि अभरन नाना भाँति ॥ 'श्रीविट्ठल' बिपुन बिनोद बिहारीनि मिलि बिलसी किलकाति ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) नव रंग तन कंचुकी गाढी ॥ नवरंग सुरंग चूनरी पहिरे चंद वधू सी ठाढी ॥१ ॥ नवरंग मदन गुपाल लाल सों प्रीति निरंतर बाढी ॥ साम तमाल लाल उर लपटी कनक लता सी चाढी ॥२ ॥ सब अंग सुंदर नवल किसोरी कोक कला गुन पाढी ॥ 'परमानँद' स्वामी की जीवन रस सागर मथि काढी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) भींजत कुंजन तें दोऊ आवत ॥ ज्यों ज्यों बूंद परत चूनरी पर त्यों त्यों हरि उर लावत ॥१ ॥ जीहीं तिहिं मोर कोकिला बोलत पवन तेज घन धावत ॥ मंद मंद कर मुरली मधुर सुर राग मलार ही गावत ॥२ ॥ अति रिम झिम फुहीं मेघन की द्रुम तर बूंद बचावत ॥ 'सूरदास' प्रभु रिझि परसपर त्यों त्यों रुचि उपजावत ॥३ ॥

मल्हार - लहेरियां के पद

□ राग मल्हार □ (१) लालशिर पाग लहरिया सोहे ॥ तापर सुभग चंद्रिका राजत निरख सखी मनमोहे ॥१ ॥ तेसोई चीर बन्यो लहरिया पहरें

श्रीराधा प्यारी ॥ तेसेई घन उमड्ये चहुंदिशतें नंददास बलिहारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) गहर गहर गाजें बदरा समूह साजें छहर छहर मेह वरषे सुघरियां ॥ कहर कहर करें पवन अरु पानी अति महर महर करें भूतल महरियां ॥१ ॥ बालकृष्ण यह सुख देखवेकुं गावत मल्हार गहें कदमकी डरियां ॥ फहर फहर करे प्यारेको पीतांबर लहेर लहेर करे प्यारीको लहरियां ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) लहरिया मेरो भीजेगो वह देखो आवतहे मेह ॥ सुरंग रंग रंग्योहे सांवरे अबही घटेगोनेह ॥१ ॥ सघन कुंजमें चलो हो सांवरे ओट पीतपट देह ॥ गोविंद प्रभु पिय हसकें सखीसों बाढ्यो अधिक सनेह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) श्यामसंग रंग भरि राजत राधिका प्यारी मानों घनदामिनी रहसि मिली ॥ पहरें पंचरंगसारी इन्द्रधनुष वनमाल मोतिनहार बग पंगति बीचरली ॥१ ॥ मंदमंद गरजत मुरली ध्वनि बाजत पियहि रिझावत मानों फूली कमलकली ॥ कृष्णदासप्रभु गिरिधर स्यामाको निरख मुख हँस आंको भर कुंजचली ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) देखो भाई शोभा सामल तनकी ॥ मानो लई रसिक नंद नंदन सब गति नौतन घनकी ॥१ ॥ तडित वसन पुरंदर धनुष मानो मालावनकी ॥ मुक्तामाल कंठ उर उपर पंगतिहें बगगनकी ॥२ ॥ रूपवारि बरषत जु निरंतर सींचतहे वृत्ति मानकी ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर जीवन सब ब्रज जनकी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (६) कदंब तर ठाढे नंदकिसोर ॥ पचरंग लहरियां सोहत लाल के सीस चंद्रिका मोर ॥१ ॥ प्यारी पहिरे लहरियां सारी चपल नैंन की कोर ॥ 'सूरदास' प्रभु की छबि निरखति विलसति ब्रज की खोर ॥२ ॥

मल्हार - कुलहे के पद

□ राग मल्हार □ (१) रहीफबि श्याम छबीली पाग ॥ तापर कुल्हे श्याम

शिर शोभित मोरचंद छबि लाग ॥१ ॥ श्याम अंग पर नीलवसन छबि किंकिणी शब्द सुहाग॥ श्यामहि रंग रंगी रंग स्यामा स्याम रंग अनुराग ॥२ ॥ यह जोरी अविचल श्रीवृन्दावन स्याम रंग बडभाग॥ सूर स्याम स्यामा छबि निरखत प्रेम सिंधु रस पाग ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) नयोनेह नयोमेह नईभूमि हरियारी नवल दूल्हे प्यारो नवल दुल्हैया॥ नवल चातक मोर कोकिला करतरोर नवल युगल भोर नवल उल्हैया ॥१ ॥ नवल कसूंभी सारी पेहेरें श्रीराधाप्यारी ओढनीके अंगसंग सरस सुल्हैया॥ नंददास बलिहारी छबिपर वारडारी नवलही पागबनी नवल कुल्हैया ॥२ ॥

मल्हार - छाक के पद

□ राग मल्हार □ (१) अपने हाथ पातनको छतना कोउ ढांप डला पर दीजे हो॥ सुन बलराम श्याम जित चलीहों तित आगे व्हे लीजेहो ॥१ ॥ पवन झकोर बूंद लागी टपकन अब अवार क्यों कीजेहो॥ नंददास प्रभु फिर न स्वाद कछु जो व्यंजन रस भीजेहो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) चहुंदिश हरित भूमि वन मांह॥ जोर मंडली जेंमन लागे बेठ कदंमकी छांह ॥१ ॥ घुमड घटा छटा दामिनिकी बरनत बरनी न जाय॥ यह सुख श्याम तिहारे संग बिन ओर अनत कहुं नांय ॥२ ॥ धन्य धन्य ग्वाल बाल हरि जिनके कोर लेले खांय॥ परमानंद ब्रह्मादिक विस्मित सिर धुनि धुनि पछतांय ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) जहां गोपाल तहां जुरे सब सब ग्वाल॥ पनवारे अपने ले उठ धाये तिहिं काल ॥१ भोजन सब निको विध किनो पातर सजके लायो॥ कछु आरोग कुंजनमें लीजो मोहन सबन सुनायो ॥२ ॥ कुके करकर डारत व्यंजन कौतीक अंबर छायो॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर अचवावन मानो सुरपती झर लायो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) श्याम चल कुंजनमें आये दौर॥ ऊँचे चढि टेरत

ग्वालनकों आवो सबेमेरी ओर ॥१ ॥ गायन टेर दइ बलदाउन चौंकि चमकि आईं इक ठोर ॥ नंददास प्रभु भोजन करवेकों बेठो सखा मंडली जोर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) बिराजत सघन कुंजकी ओट ॥ इत जेंवत मंडल मध्य माधो उठे मेघके कोट ॥१ ॥ न्हेनी न्हेनी बुंदन वरखन लाग्यो रुचि उपजावन काज ॥ वरखा रितु विलसत नंदनंदन संग लीये सकल समाज ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) देखो भैया चहुंदिश छाये बादर ॥ समज बिचार लेहो जिन मनमें फेरि फिरोगे निरादर ॥१ ॥ बरखा रितु बन छांहन लीजे भोजन संग बिरादर ॥ निर्मल ताल तलैया के जल बोलत नीके दादुर ॥२ ॥ हरी हरी भूमि छांड कित जईए ओर कदंम तर कादर ॥ खिसलपरे परमानंद तब हरि जुरमिल बैठे आदर ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (७) गहेरी सघन अति श्याम ढांकही छांह आई छाक काहेको करत अबार ॥ उमड घुमड रुमझुम चहुंदिशतें घटा आई निधरक भये डोलत देखो निहार ॥१ ॥ हां हां कहि भली बात टेरि ग्वाल कीनी पांत अर्जुन तुम लेहो भैया पनवारो देहो डार ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधरन लाल छाक बांट आज्ञा दीजे जेवन लागें तिहिं वार ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) ग्वालन प्रेम प्रीतरंग भीनी ॥ छाक चली ले नंदनंदनपें चंचल चपल गतीकीनी ॥१ ॥ करिकें पाक जतनसों राख्यो उपर कामरि दीनी ॥ चार पांच जुरि जुथ आपु मिली एक संगकर लीनी ॥२ ॥ उदित भई बरखा उत वरखत वेगि चलो उठि धाईं ॥ बरखा ऋतुके गीत गान कर सूरश्यामपें आईं ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (९) बादर झुम रहे चहुं ओर ॥ सजल श्याम घन बरखत उनये उमड घुमड घनघोर ॥१ ॥ छाक संवारत जसोदा मैया भोजन राखे जोर ॥ सुरश्याम हित जिहिं तिहिं विधकरी चली मन आतुर

दोर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) आई जु श्याम घटा घनघोर चहुंदिशते बरखत आवत बडी बडी बुंदन ॥ बोहोप्रकार बींजन पठये नानाविध संवार बेठेहो फेलाय केसे लागेहो अब दोना पातर गुंदन ॥१ ॥ प्रबल प्रकाश आकाश भये आय मील्यो चमचमात बीज लगत डरपावन उन्दन ॥ नन्ददास प्रभु संकेत पत वडवान दीये लाय डला भाजनभर आतुरके लागे मुन्दन ॥

□ राग मल्हार □ (११) जेंवन हरि बेठे कुंजन मांह ॥ बरखा आय अचानक बरखत, देख सघन बन छांह ॥१ ॥ आये देख चहुंदिश मोहन ढूंढफिरी कहुं नांहि ॥ कुंभनदास प्रभु गोवरधनधर करि बिचार मन मांहि ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) श्याम सुन हरि भूमि सुखकारी ॥ व्यंजन बांट सबनकों दीजे विनती लाल हमारी ॥१ ॥ बरख उघर घन नीके लागत पवन चलत पुरवारी ॥ भोजनकों बेठे परमानन्द नवल लाल गिरिधारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) ग्वालन झांकतहे चढि अटा ॥ श्याम चले गो बछरन पाछे नीकी बनी छटा ॥१ ॥ काछें काछ शीश शोभित कसि बांध्यो पीतपटा ॥ मोर पक्ष बन धातु चित्र कीये बन्योहे छेल अटपटा ॥२ ॥ नंदगांवतें अबही नीकसे चलत चाल झटपटा ॥ गये तहां जहां बाग वृन्दावन श्रीयमुनाके तटा ॥३ ॥ ढुंढत गेहरी छांह देखके बेठे बंसीबटा ॥ मुरारिदास प्रभु छाक आरोगत चढआई श्यामघटा ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) आरोगत मोहन मंडल जोरें ॥ व्यंजन स्वाद खरेही लागत ज्यों गरजत घनघोरें ॥१ ॥ न्हेनी न्हेनी बुंद सुहावनी लागत पवन चलत झकझोरें ॥ बहोछारनकी फुहीं परत अंग आवत जबही सकोरें ॥२ ॥ देखो लाल गाय सब इत उत बछरा गन इकठोरें ॥ श्रीगिरिधर लालको देख महासुख कुंभनदास तृन तोरें ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) आंधी अधिक उठी आवतहे घेर करो इकठोरीं गैया ॥ हेर चहुंदिश बहोर निहारत जेंवत ग्वाल मंडली महिया ॥१ ॥ ओर लेहु कछु कहत सबनसों तुमहु कहो बलदाउ भैया ॥ लेत परस्पर खात खवावत आंधी निहारत कुंवर कन्हैया ॥२ ॥ बादर बने घटा चहुं शोभित चल बैठो सुन्दरवर छैया ॥ बरखत बून्द परस मन आनन्द कुंभनदास गिरिधर मन महिया ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) गरज गरज रीमझीम रीमझीम लाग्यो वरसन घन बनमेतें आई ओचका गई हों अटकी ॥ दुजे गई भुल बाट नीकस जाय ओघट घाट कठिन पाई गेल फिरि भटकी ॥१ ॥ दीजे उर वींजन ढींग भीजनकी संकमान देखो ढांक सघन छांह डला धर्यो भूमि लटकी ॥ कुंभनदास गोवरधनधरन कुक श्रवन सुनत ढांकि पातनसों चली मटकी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) आज बर विपिनमें छाक लीला रची ॥ गोपबडडेनके कुंवर उडुगण लसत बीच व्रजचंद मानो शरद शोभा सची ॥१ ॥ उर सबनके किधों चारू चमकत भये इन्द्रमणि नीलमणि सुभग कंचन खची ॥ परस्पर करतहें मोद अति चपलता बदन लपटात दधि मार मोदक मची ॥२ ॥ लेत झूक झूक झपट कोर हरि हाथतें देत कंदूक इव नाहिन अनगन बची ॥ सूरस्वामी भये अतिही वीस्मित हरख चित्रलों पांत सुर गगन मंडल खची ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) आरोगत नागर नंदकिशोर ॥ उमड घुमड चहुंदिश छायो सघन घटा घन घोर ॥१ ॥ न्हेनी न्हेनी बूंदे बरखन लाग्यो पवन चलत झकझोर ॥ चतुर्भुज प्रभु पातल ले भाजे सघन कुंजकी ओर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) चहुंदिश टपकन लागी बुन्दें ॥ बहोंछारन बिंजन भीजेंगे द्वार पिछोरी मुन्दें ॥१ ॥ भोजन करत शीश धर छतना याही सुखहित गुन्दें ॥ वहे सुचेत नंददास प्रभु कोन कीच अब खुन्दें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२०) मोहन जेंमत छाक ग्वाल मंडली मांह ॥ लुमझुम रही देखी राधा सब कदंबकी छांह ॥१ ॥ व्यंजन देत निहोरे कर कर कोउ लेत कोउ करतजु नांह ॥ नन्ददास आस जूंठनकी फुले अंग न समांह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२१) कनैया टेर टेर हों हारी ॥ सुनसुन स्रवन रहत हो चुप कर कौन जू टेव तिहारी ॥१ ॥ टेरत ग्वाल बाल बलभैया आवो आई छाक तिहारी ॥ भोजन करो बेगि किन भैया बरषा उदित भई हे भारी ॥२ ॥ मंडल रचना करि बैठो हे मधि नायक हलधारी ॥ पन वारो डारत 'परमानंद' प्रभु भये आप प्रचारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२२) जेवत ग्वाल मंडली मांह ॥ ऋतु असाड के अंबर छाये भोजन को बैठे लगु छांह ॥१ ॥ हरित भोम चहूँदिस छाये गैया दूर बैठ के धाई ॥ तब हलधर हँस कहत सबन सों 'परमानँददास' मन भाई ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२३) बहु बिधि कुंजन की छबि न्यारी ॥ फुल फल सब जुम रहें हे रंगरंग सोभा भारी ॥१ ॥ घर घर भोजन होत परसपर प्रेम उमग पिय प्यारी ॥ 'कुंभनदास' जुगल जोरी पर सरबसु दीजे वारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२४) भोजन करत नंदलाल सँग लीये व्रज बाल बैठें हे कालिंदी कुल चंचल नैंन बिसाल ॥ छाक भरि लाई थाल परसपर करत ख्याल हँसी हँसी चुंबत गाल बोलत बचन रसाल ॥१ ॥ आसपास बैठे वाम मधि मोहे घनस्याम जैंवत सुख के धाम रस भरे रसिक लाल ॥ विमल चरित करत गान आज्ञा भई कुंवर कान्ह 'दास कुंभन' गावत राग मलार निरखि भये निहाल ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२५) मिलि के बैठें पंगति जोर ॥ विजन परोस धरें हे आगे लावत हे श्रीदामा जोर ॥१ ॥ आज्ञा मांगत है जेवन की देहो नंद किसोर ॥ हित चित सौं जेवन सब लागे फेर परोसत करत निहोर ॥२ ॥

हरित भूमि लता द्रुम छाई सीतल ही अति ठोर॥ गरजत गगन बादर बरखत हे बोलत चहूँदिस मोर ॥३ ॥ स्याम कहत सब ग्वालन सों मिलि उठि आवो भोर॥ 'कुंभनदास' प्रभु गोवरधनधर रसिक राय सिर मोर ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (२६) मोहन तुम हुं भोजन कीजे ॥ बरखा ऋतु जुर बादर नये कह्यों मान कर लीजे ॥१ ॥ तब बलदाउ खीज कहत स्याम सौं बांट बांट तुम दीजे ॥ 'परमानँद' प्रभु जेवन लागे प्रेम प्रीति रस भींजे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२७) मंडल जोर हरि जेंवन बैठें ऋतु अषाड के बादर छाये ॥ अर्जुन भोज सुबल सीदामा आपुन हँस हलधर ही बुलाये ॥१ ॥ आपुन खात खवावत ग्वालन विजन दे दे सब ही मन मोये॥ 'नंददास' प्रभु की छबि निरखति ब्रह्मा सिव सुरपति पछिताये ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२८) सखी मोहे करो उन की छकिहारी ॥ कर भोजन बहु भाँति भाँति के मोहे देहो तुम सिर पर धारी ॥१ ॥ हों छकिहारी हों छकिहारी चल मन मिलि दोऊन को टेरो री ॥ आवो हों व्रजराज लडेतें तुम जेवो हों रहु वदन निहारी ॥२ ॥ वदन निहारी सह्यारी अपनी बलि बलिहारी हों वारी ॥ 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' सुरभी को रहे हुंक करूं कहा री ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२९) सुनो मोहन आई छाक तिहारी ॥ इत घन घटा उठी सुनो भैया चितवो नेक बिहारी ॥१ ॥ बेगि पखार सिला सुनि दाऊ सब मिल भोजन कीजे॥ गैया बगदावो सीदामा, मेरो कह्यो अब कीजे ॥२ ॥ भोजन करे प्रसाद सबे लीनों आरोगत बीरी पान ॥ 'नंददास' प्रभु घन बरखत चहूँ ओर करत विविध रसदान ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३०) हरि सघन की अति स्याम ढाक की छांह, आई छाक काहे कुं करत अवार ॥ उमडि घुमडि लुमि झुमि चहूँदिस तें घटा आई निधरक भए डोलत देखो निहार ॥१ ॥ हा हा कही भली बात टेर

सबन कीनी पांत अर्जुन तुम लेहु भैया पनवारे देउं डार ॥ 'कुंभनदास' गोवरधनधरनलाल छाक बांटी आज्ञा दे जेबन लागे तेही वार ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३१) भोजन बेगि करो रे भैया इत गरजत उत बदरा घोर ॥ सिरी पवन चलत चहूँदिस तें ऋतु अषाड के बोलत मोर ॥१ ॥ बलदाऊ सब टेर ग्वाल कों मंडल रचना कीनी जोर ॥ बहुत भाँति बिंजन परसाये लडुवा गुंजा मठरी ठोर ॥२ ॥ इत जेवत उत गाय सिखर चढि इत होत बडी बडी बूंदन की सोर ॥ बीरा ले आतुर 'परमानँद' गयो कुंज गठ दोर ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३२) हरि भोजन किजे आय छाक एक वार ॥ यह बैठी छकहारी कदम तर रूप रसिक कुमार ॥१ ॥ उमगी घटा चहुंदिसतें बरखन लागी फुंहार ॥ उलटी चली तृन तोर ग्वालिनी करत नमन बलिहार ॥२ ॥ कर कर ऊँची बांह बुलावत चल आये सब ग्वाल ॥ नंददास प्रभु जोर मण्डली बैठे नंदकुमार ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३३) लाल बाल निरख हरख रीझ रहे भींजे वसन देख कहत लेरी पलटी ॥ पीताम्बर पहेर लीजे छाक बांट सबन को दीजे बरखा ऋतु घर सिदोसी जाऊ उलटी ॥१ ॥ भूख तें अकुलाय रहे खीजत कहत रहत भये सकल दुःख गये भेटु तोकुं तो भये सुलटी ॥ कुंभनदास गोवर्धनधर लाल अनत जात रहे तेरे भाग तोही पाये निकटी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३४) चल मन होनी होय सों होय ॥ पतौवन तोर व्यंजन ते ढांपो कांवर तूट दे धोई ॥ भूखे होय सब प्राणजीवन धन यह बिन नाहिन कोई ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर मारग रहे दिस जोय ॥

मल्हार - भोग सरवे के पद (असाढ सुदि ३ से श्रावण सुदि १०)

□ राग मल्हार □ (१) कदम-तर भली भाँति भयो भोजन । हलधर कहत करो अब अचबन गैयाँ भूली जोजन ॥ जो भावै सो और कछु लैहौ करत सखा सब नाहीं । चलि गाँइनि देखौ 'परमानँद' घटा चहूँ दिसि छाहीं ॥

□ राग मल्हार □ (२) भोजन भयो लाल नीकी विधसों सदन कुंजकी मांह ॥ गरज गरज घन बरस्यो प्रबल अति कछु हम जान्यो नांह ॥१ ॥ कर अचवन अब देखो व्रज शोभा कदंबखंड वन मांह ॥ नंददास प्रभु तुम चिरजीयो हम नित्य जूंठन खांह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) आज हरि जेवत अति सुख दिनो ॥ बरखत मेह नेह उपजावत रुचि रुचि भोजन कीनो। बिछरी धेनु करो एकठो रे तब हरि अचवन कीनो कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर भक्त कृपा रस भीनो ॥

□ राग मल्हार □ (४) बरज बरज हारे बरजत डारें जूठन मांझ बिंजन भयो भोजन हरि ॥ नीके सब लीए अघाई कोरन मुख दीयो जाई जमुनादिक पान करत अचवन करि ॥१ ॥ सुबल तोक मधुमंगल परिव्रत अर्जुन, भोज सुबाहु सहित हरि समीप सीदामा कोरि भरि ॥ बांटत बीडा ग्वाल श्रीगोवरधनलाल 'कुंभन दास' वरषा ऋतु बरषत झरि ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) भयो भोजन करत लाल अचवन जबें ॥ अति ही अघाय भए सुर मंडल सहित सखा संग ग्वाल करि पान आए सबें ॥१ ॥ करत बलिहारी चलि उलटि छकहारी दीए तिहिं वास बन को बांटि बीडा तबे ॥ बेगि बगदाई धेनु 'कृष्णादास' प्रभु उमंगि बरखा रहि आई हो घर कबे ॥२ ॥

मल्हार बीरी खवाय के पद

□ राग मल्हार □ (१) पान मुख बीरी राची हरिकें रंग सुरंगे ॥ एसी कृपा सदा हम उपर टारी जिन तुम संगे ॥१ ॥ हरि हम तुम बिन कोन कामके परत प्रेममें भंगे ॥ परमानन्द दूधमें पानी ज्यों पानी मिलवो अंगमें अंगे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) बीरी सुबल श्याम कों देत ॥ श्याम सखा ग्वालन को बांटत उपजावत अति हेत ॥१ ॥ बरखा बरखत तें सब बिडरी गायन की सुध काहे न लेत? चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन बजाई मुरली करन

सुचेत ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) अधर रंग राख्यो अरुन अति प्रेम प्रीतके पान हरत मन ब्रीडा ॥ यह सुख रास व्रजवास नंदलाल संग नित गो चारन नित बन क्रीडा ॥१ ॥ यह बरखा ऋतु हरित भूमि जित वृंदावन जमुनाके तीरा ॥ गोपीजन व्रजवासिन के हित नंददास प्रभु झुक झुक दीयो बल बीरा ॥२ ॥

राजभोग दर्शन के पद

□ राग मल्हार □ (१) हमारें माई स्यामाजूको राज ॥ जाके आधीन सदाही सांवरो या व्रजको शिरताज ॥१ ॥ यह जोरी अविचल श्रीवृन्दावन नही औरनसों काज ॥ श्रीविट्ठल विपिन विहारिनके संग ज्यों जलधर संग गाज ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) यह ऋतु आई वर्षन पियबिन हीयरा धरकें ॥ घनकी गरज ओर लरज मोरनकी सुनसुन छतियां दरकें ॥१ ॥ कोन भांत करूँ केसें धीरज धरूं पियमूरति मेरे हीयमें अरकें ॥ उनकी मिलन रही मेरे मन रोमरोममें भरकें ॥२ ॥ तेसीये घटा अंधियारी तेसीये रेनकारी तेसीई पपैया पीऊ पीऊ ररकें ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरकी विरहनि निशदिन यह विधि करकें ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) कोऊमाई केसेंहीजो कहो ॥ नवरंग गिरिधरलाल लाडिलो मम कुचबीच रहो ॥१ ॥ जेनहीं जानत मरम हिलगकी अपनीदेहदहो ॥ पियसंगमकी श्रमजल सरिता मेरे उरही वहो ॥२ ॥ नवनिकुंजनायक मनमोहन कोमलकरजो गहो ॥ सुन कृष्णदास विलास वारनिधि मेरी जीवनहो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) सखी अब मोपें रह्यो न जाय ॥ चलिरी मिल उनहीपें जैये जहां चरावत गाय ॥१ ॥ अंगअंगकी सब सुधि भूली देखत नंदकिशोर ॥ मेरोमन हरिलियो तबहीको जबचितयें यह और ॥२ ॥ नेन्ही नेन्ही बूंद परत बादरकी नेकहु घर न सुहाय ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरनलालकों

अबकें आन मिलाय ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (५) एसेमाई चहूंदिश तें घनघोरें॥ मानों मत्त मदनकेहाथी बलकर बंधन तोरें ॥१ ॥ श्याम अंगपर चूंबत गंडमद वरखत थोरेथोरें॥ धावत पवन महावतलियें मुरत न अंकुश मोरें ॥२ ॥ बगपंगति मानों दंत डाळनतें अवधि सरोवर फोरें ॥ वनबल जल उमगि नयन मध्य कुचकंचुकी बंदतोरें ॥३ ॥ तबतिहिं समे आन ऐरावत व्रजपतिसों करजोरें ॥ अब सुन सूरश्याम बिन यह गति गरजत गात जेसें कोरें ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (६) यह पावस ऋतु आई नेन्ही नेन्ही बूंदन वर्षत रिमझिम पवन चलत पुरवाई ॥१ ॥ हरी भूमिपर अरुण देखियत दामिनी अति दरसाई ॥ तेसेई चातक रटत श्रवणसुन विकलहोत अधिकाई ॥२ ॥ कर विचार सबे मिल सजनी यह निश्चय ठहेराई ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरनलालकों मिलें कुंजबनजाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (७) कोउमाई लेहोरी गोपालें॥ दधिकोनाम शामघन सुंदर बिसर गयो व्रजवालें ॥१ ॥ मटुकी शीस भ्रमत व्रजवीथन बोलत वचन रसालें ॥ उफनत तक्र चुंबत चहुंदिशतें मन अटक्यो नंदलालें ॥२ ॥ हँस मुसक्याय ओट ठाडीव्हे चलत उलटी चालें ॥ सूरश्याम बिन ओर न भावे वह विरहिन बेहालें ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (८) सखीरी वर्षन लाग्यो सावन॥ गरजत गगन दामिनी चमकत रिझाय लेहु मन भावन ॥१ ॥ नाचत मोर सकल मदमाते कोकिल पिक बोलतहें रिझावन॥ चहुंदिश राग मल्हार सरस स्वर मग्न भये सबगावन ॥२ ॥ सुनराधे एक विकट भई ऋतु विनव्रजनाथ नाहि सुखपावन ॥ जायमिली गोविंद प्रभुकों जब विरह व्यथाजोन सावन ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (९) मेहेल आये लाल तनकी तपत गई॥ नयनन मगझारूं पलकन पपनडारूं कर राखों उरमाल ॥१ ॥ मुख देखें सुखहोत सखीरी प्रेमप्रीति प्रतिपाल॥ सूरश्याम प्रभु वेग दरसदियो निरख भईं हों

निहाल ॥२ ॥

☐ राग मल्हार ☐ (१०) प्यारीके गावत कोकिला मुख मूंदरहे पीयके गावत खग नेंना मूंदिरहे सब ॥ नागरीकेरस गिरिधरन रसिकवर मुरली मल्हार राग अलाप्यो मधुरे जब ॥१ ॥ दंपति तान सुनत ललितादिक वारतहें तनमन फेरतहें अंचल तब ॥ चतुर्भुजप्रभुकों निरख सुख दंपति कहेत कहाधों कीजे रहिरी भवन अब ॥२ ॥

☐ राग मल्हार ☐ (११) अद्भुत कौतुक देख सखीरी वृन्दावन नभ होड परीरी ॥ उत घन उदित सोहत सौदामिनी इतही राधिका मुदित हरीरी ॥१ ॥ उत बगपांति सुहात सुसुंदर वाम विशाल द्वे दिशा खरीरी ॥ उत घनगरजे इतमुरलीधुनि वे जलधर ये अमृत भरीरी ॥२ ॥ उत इन्द्रधनुष इते वनमाला अतिविचित्र हरि कंठधरीरी ॥ सूरदास प्रभु कुंवरि राधिका घनकी शोभा दूरकरीरी ॥३ ॥

☐ राग मल्हार ☐ (१२) बंसी न काहूके वस बंसीने कीनेरी बस बंसीकों बजाय जानें बंसी जाके वसहे ॥ अधररस प्रेममाती नेक न होत हाती कांन परी प्रानलेत वेसचकेरसहे ॥१ ॥ नयेनये नेह बाढे मोहनलाल नचाय छांडे ललित त्रिभंगी कान्ह मोहनसों असहे ॥ हित हरिवंश परस्पर प्रीतम राधा वृषभान नंदिनीसों रसहे ॥२ ॥

☐ राग मल्हार ☐ (१३) मुरली तोऊ गोपालें भावे ॥ सुनिरी सखी यद्यपि नंदलाले नाना भांत नचावे ॥१ ॥ राखत एक पांय ठाडेकर अति अधिकार जनावत ॥ कोमल अंग श्याम सुंदरको कटिटेढोव्हे आवत ॥२ ॥ जान अधिक आधीन कनोंडे गिरिधर नार नवावत ॥ आपुन पोढी अधर शय्यापर कर पल्लव लपटावत ॥३ ॥ भ्रकुटी निकट नयन नासापुट अतिसे कोप कंपावत ॥ सूर प्रसन्न जान एकोछिन धर पर सीस डुलावत ॥४ ॥

☐ राग मल्हार ☐ (१४) गावे घनश्याम तान जमुनाके तीरा ॥ नाचत नट

भेख धरें मंडल अहीरा ॥१ ॥ नेन लोल चारुबोल अधर धरे बेना ॥ आवत मुखकमलकी छबि मंडित कचरेंना ॥२ ॥ जलकी गति मंद भई सुरभी तृन न लीनो ॥ बछरा न खीर पीवत नादही मनदीनो ॥३ ॥ मोहे खगमृग नग मुनी मधुकर ग्यानी ॥ परमानंद स्वामी गोपाल लीला बन ठानी ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) नारि वे ऐसी डरपत घनतें ॥ यह कहि मौन रहीं पहर इकलों अंगुरीनकाट दशननतें ॥१ ॥ भांत भांतकी सब सुधिकीनी कछु सुधिकीनी मनतें ॥ वैसेमें गरजत सुन श्रवणन भूल गई सब तनतें ॥२ ॥ नयन उघार वदन जब देखत विछुरे सब चेननतें ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर बिन बिहाल निपट भई नयननतें ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) घूमघूम घटा आंई झूमझूम लतारहीं भूमि हरियारी लागे सुभग सुहाई ॥ तहां बैठे पीयप्यारी भूषण छबि न्यारी न्यारी मुखकी उजियारी मानों चांदनीसी छाई ॥१ ॥ तनन तनन तानलेत प्यारी कर तालदेत गावत मल्हार राग अतिमन भाई ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधारीलाल लख मोहि व्रजकीबाल रीझ रीझ रहे दोऊ कंठ लपटाई ॥

□ राग मल्हार □ (१७) उमड घुमड आई कारी घटा सुखकारी ॥ पिय सिरपाग कंसुभी शोभित प्रियाकें कंसुभी सारी ॥१ ॥ भुज अंसनधार विहरत डोलत नवल भूमि हरियारी ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर दंपति छबि इन्दु वधू लखी हारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) उमडघुमड घन आवत बदराकारे ॥ पुलक पुलक गावत पीय प्यारी कंठ भुजा उर धारे ॥१ ॥ लेततान जब नवल नागरी मगन होत तब नंददुलारे ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरन छबीले दंपति अति रिझवारे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) तेसीये हरित भूमि तेसीये बूंढनशोभा तेसोही इन्द्रको धनुष मेहसो ॥ तेसीये घुमडघटा वरषत बूंदन तेसेई नाचत मोर नेहसों ॥१ ॥ वृन्दावन सघनकुंज गिरिगहवर विहरत श्याम श्यामा सोहें

दामिनी सम देहसों ॥ छीतस्वामी गुणनिधान गोवर्धनधारी लाल मध्यतहां गान करत लाल तान गेहसों ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२०) नाचत श्यामसंग मुदित स्यामहि रिझावत ॥ तेसोई कोकिला अलापत पपैया शब्द लेत तेसेई मेघ गरज मृदंग बजावत ॥१ ॥ तेसोई वृन्दावन तेसीहे हरित भूमि तेसी व्रज वधू हिलमिलस्वर गावत ॥ विचित्र विहारीजूकी या छबि ऊपर तनमनधन सब वारत ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२१) दोऊ जन भींजत अटके बातन ॥ नव निकुंज के द्वारे ठाढे अंबर लपटयों गातन ॥१ ॥ ललिता ललित रूप रसमाती बूंद बचावत पातन ॥ 'हित हरि बंस' परसपर प्रीतम मिलवति रति रस धातन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२२) मंजु कुंज तरु तर ठाढे दोऊ रिम झिम रिम झिम बरषत मेह ॥ सुख के पुंज तरे नव किसोर वर रूप अगाध तेसौई बाढ्यों नेह ॥१ ॥ कबहुँके हँसत खेलत कबहुंके मलकि गावत रंगीलो राग अनुराग को गेह ॥ 'नंददास' प्रभु प्यारी प्यारे सौं कहत यह जू तान पिय लेहु ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२३) सखीरी घनतो गरजन लाग्यो ॥ बरषत मेह पवन फूंहिनसों अपने मद अनुराग्यो ॥१ ॥ बोलतमोर पपैया बोलत नयो विरहतन जाग्यो ॥ हम बिछुरी बैठी भवनन में यह रहत रसपाग्यो ॥२ ॥ यह सुख मानत अपनी ऋतुसों हमारो हियरा दाग्यो ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर बिन जाने आवत इतही भाग्यो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२४) सखीरी घन बरषत एक धार ॥ गरजगरज आवत फिर फिरकें मद जोबनके भार ॥१ ॥ हे सखी राति भईके दिनहे के टर गईहे वार ॥ ऐसेमें क्यों आयहें बनते बलयुत नन्दकुमार ॥२ ॥ यह अवसर न रहेत एकोपल लाग रही झिनकार ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरजो भीजे तोहों

भीजोंगी द्वार ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२५) सखीरी बनही रहिये जाय ॥ घन गरजत बरषत सगरे दिन क्यों घर बैठि डराय ॥१ ॥ करो विचार सबे मिल एसो इतनो कर ठहराय ॥ उनहीं ओर ले चल तू मोकुं कहा रही सोचाय ॥२ ॥ पपैया बोल सुनत यावनमें त्यों मोकुं उदकाय ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरनलाल संग आज मोहिकों भिजाय ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२६) देखरी घनतो ओल्हर आयो ॥ गरजत बरसतहें चहुं दिशतें दामिन तेज दिखायो ॥१ ॥ कोकिला कूक पढी चहूं दिशतें पपैया बोल सुनायो ॥ मन भीज्यो तन कांपन लाग्यो विरहनी विरह जगायो ॥२ ॥ मेरे पीय वन हों भवन अकेली यह कहि हीयो हिरायो ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर वह सुंदरि अंसुवन अंचल भिजायो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२७) भामिनी घनगरजे डर पाय ॥ चौंकपरी सुनत श्रवणन में कछुक रही मुरझाय ॥१ ॥ भर उसास पूछत सखीयन ते ये वर्षा ऋतु आई ॥ वे वनदूर अकेली मंदिर में क्यों धीरज ठहराई ॥२ ॥ तेसेई बोलत मोर पपैया जातहे विरह बढ़ाई। श्रीविट्ठल गिरिधरन कुंवर तुम समझही करो सहाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२८) विरहनी मेह देखी सात छांडे ॥ ज्यों ज्यों मन बौरावत अपनों अधिक अधिक वह बाढे ॥१ ॥ राखत कान मूंद अपने दोऊ जबही पपैया बोले ॥ सगरे दिन क्योंहूं नंदनंदन अब वह आंखिन खोले ॥२ ॥ जबही घन गरजे तब बरसे उठ उठ बाहिर आवे ॥ श्रीविट्ठल गिरिधन ब्रज सुंदरि क्योंहूं चैन न पावे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२९) सखीरी क्यों रहीये घरमांझ ॥ डर लागत इन श्याम घटनको वे आवेंगे सांझ ॥१ ॥ आप फिरत सगरे दिन भीजत वन छतना सिरदियें। ऐसी छबी प्यारी प्रीतमकी आन चूभी मेरे हीयें ॥२ ॥ कर विचार चलें सुन सजनी बरषतही हम जांय ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन

अचानक हमहि देख मुसकांय ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३०) बरषतहें एक धारा मेह ॥ आवत उठी लाल तुमहीपें वाहि सुहात न गेह ॥१ ॥ बिन समझे कबहू नंदनंदन भीजतही उठ आवे ॥ तैसेही मोर चहुंदिश बोलत दादुर वचन सुनावे ॥२ ॥ जादिनतें घन गरजन लाग्यो बाढी दिशानई ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर व्रज सुंदरि अब बेहाल भई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३१) सखी जुरि आईं श्यामघटा ॥ दामिनी दमकत दादुर डाकत बोलत नवल छटा ॥१ ॥ अब केसें आवेंगे प्रीतम जब बरसेंगे मेह ॥ सगरे दिन रहीहे एकधारा केसो व्हेहे नेह ॥२ ॥ कौन जतनसों प्रात होयगो केसें कलप रहे ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर बिन आये केसें धों ये करहे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३२) हे मा कारी बदरिया बरसे ॥ तेसे पीऊ पीऊ रटत पपैया सुनसुन जीयरा तरसे ॥१ ॥ तेसीये चलत पवन पुरवाई लागत तन अति करसे ॥ तेसी वेलि लपटानी द्रुमतें जानत मोहि हरसे ॥२ ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरको रूप यह केसें नयनन दरसे ॥ होत औसेर यह मिलवेकी प्रीतम अंग अंग तरसे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३३) दामिनी दमकत जोबन माती ॥ गरज गरज आवत इतहीकों डोलत राती माती ॥१ ॥ आप रहेत घनके संगलागी पहेलें उनही विछुराती ॥ हम विछुरी बैठीजु भवनमें तिनकों तू न सुहाती ॥२ ॥ याको तेज देख देख सखीरी कांपतहे मेरी छाती ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरनलालतें ये नहि नेंक संकाती ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३४) देखरी दामिनीकी चमकारी ॥ उमग उमग आवत इतहीकों और घटा अंधियारी ॥१ ॥ तेसेई बोलत विरह पपैया परत हीये घनकारी ॥ और दोऊ नयन सजल भरिआये ॥ कोकिलकी कुहुकारी ॥२ ॥ गयो दिनबीत रेनपुन आई लागीहे वरषारी ॥ श्रीविठ्ठल

गिरिधर केसें आयहें घर वनतें गौचारी ।।३।।

□ राग मल्हार □ (३५) बदरा आयेरी वर्षन ।। चहुंदिश भूमि भई हरियारी इन्दु वधू लागी दरशन ।।१।। तेसीये पवन चलत पुरवाई कोंन सहाय करेगो ।। नंदके लाल यशोदासुत बिन को तन पीर हरेगो ।।२।। पियवनमें हों भवन अकेली चातक बोल सुनावे ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरनलालकों अबकोऊ आन मिलावे ।।३।।

□ राग मल्हार □ (३६) सखी मोए घन बरषत कित लाई ।।चल न सकत बन बन देखें न सब पचरंग सारी बनाई ।। बिहरो गिरि गोवरधन कुंजन कोकिला कूक मचाई ।। 'व्रजाधीस' प्रभु प्यारी के बचन सुनि आए निकट सुखदाई ।।२।।

□ राग मल्हार □ (३७) गावत मल्हार पिय आये मेरे आंगन कहा नौछावर करूं यही ओसर ।। तन मन प्रान एक रोम पर वार डारूं तोऊ न करत या कृपाकी सरवर ।।१।। सुफल करी आज रेन किये अब सुख सेन मुख हू न आवे बेन उमग चल्यो हियो भर ।। रसिक प्रीतम प्रेम विवस भये श्रीवल्लभप्रभु रसिक पुरंदर ।।२।।

□ राग मल्हार □ (३८) अब घन घोर सांवरो चरावत गैया बन ।। पातन को छतना कीये, हाथ लकुट लीए लपेट पीतांबर गातन ।।१।। गाय बछरुवां मिलवत घेरि घेरि फेरि टेरि टेरि बलदाऊ साथन ।। 'सूरदास' प्रभु की यह छबि निरखति डोले अकेले सो जातन ।।२।।

□ राग सारंग □ (३९) श्रीवल्लभ यह बट छाँह सुहाई । या निकुंज मंदिर की सोभा निरखत मो मन भाई ।।१।। वैभव सहित बिराजत राजत सहचरी सब जुर आई। रामदास तहाँ गान करत है नाचत भाव जनाई।।२।।

संध्या आरती के पद

□ राग मल्हार □ (१) ।। दुमाला के पद ।। लालमाई भीजत आये गेह ।। पीत दुमालो अधि बिराजत कलगी अधिक स्नेह ।।१।। गरजत गगन मृदंग बजावत पवन झकोरत मेह ।। श्रीविठ्ठल गिरिधरनलालकी झलकत सांवरी देह ।।२।।

□ राग मल्हार □ (२) सखीरी अब क्यों न बरखत मेह ।। जोलों पीय आवें बनतें घर तोलों वीचनेकदेह ।।१।। नातर मोहि ले चलि भीजतही छांड देहु यह गेह ।। अरी सुंदरि तेरे प्रीतमआये काहेकों करत संदेह।।२।। भीजी पाग भीज्यो उपरेना भीज रहे सब आप ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरनलालसों कर भीज्योही मिलाप ।।३।।

□ राग मल्हार □ (३) देख बदरिया सावनकी ।। इकटक व्है ठाडी मगजोवत मनमोहनके आवनकी ।।१।। दामिनि दमक घन गरजन लाग्यो मंदमंद वरषा वनकी ।। तेसेई पीऊपीऊ रटत पपैया विरहनि विरह जगावनकी ।।२।। कोकिल कूक परी श्रवणनमें बगपंगति दरसावन की ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरनलाल विन तनकी तपत बढावनकी ।।३।।

□ राग मल्हार □ (४) लाडिलो लइयाय बुलावत धेनु ।। चढ कदंब धूमर धौरी काजर पीयरी पूरत मधुर स्वरवेनु ।। चुचकारत पोंछत सुंदर कर सकल सुभग सुख एन ।। गोविंद प्रभुको मुखारविंद देख हूंकहूंक सब श्रवत स्तन पयफेन ।।२।।

□ राग मल्हार □ (५) माधो भलो बन्यो आवेहो ।। देखत जिय भावे हो ।।ध्रु०।। मोर पंखके चंदुवा नीके माथे बांधलिये ।। गुंजा फलके हार बनाये सब श्रृंगार किये ।।१।। कुंडल बीच कदंब मंजुरी चूरण कुंतल सोहें ।। मृगमद तिलक भोंह मन्मथ धनु देखत सब जग मोहें ।।२।। श्याम कलेवर गौरज मंडित कोमल कमल दलमाल ।। परमानंद प्रभु गोप वेषधर कूजत वेणुरसाल ।।३।।

□ राग मल्हार □ (६) गाय सब गोवर्द्धनतें आईं ।। बछरा चरावत श्रीनंदनंदन वेणु बजाय बुलाईं ।।१।। घेरी न घिरत गोप बालकपें अति आतुर व्हे धाईं ।। बाढी प्रीत मदन मोहनसों दूधकी नदी बहाईं ।।२।। निरख स्वरूप व्रजराज कुंवरको नयनन निरख निकाईं ।। कुंभनदास प्रभुके सन्मुख ठाडी भईं मानों चित्र लिखाईं ।।३।।

□ राग मल्हार □ (७) वनतें आवतहें गोपाल ।। नेंक समझ चल वनही

दिखाऊँ अति प्यारो नंदलाल ॥१ ॥ भीजतही अपनी गायन सब आज सवेरी लायो ॥ तेरे वचननको मोहि अचरज कोने जाय सुनायो ॥२ ॥ अब तो घटा नीकी लागत हे देखत नंदकिशोर ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरको मिलवो और बोलेंगे मोर ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (८) लालमाई भीजत आयेगेह ॥ हाथ लकुटीया कामर खोई खूंदत कीच सनेह ॥१ ॥ निश अंधियारी हाथ नहीं सूझत पवन झकोरत मेह ॥ सूरदास दामिनीके दमकें लखी सांवरी देह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (९) लाल नेंक गैया हमारी घेरो ॥ खिरकतें दूर निकसगई आगें हेरी देकिन टेरो ॥१ ॥ मेरीटेर सुनतहीं श्रवणन टेर रही बहुतेरो ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरनलालके रूप बदन तन हेरो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) लालकी शोभा कहेत न आवे ॥ संध्यासमें खिरकमें ठाडे अपनी गाय दुहावे ॥१ ॥ लालपाग शिर उपर सोहे मोरचंद छबिपावे ॥ मोसों कह्यो सुनजा तू बातें छतना बूंद बचावे ॥२ ॥ लटकत चलत जबहीघर अपने युवतिन बोल सुनावे ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरनलाल छबि यशोमतिके जिय भावे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (११) आज कछू कुंजनमें वरखासी ॥ दलबादरमें देख सखीरी चमकतहे चपलासी ॥१ ॥ नेन्हीनेन्ही बूंदन वर्षनलागी पवन चलत सुखरासी ॥ मंदमंद गरजन सुनियतहें नाचत मोर कलासी ॥२ ॥ इन्द्रधनुष बगपंगती देखियत भूली मृंगमालासी ॥ चंद वधू छबि छायरहीहे गिरिपर श्याम घटासी ॥३ ॥ उमगतहीं कछु हँस कंपतहे बोलतहे कोकिलासी ॥ व्यासदास चातककी रटना रस पीवत भई प्यासी ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) पावस ऋतु आगम जान आये निज नंदसदन नंदनंदन व्रजनरेश चलत चाल गति झयन्द ॥ कटि सोहे आडबंद सीस कुल्हे पहर श्वेत मोरपीछ स्त्रवन कुंडल किलकत है अति अमन्द ॥१ ॥ द्रुंमवेली हरित भूमि सोभित है इन्द्रवधु घन गरजत बूंद परत बहत पवन

मंदमंद ॥ कोकिल पीक करत सोर नाचत मन मुदित मोर कृष्णदास नीके बने राधा अरु व्रजके चंद ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) मधुकर कबहुं गुपाल घर आवे ॥ बहुत दिननके प्यासे लोचन विरहिनी मरत जिवावे ॥१ ॥ कब गिरि चढ पीतांबर फेरें धोरी धेनु बुलावे ॥ मोर मुकुट गुंजनके हरवा रुचि रुचि रास बनावे ॥२ ॥ जमुना के तट गोपग्वाल संग मुरली नाद सुनावे ॥ परमानंददासको ठाकुर व्रजजुवतिन मन भावे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) भींजत कुंजन तें दोऊ आवत ॥ ज्यों ज्यों बूंद परत चूनरी पर त्यों त्यों हरि उर लावत ॥१ ॥ जीहीं तिहिं मोर कोकिला बोलत पवन तेज घन धावत ॥ मंद मंद कर मुरली मधुर सुर राग मलार ही गावत ॥२ ॥ अति रिम झिम फुहीं मेघन की द्रुम तर बूंद बचावत ॥ 'सूरदास' प्रभु रिझि परसपर त्यों त्यों रुचि उपजावत ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) सखी मेरो आगम को दिन आयो ॥ ग्रीष्म तपत गयो मेरी सजनी पावस बदरन छायो ॥१ ॥ मेरे पिय आये हें अबही नेह नीर भर आयो ॥ परमानंद स्वामी रतिनायक सुरत हींडोरे झुलायो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) सजनीरी भले नयी ऋतु आय ॥ आगम अगम जनावत अंग अंग लागत परम सुहाय ॥१ ॥ बादर छाये पिय आवत बनतें साँझ समे सिराय ॥ दामिनी कोटि पीतांबरकी छबि गरज मुरलिका भाय ॥२ ॥ गोपीजन हरखित उर आनंद नेह नयो दरसाय ॥ गोधूलक बिरियां परमानंद देखनको अतुराय ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) सोहत हैं रंगभीने लाल माई। सीस सोहे कांवरकी खोई लाल लकुटी कर लीने ॥१ ॥ खुंदत कीच्र घुटुरन लों मोहन चकित चहुं दिस हेरे। कब हू दिसाभ्रम होत विकल मन राधे राधे श्री मुख टेरे ॥२ ॥ तिहि छिनु तडित उजियारो देख्यो प्यारी महल झरोखे। 'रसिक' प्रीतम पग धरत उतावल प्राण प्रिया रस पोखे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) आवनि अवधि अनत विरमें पिय पास ऋतु अचानक नहरांनी ॥ बन में डोलत मोर कोकिला करत रोर चहूँ दिस गगन घटा घहरानी ॥१ ॥ कसूंभी रंग कह्यो न परें कछू पथिक वधू देखत बिलसानी ॥ लह लह दामिनि डरपत भामिनि बग पाँति देखत बिरहनि सानी ॥२ ॥ सुरति समैं बिचारे आए पिय देखत तन मन अति हुलसानी ॥ 'सूरदास' प्रभु कुंवरि राधिका रहसि मिली हँसी कंठ लपटानी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) बूंदन भीजत आए मेरे गेह नैंना अरुन बरन भए कान्ह ॥ सुनि सोच रहत छिन बोली लेत मन की दोरि का कहीए स्याम घन ॥१ ॥ में इतनो ही भलो मान्यों आवडे पावडे धरत चरन ॥ पांऊधारियें जू मदन मोहन पिय जाके संग सोहे जेसे घन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२०) माथे बने मोर के चंदवा अरु घुंघबिन के हार हियें ॥ पीतांबर की फेंट बाधे सुमन सदल बने धातु के रंग अंग अंग चित्र कीये ॥१ ॥ स्रावन समय संध्या घन घन बन अरु इंद्र धनुष लीए ॥ 'सूर' ससि उद दामिनी एई मानौं बरखत प्रेम पीयूष पीये ॥२ ॥

ब्यारु के पद

□ राग मल्हार □ (१) ब्यारु करत करकोर धरत मुख सुख उपजत कछु स्वाद अधिक अत। गरज गरज बरखत बडी बूंदन दामिनी दमकत चाहे रहत जित ॥१ ॥ सुर न तान रंग तेसोई उपरना ओढे दूनीछबि पावत तेसीये पावस रित। परमानंदप्रभु की वानिक निरखत गोपीजन भूली सुख उपज्यो अधिक अत ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) ब्यारु करत बलराम श्याम जैसी घटा श्याम सुख श्याम देखत मन। पलक ओट अकुलात आरत अत तज न सकत एको घडी पल छिन ॥१ ॥ ओटभये लखलख छक छक भूरि भाग्य धन्य धन्य गोपीजन। नंददास एसे सुख ऊपर वार फेर दीजे तन मन धन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) अधर रंग राख्यो अरुन अति प्रेम प्रीतके पान हरत

मन वीरा। यह सुखरास व्रजदास नंदलाल संग हित गौचारन हित वनक्रीडा ॥१ ॥ यह वरखाऋतु हरित भूमि जित तित वृदांवन यमुनाके तीरा। गोपीजन व्रजवासिनके हित नंददास प्रभु झुक झुक दीयो बल बीरा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) वरषा ऊदीत भई ऋतु मान ॥ संध्या समय ब्यारु की बीरीयां कित डोलत है कान्ह ॥१ ॥ नंद बाबा बैठें मग जोवत प्रीत जो सुत की जान ॥ 'परमानँद' तिहिं छिन आये ब्यारु कीनो आन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) सुनि सुनि सुत की बात जननी तात हँसी हँसी जात कोर ले ले खात त्यों त्यों अखियाँ सिरात ॥ संकरसन कहत केसी उमडि घूमडि घटा आई स्याम कहत दमकि दामिनी डरात ॥१ ॥ बातन ही बातन मिस ब्यारु करत रुचि बढाई जानि री जसोदा मैया तेरे जीये की में बात ॥ दूध दीयो ऊंचे लीयो कह्यो सब ही कियो 'कृष्णदास' गिरिधर जीयो बलि बलि गई मात ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) हँसत हँसत आए हरि हलधर भीजे बसन पलटाये बरषत चहूँ और मेह कहत कांन खिजत तात मात भ्रात ठाढे दोऊ मुसिकात भिजवत बसन डोलत कोन बान ॥१ ॥ ब्यारु करन को बेठारी बिजन भरि दीयो थार ब्यारि ढोर बार बार जेंमत रुचि आंन ॥ 'कृष्णदास' गिरिधर छबि निरखत आनंद भरि देत वार न्यौछावरि जान प्रान ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) ब्यारू करत कर कोर धरत मुख सुख उपजत कछु स्वाद अधिक अत ॥ गरज गरज बरखत बडी बूंदन दामिनी दमकत चाहे रहत जित ॥१ ॥ सुरततान रंग तेसोई उपरना ओढे दूनी छबि पावत तेसीये पावस रित ॥ परमानंद प्रभुकी बानिक निरखत गोपीजन भूली सुख उपजी अधिक अत ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) सुन सुन सुतकी बात सजनी तात हंस जात कोर लेले खात त्यों त्यों अंखियां सिरात ॥ संकर्षन कहत एसी घुमड घुमड घटा

आई स्याम कहत दमक दामिनी डरात ॥१ ॥ बातन ही बात मिस ब्यारू करत रुचि बताई जानी जसोदा मैया ॥ दूध पियो बैठा लियो कह्यो तेरो सब कियो कृष्णदास गिरिधर जियो बल बल जैया ॥२ ॥

मल्हार दूध के पद

□ राग मल्हार □ (१) दूध पीवत मानौं घुट प्रेम की हरि हलधर बिच होड परी री ॥ परसपर दोऊ पीवत पीवावत गोपी जन मानौं मोद भरी री ॥१ ॥ नेन्हीं नेन्हीं बूंदन वरषन लागी तेसेई चमकत बीज खरी री ॥ ऐसों सुख देखति ज्यों ज्यों 'परमानंद' मानत सुफल घरी री ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) पय पीवत करत बात सकुचत मुसिकात जात रस भरे पीय प्यारी जहाँ ऊंची चित्रसारी ॥ बरषत घन हरखत मन बीजुरी की चमक देख उपजत आनँद सदा पावस सुखकारी ॥१ ॥ ललित बचन स्त्रवन सुनति उमग्यों अंग अंग मदन निरखि बदन सदन सेज बस भये गिरिधारी ॥ 'कृष्णदास' रति विलास लुटत सुख निज अवास तन मन धन प्रान तब ही सरवसु दीयो वारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) गिरिधर पीवत दूध सीराय पिय बैठे अटा घटा देखनको छतना हाथ लगाये ॥१ ॥ हरित भूमि तट ठाडे गावत राग मल्हार तापर धरी सजल रस मंजरी कृष्णदास बलिहार ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) दूध पीवत भर कनक कटोरन हरि हलधर बीच होडपरी। अरसपरस दोऊ पीवत पिवावत गोपीजन मनमोद भरी ॥१ ॥ न्हेनी न्हेनी बूँदन वरखन लाग्यो दामिनी चमकत होत खरी। एसे सुख देखत परमानंद ज्यों ज्यों भावत सुफल करी ॥२ ॥

मल्हार शयन दर्शन के पद

□ राग मल्हार □ (१) बदरिया तू काहेको व्रजपर दोरी ॥ चमकत बीच महाघन ओल्हर दुख पावत हें किसोरी ॥१ ॥ भींजत गोपी सघन कुंजतर चूंबत चुंदरी मोरी ॥ सूरदास प्रभु तुम बहुनायक राधा मोहन जोरी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) सखीरी देख सोभा वन की ॥ इत मोहन मुख मधुर मुरलिका उत गरजन नवघन की ॥१ ॥ उतही स्याम बादर सोहत इत राजत सामल तन की ॥ उत बगपांति हीरावलि मुक्ता गिरिधर गरे लसन की ॥२ ॥ इतही रुचिर बनमाल बनी उर उतही रहन इन्द्रधन की ॥ उत दामिनी चपला चमकत इत फरकन पीत वसनकी ॥३ ॥ उत धुरवा इत धातु विचित्र रुचि सुभग श्रीअंग लसन की ॥ उत बूंदे द्रूम वेली सिंचत इत प्रेमनीर बरखन की ॥४ ॥ अति आनंद निरख दोऊ सुख गावत विहंगम गनकी ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन रसिकवर करि बिनति विलसन की ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (३) वाह वाह नाचत मोर सुन सुन नव घन की घोर बोलत हें चहुं ओर अति ही सुहावने ॥ घनमंडल की घटा निहार आगम सुख जिय बिचार चातक पिक मुदित गावत द्रुमन बेठ सुहावने ॥१ ॥ नवल बन में पहरि तन में कसूंभी चीर कनक बरन स्याम सुंदर सुभग ओढें बसन पीत सुहावनें ॥ पावस ऋतु को रंग विलसि दास चतुर्भुज के संग मोहन कोटि अनंग गिरिधर अंग अंग सुहावनें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) आगम आयो री बोलत चातक चहुंदिस ॥ उनये उठत कारें बादर सुहाये तामें बग ऊडत समूहनि कुरलि लाई दिन सरिसा ॥१ ॥ हरि समीप बिन केसें मेरो दिन दादुरकी रटनी नींद न परे निसा ॥ कुंभनदास प्रभु गिरिधरनलाल बिन हों क्यों भयो माई बिछुरनो पर्यो मेरे हिसा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) आगम अषाढी मेह बरसे हरियारी भोम चंद वधु सेन सुख हिमत बढाई है। दामिनी बली नानाल गरज तुरंग पौन मोरउ नवानी चोंच कंचन मढाई है ॥१ ॥ कोकिला गवैयक बगपांतिके निसान मानो दादुर भिखारी पाटी चातक पढाई है। 'व्रजाधीश' रूप कोटि जोबन कसेरो पास धीर न धरे गोबार पावस चढाई है ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) रंग महल में ठाढे पिय प्यारी दोऊन की छबि रहि मों जिय अटकि ॥ इनकें कसूंभी सारी लहेकारी सोहें भारी इन के सिर लाल पाग रही लटकि ॥१ ॥ कोकिला करत गान मधुरे सुरन लेति तान वारत व्रज वधू प्रान, बीटा पटकि ॥ 'हरिदास' के स्वामि स्यामा कुंज बिहारी प्यारी सब रस चंद घटकि ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) देखो सखी ठाढे नंद किसोर ॥ गोवरधन परवत के ऊपर तेसेई नाचत मोर ॥१ ॥ लाल पाग सिर सुभग लाल के लाल लकुटिया हाथ ॥ लाल रतन सिर पेच बनी छबि मोतिन की लर माथ ॥२ ॥ लालन के आभूषण अंग अंग पीत बसन फहरात ॥ 'श्रीविठ्ठल गिरिधरन' छबिलो स्याम सलोने गात ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (८) रिमझिम रिमझिम बरखत मेह तरू तर ठाढे प्रितम प्यारी ॥ लालन सिर सोहे पाग लाल लटकि रहि लाडिली के अंग बनी लाल सुभग सारी ॥१ ॥ अंसन बाहु दिये मिलवत हिये सों हिये दंपति परसपर सोभा देति अति भारी ॥ 'नँददास' ज्यों कारी घटा में चमकि परी बिजुरी की अनुहारी ॥२ ॥

मल्हार मान के पद

□ राग मल्हार □ (१) कबही कहेति प्यारी अजहू न रिसगई मोहनी मौनधर कहत कछूनरी ॥ कान न कछू करत सन्मुखही लरत ज्योंज्यों वरजी त्योंत्यों भई अति दूनरी ॥१ ॥ बावरी भईरी प्यारी मेरे जानें पिय कह्यो कहा काहूको न कह्यो मानें तुव हृदो सुनरी ॥ गोविन्द प्रभु पिय चरण परस आंको भर मिलरंग रह्यो जेसें हरद चूनरी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) नवरंग तूं नवरंग यह अवसर नवरंग बनीरी भूमि हरियारी ॥ नव गरजन नव घोर मेघकी नवल पपैया बोले गगनविहारी ॥१ ॥ नवचातक पिक फिरत मनोहर नव वृन्दावन कुटीर सुखकारी ॥ कृष्णदासप्रभु नवरंग गिरिधर भज नवरंग राधिका

प्यारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) कितहोत अयानीरी काहूके कहें सुनें पियके औगुण मन मांझ धरत ॥ वेतो गुण पूरण सबहीके हितकारी तोसों तो अधिक प्रीति टारी न टरत ॥१ ॥ जेती बातें कही तेती सबही उराहनेकी अपनेरी जीयमें विचार धरत ॥ रसिक प्रीतमसों एसो कहा अनरस हिलमिल रहीयें नीकें काहेकों लरत ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) जोलों माई हों जीवनभर जीऊं ॥ तोलों मदनगोपाल लालके पंथ न पानी पीऊं ॥१ ॥ करुं न अंजन धरूं न मरकत मृगमद अंग न लाऊं ॥ असित कलेवर पटरचनारचि कंठ न पोत बनाऊं ॥२ ॥ श्रवण न सुनों अलि पिकबानी नयनन घन नहीं देखों ॥ नीलकमल करगहों न कबहुं श्याम सुदृष्टि न पेखों ॥३ ॥ इतनी कहेत आयगये मोहन लीये कुंवर दूतिसंग ॥ छूट गई सबै टेक मानकी निरख कुंवरके अंग ॥४ ॥ कहि न सकी कछूवे तिहिं अवसर जब कर सोंकर गहि लीनों ॥ सूरदास प्रभु ललित त्रिभंगी सुरतकेलि सुख दीनों ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (५) तें सूधें बात न कही ॥ हरिआये तोहि भवन निहोरन मुखधर मौनरही ॥१ ॥ अति अभिमान भलो नाहि न कछु मर्याद न गही ॥ चारयाम लग सकल यामिनी एकरसही निबही ॥२ ॥ कहाहोय अबके पछितायें जनकें पीरसही ॥ कुंभनदास गिरिधरनामिले बिन तनमन काम दही ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (६) चलवर कुंजन बरखतमेह ॥ पहरि चूनरी सज आभूषण नयनन अंजन देह ॥१ ॥ नेन्हीनेन्ही बूंदन बरस्योही चाहत तेसोई बढ्योसनेह ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरन पियाकों दोउ भुजभर लेह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) नये पवन नये बादर नये साजन नयो नेह नई मेहेंदी हाथरंग सुरंगी ॥ नये नये पियप्यारी पहेरें कसुंभीसारी कंचुकी सोंधे सनी अलक सम्हारत मांग वेनीचंगी ॥१ ॥ नयोहेत नयोचित नवलालसों नवल

प्रीति बाढी बहुरंगी ॥ रसिकप्रीतमसों मिले क्योंन भामिनी कर राखें तोहि अर्द्धंगी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) तेरोमन गिरिधर बिन न रहेगो ॥ बोलेंगे मोर मुरलीकी ध्वनि सुन जब तनमदन दहेगो ॥१ ॥ जानेंगी तब मानेंगी आली प्रेम प्रवाह बहेगो ॥ सूरदास हठीली श्रीराधा नित्य उठ कोंन कहेगो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (९) तू चल नंदनंदन वनबोली ॥ कर श्रृंगार चंचल मृगनयनी पहेर कसूंभी चोली ॥१ ॥ कुचकठोर नयन अनियारे ले चल भेट अमोली ॥ कुंभनदास लाल गिरिधरसों मिल अंतरपट खोली ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) मानन कररी बौरी तेरे तो कारन आयो मेहा ॥ नईनई भूमि पर बरख्योही चाहत नवल नागरि नयोनेहा ॥१ ॥ तोबिन वाय कल न परतहे तो बिन वाय सुहात न गेहा ॥ उठचल हिलमिल जगनायकसों दिनदिन बढत सनेहा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (११) यह ऋतु रूसवेकी नांही ॥ बरसत मेह नेहधरणीके बोलत कुंवर कन्हाई ॥१ ॥ जे वेली ग्रीष्मऋतु दाधी ते तरूवर लपटाईं ॥ देखो नदी प्रेम रसमाती मिलन समुद्रे धांई ॥२ ॥ यहसमयोहे दिवस चारको समझ चतुर मनमांहीं ॥ सूरदास उठ चली श्रीराधा दे प्रीतम गलबांहीं ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) प्यारीतोहि गिरिधर लाल बुलावत ॥ राधेराधे रटत निशवासर और नहि कछु भावत ॥१ ॥ कामकटक मिलि हरि घेरेहें नेंक चेन नहि पावत ॥ सूरदास प्रभुसों मिल भामिनी अंगअंग तिमिर नसावत ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) देख गगनमें घटा ओल्हरि गोवर्धनपर लायो सोरमोरन ॥ कूजत पिककलाप मेटत विरहताप तेसीय मिली मृदु मुरलीकी घोरन ॥१ ॥ कहें व्रजसुंदरि सुनहो राधिका प्यारी एसीऋतु कित सहेत निहोरन ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधरपियकों हँस वशकर बुधिबल

चितचोरन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) आयो पावस दल साज गाज मदननरेश प्रबल जान प्रीतम अकेले नवकुंजसदन ॥ पवन बाजि गज बदरा मतवारे कारे भारे ओवत डरपावत बगपांति रदन ॥१ ॥ धुरवा धुंकारे मोर पिक किलकारें बूंदन बानन एसे करें कदन ॥ व्रजजन प्रभु गिरिवरधरकी सहायकरि राधे जोवत पंथ पल न त्याग तेरोई वदन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) रिमझिम रिमझिम घनवरषें सखी ॥ बोलत मोर कोकिला कलरव तेसीये दामिनी अति दरसें ॥१ ॥ छायरहे जितजिततें बादर झूम झूम अवनी परसें ॥ कुंभनदास लालगिरिधरको तुव मिलन मन तरसें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) रंग मेहेल रंग राग तहां बेठे दुल्हे लाल तू चल चतुर रंगीली राधे ॥ अतिविचित्र कियो साज तोसों रंग रहेगो आज तेसेंई दादुर मोर पपैया फूले फूल द्रुम बाग ॥१ ॥ नवसत अंग साजे पेहेरे कसुंभी सारी तापर रीझ लाल बीच बीच सोंधेदाग ॥ दूतीके वचन सुन उठ चलि पियपें यह छबि निरख गावें नंददास बडभाग ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) चहुंदिश घटा उठी मिलेरी पिय सों रुठी निरधक हीयो हे तेरो नेकु न डरतरी ॥१ ॥ चलीयेरी मेरी आली मोकु मानदे तिहारी ॥ प्रान हुतें प्यारो अति धीर न धरतरी ॥२ ॥ सूरदासप्रभु तोहे दीयो चाहे हित चित हँसी क्यों न मीले तेरो नेंम न टरतरी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) सेज रचपच साजीहे सघन कुंज चित चरनन लाग्यो छतीयां धरकि रही ॥ बात न धरत कान तानतहो एक मान उनत चलत वाम अखियां फरकि रही ॥१ ॥ हां हां चल प्यारी तेरो प्यारो चोंक चोंक पर्यो पातकी फरक पीयहीयमें खरक रही ॥ सूरदास मदनमोहन पीय प्यारी सुनि सुनि ज्यों ज्यों कहो त्यों त्यों उतकों सरकरही ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) मान न कररी अब तू पियसों रिम झिम बरखत

मेह ॥ नये सघन बन नये कुंज घन नये लाल नयो नेह ॥१ ॥ नये नये लाड लडाये लाडली न करो मान नयेह ॥ रसिक प्रीतम सों हिलमिल भामिनी करो सुफल निज देह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२०) एसेही रुखाई मान करतहें मुख मोरे आये घन दल साज धीरज क्यों धरेगो ॥ रिम झिम बरखेगो चमकेगी दामिनी गरजेगो गगन काम मन गहेगो ॥१ ॥ मोर जोरसों पिक चात्रक मधुरे बोल त्रिविध समीर सुख अनंगन दहेगो ॥ व्रजाधीश प्रभु ठाडे तेरे रस रंग गाढे तेरेही निहोर सखी भली कोन कहेगो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२१) पावस जु कहे घटा गिरि चढि ठाडे अटा नंदनंदन प्यारी छबि दरसतहे ॥ धुम धुरवानजोर मोरन मचायो सोर द्रुमन दुरे हे फुंहि जल वरसतहे ॥१ ॥ व्रजाधीश नलिन विकास दुति दामिनीकी मंद भई चंद मुख सुधा सरसतहे ॥१ ॥ भीजे मन भीजे तन भीजे बार घुंघरारे भीजे पटचारु भीजे प्रेम परसतहे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२२) मान न कीजे माननी वर्षा ऋतु आई ॥ हिलमिलकें सब गायो राधिका राग मल्हार जमाई ॥१ ॥ बिन अपराध रुसवो केसो छांड देहो बृखभान दुहाई ॥ व्यासस्वामी कुंजमहल में पैयां लागत मुख हाहा खाई ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२३) सुनरी सयानी त्रिय रूसवेको नेम लियो पावस दिनन कोऊ एसी न करतरी ॥ दसोदिसा घटा ऊठी मिलरी पियसों रूठी निठुर हियो तेरो नेक न डरतरी ॥१ ॥ चलियेरी मेरी प्यारी मोको मान देनवारी प्राननहूंते प्यारो पति धीर न धरतरी ॥ सूरदास प्रभु तोय दियो चाहे हितचित हँस क्यों न मिलो तेरो नेम कहा घटतरी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२४) गुही बेनी सुठ सुकर सुहाति ॥ नाना रंग फूलन की पाँति ॥ डोलत पाछें आछी भाँति ॥ रूप लता मानों फुली

डुलाती ॥१ ॥ श्रुति कुंडल गंडन झलके ॥ झूलत फूल झरत हे अलकें ॥ पीय हिय उपजे नईं ललकें ॥ रीझि रीझि दोउ अति मलकें ॥२ ॥ खंजन में अंजन जुत नैंना ॥ बिसद बिसाल सुखद से एना ॥ चितवत बरषत सुधा सुभाई ॥ देखत लालन छिन न अघाई ॥३ ॥ 'दामोदर' हित भरे रस रँग ॥ अँग अँग छबि उठति तरंग ॥ बसो निरंतर ये मन मोर ॥ रसिक कुँरर बर जुगल किसोर ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (२५) अनखि रही मों तन दें पीठ मनुहारि लाल वाल न मानें ॥ सुनि होधौं चलि देखों दुरि तें केसी नीकी लागति जब ऊह झटकि बांह झुकि मान ठांने ॥१ ॥ कहा कहीए ऐसी नवल नारि सौं बात कहत अनमन माने ॥ 'धोंधी' को प्रभु रीझि थकित भये अन उतर अनबन बांनें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२६) आई पावस ऋतु सुखदाई केंसे मिलें मेरी माई ॥ तेसिय गरज आली तेसीय दामिनी कोंधत मोर सोर डरपाई ॥१ ॥ तेसोई चात्रक बोले पिक पुकार करे तेसीये सघन भूमि हरिताई ॥ 'रसिक' प्रीतम तुम एसे समें जो न मीले तो केसें भवन सुहाई ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२७) आजु मानिनी मनावत चतुराई करि करि बहुत हठु कीयो सो तों नेंक ही में छूट्यों। सोंह खाइ खाइ आभूषन दे छुवत पायन पर आली झक झोरन में मेरोऊ हार टूट्यों ॥१ ॥ अनेक जतन मनुहारि करि करि ईतो हठ हें त्रिया पें अब तों व्रत खूट्यों ॥ 'चतुरभुज' प्रभु गिरिधर मिस कर छिपी कें तब मंगल बचन कहि उठि हें सुरति कों हँसी ग्रीवा लपटाय सुख लूट्यों ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२८) ए तू मनायो न माने री लाल रिझि रहे तो पर ॥ सकल सिंगार पहिरि पट भूषन अंग बनी रंग गोरें ॥१ ॥ वे बहु नायक हें आलीरी तोसों मन अटक्यों सुंदर वर ॥'केसौ दास' प्रभु सौं मिलि भाँमिनि कोटि काम वारि छबि पर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२९) ऐसे हि रीस हि रीस मान करत मुख मोरि आये

घन दल साजि धीरज क्यों रहेगो ॥ रिम झिम बरसेगो चमकेगी दामिनी गरजेगो गगन काम मन गहेगो ॥१ ॥ मोर जोर सोर पिक चातक मधुरे बोले त्रिविध समीर सुख आनि तन रहेगो ॥'व्रजाधीस' प्रभु ठाढे तेरे रस रंग गाढे ठाढे हुं निहार भागन कोन कहेगो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३०) ठाढे हे कदंब तर कुंवर रसिक वर ॥ तेसी हैं हरित भूमि बदरा घुमड आयो बाजत सरस सुर बांसुरी कमल कर ॥१ ॥ मानिनि को मान केसो रहेगो बिचार चित्त प्रीतम न हठ कीजे लगे ही पावस झर ॥ 'व्रजाधीस' प्रभु मिलि कीजे रसिली बात चात्रकलों रही तेरी रेन दिन भर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३१) तुं मनायो न माने, प्यारो लाल रीझि रह्यों तो पर ॥ नवसत साज सिंगार सुभग तन पहिरे विविध पट अंबर ॥१ ॥ वे बहु नायक हें आली री तोसौं मन अटक्यों हे नागर वर ॥ 'केसो दास' प्रभु सौं मिलि भामिनि कोटि काम बारों छबि पर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३२) मानत नाही मनावे हठीली तुं ॥ गरज गरज आवत धरनि पे तोहि प्रीतम बुलावे ॥१ ॥ यह ऋतु मान करवे की नाही पीछे कहा पछितैये ॥ 'रसिक' प्रीतम बरस रहे हे इको बूंद न पैये ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३३) मानिनी मानि री मोहन द्वारे ठाढे ॥ तेरी तो प्रकृति आनि पीय की पीर न जानें बातें तों बहुत डफांने त्यों त्यों आगरे कपाट दीए गाढे ॥१ ॥ वरषा रेंनि कारी तोसों तो हिलग भारी एसे री लालनपर तन मन प्रान दीजें काढे ॥ सुनत वचन प्यारी कंठ लागी गिरधारी 'गोविंद' प्रभु हृदो प्रेम जल सौं बुझायों आए विरहानल दाढे ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३४) सखी सुनि न्याउ तुह्मारे आगें ॥ याहि सुख हिये नाही न जानत जो गिरिधर उर लागें ॥१ ॥ प्रथम समागम तें डरपति ही नवल नेह अनुरागें ॥ चारि जाम हों ही पचिहारी नैंन थकित निसि जागें ॥२ ॥ इहि अवसर नवरंग बर पायो रूप रासि बडभागे ॥ सुनि

'कृष्णदास' हि गवन प्रथम दिन पीउ जान्यो बर पागे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३५) सुनि री सयानी त्रिया रुसवे कों नेम लीयो पावस दिननि कोऊ एसी हे करत री ॥ दिस दिस घटा ऊठी मिलि री पीय सो ऋठि निडर हीयो हि तेरो नेकुं न डरत री ॥१ ॥ चली ये री मेरी प्यारी मोंकों मान देत हारी प्रान हूं ते प्यारी पति धीरज तन धरत री ॥ 'सूरदास' प्रभु तोहि दीनों चाहे हित चित हँसि क्यों न मिले री तेरो नेम न टरत री ॥२ ॥

मल्हार पोढायवे के पद (असाढ़ सुद ३ से श्रावण सुद १०)

□ राग मल्हार □ (१) सघन घटा घन घोर न्हेनी न्हेनी बूंदन हो पिय वर्षे ॥ तेसीय कनक चित्र सारी तामें पोढी पिय प्यारी तेसीय दामिनी अतिही दर्षे ॥१ ॥ तेसेई बोलत मोर कोकिला करत रोर उठत मन कलोल दंपति हिय हुलसें ॥ गोविन्द प्रभु सुघर दोउ गावत केदारो राग तान अतिही सरसें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) पोढे श्रीराधिकाके गेह ॥ नवल धाम नवल शैया नवल बाढ्यो नेह ॥१ ॥ नवल सुंदर नवल जोबन नवल बरखत मेह ॥ कृष्णदास त्रैलोक नागर नवल श्याम सनेह ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) दोउ मिल पोढे एकही संग ॥ सीयरी ब्यार झरोखन आवत करत केलि रसरंग ॥१ ॥ गरजत गगन दामिनी कोंधत झलकत दोउ अंग ॥ रसिक प्रीतम ललितादिक गावें मधुरी तान तरंग ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) आज झुमि झुमि आई हो घनघटा ॥ नेक रहो सुंदर वर सोई पोढ रहो वृषभान अटा ॥१ ॥ श्यामाजुकी सुख सेज पोढिये निपट अंधेरी रेंन महा बिकट ॥ चतुर बिहारी पिया गिरिधारी नेनन प्राण करी एकता ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) दोउमील पोढे उंची अटाहो ॥ श्याम घन दामिनी मानो उनयी घटाहो ॥१ ॥ अंगसों अंग मिले तनसों तन ओढें पीत पटाहो ॥ देखत बने कहत न आवे सुर श्याम छबि छटाहो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) ए री घन गरजत बरषत दामिनी दमकत स्यामा स्याम जीय भावत ॥ वे देखो चित्र सारी रस भरें पीय प्यारी पोढे सेज दोऊ गावत ॥ कबहु अंक भीर लेत मधुरी तान कबहु अधर मुख चुम चुचावत ॥ 'कृष्ण दास' पूरन आस चातक कीसी नाइ देखि उमडि घुमडि मानों बरषावत ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) न्हेंनी न्हेंनी बूंदन हो पीय लाग्यो बरषन घन सघन घटा घन घोरें ॥ तेसीय कनक चित्र सारी तामें पोढे पीय प्यारी तेसीय दामिनी अति दरसें ॥१ ॥ तेसेई दादुर मोर कोकिला केकी करत रोर उठत मदन कलोल दंपति हिय हुलसें ॥ गोविन्द बलि सुघर दोऊ गावत केदारो राग तान अतिही सरसें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (८) झुम -झुमि आईरी घन घटा ॥ पोढि रहो घनस्याम सोई घर सोई रहो सोई नंद नंदन पोढि रहो बृषभानु अटा ॥१ ॥ निसी अंधीयारी कारी गेल हु न सुझत अति ही बिकट रेन महा बिकटा ॥ 'धोंधी' के प्रभु पीये दंपति परसपर मिलि रस रंग करो ऐकटा ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (९) देख श्रीवल्लभ रूपछटा ॥ प्रेम कथा रस बरखत चहुंदिस उनये नवल घटा ॥१ ॥ चांपत चरन दमला निज कर पोढ़े ऊँची अटा ॥ रसिक प्रीतम श्रीवल्लभजु के चरनन मन लपटा ॥२ ॥

हिंडोरा अधिवासन के पद (हिंडोरा रोपे तब)

□ राग धनाश्री □ (१) हिंडोरनाहो रोप्यो नंद अवास ॥ हिंडोरनाहो मणिमय भूमि सुवास ॥ हिंडोरनाहो विश्वकर्मा सूत्रधार ॥ हिंडोरनाहों कंचन खंभ सुढार ॥ छंद ॥ कंचन खंख सुढार डांडी साल भमरा फबिरहे ॥ हीरा पिरोजा कनक मणिमय जोति अति जगमग रहे ॥ चित्र फटिक प्रकाश चहूं दिश कहा कहूं निरमोलना ॥ कहें कृष्णदास विलास निशदिन नंदभवन हिंडोरना ॥१ ॥साखी ॥ सोल्हसहस्त्र व्रजसुंदरीं निरखत श्याम सुभाय ॥ अति आनंदे हुलसकें युवजन हिलमिल गांय ॥ हिंडोरनाहो युवजन हिलमिल गांय ॥ हिंडोरनाहो आनंद उर न समांय ॥ हिंडोरनाहो

निरखत नयन निहार ॥ हिंडोरनाहो सोल्हसहस्र व्रजनार ॥छंद ॥ सोल्हसहस्र सब जुरकें आईं फिर न उलटि भवन गईं ॥ नवनेह नयन कुरंग राचीं अच्युत तनमनमय भई ॥ पीत लेहेंगा लाल चुनरि श्याम कंचुकी बांय ॥ कहे कृष्णदास विलास निशदिन युवजन हिलमिल गांय ॥२ ॥साखी ॥ रुनक झुनक नूपुर बाजे किंकिणी क्वणित रसाल ॥ परम चतुर बनवारी हें झुलवत सुन्दर नार ॥ हिंडोरनाहो झुलवत सुन्दर नार ॥ हिंडोरनाहो परम चतुर बनवार ॥ हिंडोरनाहो रमकन झमक विशाल ॥ हिंडोरनाहो किंकिणी क्वणित रसाल ॥छंद ॥ क्वणित किंकिणीं रुणत नूपुर जटित तरोना सोहहीं ॥ उर उडत अंचल मदन वेरख देख गिरिधर मोहहीं ॥ खसित फूल जो शिथिल वेनी गुप्त प्रकट विहार ॥ कहें कृष्णदास विलास निशदिन झुलवत सुन्दर नार ॥३ ॥साखी ॥ गावत सुघर रसभेदसों तान मान बंधान ॥ रीझि देत वृषभानजा हरिगुण सकल निधान ॥ हिंडोरनाहो हरिगुण सकल निधान ॥ हिंडोरनाहो श्रीराधाजू परम सुजान ॥ हिंडोरनाहो गावत सुघर समाज ॥ हिंडोरनाहो मुरली मधुर धुनिबाज ॥छंद ॥ ताल मुरली बीन बाजे लाल गिरिधर गावहीं ॥ हरख सुरपति कुसुम वरखे नभ निशान बजावहीं ॥ हरखकें कर देत तारी अति प्रकाशित गान ॥ कहें कृष्णदास विलास निशदिन हरिगुण सकल निधान ॥४ ॥ साखी ॥ सहजगोपाल नट भेखही व्रज जन देखन आईं ॥ जो सुख गोकुलमें लहे सो बैकुंठ नांहीं ॥ हिंडोरनाहो यह सुख गोकुल मांही ॥ हिंडोरनाहो यह सुख वैकुंठ नांहीं ॥ हिंडोरनाहो सहज गोप नट भेख ॥ हिंडोरनाहो सबहि नयन भर देख ॥छंद ॥ नयन निरखत बेन मीठे मेन कोटिक वारहीं ॥ भुजभरें सुन्दरि हरें हरिमन कहत कछुवन आवहीं ॥ श्याम सुंदर भक्त वत्सल लाल गिरिधर हे जांह ॥ कहें कृष्णदास विलास निशदिन यह सुख गोकुल मांह ॥५ ॥साखी ॥ श्रीयमुनातट संकेतवट निशदिन यह विलास ॥ कुंज सदन गिरिवरधरन हृदय वसो कृष्णदास ॥६ ॥

गोविंद स्वामीना पहेला दिवसना हिंडोला

□ राग मल्हार □ (१) तेसोई वृन्दावन तेसीये हरित भूमि तेसीये वीरवधू चलत सुहाई माई ॥ तेसेई कोकिला कल कुहूकुहू कूजत तेसेई नाचतमोर निरखत नयना सुखदाई ॥१ ॥ तेसी नवरंग नवरंग बनीजोरी तेसेई गावत रागमल्हार तान मन भाई ॥ गोविंदप्रभु सुरंग हिंडोरें झूलें फूलें आछे रंगभरे चहूंदिशतें घटा जुरि आई ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) झूलन आई व्रजनारि गिरिधरनलाल जूके सुरंग हिंडोरना ॥ सुभग कंचन तन पहेरें कसुंभी सारी गावत परस्पर हँस मृदुबोलना ॥१ ॥ इत नंदलाल रसिकवर सुंदर उत वृषभान सुता छबिसोहना ॥ रमकत रंगरह्यो पियप्यारी गोविंद बलबल रतिपति जोहना ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) झूलत सुरग हिंडोरें राधामोहन ॥ वरणवरण चूनरी पेहेरें व्रजवधू चहूं ओरें ॥१ ॥ राग मल्हार अलापत सप्तसुरन तीनग्राम जोरें ॥ मदनमोहनजूकी या छबि ऊपर गोविंद बलतृणतोरें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) रंग मच्यो सिंघद्वार हिंडोरे व झूलना ॥ गौरश्याम तन नीलपीत पट घनदामिनी हेम बिराजत निरख निरख व्रजजन मनफूलना ॥१ ॥ उरपर वनमाल सोहे इन्द्रधनुष मानों उदित भयो मोतिनहार बगपंगति समतूलना ॥ वरषत नवरूप वारि घोख अवनि रत्नखचित गोविंदप्रभु निरख कोटि मदन भूलना ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (५) हिंडोरेमाई झूलनके दिन आये ॥ गरजत गगन दामिनी कोंधत राग मल्हार जमाये ॥१ ॥ कन्चनखंभ सुठारबनाये बिचबिच हीरालाये ॥ डांडीचार सुदेश सुहाईं चौकी हेमजराये ॥२ ॥ नानाविधके कुसुम मनोहर मोतिन झूमक छाये ॥ मधुर मधुर ध्वनि वेणुबजावत दादुरमोर जिवाये ॥३ ॥ रमकन झमकन पियप्यारीकी

किंकिणी शब्द सुहाये ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल संग मानिनि मंगलगाये ॥४ ॥

हिंडोरा चंदन के पद

□ राग मल्हार □ (१) गढ दे बीर बढैया हिंडोरना तू गढ दे बीर बढैया ॥ ऐसो गढजामें दोऊ झुलें नवलकिशोर कन्हैया ॥१ ॥ अगर चंदनकें खंभ बनाये डांडी सुरंग रंगैया ॥ अबकी गढाई तोय नीकी देहों मोतिनथार भरैया ॥२ ॥ मनके मनोरथ मेरे पूरिहें अतिसुख रस बिलसैया ॥ सब गोपी झुलावन आईं सूरप्रभुकी लेत बलैया ॥३ ॥

हिंडोरा मंगला दर्शन के पद (असाढ़ वद १ से श्रावण वद १)

□ राग भैरव □ (१) प्रातकाल झुलत हिंडोरे दोउ ॥ अरुणनेन अति जम्हात झपकजात वारवार अलस अंग छए घूमतमन मोहे ॥१ ॥ गंडनपर पीकलीक अधरन मस रेखबनी बिनगुन उरहार अलक लटकत सटकारी ॥ कंचुकी कस छूटरही सारी मिसली सुभाल भ्रमरजाल गुंजत चहुंओर आनकारी ॥२ ॥ लटपटी सुदेश पाग ढरकिरही वामभाग लटकत चहुं ओर पेच लटकत लटन्यारी ॥ रसिकदास दर्पणले देखत मुख दोउजन सखी आरती सम्हार मंगलकी वारी ॥३ ॥

□ राग ललित □ (२) भोरही कुंज भवनतें मोहन झूलत झूलत आये। सगरी रैन झुलाये तुमको वाहीके रंग रंगाये ॥१ ॥ कह गये हमसों झूलौंगो हौं तेरे साँचे बोल निभाये। प्रभु सुजान ऐसी नहीं कीजे मदनमोहन मन भाये ॥२ ॥

□ राग ललित □ (३) कुंज भवन में झूले हिंडोरना राधा हो नंदलाल। जागे हो अनुरागे पागे संग लिये व्रजबाल ॥१ ॥ नैना अरुन बरन भये प्यारे झपकत खुलत बिहाल। कबहुँक आंको भर फिर झूलत झोंटा देत विसाल ॥२ ॥ गावत राधा ललित रागिनी सुनत है स्याम तमाल। लेत है भाँवर प्रभु सुजान प्रिय वारत मुकतामाल ॥३ ॥

□ राग ललित □ (४) हिंडोरे भोर ही झूलन आये। मग जोवत चितवत सब रतियाँ कौन वाम विरमाये ॥१ ॥ कहाँ पियरो पट लाये हो नील पट ताको क्यों बिसराये। नंददास सुनि वचन प्रियाके मनही मन मुसिकाये ॥२ ॥

□ राग ललित □ (५) भली बनी वृषभान नंदिनी प्रात समे रन जीते आवें। नूपुर वलय अलक लट छूटी मधुर चाल मंद गजहिं लजावें ॥१ ॥ नागर छैल रसिकनी नागरी सुरत हिंडोरें झूलें गावें। ये दोउ सुघर केलिरस मंडित नासत मदन ठौर नहि पावें ॥२ ॥ पियकी नखमनि उर ही विराजत बिनु गुन माल हिये छबि पावें। परमानन्द रूपनिधि नागर वदन-कांति रवि जोति छिपावें ॥३ ॥

□ राग ललित □ (६) झूलन हिंडोरनामें आये री भोर। मैं अबला अज्ञान मूढ मति मत्त चराइके चोर ॥१ ॥ जागत रेन जोवत मग चितवत बरसे अनत नही ठोर। पीरी पर गई 'रसिक' प्रीतम अब तो जावो वाही ओर ॥२ ॥

□ राग ललित □ (७) हिंडोरे झूलन आये मेरे भोर। लटपटी पाग उनींदे से लागत नेना भए हैं चकोर ॥१ ॥ तडफ तडफ मोहे चार जाम बीती बोलत है तमचोर। लाल गोपाल तुम कहा जू रहे हौ जाओ वाही ओर ॥२ ॥

□ राग ललित □ (८) हिंडोरनामें झूलन आये परभात। रात कहा जू रहे मनमोहन काजर लाग्यो गात ॥१ ॥ डगमगात पग धरत उनींदे चंचल नेन विसाल। मग चितवत मोय सब रेन बीती क्यों आए गोपाल ॥२ ॥ एसे कहा कछु प्यारीके बस भए मोहि लिए नंदलाल। पीरी पर गई लाल गोपाल अब एसी कोन व्रजबाल ॥३ ॥

□ राग बिभास □ (९) प्रातसमेउठ झूलत दंपति कुंज हिंडोरे॥ खंडित

अधर कपोल दोउनेन उर नखरेख हार बिनडोरे ॥१ ॥ मरगजीमाल शिथिल अलकावली अरुणबने अखियन बिचडोरे ॥ रसिकदास प्रभुकी छबि निरखत कोटिकाम तृणसम करितोरे ॥२ ॥

□ राग बिभास □ (१०) प्रातकाल नंदलाल संग लिए नवल बाल देख आली कुंज भवन झुलत हिंडोरे। कब हु कर दर्पन ले देखत मुख अरसपरस कबहुं हँसत कबहुं लसत कबहुं मुख मोरे ॥१ ॥ कबहुं भरत अंकमाल कबहुं परस दोउ गाल कबहुं निरख चुंबत मुख हि मुख जोरे ॥ कबहुं करत अधरपान बाढी रसरीत प्रीत नागरी विलोक नेह डारत तृन तोरे ॥२ ॥

□ राग खट □ (११) चलि देख सखी मनमोहनको मिलिके व्रजबाल झुलावत है। सब साज लिए रंगरंगनके गरे फूलन हार खुलावत है ॥१ ॥ अलि मोर चकोरन दादुर धुनि सुनि कानन स्होरन भावत है। रंग रंग रंगीलो हिंडोरो बन्यो व्रजराज कुंवरको लडावत है ॥२ ॥

□ राग खट □ (१२) भोर निकुंज भवन प्यारीके झूलत लाल लाडिली दोऊ। सुनि सुनि रमकझमक नुपूर की भीतर जान न पावत कोऊ ॥१ ॥ ललिता ललित बजावत बीना दंपति गावत जानत सोऊ। यह सुख बरनि सकै कैसे कोऊ रसिक प्रीतम तहाँ द्वारें होऊ ॥२ ॥

□ राग खट □ (१३) भोरही कुंज भवन तें भामिनी झुलवनको सब आईं। मधि राधा माधो दोउ बैठे गावत गीत सुहाईं ॥१ ॥ तैसेई कोकिल कूजत प्रमुदित मोर मधुप मनभाई। निरख-निरख सोभा व्रजजनकी नंददास बलि जाई ॥२ ॥

□ राग मालकौंस □ (१४) राधाके संग गिरिवरधर पिय झूलत सुरंग हिंडोरे। वृन्दावनकी सघन कुंजमें झोंटा देत गोपी बंधी होरे ॥१ ॥ उठी घटा कारी छटा उजियारी लगत सोहाई बीच घन घोरे। कुंभनदास प्रभु या छबि निरखत जैसे चन्द्र चकोरे ॥२ ॥

□ राग मालकौंस □ (१५) कुंज हिंडोरो सघन वन छायो। बूंदन बरसत बीजूरी चमकत कोकिल कुहू कुहू शब्द सुनायो ॥१ ॥ झुलत फूल रही चहुं दिसते सरस रंग तहां रस बरसायो। 'रसिक किसोरी' लालन संग रीझ राग तान सुर सब मिलि गायो ॥२ ॥

□ राग परज □ (१६) सुंदर सुख सदन वदन हिंडोरना सुहाये। ललितादिक दुहुँ दिस रस जस अनुपम गाये ॥१ ॥ वामभाग विधुवदनी गति रसाल राजे। दछिन दिस प्रेम पुंज सुषमा छबि राजे ॥२ ॥ हेम खंभ रतन जटित हारावली सोहे। मुक्तालर अधिक बनी निरखत मन मोहे ॥३ ॥ चौकी चारु चित्र किये पटुली पिरोजा लागे। सूरदास मदनमोहन दोऊ झूलत अनुरागे ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) हिंडोरे झूलन आये मेरे भोर। लटपटी पाग उनींदे से लागत नैना भये हैं चकोर ॥१ ॥ तलप-तलप मोहि चारजाम बीते बौलत हैं तमचोर। लाल गोपाल तुम जहाँ जु रहे हो जावहु वाही ठोर ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) आवत लाल लाडली फूले। कुंज केलि नवरंग विहारी सुरत हिंडोरे झुले ॥१ ॥ निस जागे अलसात डगमगे पट पलटे गति भूले। श्री विट्ठल विपुन विनोद विहारी दुर देखत द्रुम फूले ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) भोर भये स्यामा स्याम झूलत हिंडोरे हेम भरे प्रेम आलस दोउ पावस सखी कुंजसदन। हसत लसत खसित उडत पियरो पट नील सारी पिय प्यारी सोभा भारी निरख अंग लज्जित मदन ॥१ ॥ नख छत अति उपमा कछु मोपे बरनी न जाय मंद मंद रमकन मधि देखियत सब चिन्ह वदन। 'रसिक' प्रीतम पिय सुजान सुंदर सब गुन प्रवीन रजनी रसमाते दोउ झूलत सखी जीत मदन ॥२ ॥

□ राग सोहनी □ (२०) झूलत फूल हिंडोरे प्यारो लाडीलो झूलत फूल हिंडोरे। जमुना पुलीन सरस द्रुमवेली स्याम घटा घनघोरे ॥१ ॥

कुंजमहलमें रच्यो है हिंडोरो सखी ठाडी चहुं ओरे। फूलन माल फूलनको लहेंगा फूल मुकुट छबि सोहे ॥२ ॥ पिय प्यारी रंग रस सुख विलसत मुरली अधर धर थोरे। 'पुरुषोत्तम' प्रभु चतुर सिरोमनि मंद हास चित चोरे ॥३ ॥

हिंडोरा शृंगार दर्शन के पद (असाढ़ वद १ से श्रावण वद १)

□ राग टोडी □ (१) पियकों हिंडोरे झूलावन आई। रंग-रंग सारी साज सजे सब सुन्दरी झुलवत कुँवर कन्हाई ॥१ ॥ सघन लता घन बरसत भारी तामें दामिनी अति दमकाई। जुगलरूप देखि नेननसों सरस रंग कीनो सुखदाई ॥२ ॥

□ राग बिलावल □ (२) नखशिख करि सिंगार प्रियापिय झूलत कुंज हिंडोरे आय॥ मुखमिलाय दोउ दर्पण देखत मधुरमधुर दोउ बेन बजाय ॥१ ॥ आई घटा घुमड चहुं दिशतें चमकत चपला अति छबि पाय॥ मंदमंद घनघोर करतहें बरखत फुही मोद मनलाय ॥२ ॥ इन्द्रधनुष पचरंग बिराजत बगपंगति अद्भुत दरसाय॥ दादुरमोर चकोर कीर पिक और पपैया पिउपिउगाय ॥३ ॥ तेसोइ बन प्रफुलित नानाफल फूलनसौरभ चहुंदिश छाय॥ रसिकदास प्रभुकों सब झुलवत व्रजवनिता मधुरें सुरगाय ॥४ ॥

□ राग वसन्त □ (३) झूलत हिंडोरे गिरिधरनलाल। बाजे बाजत है अति रसाल ॥१ ॥ सावन फागुनको एक तार। जल बरसत जानों रंग फुहार ॥२ ॥ बहु मेघ जुरे भयो अंधकार। मनो अबीर गुलालकी है बहार ॥३ ॥ तहाँ जुवति झुलवत आय आय। दोउ मिल वसन्त मलार गाय ॥४ ॥ गरजत घन जानों गति मिलाय। चपला कर बाजत मृदंग साय ॥५ ॥ संग झुलत राधा नवल बाल। कबहुँक है झुलावत नंदलाल ॥६ ॥ ललितादिक गावेगारी रसाल। व्रजवधु हँसत दे दे कर- ताल ॥७ ॥ फिर झुलवत राधा रसिक नार। तब झूलत मोहन कर

सिंगार ॥८॥ तहँ मुरझ पर्यो है आय मार। रति रोवत अँसुवन भई धार ॥९॥ वृन्दावन फूल्यो आसपास। कालिन्दी बहत जु अति हुलास ॥१०॥ यह दरसन दीजे जानि दास। गोवरधनकी है यही आस ॥११॥

□ राग माला □ (४) झूलत श्यामा प्यारी झुलवत आप विहारी रमकि-रमकि झोंटा देत है माई। रतनजटित खंभ दोऊ डांडी चार अति सुहाई गावत मल्हार राग तान सुनाई ॥१॥ बरखा जलधार घन गगन गरजन करे दामिनी दमकि मारुत जों धावे। देखके प्यारी तब दामिनीकी दमक डरपि घनस्यामको उरही लावे ॥२॥ मधुरे सुरसो रटत पपैया अरु दादुर झनकार। सारस हंस कोकिला कूजत मधुप करत गुंजार ॥३॥ मालव राग अलापति भामिनी श्रवनन झलकत भाल। कबहुँक उतरि स्यामा प्यारी झुलवति मदनगोपाल ॥४॥ झूलनको आईं व्रजवनिता बोलत वचन रसाल। झोंटा देत सखी ललितादिक काफी सुर गावत बाल ॥५॥ तैसीय रितु पावस मनभावन पहरि कसूंभी चीर। कल्यानके प्रभु गिरिधर संग ईह विध क्रीडत जमुना-तीर ॥६॥

□ राग धनाश्री □ (५) श्रीवृन्दाविपिन सुहावनों रंग छायो आज॥ झूलत गिरिधरलाल सुरंग हिंडोरना॥ रंग छायो आज ॥ध्रु०॥ श्रीयमुना पुलिन सुहावनो ॥रंग॥ प्रफुलित श्याम तमाल ॥सुरंग॥१॥ श्याम घटा घन वरखही॥ बोलत मधुर मराल ॥२॥सुरंग॥ बाजत बीना किन्नरी॥ गावत मिलि व्रजबाल ॥३॥ इत राधे नवनागरी रंग॥ इतही मदनगोपाल ॥सु०॥४॥ कुटिल कच जुकरत पवन ॥रंग॥ पट फहरत उरमाल ॥सु०॥५॥ होड परस्पर उमगि भरे ॥रंग॥ झोटादेत रसाल ॥सु०॥६॥ कृष्ण कमल परसत चरन ॥रंग॥ निरख होत निहाल ॥सुरंग॥७॥

□ राग धनाश्री □ (६) आजु बने व्रजराज हिंडोरे झूलही। चलि सखी

देखन जाई हिंडोरे झूलही ॥ध्रुव॥ कंचनखंभ द्वै रचे सुन्दर डांडी सोहै चारु। मोतिनकी झलमलता झलकै बिच हीरनिको हारु ॥१॥ सुर नर मुनिजन सकल भुवनके डोरी पकरि झुलाई। रसिकराय गुन गंधर्व गावै गिरिधरलाल लडाई ॥२॥ उपमा और नहीं कोऊ ऐसी जो। हरिजूको दीजै। दरसन पाई परसि पदपंकज जीवनको फल लीजै ॥३॥ नर नारी अति नेह निहारत फल पाए हैं चारि। या छबि निरखी 'दास परमानंद' तन मन दीजै वारि ॥४॥

हिंडोरा मुकुट के पद

□ राग मल्हार □ (१) हिंडोरें राजत रंगरंगीलो॥ ताउपर झूलत व्रज भामिनी श्रीनंदलाल छबीलो ॥१॥ शीश मुकुट ओढें पीयरोपट पियत्रिय अंबरझीने॥ गावत राग मल्हार मुदित मन अधिक मधुर स्वर लीने ॥२॥ गरजे घनसे चपला चातक टेरत प्रेमहठीलो॥ श्रीविठ्ठलगिरिधारी कृपानिधि रसिकराय रसीलो ॥३॥

□ राग मल्हार □ (२) हिंडोरें माई झुलत गिरिधरलाल॥ संगराजत वृषभान नंदिनी अंग अंग रूप रसाल ॥१॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल ओर मुक्तावनमाल॥ रमक रमक झूलत पियप्यारी सुख बरखत तिहिंकाल ॥२॥ हँसत परस्पर इतउत चितवत चंचल नयन विशाल॥ नंददास प्रभुकी छबि निरखत विवश भई व्रज बाल ॥३॥

□ राग मल्हार □ (३) झुलत सुरंग हिंडोरें मुकुट धरि बेठेहें नंदलाल॥ लाल काछिनी कटिपर बांधे उर शोभित वनमाल ॥१॥ वाम भाग वृषभाननंदिनी चंचल नैनविशाल॥ कृष्णदास दंपति छबि निरखत अखियां भई निहाल ॥२॥

□ राग मल्हार □ (४) चलो पिये झुलीयें हिंडोरें सुन्दर यमुनातीर॥ कुंजभवनमें रच्यो हिंडोरो बोलत कोकील कीर ॥१॥ मोर मुकुट

मकराकृत कुण्डल शोभित श्याम शरीर ॥ पीतबसन बनमाल बिराजत प्यारी कुसुंभी चीर ॥२ ॥ सुरनर मुनि सब कौतुक भूले व्योम विमाननभीर ॥ हरिनारायण श्यामदासके प्रभु माई बाढ्यो रंग शरीर ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (५) मनमोहन रंग हिंडोरना ॥ चलरी सखी मील देखन जैयें वृन्दावन शुभ ठोरना ॥१ ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल पीतांबर झकझोरना ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत श्याम घटा घन घोरना ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) सुन्दर वदन देखे आज। क्रीट मुकुट सुहावनो मनभावनो व्रजराज ॥१ ॥ लियो मन आकर्ष मुरली रही अधर पर गाज। पलक ओट न चाहि चित लखि महामनोहर साज ॥२ ॥ गोपीजन तन प्रान वारत रह्यो मनमथ लाज। सूर सुत यह नंदको श्रीवल्लभकुल सिरताज ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (७) झूलत सांवरे संग गौरी ॥ अमितरूप गुण सहज माधुरी शोभासिंधु झकोरी ॥१ ॥ इत शिरमोर मुकुटकी लटकन उत बेंदी शिररोरी ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत उतही बनी कचडोरी ॥२ ॥ इत उत वेसरिके मुक्तासों चोंप बढी अति जोरी ॥ रसिक प्रीतम वल्लभ कटाक्ष छबि हाव भाव चितचोरी ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (८) व्रज वृन्दावन मध्य रच्यो हिंडोरा झुलवत सखी चहुं ओरें ॥ तेसीये हरित भूमि तेसेई बोलत मोर तेसेई गरजत घन घोर घोरें ॥१ ॥ आप उतर झूलावत राधेकों श्रवण ओट दे हँसत मुखमोरें ॥ करसों करगहि बैठाय प्रीतमकों गावत भ्रोंहमरोरें ॥२ ॥ मोरमुकुट पीतांबरकी छबि नीलवसन तनगोरें ॥ चतुरविहारी दंपति छबि उपर डारतहें तृणतोरें ॥३ ॥

□ राग बिहाग □ (९) झूलत नागरी नागरलाल॥ मंदमंद सब सखीं झुलावत गावत गीत रसाल॥१॥ फरहरात पट नील पीतकी अंचल चंचल चाल॥ मानो परस्पर उमगि ध्यान छबि प्रगट भये तिहिंकाल॥२॥ सलसलात अति पियके सीसपर लटकन बेनी लाल॥ मानों मुकुट बरुहा विरही भये बोली बाक बेहाल॥३॥ मोतीन माल प्रियाके उरकी पीय तुलसीदल माल॥ मानों सुरसरी मिली जमुनातट मानो विहंग मराल॥४॥ सांवल गौर परस्पर अति छबि शोभा विशद विसाल॥ निरखि गदाधर कुंवर कुंवरि छबि मानों भयों रसजाल॥५॥

□ राग बिहाग □ (१०) जुरिआईं सुहाईं मनभाईं व्रजसुंदरि सबसाज सावन ऋतु मनभावन गिरिधरपास॥ झूलत हिंडोरें बेठे भामिनी संग तेसीये बनी हरियारी फूलरही वरन वरन सारी तेसीये घटाकारी कजरारी भारी छबि बलिहारी तेसोई हिंडोरेको प्रकाश॥१॥ अरसपरस दर्पण बिलोरी चारुचिबुक गहत रीझ भीज बात कहेत होतहे हास विलास॥ वृन्दावन झलकि रह्यो मुकुटकी दमक चमक भूषणकी चांदनी छिटक जात झोटनमें यह बानिक विलोकि थकित रहेतहे कृष्णदास॥२॥

□ राग काफी □ (११) आज अति सोभित मदनगोपाल। क्रीट मुकुट सिर सुभग विराजत अरु मुक्तामनि माल॥१॥ झूलत कुंजमहल राधे संग कूजत बेनु रसाल। कमल लिये कर परमानन्द प्रभु विवस भई व्रजबाल॥२॥

□ राग काफी □ (१२) एरी सखी झूलत मदन गोपाल। स्याम घटा सोहावनी॥ रंग सावन मास हिंडोरना॥१॥ एरी सखी घन गरजे मंद मंद। पवन चलत मनभावनी॥रंग०॥२॥ एरी सखी बोलत दादुर मोर। कोयल सब्द सुनावही॥रंग०॥३॥ एरी सखी भवन करत घनघोरही। पपैया उपग बजावही॥रंग०॥४॥ एरी सखी रुमझुम बरसे मेह। झिंगुर

रुडे झनकारही ॥रंग० ॥५ ॥ एरी सखी नाचत मोरी मोर। बरन बरन फूले वनमें ॥रंग० ॥६ ॥ एरी सखी जुरि आईं व्रजनारि। पहेरे रंग रंग चूनरी ॥रंग० ॥७ ॥ एरी सखी नवसत अंग सजावही। पान खात मुसकातरी ॥रंग० ॥८ ॥ एरी सखी इत राजत नंदलाल। उत वृषभान कुमारी ॥रंग०९ ॥ एरी सखी बनी है परस्पर जोरियाँ। ऊँचे सुरसों गाइयाँ ॥रंग० ॥१० ॥ एरी सखी मोर मुकुट छबि देख। पीत वसन तन राजहीं ॥रंग० ॥११ ॥ एरी सखी काछनी पचरंग। पग नूपुर झनकारही ॥रंग० ॥१२ ॥ एरी सखी बाजत ताल मृदंग। अरु अनेक बहु बाजहीं ॥रंग० ॥१३ ॥ एरी सखी गावत तान रसाल। अधिक उर छबि लागही ॥रंग ॥१४ ॥ एरी सखी कुंजभवन करे केलि। झूले झूलावे स्यामहि ॥रंग० ॥१५ ॥ एरी सखी हिरदे बसो कृष्णदास। यह जोरी अनंग लजावही ॥रंग० ॥१६ ॥

शरद के हिंडोरा

□ राग मालव □ (१) हिंडोरे झूलत हें भामिनी ॥ श्यामाश्याम बराबर बैठे शरद सुहाई यामिनी ॥१ ॥ पांचबरसके श्याम मनोहर सातबरसकी बाला ॥ कमलनयन हरि वे मृगनयनी चंचल नयन विशाला ॥२ ॥ लरकाई में सब बनिआवे कोऊ न जानेसूत ॥ परमानंददासको ठाकुर नंदरायको पूत ॥३ ॥

□ राग मारू □ (२) हिंडोरे झूलत बंसीवाला ॥ मधुवन सघन कदंबकी डारें झूलत झुकत गोपाला ॥१ ॥ कंचन खंभ सुभग चहूंडांडी पटुली परमरसाला ॥ श्वेतबिछोना बिछायो तापर बैठे मदन गोपाल ॥२ ॥ झुलनकों आईं व्रजवनिता बोलत वचन रसाला ॥ नन्ददास नन्दनन्दन मुरली सुन मग्नहोत व्रजबाला ॥३ ॥

□ राग काफी □ (३) हेरी सखी शरद चांदनी रात ॥ घटा छटक रही

लटकसों ।। रंग सावन मास हिंडोरना ।। हेरी सखी स्वेत हिंडोरो सोभादेत नटवर झूलत उमंगसों ।।रंग ।।१ ।। हेरी सखी काछनी परम रसाल पहेरे सब गुण आगरी ।।रंग ।।२ ।। हेरी सखी देखन सब मीलि जाय ।। चलो जुथ जुरी आगरी ।।रंग ।।३ ।। हेरी सखी देखो सुन्दर श्याम ।। शीश मुकुट हीरा सोहही ।।४ ।। हेरी सखी कुंडल मकराकार ।। कोटी कीरण रवी जोतरी ।।रंग ।।५ ।। हेरी सखी स्वेत हींडोरो देख ।। देखत खंभ दोउ राजहीं ।।रंग ।।६ ।। हेरी सखी स्वेत मरुवेही मरुवे मयार ।। डांडी कलसा राजहीं ।।रंग ।।७ ।। हेरी सखी आईं सबे व्रजनारि ।। नन्दनन्दनके दरसकों ।।रंग ।।८ ।। हेरी सखी सांवन घटा सोहाय ।। ता मध्य बिजुरी चमक रही ।।रंग ।।९ ।। हेरी सखी सखीयन श्रीझुलाय ।। गिरिधर पिय मुख निरखही ।।१० ।।

□ राग मल्हार □ (४) आजु शरद सावन की झूलत नचवत श्रीवृषभानलली। थेई-थेई करत वचन मुख उचरत प्रफुलित जैसे कमलकली ।।१ ।। झुंडझुंडनि व्रजबाला सरदमें झूली झुलवत नंदलाला। रीझ-रीझ प्यारी उर लागत निरखि हँसत सब व्रजबाला ।।२ ।। लोचन देख-देख सब सहचरी करत विचार सब जात बलि। कृष्णदास प्यारी प्रीतम मिल विहरत दोऊ भाँत भलि ।।३ ।।

□ राग मल्हार □ (५) आजु लाल शरद में झूले दोऊ रंग भरे हो। सुभग सरस हिंडोरो स्वेत रंग झालर मोती लरे हो ।।१ ।। मोर मुकुट मकराकृत कुंडल बरन-बरन वनमाल गरे हो। स्वेत पीतांबर स्वेत काछनी जटित हीराकी मुरली धरे हो ।।२ ।। आभूषन हीराके सोहे झलमल अंग करे हो। विचित्रविहारी लाल झूलत है गिरिधर मन जु हरे हो ।।३ ।।

□ राग केदारो □ (६) नीकी ऋतु लागत आज सावन की झूलत दोउ संग संगे ।। गिडि गिडि तक थुंगन ततथैइ भामिनी रति रस रंगे ।।१ ।। सरद विमल निश उडु पति राजत गावत तान तरंगे ।। गोविंद प्रभु रसरास मुकुट

मनि भामिनी लेत उछेंगे ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (७) आज सरद सावन की झूलत झुकि झुकि नंद नंदा ॥ शरद हिंडोरो झूलत दोउ जन दादुर मोर कोकिला अलापत शोभा बढी सुख कंदा ॥१ ॥ निरख निरख व्रजबाल हँसत हें मनमोहन नंद नंदा ॥ झूलत नृत्य करत श्रीश्यामा नचवत गिड़ गिड़ गिड़ गिड़ तत थेई थेई गिड़ गिड़ गति छंदा ॥२ ॥ मन हरत लियो हे रसिक नंदनंदन जय जय कहत बोलत गति छंदा ॥ श्रीगिरिधर प्रभु तुम चिरजीयो श्री बालकृष्ण देखि मन लाये प्यारी रटत नंद नंदा ॥३ ॥

हिंडोरा के पद (टिपारो)

□ राग मल्हार □ (१) झूलत गोकुलचंद हिंडोरें नटवर भेख कियें हो ॥ शोभित तीन चंद्रिका माथें मुरली करजुलीयें ॥१ ॥ कसुंभी पाग सुरंगपिछोरा मुक्तामाल हीयें ॥ रमक झमक झूलत राधासंग व्रजजन सुखहि दीयें ॥२ ॥ निरख निरख फूलत युवतीजन यह सुख नयनपीयें ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधर सुखदायक सब छबि देखजीयें ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) हिंडोरें झुलें गिरिवरधारी ॥ लाल टिपारो शीश बिराजत मल्लकाछ छबि न्यारी ॥१ ॥ वाम भाग सोहतहे राधा पहेरें कसुंभी सारी ॥ झोटा देत सखी ललितादिक पवन वहेत सुखकारी ॥२ ॥ बाजत ताल मृदंग झालरी गावत सब सुकुमारी ॥ कुंभनदास प्रभुकी छबि ऊपर सर्वस्व डारत वारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) हेरी आली झूलत कुंवर कन्हाई ॥ यमुना पुलिन सुभग वृन्दावन रच्यो हिंडोरो सुखदाई ॥१ ॥ नटवर भेष धर्यो मनमोहन शीश टीपारो सुहाई ॥ संग झूलत वृषभान नंदिनी जोरी अति मन भाई ॥२ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल शब्द सुहाई पुरुषोत्तम मिल गावत युवतीजन राग मल्हार जमाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) आज वन झूलत नटवर लाल ॥ संग झूलत

वृषभाननंदिनी बोलत बचन रसाल ॥१ ॥ तेसोई गान करत अति सुंदर चंचल नयन बिशाल ॥ मल्लकाछ अरु शीश टीपारो अरु गुंजनकी माल ॥२ ॥ कहीयें कहा कहत न आवे शोभा भई अति भारी ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरनलालपर तन मन डारत वारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (५) नटवर भेख कीयें झुलें माई ॥ शोभित तीन चंद्रिका माथें मुरली कर जु लीयें ॥१ ॥ कसुंभी पाग शिर सुरंग पीछोरा मुक्तामाल हीयें ॥ रमक रमक झूलत श्यामा संग व्रजजन संग लीयें ॥२ ॥ आसपास व्रज सुंदरी ठाडीं यह सुख नेन पीयें ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरनलालकी सब छबि देख जीयें ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (६) हरी संग झूलतहें व्रजनारी ॥ मल्लकाछ ओर शीश टिपारो अरु वनमाला धारी ॥१ ॥ तामें राग कल्याण अलापत मुरलीकी धुन न्यारी ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर संग झूलत रंग रह्यो अति भारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (७) हिंडोरें माई झूलत हें व्रजनाथ ॥ मल्लकाछ अरु शीश टीपारो गोप सखा लीयें साथ ॥१ ॥ तेसेई घन उनये चहुं दिशतें न्हेनी न्हेनी परत फुहार ॥ तेसीई गान करत व्रजसुन्दरी लेतहें तान अपार ॥२ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल शब्द उच्चार ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर संग झूलत गोकुलकीं सब नार ॥३ ॥

□ राग काफी □ (८) झूलत मोहन रंगभरेहो सखीरी नंद नृपतिके द्वार ॥ध्रु० ॥ कंचन खंभ रच्योहे हिंडोरो विद्रुम डांडीचार ॥ तापर मोरकलासी शोभित अति मरुवनकी बलिहार ॥१ ॥ शीश टिपारो बन्यो अति अद्‌भुत अरु शोभित सिंगार ॥ सामलबरन कमलदल लोचन मोहित सब व्रजबाल ॥२ ॥ वामभाग सुकुमार राधिका शोभाबढी अपार ॥ कृष्णदास गिरिधर छबि निरखत तनमन डारत वार ॥३ ॥

□ राग काफी □ (९) प्यारी संग सुरंग हिंडोरे झूलत प्रान पियारो। वृन्दावनकी सघन कुंजमें व्रजजन देत झुलारो ॥१ ॥ सीस टिपारो मोतिन

मनिमाला जगमग जोति उजारो। अलकावलि अलकनि पर सोहे चंद्रिका मोर मतवारो ॥२ ॥ कर पहोंची मुन्दरी वरमाला पग नुपूर झनकारो ॥ चपल दगनि चितै चित चंचल रसिकन लोचन तारो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) थेई थेई नृत्य करे टिपारो हि सिर धरे मल्लकाछ सोभा देत झूलत पियप्यारी। वाम भाग राधे प्यारी बाहें जोरे प्यारे संग गावत हि ऊँचे सुर तान हि समारी ॥१ ॥ एक सखी झुलावत प्यारे पान खवावत एक सखी दरपन ले देखावत ठाढी। रसिक प्रीतम छबि निरखत निरखत तन मन धन सब डारत है वारी ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (११) नटवर देख देख केशो बन्यो मल्लकाछ लाल टीपारो भृघुटी पर आयो है। ऐसो जसोदा को लाल एक बेर आन देखो। रंग भूमि मार्यो कंस ओई आज राधा संग आवन मनायो है ॥१ ॥ श्यामा तन मन पहेरे कसुंभी सारी ॥ सुरंग घन चहूँदिशतें छायो है न्हैनी न्हैनी बूंदन में इन्द्र वधूसी सोहाई ॥ संग मील व्रजनारी मगरु सुनायो है ॥२ ॥ मसुरी कंचन नग जटित हिंडोरो प्रिय प्यारी राग केदारो जमायो है ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धन पुनीत जान भुलना भुलायो है ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (१२) देखो माई नटवर सुंदर श्याम श्याम ॥ टीपारो श्याम चंद्रिका मल्ल काछ घनश्याम ॥१ ॥ श्याम घटा घन उनए बादल झूलत भये तिहिं काम ॥ तेसे ही मोर कोकीला अलापत गावत है व्रजधाम ॥१ ॥ झूलत श्याम श्याम मनोहर वृन्दावन निजधाम आशकरण प्रभु मोहन नागर तट यमुना विश्राम ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (१३) जुगल किशोर हिंडोरे झूले माई नटवर भेख किये ॥ शोभित तिन चंद्रिका माथे मुरली करही लिये ॥१ ॥ निरख निरख फूलत युवतिजन यह सुख नयन पिये ॥ मंदमंद झूलत राधा संग व्रजजन सुखहि दिये ॥२ ॥ कसुंबी पाघ ओर सुरंग पिछोरा मुक्तामाल हिये ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर सुखदायक सब छबि देख जिये ॥३ ॥

हिंडोरा के पद शेहरा

□ राग मल्हार □ (१) श्यामाजु दुलहनि दूल्हे रसिकवर रमकि रमकि दोउ झूलत रसभर ॥ गोपी सब चहूं ओर झोटा देत हँसि हँसि शोभा देख सुरमुनि थकित चहल पर ॥१ ॥ वृषभान नंदिनीकों झूदत व्याप्योहे डर तिहिं छिनु उरलाय लजाय नेना ढर ॥ देखकें गई मटक सेहेरो गयो लटक उर झपटे मोती छूटी कलीसी जोलर ॥२ ॥ ललिता नीरवारवेकों गहिकर राख्यो झोटा तरल भये वार भूखन झर ॥ तन मन धन वारों पल न विसारों लाल एसी शोभा देख सूरदासके दृगन अर ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) झूलत लाडिलो नवल बिहारी ॥ शीश शेहरो अति छबि राजत उपरेना जरतारी ॥१ ॥ मुक्तामाल उरपर सखीरी लागत परम सुहाई ॥ मानो सुरसुरी स्वर्ग लोकतें चलि धरनीपर आई ॥२ ॥ सब सिंगार अद्‌भुत शोभित उरउपमा बरनी न जाई ॥ सूरप्रभुके रोमरोमपर वार वार बलिजाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) यह सुख सावनमें बनि आवे ॥ दुल्हे दुलहनि संग झुलावें ॥ नंद भवन रोप्यो सुरंग हिंडोरो गोपवधू मिल मंगल गावें ॥१ ॥ नंदलालकों राधाजूपें हरिजूपें राधाजीकों नाम लिवावें ॥ जसुमतिसुं परमानंद तिहिं छिन वारफेर न्योंछावर पावें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) हिंडोरे झूलत लाडिलीलाल ॥ रोप्योहें कालिंदीके तट झुलवन आईं व्रजबाल ॥१ ॥ शीश सेहेरो फब्यो लालकें तिलक बिराजत भाल ॥ दुलहनि नवल किसोरी राधे दूल्हे श्रीगोपाल ॥२ ॥ वरनवरन आभूषण पेहेरें अरु राजत वनमाल ॥ सूर रसरंग कहांलों वरनों धन्य धन्य तिहिंकाल ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (५) दुल्हे दुलहनि सुरंग हिंडोरें झूलें प्रथम समागम अहो गठजोरें ॥ चरणखंभ भुजकरिमयार डांडीचारू कमल कर रमक हुलसे

दोउ ओरें ।।१ ।। सुभगसेज पटुली सुखबाद्यो मरुवाबेलन प्राचीओरें ।। नंददास प्रभु रस बरखत जहां दामिनीके अनुहोरें ।।२ ।।

□ राग पूर्वी □ (६) झूलत प्रीतम संग जानन परत दिन जामिनि ।। गोपी सब चहुं ओर झुलवत थोरेथोरें रस बरखत मानों घनदामिनी ।।१ ।। नवल मच्यो नेहरा सोहत शीश सेहरा कसोटी बरन प्रीतमसंग कनक कामिनी ।। बिहरत पिय प्यारी जहां नंददास वारों तहां गरव गोपाल संग श्यामा गज गामिनी ।।२ ।।

□ राग पूर्वी □ (७) झूलत दुलहे दुलहनी सुरंग हिंडोरें गांठ जोरि ।। रतन जटीतको शीश शेहरो मकर पत्रिका अरुचंदनकी खोरि ।।१ ।। मंगल गावत सब व्रज वनिता करत परस्पर रोरि ।। रसिकदास प्रभुको मुख निरखत डारतहें तृन तोरि ।।२ ।।

□ राग पूर्वी □ (८) झूलत दुलह दुलहिन सुरंग हिंडोरे गांठि जोर ।। रत्न जटित को शीश शेहरो अरु चंदन की खोर ।।१ ।। मंगल गावत सब व्रजवनिता कहत परस्पर रोर ।। रसिकदास प्रभुको मुख निरखत हे तृन तोर ।।२ ।।

□ राग पूर्वी □ (९) झूलत कुंजमहेलमें दंपति सुरंग हिंडोरें ।। षोडषतन करि सिंगार छूटिरहे बडेबार सोंधेसों सगवगात उडत सुगंध झकोरें ।।१ ।। शीशसेहरो गंडनमरुवट नेहनवीन दोउ करजोरें ।। रसिकदासप्रभु धरत कपोलकर तबप्यारी मुसिक्याय चितवतहे दृगमोरें ।।२ ।।

□ राग पूर्वी □ (१०) आईं सकलयुवति मिली श्यामाश्याम झुलावन । निरखत छबि दुलहादुलहिनकी मन आनंद बढावन ।।१ ।। कुसुमदामले कंठ धरावत एकले दर्पण लगी दिखावन ।। रसिकदासप्रभुकों पान खवावत मधुर मधुर गावत केलिकरि लगी रिझावन ।।२ ।।

□ राग पूर्वी □ (११) सोहत दोऊ रस भरे रंगमहलमें झूलत रंग हिंडोरें ।। दोऊ हँसत परस्पर चितवत अंगअंग लपटावत बात कहेत थोरें ।।१ ।। शीश

सेहरो लसत रत्नको मोतिनलर लटकत चहुंओरें॥ रति रसलंपट रसिकदासप्रभु वेणु बजावत रिझावत करत निहोरें ॥२ ॥

◻ राग पूर्वी ◻ (१२) ललितलालको शेहरो जगमग रह्योरी माई॥ नवदुलहनि राधिका दुल्हे श्याम कन्हाई ॥१ ॥ कुंज महलमें हिंडोरना बांध्यो परम सुहांय ॥ झुलवतहें सब सहचरीं मिलि सब झुंडन गांय ॥२ ॥ बोलत मोर पपैया दादुर शब्द सुहांय ॥ यह सुख शोभा देखकें दासरसिक बलजांय ॥३ ॥

◻ राग मल्हार ◻ (१३) दुल्हो सावन झूले दुल्होरी ललन दुलहनी राधा संग वर माई॥ रतन जटित को बन्यो हे सेहरो झुलवत झोटा देत सब सहचरी मन भाई ॥१ ॥ गठ जोरे दंपति राजे हिंडोरे बट संकेत कुंज स्थली॥ 'रसिक' सुजान दोऊ ललितादिक मिलि करत परसपर रंग रली ॥२ ॥

◻ राग मल्हार ◻ (१४) झूलत हिंडोरे मन फूलत अथोरें समतूल तन हे ओरें मानौं आनंद को गेहरा॥ केसरी पिछोरा अल बेस मानौं मोती झोरा स्याम अलक सुभौंरा भौंरा मानौं वरषत हे मेहरा ॥१ ॥ गहरे गुपाल बनमाल पहोंची रसाल सोहें मोती माल बाढ्यों बालम सौं नेहरा॥ दुलहनि राधे 'मदनेस' दुल्हे संग राजे कोटि काम लाजे लखि सीस सोहें सेहरा ॥२ ॥

हिंडोरा - दुमालो के पद

◻ राग मल्हार ◻ (१) झूलत गिरिधरलाल हिंडोरे। लाल दुमालो सीस विराजत उर राजत वनमाले ॥१ ॥ संग झुलत वृषभान नंदिनी बोलत वचन रसाल। 'सूरदास' प्रभुकी छबि निरखत विवश भई व्रजबाल ॥२ ॥

◻ राग मल्हार ◻ (२) हिंडोरे माई झूलत है पिय प्यारी॥ पित दुमालो, बन्यो शीश पर पहेरे कसुंबी सारी ॥१ ॥ कुटिल कटाक्ष नयन चितवत तन संग वृषभान दुलारी ॥ राग मल्हार अलापत गावत अरी मुरली

मनुहारी ॥२ ॥ यह बिध दोऊ झूलत उस फूलत त्रण तोरत व्रजनारी ॥ मनमोहन गिरिधारी की छबि पर कोटी काम बलिहारी ॥३ ॥

कुल्हे के पद (हिंडोरा)

□ राग मल्हार □ (१) सुरंग कुल्हे रंग अरून पीछोरा पेहेरें सुरंग हींडोरें झुलें श्रीगोवर्धनधर ॥ श्यामाकें कुसुम्बी सारी अंगीया अमोल कटि लहेंगा हर्यो मन मोहे रीझ रीझावे दोउ निरख परस्पर ॥१ ॥ सखी सब चहुंदिश झोटादेत हँसहँस तेसेई घन न्हेनी न्हेनी बुन्दन लायोझर ॥ जाईके सोहाग भाग जम्योहे मलार राग भरे अनुराग रीझे कुंवर सुघर वर ॥२ ॥ कछु करमचकि बाढी पिया अंग गहें ठाडी जीयमें डरानी जान पीय लये अंक भर ॥ कुम्भनदास प्रभु मंद हास सुख सिंधु बाढ्यो अति सब सुखरासि अती परम कृपाल वर ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (२) अबहीहों आई लाई राधेकों मनाय लाल झुलो झुलावो दोऊ रीझ रीझावो गावो ॥ पावस पुनीत ऋतु उमग्यो हुलास अति चिते चेनकर निकट बुलावो आवो ॥१ ॥ कुलेह संवारे प्यारी अलक संवारे पीय मुखसों मिलावो मुख कित सकुचावो लजावो ॥ कृष्णदास प्रभु झूले स्यामा अंग अंग फूले गिरिधर संग सुखद सांवन मनावो आवो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) रस भरे पिय प्यारी, जोरी अति रंग सारी, सुरंग हिंडोरें झूले सोभा अति बाढी ॥ पीय के पिछोरा पाग, कुलह रही अर्ध भाग, प्यारी के कसुंभी सारी कंचूकी कसी गाढी ॥१ ॥ झोटा देत व्रज की नारी बाजत मृदंग तारी कोकिल कहूंकनी मोर की रारी ॥ बूंदन की झमकनी दामिनी की चमकनी ये छबि निरख निरख 'दास' बलिहारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (४) श्यामा श्याम झूलत सुरंग हिंडोरे ॥ बरन बरन पट भूखन पहेरे रमकत बाह जोरे ॥१ ॥ कूलेह पीत पट पीय को पीछोरा प्यारी

के कसुंभी सारी सोभा चित चोरें ॥ चत्रभुज प्रभु गिरिधर की बानिक पर वारी वारी डारो रीझ त्रण तोरें ॥२ ॥

□ राग ईमन □ (५) झूलत कमल नैंन मृग नैंनी ॥ कुल ही पाग लाल उर राजत प्यारी के विविध कुसुम गुही वेंनी ॥१ ॥ पित पिछोरा स्याम तन राजत नील बरन कनक तन एंनी ॥ सुंदर स्याम सकल सुखदायक नागरी नवल स्याम सुख देनी ॥२ ॥ सजल स्याम घन घोर उमग पीय बरषत रूप अधिक जेसेनी ॥ 'रसिक' प्रीतम रस भाव झूलावत ललितादिक हँस गति गेनी ॥३ ॥

□ राग पूर्वी □ (६) सब सुख सावन झुलत हिंडोरे रंग रह्यो ॥ रागतान मिली ताल सुरन को मिलवत प्यारी न्यारी न्यारी तरंगन श्रवन सुनत सब दुःख बह्यो ॥१ ॥ प्यारी पहेरे सुरंग चुनरी पियको पिछोरा कुलह सुरंग देखत मदनको मद छर्यो ॥ छीत स्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल यों विहरत है अटल दंपति रंग रह्यो ॥२ ॥

हिंडोरा फेंटा के पद

□ राग मल्हार □ (१) पेहरें कसुंभी सारी बेठे पीयसंग प्यारी सुरंग हिंडोरो शोभालागे अतिभारी ॥ पियशीर सोहें फेंटा लटकि रह्यो अति दाहिनी ओर अरुण पिछोरा हरखनिरख झुलवत व्रजनारी ॥१ ॥ श्यामघन उमड आये नयेनये लेत सुर गावत सरस तान लाजविसारी ॥ रसिक प्रीतमसों करत अनंगरंग अंगअंग सुख मर्यादा भंगकारी ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (२) मनमोहन वृषभान लली मिल झूलत सुरंग हिंडोरें ॥ वाधें शीश ऐंठवां फेंटा सरस कसुंभी रंगबोरें ॥१ ॥ कटिराजत पटपीत श्यामके सारी सुरंग बनी तनगोरें ॥ अंसनबाहु धरें जो परस्पर चिते चपल दृगकोरें ॥२ ॥ खंभनलाग झूलावत ठाडी तरुणीगण चहूंओरें ॥ रतिनायक व्रजपतिकी छबिपर रीझरीझ तृणतोरें ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (३) झूलत दोऊ रंग भरे हो । अब हाहा हौ सुन्दर यमुना

के तीर ॥ कंचन के दे खंभ मनोहर दाडी चार सोहाई ॥१ ॥ पटुली सुरंग जडाव बनी है लाल लाडली मनभाई ॥ कुंज कुंज में रच्यो हिंडोरो देखन सब मील जाई ॥२ ॥ फेंटा सुभग सीस राजत है सुरंग ही साज बनाई ॥ कसुंभी को कटी बन्यो है पीछोरा सारी सुरंग बनाय ॥३ ॥ यह छबि देख देखी मन फूले ॥ रसिकदास बलजाई ॥४ ॥

□ राग मारू □ (४) श्री राधे के भवन आये व्रजराज सुवन झूलत है आनंदभर सुरंग रंग हिंडोरे ॥ दोऊजन अलीराम श्याम श्यामा छबि निरखी हरखी दामिनी मानो जात घन घोरे ॥१ ॥ फेंटा कटी पीत बसन उपरना उडत अरुन चारु चटकीली चोली चुनरी रंग बोरे ॥ छीत स्वामी जलद सो मीली आकास कीये बरखत हैं निरखत सुख राजत व्रजजन चितचोरे ॥२ ॥

हिंडोरा कुसुंबी घटा के पद

□ राग मल्हार □ (१) रंग भरे दोऊ अंग मिलावत बैठें सुरंग हिंडोरे आये ॥ तेसीय कसूंभी सारी तेसीय पाग भारी तेसोई सुरंग पिछोरा हँसत उठत बिच गाई ॥१ ॥ जब हेरत ओरन की दिस तें डरपन की मिस तांन चुकाई ॥ 'रसिक' प्रीतम पिय प्यारी की छबि ऐसी मिलि हे सहेज सुभाई ॥२ ॥

श्याम घटा के पद (हिंडोरा)

□ राग मल्हार □ (१) झूलत राधा प्यारी श्याम ॥ श्याम पीछोरा शोभित नीको श्याम पाग शिर धारी ॥१ ॥ राग मलार अलापत गावत देत परस्पर तारी ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरन लाल संग रंग बढ्योहे भारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) श्याम संग झूलत राधा प्यारी ॥ श्याम पिछोरा शोभीत नीको श्याम पाग शिर धारी ॥१ ॥ राग मलार अलापत गावत देत परस्पर तारी ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरनलाल छबि संग रंग बढ्यो हे भारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) झूलत नन्दकिशोर हिंडोरें माई॥ संग झूलत वृषभान नंदनी झोटा देत झकोरें ॥१ ॥ कारी पाग लाल शिर शोभित कारे बोलत मोरें॥ कारी सारी प्यारी अंग शोभित घन गरजत चहुं ओरें ॥२ ॥ कारोई कटि बन्यो हे पीछोरा व्रजजनके चित चोरें॥ श्रीविट्ठल गिरिधर मुख देखत नेनन लगत अति जोरें ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) झूलत श्याम नन्दजीको हिंडोरें माई॥ श्याम पाग लाल शिर शोभित श्याम पीछोरा नीको ॥१ ॥ श्यामही सारी प्यारी अंग शोभित और कुंमकुंम कोटीको॥ तेसेई व्रजजन जूरि आये गावत गीत अति नीको ॥२ ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर संग झूलत भाग्य बडो इनहीको ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (५) वृन्दावन लाल ललना संग झूले॥ श्याम तरुनिजा तट हिंडोरना श्याम अंग दुहुं फुलें ॥१ ॥ श्याम द्रुम ठोरठोर देखीयत श्याम कुसुम सब फूले॥ सूर श्याम छबि यों राजतहें उपमा नही समतूले ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) देखो माई श्याम हिंडोरे झूले। निरख निरख मनमोहन मुखछबि व्रजजन मन अति फूले ॥१ ॥ स्याम खंभ बहु भाँति बनाये डांडी स्याम मन भाई। पटुली स्याम बिराजत तामें हीरा लाल जराई ॥२ ॥ स्याम रंग व्रजराज लाडीलो अरु चन्द्रावलि गोरी। नव व्रजवधु चहुँ दिसनि ठाडी मानों प्रेमरंग बोरी ॥३ ॥ तामें राग मलार मधुर सुर नवल जुवतिजन गावे। श्री विट्ठल गिरिधरन लालसों नवल नेह उपजावे ॥४ ॥

गुलाबी घटा के (हिंडोरा) पद (असाढ़ वद १ से श्रावण वद १)

□ राग मल्हार □ (१) झूलावत पचरंग डोरी व्रज वधु॥ नंदनंदन मुख अवलोकित त्रीया संग राधिका गोरी ॥१ ॥ गुलाबी सारी कंचुकी उपर गुलाबी सींगार कीसोरी॥ गुलाबी लाल उपरना लाल अंग चमकत

दामिनी ओरी ॥२ ॥ गुलाबी झुम छाय रहो रंगना बरखत बूंदन थोरी ॥ नंददास नंदनंदन संगक्रीडत गोपीजन लखि कोरी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) गुलाबी कुंजन छबि छाई झुलत दोउ॥ गुलाबी फूल वीकसतिद्रुम गुलाबी लता उरझाई ॥१ ॥ गुलाबी बसन उपरना पाग अरु केकी पिच्छ सुहाई॥ गुलाबी माल उरपर लहिरति गुलाबी बदन झुक आई ॥२ ॥ गुलाबी अरुन मुख दरपन निहारत परस्पर मुसकाई॥ नंददास जुवती सब वारत तन मन धन सरसाई ॥३ ॥

□ राग रायसो □ (३) झूलत कुंवर गोपराय की सुंदर सब सुकुमारी, मध्य घनश्याम छबि सोह ही स्यामा परम उदार ॥१ ॥ चीर गुलाबी राधिका उर बैजयंती माल॥ बरन गुलाब छबि बनी झूलत संग गोपाल ॥२ ॥ सारी लहेंगा कंचुकी सबही गुलाबी बनाये ॥ साज गुलाबी रस भयो चंद्रावलि सजाय ॥३ ॥ ललिता विसाखा चंद्रभागा मध्य यमुना के कूल। परमानंद प्रभु श्रीपति रच्यो हिंडोलो अमूल ॥४ ॥

पीरी घटा के पद (हिंडोरा)

□ राग मल्हार □ (१) झुलें माई जुगल किशोर हिंडोरें॥ अति आनन्द भरे सब गावत लेत प्रीया चित चोरें ॥१ ॥ कंचन मणीके खंभ बनाये मोतिन झुमक लोरें॥ मंद मंद बूंदे अति बरखत स्याम घटा घन घोरें ॥२ ॥ पीत बसन दामिनि छबी लागत बोलन लागे मोरें॥ कुंभनदास प्रभु गोवरधनधर चितवत राधा ओरें ॥३ ॥

केसर के हिंडोरा

□ राग भीमपलास □ (१) झूलत बालकृष्ण विहारी। व्रजनारी सब देखन आईं पहर केसररंग सारी ॥१ ॥ केसरके दोउ खंभ बनाये दांडी चार सँवारी। केसरकी पटुली राजत है मोतिन झुमक सारी ॥२ ॥ केसर मुकुट मकराकृत कुंडल छबि लागत अति प्यारी। चत्रभुज प्रभुकी छबि निरखत हि तनमन डारों वारी ॥३ ॥

हरि घटा के पद (हिंडोरा)

□ राग मल्हार □ (१) हरित जमुनातट हरित जु बंसीवट हरित लतान तामें हरें हरें झूले। हरे हरे बोले मोर कोकिला करत रोर हरें हरें झोंटा देत व्रजजन फूलें ॥१॥ हरी जु काछिनी कटि हर्योई टिपारो सीस मोर चन्द्रिकाजु हरी छबि देखि भूलें। हर्योई सिंगार करि राधामोहन जु दोऊ रसिक निरखि निरखि सोभा सुख डुलें ॥२॥

□ राग मल्हार □ (२) लिलो ही साज बन्यो अति सोभित ता पर सोहत पीत किनारी। लीली पाग सिरपेच चन्द्रिका कलगी सीसफूल अरु भारी ॥१॥ भाल तिलक नासा गजमोती कंठ दुगदुगी पोहोंची न्यारी। नूपुर छुद्रघंटिका दुलरी मोतिनकी माला अति भारी ॥२॥ लीलोई सुभग पिछोरा सोभित बेनु बेत्र चोटी अति भारी। पोहोपमाल सिर कंठ बिराजत ले दर्पन देखत पिय प्यारी ॥३॥ घर घरतें आई व्रजनारी जमुनाजल भरि कंचनझारी। परमानन्द प्रभुकी छबि निरखत श्रीविट्ठलनाथ आरती वारी ॥४॥

□ राग मल्हार □ (३) लिलोही सुभग टिपारो सीस पर कुंडल सीसफूल सोहे चोटी ॥ध्रुव॥ लीलो वृन्दावन अति ही सुन्दर लीली वेल परम हितकारी। लीले कीर ब्रिच्छ पर सोहत लीले कोकत मोर सुढारी ॥१॥ लीली भूमि बनी अति कोमल लीली तुलसी-माल धरी। लीली बनी व्रजकी सब सोभा लीली बनी सुभग हरियारी ॥२॥ लीली चूरी करनमें सोभित लीली बेंदी चिबुक संवारी। कंचुकी सुभग सारी हरी सोहे संग राजत वृषभानदुलारी ॥३॥ सहज सिंगार किये तन सोभित करनफूल बेसर मुक्तारी। चरनकमल पर नुपूर बिछुवा छबि पर कृष्णदास बलिहारी ॥४॥

जांबली घटा (हिंडोरा) के पद

□ राग मल्हार □ (१) हिंडोरे माई झूलत लालविहारी॥ संग झूलें वृषभाननंदिनी प्राणनहूंतें प्यारी ॥१॥ नीलांबर पीतांबरकी छबि

घनदामिनी अनुहारी ॥ बलिबलिजाऊं युगल कमलपर कृष्णदास बलिहारी ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) झुलें दोऊ सुरंग नवल हिंडोरें ॥ स्यामवरण तनरसिक शिरोमणि कुंवरि वरण तनगोरे ॥१ ॥ नीलांबर पीतांबरकी छबि घनचपलाके भोरें ॥ हरिदासके स्वामी स्यामा कुंजबिहारी मृदुमुसकन थोरेथोरें ॥२ ॥

□ राग नट □ (३) झूलत नवल विहारी हिंडोरें ॥ संगझुलत वृषभाननंदिनी प्रानहूतें प्यारी ॥१ ॥ नीलांबर पीतांबर की छबि घनदामिनी अनुहारी ॥ पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागत गोविंद जन बलिहारी ॥२ ॥

□ राग गौरी □ (४) झूलत नवल किशोर किशोरी ॥ उत व्रजभूषण कुंवर रसिकवर इत वृषभान नंदिनी गोरी ॥१ ॥ नीलांबर पीतांबर फरकत उपमा घनदामिनि छबि थोरी ॥ देखदेख फूलत व्रजसुन्दरि देतझूलाय गहें करडोरी ॥२ ॥ मुदित भईं यों स्वरमिल गावत किलक किलक दे उरज अकोरी ॥ परमानन्दप्रभु मिल सुखविलसत इन्द्रवधु शिर धुनत झकोरी ॥३ ॥

□ राग नायकी □ (५) बेठे झूलत दंपति सांवन सुहायो ॥ पियशिरपाग लटपटी राजत शिखी स्तबक मन भायो ॥१ ॥ प्यारी पहेरें सारी सोसनी सीस फूल छबि पायो ॥ रसिकदास प्रभु रसवश व्हे रहे मुरली कलरव राग सुनायो ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (६) बादली साज बन्यो अति सुन्दर चहुँ दिसतें बादर जुरि आई ॥ध्रुव ॥ गरजत गगन दामिनी दमकत ता मधि जुगलकिसोर सुहाई। बादली पाग पिछोरा बादली सारी चोली सुभग मनभाई ॥१ ॥ मानिकको सिंगार सुभग अति तिलक करनफूल भाल धराई। सुभग चन्द्रिका कलगी लटकन सीसफूल बेसर लर लाई ॥२ ॥ पोहोंची अरु दुगदुगी सोभित गुंजमाल सिर कंठ धराई ॥ फूलनकी माला अति मेहकत नंददास निरखत सुख पाई ॥३ ॥

चुनरी के पद (हिंडोरा)

□ राग सोरठ □ (१) झुलत ललनां लाल हिंडोरें ॥ बरन बरन चूनरी तन पहिरें ठाढी नवल वाम हरित भूमि पर चंद्र वधू चहूँ ओरें ॥१ ॥ कबहुं न्हेंनी न्हेंनी फूंही डारत फरकत पीत पिछोरें ॥ 'रसिक' प्रीतम की बानिक ऊपर डारत हैं तृन तोरें ॥२ ॥

लहेरिया के पद (हिंडोरा)

□ राग मल्हार □ (१) ॥ आडचोताल ॥ गौर स्याम लेहेरीयां धारनकी झूलत लहरे लेत ॥ पहिरें सरस हेत तेसोई स्याम उघर परो हिय हेत ॥१ ॥ उफन पर्यों सम सुख सागरलों अंग दिखाई देत ॥ पीय मन मगन होत अभिलाषन भरत मनोहर सेत ॥२ ॥ मधुर मधुर गावत मलार धुनि रीझत भीजत चेत ॥ छूटे चहूँ ओर बसन 'आनंद घन' सरसत हें पीय हेत ॥३ ॥

फूल के हिंडोरा

□ राग मल्हार □ (१) फूल हिंडोरा माई झूलें श्रीव्रजचंद ॥ फूलतान तरंग गावत बाजत नाना छंद ॥ध्रु० ॥ फूलके दोउ खंभ राजत फूल पटुली मंज ॥ फूलडांडी फूल वेलन फूल फूले कंज ॥१ ॥ फूल सुजनी फूल बालिस फूल तकिया रंग ॥ फूल फूले लाल ललना झूलतहें दोउसंग ॥२ ॥ फूलडांडी फूल लटकन फूल फुंदना तास ॥ फूलीजो ललिता देत झोटा करत मोहन हास ॥३ ॥ फूल अंगीया फूल लहेंगा फूल फूले गात ॥ फूल पोंहोंची फूल गजरा फूल कंकन हात ॥४ ॥ फूल दुलरी फूलकंठी करणफूल दोउ पास ॥ फूलचोकी फूलमाला फूलहार सुवास ॥५ ॥ फूल अनवट फूल विछिया फूल जेहेर पाउं ॥ हित दामोदर यह विनती वसीये गोकुल गाउं ॥६ ॥

□ राग मल्हार □ (२) हिंडोरे माई कुसुमन भांत बनाई ॥ नवल किशोर मनोहर मूरति ढिंग राधा सुखदाई ॥१ ॥ छायरहे जिततिततें बादर विचदामिनि अधिकाई ॥ दादुर मोर पपैया बोलें नेन्हीं नेन्हीं

बूंदसुहाई ॥२ ॥ झोटादेत सकल व्रजसुंदरि त्रिविध पवन सुखदाई॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलालकी यहछबि वरणि न जाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) आजवन कुन्ज हिंडोरो साज्यो ॥ उगम उगम झूलत पियप्यारी उगम घटा घनगाज्यो ॥१ ॥ कालिंदीतट सुभग हिंडोरो तहां व्रजराज विराज्यो॥ ढिंग कंचनकी बेलि राधिका झूलवत सखी समाज्यो ॥२ ॥ पीतपट ओर पागकसूंभी मोर पिच्छसिरसाज्यो॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधर छबिनिरखत कोटिक मनमथ लाज्यो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) फूल हिंडोरना झूले वृषभानकुमारी। ललितादिक सब फूल झुलावे देत हैं तन मन वारी ॥१ ॥ डांडी फूल खंभ फूलनके मरुवे फूल बनाये। धरनी फूल पर रच्यो हिंडोरो फूलनि बादर छाये ॥२ ॥ सब आभूषन पहर फूलके श्रीराधा मन फूली। प्रफुलित भ्रमर गुंजार करत है दामिनी दमकन भूली ॥३ ॥ गूंथे कच फूलनसों भोंह पर सीसफूल सिर राजे। फूलन माँग झिबि झिबि फूलन फूल झालर अति छाजे ॥४ ॥ टीकी फूल फूलनकी बेसर फूलनि बारी सोहे॥ माला फूल हार फूलनके दुलरी फूलन मोहे ॥५ ॥ बाजुबंद फूलनके बांधे चूरी फूल सुहाई। कंकन फूल रहे कर उपर फूल मुदरिया भाई ॥६ ॥ सारी फूल फूलनको लहेंगा अंगिया फूल विराजे। बेनी फूल रही कटि उपर निरख अहिपति लाजे ॥७ ॥ जेहर फूल फूलनकी पायल फूल अनवट छबि भारी। कमलफूल पद फूलनि बिछिया सूरदास बलिहारी ॥८ ॥

□ राग मालव □ (५) फुलनको हिंडोरो फुलन की डोरी फुले नंदलाल फुली नवल किसोरी॥ फुलन के खम्भ दोऊ डांडी फुलन की पटली बैठे एक जोरी ॥१ ॥ फुले सघन बन फुले नवकुंजन फुली फुलि यमुना चढत हिलोरी॥ चतुर्भुज प्रभु फुले निपट कालिंदी कूले फुली भामिनी देत अकोरी ॥२ ॥

□ राग मारू □ (६) प्यारी संग झूलत नंद दुलारो॥ फूलनके द्वे खम्भा बनाये फूलन डांडी चारो ॥१ ॥ फूल सिंघासन फूलन पटली फूलन मरुवा सारो॥ हंस मोर फूलन के सोभित फोंबा पचरंग भारो ॥२ ॥ झूलत फूलन

अंग मिलावत फूलत हें दृग चारो ॥ अंग अंग सोभा कहां लग बरनों घनदामिन वार डारो ॥३ ॥ फूल रही यमुना द्रुम श्रेनी लज्जा नमी फूल भारे ॥ दादुर मोर पपैया बोले सुन भीजत रस न्यारे ॥४ ॥ फूल सिंगार देखत पिय प्यारी मिट्यो मेन मन गारो ॥ परमानंद प्रभु की छबि निरखत मोह्यो हे व्रज सारो ॥५ ॥

□ राग रायसो □ (७) फूलन रच्योहे हिंडोरो नंदमहरके द्वार ॥ युवती यूथ मिलगावहीं झूलत नन्दकुमार ॥१ ॥ पावसऋतु सुहावनी आयो सांवन मास ॥ दादुर मोर चकोरना कोकिल कूजतपास ॥२ ॥ फुलनके दोउ खंभ रचे फूलन डांडीचार ॥ फूलनके मरुवे बने पटुली परमरसाल ॥३ ॥ झुलन आई राधिका सखीसब सोहेसंग ॥ ऐसी छबिजु लागही पुलकित भये सब अंग ॥४ ॥ झुलावतहें ललिता सखी आनंद अंग अपार ॥ चुतर्भुजप्रभु गिरिधरनकी छबि निरखत बलिहार ॥५ ॥

□ राग बिहाग □ (८) सुंदर हिंडोरे लाल सुंदर बनी मयारि मरुवो अति ही सुढार पटुली छबि न्यारी ॥ वेलन हें बहु सुरंग खंभ दोऊ रत्न रंग डांडी चारि जगमगात झूमिका पर वारी ॥१ ॥ बादर सब उमडि आए लागत हें अति सुहाए दादुर पिक बोलें मोर, कुंज घटा भारी ॥ झूलत हे स्यामां स्याम आनंद सब व्रज के धाम 'सूर' प्रभु अति सुजान गोपिका बिहारी ॥२ ॥

□ राग जैजैवंती □ (९) फूले हें नवल लाल झुलवत सखी सब फूलन हिंडोरो अति बढ्यो हे सलोलनां ॥ फूलन के खंभ दोऊ डांडी चारि फूलन की, फूलन की पटुली हीरा जटित निरमोलनां ॥१ ॥ फूलन के तकीया बिछौंना फूलन के आभूषन पहिरें अधिक अमोलनां ॥ 'नंददास' फूले तहाँ लेति बलैया जहाँ देखत मोहे हे मुनि करें बहु रंगनां ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) हिंडोर फूलन को फूलन की डोरी फूले नंदलाल फूली नवल किसोरी ॥ध्रुव. ॥ फूलन के खंभ दोऊ पटुली फूलन की डांडी वे फूलनकी जडाव जरी ॥ फूली फूली जुवती देत हे झोटा फूली मदन तन

डारत तोरी ॥१ ॥ फूले हे सघनवन फूले हे मधुवन फूली फूली यमुना बहत सलोनी ॥ गोविन्द प्रभु आजू फूले फूले झूलत नंदलाल श्रीवृषभान किसोरी ॥२ ॥

मचकी और फूल फूल हिंडोरा के पद

□ राग मल्हार □ (१) मचकि मचकि झुलें लचक लचक जात रचक रची चित सोहे पटुली पहेरीआं ॥ गरज गरज आवे दामिनी सुहाई लागे गहेर गहेर घटा आईहें गहेरीयां ॥१ ॥ हरख हरख गावें परस रीझे भीजे द्वारकेश सोंधेमे हर हर हेरीयां ॥ फहर फहर करे प्यारेको पीतांबर लहेर लहेर करे प्यारीको लहेरीयां ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२) महेल सहेल सीतल सुगंध समीर डोले गहर गहर घेरके घहरीयां ॥ जेहेर जेहेर झुक झुक झर लायोहे व छहर छहर छोटी बूंदन बेहेरीयां ॥१ ॥ हहरो हहरो हसि हसि हसके हींडोरें झुलें पहेर पहेर तन कोमल थहेरीयां ॥ फहेर फहेर करे प्यारेको पीतांबर लहेर लहेर करे प्यारीको लहेरीयां ॥२ ॥

□ राग जयजयवंती □ (३) कदमके वृक्ष नीचे हिंडोरा ॥ माई आजतो हिंडोरे झूलें छैयांकदमकी ॥ गोपी सब ठाडी मानों चित्रके सदनकी ॥१ ॥ देखतरंगीले नयन बोलत मधुरे बेन मोहे सब कोटिकाम छबीले वदनकी ॥ गावत मधुर ध्वनि मोहे सुरनर मुनि शंकरसे महायोगी तारी छूटी तिनकी ॥२ ॥ त्रिविध समीर जहां बंसीबट झूलें तहां मंदमंद गावें सखी राधाके रवनकी ॥ नंददासप्रभु जहां ललिता झुलावे तहां भई मग्न सिंधुशोभा देख श्यामघनकी ॥३ ॥

□ राग जयजयवंती □ (४) माई आज तो हिंडोरे झूले छैयां कदंबकी ॥ सब सखी ठाडी जेसें चित्रके सदनकी ॥१ ॥ पीतांबर मुक्तामाल तिलक विराजें भाल मुकुट कुंडल छबि छूटी अलकनकी ॥ श्रवण कपोल नयन अतिही रसीले बेन कोटि काम थक्यो शोभा देखत वदनकी ॥२ ॥ मुरलीकी

ध्वनी सुनि मोहे सब सुरमुनि शिवसे अटल ध्यानी तारी छूटी तिनकी ॥ सूरदास प्रभु गावें रीझरीझ सचु पावें भयेहें मगन लीला देख श्याम घनकी ॥३ ॥

□ राग जयजयवंती □ (५) प्यारीको हींडोरनाहो रोप्यो कदंबकी डारी ॥ रेशम दोर पवन पुरवाई झूलत श्याम बिहारी ॥ चहुंदिश सखी झूलवत ठाडी तनमन धन बलिहारी ॥१ ॥ राधेजु झूलत श्याम झुलावे गावत गीत सुहाई ॥ मधुर मधुर घन गरजत जेसे मधुरीसी मुरली बजाई ॥२ ॥ वृन्दावनकी शोभा निरखत गावत श्रावन गीत ॥ श्रीविठ्ठल प्रभुकी छबि निरखत दोउनकी रस रीत ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (६) गौर स्याम धारणको लहेरिया झूलत लहेरा लेत। पहेर्यो सरस चोंपसे श्यामा उघरी पर्यो हिये हेत ॥१ ॥ आपन उठ्यो संग सुख सागर नेअंग देखाइ देत। प्रिया मन मगन होत अभिलाखन बदत न धीरज रहेत ॥२ ॥ मधुरे सुर मलार धुनि गावत सुन रिझत भींजत चित चेत। छूटे चहुं ओर वरखत 'आनंदघन' भरत मनोहर खेत ॥३ ॥

□ राग ईमन □ (७) रमक झमक झूलें झूलावें युवती राधा प्यारीकों हिंडोरें॥ तेसीये कसुंभी सारी पेहरें तेसेही वरण वरण चहुंदिशा घनघोरें ॥१ ॥ याहीतें दुर दुर जात दामिनी होय संकेत तहां स्याम देखत द्युतिगात गोरें॥ कल्याणके प्रभु गिरिधर रीझवस भये डारतहें तृणतोरें ॥२ ॥

□ राग पूर्वी □ (८) सुखद वृंदावन सुखद यमुनातट ॥ सुखद कुंज भवन रच्यो है हिंडोरो ॥ सुखद कल्पतरु सुखद फूल फल ॥ सुखद बहती सीतल पवन जपो रे ॥१ ॥ सुखद रंगीले संग सुखद रंगीली राधा ॥ सुखद करत केली रती पती जोरे ॥ सुखद सखी झुलावे सुखद ही गीत गावे ॥ सुखद गरज वरसत थोरे थोरे ॥२ ॥ सुखद हरीत भूमी सुखद वंदन रंग ॥ सुखद कोकीला कल सारस चकोरे ॥ सुखद बजावे बेनु सुखद सुजस सुनावे सुखद गदाधर प्रभु चित चोरे ॥३ ॥

□ राग मालव □ (९) झूलत ललना लाल हिंडोरें गोवर्धन की शिखर सुहाये ॥ सखीयन कुंजरची अति अद्भुत वरन वरन फलफूल लगाये ॥१ ॥ तेसोई कुसुम विचित्र हिंडोरो झालर झूमक कलश बनाये ॥ मंदमंद गावत सबहीं मिल देत झोटका करिमन भाये ॥२ ॥ तेसोई मुरलीनाद करत पिय अधरसुधा पूरत रस छाये ॥ रसिकदास यह बानिक निरखत तनमन अति आनंद बढाये ॥३ ॥

□ राग केदारो □ (१०) सोतु राखलेरी झोटा तरण भये ॥ इत नवकुंज द्रार कदंब परस जात उत यमुनाालों गये ॥१ ॥ आवत जात लपटात लतनसों ताऊपर द्रुम फूलछये ॥ कल्याणके प्रभु गिरिधर रीझ वशभये झूलत नयेनये ॥२ ॥

श्री गिरिराज ऊपर के हिंडोरना

□ राग मल्हार □ (१) झूलत मदनमोहन पियराजत संग राधिका लीने ॥ सुभग शिखर गिरिगोवर्धनकी वरन वरन द्रुम फूल नवीने ॥१ ॥ तेसोई घन घोरत चहुंदिश चमकत चपला अति छबिलीने ॥ मंदमंद कुसुमावली बरखत इन्द्र धनुष बग पंगत कीने ॥२ ॥ बोलत दादुर चात्रक मोर पिक कोकिल गावत ले सुरझीने ॥ तेसीये गावत व्रजयुवतीं मिलि लाल बजावत वेणु प्रवीने ॥३ ॥ झुलवत सब प्रीतम मुख निरखत वरन वरन अम्बर तन झीने ॥ रसिकदास प्रभु दंपति रस भरे अधर सुधा प्यावत अरुपीने ॥४ ॥

□ राग मालव □ (२) झूलत मदनमोहन राधा संग गिरिवरपर लागत छबि भारी ॥ पानखात मुसकात परस्पर अरुण अधर कुंतल लटकारी ॥१ ॥ मंदमंद सुरगावत दोउ मालवराग मधुर सुर भारी ॥ रसिकदासप्रभुकी या छबिपर कोटिकाम कीजें बलिहारी ॥२ ॥

□ राग मालव □ (३) झूलत ललना लाल हिंडोरें गोवर्धनकी शिखर

सुहाये ॥ सखीयन कुंजरची अति अद्भुत वरन वरन फल फूल लगाये ॥१ ॥ तेसोई कुसुम विचित्र हिंडोरो झालर झूमक कलश बनाये ॥ मंदमंद गावत सबहीं मिल देत झोटका करिमन भाये ॥२ ॥ तेसोई मुरलीनाद करत पिय अधरसुधा पूरत रस छाये ॥ रसिकदास यह बान्कि निरखत तनमन अति आनंद बढाये ॥३ ॥

□ राग मालव □ (४) झूलत कुंज हिंडोरें गिरिपर मन्मथ मोहन संग श्यामाजु ॥ सारी पचरंग अरु कटि लहेंगा कंचुकी पियमन अभिरामाजु ॥१ ॥ पिय शिर मुकुट काछिनी कटिपर पीतांबर गरें वनदामाजु ॥ रसिकदास प्रभुकों सब झूलवत पूरनकरत सबकामाजु ॥२ ॥

□ राग मालव □ (५) झूलत सुभग हिंडोरें गिरिधर गोवर्धन पर्वतके ऊपर ॥ दुहुंओर झुलवत गावत त्रिय वरणवरण पेहेरें तन अंबर ॥१ ॥ तेसीये दामिनी दमकत छिनछिन तेसेई घन वरसतहें धर ॥ तिहिं अवसर रमकत पियकेसंग लागरही वृषभान सुतागर ॥२ ॥ चटकीलो चीरा हीराको लटकन लटक रह्यो भुवऊपर ॥ श्रीरघुवीरप्रभुकी लीला लखिमोहे ब्रह्मा सुरपति हर ॥३ ॥

□ राग ईमन □ (६) रमकझमक झूलनमें ठमक मेह आयो नहि सुरझत वातनतें ॥ नवपल्लव संकुलित फुलफल वरनवरन द्रुमलतान तर ठाडे भये भयोहे बचाव पातनतें ॥१ ॥ मंदमंद झुलवत खंभनलगि ओढें अंबर निजगातनतें ॥ कृष्णदास गिरिधारी दोऊ भीज्यो वागो सारी भ्रमरनकी भीरभारी टारी न टरत क्योंहु प्रकटी छबीली छटा निज गातनतें ॥२ ॥

श्री यमुना पुलिन हिंडोरा

□ राग काफी □ (१) श्रीयमुना पुलिन हिंडोरो रोप्यो कन्हाइ हें ॥ झूलनको व्रजबाल सबें मिल आई हें ॥१ ॥ ललिता चंद्रावली ओर राधागोरी हें ॥ साजें नवसत अंग प्रेमरंग बोरी हें ॥२ ॥ मुदित अपने चाय सबे

मिलगावहीं ।। हँसि हँसि मदनगोपालसों रंग बढावहीं ।।३ ।। केसरि पाग कसुंभी ढरकरई ढारसों ।। वृजवनितान रही लखि अंग संभारसों ।।४ ।। कुचतनी गई टूटि हिये हुलसानी हें ।। मदनमोहन पियके उरसों लपटानी हें ।।५ ।। प्रगट करत रसरीत रसीली बालसों ।। श्रीविट्ठल गिरिधर पिय नेन विशालसों ।।६ ।।

□ राग रायसो □ (२) ।। श्री यमुनाजी तटके हिंडोरा ।। झुलत मोहन रंगभरे गोपवधू चहूंओर ।। श्रीयमुना पुलिन सुहावनों वृन्दावन शुभठोर ।।१ ।। राधाजूकरें किलकारी ज्यों गरजत घनघोर ।। तापाछें सब सखियन मिलजु करतहें सोर ।।२ ।। तेसेई रटत पपैया बोलत दादुरमोर ।। नंददास आनन्दभरे निरखत युगलकिशोर ।।३ ।।

□ राग रायसो □ (३) झूलत राधामोहन कालिंदीके कूल ।। सघनलता सुहावनी चहुंदिश फुलेफूल ।।१ ।। सखी जुरीं चहुंदिशतें कमल नयनकी ओर ।। बोलत वचन अमृतमय नंददास चितचोर ।।२ ।।

□ राग सोरठ □ (४) हिंडोरें झूलें गिरिवरधारी ।। यमुनाको तट परम मनोहर संग राधिका प्यारी ।।१ ।। झूलन आईं सकल व्रजसुन्दरि षटदश भूषणसारी ।। नाचतगावत करत कुलाहल देत परस्परतारी ।।२ ।। दादुर मोर चकोर पपैया बोलतहें सुखकारी ।। सारस हंस कोकिला कूजत गुंजतहें अलि भारी ।।३ ।। सुरमुनि सब मिल कुसुमनवरषत मुनिवर छूटी तारी ।। यह सुख निरख दास परमानन्द तनमन धन बलिहारी ।।४ ।।

□ राग जयजयवंती □ (५) माई झूलत नवललाल झुलवत व्रजबाल कालिंदीके तीर माई रच्योहे हिंडोरनां ।। तेसेईं बोलेरी मोर क्रीडा करें चहूं ओर तेसोई मधुरध्वनि लाग्यो घनघोरनां ।।१ ।। तेसेई फूलेरी फूल हरत मनके शूल अलिगण गुंजें माई मनके सलोलनां ।। नंददास प्रभुप्यारी जोरी अद्‌भुत भारी देखवोई कीजे जेसें चंद्रकों चकोरनां ।।२ ।।

□ राग जयजयवंती □ (६) माई फूलकों हिंडोरो बन्यो फूल रही यमुना ।।

फूलनके खंभ दोउ फूलनकी डांडी चार फूलनकी चौकी बनी हीरा जगमगना ॥१ ॥ फूले अति बंसीबट फूलेहें यमुनातट सब सखी मिलगावें मन भयो मगना ॥ फूलीं सखी चहुं ओर झुलवत थोरेंथोरें नंददास फूले जहां मनभयो ललना ॥२ ॥

□ राग जयजयवंती □ (७) माई फूलको हिंडोरो बन्यो फूल रही यमुना ॥ फूलनके खंभ दोउ डांडी चार फूलनकी फूलनबनी मयार फूलरहे विलना ॥१ ॥ तामें झूलें नंदलाल सखी सब गावें ख्याल बांये अंग राधाप्यारी फूलभई मगना ॥ फूले पशुपंछी सब देख ताप कटे तब फूले सब ग्वाल बाल कटे दुःख द्वन्दना ॥२ ॥ फूली घनघटा घोर कोकिला करत रोर छबिपर वारडारों कोटि अनंगना ॥ फूले सब देवमुनि ब्रह्माकरें वेदध्वनि नंददास फूलेतहां करें बहुरंगना ॥३ ॥

□ राग केदारो □ (८) झूलत नव रंग संग राधिका गिरिधरनचन्द सहचरी दुहुं ओर ठाडी आनंद भर गावें ॥ सप्तस्वरन रागरंग झपताल मिली मृदंग उघटत वर सुघर तान भामिनी जीयभावें ॥१ ॥ वृन्दावन यमुनातीर कूजत पिक मोर कीर मंदमंद गरजत घन मेघ फुंही आवें ॥ ब्रह्मादिक शिव सुजानमोहे सब सुर विमान पोहोपवृष्टि करतसबे ॥ गोविंदजीय भावें ॥२ ॥

कांच के हिंडोरा

□ राग मल्हार □ (१) दरपन सन्मुख धरे झूलत हैं रंगभरे सखियन दरपन लिये चहुंदिसि ठाढी । दरपन अवनि झांई झुकि-झुकि लेत खनी प्रतिबिंब देखि-देखि दूनी सोभा बाढी ॥१ ॥ दरपनके खंभ दोऊ डांडी बनी दरपनकी दरपन से राजत दोऊ रंग रह्यो भारी । रसिक प्रीतम पिय झूलत दरपन कुंज-सदन जमुना बहे दरपनसी आरी ॥२ ॥

□ राग नायकी □ (२) ॥ मुकुट ॥ दोऊ मिलि झूलतहें दर्पण मणिके हिंडोरें ॥ तेसोई कुंज चहुंदिश प्रफुलित मणि दीपक चहुंओरें ॥१ ॥

तेसोईनीर सुखद यमुनाको तेसोई त्रिविध पवन झकझोरें ॥ तेसीय चपला चमकत कबहुं तेसेई मधुरमधुर घनघोरें ॥२ ॥ तेसीय झूलवत सखी चहुंदिश सब राजत तनगोरें ॥ भूषण वसन तन अद्‌भुत कही न जात मतिथोरें ॥३ ॥ पियशिर मुकुट काछिनी कटिपर पीतवसन छबिछोरें ॥ प्यारी कटि सारी अति झीनी कंचुकीउर लहेंगा झकझोरें ॥४ ॥ भूषण अति अद्‌भुत दोउनके हीरानके चितचोरें गजमोतिनकी माला बिराजत कुंडल कर्णफूल मुखगोरें ॥५ ॥ कुसुमदाम कर गुच्छ कुसुमके अंगअंग सोंधेबोरें ॥ प्यारी मधुरें बीनबजावत पियमुरली रवजोरें ॥६ ॥ कोऊ चतुर मृदंग बजावत कोऊ गावत कलगेरें कोऊक दर्पण आन दिखावत तबही हँसत मुखमोरें ॥७ ॥ कोऊक मेवा आदि आनि बहु ठाडी करत निहोरें ॥ आप आरोगत बांटत सबको बोलत बोलनिज ओरें ॥८ ॥ बोलत वचन परस्पर हितके श्रीमुखसों मुख जोरें ॥ काको मुख सुन्दर कहि ललिता बोलिश्याम समगोरें ॥९ ॥ कोऊक कंचन झारी जलभरि अचवावत अतिहोरें ॥ कोऊक अंचलसों मुखपोंछत बीरीदेत करजोरें ॥१० ॥ कोऊक चमर करत चहुंदिशतें कोउपंखा मोरछोरें ॥ रसिकदास प्रभुकी या छबि पर सर्वस्व डारत तृणतोरें ॥१ ॥

□ राग नायकी □ (३) ॥ कांचमहल में ॥ झूलत ललना लाल दर्पण मणि हिंडोल सुहाये ॥ मणिदीपाबलि राजत सबही दीपक द्रुम चहुंदिश लटकाये ॥१ ॥ शीश महल छबिभई अनुपम सुन्दर सुख चहुंदिश दरसाये ॥ सखी चहुँदिश झूलवत ठाडीं रागरंग करि श्याम रिझाये ॥२ ॥ पानखात मुसक्यात परस्पर अरुण अधर द्वे आये ॥ देत उगार बुलाय आप ढिग रसिकदास दुर्लभ फलपाये ॥३ ॥

□ राग नायकी □ (४) ॥ मोती की झालर ॥ झूलत कुंज सघन दंपति दे गलबांही ॥ मणिमंदिर मणिजटित हिंडोरो मणि लटकन लटकांई ॥१ ॥ मोतिन झालर झुमकराजत मोतिनमाल सुहांई ॥ रसिकदासप्रभु रति रसमाते अति प्रफुलित मनमांहीं ॥२ ॥

□ राग नायकी □ (५) ॥ हीरा के हिंडोला ॥ झूलत पिय प्यारी रसपरबस अभिलाख बढाये ॥ बातें करत परस्पर रसकी अति मीठे मृदु बोल सुहाये ॥१ ॥ हीरा खचित हिंडोल बिराजत मणि दीपक चहुंदिश छबि पाये ॥ झुलवत गावत सब व्रजनारीं रसिकदास प्रभु सब सुख छाये ॥२ ॥

□ राग नायकी □ (६) ॥ श्याम वस्त्र हीरानी मुकुट ॥ झूलत अंसन दे भुज रमक झमकि प्रीतमसंग प्यारी ॥ दर्पण मणि हिंडोलको फोंदना चहुंदिश मणि दीपक उजियारी ॥१ ॥ श्याम वसन दोउन तन हीरा भूषण मोर मुकट लटकारी ॥ कुसुमदाम कर कमल मधुर सुरबेंन बजावत रूप सुधारी ॥२ ॥ झुलवत सखी चहुंदिश कोउ गावत कोउ नाचतवारी ॥ कोउ चमर करत मुख निरखत देख आनंदित प्रीतम प्यारी ॥३ ॥ आरती करत युगल छबि निरखत राईलोंन नोछावर वारी ॥ रसिकदास करि दर्शन तिहिं छिन मन आनन्द उमग्यो अति भारी ॥४ ॥

सोने के हिंडोरा के पद

□ राग काफी □ (१) झूलत मोहन रंगभरेहो सखीरी नंदनृपतिके द्वार ॥ध्रु० ॥ कंचन खंभ रच्योहे हिंडोरो विद्रुम डांडीचार ॥ तापर मोरकलासी शोभित अति मरुवनकी बलिहार ॥१ ॥ शीशटिपारो बन्यो अति अद्भुत अरु शोभित सिंगार ॥ सामलबरन कमलदल लोचन मोहित सबव्रजबाल ॥२ ॥ वामभाग सुकुमार राधिका शोभाबढी अपार ॥ कृष्णदास गिरिधर छबि निरखत तनमनडारत वार ॥३ ॥

□ राग काफी □ (२) झुले हिंडोरें सांवरों वाकीशोभा बरनी न जाय ललना ॥ यमुनातीर सुभग कुंजनमें रच्योहेहिंडोरो आय ॥ ललना ॥१ ॥ कंचनके द्वे खंभ बिराजत डांडी चार सुहाय ॥ ललना ॥ चोकी खचितहे पांचपिराजा हीरा रत्न जडाय ॥ ललना ॥२ ॥ पटुली हेम जडावकी जोरी लाल बनाय ॥ललना ॥ दादुर मोर पपैया बोले थोरी थोरी बुंद सुहाय ॥ललना ॥३ ॥ गृह गृहतें सब सुंदरी चली देखन नंदलाल ॥

ललना ॥ निरख निरख मुख देत झोटिका पुष्पन वृष्टि कराय ॥ ललना ॥४ ॥ आरती करत जसोदामैया मोतिन चोक पुराय ललना ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलालकों श्रीराधा झूलावन आय ललना ॥५ ॥

□ राग काफी □ (३) ए री आज नीको बन्यों हें हिडोरो ॥ कंचन खंभ जटित हीरा डांडी चोकी बनी हें चकोरो ॥१ ॥ वाम भाग वृषभानु नँदिनी घन दामिनी को जोरो ॥ 'पुरुषोत्तम' प्रभु की छबि निरखति मोहि लीयो मन मोरो ॥२ ॥

सखी भेष के हिंडोला

□ राग बिहाग □ (१) सघन कुंजमें झूलत सखी भेषकीयें ॥ कंक भुज डार दोऊ लपटातहीयें ॥१ ॥ अधर सुधा पीवत दोऊ रंगभीने ॥ उरझत हार दाम नेह नवीने ॥२ ॥ अर्ध नेन मूंदि प्यारी पियतन हेरे ॥ पुलकित सब अंग लाज मुख फेरे ॥३ ॥ गावत आनंद भरे उभय प्रवीने ॥ रसिकदासको प्रभु रति रस लीने ॥४ ॥

□ राग बिहाग □ (२) झूलत रंग महेल रतन हिंडोरें ॥ सखी रूप धरें प्यारी प्यारो बांह जोरें ॥१ ॥ चुनरी चटक रंग दोऊनके सोहें ॥ हीराके भूषण तन अति मन मोहें ॥२ ॥ वेणुनाद दोऊ करें सप्त सुर साजें ॥ रसिकदासके प्रभु रति रस राजें ॥३ ॥

□ राग बिहाग □ (३) झूलत मणिमय कनक हिंडोरें ॥ पिय प्यारी दोउ रतिरस माने सखी रूप श्याम तन गोरें ॥१ ॥ तेसोई कुंज चहूंदिश प्रफुल्लित तेसोई पवन त्रिविध झकोरें ॥ तेसीय फुंही परत थोरी थोरी चमकत चपला अरु घन घोरें ॥२ ॥ बोलत कोकिल मोर मधुर सुर बिच मुरली कुंजत रवजोरें ॥ रति रस लंपट रसिकदास प्रभु प्यारीसों हँसि करत निहोरें ॥३ ॥

□ राग बिहाग □ (४) मणिमंदिरमें झूलत दंपति मणिन खचित हिंडोल सुहाये ॥ जगमगात मणि दीपक चहुंदिश तेसेई भूषण अंग बनाये ॥१ ॥

दोऊ एक वेष करत आलिंगन चुंबन गंड अधर रस छाये ॥ रति रस माते रसिकदास प्रभु करत सुरति मन मोद बढाये ॥२ ॥

चोकड़ा - हिंडोरे के पद

☐ राग जेतश्री ☐ (१) माई झूलें कुंवरि गोप रायनकी मध्य राधा सुन्दर सुकुमार ॥ध्रु० ॥ प्रथमही ऋतु पावस आरंभ ॥ श्रीवृषभान मँगाये खंभ ॥ काढ भवनतें रतन अमोल ॥ रचिपचि रुचिर रच्योंहे हिंडोल ॥१ ॥ एकतें एक सरस सुकुमार ॥ मानों रची विधि कुंकुम गार ॥ जगमगात नवजोबन जोत ॥ निरख नयन चकचोंधी होत ॥२ ॥ वरणवरण चूनरी सुरंग ॥ फबीलोंने सोनेसे अंग ॥ राजत मणि आभरण रमणीय ॥ जुही गुही कबरी कमनीय ॥३ ॥ गावत सुघर सरस सुरगीत ॥ दुलरावत मनमोहन मीत ॥ प्रेम विवश भई सकत न गाय ॥ उमग्योहे आनंद उर न समाय ॥४ ॥ दुर देखत गोकुलके राय ॥ शोभा निरखत मन न अघाय ॥ मुदित गदाधर नंदकिशोर ॥ लोचनभये भरेके चोर ॥५ ॥

☐ राग जेतश्री ☐ (२) दंपति फूलत सुरंग हिंडोरें ॥ गोर श्यामतन अति छबि राजत जानो घनदामिनि अनुहोरें ॥१ ॥ विद्रुम खंभ जटित नग पटुली कनकडांडी चहूओरें ॥ गोविंदप्रभुकों देख ललितादिक हरख हसत सब नवलकिशोरें ॥२ ॥

☐ राग जेतश्री ☐ (३) राधेजू देखियें वनशोभा ॥ध्रु. ॥ बरषाऋतु अति कुंजसुहाई ॥ जहांतहां कोकिलधुनिगाई ॥ शब्द परस्पर करत कलोल ॥ देखत तेरे नयन सलोल ॥१ ॥ जहां तहां प्रफुल्लित वनजूही ॥ मानों फूलें अलकें गुही ॥ पीत अरुण रंग फूले फूल ॥ मानों राजत अंगदुकूल ॥२ ॥ फूली डरीया मधुप डुलावे ॥ उत्कंठासों तुमहि बुलावे ॥ हालत लता लतापें जात ॥ हिलमिल करत तुम्हारी बात ॥३ ॥ वृन्दा विपिन हरीहरी ॥ चंद्रवधू डोलत रंगभरी ॥ मानों बये कामके बीज ॥ तुम प्यारी झूलो सावन तीज ॥४ ॥ राधा प्रति यों कहत गोपाल ॥ बसियें आज कुंज व्रजबाल ॥

सूरदास मदन मोहन श्याम ॥ केलि करो मिल मन अभिराम ॥५ ॥

□ राग जेतश्री □ (४) माईरी हों बलबल यह रमकनकी ॥ सरसहिंडोरे झूलावतलाल ॥ध्रु० ॥ रंग रंगीली अति अभिराम ॥ पहेरी सारी सूही वाम ॥ रुरकत उरमुक्ता मणि दाम ॥ झलकत ग्रीवा छबिधाम ॥१ ॥ सुंदर रंग सिंदुर श्रीमंत ॥ रचींहे संवार मनोहर कंत ॥ शीशफूल कल तिलक सुदेश ॥ मुखराजत लाजत राकेश ॥२ ॥ गुही वेनी सुठ सुकर सुहाति ॥ नानारंग फूलनकी पांति ॥ डोलतपाछे आछी भांति ॥ रूपलता मानों फूलिडुलाति ॥३ ॥ श्रुति कुंडल गंडन झलकें ॥ झूलत फुल झरत हैं अलकें ॥ पीयहीय उपजे नई ललकें ॥ रीझरीझ दोऊ अति मलकें ॥४ ॥ खंजनसे अन्जन युतनेना ॥ विशद विशाल सुखदसे एना ॥ चितवन वरखत सधा समाई ॥ देखत लालन छिन न अघाई ॥५ ॥ दामोदर हित भरे रसरंग ॥ अंग अंग छबि उठत तरंग ॥ वसो निरंतर ये मनमोर ॥ रसिक कुंवर वर युगलकिशोर ॥६ ॥

□ राग मल्हार □ (५) सुरंग हिंडोरना माई झूलत श्री गोकुलचंद ॥ द्वै खंभ कंचनके मनोहर रत्नजटित सुरंग ॥ जाकी चार डांडी सरल सुन्दर निरख लज्जित अनंग ॥ पटुली पिरोजा लाललटकन झूमका बहुरंग ॥ मरुवेतो माणिक चुनी लागी विच विच हीरा तरंग ॥१ ॥ कल्पद्रुम तरु छांह शीतल त्रिविधमंद समीर ॥ तहाँ लतालटकें भार कुसुमन परस यमुनानीर ॥ हंस मोर चकोर चातक कोकिला अलि कीर ॥ नवनेह नवलकिशोर राधे नवरंग गिरिधर धीर ॥२ ॥ ललिता विशाखा देत झोटा रीझ अंग न समात ॥ जहाँ लाडिली सुकुमार डरपत श्याम उर लपटात ॥ गौर श्यामल अंग मिल दोऊ भये एकही भात ॥ नीलपीत दुकूल राजत दामिनी दुरजात ॥३ ॥ नवकुंज कुंज झुलाय झुलवत सहचरी चहूँओर ॥ मानों कुमुदिनी कमल फूले निरख जुगल किशोर ॥ व्रजवधू तृणतोर डारें देत प्राण अकोर ॥ कृष्णदासकों व्रजवास दीजे नागर नंदकिशोर ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (६) आलीरी झूलत नंदकुमार ॥ हरिण नयनी हंसगमनी सजे सकलशृंगार ॥ध्रु० ॥ सुरंगखंभ कदंबके जहां मरुवे मेरु सुढार ॥ जाकी चारडांडी डहडही रचिपचीहे सूत्रधार ॥ कनक पटुली जटितहीरा गढीसुघर सुनार ॥ चहुं ओर तरुणी अरुण वसनी किंकिणी झनकार ॥१ ॥ जहां रसभरे उतंग दोऊउरज झलकेंहार ॥ चलत चख फेहेरात अंचल लसत लंबेवार ॥ मृगमद अगर कपूर कुंकुम वासकी उदगार ॥ मुखभरें पानन श्यामश्यामा दोऊ परम उदार ॥२ ॥ गीतगावें सुखदके रसरीतिकी चटसार ॥ गान सुर षट्ग्राम साधे ताल तान अपार ॥ रीझरीझें जलद भीजें जम्यो राग मल्हार ॥ शुक मोर कूंके कोकिला तहां सुरनपरी हटतार ॥३ ॥ मेहवरसें रसभरे जल फुहींवारंवार ॥ लाज त्यज लपटात लाले त्यजो वेदविचार ॥ छबि फवी मधुसूदना बलिहारी कोटिक मार ॥ चिरजीयो पर्वत श्यामश्यामा भक्तजन आधार ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (७) गोपीगोविंदके सुरंगहिंडोरना झूलन आईं ॥ध्रु० ॥ श्रीखंड खंभ मयार सहित जो मरुवे मेरु बनाय ॥ तहां पारजातक भ्रमत भ्रमरा डांडीजरी जराय ॥ हेमपटुली मध्यहीरा पुंजरत्नन लाय ॥ सखी विविध विचित्र रागमल्हार मंगलगाय ॥१ ॥ नंदलाल पावस काल बनव्रज बालविहरत संग ॥ बोलहिं तहां दादुर पपैया करत कोकिलरंग ॥ वरुहा नृत्यत वचन प्रमुदित अलि चकोर विहंग ॥ बलभद्रवीर गोपालझूलत राधिका अरधंग ॥२ ॥ जलभरत सरवर सघन तरुवर हरित मही चहुंदेस ॥ घनश्याम मध्य सुपेत बग जुरि इन्द्रधनुष सुदेस ॥ गगनगरजत वीज तरपत मधुर मेघ अशेष ॥ झूलेंजु विहबल श्याम श्यामा शिथिलमुकुलित केश ॥३ ॥ तारटंक तिलक तहां जटित झलकत सुदेश हीरालाल ॥ अरुवक्र चितवत वरुणि प्रहसत बने नयनविशाल ॥ करवलय मुद्रिका किंकिणी कटि चारु गजगति चाल ॥ सुख सूर मुररिपु रंगरंगी सखीसंग गोपाल ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (८) गोपीगोविंदके सुरंग हिंडोरना झूलनआंईं ॥ध्रु० ॥

गुण नित्य निरमल परमपावन प्रथम भूमिसुदेश ॥ अंगुलीन अंगुलिन पाणि मणिगण चारुचरित्र सुवेश ॥ सूत्रचहुंदिश रचितपरदा पद्मराग सुरंग ॥ धनहेत हरि हिंडोलशाला रची विविध तरंग ॥१ ॥ चहुंपास पद्म प्रचारि पंगत पारजात अनंत ॥ रसलुब्ध कोकिल करहिं कलरव मधुप सरस लसंत ॥ घनघोर जलधर धरनी उनये मुदित कूंकेंमोर ॥ तहांविमल सरोवर विविध सारस चक्रवाक चकोर ॥२ ॥ विचखंभ कंचन मेरमानो रचित रुचि निरबान ॥ मयार माणिक अति मनोहर उदित तरणि समान ॥ मानोत हीरा भ्रमत अलिगण मध्यराजत नील ॥ मरुवे मनोहर रत्न लटकत शुभ्र शोभितकील ॥३ ॥ विचलाल परमरसाल डांडी विश्वकर्मा साज ॥ पटुली पिरोजा पांचमुक्ता लाल विचविच भ्राज ॥ पदपद्म पाणिविलोक लोचन वदन इन्दु समान ॥ नवनेह नवसत साज झूलें सुघर सुन्दर जान ॥४ ॥ करवेणु वीणा तार तरुणी तूर सूर पिनाक ॥ किंकिणी कंचन शब्द नूपुर रसही रस एकताक ॥ कामिनी कोमल वचन बोलें विहंस प्रेम गोपाल ॥ दामिनी दमकें बूंद-झमकें गगन द्रवहि रसाल ॥५ ॥ पिउपिउ पपैया शब्द मधुमिल नूतन बोलेंबोल ॥ गृहगृह प्रति नवनिधि विलासन शैल घोख हिंडोल ॥ हेर हरखत असुरसुरनर निरखनारि निवास ॥ श्रीराधिका रतिरमण गिरिधर कृष्णदास विलास ॥६ ॥

□ राग मल्हार □ (९) ऐसो व्रजपतिको चित्र विचित्र हिंडोरना भावेजू ॥ कल्पद्रुमके खंभ रोपे मलयगिरिके पाट ॥ भ्रमत भ्रमरा मलयगिरिके नखशिख बहुविधि ठाट ॥ डांडी बनाई पारजातकी कनक पटुलीबान ॥ विश्वकर्मा रच्यो रचिपचि रत्ननाना आन ॥ टेक ॥ आनरत्नसु रच्यो रचिपचि अति अनूपम भांति ॥ यक्ष किन्नर देव नर मिल देखमोहे कांति ॥ ते उपमाकों लोकनाही देहुं पटतर डाट ॥ कल्पद्रुमके खंभरोपे मलयागिरिके पाट ॥१ ॥ वृन्दावन कालिंदीके तट हरित शोभित भूमि ॥ विरुद्ध लता द्रुमकुसुम मुकुलित रहे झुमकझुमि ॥ तहांलाल मुनीयां

झुंडबैठे मत्त अलिकुल गुंज ॥ हंस चकवा चकोर चातक कीर कोकिल पुंज ॥ टेक ॥ कुंज कुंज तहांमोर नृत्यत करत कोकिलनाद ॥ हरीयल परेवा भृंगराजें कपोत द्विजकुलवाद ॥ बोलेंगहि मधुर वानी गगन गरजे धूमि ॥ वृंदावन कालिंदीके तट हरित शोभित भूमि ॥२ ॥ झूलेंतहां व्रजसुन्दरी रतिरूप समबहुरंग ॥ परममंगल गीत हरिगुण गावहीं सबसंग ॥ तहां रासहास विलास क्रीडत हरखसिंधु कलोल ॥ मचकें परस्पर कृष्ण सन्मुख अलक कुण्डललोल ॥ टेक ॥ लोल डोल विलोल कुंडल ललित फरहरचीर ॥ राजत विचित्र सुहावने मानों ध्वजा मन्मथ कीर ॥ वलय कंकण रसन मुक्ता सकल भूषणअंग ॥ झूलें तहां व्रजसुन्दरी रतिरूप समबहुरंग ॥३ ॥ स्यामसुंदर कमल लोचन पीतपट वनमाल ॥ मोरपक्ष किरीट कुण्डल तिलक शशिसम भाल ॥ अंगअंग कुंकुम खोरसोहे गुंजाहार बनाय ॥ कोटिकाम लावण्य मूरत बांधे तिहिंमनधाय ॥ टेक ॥ धायतिहिं मन बंध्यो रतिपति रूपसागरमें पर्यो ॥ मगनभयो सो फिर न आयो प्रेम आनंदमें भर्यो ॥ भक्तहित अवतार लीनो संगवल गोपाल ॥ सूरके प्रभु श्याम सुन्दर पीतपट बनमाल ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१०) आलीरी झूलें श्रीगोकुलनाथ ॥ द्वयखंभ अतिबहु मोल मीनां डांडीकाच सुहात ॥ पटलीरंग अति जगमगे पूतरी सोहेसात ॥ एकपंखादोय मोरछल लालसोहे हात ॥ दोय मृदंग बजाय गावत प्यारी देखिसिहात ॥१ ॥ द्वयमोर आगें करि कलोले मोति चुगचुग जात ॥ कोयल और पपैया बोलत मधुरस्वर सुहात ॥ तामेंदोय संगश्याम श्यामा ऊंचे स्वरमिलगात ॥ चंद्रावली मृदंग सुर मिलवत प्यारी देख सिहात ॥२ ॥ ललिता विशाखा झूलवत ठाडी चमरसोहे हाथ ॥ फूंदना बहुमोल लटके फूल पचरंग जात ॥ चिरजीयो युगयुग यह जोरी चरणधरो मनमाथ ॥ दास वल्लभ व्रजमें हिंडोरा निरख बलबल जात ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (११) आलीरी झूलत श्यामाश्याम ॥धु० ॥ द्वय खंभ

मर्कत मणिमनोहर कामकुंद चढाय ।। हरित चूनी जडित नग बोहोलाल हीरालाय ।। बोहोत मुक्ता बोहोत विद्रुम ललित लटकेंमोर ।। बहुरंग रेसम वरही वरुहा होत राग झकोर ।।१ ।। तहां श्यामश्यामा संग झूलें सखी देत झूलाय ।। सबे सरस शृंगारकीने रूप न वरन्यो जाय ।। नीलसारी लाललहेंगा पीत अंगीया अंग ।। रोमावली मानों होत यमुना त्रिवलि तरल तरंग ।।२ ।। बहुत युवती युथ ठाडे कहूंठाडे ग्वाल ।। विहंस मधुरे गीत गावें करत बहुविध ख्याल ।। कहूं दादुर कहूं चातक कहूं बोलत मोर ।। चहुं ओर चिते चकोर रहिगये देख इनकी ओर ।।३ ।। दशनद्युति अनारकीसी हंसत जब मुसिकाय ।। दमकदामिनी निरख लज्जित बहोरगई छिपाय ।। कंज खंजन मीन मानों उडत नाहिनभोर ।। बिंबके ढिंग कीरबैठ्यो गहन पावेठोर ।।४ ।। लखअलक कह्यो न जाय सखीरी अंक देखियत चार ।। भ्रोंह देख भ्रमरा गये बन कटिगयो केहरि हार ।। चाल देख मराल लज्जित गये सरत्यजि गेह ।। जानिकें अभिमान गजशिर अजहू डारत खेह ।।५ ।। देख सखीरी उरज कंचन कलश धरे बनाय ।। नहींहोंय श्रीफल सुंदर नही कमलकली सुहाय ।। बीच मुक्ता माल मानों सुरसरी धसिधाय ।। वार चकवा पार चकई दिनहुं मिलत न आय ।।६ ।। सबे राग मल्हार गावें सरस गौडमल्हार ।। सूहा सारंग सरसटोडी भैरवी केदार ।। मालवो श्रीराग गोरी होत आसावरी राग ।। कान्हरो हिंडोल कौतुक तान बहुविध लाग ।।७ ।। एक अचरज देख सखीरी राहु शशि इकठोर ।। उडत अंचल लपट बेनी रपटझपटे मोर ।। कनक जटित जरायबेंदी कवि जो उपमा गाय ।। सूरशशि यह राहु व्रजमें प्रकट तीन्यो आय ।।८ ।।

□ राग मल्हार □ (१२) गोपी गोविंद गुण विमल परम हित गावें गीत ।।ध्रु० ।। प्रथम पावस मास आगम गगन घन गंभीर ।। लसे दामिनि दिशा पूरव अति प्रचंड समीर ।। तहां हंस चातक वन कुलाहल वचन अद्भुत बोल ।। गोपाल बाल निकुंज विहरत सखासंग कलोल ।।१ ।। तहां

बकें दादुर मुग्ध कोकिल मूढ पावसधीर ॥ तहां नदी क्षुद्र अपार उमडीं मिलत वसुधानीर ॥ हरियारेतृण महि चंद वधुगण अति मनोहर लाग ॥ बलभद्रके संग धेनुचारत नंदके अनुराग ॥२ ॥ तहां कंदरा गिरिचढे हेला करत बालविनोद ॥ तहां जाय खोजत वृक्ष कोटर मक्षिका मधुमोद ॥ कोऊबोले बानी पंछी कोऊ गावे गीत ॥ कोऊ न जानें गोपलीला ब्रह्मगति विपरीत ॥३ ॥ तहां चक्रवाक चकोर चातक हंस सारस मोर ॥ तहां सूआ सारस सरसभृंगी करत चहूंदिश रोर ॥ वाटिक सरोवर मध्यनलिनी मधुप करें मधुपान ॥ नंद गोकुल कृष्ण पालें अमरपति अभिमान ॥४ ॥ तहां रच्यो हिंडोरो धवलबानी काशर्मारीखंभ ॥ हीरा पिरोजा पांतिमुक्ता ओर अति आरंभ ॥ बनी चित्र विचित्र शोभा तीर धनुसंधान ॥ जहां रामरावण युद्ध क्रीडा देखियें अनुमान ॥५ ॥ जहां बहुत गोरस मांटमथना चलत कंकणहीर ॥ तहां मल्लिका सिरगूंथिवेनी श्रवण शोभित बीर ॥ तहां कनक वरण सुभाय सुन्दरि अमी वचनरसाल ॥ प्रेममुदित मुरारि चितधरि गावें राग मल्हार ॥६ ॥ तहां होत मंगलघोख घरघर जहां रमा अनंत ॥ वैकुंठनाथ दयाल श्रीपति सोहें श्रीभगवंत ॥ देवमुनि सब हँसत यदुवर प्रणत पूरणकाम ॥ वेदवानी वदत निशदिन भक्तजन विश्राम ॥७ ॥ तहां जन्मकरम अशेष महिमा शेष शारदभाख ॥ देवकीनंदन नाम पावन त्रिविध दुखतें राख ॥ चरण अंबुज दीप नखमणि चिंतत अति अघ नाश ॥ मनकर्म वचन सुभाय परमानंददास निवास ॥८ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) सुरंग हिंडोरना माई श्रीवृषभानके धाम ॥ व्रजनारि शोभा देख वारत कोटि कोटिक काम ॥ध्रु० ॥ द्वै खंभ कंचन कलितनग जगमगत डांडीचार ॥ पटुली सुचित्र विचित्र राजत कनक कलश मयार ॥ मरुवे मनोहर मोर लटकत जटित अति सुखसार ॥ झूलें कुंवरि वृषभानकी श्रीराधाजु राजकुमार ॥१ ॥ चहुं ओर नवल किशोर सजनी सुखद सब व्रजबाल ॥ शृंगार खटदस वयस सोल्हे गावत तान रसाल ॥ बीन मृदंग

मल्हार धुनि सुन नवकुंवर नंदलाल ॥ नव सखी भेख बनायकें आये श्रीमदनगोपाल ॥२ ॥ नव वधू छबि निरख अद्‌भुत निकट बोली वाम ॥ किहिं गोपकेतें गमन कुंवरी रमणीय काकी भाम ॥ व्रजवास कहां नगर वन कहां कहियें गाम ॥ अबलों ने देखी में विसेखी कहो कृपाकर नाम ॥३ ॥ मृदुमंद मुसक सुचंदवदनी नववधू बोली बेन ॥ श्रीनंदगामसो ठामतिहिं वसतहों सुखचेन ॥ सुन भामिनी अभिलाष उपजी झुलीयें तुमऐन ॥ करप्रेम प्रीति प्रतीत दोऊजन सोईयें एकसेंन ॥४ ॥ यह सुनत श्रीललिता विशाखा कही श्रवण समुझाय ॥ व्रजभाम तवहित श्यामसुंदर हें कुंवर नंदराय ॥ तेरे दरस के काज भामिनी सखी भेखबनाय ॥ सनमान देकें प्राण प्यारी पीयहिं संग झुलाय ॥५ ॥ सुनसुन वचन रचना रचित नववधू लई बुलाय ॥ मिल भेट हंस हिंडोल झूलें बोल मधुरे गाय ॥ व्रजवधू झोटा देत सबमिल रीझ लेत बलाय ॥ सुखदेत रघुनंदन कुंवर रसलेतहें जु अघाय ॥६ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) रसिक हिंडोरना हो झूलत श्रीनंदलाल। श्रीवल्लभ सिरताज मेरे गाऊं लीला रसाल ॥ध्रुव ॥ श्रीविट्ठल चरन सरोज वंदु धरि मन हुल्लास। श्री गिरिधर गोविन्द जू श्री बालकृष्ण सुवास। श्रीवल्लभ श्रीरघुनाथ जदुपति स्याम सुन्दर सुजान। श्रीवृन्दा बिपिन हिंडोरे राजत देत रतिसुख दान ॥१ ॥ मनिमय जु खंभ महा विराजत चार डांडी गोल। रतन जटित जु पटुली सोहे बैठे जुगलकिसोर। एक झुलावत एक बजावत ताल जंत्र मृदंग। एक नाचत एक शब्द उघटित गान कर सुधंग ॥२ ॥ द्रुमगननि लता अनेक फूले चंपक जाई गुलाब। केतकी करनी रायबेली पोहोप भार अठार। श्री यमुना निकट सोहावने भए फूल कमल अपार। धीर समीर पराग ले ले भंवर करत गुंजार ॥३ ॥ अनेक पंछी करे कुतुहल सारस हंस चकोर ॥ बरटाक पीक चातक परेवा नाचत मोरी मोर ॥ गरज घन दामिनि दमकत ईंद्रधनु चहुं ओर। बूंद सोहावनी

स्याम स्यामा निरखि विविध मुख ओर ॥४ ॥ श्री स्यामा झोंटा देत जबही स्यामा बोहोत डराय। विरम विरम सुवचन कह कह लाल उर लपटाय। निरख ललितादिक सब मिल आनंद उर हि अपार। रसिकवर गिरिवरधरन पर 'माधोजन' बलिहार ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) नवल हिंडोरनां हों साज्यो नवल किसोर ॥ जहाँ भूमि हरित सुदेस देखियतु कल्पद्रुम के पुंज ॥ तहाँ पारिजात मंदार प्रफुलित धुनित अलि कुल गुंज ॥ हंस चात्रक मोर कुंजत कोकिला कल कीर ॥ चकृवाक चकोर बोलत तरनि तनया तीर ॥१ ॥ मल्लिका मालती विकसति विविध खंभ कदंब ॥ नूत ओर प्रवाल चंपक बकुल नीबू जंब उनई घटा घन घोर चहूँ दिस ईंद्र धनुष अकास् ॥ फूली भार अगर सोहत विविध सौरभ वास ॥२ ॥ द्वे खंम मरकत मनि बिराजत रतन पटुली चार ॥ बैठें जुगल किसोर सुंदर परम रसिक उदार ॥ सुभग सरस जडाय डांडी मयार मरुवे सार ॥ उतकंठित भुजै दे स्याम के बैठीं राधिका सुकुमार ॥३ ॥ बैनु बीना ताल मुरली सरस घोर मृदंग ॥ महुवरि किन्नरी मुरज भेरी बजत सरस उपंग ॥ रस सरोवर मांझ फूले कुसुम कुमुद कल्हार ॥ तान मान बंधान गावें जम्यो राग मलार ॥४ ॥ कुंजे कुंज झुलाय झूलवत सहेचरी सब संग चंद्रावली, ललिता, विसाखा, सब सखीयन के वृंद ॥ देत झोटा परम सुंदर करत हास विलास ॥ निरषि दंपति केलि पर बलिहरि 'कुंभनदास' ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) चलो सखी झूलन जैये हो आली री स्यामा जू के रुचिर हिंडोरनां ॥ फटकि भीते चारु चहूँ दिस मंजु मनि में पौरि ॥ गच्च काच लखि मानौं नाचैं सखी जन पांच सरस पचोरें ॥ तोरन बितांन पताक चामर धुज सुफल मनुहार ॥ प्रति छाह कवच विसेष दीपति लगत अति सुख सार ॥१ ॥ मदन जाय कें कुसुम सों रचि खंभ सरस बिसाल ॥ पाटीर पाट विचित्र भँवरा ललित विलना लाल ॥ डांडी कनक कुँमकुम

तिलक रेखा बनि सुमनसिज भाल ॥ पटुकी पदक करति हृदे जन कल द्योत कोमल माल ॥२ ॥ उनए सघन घन घोर मृदु झर सुखद सावन लाग बग पाँति घन जानों दमकि दामिनी हरित भूमि विभाग ॥ दादुर मुदित मिलि सरिता सर में उमगि भई अनुराग ॥ पिक मोर मधुप चकोर चात्रक बोले उपवन बाग ॥३ ॥ झूलें झुलावें ओसरें गावें सुघर गौड मल्हार ॥ मंजीर नूपुर बलय धुनि मानौं काम करतल ताल ॥ अति पचे स्रमकन मुखन पर बिथुरे विलुलित हार ॥ तम तडित उडगन अरुन बिधि मानौं नव सज सिंगारि सिंगारि ॥ नव रूप जौबन फूल फूलन झूलन चलि हे झुंडन झारि ॥ हिंडोर रसाल विलोकि सब अंचर पसारि पसारि ॥ स्यांम हि तेज असीस सब मिलि सुख समाज विचारि ॥५ ॥ हिये हरषित निरषि असुवन वरषि छबि तृन तोरें ॥६ ॥ भई रस में मगन सुंदरी निरखि रूप जुगल किसोरि ॥ सब हेत अविचल राज नित्य 'कल्यान' मंगल भूरि ॥ चिरजीयो स्यामा स्याम दोऊ 'सूर' जीवनि मूरि ॥७ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) नवल हिंडोरना हो झूलत मदन गुपाल ॥ नव कुंज सदन विलास सोभित अति ही परम रसाल ॥ध्रु० ॥ जुगल खंभ सुरंग रोपे विविधि चित्र सबारि ॥ अति अनूप सुहाय ता बिच सरस डांडी चारि ॥ सिखर कलस धुजा पताका निरखे सरबसु वारि ॥ झूमिका नव रंग पटकन लाल लटकन हारि ॥१ ॥ व्रज वधू जुरि आंई सब मिलि विविधि भेख बनाई ॥ सुभग श्री वृषभानुजा सब सखीन मधि सोहाई ॥ नैंन सेंन विलोकि पीय के निकट बैठी आई ॥ मुदित मन मिलि सहचरी हिंडोरें देत झूलाई ॥२ ॥ तरनि तनया तीर सुंदर विविध बहत समीर ॥ लता कुसुमन भार विलुलित परसे जमुना नीर ॥ मोर कोकिल हंस चात्रक मधुर बोलत कीर ॥ मंद बूंदन मेह बरसे रुचत सुभग सरीर ॥३ ॥ नील बसन सुअंग गोरे पीत तन घनस्यांम ॥ अरसपरस गवाई दियें भुज बिराजत सुख धाम ॥ देत झोटा सहचरी ललिता विसाखा नाम ॥ ओर सखी चहूँ ओर

ठाढी गाय मुख गुन ग्राम ॥४ ॥ जंत्र झांझ पखावज मुरली मधुर बाजत तार॥ कोकीला कुल लाज ही सुन जुवती राग मल्हार॥ 'रसिक' गिरिधरलाल की छबि कहत न लहें पार॥ निरखि 'सूरदास' तन मन धन कीयो बलिहार ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) व्रज में हिंडोरनां हो मोहन कुंवर कन्हांई॥ मलयागर के खंभ दोऊ सुरंग साजें आई॥ डांडी रतन जटित मयार मरुवा कनक कील लगाई॥ रचित परम विचित्र पटुली लाल हीरा लांई॥ मोतिन के झूमिका लटकें देखत सुख नंदराई ॥१ ॥ चंपो जु मरुवो केवरो जहाँ बेलि पांडर जाय॥ जुही चंबेली सेवती हो जहाँ माधो आय॥ परस परिमल सीत मंद सुगंध पवन बहाय॥ भवरा जू भवरी जूथ संगी किलकि उत संग लाय ॥२ ॥ जहाँ सघन घन बन मधि बरसें दामिनी दमकाय॥ देखिबे कों देवता सब रहें अंबर छाय॥ पहरि कटि तट नील पट दोउ हँसत झूलें आय॥ रच्यो हिंडोरो पवन में उडि गगन में ठहराय ॥३ ॥ जहाँ गीत नाद अनेक बाजें सरस कोकिल मोर॥ विविध बसन बनाय भूखन सहचरी चहूँ ओर॥ हरखि हियरें रमकि झूलें मधि जुगल किसोर॥ प्रान पीय की निरखि सोभा 'सूर' प्रभु चित चोर ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) मोहन प्यारे के सुरंग हिंडोरनां झूलन जैये॥ व्रज रसिक मोहन सुंदरी सब कहत हँसि हँसि बेंन॥ पावस काल गुपाल गोकुल बसत हें सुख चेंन॥ सखी सकल सोहागनी ते जपत दे दे सेंन ॥टेक॥ सावन मांस हिंडोरनां पीय हम ही देहु गढाय॥ झूल ही गोकुल ग्वालनी गिरिधरन गोकुलराय ॥१ ॥ बोल विश्वकर्मा लयो तब गढन लाग्यो झेल॥ चंदन खंभ सुदेस भँवरा बन्यों मरुवन मेल॥ पटुली मयार सवार कें हो डांडी अंगर उकेल॥ टेक॥ गाय गुन गुपाल कहि कहि चाय चहूँ दिस होत॥ स्याम स्यामा समीप झूलें देत पहलें ओप ॥२ ॥ रमक रहसि हिंडोरना पीय पीत पट फहरात॥ राधिका अंचल सीस तें गहि

रही अंचल दांत ॥ तहाँ लटक भुज की ओटि भामिनी निरखि मुरि मुसिकात ॥टेक ॥ तेसेंई दामिनी लसत घन में तेसेंई बरसत मेह ॥ तेसीय राधा चूनरी भली भीजन लागी देह ॥३ ॥ नील कंचुकी पीत मंडन परम स्याम सनेह ॥ लटक झटकन देत झोटा तेसेंई गरजत मेह ॥ तेसेंई कंपत दामिनी पीय संग नवल सनेह ॥ टेक ॥ वद हि व्रजपति रायजू सों किलकि कहत कुमार 'व्यासदास' गुपाल प्यारी प्रीत परत निहार ॥४ ॥

□ राग सोरठ □ (२०) गोकुलरायकी पौरी रच्योहे हिंडोरना ॥ कंचन खंभ बनाये चितके चोरना ॥ टेक ॥ चितचोरना विचखंभ बानिक रत्नडांडी सोहनी ॥ चौकी कनिककी तिहिंबनी सखी बनी मनकी मोहनी ॥ आई सकल व्रजवधू झूलन सबे एक बनायकी ॥ बलनन्द बन्यो सुन्यो हिंडोरो पौरि गोकुलरायकी ॥१ ॥ गावत चढीहें हिंडोरें सारी सूही तन सोहें ॥ डहडहे मुखरंग भीने ॥ शरद को शशि कोहे ॥ टेक ॥ कोहे शरद शशि मुखरहे लसि चपल नयना सोहने ॥ चलत कोनें कछु लजोनें मेनमनके मोहने ॥ गावत सरस स्वरगीत जब उघरे सघनघिर आवहीं ॥ बलनन्द अति आनन्द बाढ्यो चढि हिंडोरें गावहीं ॥२ ॥ आये तहां नन्दलाला ॥ पेहेरें फूलनमाला ॥ चढिगये रंगीले हिंडोरें ॥ कहारी कहों तिहिंकाला ॥ टेक ॥ तिहिंकाल व्रजपुर बाल मदन गोपालके ढिग यों बनी ॥ मानों श्याम तमालके ढिग कनिक वेली छबि बनी ॥ देखत बने कहत न बने भये दृगन मन भाये ॥ बलनंद अति आनंदसों नंदलाल जहां चलआये ॥३ ॥ आईं बडरी झूलन झलकें चन्दा मोरके ॥ खसित सिरनतें फूल दिये अति झकझोरके ॥ टेक ॥ झकझोर झपटें सुगंध लपटें उठत कछु घन घोरसे ॥ फरकें जु अंचल मानों चंचल दामिनी के छोरसे ॥ वारति यशोमति भूषणन अवलोक सुत शोभा भली ॥ बलनन्द अति आनन्द बाढ्यो झूलि जब बडरी चली ॥४ ॥

□ राग सोरठ □ (२१) सुरंग हिंडोरना रंगभवन नृप नंदरायके ॥

विश्वकर्मा रच्यो हरिहेत विविध बनायके ॥ अनूपम कनकके द्वै खंभ परम सुहावने ॥ मरुवे जगमगे नग जटित अति मन भावने ॥ टेक ॥ मनभावने नग जटित मरुवे विविध मुक्तामणि खचे ॥ डांडी विशाल रसाल अद्‌भुत झूमका पचरंग सचे ॥ पटुली परम घनसारकी डोरी नरम निरमोलना ॥ ऋषीकेशके प्रभु नृपति नंदकें रंगभवन हिंडोरना ॥१ ॥ झूलत स्यामा स्याम अति अभिराम मदन गोपाला ॥ रसिक झूलावहीं हो कुंजमिल व्रजबाला ॥ मधुर स्वर वाजहींहों ताल मृदंग उपंगा ॥ सब मिल गावहीं हो तान सरस सुधंगा ॥ टेक ॥ सरसतान सुधंग गावें प्रेम विव्हल सब भईं ॥ कोकिला सुर मधुरबानी अंगअंग छबि रमिरईं ॥ नील पीत दुकूल राजत दामिनी घनसाला ॥ ऋषीकेशके प्रभु रहसिझुलें स्यामा मदन गोपाला ॥२ ॥ सजल घनघोरहीं स्यामघटा सुहावनी ॥ रिमझिम वरषहीं झरलाय दमकत दामिनी ॥ दादुरसोर मधुप चकोर वनवन बोलहीं ॥ चातकमोर पवन झकोर हंस करत कलोलहीं ॥ टेक ॥ करत हंस कलोल निशदिन रटत सारस रस भरे ॥ सघनकुंज सरोज प्रफुल्लित तरुनसे तरुवरखरे ॥ तरणि तनया तीर परसत लता अति मन भावनी ॥ ऋषीकेशके प्रभु सजलघनमें स्यामघटा सुहावनी ॥३ ॥ कमल नयन की रसकेलि व्रज जगमग रह्यो ॥ ठोरहीठोर विपिन विलास यातें रस छयो ॥ यह सुखकारनें दिनरेंन मुनिमन तरसहीं ॥ शेष महेशसे धरें ध्यान सपने न दरसहीं ॥ टेक ॥ सपने न शेष महेश दरसे सदां सुरपति सोचहीं ॥ अरुण वरुन कुबेर अज ललचाय जियमें लोचहीं ॥ व्रजवासिनको सुकृत यह फल जात नहि मोपें कह्यो ॥ ऋषीकेशके प्रभु कमल नयन की केलि व्रज जगमग रह्यो ॥४ ॥

□ राग सोरठ □ (२२) रसिक हिंडोरना माई झूलत श्रीमदनगोपाल ॥ध्रुव ॥ हरि हिंडोरही रच्यो कुंजन यमुनाकूल ॥ तहां वेल चंपो मोरियो केवरो अरु बहु फूल ॥ निरख शोभा थकि रह्यो मिटगयो मनको शूल ॥

तुवलाज खुभी चित्रचित्रित नयन दीयेहें दुकूल ।।१ ।। रत्नजटितके खंभ दोऊ लगे प्रवालही लाल ।। कंचनको मरुवो बन्यो पटुलीजु परम रसाल ।। तन कसूंभी चीरपहरें आईं सब व्रजबाल ।। अंगअंग सज नवसत भामिनी दिये तिलक सुभाल ।।२ ।। गोपीजु हरिसंग झूलहीं आनन्द सुखके बोल ।। वक्र भ्रोंह लगाये वेसर मुखही भरें तंबोल ।। श्याम सुन्दर निकस ठाडे अपने अपने अपने टोल ।। गावत राग मल्हार दोऊ मिल देत हिंडोल झकोल ।।३ ।। धन्य धन्य गोपी सुफल जीवन करत हरि संग केलि ।। कृष्ण कृष्ण कहि कहि नाम बोलत देतहें रंगरेलि ।। चिरजीयो सखी मदनमोहन फले यशोदावेलि ।। परमानन्द नन्दनन्दन चरण निज चितमेलि ।।४ ।।

□ राग सोरठ □ (२३) बन्यों हिंडोरेनां हो राजत परम सुदेस ।। अजर जाबूं नद खंभ सोभित विद्रुम रचि हें मयारि ।। मानौं रवि सुत हि दिखावत भुव भुज जुगल पसारि ।। लाल मनि बिलनां बने अति मिली मरकत डारि ।। उतरि रवि रथ तें चली मानौं जमुन कूंवि-विधार ।। टेक ।। ए विविधार धारा धसी हद कहू स्फाटिक पटुली संग ।। तिहि बीच तिरछी हे मिली मानौं गगन तें आंई गंग ।।१ ।। गलि कलित मनि मंजीर इत उत चरन पंकज रंग ।। हँसि मिलन प्रतिबिंब सोभित सरसुती अनुरंग ।। मानौं मुदित मराल कंकन किंकिनि झनकार ।। पीय संग सोभित लाडिली वृषभानु गोप कुमार ।। टेक ।। कुंवरि श्रीवृषभानु सोभित स्याम सुंदर संग ।। मानौं नूतन जलद में अलि तडित तरल तरंग ।।२ ।। मनिमय महल आंगन बन्यों तहाँ रच्यों नवल हिंडोर ।। जहाँ कोटि मनमथ मोद मोहन नवल नवल किसोर ।। इत उत तें गति लसत जिन कें झलके लोचन कोर ।। वदन विधु के लुब्ध मानौं उडि उडि मिलत चकोर ।। टेक ।। ए उडि मिलत चकोर मानौं चलित ललित सुबेंन ।। मानौं अंबुज बास के संग लगि मधुकर सेंन ।।३ ।। अनिमेष दृग कीए निरखति हरख भरी व्रज नारि ।। मानौं सुरति सिंगार कों

बिधि रची कंचन वारि ॥ अरध उरध बिचारि इत उत झलकें मोतिन माल ॥ समै सावन जानि कें बग पाँति उडि हे रसाल ॥ टेक ॥ ए उडि लाल अंचल चूनरी उत पीत पट फहरानि 'सूर' सम उपमा सखी मोपें न जात वखानि ॥४ ॥

ठकुरानी तीज (श्रावण सुद ३) हिंडोरा के पद

□ राग मल्हार □ (१) आलीरी सांवन तीज सुहाग ॥ देखवन घन हरित वेली होतहे अनुराग ॥ध्रु ॥ तहां लाडिली वृषभान तनया सजे सकल शृंगार ॥ सुभग तन पचरंग चूनरि केसरआड लिलार ॥ तेसीये षटदस वरसकी सखी बनीहें एकसार ॥ चलीहें वरहिंडोल झूलन रायके दरबार ॥१ ॥ कुरंग नयनी चंद्रवदनी चलत मदगज चाल ॥ विहंस मधुरे बोलबोलत करत बहुविध ख्याल ॥ गावत सांवन गीत प्रमुदित सुनत श्रवण रसाल ॥ चपल चतुर दृगंचलनसों मोहिये नंदलाल ॥२ ॥ झूलत नवल किशोर दोऊ बनी अद्‌भुत जोर ॥ देतझोटा प्रेमरसभर सहचरी चहुंओर ॥ लालगिरिधर रसभरे रसकेलि सिंधु झकोर ॥ कमल लोचन विहंसचितवत दासजनकीओर ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) नईऋतु सावनतीज सुहाई हिंडोरें व झूलन आंई ॥ कुंजकुंजतें निकसि हरीभूमि अरून वरण मानों इन्द्रवधूसी श्यामाजू रहसिबुलाई ॥१ ॥ अपने अपने मेलसबे मिल गावत राग मल्हार रुचिर मनभाई ॥ हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजविहारी आपुन रीझ रिझाई ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (३) देख सखी तीज महातम आयो ॥ स्यामास्याम परस्पर झूलत निरख परम सुख पायो ॥१ ॥ दिशदिश घोरघोर घन गरजत मंदमंद वरखायो ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल शब्द सुनायो ॥२ ॥ ताल मृदंग किन्नरी दुंदुभी प्रेम निसान बजायो ॥ सूरदास प्रभु युगल विराजत अखिल भुवन यशछायो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) आज सुद सांवन तीजसुहाई ॥ करसिंगार अपने

गृहगृहतें नंदभवन जुरिआईं ॥१॥ युवती यूथ मध्यराजत राधा अवलोकनि सुखदाई ॥ केसरखोर विराजत भ्रुवपर मृगमद बेंदीलाई ॥२॥ आभूषण विधविधके शोभित अंगअंग झलकाई ॥ गोरेतन पहेरें लालचुँनरि यह छबिकी अधिकाई ॥३॥ व्रजरानी आदरदे बोली खेलो झूलो माई ॥ मेरो कुंवर कन्हैया झूले तुम संग झुलोजाई ॥४॥ बेठीजाय हिंडोरें राधा गावत पिय मनभाई ॥ रसिकराय प्यारी संग झूलत पुलकि प्रेम लपटाई ॥५॥

□ राग मल्हार □ (५) हिंडोरेव झूलन आंई नई ऋतु सावन तीज सुहाई ॥ कुंजकुंजतें निकसीं व्रजसुन्दरी अरुण बरनमानो इन्द्रवधूसी श्यामाजु हरखि बुलाई ॥१॥ अपने अपने मेल मतोकरि गावत राग मल्हारजु भाई ॥ हरिदासके स्वामी श्यामा कुन्जविहारी आपुन रीझ रिझाई ॥२॥

□ राग मल्हार □ (६) सांवन की तीज हिंडोरें झूलें प्यारी सुनकें मनमोहन आयेहें झूलन ॥ सखी भेखकियें श्याम आये प्राण प्यारी पास अंगअंग भूषण बेंनी भरीफूलन ॥१॥ नेनन काजर सोहे देखत त्रिभुवन मोहे तापर बेसरके मुक्ताकी झूलन ॥ सूरदास प्रभु नारि रूप कियें प्यारी संग झूलत यमुनाके कूलन ॥२॥

□ राग मल्हार □ (७) सावनसुदि तृतीया उजियारी ॥ बैठे हिंडोरे रसिक पियप्यारी ॥ हिंडोरो नंदभवन में सोहे ॥ देखत सुरनर मुनिमन मोहे ॥ टेक ॥ मोहे सुरनर मुनिनके मन गोपीजन मिलगावहीं ॥ बार्जित्र नानाभांत बाजे सन्मुख हरख झूलावहीं ॥ उपंगचंग मृदंग मुरली झांज झालर बाजहीं ॥ श्रीमंडल रनकार राजें सप्तस्वर अति गाजहीं ॥ तानमान बंधान सुन्दर गोकुलपति मनभावहीं ॥ कहत कृष्णदास गिरिधर राधामोहन गावहीं ॥१॥ आनन्द उर न समाईं ॥ शोभाबाढी वरणि न जाई ॥ गोपी झूलावन आंई ॥ तिनमें श्रीराधेजु परमसुहांई ॥ सुहाईं राधे परमसुन्दर प्राणपति मनभावहीं ॥ हिंडोरें झुलत रंगभरि दोऊ कोटिकाम

लजावहीं ॥ कनकके द्वे खंभराजत डांडीचार हीराजरी ॥ पटुली पिरोजा पांतमोती विश्वकर्माने घरी ॥ पवनमंद सुगंध शीतल बहत यमुनाकूलहीं ॥ कहत कृष्णदास गिरिधर राधामोहन झूलहीं ॥२ ॥ गिरिधरनलाल झूलत संग श्यामा ॥ गोपी मुदित लताद्रुम छामा ॥ पवनसुगंध घटाघन गाजे ॥ थोरीथोरी बूंदन उडुगन राजे ॥ टेक ॥ राजत उडुगण बूंदथोरी कोकिला कुहुकुहू करें ॥ चातक दादुर मोर पपैया शब्दही सब मनहरें ॥ सकल पवन सुहावनो ओर पंछी नाना भावहीं ॥ कहत कृष्णदास सब मिल गोपीजन तहां गावहीं ॥३ ॥ कुंजभवनमें रच्यो हिंडोरो ॥ श्यामाश्याम विराजत जोरो ॥ कंचनमणि द्वै खंभ बनाये ॥ डांडी चार रत्नबहुलाये ॥ लाये रत्न हिंडोरे सुन्दर मरकतमणि स्फटिक बहु ॥ चहूंओर मुक्तालरनलट बनभांत कहा युक्ति कहुं ॥ कुसुम मंद सुगंधमारूत दुहुंओर जाहीजुही ॥ केतकी चंपो मोगरो वीच कुंद कुसुमसुहातही ॥ सेवती गुलाल गुलाब बहु मकरंद नाना भांतही ॥ कहत कृष्णदास गिरिधर झुलावत गोपीनाथही ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (८) सावन की तीज हिंडोरे झूलै राधा प्यारी सुनिकै मनमोहन आये हें झूलनि। सखी भेष कियें श्याम आये प्रान प्यारी पास अंग-अंग भूषन बैनी भरी फूलनि ॥१ ॥ नैननि काजर सोहे देखत त्रिभुवन मोहे तापर बैसर के मुक्ता की झूलनि। 'सूरदास' प्रभु नारी रूप किये प्यारी संग झूलत जमुना के कूलनि ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (९) सरस हिंडोरना हो रच्यो हे नंद दुवार ॥ कनक खंभ जराय डांडी लागें रतन अपार ॥ हीरा पन्ना मरुवा मनोहर कलस राजत चार ॥ पटुलीन अंगुरीन हेम चित्रित दई कील संवार ॥ झूलें श्री राधा रवन वन दोऊ बाढ्यो है रंग अपार ॥१ ॥ सावन सुहाई तीज आंई कीये विविध सिंगार ॥ तब उवटि नव सत साज भामिनी पहिरि मोतिन हार ॥ ललिता बिसाखा बीरी खवावत वारि पीवत वार ॥ सुख सिंधु सोभा कहि न आवें रही श्याम निहार ॥२ ॥ नर पुर, अमर पुर, नाग पुर, कोतिक मिली बर

नार ।। जे जे सब्द धुनि होत चहूँदिस कुसुम अंजुली ढार ।। गावें श्री स्यामा स्याम गन गुन रही स्याम निहार ।। सिव विरंचि जिति तित तें रहें धरि ध्यान बिचार ।।३ ।। बिनु कृपा करुनामय सुंदरी नांहिन पावत पार ।। भजन रसिक अनन्य कारन धर्यो व्रज अवतार ।। चिरजीयो श्री गुपाल दंपति करो नित्य विहार ।। 'विष्णुदास' विलास नव नवल लाल गिरिवरधार ।।४ ।।

□ राग मल्हार □ (१०) सावन तीज सुहाई दुहुन के मन भाई प्रथम समागम आनंद घुमडायो ।। घन दामिनी सी देह बरसन लाग्यो मेह दोऊ रूप रास सबही को जिय जायो ।।२ ।। वे हरख हरख कें झूलाये जब नंदलाल डरपन लागे ओर अति सचु पायो ।। 'कहि भगवान हित राम राय प्रभु' प्यारी झूलि रति मानी सुख सिंधु बढायो ।।३ ।।

□ राग मल्हार □ (११) झूलत नवल किसोर दोऊ बनी अद्भुत जोरि ।। देति झोटा प्रेम रस भरि सहचरी चहूँ ओर ।। लाल गिरिधर रस भरें रसकेलि सिंधु झकोर ।। कमल लोचन विहँसि चितवत दास जनकी ओर ।।३ ।।

□ राग मल्हार □ (१२) सावन की तीज हिंडोरे झुलें राधा प्यारी सुनि के मनमोहन देखवे कों आये झुलन ।। सखी भेष कीये स्याम आये प्रान प्यारी धाम अंग अंग भूषन बेनी बनी भूषन ।।१ ।। नैनन काजर सोहे देखत त्रिभुवन मोहें तापर बेसर के मुक्ता की झलकन ।। 'सूरदास' मदन मोहन नारी रूप कीये प्यारी संग झूलत हिंडोरना श्रीजमुना के कुलन ।।२ ।।

□ राग मल्हार □ (१३) सावन तीज हरियारी हिंडोरें झूलें श्रीराधा प्यारी ।। संग बृंद व्रज नारी सवसत साज सिंगारी गावति सरस सुरंग मलारी ।।१ ।। उततें आई ए विहारी साथ लीनें फूल डारी कहत नोहन कोऊ लावो हा हा ललिता री ।। विहंसि बोली दुलारी भरि लीने अंकवारी सोभा कौ सागर उमड्यौ हित 'गोपाल' बलिहारी ।।२ ।।

□ राग रायसो □ (१४) झुले कुंवरि वृषभान की लाल लाडिले संग ।।

सुद तृतीया उजियारी आनंद प्रगट्यो अंग ॥१ ॥ पावस ऋतु घन वरखही गरजत गगन रसाल ॥ दामिनी चहूंदिश दमकही इन्द्रधनुष आकार ॥२ ॥ कंचन खंभदोऊ राजत हीरा जडित की हार ॥ पटुली परम जडावकी कुन्दन बनेहें अपार ॥३ ॥ वसन आभूषण सब नये गुंजा कसुंभी पाग ॥ प्यारी संग बिराजहीं छबि निरखत बडभाग ॥४ ॥ झोटादेत तिहिं ओसर ललितादिक सब भाम ॥ गोविंद प्रभु छबि निरख देखि लज्यो मन काम ॥५ ॥

□ राग अडानो □ (१५) रंग हिंडोरनां झूलत राधा सब सखिन संग बनठन प्राण प्यारो देखवेकुं आयो ॥ जाके अंगसंग कोटिकोटि सचु पईयत ललिता अपनी प्यारीके संग झुलायो ॥१ ॥ सावनतीज सुहाई भई दुहुंनके मन भाई प्रथम समागम आनन्द घुमडायो ॥ घन दामिनीसी देह वरसन लग्यो मेह दोऊ रूपरास सबहीको जियजिवायो ॥२ ॥ वे हरख हरखकें झुलावें जब नंदलाल डरपन लागे ओर अति सचुपायो ॥ कहिं भगवान हित रामराय प्रभु प्यारी झुलि रतिमानी सुख सिंधु बढायो ॥३ ॥

□ राग केदारो □ (१६) ॥ मान के पद ॥ तू चल राधिका प्यारी वृषभान दुलारी झूलन हिंडोरे तोहि बोली ॥ मानकी रीत यह नाहिन री कह्यो मानत नाहि तु तलपत जे ते मीन जल बीन अमृत वचन मृदु बोली ॥१ ॥ पहेरी ले चुनरी सारी, हीराको शींगार भारी कस लेहु कसुंभी चोली ॥ गोविन्द प्रभु गोकुलचंद सों तु मिल हृदयो खोली ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (१७) ॥ पोढवे के पद ॥ हरि पोढो चकडोरे झुलावुं ॥ जोई जोई राग रंग गाऊँ तुम रीझो सोई सोई गाय सुनाऊँ ॥१ ॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी धुंधरी उपंग बजाऊँ ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर यह सुख सदा स्याम हो पाऊँ ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (१८) सावन तीज किशोरी झुलत हरि संग राधा गोरी ॥ अंग अंग उबट सब सुरंग सुंदरी युवतिन मधि बन जोरी ॥१ ॥ नवसत साज बनाय सखि मिली गावत हे एक ठोरी ॥ गिरिधरलाल

रसिक राधा पर डारत है प्रणतोरी ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (१९) निज सुन झुलत राधा प्यारी ॥ रत्नजटित को सुरंग हिंडोरो डांडी मीनाकारी ॥१ ॥ एक दिश श्रीनंदनंदन बैठे इत वृषभान दुलारी ॥ दोऊ प्रवीण परस्पर झुलत बढ्यो रंग अति भारी ॥२ ॥ गोपी ग्वाल सबे मिल आये ओर सकल व्रजनारी जोटा देत झुलावत गावत आप आपनकों वारी ॥ भये प्रसन्न दुलहे दुलहनी अद्भुत बात बिचारी ॥ सूरदास सहित दिये आभूषन पहेरावन निज तारी ॥३ ॥

नागपंचमी के पद हिंडोरना

□ राग मल्हार □ (१) नीलांबर पहेर तन गोरें झूलत सुरंग हिंडोरें ॥ मनि मानिक हीरा रतन मुक्ताफल शोभितहे तन गोरें ॥१ ॥ सुद तिथी नागपंचमी दिन दयाल दरस दीवो जोरें ॥ जन्म दिवस जान बलदाऊ को मदन मोहन कृपा करी अतोरें ॥२ ॥ झुलत रंग बढ्योजु परस्पर झुलावन मिले आय चहुं ओरें ॥ हरिदास प्रभुकी यह शोभा चीत चोर्यो इन नयनकी कोरें ॥३ ॥

□ राग बिलावल □ (२) बरसानेकी नारि सबे मिल झूलन आईं ॥ नखसीख सबे सिंगार राधिका परम सुहाई ॥ चंद्रावली ललिता सखी जुथ सबे जुर आय ॥ गोवरधनकी तरहटी रच्यो हिंडोरो जाय ॥ सबेमिलि देखन जैयें ॥१ ॥ कंचन मनिके खंभ हीरा डांडीजु जराये ॥ चोकी रतन जडाव मरुवे पन्नाजु लगाये ॥ तापर कलसा हेमके उपर ध्वजा फहेराय ॥ मोर पपैया पीउ पीउ करे हो कोयल शब्द सोहाय ॥ सबे मिलि देखन जैयें ॥२ ॥ दिन नागपंचमी जाने सबे व्रजवासी आये ॥ ताल मृदंग उपंग बाजे बहोभांत बजाये ॥ नागदमन इंद्रदमन मध देवदमन कहेवाय ॥ महामहोच्छव जानकेंहों दई हे भुजा दरसाय ॥ सबे मिलि देखन जइयें ॥३ ॥ श्री गोवरधन के आसपास फूली द्रुमवेलि ॥ गावत व्रजकी नार सबे नागरिजु नवेली ॥ झोटादेत सुहावने हो मनमें मोद न माय ॥ यह

सुख शोभा निरखकें हो सूरज बलबल जाय॥ सबेमिल देखन जइयें ॥४॥

हिंडोरा - बगीचा के पद (श्रावण सुद ८)

☐ राग काफी ☐ (१) एरी सखी झुलत नवल किशोर॥ संग लीयें नवनागरी॥ रंग श्रावन मास हींडोरनां॥ ध्रु.॥ एरी सखी देखन सब मिलि जाँय॥ चलीहें जूथ मिलि आगरी॥ एरी सखी वृन्दावन संकेत॥ झूलत नटवर सांवरो॥१॥ एरी सखी काछनी परम रसाल॥ पेहेरें सब गुन आगरी॥ एरी सखी देखे सुन्दर श्याम॥ शीश टीपारो चुन्दरी॥२॥ एरी सखी कुंडल मकराकार॥ कोटिकिरन रवि धूंधरी॥ एरी सखी सुभग हिंडोरो देख॥ फुल खंम द्वे राजहीं॥३॥ एरी सखी मरुवे मयार बनाय॥ डांडी कलश सुहावहीं॥ एरी सखी आँई सब व्रजनार॥ नन्दनन्दनके दरसकुं॥ एरी सखी लाईं भर भर थाल॥ पकवान बहु सरसकुं॥४॥ एरी सखी पेहेरें रंगरंग चीर॥ शोभित कंचुकी जरकसी॥ एरी सखी लेहेंगा परम रसाल॥ कटिपर सोहे कनकसी॥५॥ एरी सखी भूषन वसन अपार॥ पेहेरें सब गजगामनी॥ एरी सखी ठाडीं सब व्रजबाल॥ मानों घटा बिच दामिनी॥६॥ एरी सखी झुंडन आईं जुरि॥ गावत सब मिली प्रेमसुं॥ एरी सखी काफी राग जमाय॥ गावत तान तरंगसुं॥७॥ एरी सखी ताल मृदंग उपंग॥ अनाघात गत बाजहीं॥ एरी सखी दुंदुभी पटह निशान॥ डिमि डिमि झालरी साजहीं॥८॥ एरी सखी कुंजनकी छबि देख॥ फूले कुसुम सुहावहीं॥ एरी सखी करण केतकी गुलाल॥ मानो मल्लिका भावहीं॥९॥ एरी सखी जाई जुई कनेर॥ चंपक फूल गुलाबहीं॥ एरी सखी कालिंदीके तीर॥ फूले कमल तहां बहीं॥१०॥ एरी सखी भ्रमर करत गुंजार॥ कुंजलता बिच चमकहीं॥११॥ एरी सखी मोर करतहें सोर॥ कोयल बोलत कुंजमें॥ एरी सखी चातक पिक समान॥ घुघरु बोलत तरंगमें॥१२॥ एरी सखी शोभा बरनी न जाय॥

कहत कहें नही आवहीं ।। एरी सखी रसिकराय छबि देख ।। निरख निरख सुख पावहीं ।।१३ ।।

□ राग मारू □ (२) निजसुख पुंज वितान कुंज हिंडोरना ।। झूलत श्याम सुजान ।। संग श्यामाजु परमप्रवीन ।। जाकेसदां रसिक आधीन ।।धृ० ।। कंचनखंभ पेचवां बडेंडी जटित जराउ सगरी ।। पन्ना खचित पिरोजा विचविच कनक कलश जगमगरी ।।१ ।। गजमोतिनसों डांडी गूंथी चौकी चमक सुरंगी ।। रमकत झमकत गहेगहे लटकत मोहन मदन त्रिभंगी ।।२ ।। मरुवे वेलन ध्वजा झालरी द्युति गहरी विस्तरणी ।। चोंकारत झोटनमें मानों कोकिल शब्द उच्चरणी ।।३ ।। चहूंओर द्रुमवेली फूली लता सघन गंभीर ।। रमकत दमकत घन दामिनिसी झलमल यमुना नीर ।।४ ।। सारस हंस चकोर चातक पिक नेह धरें सबपेठे ।। गुल्मलता द्रुमतनक न दीसत एसें जुरजुरबेठें ।।५ ।। विजयसुभाव कियें घनसंपति उल्हर विपिन पर आए ।। गरजत तरजत मधुर मधुर धुनि केकी शब्द सुहाए ।।६ ।। सहंचरी गान करत ऊँचेस्वर श्रीवृन्दावन गाजे ।। मधुरमंजीर गगन उघटत सम सुभट पखावज बाजे ।।७ ।। नीलांबर पहेरें नवनागरि लाल कंचुकी सोहें ।। भीजगई श्रमजलसों उरजन प्रीतमको मनमोहें ।।८ ।। लटसगमगी सलोल बदनपर शीशफूल उलटानों ।। प्रीयाकी चौकी गिरिधरको चंद्रहार अतिशोभित अरुझानो ।।९ ।। दृग रसाल रसभरी भ्रोंहसों हँसहँस अर्थ जनावें ।। दुरन मुरनमें चित करषतहें लालची मन ललचावें ।।१० ।। फेल रह्यो सौरभ सगरे सखी कुंकुम कृष्णागरको ।। कहांलों कहों मत्तभयो वरनों भाव गदाधर उरको ।।११ ।।

□ राग मारू □ (३) झूलें वृषभान कुमारि फूल हिंडारेना ।। ललितादिक देखत हें ठाडी देतहें तनमन वारि ।।१ ।। डांडी फूल खंभ फूलनके मरुवे फूल बनाये ।। धरनी फूलपर रच्यो हिंडोरो फूलन बादर छाये ।।२ ।। भ्रमरा फूलफूलनकी भ्रोंहनपर सीसफूल सिरराजें ।। फूलनमांग झबझबी फूलन फूल झालर छबिछाजें ।।३ ।। टीकीफूल फूलकी वेसर फूल निबोरी सोहें ।।

मालाफूल हारफुलनके दुलरी फूलमनमोहें॥ बाजुबंदफूलनके बांधें चूरीफूल सुहाई॥ कंकणफूल रहे कर ऊपर फूलमुन्दरिया भाई॥५॥ सारी फूल फूलको लेंहेंगा अंगिया फूलविराजें॥ बेंनीफूल रही कटिऊपर निरख अही पति लाजें॥६॥ जेहरफूल फूलनकी पायल फूल अनवट छबि भारी॥ फूल कमलपद फूलन विछिया सूरदास बलिहारी॥७॥

बगीचा के हिंडोला दर्शन

□ राग मल्हार □ (१) वृंदावन झूलत गिरिवरधारी॥ सावन मास सरस घन बरसे तेसीये भूमि हरियाली॥१॥ फूले कुसुम सुभग यमुना तट पवन बहत सुखकारी॥ निरखी निरखी सुख देत झोटीका श्रीवृषभान दुलारी॥२॥ दादुर मोर पपैया कोयल शब्द करत मनुहारी॥ गावत राग मल्हार भामिनी पहेरे झुमक सारी॥३॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी नाचत देकर तारी॥ मदनमोहन राधावर उपर गोविंद तनमन वारी॥४॥

□ राग अडानो □ (२) आज लाल झूलत रंग भरे हो॥ मणि कंचनको सुरंग हिंडोरो लटकन मोती लरेहो॥१॥ मोर मुकुट गुंजामणि भूषण पीतवसन वनमाल गरेंहो॥ विचित्र विहारी जुके कुण्डल कपोल लोल कामको गर्व हरेंहों॥२॥

□ राग केदारो □ (३) सोतु राखलेरी झोटा तरण भये॥ इत नवकुंज द्वार कदंब परस जात उत यमुनालों गये॥१॥ आवत जात लपटात लतनसों ताऊपर द्रुम फूलछये॥ कल्याणके प्रभु गिरिधर रीझ वशभये झूलत नयेनये॥२॥

□ राग केदारो □ (४) झूलत दोऊ कुंजकुटीर॥ कंचन खंभ हिंडोरें बिराजत तरणि तनयातीर॥१॥ मुकुलित कुसुम मल्लिका प्रफुल्लित रुचि दायक तहां वहत समीर॥ सारस हंस चकोर मोर खग बोलत कोकिला कीर॥२॥ मधुरे स्वर गावत केदारो वृषभान सुता बलवीर॥ गोविंद प्रभु गिरिराजधरन पिय सुरत सुभट रणधीर॥३॥

पीछे भीतर हिंडोरा में झुले तब

□ राग केदारो □ (१) लालमुनिनके झुंडन झूलन आई एहो हिंडोरें ॥ एक रंग सरस कसुंभी सारी पहेरें कंचुकी सोंधे बोरें ॥१ ॥ सबे एक वेष वे छुटी दामिनि ज्यों तनगोरें ॥ हँसत लसत झूलत ओर फूलत मन्मथको चित चोरें ॥२ ॥ मधुरे स्वर गावत केदारो छबिकी उठत झकोरें ॥ कृष्णदास गिरिधरन किये वश चपल नयनकी कोरें ॥३ ॥

□ राग केदारो □ (२) नवल लालके संग झूलन आई एहो हिंडोरें ॥ लटपटात पाटकी चुंनरि बदलपरी कछुभोरें ॥१ ॥ सगबगात गिरिधर पियके संग बतियां कहत थोरें थोरें ॥ 'दासनके' प्रभु रमकझमक झूलें कछुक हँसत मुखमोरें ॥२ ॥

राखी के हिंडोरा के पद (श्रावण सुद १५)

□ राग अडानो □ (१) झूलत अरुझी वनमाल गरें ग्रीव गांठ गहि जोरी ॥ हँसत झुलत जो झुलावन हारी कहो केसें कर छोरी ॥१ ॥ जो छोडोतो अधिक सयाने तो न वदोंजो झटक गहितोरी ॥ कल्याणके प्रभु गिरिधरन रसिक तुम काहेकों भ्रोह मरोरी ॥२ ॥

□ राग बिहाग □ (२) भली करि आये भलि करी आये पर्व मनायो सलूनो ॥ झुमझुम झुलवत रंगरंगन रस वरखत व्रजदूनो ॥१ ॥ एकवेष एकरूप एकगुण पूरण नाहिन उनो ॥ द्वारकेश स्वामिनि हँस यों कह्यो झुलियें आजहे पून्यों ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (३) सांवनकी पून्यों मन भावन हरि आये घर झूलूंगी पंचरंग डोरी बांध हिंडोरें ॥ पहरोंगी सुरंगसारी कंचुकी कसबांधो कारी हीराके आभूषण सोहे तनगोरें ॥१ ॥ धरिहों उर कुसुम हार निरखोंगी वारंवार नयन निहार नंदलाल कछुक वेषथोरें ॥ रसिक प्रीतमसंग सुखद पावस ऋतु विलसोंगी भेटोंगी आनंदभर कंठभुजा जोरें ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (४) आली श्रावनकी पून्यो हरि हरियारी भूमि सोहत

पिया संग झूलूंगी हों नवल हिंडोरें ॥ वरसत मेह भटू लागत प्यारो मोहे सखी आपुने प्रीतमकों हों प्रेम रंग बोरें ॥१ ॥ पीक कुल्हेरी राजे चुंनरी पीत सारी लहेंगा पीत कंचुकी सोहे तनगोरें ॥ झोटनमें लोटपोट झूलत दोऊ रंग भरे निरखि छबि नंददास बलि तृन तोरें ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (५) आज वृषभानकी ललीके वदन पर दूनी छबि रही फबि ॥ यशोदाको लाल वीर सहोद्राको राखी बांधि झुलतहें अति बाढी छबि ॥१ ॥ चहूं ओर झोटादेत परस्पर बडोहेत रीझ रीझ नरनारी भयेहें मुदित मन ॥ मुकुटकी लटक बीच कुंजल अति शोभा देत कोटिकिरन सहित रवि ओर मदन ॥२ ॥ तजि न सकत मन टारी न टरत छबि मोंकु नेंक ढील भई कहारी कहुं अब ॥ कृष्णदास पिय वसो मन सदाहियें एसी छबि वरन सकत कोन कवि ॥३ ॥

□ राग अडानो □ (६) सुघर रावरे की गोपकुमारि गोकुल की राखी बाँधे हरि राधा हिंडोरे झूलनि नंदसदन आई। प्रफुल्लित मुख सोभित अलक चपल नैना पट भूषन झगमग तन चटक मटक जसुमति मन भाई ॥१ ॥ कोऊ मृदंग बजावे गावे बीन सरस सुर मिलावे पिक रिझावे लजावे मोरनि कूक मचाई। 'व्रजाधीस' केलि करत फूले बन हरित भूमि बडभागिनि पून्यो यह सावन सुखदाई ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (७) गोपीजन गावे गीत राखी को है दिन पुनीत स्यामास्याम झूले दोऊ रंग हिंडोरे। रमकि-झमकि झोटा देत नैननि कों सुख देत निरखि-निरखि छबि पर तृन तोरे ॥१ ॥ सावन की पून्यो मन भावन संग राखी बांधि जमायो है राग-रंग बैठी बाँह जोरे। काछनी काछे लाल मोर मुकुट मुक्तामाल स्यामा को सुहाग-भाग सुजस चहुँओरे। श्रीविट्ठल सुख-साज सज्यो जसुमति व्रजराज भजो हरि अविचल राधा को चूरो। 'नंददास' बलिहारी भक्तनि कों सुखकारी प्रीतम चकोर प्यारी सरद-ससि पूरो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (८) सुघर रावलकी गोप कुंवर गोकुल की राखी बांध

ही हरि राधा हिंडोरे झूलन नंद सदन आई ॥ प्रफुलित मुख सोभित अलक चपल नैंना बोहो रंग पट जगमग तन चटक मटक जसोमती मन भाई ॥१ ॥ कोऊ मृदंग बजावे गावे बैनु सरस सुर मिलावे प्यारी लाड लडावे पिक लजावे मोरन कुक मचाई ॥ 'व्रजाधीस' केलि करत फूले बेली हरीत भोमि बड भागिनि पून्यों है सावन सुखदाई ॥२ ॥

पवित्रा के हिंडोरा के पद (श्रावण सुद ११)

□ राग सारंग □ (१) पहेर पवित्रा बैठे हिंडोरें दोऊ निरखत नेन सिराने ॥ नवनिकुंज महलमें राजत कोटिक काम लजाने ॥१ ॥ हास विलास हरत सबके मन अंग अंग सुख साने ॥ परमानंद स्वामी मन मोहन उपजत तान बिताने ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२) पवित्रा पेहेरें नंद कुमार ॥ पेहेर पवित्रा झूलन लागे अतिसे परम उदार ॥१ ॥ चंचल चपल मनोहर मूरत अति शोभा सुख सार ॥ कृष्णदास प्रभु कुंवर लाडिले श्रीगोवर्धन सुखकार ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३) पवित्रा पेहेरें परमानंद ॥ श्रावन सुदि एकादशीके दिन गिरिधर गोकुलचंद ॥१ ॥ श्रीवृषभाननंदनी निजकर ग्रथित विविध पटभांत ॥ तामध्य सुभग सुवर्ण सूत्रसों पोई नवमति जात ॥२ ॥ पवित्रा पेहेर हिंडोरें झूलत दोऊ आनन्द कन्द ॥ जमुना पुलिनमें कुंज मनोहर गावत परमानन्द ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४) पवित्रा पेहेरि हिंडोरें झूलें ॥ श्यामा स्याम बराबर बेठे निरखतही समतूलें ॥१ ॥ ललितादिक झुलावत ठाडी खंभन लग अनुकूलें ॥ व्रजजन तहां मिल गावत नृत्यत प्रेम मगन सुध भूलें ॥२ ॥ मंदमंद घन बरखत तिहिं छिन बाम सबे सचु पावत ॥ कालिंदी तट यह बिधि लालन पशु पंछी सुख पावत ॥३ ॥ वृन्दावन शोभा कहा वरनुं वेदहु पार न पावत ॥ श्रीवल्लभ पद कमल कृपातें रसिक चरन रज पावत ॥४ ॥

श्री गुसांईजी के हिंडोरा

□ राग मालव □ (१) हिंडोरो नवरंग्यो सजनी तहां झुले श्रीविट्ठलेशराय ।। चलो सखी देखनकूं जैयें यह सुख शोभा कही न जाय ।।१ ।। नवरंग कनक खंभ द्वय राजत नवरंग डांडी चार सुहाय ।। नवरंग चोकी तकियागादी नवरंग मोतिन झुमक लाय ।।२ ।। नवललाल नवरंगी नारी नवरंग युवती ढोरें वाय ।। नवरंग मोर कला करि नाचें नवरंग यमुना लहेर सुहाय ।।३ ।। नवरंग पुष्प वृष्टि व्रज ऊपर रीझ मुदित नवदुदुंभी बजाय ।। नवरंग भक्त कमलसे माधवदास उमंगयश गाय ।।४ ।।

□ राग मालव □ (२) श्रीविट्ठलराय लालगिरिधरन झुलावत सुरंगहिंडोरें ।। सुन्दरवदन निहारत फिरफिर चितवत नयना जोरें ।।१ ।। अतिशोभित शिरपाग संवारी केसरके रंगबोरें ।। कर्णफूल ओर चिबुक वदनपर झलकत थोरें थोरें ।।२ ।। तेसीये संग राधिका रानी छबि लागत तनगोरें ।। श्रीविट्ठल गिरिधर जब झुलत युवतिनके चितचोरें ।।३ ।।

□ राग मारू □ (३) हिंडोरें राजत श्रीगोकुलाधीश ।। धोती अरु कसुंभी उपरेना कसुंभी पाग सोहे शीश ।।१ ।। झोटा देत सखी जन प्रफुल्लित झुलें गोकुलईश ।। देत असीस सकल सुख सबमिल जीयो कोटिवरीस ।।२ ।।

□ राग सोरठ □ (४) झुले श्रीवल्लभनंदन हिंडोरें माई ।। मणि कंचनके खंभ मनोहर चोकी जडित सुचन्दन ।।१ ।। नाना विधके हार कुसुमनके रुकमणिके मनरंजन ।। भीमदास प्रभु मोहन नागर यशगावत श्रुतिछन्दन ।।२ ।।

□ राग कान्हरो □ (५) झुलत वल्लभवर सुखदाई ।। रसना एक कहां लों अंगअंग सुंदरताई ।।१ ।। व्रजजन नयन चकोर चंद्रमुख पीवत रूप सुधाई ।। झोटा देत भक्त बडभागी वृन्दावन बलिजाई ।।२ ।।

□ राग मल्हार □ (६) सरस हिंडोरना माई झूले श्रीगोकुलचन्द ।।ध्रुव ।। द्वै खंभ कंचनके मनोहर रतनजटित सुरंग । चार डांडी सरल सुन्दर निरखि

लजित अनंग। पटुली पिरोजा लाल लटकत झूमका बहुरंग। मरुवे मानिक चूनी लागी बिच बिच हीरा तरंग ॥१ ॥ कल्पद्रुम तरु छाँह सीतल त्रिविध बहत समीर। जहाँ लता लटके भरि कुसुमनि परसि जमुना नीर। हंस मोर चकोर चातक कोकिला अलि कीर। नवल नेह किसोरी राधे नवरंग गिरिधर धीर ॥२ ॥ ललिता विसाखा देत झोंटा रीझि अंग न माई। तहाँ लाडिली सुकुमारी डरपत स्याम उर लपटाई। गौर साँवल अंग मिल दोऊ भये एक ही माई। नील पीत दुकुल राजत दामिनी दुरि जाई ॥३ ॥ नव कुंज कुंज झुलाई झुलवति सहचरी चहुँ ओर। मनहुं कुमुदिनी कमल फूले निरखी जुगलकिसोर। व्रजवधु तृन तोरि डारती देति प्रान अंकोर। कृष्णदास व्रजवास दीजै नागर नंदकिसोर ॥४ ॥

□ राग केदारो □ (७) हिंडोरे माई झुले श्रीविठ्ठलनाथ। सब भक्तन मिल प्रेम झुलावत आनंद उर न समात ॥१ ॥ श्रीगिरिधर गोविंद संग झूलत श्री बालकृष्ण निज रूप॥ श्री गोकुलनाथ अनाथ के बंधु सब व्रजजन के भूप ॥२ ॥ श्रीरघुपति यदुपति घन सांवल निरखत तनमन हारे॥ हमसें पतित उद्धारन कारन द्विज कुल हरि वपु धारे ॥३ ॥ कंचन खंभ सुठार मनोहर पटुली पिरोजा लाल। डोरी पाटकी कर गहीं झुलावत गावत लघु गोपाल ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (८) ॥ चोखरा॥ रसिक हिंडारेना हो झुलत श्रीनंदलाल। श्रीवल्लभ सिरताज मेरे गाऊं लीला रसाल॥ध्रुव॥ श्रीविठ्ठल चरन सरोज वंदुं धरि मन हुल्लास। श्री गिरिधर गोविन्द जू श्रीबालकृष्ण सुवास। श्रीवल्लभ श्रीरघुनाथ जदुपति स्याम सुन्दर सुजान। श्री वृन्दा बिपिन हिंडोरे राजत देत रतिसुख दान ॥१ ॥ मनिमय जु खंभ महा विराजत चार डांडी गोल। रतन जटित जु पटुली सोहे बैठे जुगलकिसोर। एक झुलावत एक बजावत ताल जंत्र मृदंग। एक नाचत एक शब्द उघटित गान कर सुधंग ॥२ ॥ द्रुमगननि लता अनेक फूले चंपक

जाई गुलाब। केतकी करनी रायबेली पोहोप भार अढार। श्री यमुना निकट सोहावने भए फूल कमल अपार। धीर समीर पराग ले ले भंवर करत गुंजार ॥३ ॥ अनेक पंछी करे कुतुहल सारस हंस चकोर। बरटाक पीक चातक परेवा नाचत मोरी मोर। गरज घन दामिनि दमकत ईंद्रधनु चहुं ओर। बूंद सोहावनी स्याम स्यामा निरखि विविध मुख ओर ॥४ ॥ श्री स्याम झोंटा देत जबही स्यामा बोहोत डराय। विरम विरम सुवचन कह कह लाल उर लपटाय। निरख ललितादिक सब मिल आनंद उर हि अपार। रसिकवर गिरिवरधरन पर 'माधोजन' बलिहार ॥५ ॥

□ राग मिश्र पिलू □ (९) सो प्यारा मोरा मोहन बाग पधराया॥ राधा प्यारीने संग झुलायारे॥ सो प्यारा मोरा मथुरा नगर यमुना तट शोभा॥ बलदेव बगीचा आयारे ॥१ ॥ सो प्यारा॥ सघन कुंज गहेवर बन भीतर॥ फुल हिंडोरा बनायारे॥ सो प्यारा ॥२ ॥ भोग अरोग झारी यमुना जल॥ बीरी पान खवायारे॥ सो प्यारा ॥३ ॥ पुरुषोत्तम प्रभु देत झोटका॥ श्रीकल्यानराय मन भायारे॥ सो प्यारा ॥४ ॥ श्री व्रजनाथलाल अति सुन्दर॥ रमणलाल संग आयारे॥ सो प्यारा ॥५ ॥ श्रीगिरिधर जीवन हे जगतके॥ श्री बालकृष्ण लाड लडायारे॥ सो प्यारा ॥६ ॥ श्रीव्रजपाल मधुसुदनलालजी॥ केल कन्हैया पायारे ॥७ ॥ घनके श्याम घन उपर घुमड रहे॥ श्रावन मास सुहायारे॥ सो प्यारा ॥८ ॥ व्रजयुवतीन संग बहु बेटिन मिल॥ बह सुख हृदय समायारे॥ सो प्यारा ॥९ ॥ भीड भई वैष्णव समुहकी॥ गोपाल प्रभु जस गायारे॥ सो प्यारे ॥१० ॥

□ राग मारू □ (१०) हिंडोरे झूलत वल्लभ लाल। गोकुलेश पूरण पुरुषोत्तम भक्तन के प्रतिपाल ॥१ ॥ दृष्टि छबिली चहुंदिश चितवत हरत तिमिर कलिकाल॥ मुसकनी चारू बदन कमल की केसरी तिलक सुभाल ॥२ ॥ वल्लभ निरखत अति सुख बाढ्यो गावत गीत रसाल॥ कहीं मोहनजन यह सुख देखत प्रेम मुदित वृजलाल ॥३ ॥

□ राग मारू □ (११) झुले श्रीवल्लभ राजकुमार ॥ व्रज की शोभा कहत न आवे शेष न पावे पार ॥१ ॥ अति सुंदर हिंडोरो कनकमय हिरामणि झनकार ॥ निरख निरख सब ही व्रजवासी फूले सुरमनी करत विचार ॥२ ॥ फिर व्रज में प्रभु प्रगट भये हैं भक्त हेत अवतार ॥ 'कृष्णदास प्रभु' रसिक शिरोमणि तन मन कर हूं बलिहार ॥३ ॥

□ राग मारू □ (१२) झूलत श्रीवल्लभ राजकुमार ॥ ससुर सबेही मिल देखन आये आनंद बढ्यो अपार ॥१ ॥ हेम हीरा के खंभ जडाए लटकत मुक्ताहार ॥ आप झुलावत ओरे झुलावत दे दे दोऊ बार ॥२ ॥ गृह गृह ते सब देखन आई गावत मंगल चार ॥ छीत स्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल तनमन कर हू बलिहार ॥३ ॥

□ राग मारू □ (१३) हिंडोलो नवरंग्यो सखीयो त्यां झूले श्रीविठ्ठलराय ॥ चालोने सखियों जोवाने जइये आ सुख शोभा वरणी न जाय ॥१ ॥ नवरंग कनक खंभ बे राजत नवरंग डांडी चार सुहाय ॥ नवरंग चोकी तकिया गादी नवरंग मोतिन झुमकलाय ॥२ ॥ नवललाल नवरंगी नारी नवरंग युवती ढोडे वाय ॥ नवरंग मोर कडाकरी नाचे नवरंग यमुनाजी लहेर सुहाय ॥३ ॥ नवरंग पुष्प वृष्टि व्रज उपर राजे आनंदथी दुदुंभी बजावे ॥ नवरंग भक्त कमड जेवा फूल्या माधवदास विमलयश गाय ॥४ ॥

हिंडोरा मल्हार के पद

□ राग मल्हार □ (१) झुलत अति आनंदभरे ॥ इतश्यामा उतलाल लाडिलो बैयां कंठधरें ॥१ ॥ बोलतमोर कोकिला अलिकुल गरजतहें घन घोर ॥ गावत राग मल्हार भामिनी दामिनि झकझोर ॥२ ॥ नेन्हींनेन्ही बूंदपरतहें ऊपर मंदमंद समीर ॥ फूलनफूल रह्यो काननसब सुंदर यमुना तीर ॥३ ॥ रीझरहे सुरनर मुनि वरखत कुसुमन माल ॥ सूर सकल सुखको येही सुख निरखत मदन गोपाल ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (२) हिंडोरे माई झूलत बनेहें बिहारी ॥ आनंदभर दोउ गान-करतहें संग सकल व्रजनारी ॥१ ॥ कुंजकुंजमें बन्यो हिंडोरो केलिकरत सुखकारी ॥ झोटा देत झुलावत सुन्दरी रीझरीझ तृणडारी ॥२ ॥ कहाकहों यह सुखकी सीमा जोरीबनी अतिप्यारी ॥ सुरनर मुनिजन थकित भयेहें मोहन सुतबलिहारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (३) हरिसंग झूलतहें व्रजनारी ॥ सावन मास फुहीं थोरी थोरी तेसीये भूमि हरियारी ॥१ ॥ नव घन नव वन नवचातिक पिक नवल कसुंभीसारी ॥ नवलकिशोर वाम अंग शोभित नव वृषभानदुलारी ॥२ ॥ विद्रुम खंभ खचितनग पटुली डांडी सरस संवारी ॥ कुम्भनदासप्रभु मधुर झोटका देतलाल गिरिधारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (४) पावस ऋतुनीकी लागत हिंडोरें हरिसंग झूलत व्रजनारी ॥ सावन मास फुही थोरी थोरी तेसीये भूमि हरियारी ॥१ ॥ नवघन नवबन नवचात्रिकपिक नवल कसूंभी सारी ॥ नवलकिशोर श्यामसंग शोभित नव वृषभान दुलारी ॥२ ॥ कन्चनखंभ जटित नगपटुली डांडी चारी सँवारी चतुर्भुजप्रभु पिय मधुरे झोटा देतलाल गिरधारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (५) आज बन उमगि रही व्रजनारी ॥ फुलीफिरत निशंक गुणगावत झुलवत प्राण पियारी ॥१ ॥ एक कुसुम ले डारत ऊपर एक चितवत रहीठाडी ॥ एक जो धाय आय मोहनपें अंकभरत हें गाढी ॥२ ॥ नीलपीत अंगअंग विराजत ओर शृंगार सवारी ॥ सूरसंग विलसतहें भामिनी नेक न होत नियारी ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (६) झूलेंमाई गिरिधर सुरंग हिंडोरें ॥ रत्नखचित पटुलीपर बैठे नागर नंद किशोरें ॥१ ॥ पीत वसन घनश्याम सुंदरतन सारी सुरंगही बोरें ॥ अंसनबाहु परस्पर जोरें मंदहसन पियओरें ॥२ ॥ घोषनारि जुरगावें चहुंदिश झुलवत थोरें थोरें ॥ सूरप्रभु गिरिधरनलाल छबि व्रजयुवतिन चितचोरें ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (७) झुलेंमाई युगलकिशोर हिंडोरें॥ ललिता चंपकलता विशाखा देतहें प्रान अकोरें॥१॥ तेसीये ऋतुपावस मनभावन मंदमंद घनघोरें॥ तेसोई गान करत व्रजसुन्दरि निरख निरख पिय ओरें॥२॥ कोटिकोटि कंदर्प छबि निरखत होत सखी भ्रम भोरें॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर देतहें प्रेम झकोरें॥३॥

□ राग मल्हार □ (८) झूलेंमाई नटवर सुरंग हिंडोरें॥ धरत चरण पटुलीपर मोहन करजु परस्परजोरें॥१॥ पीतवसन वनमाल विराजत सारी सुरंगहि बोरें॥ सजल स्यामघन कनकवरण तन मानिनी मानहितोरें॥२॥ जोरी अवचल सदा विराजत कुण्डल वीच झकोरें॥ कुंभनदास प्रभु गिरिधर राधा प्रीति निवाहत ओरें॥३॥

□ राग मल्हार □ (९) हिंडोरे माई झुलत हैं नंदलाल॥ गावत सरस सकल व्रजबनिता बाढ्योहे रंग रसाल॥१॥ संग झूलत वृषभाननंदिनी उरगजमोतिनमाल॥ कंचनवेली यों राजतहै अरुझी श्यामतमाल॥२॥ बाजत ताल पखावज मुरली पग नुपुर झनकार॥ सूदरास प्रभुकी छबि ऊपर तनमन डारों वार॥३॥

□ राग मल्हार □ (१०) झुलतलाल गोवर्धनधारी॥ बलबलजाऊँ मुखारविंदकी संग लियें पियप्यारी॥१॥ मणिमय जटित हिंडोरो बन्योहे झूलत सखी हितकारी॥ ललना लाल दोऊ राजतहें घनदामिनी छबि भारी॥२॥ शीतल मंद सुगंध बहतहे कुंजघटा छबि न्यारी॥ दादुर मोर पपैया बोलें श्रवण सुनत सुखकारी॥३॥ शोभा अद्‌भुत जात न वरणी कोटिकाम मनहारी॥ श्रीवल्लभ प्रभु पद पंकजकी कृष्णदास बलिहारी॥४॥

□ राग मल्हार □ (११) झूलोतो सुरत हिंडोरे झुलाऊँ॥ मरुवेमयार करों हित चितके तन मन खंभ बनाऊँ॥१॥ सुधि पटुली बुद्धि डांडीवेलन नेह बिछोना बिछाऊँ॥ अति ओसेरधरों रुचिकलशा प्रीतिध्वजा फहराऊँ॥२॥ गरजन कोहोक हिलग मिलवेकी प्रेम नीरवरसाऊँ॥

श्रीविठ्ठल गिरिधरन झुलाऊँ जो इकलेकर पाऊँ ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१२) दोऊ रीझे भीजे झुलत रसरंग हिंडोरें ॥ नेहखंभ डांडी चतुराई हाव-हाव मरुवे वेलन चोंपपटुली अनुपभाव कटाक्ष रमक चित चोरें ॥१ ॥ रसउन्नत रसवरषतमंद गरजहसनकिलक दशन चमक चपला हुलास पवन झकोरें ॥ क्वणितवलय नुपूरमानों विहंग बोलें जगन्नाथप्रभु दंपतिजात कामरस भोरें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१३) लाल माई झूलतहें संकेत ॥ संग राजत वृषभाननंदिनी ललिता झोटादेत ॥१ ॥ मुदित परस्पर गावत दोऊ अलापत राग मल्हार ॥ खसिखसि परत नील पीतांबर नाहिन अंग संभार ॥२ ॥ उनये मेघ सकल वनराजत अद्‌भुत शोभा देत ॥ दामोदर प्रभु रस झूलनमें सखी बलैया लेत ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१४) श्रीव्रजराजके धाम हिंडोरे अबरंगरह्यो ॥ श्रीवृषभानसुता संग लीने झूलत सुंदरश्याम ॥१ ॥ चहुंओर तरुणी रमणी मनहरन झुलावत जोर ॥ इत मोहन मुखवेणु मधुरध्वनि उत बन बोलतमोर ॥२ ॥ लहलहात दामिन धरनीपर गगन उठत घनघोर ॥ कही न जात शोभा तिहिंछिनकी परी गिरिधर गिरिहोर ॥३ ॥ निरख निरख फूलत ललितादिक उर आनन्द न समाय ॥ तिहिं अवसर व्रजपति तृण तोरत दोउकर लेतबलाय ॥४ ॥

□ राग मल्हार □ (१५) कारे बादर ओल्हर आये ता मध्य झुलत सुरंगहिंडोरें ॥ तेसीये दामिनि दमकदमक धुरवापरें चहुंओरें ॥१ ॥ हरीहरी भूमि सुहावनी लागत तेसेई चातक पिक करतकरोरें ॥ मदनमोहन बलबल गिरिधरपिय हंस उठजात मन्मथ मनमोरें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१६) झूले माई रसभरे सुरंगहिंडोरें ॥ नेत्र विशाल छबि नीकी लागत श्याम वरण तनगोरें ॥१ ॥ सप्तस्वरन तीनग्राम अलापत करत मुरली कलघोरें ॥ नंदनंदन प्रीतमप्यारी पर मोहन सुत तृणतोरें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१७) आयो आयोरी सांवन अब मनभावन द्रुमलतान

ग्रंथदेदें छबिसों झूलत नवल नारि नागर ॥ हरेखरे द्रुमफलेफूलें अरध ऊरधसे दंपतीके भारतामें सोहत झीनोपटकी फरहरवन ॥१ ॥ सघनकुंज महापुंज रंध्रत्रिगुणवास अरबरात पावतनही आवन ॥ मुरारीदास प्रभुपियप्यारीको परमसुख अपनी उपमा आपुही लागे मुखगावन ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (१८) तेसोई हिंडोरो लाल तेसेही झूलतलाल तेसीये व्रजवधू लगत सुहाईमाई ॥ तेसोई बाग गहवर तेसीये यमुनापुलिन तेसीये पवन मधुर चलाई माई ॥१ ॥ तेसेये पाग तेसेई नयना तेसीये माल हीये मुक्ताई ॥ तेसेई चातकमोर तेसीये मोरी तेसीये रीझ सबे कहुंकाई ॥२ ॥ तेसीये सोंधे सुगंध भीजिरही सारी तेसोई भीज्यो उपरेंना तेसीये आवत झपटाई ॥ तेसेई रंग करत गिरिधारी सुंदर तेसेई श्रीविठ्ठल उमग उमग लपटाई ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (१९) माई नवल हिंडोरो लाल नवल झुलत लाल नवल व्रजवधू नवल झूलावे ॥ नवल आंगन आनंदरायजूको नवल झुंडन नवल उमगि रसगावे ॥१ ॥ नवल सोंधे सुगंध भीजे उपरेना चोली नवल नवल चहूंदिश आवे ॥ नवलही रंगभारी नवलही छबी न्यारी नवलही पीय रीझ रीझ रीझावे ॥२ ॥ नवल ललिता प्यारी नवल व्रजमोहनी नव नव बचन चोंप बढावे ॥ नव गिरिधारी राधे नवल श्रीविट्ठल सुभग यशोदारानी निरख निरख सुख पावे ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२०) तो झूलों तुम संग हरें हरें जो झुलाओ ॥ तुम तो देत अटपटी विचविच झूलत मोहिडराओ ॥१ ॥ राग मल्हार भांत भांतनसों स्वर बांधिकें गाय सुनाऊँ ॥ रसिक प्रीतमसों कहत पियारी तोतजि चित अनत न लाऊं ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२१) ये मिल झूलत सुरंग हिंडोरें ॥ राधानंदकुंवर व्रजयुवती ठाडीहें भुज जोरें ॥१ ॥ हरितन चितवत विचविच झुलवत नयन नपलकपरें ॥ केसें कर चितचाय रहे चितयहे विचार करें ॥२ ॥ वनमाला पर परत मधुप झुक अंचल फेर निवारें ॥ घन दामिनिलों श्यामराधा छबि

निरख निहारें ॥३ ॥ विविध रंग सारी पहेरें अंग बनी व्रजनारी ॥ चहूं ओर मानों अति सुन्दर ढिंग पूतरी संवारी ॥४ ॥ श्याम जलद सब अंबर छायो शोभा भई अपार॥ रसिक प्रीतमकी या जोरीपर कीयो सब बलिहार ॥५ ॥

□ राग मल्हार □ (२२) गोपाल लाल झूलत सुरंग हिंडोरें ॥ कंचन खंभ सुढार बनाये डांडीलाल चहुं ओरें ॥१ ॥ आसपास सब व्रजजन ठाडीं गरज घटा घन घोरें॥ व्रजपति श्रीगिरिधरनलाल छबि निरखि निरखि तृण तोरें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२३) झूलत दंपति सुरंग हिंडोरें ॥ गौर श्याम तन अति छबि लागत मानो घन दामिनि भोरें ॥१ ॥ विद्रुम खंभ खचित नग पटुली कनक डांडी चहुओरें ॥ गोविंद प्रभुकों देख ललितादिक हरखित नवल किशोरें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२४) तेसोई सुरंग बन्योरी हिंडोरो मदन मोहनके संग झूलना ॥ अति हुलास मन विलास सप्त सुरन मिल गावत पिय मन भावत एसे अमृत वचन सुन मधुरे मृदु बोलना ॥१ ॥ नव नव जोबन गातन तनक कसुंभी सारी वरन वरन पेहेरें पिय हित चितवतसो खेलना ॥ धर्मदास प्रभु प्रवीन लीला विचित्र सबहिनके मन भावत लोलना ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२५) हिंडोरे माई झुले गिरिधरलाल॥ संग झूलत वृषभान नंदिनी बोलत वचन रसाल ॥१ ॥ पिय शिरपाग कसुंभी शोभित तिलक बिराजत भाल॥ प्यारी पहेरें कसुंभी चोली चंचल नयन विशाल ॥२ ॥ ताल मृदंग बाजे बहु बाजत आनन्द उर न समात॥ श्रीवल्लभ पदरज प्रतापतें निरख रसिक बलजात ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२६) आंई ऋतु सावन सुहाई अति सुखद मास झूलत हें स्यामा स्याम सुखद हिंडोरे। तेसेंई पीय प्यारी पहिरे पीयरो पट कसुंभी सारी तेसीय ऋतु पास घन चहूं दिस तें घोरें ॥१ ॥ तेसेंई विश्वकर्मा सुघर

अद्‌भुत अति मानिक खचित ठौर ठौर रुचिर रुचिर भाँति भाँति जोरें ॥ 'चतुरभुज' प्रभु गिरिवरधर हँसि हँसि लपटात जात सहेचरी विचित्र देति झोटिका खरें ॥२ ॥

□ राग मल्हार □ (२७) रंग हिंडोरना झूलत फूलत मन ही मन ॥ अरुन नील वर वसन बिराजत अति गोरे सांवरे तन वरन सारी सुरंग सोहत गावें आसपास जुवती जन ॥१ ॥ तैसीय दामिनी चमकत छिनु हीं छिनु दिस दिस तें उनए घन ॥ तेसोई मदन मारुत झकोर मोर पिक चात्रक सहचरिबन ॥२ ॥ तब हरि हरखि देत झोटा बोल विहँसि तिया हा हा तन ॥ संभ्रम सहित 'गदाधर' प्रभु उर लाई लई जीवन धन ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२८) सुखद वृंदावन सुखद कालिंदी कुल स्यामा स्याम हिंडोरे झूलनां ॥ तेसीय घन घटा कारी तेसीय भोंमि हरियारी तेसेंई केकी कीर मीठे मृदु बोलनां ॥१ ॥ तेसीय राधा प्यारी पहिरें कसुंभी सारी गिरिधर कंठ सोहे कसुंभी चोलनां ॥ 'कृष्णदास' बलिहारी छबि पर वार डारी गावत मलार तान सिंधु की झकोरनां ॥२ ॥

हिंडोरा - राग नट

□ राग नट □ (१) छबीले लालके संगललना झूलत नवल सुरंगहिंडोरें ॥ तेसीये पियप्यारी पहेरें पीयरोपट कसुंभी सारी जटित माणिक मणि पटली बैठे एक जोरें ॥१ ॥ तेसीये हरित भूमि तेसीये थोरी थोरी बूंदें तेसेई गावत पिक चातक मधुरमधुर घोरें ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिवरधर तेसीये सुखरासि राधा पिय प्यारी अद्‌भुत छबि रतिपति चित चोरें ॥२ ॥

□ राग नट □ (२) छबीलो गोपाल झूले छबीले हिंडोलना ॥ छबीलेसे खंभ दोऊ डांडी चार छबीली छबीले जराय हीरा हेम अमोलना ॥१ ॥ छबीली गोपी झुलावें छबीली बानी सुनावें छबीली हसन मुख छबीलेसे बोलना ॥ छबीलोसो घन गाजे छबीली मुरली बाजे छबीली यमुनातट कदंब विलोलना ॥२ ॥ छबीली नवेलीकुंज छबीली मधुपगुंज छबीले

प्रीतमप्यारी करें झकझोंलना ॥ छबीलो गोकुल पति प्यारो गिरिधारीलाल छबीली राधासंग करत कलोलना ॥३ ॥

□ राग नट □ (३) व्रजयुवति संग लाल झूलत वृन्दावन मध्य पचरंग सोहत सुरंग हिडोरें ॥ नट अलाप लेत सुघर राग रंग विहंसविहंस झोटादेत चहूँदिश मिल विहंस थोरें थोरें ॥१ ॥ रत्नखचित खंभनकी कांति मानों प्रकटभई विविध भांत पहेरें तन चूनरी रंगबोरें ॥ तेसीये उठत चढत घटा चहूंदिशतें घनगरजत दामिनी दुर दुर देखत विचविच चित चोरें ॥२ ॥ तेसीये हरियारी भूमि तेसेई शुक कोकिला बोलत डोलत संयुत अपने जोरें ॥ तेसेई पिय मदनमोहन उर हंसलई कंठ राधा यह छबि देख विथकित व्रजजन तृणतोरें ॥३ ॥

□ राग नट □ (४) आज सखी नव कुंजमहल में झूलत सुरंग हिंडोरे हैं। स्यामा स्याम चित चोरे हैं दोउ अरसपरस दग जोरे हैं ॥१ ॥ नव कदंबकी डार डार प्रति सुरंग पाटकी डोरें हैं। रंग बोरे हैं रतनजटितकी पटुली मनो रवि भोरे हैं ॥२ ॥ जमुना निकट नवल हरियारी सीतल पवन झकोरे हैं। घनघोरे हैं मन्द मन्द सुर बोलत अलि पिक मोरे हैं ॥३ ॥ झोंटा बढत निकट चलि आवत जमुना नीर हिलोरें हैं। मन भोरे हैं डरप तिया उर लागत नेन निहोरे हैं ॥४ ॥ रुचिर काछनी लटक मुकुटकी उडत पीत पट छोरे हैं। फबी कोरें हैं पचरंग सारी राज रही तन गोरे हैं ॥५ ॥ गावति सखी सुघर ललितादिक मिलि मलार धुनि थोरे हैं। रस घोरे हैं बीच बीच मिलवत मधुर मृदंग टकोरे हैं ॥६ ॥ याही रस विलसो निसिवासर रितु पावस सुख कोरे हैं। व्रज खोरे हैं निरख निरख छबि व्रजाधीश तृन तोरे हैं ॥७ ॥

□ राग नट □ (५) झूलत व्रजराज कुंवर संजूत वृषभानु सुता कुंज सदन में हिंडोरनां बिराज हीं ॥ अंग अंग सोहत सिंगार पीतांबर नीलांबर गौर स्याम जोरी बनी परम छाज हीं ॥१ ॥ बैठे भुज ग्रीवा धरे भाव तें बिनोद करें रति पति अभिमान हरें सनमुख दृग छाज ही ॥ सहचरी ललिता बिसाखा चंद्रभगा मिलि गावति ताल मृदंग झांझ मुरली मधुर बाज

हीं ॥२ ॥ गरजत घन मंद मदं चात्रक पिक मोर रटत पिय प्यारी बिहरत व्रज त्रीय समाज हीं ॥ 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर निरखि लोचन सिरात यह छबि देखत मन सत काम लाज हीं ॥३ ॥

□ राग नट □ (६) हिंडोरे झूलत रंग रंगीले ॥ नव निकुंज रस पुंज सदन में छबि सौं छबीले ॥१ ॥ नव भूषन नव बसन अंग अंग नव नव नेह नवीले ॥ नव वृषभानु सुता नंद नंदन महारस मत्त छकीले ॥२ ॥ इत नव तरुनी मेंन मन हरनी चहूँ दिस रही फबीलें ॥ निरखि हरखि झुलवति अरु गावत तान तरंग रसीले ॥३ ॥ सारस हंस चकोर मोर पिक कुंजित मधुप मतीले ॥ सुजान सखी लखि दंपति को सुख नैंन निवास वसीले ॥४ ॥

□ राग नट □ (७) पावस ऋतु कुंज सदन जमुना तट वृंदावन झूलत व्रजराज कुंवर नव हिंडोरनां कनक खंभ सरल बीच डांडी चार अति सुहांई झूमक नव रंग पटुली अति अमोलनां ॥१ ॥ बैठें बनि गुपाल लाल संग व्रज की नवल बाल चहूँ दिस राजें रसाल गोपी टोलनां गावत नट नारायन राग नाचत मंद मुदित नारि झोटा देत विहँसि विहँसि रस अतोलनां ॥२ ॥ बांजे बांसुरी बखांन ठांव बन्यो मधुर साज छायो गान गगन मगन जुवती ढोलनां ॥ मच्यो नवरंग विलास निरखि हरखि 'कृष्णदास' ले बलाय कहे गुनी गिरिवरधर लोलनां ॥३ ॥

□ राग नट □ (८) मुदित झूलावत अपने अपने ओसरें माई नवल हिंडोरोरी साज्यो नवलकिशोर ॥ नवलकसुंभी सारी ओढें नव वधूप्यारी नवभूमि हरियारी शोभित चहूं ओर ॥१ ॥ नवल गीत झुंडन गावें कंचनखंभके ढिग तेसेई वनमें बोलत चातकमोर ॥ नवल घटा सुहाई वरखत थोरी थोरी बूंदे विचविच ये नवघनकी घोर ॥२ ॥ राधेतन नवचूंनरि पट पीत सुंदरश्यामकें उरमणिगण खचित पटुली बैठे एक जोर ॥ कुम्भनदास प्रभु गिरिगोवर्धनधारी लाल नवरस भीजे देत मधुरझकोर ॥३ ॥

□ राग नट □ (९) सुरंग हिंडोरनाहो माई झूलत रंग भरे ॥ तेसीये पियप्यारी पहेरें पीयरो पट कसुंभी सारी ऋतु पावसघन चहूंदिशा

घुमरे ॥१ ॥ तेसोई विश्वकर्मा सुघर अद्भुत मणिमाणिक खचित ठोरठोर रचित रुचिर भांतभांतन जरे ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधर उर हँस हँस लपटात जात सहचरी विचित्र देत झोटकाखरे ॥२ ॥

हिंडोरा राग मालव

□ राग मालव □ (१) आंईं आंई सकल व्रजनारी झूलन हरिके हिंडोरनां ॥ नवसत साज कुरंग नयनी आभूषण तन आछे सुरंगवसन अमोलनां ॥१ ॥ कंचन खंभ आछे जटित माणिक मरुवे मणिवेलन शुभअतोलनां ॥ कुम्भनदास प्रभु गोवर्धनधारी लाल मधुरमधुर देत झोलनां ॥२ ॥

□ राग मालव □ (२) झूलत गोकुलचंद हिंडोरें झुलावत सब व्रजनारी ॥ संगशोभित वृषभाननंदिनी पहेरें कसुंभी सारी ॥१ ॥ पचरंगी डोरी गुहिलीनी डांडी सरससंवारी ॥ आसकरण प्रभु मोहन झूलत गिरिगोवर्धनधारी ॥२ ॥

□ राग मालव □ (३) झूलत हें राधा सुंदरवर सांवन सरस हिंडोरें ॥ दुहूंओर रमकत बाढ्यो रंग व्रजयुवती तृणतोरें ॥१ ॥ वरणवरण पहरें तन अंबर प्रेमविवश दृगजोरें ॥ किलकत हँसत सबे रसलंपट कामत्रिया चितचोरें ॥२ ॥ तिहिंअवसर वर्षत रसबूंदें चहुंदिशा घनघोरें ॥ कल्याणके प्रभुगिरिधर रीझे अति देत पीतपट छोरें ॥३ ॥

□ राग मालव □ (४) झूलत लाल गोवर्धनधारी शोभा वरणि न जाई ॥ वामभाग वृषभाननन्दिनी नवसत अंग बनाई ॥१ ॥ अतिसुकुमार नारि डरपतहें मोहन उरहि लगाई ॥ नीलपीतपट फरहरातहें घनदामिन दुरजाई ॥२ ॥ मानों तरुण तमाल मल्लिका अंगअंग अरुझाई ॥ गौर श्याम छबि मरकत मणिपर कनकवेलि लपटाई ॥३ ॥ सुरतसुधा विलसत दोउजन सब सहचरीं सुखपावें ॥ चतुर्भुजप्रभु लाल गिरिधर यश सुरनर मुनि मिलगावें ॥४ ॥

□ राग मालव □ (५) गृहगृहतें आईं व्रजसुंदरि झूलत सुरंग हिंडोरें ॥ वरणवरण पहरें तनसारी नवलनवल रंगबोरें ॥१ ॥ झूलतसंग लाल गिरिधरके अति छबि नवलकिशोरें ॥ नेन्हीनेन्ही फुहीं परत बादरतें श्यामघटा घनघोरें ॥२ ॥ कबहुंक रीझभीज उरलागत प्रीतमको चितचोरें ॥ कल्याणके प्रभु गिरिधर रसभीजे प्रेम उमग झकझोरें ॥३ ॥

□ राग मालव □ (६) नवलराय गोवर्धनधारी झूलवत सुरंग हिंडोरें ॥ संगलियें वृषभाननन्दिनी रमकत थोरें थोरें ॥१ ॥ तेसीये नवल नवल व्रजसुंदरि आंई झुंडनजोरें ॥ निरख निरख वे वदनकमल तन हँसत ओट मुखमोरें ॥२ ॥ वरनवरन पेहेरेंतन सारी नवलनवल रंगबोरें ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर मनमोहत चपल नयनकी कोरें ॥३ ॥

हिंडोरा राग गौरी

□ राग गौरी □ (१) हिंडोरें झूलन कों सब आंई ॥ नये नये चीर कसुंभी सारी पहिरें गावत तान सुहाई ॥१ ॥ बाजत ताल मृदंग मुरलिका किंकिनि सब्द सुनाई ॥ तारी दे दे हँसत परसपर आनंद उर न समाई ॥२ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोईल सब्द सुहांई ॥ यह छबि निरखि निरखि जुवती जन 'परमानँद' बलि जाई ॥३ ॥

हिंडोरा - राग मारू

□ राग मारू □ (१) प्यारो प्यारी झुलत सुरंग हिंडोरें ॥ दुहुं ओर सखी झुलवत गावत सुरमंडल केलघोरें ॥१ ॥ देखतवनें कहेत नहि आवे शोभा सिंधु हिलोरें ॥ जगमगात दामिनी ज्यों भामिनी मृदुमुसकन चितचोरें ॥२ ॥ सजल नीलघन तनगिरिधारी शोभा सिंधु झकोरें ॥ युगलकिशोर नवल बांनिकपर गोवर्धनेश तृणतोरें ॥३ ॥

हिंडोरा - राग सोरठ

□ राग सोरठ □ (१) हिंडोरें गिरिवरधारी झूलें ॥ वाम अंस राजत

श्रीराधा मन्मथ नही समतूलें ॥१ ॥ सहचरीं जाल दुहूंदिश ठाडीं वृक्षवृक्षके मूलें ॥ मंद समीर वहे सुखकारी कालिंदीके कूलें ॥२ ॥ झोटा मंददेत व्रजसुन्दरि मुसकि मुसकि तनफूलें ॥ रसिकरायकी शोभा निरखत देहदशा सब भूलें ॥३ ॥

□ राग सोरठ □ (२) आज दोऊ झूलें रंग हिंडोरें ॥ मानों घन दामिनी बनठन बैठे गौर स्याम समतोलें ॥१ ॥ चहूं ओर सहचरी झुलावें झोटा देत अनुकूलें ॥ इच्छाराम गिरिधरन लाडिली देखदेख छबि फूलें ॥२ ॥

□ राग सोरठ □ (३) झूले राधिका रसभरी ॥ध्रु० ॥ प्रथमही पग दियो पटुली बूझि आछी घरी ॥ हेतके द्वे खंभ तापर प्रीतिकी बल्ली धरी ॥१ ॥ मदन मरुवा जगमगे रसरीतकी डांडी करी ॥ चतुर आपुही गढी नेह नगसों जरी ॥२ ॥ सकल सुखकी सीमा जाके संगहें सहचरी ॥ एक वेसि विलासनेनी एक सांचे ढरी ॥ अंगकी छबि कहालों वरनो दामिनीकी द्युति हरी ॥३ ॥ प्रेमभक्ति सिरोमनि चहुंचक फेर छरी ॥ जन गोविंद बलवीर बिहारी जानि गिरिधर वरी ॥४ ॥

हिंडोरा - राग काफी

□ राग काफी □ (१) झूले नवलबिहारी प्यारो लाल झूलावन आईयां ॥ सुरंग हिंडोरो लालको तहां युगलकिशोर सुहाईयां ॥१ ॥ मणिकंचनके खंभ मनोहर विद्रुमडांडी बनाईयां ॥ पचरंग डांडी पाटकी तहां चोकी लाल जराईयां ॥२ ॥ वरनवरनके फोंदनातहां मोतिनजाल गुहाईयां ॥ निरखत शोभा दंपती जन निरख दास बलजाईयां ॥३ ॥

□ राग काफी □ (२) सघन कुंज की छांह हिंडोरो साज ही ॥ झूलत प्रीतम दोऊ के व्रज वधू गाव ही ॥१ ॥ पुष्प लता द्रुम ठौर ठौर बहु फुल ही ॥ व्रज चंद राधा नारि हिंडोरे झूल ही ॥२ ॥ प्रेम सुधा रस पुर सौं झोटा देति ही ॥ निरखि 'गदाधर दास' चरन रज लेति ही ॥३ ॥

□ राग काफी □ (३) सघन कुंज की छांह हिंडोरो साजही। तहां झूलत

प्रीतम दोऊ सो व्रजवधू गाजही ॥१ ॥ पुष्प लता द्रुमडोर बहु कुल राजही ॥ व्रजचंद्र श्रीराधा नारि लता मध्य झूलही ॥२ ॥ प्रेम सुधारस पूरसों झोटा देतही ॥ निरखि गदाधर जाय चरन के मूलही ॥३ ॥

□ राग काफी □ (४) आजु बने व्रजराज हिंडोरे झूल ही ॥ चलि सखी देखन जाई हरखि मन फूल हीं ॥१ ॥ कुंजन की परछांई हिंडोरो साजहीं ॥ पुष्प लता में मोहन स्यामा राज हीं ॥२ ॥ जमुना नीर गंभीर के तीर सुहाव हीं ॥ झुलवन आंई व्रज बाल परसपर गाव हीं ॥३ ॥ कुंजन कुंजन कूकत कोकिल राग हीं ॥ तेसेई नाचत मोर फूलें द्रुम बाग हीं ॥४ ॥ सुर विमान सब कोतिक देखत आव हीं ॥'सरस रंग' बलि जाय सो यह जसु गाव हीं ॥५ ॥

□ राग काफी □ (५) झूलत जुगल किसोर सो सुरंग हिंडोरनां ॥ गरजत गगन चहूँ दिस पवन झकोरनां ॥१ ॥ कोकिल कुंजत कुंजन सब्द सुहावनी ॥ चहूँ दिस चमकें बीज पीया मन भावनी ॥२ ॥ दोऊ खंभ डांडी चारि विश्वकर्मा घडी ॥ पटुली पीरोजा लाल सौं चौकी हीरा जडी ॥३ ॥ व्रज जन मन आनंद ब्रह्मादिक हरख हीं ॥ नाना विधि के फूल वर्षा ज्यों बरष हीं ॥४ ॥ जुवती करति कलोल सों ज्यों घन गाज हीं ॥ ताल मृदंग उपंग विविध धुनि बाज हीं ॥५ ॥ 'चतुरभुज' प्रभु गिरिधरन लाल संग झूल हीं ॥ एसी सोभा देखि सबे मन फूल हीं ॥६ ॥

□ राग काफी □ (६) आजु वृंदावन रंग हिंडोरो सुहायो हें ॥ नव पल्लव द्रुम पाँति सघन बन छायो हें ॥१ ॥ कुल सुरंग मंद मलयानल आयो हें ॥ तहाँ बैठे जुगल रस कंद सो अति मन भायो हें ॥२ ॥ चित्र बिचित्रित भेष सबे तन साज हीं ॥ इक तें इक विसेष रूप गुन राज हीं ॥३ ॥ अद्‌भुत रंग अनंग बढ्यों अति भारी हें ॥ नटवर जुगल किसोर झुलावत नारी हें ॥४ ॥ नाना बिधि के साजि रहे ऋतुराज हीं ॥ निरखति नवल बाल सों बाजें बाज हीं ॥५ ॥ स्याम सुभग श्री स्यामा के संग बिराज हीं ॥ 'सरस रंग' लीला रस वैभव छाज हीं ॥६ ॥

हिंडोरा के पद - राग कल्याण

□ राग कल्याण □ (१) झूलत स्याम प्रियासंग रंगहिंडोरना ।। वरणवरण अबरतन पहेरें व्रजयुवती जन गावत कल गीतन चित चोरना ।।१ ।। तेसीये ऋतु सांवन मन भावन हरियारी भूमि मंदमंद गरजत घन घोरना ।। देसेई पिक चातक बन बोलत अति आनंद भर केकी कीर कुलाहलको ओरना ।।२ ।। सहचरी चहुंओरतें झूलवत अति आनंद भर पटतर द्युति दामिनी घनघोरना ।। पिय बिहारी लाल ललित दंपति अति आनन्द भर प्रेमविवश जानत न निश भोरना ।।३ ।।

□ राग कल्याण □ (२) झूलत लाल प्रिया वन एहो हिंडोरना ।। भूषण अंग अंग पेहेर आईं झूमझुंडन जुर गावत अनभांतन चितचोरना ।।१ ।। तेसीये ऋतु सांवन मन भावन हरियारी भूमि रमकन पियप्यारी चोंपजोरना ।। पिय विहारी लाल रागरंग गावत अति आनन्दभर गरजन फूहीं वरसन घनघोरना ।।२ ।।

□ राग कल्याण □ (३) रमक झमक झूलें झुलावें युवती राधा प्यारीकों हिंडोरें ।। तेसीये कसुंभी सारी पेहरें तेसेंही वरण वरण चहुंदिशा घनघोरें ।।१ ।। याहीतें दुर दुर जात दामिनी होय संकेत तहां स्याम देखत द्युतिगात गोरें ।। कल्याणके प्रभु गिरिधर रीझवस भये डारतहें तृणतोरें ।।२ ।।

□ राग कल्याण □ (४) हिंडोरे झुलतहें सतभाय ।। तरलकीये झोटा पाछेतें पिया अचानक आय ।।१ ।। औचकपरी पहिचान निरख मुख नयननरहीं लजाय ।। विथकित गति व्रजनाथजान हँसलीनी कंठ लगाय ।।२ ।।

हिंडोरा के पद - राग ईमन

□ राग ईमन □ (१) सेनकामकी लायो सो सांवनआयो ।। चलसखी झूलियें सुरत हिंडोरें कीजे श्याममन भायो ।।१ ।। हावभावके खंभमनोहर कच घन गगन सुहायो ।। कामनृपति वृषभान नंदिनी रसिकराय वरपायो ।।२ ।।

□ राग ईमन □ (२) लालनतो हों झूलों जोतुम होलें होलें झुलावो ॥ डरपतहों घन श्याम मनोहर अपने कंठलगावो ॥१ ॥ हों उतरों तुम झूलो मेरे मोहन जेसें जेसें गाऊं तेसें तेसें गावो ॥ रसिक प्रीतम पिय यही विनती तनकी तपत बुझावो ॥२ ॥

□ राग ईमन □ (३) झूलोझूलो हो मन भावन तेसीये आई ऋतुसावन ॥ तेसेई बोलत बनमोर सुहाये तेसीये दामिनि कोंधत चहुंदिशतें तेसेई लागेरी पिकगावन ॥१ ॥ तेसेई श्याम अभिराम सजल बादर सादर लागेरी जुर आवन ॥ तेसीये बूंदन छबि तेसीये हरित भूमि पिय अनुराग बढावन ॥२ ॥ तेसोई वहेत शीतल सुगंध मंद पवन युवती अतिरस उपजावन ॥ तेसीये लहेलहात लता सघन वन पियढिंग ठोर बतावन ॥३ ॥ दादुर शब्द करत चहुंदिशतें सुरत सोर दुकावन ॥ गरजत घन स्वरघोर घुमडकर पिय आगमन सुनावन ॥४ ॥ पहरें कसुंभी सारी नारीं जुरआईं अब सब तुमही झुलावन ॥ कुंजमहलमें सुरंग हिंडोरो रोप्यो पियकेढिंग बैठावन ॥५ ॥ रसिक प्रीतमकों यह विध भामिनि मधुरवचन कहि लागी झुलावन ॥ श्रीवल्लभ पदरज वल्लभकों दीजें पदरजपावन ॥६ ॥

□ राग ईमन □ (४) सोहत वन आयोरी सांवन हरियारो ॥ हरित भूमि पर इंद्रवधूसी राधिका सब सखियनसंग लीने पहरें कसुंभी सारी कंचन तन ॥१ ॥ रंगभर सुरंग हिंडोरें झूलत नवनागरी नागरमानों रंगच्वे चल्योहे एडी अंगुरिन ॥ सूरदास मदनमोहन पियके गुणगावत ये सुखअति आनन्द मग्नमन ॥२ ॥

□ राग ईमन □ (५) माई झूलतहें रंगहिंडोरें शोभा तनश्याम गौरें नीलपीत पट घन दामिनीके भोरें ॥ गोपीजन चहूं ओरें झुलवत थोरेंथोरें पवन गमन आवें सोंधेकी झकोरें ॥१ ॥ शोभा सिंधु मनमोरें नयननसों नयना जोरें रीझ प्राण वारतहें छबिपर तृणतोरें ॥ सूरदास मदनमोहन चित चोर्यो मुरलीकी घोर सुनि सुरवधू शीशढोरें ॥२ ॥

□ राग ईमन □ (६) मदन मदमाती हरि संग झूले आकों भर फूले ॥

कबहूं अधर रस पान करत कबहूं मुख चूंमत कबहूं तनकी सुधि भूले ॥१ ॥ कबहूं लेकर अपने पीयको ऊर धर राखत कबहूं हँसत ठालेठूले ॥ रसिक प्रीतमसंग यह विधि भामिनी हरत बिरहकी शूले ॥२ ॥

□ राग ईमन □ (७) झूलन लागेहो पिय पानखात मुसकात जात नखशिख शोभा सदन गौर श्यामगात ॥ लोचन विलोच पोच ललिताकी ओटनमें हावभाव झोटनमें करत ललित गति बात ॥१ ॥ दरपन दोऊ देखत दृगनमें न अघात मुरली धरें करत त्रिभंगीगात ॥ रमकनमें गान करत सुधे स्वर नंददास भ्रुवविलास मंद हास मदन मदचुवात ॥२ ॥

हिंडोरा के पद - राग अडानो

□ राग अडानो □ (१) राधेजू झूलत रमक-रमक ॥ मणि कंचनको सुरंग हिंडोरो तामध्य दामिनि चमक-चमक ॥१ ॥ गावत गुण गिरिधरनलालके उठत दशनद्युति दमक-दमक ॥ बाढ्यो रंग गदाधर प्रभु जहां गयो हे मदन तहां तमक तमक ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (२) झूलन आईहें हिंडोरें मनमोहन रंगबोरें ॥ एकरंग सरस कसुंभी सारी पहरें कंचुकी सोंधेबोरें ॥१ ॥ पानखात मुसकात जात ओर बात कहत पिय प्यारी चितचोरें ॥ कल्याणके प्रभु गिरिधर रिझवश भये झोटा देत हिंडोरें ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (३) ये घन गरजेरी लरजे दामिनी प्रीतम प्यारी झुलें बांहजोरें ॥ रमक रमक मचकन तेसीये लेत झमक झमक आवें सावन सरोरें ॥१ ॥ सबही एकवेष सबही वे संग छूटी व्रजकी वधू गावें राग हिंडोरें ॥ रतिपति नव व्रजपतिकी बानिकपर बलबल बल तृणतोरें ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (४) हिंडोरोरी व्रज के आंगन माच्यो ॥ वृन्दावनकी सघन कुंजमें जहां तहां रंग राच्यो ॥१ ॥ व्रजकी नारि सबे जुरि आईं गावतहें सुर सांच्यो ॥ रसिक प्रीतमकी बानिक निरखत शंकर तांडव नाच्यो ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (५) झूली झूली रंग हिंडोरें अपने पियाके संग ॥ पावस

ऋतु सुखदाई घटा चहूं ओर आई लगत सुहाई बिच दामिनि दमकें सुढंग ॥१ ॥ बग पंगति अति शोभित तामध्य देख सबको मनमोहे अनंग ॥ रसिक प्रीतमके विविध विलास हास रसवश भई चल न सके मन गति पंग ॥२ ॥

□ राग अडानो □ (६) हिंडोरोरी व्रज के आंगन माच्यो ॥ शिव ब्रह्मादिक कौतुक भूले शंकर तांडव नाच्यो ॥१ ॥ शुक सनकादिक नारद शारद मुनिजन हिंडोरो देखन आये नंदको लाल झुलावत देख्यो बहुत तूठ हमपाये ॥२ ॥ युवती यूथ अटाचढ ठाडीं अपनो तनमन वारें ॥ परमानन्ददासके ठाकुर चित चोर्यो यह कारे ॥३ ॥

हिंडोरा के पद - राग कान्हरो

□ राग कान्हरो □ (१) पियाके सुखकी सरानी झूलत फूलभई ॥ मंदमंद झोटा देत लेत राग कान्हरे की तान हँसत हँसत बात करत मृदुबानी ॥१ ॥ अहो राधे सहचरीं सबे जुर आईं कुमुदिनी फूली लालसारी लाल लहेंगा अंगिया सोंधे सानी ॥ तानसेन प्रभुको सुख निरखत भूल्यो ब्रह्मा भूल्यो इन्द्र रतिपति रह्योहै लजानी ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (२) सारी सुरंग बनाय श्याम संग झूलें झूलावें कुंजतरें ॥ चोली श्याम लगाय सुनेरी लहेंगा नूपुर नाद करें ॥१ ॥ पियरी पाग उपरेना जगमगे नग भूषण वनमाल गरें ॥ पावस ऋतु गावत केकीपिक व्रजाधीश तन ताप हरें ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (३) झूलत तेरे नयन हिंडोरें ॥ श्रवण खंभ भ्रू भई मयार दृष्टि करण डांडी चहूं ओरें ॥१ ॥ पटुली अधर कपोल सिंहासन बैठे युगल रूप रतिजोरें ॥ कचघन आड दामिनी दमकत मानों इन्द्र धनुष अनुहोरें ॥२ ॥ दुर देखत अलकावलि अलिकुल लेत सुगंधन पवन झकोरें ॥ बरुणी चमर ढुरत चहुंदिशतें लर लटकन फुन्दना चितचोरें ॥३ ॥ थकित भये मंडल युवतिनके युग ताटंक लाज मुख मोरें ॥ रसिक प्रीतम रस भाव झुलावत रीझ-रीझ डारत तृण तोरें ॥४ ॥

□ राग कान्हरो □ (४) मोहन झुलत गैयां बुलाईं ॥ धोरी धूमर काजर पीरी श्रवन सुनत उठ धांई ॥१ ॥ वृन्दावनमें चरतहें धेनु मोहन मुरली बजाई ॥ हो हो होके पुछ फिरावत दोरत सनमुख आई ॥२ ॥ ब्रह्मादिक इन्द्रादिक शंकर देखत रहे लुभाई ॥१ ॥ कुंभनदास प्रभु गोवरधनधर नंद सुवन सुखदाई ॥३ ॥

□ राग कान्हरो □ (५) आज झूली रंग हिंडोरें प्यारी पियके संग ॥ गोरे तन फबी सुरंग चूनरी पीतवसन सोहे सुभग सांवरे अंग ॥१ ॥ तेसेई सुहाये बादर ओल्हर आये वरण वरण सारी पहरें गावत ललिता भर रंग ॥ चतुर बिहारी बिहारिन छबि पर वारों कोटि अनंग ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (६) ये व्रज घोषनारि आईहें जु बनठनि झूलन कुंवर वर रावरे ॥ सुन सिंघद्वार झनकार जेहरि की तेहरि विछुवा पायल पांयन धरत सुढार पगधरनी चावरे ॥१ ॥ रमकन झमकन घनदामिनि ज्यों प्यारीकीयो पिय हावभावरे ॥ कल्याणके प्रभु गिरिधरन रसिकवर प्यारीकों लई उठाय नील उदधि मध्य संगकी सखीं बैठीं नेहनावरे ॥२ ॥

हिंडोरा के पद - राग केदारो

□ राग केदारो □ (१) तैसीये पावस ऋतु आई तामें झुलत हिंडोरें पियप्यारी रसरंग भर्ये ॥ मंदमंद गरजत ओर दामिनी दमकत कोकिल गावत दादुर सुरदेत नयेनये घन उनये ॥१ ॥ पियको पिछोरा पाग प्रियाकी कसुंभी सारी मुक्ता के आभूषण अंगठये ॥ रसिक प्रीतमकी बानिक निरखत नयनके ताप गये ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (२) ओल्हर आईहो घन घटा हिंडोरें झुलतहें श्यामा श्याम ॥ कंचनखंभ जटित डांडी पटुली लर मोतीबारी पीतवसन फरहरात भृकुटी जीते कोटि काम ॥१ ॥ बनींहि अद्‌भुत जोरी उपमाकों दीजें कोरी झोटा देत मिल व्रजकी वाम ॥ आनंद बाढ्‌यो ठोरठोर नाचतहें मोरीमोर यह सुख निरख निरख सूर पायो हे सुखधाम ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (३) झुलन आईं झुंड सहेली नवल लाल गिरिधरसंग ॥ तेसीये कसुंभी सारी ओढें नववधू प्यारी बेंनीगुहीहे चमेली ॥१ ॥ मधुरे स्वर गावत केदारो प्रेम भुजा हरि उरमेली ॥ कृष्णदास प्रभु झुलवत भामिनि कहिकहि बोलत हेली ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (४) एरी हिंडोरना झूलन आईं बोलीहे श्याम सुहाई ॥ तेसेई श्याम षोडश वरसके तेसेई खटदश वरस एकदाई ॥१ ॥ एकवेष एकरूप रसिक गुन सब श्यामा पीयमन भाई ॥ धोंधीके प्रभु दंपती परस्पर आपुन रीझ रिझाई ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (५) श्यामा श्याम मिल बैठे हिंडोरें दोऊ मिल झूलत ॥ रसकी बात परस्पर मिलवत गरें बांहधर फूलत ॥१ ॥ कबहुंक आनंद भरभर गावत कबहुंक तनकी सुधभूलत ॥ रसिक प्रीतमकी बानिक निरखत अनंग नाहि समतूलत ॥२ ॥

□ राग केदारो □ (६) एरी हिंडोरें झूली रमक-रमक कामिनी विहंस विहंस ॥ तेसीये कसुंभी सारी पहरें तेसीये कंठमाल तेसीये लाल कंचुकीबनी खमक-खमक ॥१ ॥ अलक तिलक मध्य बेंदी जरायकी उठे होरान छबि दमक-दमक ॥ सुघररायके प्रभु दंपति निरख सुख गयो हे मदन तहां तमक-तमक ॥२ ॥

राग जंगलो - हिंडोरा

□ राग सोरठ □ (१) झूलो मेरी प्यारी हिंडोरें ॥ गोपाललाल झुलवत होलें होलें ॥ कंचन रत्न जटितके खंभा डांडी चार अमोलें ॥१ ॥ नौतन वसन आभूषण पहेरें कंचुकी सोंधे बोरें ॥ कज्जल रेख बनी नयननमें प्रीतमको चितचोरें ॥२ ॥ ललितादिक झुलवत खंभन लगि यहरस सिंधुझकोरें ॥ कृष्णदास गिरिधरजूकी बानिक सदां रहो मन मोरें ॥३ ॥

□ राग जंगलो □ (२) रंग हिंडारें सरस झुलाईयांवे ॥ प्यारी देदे तारी गावें ललित कदंबकी डार हींडोरो पचरंग डोरी लगाईयांवे ॥१ ॥ आसपास

ललितादिक गावत सब सखीयन मन भाईयांवे ॥ आनन्द घन सकुमारि लाडिली डरपत गरें लगाईयांवे ॥२ ॥

□ राग जंगलो □ (३) झूलन पर बल बल जांदीयां ॥ प्यारी पहेरें कसुंबी सारी प्यारेके मन भांदीयां ॥१ ॥ हरित भूमिपर बीर बधूसी झुकझुक झोटा खांदीयां ॥ आनन्दघन सकुमार लाडिली तन मन अति हुलसांदीयां ॥२ ॥

□ राग जंगलो □ (४) प्यारी संग झूलन दामानुं चाय ॥ वाके संग झूलना जरूर चन्द सरोवर तीर हिंडोरो रंग रंगली डार ॥१ ॥ कहा करेगी सास नणंदीया ठाडी सबनकुलांय ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत लाग-लाग गरे बांय ॥२ ॥

□ राग जंगलो □ (५) झूलीयें नेंक धीर धीरें एहो लाल झूलीयें नेंक धीरे धीरें ॥ काहेकों इतनी रमक बढावत द्रुम ऊरझत चीरें-चीरें ॥१ ॥ तुम तो झुक-झुक झोटनके मिस आवत हो नीरें-नीरें ॥ नागर काहे लजात न काहू भुजन भीरें-भीरें ॥२ ॥

□ राग जंगलो □ (६) तो संग निर्लज होय सो झूले ॥ हों जब झूला डोर गहत हों खेंचत लपक दुकूले ॥१ ॥ भोरही जाय जुदी झूलोंगी कालिन्दीके कूले ॥ हों सकुचों जीय ललित किशोरी तू मनही मन फूले ॥२ ॥

□ राग जंगलो □ (७) प्यारो प्यारी झूले कदमकी डारियां । घन जु गरजे दामिनी दमके चहुं दिस गोपकुमारियां ॥१ ॥ गौर स्याम मुखचंद परस्पर रहत निहार निहारियां । 'पुरुषोत्तम' प्रभुकी छबि निरखत छबि पर बल बलहारियां ॥२ ॥

हिंडोरा के पद - राग बिहाग

□ राग बिहाग □ (१) झुलत गिरिधरलाल यह छबि मोपें बरनी न जाई ॥ रतनजटितको सुरंग हिंडोरो लागत परम सुहाई ॥१ ॥ तेसोई ओढें पीत उपरना कसुंभी पांग धसि आई ॥ संगराजत वृषभानुनंदिनी उर वनमाल रुराई ॥२ ॥ निरखि निरखि फूलत व्रजसुंदरि आनन्द उर न समाई ॥

श्रीविट्ठल गिरिधरन पिया सब युवतिनके सुखदाई ।।३ ।।

□ राग बिहाग □ (२) ये दोऊ झुलतहें बांहजोरें ।। नवलकुंजके द्वारें ।। देखो रमकतहें चहुंओरें ।।१ ।। सप्त सुरनमिल मुरली बजावत बिचबिच तान लेत रस थोरें ।। हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजबिहारी छबि निरखत तृन तोरें ।।२ ।।

□ राग बिहाग □ (३) सुरंग हिंडोरें झूलें नागरी नागर दोऊ दंपति अंगअंग सुखदाई माई ।। सुन्दर श्यामके संग शोभित गोरी भामिनी जानों घनदामिनी तेसीये पावस ऋतु परम सुहाई माई ।।१ ।। पीतपट लाल सारी कसुंभी छबिभारी तेसेई मणि खचित मरुवे विविध बनाई ।। कुंभनदास गिरिधरको सुयश गावें ललितादिक देखत रतिपति गयोहे लजाई ।।२ ।।

□ राग बिहाग □ (४) राधेके संग सुभग गिरिवरधर लाल ललित झूलतहें आनन्द भर नवसुरंग हिंडोरें ।। दोऊजन अभिराम श्यामा श्याम छबि निरख निरख सुदामिनी मानों जातहें घनघोरें ।।१ ।। उरपर वनमाल सोहे उपरेना उडत ऊपर अरुण चारु चटकीली चूनरी रंग बोरें ।। छीतस्वामी जलदको मानों अंकुश किये विलसतहें वरषत सुख रहि जातहें व्रजजन चितचोरें ।।२ ।।

□ राग बिहाग □ (५) झुलेरी झुलेरी झूलें प्यारो लाल झूलें ।। सुरंग हिंडोरो रोप्यो यमुनाके कूलें ।।१ ।। तेसीये सुहाई लागे द्रुमलता फूलें ।। रसिक प्रीतम देखें गई उर सूलें ।।२ ।।

□ राग बिहाग □ (६) अरीये झुलत दोऊ लालन गिरिवरधारी व्रजजन मन हारी संग राधिका प्यारी ।। गावत ऊंचे स्वर भारी किंकिणी नूपुर ध्वनी उपजत न्यारी न्यारी ।।१ ।। झोटा देत ललितारी त्रिविध वहे मलयारी यह सुख कहत न आवे रमकत रंग रह्यो भारी ।। मंदमंद घनगरजेरी श्रवणनकों सुखकारी ये दोऊ युगल रसिक इनपर गोविंद बलि बलिहारी ।।२ ।।

□ राग बिहाग □ (७) हा हा नेक हरें हरें झूलो विहारीजू वारीहों सारी संभारूं ॥ पटली पग ठहरात नही थरहरात पिंडुरी फरहरात दुकूलो ॥१ ॥ टूट्यो हार गजरा गिरगयो छूट गई कबरी खस्यो सीस फूल्यो ॥ श्रीगोकुलनाथजू प्यारे तिहारी संभार नाहीं अहो अजहूल्यो ॥२ ॥

□ राग बिहाग □ (८) चलो तो देखन जैयें नंदके भवन ॥ हिंडोरें झूलत प्यारो राधिका रवन ॥१ ॥ पावस प्रबल ऋतु अति सुखदाई ॥ थोरी थोरी बूंद वरसें नवघन माई ॥२ ॥ झूलावत झोटा देदे पग पगसों प्राणेश ॥ बाला सुकुमारि डरपे लधु वधु वेश ॥३ ॥ हरें हरें झूलो हरि बाला बोली आन ॥ कुंवर रीझकें देत मुख बीरीपान ॥४ ॥ यह सुख देख देख सखी सचु पावें ॥ कवि को वरनसके गदाधर गावें ॥५ ॥

□ राग बिहाग □ (९) घनघटा वनघटा अलीघटा आलीघटा झुलतहें दोऊ रूप रंगकी घटनमें ॥ बंसीबट शुभ घटा तहां नांचे मोर नटा रोप्योहे हिंडोरो घटा लतन पतनमें ॥१ ॥ खंभ द्युति घटा ओर पास हे दामिनी घटा भूषण हे घटा कदंब झपटनमें ॥ हाव घटा भर झोटा देत आगे पाछे घटा ओर स्याम अंग घटा शोभाकी छटनमें ॥२ ॥ स्वर हे संगीत घटा झील घोर मध्य घटा गरजत संगीत गाजे रागकी रटनमें ॥ कल्याणके प्रभु गिरिधर हास सुखविलास घटा सजनी देखियत यमुना पुलिनमें ॥३ ॥

□ राग बिहाग □ (१०) राधाके रंग भुवन आये व्रजराज सुवन झूलत आनन्द भरें रंग रह्यो भारी ॥ अति प्रवीन रूप रास अंगअंग अनंग बास मधुर हास भयो उजास चंदबधुवारी ॥२ ॥ देत झोटा छोटा मोटा जोट कामिनी शोभा लटकत हें हार हीयें झलकत पटसारी ॥ चीर खसत फूल धसत बेनि प्रतिबिंब लसत रामदास प्रभु गिरिधर नेन भरि निहारी ॥२ ॥

हिंडोरा राग सारंग

□ राग सारंग □ (१) झूले हिंडोरें सांवरो वाकीशोभा बरनी न जाय ललना ॥ यमुनातीर सुभग कुंजनमें रच्योहे हिंडोरो आय ॥ ललना ॥१ ॥

कंचनके द्वे खंभ बिराजत डांडी चार सुहाय ॥ ललना ॥ चोकी खचितहे पांचपिराजा हीरा रत्न जडाय ॥ ललना ॥२ ॥ पटुली हेम जडावकी जोरी लाल बनाय ॥ ललना ॥ दादुर मोर पपैया बोले थोरी थोरी बूंद सुहाय ॥ ललना ॥३ ॥ गृह गृहतें सब सुंदरी चली देखन नंदलाल ॥ ललना ॥ निरख निरख मुख देत झोटिका पुष्पन वृष्टिकराय ॥ ललना ॥४ ॥ आरती करत जसोदामैया मोतिन चोक पुराय ॥ ललना ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलालकों श्रीराधा झूलावन आय ललना ॥५ ॥

हिंडोरा राग पीलू

□ राग पीलू □ (१) झुलत है नंदलाडिलो व्रज ललना हो। जमुनाजीके तीर वृन्दावनकुंजमें व्रज ललना हो ॥१ ॥ सब मिल हरख झुलावही व्रज०। निजजनकी भई भीर वृन्दावन० ॥२ ॥ कनक खंभ मरकत मनि व्रज०। डांडी हेम जराय वृन्दावन० ॥३ ॥ पन्ना नग पटुली करी व्रज०। चौकी हेम जराय वृन्दावन० ॥४ ॥ मरुवा मानिकसों जडे व्रज०। पटुली पिरोजा पाँत वृन्दावन० ॥५ ॥ बैलन रची पुखराजकी व्रज०। कहा बरनों बहु भाँत वृन्दावन० ॥६ ॥ नीलमनिनके फोंदना व्रज०। बीच-बीच धातु प्रवाल वृन्दावन० ॥७ ॥ मोतिन झालर गूंथके व्रज०। जोतिब इन्दु रसाल वृन्दावन० ॥८ ॥ चोखट सजी गोमेदकी व्रज०। हरित भूमि सुखदाय वृन्दावन० ॥९ ॥ चढी घटा घनस्यामकी व्रज०। रस-बरखा बरखाई वृन्दावन० ॥१० ॥ रसिक दोऊ मिल गावही व्रज०। रितु रस राग मल्हार वृन्दावन० ॥११ ॥ बीन मृदंग सुर बाँसुरी व्रज०। रची जु रसिक चटसार वृन्दावन० ॥१२ ॥ तीज त्योहार मनावही व्रज०। सब मिलके व्रजबाल वृन्दावन० ॥१३ ॥ रमक झमक झुलवत सबै व्रज०। करत परस्पर ख्याल वृन्दावन० ॥१४ ॥ श्री राधा रसवस भई व्रज०। स्याम सुन्दर वर पाय वृन्दावन० ॥१५ ॥ यह सुख सोभा निरखके व्रज०। रामदास बलि जाय वृन्दावन० ॥१६ ॥

हिंडोरा झूलि उतरवे के पद

□ राग मल्हार □ (१) हिंडोरें माई झूलतरंग रह्यो ॥ व्रजसुन्दरि मिलि देखन आईं मंगलचार ठयो ॥१ ॥ मातयशोदा करत आरती मोतिनथार लियें ॥ चढविमान सुर देखनआये पुष्पन वृष्टि कियें ॥२ ॥ करत न्योछावर लेतबलैया बहुविध दान दयो ॥ सूरदास प्रभु फिर झुलेंगे सुखव्रजवास छयो ॥३ ॥

□ राग मल्हार □ (२) हिंडोरे माई झूलि उतरें नंदलाल ॥ सकलसिंगार कियें अंग शोभित चंचलनेन विशाल ॥१ ॥ श्यामाश्याम मनोहर सुंदर तिलक दियोहे भाल ॥ मैया आरती उतारत वारत गावत गीतरसाल ॥२ ॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी बीना वेणु रसाल ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधरनागर रसवस भईं व्रजबाल ॥३ ॥

□ राग खमायची □ (३) झुकी झुकी झूलत लाल विहारी। संग झूलत वृषभाननंदिनी पहरें कसुंभी सारी ॥१ ॥ ललितादिक मिल बेनु बजावत गावत तान सँवारी। रंग मच्यो जमुनातट कुंजन सुघरराय बलिहारी ॥२ ॥

□ राग खमायची □ (४) हिंडोरेतें उतरे लाल विहारी। रमकनि ठमकनि उतरि राधिका कोटि चन्द उजियारी ॥१ ॥ गोपीजन सब पाय परत हैं राई लोन उतारी। कर मुरली ले बेनु बजावत गोकुल चले हैं मुरारी ॥२ ॥ जैजैकार ब्रह्मादिक बोले पुष्पन-वृष्टि कराई। परमानन्ददासको ठाकुर व्रजजनके सुखदाई ॥३ ॥

पवित्रा धरायवे के पद (श्रावण सुद ११)

□ राग सारंग □ (१) पवित्रा पहरत गिरिधरलाल ॥ रुचिर पाटके फोंदना करि करि पहरावत सब बाल ॥१ ॥ आसपास सब सखा मंडली मानो कमल अलिमाल ॥ कुंभनदास प्रभु त्रिभुवन मोहन गोवर्धनधरलाल ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (२) पवित्रा पहरत राजकुमार ॥ तीन्यो लोक पवित्र कियेहें श्रीविट्ठल गिरिधार ॥१ ॥ अतिही पवित्र प्रिया बहु बिलसत निरख

मगन भयो मार ॥ परमानन्द पवित्रकी माला गोकुलकी निजनार ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३) पवित्रा पहरत श्रीगोकुल भूप ॥ श्रावण शुक्लपक्ष एकादशी मंगलको निजरूप ॥१ ॥ आनंद चारु रसिकवर सुन्दर परमानन्द रस रूप ॥ वृन्दावनको चंद्र श्रीवल्लभ छिनछिन रूप अनूप ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (४) पवित्रा पहरत गिरिधरलाल ॥ तीन्यो लोक पवित्र कियेहैं श्रीविठ्ठल नयन विशाल ॥१ ॥ कहा कहों अंग अंगकी बानिक उर राजत वनमाल ॥ विष्णुदास प्रभु गोकुल महियां विहरत बालगोपाल ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (५) पवित्रा पेहरन को दिन आयो ॥ केसर कुंकुम रसरंग वागो कुंदनहार बनायो ॥१ ॥ जयजयकार होत वसुधापर सुरमुनि मंगलगायो ॥ पतित पवित्र किये सुख सागर सूरदास यशगायो ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (६) पवित्रा पहरत गिरिधरलाल ॥ सुंदरश्याम छबीलो नागर सकल घोख प्रतिपाल ॥१ ॥ हँस मनहरत हमारो मोहन संग नागरीबाल ॥ फुलीफिरत मत्तकरिणीवत अति आनन्द नन्दलाल ॥२ ॥ देख स्वरूप ठगीसी ठाडी दंपति दलके साज ॥ परमानन्द प्रभुपर न्योंछावर प्राणप्रियाके काज ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (७) पवित्रा श्रीविठ्ठलेश पहरावे ॥ व्रजनरेश गिरिधरन चंद्रकों निरखनिरख सचुपावे ॥१ ॥ आसपास युवतीजन ठाडी हरखित मंगलगावें ॥ गोविंदप्रभुपर सकल देवता कुसुमांजलि बरखावें ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (८) पवित्रा पहरें श्रीगिरिधरराज ॥ व्रजनारी सब कौतुकभूली आईं छांडगृह काज ॥१ ॥ पचरंग पाटके फोंदना शोभित चंदन अंगबिराज ॥ नख सिख शोभा कहों कहांलों कोटि काम सिरताज ॥२ ॥ श्रावणसुदी एकादशी शोभा फूले संत समाज ॥ कृष्णदास वारणे ततछिन सुख पावे फलराज ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (९) पवित्रा लालनके कंठसोहे ॥ सोनेके गेंदा रूपेके

सूतमें पचरंग पाटके पोहे ॥१ ॥ अतिविचित्र माला बरदेखियत यशोदारानी मनमोहें परमानन्द देख सुखपायो हृदय हरख दृगजोहें ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१०) कनकपवित्रा शोभित श्याम ॥ नगन जटित आभूषण शोभित मध्य विराजत मुक्तादाम ॥१ ॥ अंग अंग चित्र विचित्र विराजत देख विमोही व्रजकी बाम ॥ आसकरण प्रभु मोहन नागर गिरिधर कुंवर देत विश्राम ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (११) बैठे हैं पहर पविता दोऊ निरखत नयन सिरानेहो ॥ राजत रचि रचि कुंज भवन में कोटिक काम लजानेहो ॥१ ॥ रहसि विलास हरत सबको मन अंग अंग सुखसानेहो ॥ परमानंदस्वामी सुख सागर उपजत तान वितानेहो ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१२) पवित्रा पहरें श्रीराजकुमार ॥ तीनों लोक पवित्र किये हें श्रीविट्ठल गिरिधार ॥१ ॥ श्रावण शुक्लपक्ष एकादशी होतहें मंगलचार ॥ करत शृंगार सिंहासन बैठे सब बालक परिवार ॥२ ॥ गृहगहतें सब गावत आवत मोतिन भरभर थार ॥ कुंभनदास प्रभु तुम चिरजीयो श्रीविट्ठल परम उदार ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१३) श्रावण मास शुक्ल एकादशी यशोमति करत बधाई ॥ अतिसुगंध उबटनो उबटिकें सुन्दर श्यामन्हवाई ॥१ ॥ कररिसिंगार बहुभांत परमरुचि मृगमद तिलक बनाई ॥ मोर चंद्रिका शीश विराजत दिश दाहिनी ढरकाई ॥२ ॥ पचरंग पाटबनाय पवित्रा कंचनतार गुंथाई ॥ कुंकुम तिलक दीयो अक्षत धरि नंदलाल पहराई ॥३ ॥ विविध भोग ले आगें राखत तनकजु लियो कन्हाई ॥ आरती वारत अति प्रफुलित मन शोभावरनी न जाई ॥४ ॥ देत असीस सकल व्रज वनिता चिरजीयो तुम दोऊ भाई ॥ श्रीविट्ठल पदरज प्रतापतें हरिजीवन सुखदाई ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (१४) पवित्रा श्रीविट्ठलेश पहरावत ॥ व्रजनरेश गिरिधरन चंद्रकों निरख निरख सचुपावत ॥१ ॥ कुंकुम तिलक ललाट

दियें नव व्रजजन मंगलगावत ॥ बाजत ताल पखावज बीना सुन चहूंदिशतें धावत ॥२ ॥ हरख हरख अवलोक वदन छबि नीरांजन उतरावत ॥ गोविंदप्रभु गोवर्धनवासी चरणकमल उरलावत ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१५) पवित्रा पहरें श्रीगिरिवरधारी ॥ अतिविचित्र पहरें अंगभूषण लागतहें सुखकारी ॥१ ॥ विविध रंग पाटके लेकें कीनेहें सरस संवारी ॥ मंगल शब्दहोत तिहिं अवसर गावत मिल व्रजनारी ॥२ ॥ प्रफुल्लित वदन कमल अवलोकत त्रिभुवन शोभाभारी ॥ गोविंदप्रभु गिरिराजधरनपर कोटिक मन्मथवारी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१६) पवित्रा पहरें श्रीगिरिवरधारी ॥ वृषभाननंदिनी संगराजतहें अंगअंग छबि न्यारी ॥१ ॥ हाटक पहोप पाट पचरंगके उरमाला ढिंग सोहें ॥ निरखत नयन मेन गति थाकी जो देखे सो मोहें ॥२ ॥ शोभासिंधु सकल सुख सीमा मांगत गोदपसारी ॥ परमानन्द पहेराय पवित्रा निरख थकीं व्रजनारी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१७) पहेरत पाट पवित्रा मोहन नंदरानी पहेरावे ॥ जंबुनद कंचनके तारे बिचबिच रतन जरावे ॥१ ॥ पूआ सुहारी ओरही लड्डुवा हँसहँस गोद भरावे ॥ कृष्णदास गिरिधरके मंदिर अनुदिन मंगल गावे ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१८) पवित्रा पहेरत विट्ठलनाथ ॥ सुंदर शुभ पाटके रचेहें सातों बालक साथ ॥१ ॥ श्रीगिरिधर गोविंद मोदभरे गोकुलेश रघुनाथ ॥ श्रीयदुनाथ घनश्याम बालकृष्ण लिये पवित्रा हाथ ॥२ ॥ भिन्नभिन्न पहराय भेट धर दिये चरणपर माथ ॥ मिश्री भोग धर वारत तनमन व्रजजन गावत गुणगाथ ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१९) पवित्रा पहरें श्रीगोकुलनाथ ॥ विप्र सबे मिल वेद उच्चारत निरखत सुरनर साथ ॥१ ॥ शिव ब्रह्मादिक कौतुक देखें आनन्द उर न समात ॥ देवलोक भुवलोक रसातल तिहुंपुर मंगलगात ॥२ ॥

सेवकजन व्रजसुन्दरि मिलकें श्रीमुख निरखत जात ॥ माधोदास प्रभुको यश गावे तातें नवनिधि पात ॥३ ॥

श्री आचार्यजी के पवित्रा धरायवे के पद

□ राग सारंग □ (१) पवित्रा पहेरत विठ्ठलनाथ ॥ सुंदर शुभ पाटके रचेहें सातों बालक साथ ॥१ ॥ श्रीगिरिधर गोविंद मोदभरे गोकुलेश रघुनाथ ॥ श्रीयदुनाथ घनश्याम बालकृष्ण लिये पवित्रा हाथ ॥२ ॥ भिन्नभिन्न पहराय भेट धर दिये चरणपर माथ ॥ मिश्री भोग धर वारत तनमन व्रजजन गावत गुणगाथ ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२) पवित्रा पहरें श्रीगोकुलनाथ ॥ विप्र सबे मिल वेद उच्चारत निरखत सुरनर साथ ॥१ ॥ शिव ब्रह्मादिक कौतुक देखें आनन्द उर न समात ॥ देवलोक भुवलोक रसातल तिहुंपुर मंगलगात ॥२ ॥ सेवकजन व्रजसुन्दरि मिलकें श्रीमुख निरखत जात ॥ माधोदास प्रभुको यश गावे तातें नवनिधि पात ॥३ ॥

राखी के पद (श्रावण सुद १५)

□ राग सारंग □ (१) राखी बांधत यशोदा मैया ॥ बहु शृंगार सजे आभूषण गिरिधर भैया ॥१ ॥ रत्नखचित राखी बांधि कर पुनपुन लेत बलैया ॥ सकल भोग आगें धर राखे तनकजु लेहु कन्हैया ॥२ ॥ यह छबि देख मगन नंदरानी निरख निरख सचुपैया ॥ जीयो यशोदा पूत तिहारो परमानंद बलजैया ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (२) बहेन सुभद्रा राखी बांधत बल ओर श्रीगोपालकें ॥ कनकथार अक्षतभर कुंकुंम तिलक करत नंदलालकें ॥१ ॥ आरती करत देत न्योछावर वारत मुक्तामालकें ॥ आसकरण प्रभु मोहननागर प्रेमपुंज व्रजबालकें ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (३) राखी बांधतहे नंदरानी ॥ लालपाटकी डोरी राजत लालनके मनमानी ॥१ ॥ दक्षिणा दीनी बहुत द्विजनकों धन खरचत न

अघानी ॥ ले आरती उतार श्रीमुखपर अंगअंग विकसानी ॥२ ॥ सुरनर मुनि सब कौतुक भूले बोलत जयजयबानी ॥ कृष्णदास प्रभुकी छबि निरखत व्रजजन प्यास बुझानी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (४) आज सलूनो मंगल माई ॥ गर्गमहामुनि राखी बांधत देत असीस सुहाई ॥१ ॥ चिरजीयो दोऊ ढोटातेरे परिवार सहित ब्रजराईं ॥ रामदास प्रभु मुखछबि उपर वार वार बलजाईं ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (५) राखी बंधन नंदकराई ॥ गर्गादिक सबऋषिन बुलाये लालहि तिलक बनाई ॥१ ॥ सब गुरुजन मिलदेत असीसें चिरजीयो व्रजराई ॥ बडोप्रताप बढो ढोटाको प्रतिदिन दिनहि सवाई ॥२ ॥ आनन्दे व्रजराज यशोदा मानो अघन निधिपाई ॥ परमानंददासकी जीवन चरण कमल लपटाई ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (६) राखी बांधत गर्ग श्यामकर ॥ हीरारत्न बिचबिच मानिक बिच बिच मुक्तनलर ॥१ ॥ दक्षिणादेत नंदपांयलागत असीसदेत गुरुजन सबद्विजवर ॥ नंददासप्रभु जियो तहांलो ज्योंलों चंद सूरज मारुत धर ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (७) राखी बांधत यशोदा मैया बलऔर श्रीगोपालकें ॥ सावनसुदी पून्योंको शुभदिन तिलक करत मध्यभालकें ॥ विप्र बुलाय दई बहु दक्षिणा वारत मुक्तामालकें ॥ चतुर्भुजदास निरख मन फूले गुणगावत गिरिधरलालकें ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (८) मात यशोदा राखी बांधत बलि अरु श्रीगोपालकें ॥ कंचनथारमे अक्षत कुंकुम तिलक कियो नंदलालकें ॥१ ॥ आरती करत न्योछावर वारत मुक्तामालकें ॥ छीतस्वामी गिरिधर मुख निरखत बलिबलि नेन विशालकें ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (९) राखी बांधत गिरिधरलाल ॥ कनकथार अक्षत भर कुंकुम तिलक करत मध्यभाल ॥१ ॥ विप्रनकों दक्षिणा बहुदीनी प्रेममग्न

व्रजबाल ॥ चतुर्भुज प्रभु पर कर न्योछावर देतहें मुक्तामाल ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१०) राखी नंदलाल करसोहे ॥ पचरंगपाटके फोंदना राजत देखत मन्मथ मोहे ॥१ ॥ आभुषण हीराके पहरें लालपाटके पोहे ॥ नंददास वारत तनमनधन गिरिधर श्रीमुख जोहे ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (११) राखी गिरिधर हाथ बिराजे ॥ बहुरंग पाटको बन्यों फोंदना देखत मनसिज लाजे ॥१ ॥ आभुषण सब अंगविराजत अति अद्‌भुत छबि छाजे ॥ कृष्णदास अपनपोवारत बंधी प्रेमकी पाजे ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१२) रक्षा बांधत यशोदा मैया ॥ विविध शृंगार कीये पटभुषन पुन पुन लेत बलैया ॥१ ॥ तिलक करत आरती उतारत हरख हरख मनमहियां ॥ नानाभांत भोग आगेंधर कहत लेहो बलजैयां ॥२ ॥ नरनारी सब आये तहां मील निरखत नंदललैयां ॥ कुम्भनदास गिरिधर चिरजीयो सकल घोख सुख दैयां ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (१३) राखी बांधत यशोदा मैया ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई आरोगो प्रभु धैया ॥१ ॥ वरस दिवसकी कुशल मनावत विप्रन देत बधैया ॥ चिरजीयो मेरो कुंवर लाडिलो परमानन्द बलि जैया ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१४) सांवन सुदी पून्योको शुभदिन रक्षा बांधत वल्लभलाल ॥ विविध पाट ओर रतन जटितके श्रीकर कंचन थाल ॥१ ॥ तिलक करत बीरादे करमें उर कुसुमनकी माल ॥ देत आशीष चिरजीवो श्रीवल्लभ भक्तजनन प्रतिपाल ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (१५) राखी बांधत वल्लभलाल ॥ मात रुक्मिणी कर गहि लीने सोहत कंचन थाल ॥ रतनजटित राखी बांधतहे मेवा देत रसाल ॥ निरख निरख वल्लभवरको मुख तन मन होत निहाल ॥२ ॥ भक्त सबे ठाडे मुख निरखत चंचल नेन विशाल ॥ वृन्दावन को चंद श्रीवल्लभ भक्तजनन प्रतिपाल ॥३ ॥

□ राग जेजेवंती □ (१६) माई आज राखी बंधावत कुंजनमें दोऊ ॥ फूले

रसभरे दोऊ यह छबि लसे जोऊ ॥१ ॥ पचरंग चूनरी लागी बिचबिच मोती पोऊ ॥ ललितादिक राखी बांधत अति सुख होऊ ॥२ ॥ दक्षिणा रहसि देत जेसी चाहे सोऊ ॥ युगल चरन कमल रति पद्मनाभ होऊ ॥३ ॥

छप्पन भोग के पद

□ राग बिलावल □ (१) राधेजु पूछन आई बात वृषभानसों ॥ ध्रुव ॥ ठाडी सन्मुख आय भान ले गोद बैठारी। कहो कछु मुख बात आज तुम मनहि विचारी। सुख संपत तुमरे घरे गाय बच्छ धन धाम। उमा रमा जल जो भरे हरि पूरत सगरे काम ॥१ ॥ इन्द्रासन सुख भोग होय नाहि तुम जैसो। तुमसों बडो न भूप भयो नाहि व्रज तैसो। कहो कहा यह बात है मनमें होत विचार। यह तुम ही मोसों कहो हौं पूछर वारंवार ॥२ ॥ व्रजमें श्री नंदराय गोप यह मो समजानो। इज्जत अरु धन धाम जाय मुख कहा बखानो। यह मेरे निज मित्र हैं नंद और उपनंद। तिनके सब गुन गावही हो स्मृति पुरान श्रुति छंद ॥३ ॥ कब देखों मैं गोप होय मेरो मनमान्यो। बाबा करो उपाय आज तक मैं नहीं जान्यो। जब मैं उनको देखिहों तबहि करों पयपान। उन अपुने घर बोलके हो बहुत करो सनमान ॥४ ॥ महीभान सब गोप टेरिके सदन बुलाये। सबको ढिग बैठार जोर कर सीस नवाये। मो सन्मुख हठ ही कियो लली बहुत अज्ञान। नंदराय जब देखिहों हो तबही करों पयपान ॥५ ॥ यह मन होत विचार सोच मेरे जीय भारी। कैसे करों उपाय कहो तुम बात विचारी। यह उपाय सबजू कह्यो व्रज को देहों जिमाय। नंद यहां भोजन करे हो कछु नहि और उपाय ॥६ ॥ अक्षत पीरे लाय साज कंचनकी थारी। द्वे हरदी की गांठ आनके धरि सुपारी। पीरे पटसों बांधिके चले सबै नंदगाम। बाजे विविध बजावही हो गये नंदके धाम ॥७ ॥ कोलाहल सुन स्याम झमकि उठ चले अटारी। सुनी नहीं कोई बात आज आनन्द व्रज भारी। स्याम देखि वृखभानको तब मन बाढ्यो हुल्लास। तुरत अटारी उतरके हो तब आये उन पास ॥८ ॥ नंदराय उठ

धाय आय वृखभानहिं भेटे। सबको कर सनमान सभा जोरे तहाँ बैठे। पूछत हरखित नंद जू कहो सबै कुशलात। सुखसंपति धन राधिका हो ताकी करिहो बात ॥९ ॥ घरमें गोधनठाठ दही पय तृन जल वैसे। राधे श्रुता शरीर आदि कीरत तन कैसे। क्यों आवन मो घर भयो परम कृपा कर आज। चिह्न लगत शुभ कर्म के हो जोरे सकल समाज ॥१० ॥ कहत नंदसों भान वचन विनति कर जोरे। तुमसों नंद जु गोप नाहि व्रजमें कोऊ औरे। हम घरमें तोहारही लली मनावत जान। सब व्रज न्योंत जिमावही हो तुम जेमो घर आन ॥११ ॥ सुख संपत धन धाम गाम तुम कृपा घनेरे। लली परम आनन्द गाय बच्छ है बहुतेरे। देखन तुम हम घर चलो सब व्रजको ले संग। इकठे व्है भोजन करे तुम हम मन बहुत उमंग ॥१२ ॥ कर प्रनाम घर लौट आय सब त्यारी कीनी। करो पाक तुम सिद्ध सबनको आज्ञा दीनी। खटरस नाना भाँतके कटु अम्ल अरु क्षार तिक्त कषाय सुहावने हो मधुर मिष्ट रस डार ॥१३ ॥ अगिनी पकव घृत पकव पकव पय सगरे करने। भक्ष्य भोज्य अरु चोष्य साजके घरमें धरने। लेह्य पेय दधि भातमें पिच्छल शब्द उच्चार। खटभेदनसों सब करो हो गिनत न आवे पार ॥१४ ॥ नंदराय व्रजलोक सबनको सदन बुलाये। चलो भैया वृखभान घरें तुम न्योंत जिमाये। नवसत साज सिंगारके चलो भानके धाम। व्रज बहुर्यो सुख पावही हो सबके मन अभिराम ॥१५ ॥ यह सुन जसुमति राम स्यामको उबट न्हवाये। भूषन नाना भाँत वसन बहुविध पहेराये। पीत कुलह सिर ताफता झगुली पीत बनाय। कनक छाप ता पर दई हो तन पर सरस सुहाय ॥१६ ॥ सूथन गाढे पाट लाल छापेके सोहे। पटुका पचरंग बांध कमर कटि पेचन गोहे। जेहर गुजरी बिछुवा अनवट संग पगपान। नुपूरधुनि रुनझुन करे हो भक्त करत सनमान ॥१७ ॥ लर लटकन सिरपेच तिलक मृगमदको कीनो। कुंडल झलक कपोल अलक झलकन सरसीनो। सीसफुल सोभित रह्यो मोरचन्द्रको पुंज। हीरा हार

हमेल पदक मनि माला मुक्ता गुंज ॥१८॥ बांधे द्वे भुजबंध कडा पहोंची कर छाजे। चिबुक चमक नकवेसरको मुक्तागज राजे। व्रजजन तन भूषन सजे वरन वरनके चीर। पग नुपूर धुनि बाजही हो रतन जटित नग हीर ॥१९॥ वरन वरन के चीरा पटुका ग्वालन बाधें। नीलांबर पीतांबर सोभित हे सब कांधे। बहुविध बाजे बाजहीं भेरी ताल मृदंग। सप्त सुरन के साजसों हो गावत तान तरंग ॥२०॥ व्रज बरसाने जाय आन घर दई बधाई। नंद आदि उपनंद लोक ऐसी निधि पाई। राम स्याम शोभित बने व्रजघरनिके पुंज। कमलसमूहन बीचमें हो जोहि मधुपगन गुंज ॥२१॥ तब आये वृखभान हरख उर कंठ लगाये। भली करी तुम मित्र पदारथको हम पाये। सदन पधारो प्रीतसों विनति करों कर जोर। परम भाग्य हमरो बढ्यो हो नाहि मित्र कोऊ और ॥२२॥ सदन सबै पधराय सभा मधि ही बैठारे। सबके वसन उतार डार तनमन धन वारे। मृगमद केसर मलयसों सबको करत अभ्यंग। अतर लगावत केसमें हो सिर डारत जलगंग ॥२३॥ अंग अंगोछ पोंछ पीत अंबर पहराये। कुंकुम तिलक सुभाल बीच अक्षत हि लगाये। माथे चन्दन चरचके पहेराई फूलमाल। आभूषन पहेरायके हो सोभित सकल गोपाल ॥२४॥ कीरति लली बुलाय अंग केसर उबटाई। बारन अतर लगाये बहोरि जलगंग न्हवाई। पोंछ अंग पहेराइयो लहेंगा ललित विसाल। कटि किंकिनी पहरावही हो फरिया रंग गुलाल ॥२५॥ पहेरी चोली पीत चार चूरी कर धारी। कडा पिछेली पोहोंची गजरा कंकनी न्यारी। वरा विजोरा बीच में बाजुबंध विसेस। सिर लरलटकन दामिनी हो मधि सटकारे केस ॥२६॥ टेढी लटकन कान कंठ मुक्तामनि माला। पीत पदक मनि जोत हसुलिया हार विसाला। जेहरि तेहरि घुंघरु बिछुवा अरु पगपान। अनवट सुर रुनझुन करे देत चरन गति मान ॥२७॥ बेंदी दीनी भाल सरस नकवेसर चेहरी। मेहेंदी दीनी हाथ अँगुरिया मुंदरी तेहरी। ललितादिक दरपन किये निरखत सबै सिंगार।

कीरति तहाँ तें उठ चली हो गई जु घोख मँझार ॥२८ ॥ सखियन संग बिठाय लली मुख कहन जु लागी। मैं यह कियो उपाय स्यामसुन्दर अनुरागी। कही पितासों जायके नंद दिखावो मोहि। ऐसो मैं मन जानिहों नाहि नंद सम कोई ॥२९ ॥ तबहिं करों पयमान जबै हौं उनको देखों। घरें जिमावो बोलहिं जनम सुफल कर लेखों। यह हठ मो दृढ़ करनको बाबा लिये बुलाय। अब मो मन आनन्द बढ्यो हो अष्ट महासिध पाय ॥३० ॥ स्याम सुन्दर अभिराम कामरस पूरनकारी। मदनमोहन मुखकमल अमल नट कुंजविहारी। मो मन विरहिनी कंद है ताहि मिलनकी आस। आनंद मो मन त्यों बढ्यो हो ज्यों चात्रक गई प्यास ॥३१ ॥ कौन सदन मधि केलि करें यह बात विचारो। कोउ न आवे जहाँ तहाँ उन लिये पधारो। पान गहे प्रभु इसको पकर दोउ कर बीच। केलि करों संग स्यामसों कुच भुज माचे कीच ॥३२ ॥ तब ललिता गई भाज स्यामको सेन बताई। तब उठ आये लाल पकर राधे ढिग लाई। भयो मनोरथ भामतो लली प्रेमरसपुंज। वारत प्रान अंकोर दे हो नागर नवलनिकुंज ॥३३ ॥ फूलसेज सुख लूट मदन तन रतिगढ़ जीत्यो। रंक महानिधि पाय काम जो भयो अचिंत्यो। गुप्त रीत रसकी कथा बरन सकत कवि कोय। राधेचरन प्रतापसों कछु यथामति होय ॥३४ ॥ कीरति सदन सिंगार सबै शुभ साज मँगाये। फूलन परदा गूँथ चित्र विचित्र बनाये। भवन विचित्र तरंगसों कंचन कलश धराय। चंदन भवन लिंपायके हो मोतिन चोक पुराय ॥३५ ॥ मृगमद केसर रंग कुमकुम साथिये चीते। कदलीखंभ रुपाय द्वार तोरन हरिते। कनकपटा सबको बिछे पीतांबरसों ढाँक। जमुना जल भर कनककलश परहर्यो उदय रवि ताक ॥३६ ॥ कनककटोरा मनिमय नगरके धरे अगारी। ओदनसों भरपूर धरी कंचनकी थारी। ओदन पांच प्रकारके खट्टे मीठे आन। दधि मिश्रित सिखरन सन्यो हो छोला वडी मिलान ॥३७ ॥ दूध भात बासोंदी में ओदन घृत डार्यो। मीठो भात मिलाय धर्यो गिनतीके चार्यो। रस अनार

अमरस कढ्यो तामें ओदन मेल। सरस सुगंध मिलायके हो दे गुलाबजल ढेल ॥३८ ॥ लोंगसुं बेंगन भात पाटिया सेव सँवारी। गुडको मीठो भात बिजोरा धरे मंझारी। सकरकंद नारंगीके कर करके पचहारी। सुरन खंडरा टेंटी सुंदर पापर पीत सुहारी ॥३९ ॥ कीनी गुडकी सेव सो जेंवत लागत प्यारी। मालपुआ चीला बीच झीनी पर गई जारी। मिरचवडी तिल ढेवरी साक एकसो आठ। कविमति हीन भई तहाँ हो कहा करे मुखपाठ ॥४० ॥ रोचक लोंगन करी सूखे इकतीस भुजेना। खट चोफाडिया किये बनायो साक सेंजना। कचरी सोल्हा साजके बेसन बहोत लपेट। करे भुजेना जुगतसों हो इकसठ धरे समेट ॥४१ ॥ छोला वाल कठोल खटरस खेओ रंगीले। कढी बनाई चार बेंगन खंडरा जु रसीले। मीठी बूंदी डारके वडी वडाकी छाछ। बूंदी खंडरा डारके हो तीनकुडा धरि पाछ ॥४२ ॥ चार दार अरु मूंग वाल तूवरनकी कीनी। चना उरद अरु त्रैवट हरद पुट हि दीनी। वडा मगोडा गुलगुला मेथी मिले समेत। कौर सान छडियालसों हो घृतसों कियो संकेत ॥४३ ॥ फेंना मीठे शांदी चंदा सूरजरोटी। अदरख गुड अरु सादी मिसी लीटी करी छोटी। गुंजिया चार कठोलकी भर-भर ताते बीच। पूरी मिली सतधानकी हो तरी तेलसों सीच ॥४४ ॥ बेजर विविध बनाय साग टेंटी संग दीनो। भाजी बहोत प्रकार स्वाद लागत सरसीलो। मीठो साग बनायके धरे ढोकला आन। पत्रभुजेना बीचमें हो बेसन लिपटे पान ॥४५ ॥ माखन मिसरी दही मलाई पना धर्यो हो। पूरी दूध पौनार पिस्ताको पाक हर्यो हो। बासोंदी बरफी तहाँ दुहरे पेंडा कीन। सुहागसोंठ कतली सुरन कहा बरने मतिहीन ॥४६ ॥ ल्याई लापसी साबोनी कर धरी तिनगिनी। सामग्री कछु पार न आवत करी अनगिनी। पेंठा खोवा भुंजके डारत है तपखीर। सिखरन पना पछावर हो धर राखे महल उसीर ॥४७ ॥ राजगरो अरु अरवी कुटू के व्यंजन कीने। पीस सिंघाडो सकरकंद मेवा रंग दीने। आलु अदरख

आनके नारंगीजु अनार। कंद रतालु कमलकाकरी सरस सुगंधी डार ॥४८॥ पिस्ता दाख बदाम छुहारे गिरी मखाने। मूंगफली अखरोटा चिरौंजी करि पहेचाने। धरे नाम सब वस्तुके नेजा आदि अनेक। या प्रकार व्यंजनविधि बरनन करे कितेक ॥४९॥ लडुआ मगद जलेबी मनोहर कतली सीरा। जामून करे गुलाब वडा मूठियाके वीरा। मोहनथार मेवाटी ले वडी वडा कर ठोर। कपुरनारी दीपक मदन हँसत लेत मुख कोर ॥५०॥ गुलकंद पाक गुलाब मुरब्बा बारह विधसों। बिलसारु चालीस परोसो ज्यों नवनिधसों। बूंदी घेवर दहीथरा पूडी तवा उतारी। खरमंडा सुखमंडा बाबर उपर बुरा डारी ॥५१॥ करे बहोत मेसुर भरे रसगोला खोरा। खांड खिलोना अमृतरसावली भरे कटोरा। तिलवा गजकही रेवडी मिसरी गुड द्वै भाँत। न्यारी साजके धरी कटोरी करके दुहरी पाँत ॥५२॥ सुरख बतासे सेव हमीदा रंग सठेली। बडे गिदोडा दुहरी कतली खांड अकेली। लाटा पगे स्वरंजले पचधारी गुड कूर। जम्यो त्रगडा भयो द्वगडा मिश्री में भरपूर ॥५३॥ उरद धाँस कीरण सूरज निस उदय प्रकाशी। मिठी करी कचोरी जु मांडा है सुखराशी। लुचई मोदक सेवके सकरपारे संग होत। माखनवडा दहीवरा पोनी खुरमा बहोत ॥५४॥ चंद्रकला उपरेटा सिखोरी गूँथे गुंजा। मुखविलास सुख संग इमरती द्वै विध खाजा। पना पछावर पीवही हो मांझ मांगके लेत। धोरीको पय पीवही हो पाचनशक्ति हेत ॥५५॥ गावत गारी गीत सकल व्रजनारी सुहाई। हँसत परस्पर केलि करत मनमोद बढाई। सुन सुन गारी गीतको हँसत सबै व्रजलोग। कहे मुख श्रीवृखभान जु हो भलो बन्यो संजोग ॥५६॥ झारी कंचन लई हाथ सुर करत खवासी। कर बीडाके डला लिये कमला सी दासी। सगरे बंटा साजके गोपिन के कर देत। मन क्रम वचन सबै रस जानत बीडी हस्त में लेत ॥५७॥ जाविंत्री तजपात जायफल लोंग सुपारी। भींजी नीर गुलाब बीच केसर रंग डारी। अति

सुगंध कपूर ले खेरसारमें पान। मृगमद चुनो इलायची हो डारी सुघर समान ॥५८ ॥ करके भोजन उठे फेर अचवन करवाये। द्वे द्वे बीडा दिये प्रेम मुख में ले खाये। पगपाँवडे बिछायके हो कुंजसदन पधराय। भान-कीरत कर जोरके हो सबको लागत पाय ॥५९ ॥ गठ जोरे वृखभान आय आरती उतारी। तनमन राईलोन देत न्योछावर वारी। कहत भान मुखसों अबै हो भयो मनोरथ सिद्ध। सब व्रजदर्शन पावही हो घर आई नवनिद्ध ॥६० ॥ भेट परस्पर गोप मित्र जाको जो होई। सुधि नहि रही शरीर गिनत काको नहि कोई। करी प्रनाम घरको चले नंदगाम सुखवास। कृपा करो हरिदासपे हो रहो गोवर्धन पास ॥६१ ॥

□ राग धनाश्री □ (२) महा महोत्सव होत श्री विट्ठलनाथ के ॥ध्रुव॥ प्रथम यथामति बरनहों हौं वल्लभ विट्ठल रूप। भूतल प्रकटे आयके हो श्रीगोकुलके भूप ॥१ ॥ पुष्टिमार्ग-रसरूप सिंधु को प्रगट करत जग सोय। अतुल प्रताप तेज करुनामय बरन सकत कवि कोय ॥२ ॥ श्रीशुकवचन प्रगट करवेको करत कथा रसगान। स्यामसुंदर वृखभान कुंवरिको बस कीने मनमान ॥३ ॥ श्रुतिमर्यादा प्रगट रससेवा भूतल कीनी आय। प्रथम विवेक धैर्य निज आश्रय महा पदारथ पाय ॥४ ॥ भक्तिभाव प्रीतम प्यारेको निज निकुंज सुखधाम। सो सब लीला प्रगट दिखाई भक्तन मन अभिराम ॥५ ॥ श्री भगवत-नवनीत नंदगृह प्रगट कृष्ण अवतार। ताकी सेवा नित्य विविध विध करत हैं श्रुतिसार ॥६ ॥ दिन चोबीस द्वादसजु मास बिच उत्सव अति आनंद। कृष्णकथा-रसपान करावत पूरन परमानंद ॥७ ॥ श्रीवृखभान-सदनकी लीला प्रगट करी निज गेह। छप्पन भोग विविधविध कीनो भक्तिभाव सुख-स्नेह ॥८ ॥ नंदादिकको न्योत बुलाये बरसाने वृखभान। उठके वेग आव आदर कर बोहोत कर्यो सन्मान ॥९ ॥ प्रथम फूलेल लगाय अरगजा अंग ही उबट न्हवाय। विविध वसन पीत पाटंबर आभूषन पहेराय ॥१० ॥ मृगमद केसर भवन लिपाये

कुमकुम जलसों सींच। गजमोतिनसों चोक पुरायो धरत साथिये बीच ॥११ ॥ कंचन कलश धरे जमुनाजल पीत वसन बोहो भाँत। कनकपटा बेठाय सबनको करी भोजनकी पाँत ॥१२ ॥ मधुमेवा पकवान मिठाई खटरस धरे बनाय। कंचन नग मनि जटित कटोरा धरे जु थार सजाय ॥१३ ॥ कटु अम्ल अरु तिक्त मधुर रस लवन कसाय अनेक। भक्ष्य भोज्य अरु चोस्य लेह्य विधि धरे जु आन कितेक ॥१४ ॥ दधि ओदन घृत दूध संधाने कीने नाना भांत। वडी वडा बेसन बहुविध किये मानों उदय रवि कांत ॥१५ ॥ कंदमूल फूल पत्र शाक सब अगनित ही सब कीने। कर घृतपकव पयपकव अग्नि पकव न्यारे लाये दीने ॥१६ ॥ खोवा बासोंदी और मिसरी सद माखन में सान। अग्नि पकव बोहो किये सलोने लेत परम रुचिमान ॥१७ ॥ गुंजा मठरी खुरमा खाजा लडुआ बहुविध कीने। कचरी आदि भुजेना तलके पापर अति सरसीने ॥१८ ॥ हँसत परस्पर खात खवावत प्रेम प्रीतरस भीने। बहोविध व्यंजन कहा बखानूं बरन न सकों मतिहीने ॥१९ ॥ सबको साथ बिठाय आप ढिग नवनिध दरस दिखाये। निज सुख दे अपुने दासनको महा पदारथ पाये ॥२० ॥ जमुनाजल अचवन करवायो करमें बीरी दीनी। आरती करत होत मन आनंद फिर नोछावर कीनी ॥२१ ॥ बिदा करत जु नंदादिकको चरन नमावत सीस॥ मानिकंचद प्रभु सदा बिराजो जीयो कोटि बरीस ॥२ ॥

□ राग धनाश्री □ (३) परम कुलाहल होय श्री वृषभान के ॥ ध्रुव ॥ प्रगटी कुँवरी राधिका जाके आनंदनिधि सुखदाई। सुन गोपी मन मुदित भई अति घर घर बजत बधाई ॥१ ॥ भवन-भवन प्रति कलश बिराजत बंदन माल बंधाई। साज सिंगार चली वृजवनिता भानभवन में आई ॥२ ॥ कीरतसुता वदनविधु देख्यो निरख-निरख सुख पाई। प्रेममगन गावत व्रजसुंदरी प्रफुलित मन हरखाई ॥३ ॥ नंदी सुरते नंद जसोदा गोपन न्योत बुलाये। ललीजन्म सुन नंद आनंदे कीने मनोरथ मनभाये ॥४ ॥

बलमोहनको उबट न्हवाये रुचिर कियो सिंगार। पट भूषन नौतन पहराये सोभा बढी अपार ॥५ ॥ पीत चोलना स्याम कटि सोभित पीत झगुलिया सुदेस। पीत कुल्हे सिर उपर राजत मन हर लियो नरेश ॥६ ॥ पग नुपूर रुनझुन करे कटि छुद्रघंटिका सोहे। मुक्ताके आभूषन उर पर कुंडल स्त्रवन मन मोहे ॥७ ॥ बाँहे बाजुबंद कडा जटित कर अंगुरिन मुँदरी राजे। जगमगात हीरा जु चिबुक पर निरख कांति रवि लाजे ॥८ ॥ मोतीन लर तोरा सिर सोभित लटकि करे मृदु हास। यह विध बन्यो कुँवरीको दुल्हे निरखत होत हुल्लास ॥९ ॥ चले कुँवर ले बरसाने को प्रफुलित मन व्रजराज। व्रजजन व्रजरानी गोपिन ले मंगल साज समाज ॥१० ॥ प्रेममुदित गावत गीतन सब व्रज बरसाने आये। श्रीवृखभान कीरत रानी जु अति आदर कर पधराये ॥११ ॥ कुशल सबै पूछत नंदजुको निरख नेन भर आये। देखो या बालककी लीला कोटिक विघ्न नसाये ॥१२ ॥ गिरिप्रतापतें सब सुख लहियत प्रगट दिखावत रूप। हमारी लली तुमरे लालनकी जोरी परम अनुप ॥१३ ॥ तुमजु हमारे गृहकुं पधारे भाग्य बडो है आज। बरसानो रमणिक देखियत निरखत सकल समाज ॥१४ ॥ भीतर भवन पधराये नंद जु कनकपटा बैठाये। कीरत दे रानी जसुमतिको निरख-निरख सचुपाये ॥१५ ॥ गोद लियो जसुमति को लाडिलो निरखत नेन सिराई। कुँवरी अपुनी जसोमति गोद दे दोउनकी लेत बलाई ॥१६ ॥ सुनो महरी आपुन बडभागिन देखो ऐसी निधि पाई। विधनाने आपुन दोउन की तनकी तपत बुझाई ॥१७ ॥ करि भोजनकी पांत सबन को कनकपटा बैठाये ढिग-ढिग धरी सबन के झारी जमुनोदक भर लाये ॥१८ ॥ कंचनथार अरु स्फटिक कटोरा पृथक पृथक धर राखे। परोसनहार प्रोहित रसहितसों अमृतवचन मुख भाखे ॥१९ ॥ बूंदी सेव मनोहर लडुवा मगद अरु मोहनथार। खुरमा खाजा जलेबी फेनी घेवर घृत तरे जु अपार ॥२० ॥ गूंजा मठरी सकरपारा अरु तवा पुरी रसभीनी। उरददारपूरन भर हींग दे कचोरी घृत तर कीनी ॥२१ ॥ उपरेटाको खांड पायके चंद्रकला रुचि लाई। सद् सीरा रस घृत संपुटित जेंमत अति

सचुपाई ॥२२ ॥ खासा पूरी खरमंडा खोवा बासोंदी जु मलाई। विविध भाँत पकवान मिठाई परोसत सुख उपजाई ॥२३ ॥ कनकबरन बेसन व्यंजन अति कहां लग करों बडाई। विविध भांत मेवाजु परोसे आम अमरस अधिकाई ॥२४ ॥ खटरस केउ प्रकार अनगिनती कहत न आवे पार। जेंमत सकल समाज सहित सुन्दर व्रजराजकुमार ॥२५ ॥ जेईं रहें तब शेष मँगायो घृतसों सानके लीने। दार कढी अरु पीठोर पकोडी पापड अति सरसीने ॥२६ ॥ भेंडी परवल और शाक सब भाजी हींग छोंकारी। सो जेंमत रुचि उपजी सबके स्वाद बढ्यो अति भारी ॥२७ ॥ भोजन कियो सबन सुख पायो सब मिल अचवन कीनो। हस्त पखार बीडा कर लीने पान खात सुख दीनो यह विध छप्पन-भोग कियो सब भयो जु मन आनद। कुँवरी कुँवर मुखचंदहि निरखत कटे सकल दुख द्वंद ॥२९ ॥ श्रीवृखभान अरु नंद सबै मिल महा महोत्सव कीनो। नाचत गावत विवस भये सब प्रगट्यो प्रेम नवीनो ॥३० ॥ भान कहत रानी कीरतसों कुंवरी कीजे सगाई। नंदगृहे बालक अति सुन्दर जोरी यह मन भाई ॥३१ ॥ इतनी सुनत कीरत जु कुंवरी जसोमतिगोद बैठाई। जसोमति लालन कीरतगोद दे कुँवरी मुदित खेलाई ॥३२ ॥ कीरत कह्यो या लली ललाकी महरी सगाई कीजे। हिलमिलके नैननको यह सुख सदा निरंतर लीजे ॥३३ ॥ जसोमति कह्यो नंदके आगे कीरत श्री वृखभानें। सुनत सगाईकी बात ललीकी आनंद उर न समानें ॥३४ ॥ कीरत बोल सबै वृजनारी ब्याहके गीत गवाये। सुन सबहिन मन हरख भयो अति भये मनोरथ भाये ॥३५ ॥ आज्ञा ले जु चले नंद गृहको कान्हकुँवर बल संग। खेलत ख्याल करत गैलनिमें मनमें बढ्यो उमंग ॥३६ ॥ पहुँचे जाह नंदीसुरको वृखभान पठायो करन सगाई। स्यामसुंदरकी करी सगाई हरखित व्रजवधु वृद्ध बुलाई ॥३७ ॥ देत असीस सबै मिल जुवति सुबस बसो व्रजराई । चिरजीयो वृखभानसुता अरु चिरजीयो कुँवर कन्हाई ॥३८ ॥ को बरने या नंदकुँवरगुनलीला ललित अपार। रोम-रोम रसना करों तोपै कहत न आवे

पार ॥३९ ॥ लाडिलीलाल पदरज अभिलाखी गावे कुंभनदास। मागों निरंतर दोऊ कर जोरी रहों चरनन के पास ॥४० ॥

□ राग सारंग □ (४) बैठी गोपकुंवर की पांति ललिततिबारी पटा रतन के झारी जल कंचन की भांति ॥१ ॥ मानिक थाल विशाल धरे बहु बेलाबेली नाना भांति॥ खटरस विंजन धरे तिनके मधि देखत जिनके नयन सिरात ॥२ ॥ पायस करत रोहिनी फिर फिर अति आनन्द मनमांझ सिरात॥ लपटत झपटत सखन संग मिली देखि जसोदा मन मुसकात ॥३ ॥ अष्टसिद्धी नवनिधि दासी तहां उठावत जुठन मन ईतरात ॥ देखत यह सुखसूं सुरपुरवासी भये न व्रजजन आंख चुचात ॥४ ॥ जेती सुर सम्पति सब व्रजनजनकी पल पल छिनु छिनु वे गिनत न जात॥ गोवर्द्धनेस गिरधर प्रसादकों ब्रह्माहुकी मति ललचात ॥५ ॥

□ राग सारंग □ (५) भोजन करत गोवर्धनधारी। छप्पन भोग छतीसों व्यंजन परोस धरे ललिता री ॥१ ॥ आरोगत खटरस रुचि सों प्रति श्री वृषभान दुलारी। अचवनको लाई चन्द्रावली श्री यमुनोदक झारी ॥२ ॥ सुगंध बीरी अरोगावति विसाखा अंग अंग फूलत भारी। मुकुर दिखावत चंपकलता 'सुरस्याम' बलिहारी ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (६) तिन मध्य बैठे छाक खात मदन रूप मंडली रची। छप्पन भोग छतीसों व्यंजन आन आगे थार सची ॥१ ॥ एक खात एक हसत परस्पर सबहिन मन सेना बेनी मची। 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधर मुख निरखत ब्रह्मादिक इन्द्रादिक जे जे कहत सब ठाठ रची ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (७) छप्पन भोग अरोगन लागे। श्री वृषभान कुँवरी नंदनंदन ले अपनो गन संग अनुरागे ॥१ ॥ विविध भांति पकवान मिठाई बिंजन विविध रस पागे। खट रस धरे परम रुचिकारी मधुमेवा अपने मुख मांगे ॥२ ॥ खात खवावत हँसत हँसावत विनवत सखी तहां ठाडी आगे। जेंवत देख 'कुंभनदास' तहां हरखि तब मानत बडभागे ॥३ ॥

□ राग सारंग □ (८) मंडल रचना रुचिसों रचि चित्र विचित्र व्रजकी

बालन। दधि पय नवनीत मध्य सर्करा पलासनके पत्रनके पुटनकी पंक्ति रची ॥१ ॥ नाना पकवानके पनवारे लोन बरी खाटे खारे विंजन गिनत नाना नाहिन बची। 'नंददास' प्रभु भोजन कर बैठे सहचरी अब शेष लेन निकट आय ललची ॥२ ॥

□ राग सारंग □ (९) श्री वृखभान प्रोहित को पठ्यो नंदादिकको न्योंत जिमावन ॥ चलो नंद अब देर न कीजे हौं आयो तुम सदन बुलावन ॥१ ॥ कर ज्योनार मित्र अपने की बहुत भांत पकवान करावन। इतनी सुनत नंद उठ आतुर कर्यो सिंगार स्याम मनभावन ॥२ ॥ गोपी-ग्वाल सबै इकठे व्है नये वसन बहुविध पहेरावन। मानो व्रज त्यों उमग चल्यो सब इन्द्रधनु देखियत ज्यों सावन ॥३ ॥ चले गेल बरसानेकी जहँ भान घरे त्योहार मनावन। मंगल गावत सब व्रजनारि बाजे विविध बजावन ॥४ ॥ उठि वृखभान आव आदर कर अपुने ढिग बेठावन। पूछत कुशल सबै नंदघरकी अति आनंद बढावन ॥५ ॥ काली कंस सकट बक भयसों बालककी हरि करि सहायन। गिरि कर धार्यो वृषभभय टार्यो सो हम देखे चलते पायन ॥६ ॥ करो सहाय तुम या बालककी वन डोलत चारत गायन। यातें सब जग भयो उजेरो गिरिप्रताप चहुँलोक दिखावन ॥७ ॥ सब व्रजजनको वेग बुलावो सबको उबट न्हवावन। भूषन वसन नये पहेरावो पगपाँवरे बिछावन ॥८ ॥ कंचन कलश भरे जमुनाजल करो पाक परसावन। विविध भाँत पकवान मिठाई खटरस व्यंजन बहुत बनावन ॥९ ॥ भोजन करत भामते जीयके मनमें रुचि उपजावन। कंचनथार लिये कर दोऊ आई लली जबै परसावन ॥१० ॥ निरख देख मुख मदनमोहनको थकित भई मन बहोत लजावन। लिखि चित्र सी मानों ठाडी तनमनकी सुधि हु बिसरावन ॥११ ॥ स्याम करत भोजन जब बिसरे देखत रह्यो कोर तब हाथन। मिलन उपाय करो कैसे कर सखी इक मिलवेकुं साथन ॥१२ ॥ नेना लखे लालके ललिता ओट करत कुंजन के घातन। तब सुधि भई लली रस तनकी तबही करन लगी मुख

बातन ॥१३ ॥ कंचनथार धर्यो घर भीतर अति श्रम सिथिल अंग मुसकायन। बैठि पास समुजावत ललिता लागी मसक दबावन पायन ॥१४ ॥ कीरति आय बोल व्रजनारी लागी मंगल गीत गवावन । कहत आज बडभाग हमारे नंदजु आय सदन कर्यो पावन ॥१५ ॥ भोजन कर्यो भयो मन आनंद फिर लागे अचवावन। फिर अचवाय देत मुख बीरी कह्यो सबै सुख भयो जिमावन ॥१६ ॥ फिर वे चाव बहुत आदर कर लागे करन आरती वारन। कर नौछावर देत सबन को फिर नंद लागे गेह पधारन ॥१७ ॥ देख इन्द्र सूर भये थकित मन व्योम विमान रहे कर छायन। सोभा बरसाने की देखियत पोहोपवृष्टि बरसावन ॥१८ ॥ करत विचार भान अपुने मन करो सगाई स्याम सुखदायन। विधना रची एक विध जोरी लागे सूत सबै गुनगायन ॥१९ ॥ ले श्रीफल प्रोहितको पठ्यो नंद जु लागे सगुन मनावन। भई सगाई स्यामसुंदर की नंदराय आनंद न समावन ॥२० ॥ वट संकेत में ब्याह होयगो ब्रह्मा विधिसों कर्म करावन। सो सुख सुरस्याम रस विलसत जस गावत जग भयो जु पावन ॥२१ ॥

□ राग गौरी □ (१०) गोपी मन अति आनंद ऊमग भरि। विनति प्रेम पुलकित तन नंद समीप दोऊ कर जोर करि ॥१ ॥ न्योतो हमारो आवो सब ही जसोदा अरु रोहिनी सब सादर। रामकृष्ण दोऊ कुंवर तिहारे व्रजधारी सुंदरवर ॥२ ॥ लोचन तारे जीवन जन्म तन प्राण सुफल कर। राधा सहज प्रीत संग ले प्रात पधारो मेरे घर ॥३ ॥ जो पे आज्ञा देहो कृपा करि भोजन ठाठ बनाऊँ विधि कर। करहो 'रसिक' मनोरथ पूरन निरख जाऊँ बल छबि पर ॥४ ॥

□ राग ईमन □ (११) मैया अपने सुतहि जिमावत॥ खीर खांड घृत लोणी लाडू जोईजोई स्यामहि भावत ॥१ ॥ यमुनोदक कंचनझारी भर संज्या बलि लेआवो॥ कनकके वींजना कनक वेलसी श्रीराधाजु चवर ढुरावे ॥२ ॥ घृतपक रस पकपयपकंजलपक छप्पन्न भोग धरावे॥ जेंवत मगन होत मनमोहन मुरलीदास यश गावे ॥३ ॥

विवाह ओच्छवनां धोल

□ धोल □ (१) कांई नानडिया सरखा वल्लभवर कुंवारा, घोडी ले चढीया रे, कांई घोडीले चढीया रे, तेडाओ एमना पद्मावती माता, शोभा बेन बेनी; अचरज सहु देखे रे, कांई अचरज सहु देखे रे. ॥१ ॥ मांगो मांगो मारा कुंवर, मांगो मांगो मारा वीरा, जे जोईए ते आपुं रे, कांई जे जोईए ते आपुं रे. ॥२ ॥ मांगु मांगु मारी माता, मांगु मांगु मारी बेनी, श्रीनाथजीनी सेवा रे, कांई श्रीनाथजीनी सेवा रे ॥३ ॥ घोडी ले चढीया रे, श्रीविठ्ठलजीना नंद पुनम केरा चंद, चहुं दिश थयां अजवालां रे, कांई चहुं दिश थयां अजवालां रे ॥४ ॥ घोडीले चढीया रे, थयो निशाननो नाद , गोकुलनगर रह्युं गाजी रे, कांई गोकुलनगर रह्युं गाजी रे ॥५ ॥ कांई मथुरानगरमां हाल पड्यो, हलकार पडयो, श्रीविठ्ठल राजीयो आवे छे कांई गोकुलनाथ पधारे छें ॥६ ॥ घोडी चाली रे, कांई शहेर बजार, घोडी स्थंभीने रही ऊभी रे, कांई स्थंभीने रही ऊभी रे ॥७ ॥ घोडी बांधी रे, सोना केरे स्थंभें, रूपा केरे दांडे, घोडी छंदे छंदे नाचे रे, घोडा ठमके ठमके चाले रे ॥८ ॥ ए घोडीले रे श्रीवल्लभवर अस्वार, माता पदमावतीनां मन मोह्यां रे, कांई माताजीनां मन मोह्यां रे ॥९ ॥ घोडी आवीरे वेणाभट्ट केरे द्वार, घोडी स्थंभीने रही उभी रे कांइ स्थंभीने रही ऊभी रे ॥१० ॥ कांई सासुजी आव्यां पोंखवा रे, पोंखी मांयरामां पधरावीया रे, कांई मंडपनी शोभा शी कहुं रे ॥११ ॥ एउना मंडप लहेरडे जाय रे, कांइ आनंद ओच्छव थाय रे, कांई आनंद ओच्छव थाय रे ॥१२ ॥ वलतां वहुजीने पधरावीयां

रे, सोहासणी मंगल गाय रे, त्यां ब्राह्मणो वेद पढी रह्यां रे त्यां देवनां ते दुंदुभि वागे रे, कांई मथुरा नगर सहु गाजे रे ॥१३ ॥ कांई पांच दिवस त्यां प्रभु रह्यां रे, कर्या रमण केलीना खेल रे, कर्या हारदी केरा खेल रे ॥१४ ॥ कांई लाखेणी लाडी लई आवीया रे, एवा जगत धुतारा शुं नाथ रे ॥१५ ॥ श्री वल्लभवर परणीने आवीया रे, शोभा बेनीने हरख न माय रे; कमला बेनीने हरख न माय रे ॥१६ ॥ कांई दासनो दास करे विनती रे, मने आपो श्री गोकुलवास रे; राखो चरणकमलनी पास रे ॥१७ ॥

□ धोल □ (२) जीरे पातली सोटीनो चाबको रे, एनुं डाल नमी नमी जाय, जीरे डाल नमे एमने सौ नमे रे, एमने नमीया छे वैष्णवजन ॥१ ॥ जीरे वेणाभट लखी कागल मोकले रे, श्रीविठ्ठलवर वहेला रे आवो ; जीरे हुं केम आवुं एकलो रे, मारे बहु रे सुजातिनों साथरे ॥२ ॥ जीरे घोडीने साजन शोभितां रे, शोभितां सामैया अपार, जीरे हाथीने जडावना झुल छे रे, श्रीवल्लभवर केरा शणगार ॥३ ॥ जीरे हाथी ऊपर सोना पालखी रे, एनी शोभा तणो नहीं पार, जीरे लीली घोडीने पीलो चाबको रे, एमनां पलाणे रत्न जडाव ॥४ ॥ जीरे घोडीनो बेसनार फांफडो रे, एमने मोह्यां छे वृजना नार, जीरे सौभाग्यवती चमर ढाले रे, श्रीवल्लभवर केरा शीश ॥५ ॥ जीरे आतसबाजी ऊडी रही रे, त्यां तो नगरीमां थई रह्यो शोर, जीरे नगरीना लोके आवी पूछीयुं रे, आ कोण रायो परणवा जाय ॥६ ॥ जीरे नथी रे राया ने नथी राजीया रे, ए छे श्रीविठ्ठल राजकुमार; जीरे राणी रुक्ष्मणीजीना लाल छे रे, ए छे शोभाबेनीना वीर ॥७ ॥ जीरे एमने जईने उतारीया रे, श्रीजमुनाजीने तीर; जीरे वेवाइ जमशे घेबरां रे, एमनां जानैया

जमशे कंसार, ॥८ ॥ जीरे हाथीनेआरनो खीचडो, रे एनी घोडीने चणानी दाल; जीरे वल्लभवर आव्या तोरणे रे, एमना मंडप लहेरडे जाय ॥९ ॥ जीरे मंडपनी शोभा शी कहुं रे, तेनो कहेतां न आवे पार; जीरे सासुजी आव्या पोंखवारे, पोंखी मांयरामां पधराय ॥१० ॥ जीरे वलतां वहुजीने पधरावीयां रे, सोहासणी मंगल गाय; जीरे पांच मंगल प्रभु त्यां फर्या रे, सहु भक्तने आनंद थाय ॥११ ॥ जीरे परणी श्रीवल्लभवर उठियारे, वरत्यो छे आनंद अपार, जीरे पांच दिवस रह्या सासरे रे, रमिया हरदी केरा खेल ॥१२ ॥ जीरे दासनो दास जाय वारणे रे, अमने आपो श्रीगोकुलवास, राखो चरणना पास, जीरे पातली सोटीनो चाबको रे, एनुं डाल नमी नमी जाय ॥१३ ॥

□ धोल □ (३) धन्य धन्य माता श्रीरुक्मिणी, जेणे श्रीवल्लभराय जायाजी; श्रीगोकुलसर्वे गाजी रह्युं; उलट अंग न मायजी ॥१ ॥ भक्तिमार्ग रे प्रगट करी, प्रगट पुरुषोत्तम आव्याजी, सुंदर वदन सोहामणुं मन वृजवासीने भाव्याजी ॥२ ॥ भक्तने अविचल स्थापीने, श्रीगोकुल नित्य विहारजी, परम कृपाल करुणा सिंधु, उलटयो अतिशे भारजी ॥३ ॥ आवो मलोरे सोहासणी, मलीने मंगल दीजेजी, श्रीविठ्ठलसुत अति लाडको, तेहनां भामणां लीजेजी ॥४ ॥ आनंदने रे लगन दिन, ए वर घोडीले चढीयाजी, कंदर्प कोटी लाजी रह्या, नीरखतां नयणां रसभरीयांजी ॥५ ॥ छत्र ढरे रे चमर ढरे, वाजे निशानना घावोजी; वार्जित्र वागे छंदशुं, मध्य मध्य झांझनो झावोजी, ॥६ ॥ बंसी बाजेरे वीणा वांसली, ताल पखावज बाजेजी; नाद नफेरी रे रणझणे, भेर भुंगल बहु

साजेजी ॥७ ॥ वईष्णवजन रे गाये घणुं, मेलीने मननी लाजजी, सेवकजन रे सुणी सुणी, हैयलडुं टाढुं ते थायजी ॥८ ॥ पुष्पनी वृष्टी अमर करे, धन्य धन्य आजनी रातजी; क्षणुं क्षणुं छबीरे जुजवी, कई पेरे कहुं ए वातजी ॥९ ॥ उठो शणगारो सुहासणी, जीयवर तोरणे आव्याजी; धन्य धन्य भाग्य गुजरातीना, वर श्रीवल्लभजीने भाव्यांजी ॥१० ॥ चौदभुवनवर प्रगटीया, प्रगट पुरुषोत्तम आव्याजी, दुःसह दुःखरे संसारनां, अनेक अनेरां ते वाम्याजी ॥११ ॥ पट पचरंग पहेर्यां सही, कंठ सोनातणी मालजी; नवल नाहो अति रसभर्या, अतिरस भरियाते बालजी ॥१२ ॥ मंडप मध्य पधरावीया, बेठा श्रीवल्लभरायजी, बीडा आरोगे प्रभु पातलो, चहुंओर वायु ढोलायजी ॥१३ ॥ मरकलडे रे जोये सही, पांखे सखी जन साथजी, मंद मधुरूं बोले सही, प्रेमसुं पूछे छे वातजी ॥१४ ॥ कोटनी लटकती, कुंडलनी चटकती, नयण तणी अति मटकनी स्वजन सर्वे मोही रह्या, मोही पुष्प माला ते निकटनी ॥१५ ॥ उलट अतिशे रे उलटयो, वईष्णव मंडली आजजी निर्भय थई विचारे सही, सरीयां सर्वनां काजजी ॥१६ ॥ गदोरे दुवे गोविंद दुवे, मधुवा ठाकोरतणी वातजी ठाकुरदासी रांधनपुर, तेहनी शी कहीये वातजी ॥१७ ॥ अनंत कला गुण पूर्ण, माधवदासनो ग्रहो हाथजी, वली वली करूं प्रभु विनति, श्रवण सुणो मारा नाथजी ॥१८ ॥ सेवक सामुं रे जोई ने, राखो श्रीगोकुल वासजी, निशदिन निकट निरंतर, क्षणुं ए न मेलुं पासजी ॥१९ ॥

□ धोल □ (४) मदभर्यो हाथी ने लाल अंबाडी, फुलडांनो सेहरो मेलो वल्लभवर, गोकुलना राजवी; गोकुलना राजवी ने मथुराना पाटवी, शोभा

बहेनीजीना वीररे-वल्लभवर गोकुलना ॥१॥ तमने ते कोण कहावी कहावी मोकले, तमने ते मोहनभाईजी कहावी कहावी मोकले, जोईए तो समृद्धि अमारी लेजो. गोकुलना ॥२॥ तेमने ते कोण कोण कहावी कहावी मोकले, तमने ते गोकुलभाईजी कहावी कहावी मोकले; जानैया जोईए तो अमारा लेजो. गोकुलना ॥३॥ तमने तो कोण कोण कहावी कहावी मोकले; तमने ते माधवदास कहावी कहावी मोकले, कांई छत्र जोईए तो अमारू लेजो. गोकुलना ॥४॥ तमने ते मोटाभाईजी कहावी कहावी मोकले, सुखपाल जोईए तो अमारी लेजो गोकुलना ॥५। तमने ते कोण कोण कहावी कहावी मोकले, तमने तो वल्लवभाईजी कहावी कहावी मोकले, घोडीला जोईए तो अमारी लेजो गोकुलना ॥६॥ तमने तो बहेनजी राज कहावी कहावी मोकले, जानडीओ जोईए तो अमारा लेजो. गोकुलना ॥७॥ तमने तो वैष्णव कहावी कहावी मोकले, कीरतनीआ जोईए तो अमारा लेजो. गोकुलना राजवी ने मथुराना पाटवी ॥८॥

□ धोल □ (५) मारे मांडवे कोण कोण आव्युं ने कोण कोण आवशे रे, जेणे आव्ये माहारो वडो रे वशेख....आशो रूडो मांडवो रे ॥१॥ मोहनभाईजीने मंडप शोभा थई रही रे, मंडपे जडित्र हेम रत्ननी पांत. आशो ॥२॥ जीरे माहारे मांडवे बेनजी राज आव्यां ने रूपांबाई आवशे रे, हुं तो जोउ मारां वीरबाईनी वाट आशो ॥३॥ मंडपे वाजिंत्रना घोष रई रह्या रे, घोंसा नगारां नफेरीने झांझ....आशो ॥४॥ जीरे नरनारी बालक सहु आवीयां रे, तेहोनी शोभानो पार न जोणुं....आशो ॥५॥ जीरे श्रीराज

मोहनभाई रसभर्या रे, भक्तराज गोकुलभाई साथ, ते आव्ये माहारे रंग रहेशे....आशो ॥६ ॥ जीरे आवे हरीभाई, नाथाभाई आवीया रे, वल्लभभाई आवे वडोरे वसेक.....आशो ॥७ ॥ जीरे गोपालदास साथे गोकुलदास आवीयारे, वृन्दावनदास किशोरभाई साथे ए आव्ये आनंद होशेरे.....आशो ॥८ ॥ जीरे सुंदरभाई, विट्ठलभाई आवशे रे, ते आवे क्यां हां लगी कहुं विवेक, माहारी बुध चाले नहीं रे....आशो ॥९ ॥ जीरे हुं मतिमंद कांई पुछुं नहीं रे, एहोने चरण शुं धरी शीष, माहारा मनडाना कोड पुरो रे....आशो ॥१० ॥ जीरे दासनो दास करे विनती रे, मने राखो तमारी शरण, तुम प्रताप माहारी गति होशे रे....आशो ॥११ ॥

विवाह उत्सव जेठ वदी २

□ राग-सारंग □ (१) लाल आज बना बन्यो अति भाई, वागो विचित्र बनाई, जरकसी पाघ चोलना सुंदर अरगजा सोधो लगाई ॥१ ॥ तापर फुलनके हार भुषण बहु, सेहरो सीस सुहाई, वल्लभदास प्रभु व्याहन चलो-सो अब सोभा कहीय न जाय ॥२ ॥

शोभन १ लुं (राग सजनीनी चाले गवाशे)

□ सजनीनी □ कृपा करो जाउ वारीजी, विवाह गाऊ मंगल शुभ कारीजी ॥१ ॥ सोल वरसना श्री गोकुलबिहारीजी, श्री विट्ठलजीए जोयुं मन विचारीजी ॥२ ॥ शोभाजीने वात पुछी शुभ कारीजी, शोभाजी ते बोल्या वचन विचारीजी ॥३ ॥ वेणा भटने घेर छे सुकुमारीजी, रूप गुणमां ते रढियालीजी ॥४ ॥ सात वरसनी छे सकुमारीजी मीटडी ते भरी भरी

निहालीजी ॥५ ॥ सुंदरी ते मारा चित्तमां आवीजी सज्जन सहुकोने मन भावीजी ॥६ ॥ श्रीविट्ठलजीए ए कन्या निरधारीजी, रूपाबाई जाए वारीजी ॥७ ॥

शोभन २ जुं (राग-आवो रे गोरी आवो. शामली)

□ गोरी □ प्रसन्न थया ते प्रभुजी घणुं, हरख्यो ते सघलेडो साथजी, गोविंद मामा तेडावीने, पुछी विवाह तणी वातजी ॥१ ॥ वहेला थाओजी वेगा हवे, करवा छे मोटेरा काजजी; हैयलडामां घणुं हरखीने, वचन बोल्या व्रजराजजी ॥२ ॥ मथुरा ते नगरीमां आवीने, पछी विवाह तणी वातजी; सन्मान दीधाजी अति घणा, हरख्यो छे कन्यानो तातजी ॥३ ॥ वेणा भटे मन विचारीयुं, ए छे मोटीरी पेरजी, श्रीगोकुलचंद श्री वल्लभवर, आनंदे आवशे घेरजी ॥४ ॥ कुंवरी कारण रूप प्रगटीया, ए वात मन मांहे जाणीजी; त्रिभुवनपति वर. पामीया, ए कहीए व्रजनी राणीजी ॥५ ॥ विवाह मागीने घेर आवीया, बेठा श्रीविट्ठलतातजी; कहोजी वहेवाईए शुं कह्युं पूछे छे सघलेडो साथजी ॥६ ॥ सन्मान दिधाजी अति घणां, वात विवाह तणी सत्यजी; प्रसन्न थाय प्रभुजी घणुं; हैयलडे हरख ते अत्यंतजी ॥७ ॥ कंकुना छडा देवरावीआ, मोतीना चोक, पुरावीआ; श्रीवल्लभवरनो विवाह मल्यो, सोहासणी गावाने आवेजी ॥८ ॥ पद्मावती माता पधरावीयां, सर्व परिवार त्यां सोहेजी ।भूतल ऐवो वर को नहीं दीठडे त्रिभुवन मन मोहेगी ।९ ॥ श्री वल्लभ वरनुं वदन जोई, जमुले न आवे कीएजी, हैयलडामां घणुं हरखीने, रूपांबाई ए लीला गायेजी ॥१० ॥

शोभन ३ जुं (सजनीनी चाले गवाशे)

□ सजनीनी □ एम बोल्या श्रीविठ्ठलजी तातजी, शोभाजीने पूछी ते वातजी ॥१॥ जोषीजी उतावलो आवेजी, श्रीवल्लभवरनां लगन लावेजी ॥२॥ आदर ते अति घणो थाएजी, जोषीडाने वेगो तेडी जाएजी ॥३॥ जोषीजीए विचार्युं त्यांहां मनजी, माताजीए जन्म्यो ते हुं. धन्यजी ॥४॥ एह छे मोटेरी वातजी, तेडे श्री विठ्ठल तातजी ॥५॥ जोषीजी उतावलो आव्योजी, श्रीवल्लभवरना लगन ते लाव्योजी ॥६॥ जोषीजी जोजो मन विचारीजी, एम बोल्यां श्रीविठ्ठलजीनी राणीजी ॥७॥ लगन रूडुं त्यांहां आव्युंजी, सर्वे परिवारने मन भाव्युंजी ॥८॥ संवत सोलसें चौवीसजी, असाड वदी बीज ने रूडो दिवसजी ॥९॥ दामोदरदासी कृष्णदासी हरखेजी; श्रीवल्लभवरनुं वदन निरखेजी ॥१०॥ शोभा शोभे छे रसालजी, परणे छे, श्रीरुक्मिणीजीनो लालजी ॥११॥ श्रीविठ्ठलजीने मन मोह ने मायेजी, हरखभर्या समधीने घेर जाएजी ॥१२॥ आगल चाले ते वरजीनां मातजी, पूंठे ते सघलेडो साथजी ॥१३॥ ते वहुजीने खोले बेसाडेजी, ने सासु ससराने देखाडेजी ॥१४॥ आपणा कृत कृत सघलां थाएजी, रूपांबाई नीरखी हरखी गाएजी ॥१५॥

शोभन ४ थुं (राग-आवो रे गोरी आवो रे शामली ए रागे गवाशे)

□ गोरी □ कन्या मांगीने घेर आवीया, वेगे श्रीविठ्ठल भूपजी; श्रीविठ्ठलसुत अति लाडको, त्रिभुवन मोहन रूपजी, ॥१॥ सकल शास्त्रनुं सिद्धांत, ते रीत भली भली थाएजी; मांडवो परम सोहमणो, शोभा लहेरडे

जाएजी; ।।२ ।। त्यांहां रे बेठा श्रीगोकुलनाथजी, प्रगटयो कोटि प्रकाशजी, सेवकजन सुख पामीयां, पूरी छे मन तणी आशजी ।।३ । मांडवे डेरे विधोगते, कृत्य ते सघलेडो थाएजी, आवे ते वृज केरी सुंदरी, मधुरे स्वरे मली गाएजी ।।४ । सज्जन (साजन) दीसेरे शोभीता, शोभा ते कहीये न जायजी; वार्जित्र वाजेरे अति घणां, त्रैलोक्य हवो जय जयकारजी ।।५ ।। कलियुगमां करुणा करी, प्रगटया पुरण रसगातजी; श्रीवल्लभवरनुं वदन जोई, हरख्या श्रीविट्ठल तातजी ।।६ ।। एहना रूपनुं शुं वर्णन करूं, एह छे सर्वनो शणगारजी, अंगो अंगनी छबी शी कहुं, शोभा तणो नहीं पारजी ।।७ ।। अरुण अधर छबी शी कहुं, अंबुज नयन विशालजी ! केसर तिलक सोहामणुं, लांबी ते वेण विशालजी ।।८ ।। गौर सुंदर अंग शोभीतुं, शोभिता कंठे मनोहर हारजी; कोटिक रवि शशि वारणे, कुंडलनो झणकारजी ।।९ ।। कुंवरी छे सर्व शिरोमणि कुंवर छे रसिक शिरोमणि रायजी; कंदर्प कोटिक लावण्ये, रूपांबाई बलिहारी जायजी ।।१० ।।

शोभन-५-मुं. धनाश्री-पोष मध्यान्हे नोमे श्री नाथजी-ए राग

□ धनाश्री □ आ. कृपारे करो प्रभुजीय तमो ए, वर्णवुं रूप अनुप ए; श्रीगोकुलभूपति जाननुं ; ए ।।१ ।। आ. नवलकिशोर ते वर थया ए; चहुं ओर चमर ढोलाए; आ भगवदी छत्र धरी रह्या ए ।।२ ।। आ. जय-जयकार त्रेलोक्यमांए; गाज्युं श्रीगोकुल गाम; ओ कोटिक काम लाजी रह्या ए ।।३ ।। आ. पंच शब्द वाजे ताल पखावजए; सुंदर नफेरीना नाद; आ. शरणाई साद सोहामणा ए ।।४ ।। आ. मलियां ते व्रज केरी सुंदरी ए; हरखे

ते मंगल गाय, आ. आश्चर्य थाए; जोवा देवता ए ॥५ ॥ आ. शुक सनकादिक स्तुति करे ए; कृपारे करो वृजराज; आ.काज दीजे दासने दया करी ए ॥६ ॥ आ साबेला अति शणगारीओ, नवल लहु घोडे अस्वार, आ जानना पार ते नव लहु ए ॥७ ॥ आ. मथुरा ते नगरी मोही रह्युं ए, गांधर्वे मांडयुं छे गान, आ. तानसुं पात्र नाचे भलां ए ॥८ ॥ आ. सुखनो ते सागर उलटयो ए, चहुंदिशे चालियां पूर, आ शूर घणुं सर्व साथने ए ॥९ ॥ आ. श्रीगोकुलचंदनी जान मलीए, दुंदुभी छंद शुं बाजे, आ. गाजे ते धन निघोषशुं. ए ॥१० ॥ आ रुपांबाई जोइने हरखियां ए; निरखिया श्रीवल्लभवर, आ. महाभर सुख जोई जाननुं. ए ॥११ ॥

शोभन-६ (राग- वहेवाई तारो मांडवडो संभाले ए रागे गवाशे)

□ वहेवाई □ श्रीगोकुलचंद श्रीवल्लभवर; तोरणे आवीआ ए; आ आरति, उतारे वृजनार तो हरखे (वरजी) वधावियाए ॥१ ॥ वली वली कन्यानो तात ते; आवी चरणे नमे ए; श्रीवल्लभवरनुं वदन जोई जोई; मनमांहे घणुं गमे ए ॥२ ॥ आदर अति घणो थाय ते मांह्यारामांहे पधरावियाए; टोकरा बे चावलदाल भरिया ते पासे सोहावियाए ॥३ ॥ नवल किशोर-किशोरी ते; वेगे पधरावियां ए; परम पनोति बेठी जोड ते, पासे रुडां भावियां ए ॥४ ॥ अति शोभित श्रीविट्ठलजीनो साथ ते, वहुजीनां ले वारणां ए, आभूषण पहेर्यां अंगे ते, सोहिये अति घणां ए ॥५ ॥ रुपतणो नहीं पार तो, शोभा शी पेरे कहुं ए, प्रगटिया कोटि प्रकाश तो कहेतां कांई नव लहुं ए ॥६ ॥ जोवा आव्यो सघलेडो साथ तो,

जोड ते भली मली ए, सरखा सरखी समान ते, जेम कंचन मांहे मणि जडीए ॥७ ॥ बीडां आरोगे श्रीव्रजनाथ तो शशिवदनी सामुं जुए ए; नीरखे छे रूप अनुप तो श्रीगोकुलभूपनुं ए ॥८ ॥ चंद्रवदनीनी चतुराई देखी, श्रीवल्लभवर जोई रह्या ए, मीटडी न चाले निमेष, मृग नैनीने मोही रह्या ए ॥९ ॥ रसिकशिरोमणि राय ते, दिसे अति रस भर्या ए, अति रस भर्या बाल ते; कोइए नव जाए कह्यां ए ॥१० ॥ श्रीवल्लभवरना मन तणी रीझ ते, वरणी जाए नहीं ए; वहुजीने लीधां छे गोद ते मोद माये ये नहीं ए ॥११ ॥ सुंदरी छे अति सकुमारी; तो वल्लभवरनां मन हर्यां ए. रुपांबाई बलिहारी जाए तो ए दिवसथी मन वस्याए ॥१२ ॥

शोभन-७

□ शोभन □ नीलडा वास अणाविआए, जीरे धवलडा कलाश चित्राावियाए ॥१ ॥ कंकुना छडा देवरावियाए, जीरे मोतीना चोक पुरावियाए ॥२ ॥ चतुरवर चौरीए आवीआ ए, जीरे पारवतीजी पासे रूडा भावीआए ॥३ ॥ ए शोभानो पार न कह्यो जाय ए, जीरे सहस्त्र मुखे करी शेष गाये ए ॥४ ॥ निगम ते निर्मल जस बोले ए, एहवो नहि त्रिभोवन जे दीजे तोले ए ॥५ ॥ वेदनी धुनी य लागी रही ए, जीरे व्रजभोम घली गाजी रही ए ॥६ ॥ श्रीवल्लभवर परणीने ऊठिया ए, जीरे मोद ते मोद घणुं भर्याए ॥७ ॥ पुष्पनी वृष्टि करे देवो मली ए, जीरे शोभानी पोहोती छे मनरली ए ॥८ ॥ निशानना निघोष थई रह्यां ए, जीरे श्रीविठ्ठलजी तात फुली रह्या ए ॥९ ॥ अति रस भरी व्रजसुंदरी ए, जीरे नाचे ते सहुए मंडप

भरीए ॥१० ॥ वहुजीनी सखी करे विनती ए, जीरे तमो वरीया छो श्रीगोकुलपति ए ॥११ ॥ गोठ छोडो चोली तणी ए, त्यारे मन मांहे हस्या त्रिभुवन धणी ए ॥१२ ॥ गांठ छोडी सडके करी ए, जीरे तेहने वार न लागी क्षण भरी ए ॥१३ ॥ जीत्या जीत्या व्रजनाथजी ए, एम गाय गुजरातीनो साथजी ए ॥१४ ॥ बहुजीने गोदे लई रह्यां ए, जीरे ए सुख अलौकिक तहां थया ए ॥१५ ॥ हरदीना खेल भला हवा ए, जीरे पांच दिवस प्रभु त्यां रह्यां ए ॥१६ ॥ जुगल किशोर घेर आवीया ए, जीरे रूपांबाई जान अति भाविया ए ॥१७ ॥

ब्याह के पद

□ राग-बिलावल □ (१) आज ललनकी होत सगाई ॥ आवोरी गोपीजन मिलके गावो मंगल चार वधाई ॥१ ॥ चोटी सुपर गुहुं सुत तेरी छांडो चंचलताई ॥ वृषभान गोप टीको दे पढयो सुंदरजान कन्हाई ॥२ ॥ जो तुमको या भांत देख है कर है कहा बडाई ॥ पहर वसन आभुषण सुंदर उनको देउ दीखाई ॥३ ॥ नखशिख अंग श्रंगार महर मन मोतिनकी माला पहराई ॥ बैठे आय रत्न चोकी पर नरनारिनकी भीर सुहाई ॥४ ॥ विप्र प्रविण तिलक कर मस्तक अक्षत चांप लीयो अपनाई ॥ बाजत ढोल भेर और महुवर नोबत ध्वनि घनघोर बजाई ॥५ ॥ फुली फीरत यशोदारानी वार कुंवर पर वसन लुंटाई ॥ परमानंद नंदके आंगन अमरगण पोहोपन झरलाई ॥६ ॥

□ राग-आशावरी □ (२) मैया मोहि ऐसी दुलहनी भावे ॥ जैसी ये काहुकी डीठोनीया रूनक झुनक घर आवे ॥१ ॥ कर कर पाक रसाल

रसोई अपने कर ले मोही जीमावे। कर अंचल पट ओट बाबा को ठाडी ब्यार ढुरावे ॥२ ॥ मोहि उठाय गोद बैठारे कर मनुहार मनावे ॥ अहो मेरे लाल कहो बाबसों तेरो ब्याह करावे ॥३ ॥ नंदराय नंदरानी हिलमिल सुख समुद्र बढावे ॥ परमानंद प्रभुकी बातें सुन ऊर आनंद न समावे ॥४ ॥

□ राग-सारंग □ (३) दिन दुल्हे मेरो कुंवर कन्हैया ॥ नित्य ऊठ सखा शींगार बनावे नित्य आरती ऊतारत मैया ॥१ ॥ नित्य ऊठ आंगन चंदन लिपावे नित्य ही मोतिन चोक पुरयो ॥ नित्य ही मंगल कलश धरावे नित्य ही बंदनवार बधैया ॥२ ॥ नित्य उठ व्याह गीत मंगल ध्वनि नित्य सुरवर मुनि वेद पठैया ॥ नित्य नित्य आनंद होत वार निधि नित्य ही गदाधर लेत बलैया ॥३ ॥

□ राग-सारंग □ (४) अपने लालको ब्याह करूंगी, बडे गोपकी बेटी ॥ जासो हमसों जतिया चारो भोजन भेटा भेटी ॥१ ॥ मात यशोदा लाड लडावे अंग शृंगार करावे ॥ कस्तुरीको तिलक बनावे चंदन पीत चढावे ॥२ ॥ कहिरी मैया कब लावेगी मोंको दुलहैया नीकी ॥ परोस परोस के मोहि खवावे रोटी चुपरी घीकी ॥३ ॥ ये सब सखा बरात चलेंगे हुंव चढुंगो घोरी ॥ जन परमानंद पान खवावे बीरा भरभर झोरी ॥४ ॥

□ राग-कान्हरो □ (५) रत्न जडितको वल्लभलालके सीस सोहे सेहरा ; धर्यो शीश पर छबिसों बनायके फूल रंग-रंग केवरा ॥१ ॥ आवो सुंदरी मिलि मंगल गावो श्रीविट्ठजूके गेहरा; देत असीस नवल दुलहको वल्लभदास भरे नेहरा ॥२ ॥

□ राग कान्हरो □ (६) मंगल मास अषाढ गीष्म ऋतु वदी दुतिया

गुरूवार। सुधन्य संवत धन्य सोलसे चोबीस महा शुभ उदयात् धरी दिन ॥१॥ दुलह नवल लाल श्रीरूक्मिनीसुत, दुलहनी पार्वती अति गोरी। रूप राशी रस शशि सुभग दोऊ, बनी अचल सुहागकी जोरी ॥२॥ अति उत्साह भरे जुवतिन मन, निरखी ब्याह नहि सुख पायो। वल्लभसो हँसि हँसि मिली नेंनन, रसीक वचन रस रंग मचायो ॥३॥

□ राग कान्हरो □ (७) वल्लभलालके शीश पर सोहे सेहरो ॥ पहेरे वागो जरकसी हार चमेली केवरो ॥१॥ भये असवार घोडा पर राजत, दुल्हनी निरखत नेहरो। वल्लभदास प्रभु ब्याहन चले सुंदर यह छबि ऊर धरो ॥२॥

□ राग कान्हरो □ (८) अबे गुंथ लावोरी मालनीया शहेरा। शुभ घडी शुभ दिन-शुभ यह मुहुरत। लाग्यो बनी सो नहेरो (अबे गुंथ) हार चमेली गुलाब-नीवाशे। महेकत-आवत-केवडा बनी बन्योरी नवल वल्लभ पिया, श्रीगोकुलमे गहेरी अबे गुंथ।

□ राग कान्हरो □ (९) आवी रूडी कन्या ने आवो रूडो वर मेलव्युं विधाता मारू शोभीयुं घर ए दीन देखीये रे ॥१॥ धूंसल-मूसल रवैयोने त्राक, पोंकीने पधराव्या मारा प्राणना आधार ए दीन देखीये रे ॥२॥ चोरीमां बेसोने तमे-चतुर सुजाण। संगे सोहे-नानकडी राधा नार ए दीन देखीये रे ॥३॥ गोविन्द प्रभु मारा चालीने आवशे घेर रामकृष्ण प्रभु मारा पूरशे कोड ए दीन देखीये रे ॥४॥ साथ सैयरो हींडे जोडाजोड लाज करे वहु वर घुंघट भेर ए दीन देखीये रे ॥५॥